विषय सूची

❀ इति ❀





१—उपक्रमणिका ।

महात्मा हनीमैन

होमियोपैथी क्या है, इसका कितना महत्व है और इस अद्वितीय चिकित्सा-प्रणाली का मूलाधार क्या है, इत्यादि बातें जानने के लिये सर्व प्रथम इसके आविष्कारक महात्मा सेमुएल हनीमैन का जीवन चरित्र पढ़ना परमावश्यक है। इस महापुरुष का जन्म जर्मनी स्थित सेक्सनी प्रदेशके मेसेन नामक गाँव में ता० १० अप्रैल सन १७५५ ईस्वीको हुआ था। इनके पिता चीनी मिट्टी के एक कारखाने में वर्तनों पर चित्र-कारी करने का काम करते थे, अतएव उन्होंने अपने इस होनहार पुत्र को भी यही कला सिखाने की चेष्टा की, परन्तु हनीमैनके भाग्यमें तो दूसरा ही सुयश प्राप्त करना बदा था, अतएव उन्हें यह पसन्द ही न आया। वे तो युरोपकी विभिन्न

भाषाओं और चिकित्सा शास्त्र में पारगत होना चाहते थे। पिताकी आर्थिक अवस्था ऐसी न थी, कि वे इसके लिये यथेष्ट सहायता दे सकें। दूसरी ओर हनीमैन भी ऐसे मनुष्य न थे, जो हताश होकर बैठ जाते। बीस वर्षकी अवस्था तक वे मेसेन के ही एक विद्यालय में अध्ययन करते रहे। इस समय उन्हे कैसी कठिनाइयों का सामना करना पडता था, यह केवल इसी बातसे समझा जा सकता है, कि जलाने के लिये उन्हे स्वय अपने ही हाथसे एक दीपक तैयार करना पडा था और उसीके प्रकाशमें वे अपनी अध्ययन-लालसा तृप्त किया करते थे।

इसके बाद वे मेसेन से लिपज़िग चले गये और वहाँ चिकित्साशास्त्र का अध्ययन करने लगे। यहाँ अध्ययनके साथ-साथ फ्रेञ्च और जर्मन भाषाके ग्रन्थोंका अग्रेजी में अनुवाद करने का काम भी करते रहे। सन् १७७९ अर्थात् चौबीस वर्षकी अवस्था में उन्होंने विश्वविद्यालय से एम डी की उपाधि प्राप्त की। इस समय तक उन्होंने फ्रेञ्च, अग्रेजी और जर्मन भाषाके अतिरिक्त ग्रीक, हिब्रू, अरबी, लेटिन, इटेलियन, स्पेनिश और सिरियन प्रभृति भाषाओं का भी अभ्यास कर लिया था।

एम डी की उपाधि प्राप्त करने के बाद दस वर्ष तक वे कई स्थानों में एलोपैथिक मतानुसार डाक्टरी कर अपना जीवन-निर्वाह करते रहे। इन दस वर्षों में उन्होंने देखा कि

एलोपैथिक चिकित्सा-प्रणाली बहुत ही अधूरी और दोष पूर्ण है। उन्होंने इसके विषयमे बहुत कुछ खोज और छान बीन की, परन्तु किसी तरह उन्हे सतोष न हुआ। अन्तमें उन्होंने विरक्त होकर सन १७९० ईस्वी में डाक्टरी का काम छोड दिया ओर वैज्ञानिक तथा साहित्यिक अन्वेषण एवम् फ्रेंच तथा इंग्लिश भाषाके ग्रन्थोंका जर्मन भाषामें अनुवाद करने के काममे अपना समय अतिवाहित करने लगे।

सन १७९० में डाक्टर कालेन की मेटीरिया मेडिकाका अनुवाद करते समय उन्होने देखा कि सिकोना वार्क या क्वीनाइन नामक दवामें ज्वरनाशक ओर ज्वरोत्पादक दोनों शक्तियॉ हैं इससे इनका माथा ठनका ओर उन्होंने निश्चय किया कि क्वीनाइन किस प्रकार ज्वर उत्पन्न करती है तथा किसप्रकार ज्वरका नाश करती है यह आजमाना चाहिये। निदान, उन्होंने क्वीनाइन खानी शुरू कर दी। खाते-खाते जब उसकी काफी मात्रा पेटमें पहुँच गयी, तब उन्हे एक दिन जाडा देकर मेलेरिया बुखार जैसा ज्वर आगया। बादको उचित मात्रामें क्वीनाइन ही खाकर उन्होंने अपना यह ज्वर आराम भी कर लिया। बस, यहीं से होमियोपैथी की नींव पडी और उसके मूलमत्र Similia similibus curentur अर्थात् "सम समं शमयति" सूत्रका आविष्कार हुआ।

इस घटना के बाद हनीमेन ने सोचा कि अन्यान्य ओषधियों में भी इसी तरह रोगोत्पादक और रोग नाशक शक्ति

है या नहीं, यह देखना चाहिये। उन्होने इसके लिये स्वयं अपने शरीर पर एकोनाइट आदि कई विष तथा औषधियों का प्रयोग किया और उनमें दोनो प्रकार की शक्तियाँ पायीं। वे लगातार छः वर्ष तक इसी खोजमे लगे रहे। अन्तमें बहुत कुछ अध्ययन, खोज, छान बीन और प्रत्यक्ष प्रयोगों के वाद वे इस सिद्धान्त पर पहुँचे कि कोई भी दवा अधिक मात्रा में खाने से शरीर में जो बीमारी पैदा हो जाती है, उसे अथवा उससे मिलती जुलती दूसरी बीमारी को उसी दवाकी सूक्ष्म मात्रा आराम कर देती है।

महात्मा हनीमैनको जब अपने इस सिद्धान्त पर अविश्वास करने का कोई कारण न रहा तब वे अपने इस मतका प्रचार करने लगे। इसके लिये उन्हें तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं का सहारा लेना पडा। इनके मतका प्रचार होते ही चारो ओर हलचल मच गयी। अनेक चिकित्सक इनके अनुयायी बन गये और अनेक शत्रु। हनीमैन पर इसका कुछ भी प्रभाव न पडा और वे अपना कदम आगे ही बढ़ाते चले गये।

सन १८०५ में उन्होंने लेटिन भाषामें "Fragmenta de viribus"नामक एक पुस्तक छपायी। वास्तवमें इसे होमियोपैथाकी सबसे पहली मेटीरिया मेडिका कहनी चाहिये। इसमें उन्होंने जिन सत्ताईस दवाओ का सेवन या अपने शरीर पर प्रयोग किया था, उनके गुण दोषोंका वर्णन था और उनके प्रयोग से शरीर में कोन-कौनसे लक्षण प्रकट हुए थे, यह

बतलाया गया था । सन १८१० में उनका आर्गेनन या स्वास्थ्य-साधन नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ । इसमें होमियोपैथीके मूल सिद्धान्त तथा एलोपैथी के दोषोंका विशद वर्णन किया गया है ।

इस समय तक महात्मा हनीमैन की कीर्ति चारों ओर फैल चुकी थी । उन्हें लिपजिगके विश्वविद्यालय में होमियोपैथीके आचार्य का स्थान भी मिल गया था, जहाँसे वे नित्य ही अपने शिष्यगणों को इस नयी चिकित्सा प्रणालीका शुभ सन्देश सुनाया करते थे । धीरे-धीरे होमियोपैथी का प्रचार बढ चला । साथ ही उनके शत्रुओं की संख्या भी बढ़ गयी । इसका कारण समझना सहज है । होमियोपेथी के प्रचार से एलोपैथीके उपासकों की न केवल निन्दा ही होती थी बल्कि उनके व्यवसायको भी गहरा धक्का लगता था । वे जिस तरह हो, हनीमन को नीचा दिखाने और उनकी चिकित्सा प्रणाली को मिट्टीमें मिलाने की चेष्टा करने लगे इसके लिये न जाने कितने षड्यन्त्र रचे गये । अन्तमें उनका एक षडयन्त्र सफल हुआ और सन १८२१ में उन्हें लिपजिग से निर्वासित होना पड़ा ।

परन्तु जिसके हृदय में अदम्य उत्साह भरा होता है, वह पीछे पैर हटाना नहीं जानता । हम पहले ही बतला चुके हैं कि महात्मा हनीमैन हताश होने वाले मनुष्य न थे । वे लिपजिग से फ्रान्स चले गये और वहाँके कोटेन नामक नगर में

रहकर होमियोपैथी का प्रचार और चिकित्सा करने लगे। यहाँ उन्होंने एक राजाका असाध्य रोग आराम कर उसके दरबार में राजवैद्य का पद प्राप्त किया। और भी न जाने कितने रोगियों को आराम किया। फलत. उनकी कीर्ति और होमियोपैथी का प्रचार बढ़ता ही गया। इस नगरमें वे चौदह वर्ष रहे और यहाँसे सन १८२८ में उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "क्रानिक डिज़िज" (पुराने रोगोंका निराकरण) प्रकाशित हुआ।

प्रत्येक सत्कार्य में विघ्नबाधायें तो हुआ ही करती हैं, परन्तु इसके बाद समय और विचार शील जनताने महात्मा हनीमैन का साथ दिया और उन्होंने संसार को अपना अभिनव सन्देश सुनाने के साथ-साथ यश और धनोपार्जन भी किया। महात्मा हनीमैनका पहला ब्याह सन १७८२ में हुआ था। इस पत्नीका स्वर्गवास होने पर ८० वर्षकी अवस्था में उन्होंने दूसरा ब्याह किया। इस दूसरी स्त्री के उद्योग से उन्हें फ्रान्सकी राजधानी पेरिस में डाक्टरी करने की सनद मिल गयी और जीवन के शेष आठ वर्ष उन्होंने यहीं डाक्टरी करते हुए आराम से व्यतीत किये। दूसरा ब्याह करने पर उन्होंने अपने लिये केवल तीस हजार रुपये रख कर शेष लाखों रुपये की सम्पत्ति अपनी पहली स्त्री के ल[illegible] बॉट दी थी। ता० २ जुलाई सन १८४३ को इस महा[illegible] [illegible] इहलोक-लीला समाप्त की। [illegible]के समय

लगभग तीस लाख रुपयो की सम्पत्ति छोड गये थे। मृत्युके बाद कई स्थानों में उनके स्मृति चिन्ह बनवाये गये। सन् १८५१ मे उनके देश वासियों ने भी लिपजिग में उनकी एक मूर्ति स्थापित कर अपने पूर्व पापोंका यत् किंचित प्रायश्चित्त किया। इस प्रकार महात्मा हनीमैन मरकर अमर हो गये। उनकी होमियोपैथी भी अमर हो गयी।

दवा किसे कहते हैं ?

जिन पदार्थों से अच्छे शरीर में रोग उत्पन्न हो सकता है और रोगी शरीर अच्छा हो सकता है उन्हें दवा कहते हैं। जडी बूटियाँ, अनेक तरह के विष वृक्षोंके फल फूल तथा ऐसे ही अन्य पदार्थ इसीलिये दवाके नाम से सम्बोधित किये जाते हैं।

दवा क्या कार्य करती है ?

प्रकृति अपने अटल नियमों द्वारा संसार के समस्त पदार्थों को नियत्रित रखना चाहती है। मनुष्य के शरीर में खानपान के दोष किंवा किसी दूसरी गडबडीके कारण जब कोई दोष उत्पन्न हो जाता है, तो प्रकृति किसी रोगके सहारे उसे दूर करने की चेष्टा करती है। जैसे कि रक्त दूषित हो जाने पर फोडा फुन्सी या बुखार आदिका होना और उनके सहारे रक्तका दोष दूर होकर शरीर का नीरोग होना। यदि प्रकृति रक्तदोष या कोई और दोष उत्पन्न हो जाने पर

वहाँ फोड़ा उत्पन्न कर उस दोषको बाहर न निकाल दे तो शरीर कभी नीरोग ही न हो। प्रकृति इस तरह स्वयं रोगी शरीर को स्वस्थ बनाने की चेष्टामें लगी रहती है। दवा उसके इस कार्य में सहायता पहुँचाती है। एक फोड़ा होने पर बिना दवाके उसे पकने, बहने और आराम होनेके लिये अगर एक महीने की जरूरत होती है तो दवा उसे पाँच ही सात दिनमें ठीक कर देती है। इसी तरह अनेक तरह से दवा प्रकृति के कार्य में सहायता पहुँचाती है। जो दवा प्रकृति के इस काममें अधिक से अधिक सहायता पहुँचा सके उसीको अच्छी से अच्छी दवा समझना चाहिये।

होमियोपैथी क्या है ?

होमियोपैथी क्या है, इसका कुछ दिग्दर्शन महात्मा हनीमैनकी जीवनी में कराया जा चुका है। "समः समं शमयति" यही होमियोपैथी का मूल सूत्र है। स्वस्थ अवस्था में अधिक मात्रामें कोई दवा खा लेने पर शरीर में जो लक्षण प्रकट होते हैं वैसे ही लक्षण वाली किसी भी बीमारी में उस दवाकी सूक्ष्म मात्रासे लाभ होता है। अधिक क्वीनाइन खा लेने पर जिस तरह जाड़ा लगकर बुखार आजाता है उसी तरह का जाड़ा बुखार अपने आप आजाने पर क्वीनाइन की थोड़ी मात्रा देनेसे वह आराम हो जाता है। स्वस्थ शरीर में संखिया (आर्सेनिक) खा लेने पर कै दस्त और प्यास वगैरह

लक्षण प्रकट होते हैं। यदि किसी बीमारी में ऐसे लक्षण दिखायी दें तो आर्सेनिक की सूक्ष्म मात्रा देनेसे वह बीमारी अच्छी होजाती है। जैसे लक्षण दिखायी दें वैसे ही या उससे मिलते जुलते लक्षणों की दवा देनेका नाम ही होमियोपैथी या सदृश विधान चिकित्सा है।

यहां हम अपने पाठकों को एक बात और बतला देना चाहते हैं। होमियोपैथी कहने से कुछ लोग यह समझते हैं कि अगर आर्सेनिक खानेसे ही रोगीको कै, दस्त और प्यासकी शिकायत हुई हो तो उसे आर्सेनिक देना चाहिये पर यह कोई जरूरी बात नहीं है, कि रोगीने कोई वैसी चीज खायी हो तभी उसे वैसी दवा दी जाय। होमियोपैथी का मूल-मन्त्र है, "Similia similibus Curentur" अर्थात् सदृश सदृश को आराम करता है। सदृश (Similar) और सम (Equal) शब्दमें कुछ अन्तर है। सम अर्थात् ज्यों का त्यों-ठीक एक समान और सदृश का अर्थ है-मिलता जुलता। यदि किसी रोगीको कै, प्यास और दस्त आदिकी शिकायत हो, तो यह जरूरी नहीं है कि उसने आर्सेनिक खाया ही हो। लेकिन आर्सेनिक खानेसे भी इसीसे मिलते जुलते लक्षण प्रकट होते हैं, इसलिये उस रोगीको आर्सेनिक दिया जा सकता है। रोग स्वाभाविक होना चाहिये और रोग तथा दवाके लक्षण मिलते जुलते होने चाहिये। इसीका नाम है होमियोपैथी या सदृश विधान चिकित्सा।

होमियोपैथिक दवाएं ?

यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि महात्मा हनीमैन ने जिस समय होमियोपैथी का प्रचार आरंभ किया उस समय केवल सत्ताइस दवाओं की ही परीक्षा की थी। बादको और दवाओं की भी परीक्षा की गयी। अब भी यह काम बराबर जारी है। होमियोपैथी के बड़े-बड़े आचार्य नित्य नयी दवाओं की खोज किया ही करते हैं। इस समय होमियोपैथिक दवाओं की संख्या दो हजार के करीब जा पहुँची है परन्तु यह सब दवाएँ न तो यहाँ मिलती ही हैं, न कोई चिकित्सक इन सबोंका उपयोग ही करता है। खास-खास चुनी हुई दवाएँ ही यहाँ अक्सर काममें लायी जाती है और वे दवा बेचने वालों के यहाँ आसानी से मिल भी जाती हैं। ऐसी दवाओं की सख्या दो ढाई सौ से अधिक नहीं है।

होमियो पैथिक दवाओं का मूल अर्क इग्लैण्ड, अमेरिका और जर्मनी में तैयार होता है। वहीं से यहाँ के बड़े-बड़े व्यवसायी मँगाकर बेचा करते हैं। मूल अर्कमें स्पिरिट आदि मिला कर भिन्न-भिन्न शक्ति या नम्बरकी दवा तैयार की जाती है। यह काम यहीं कर लिया जाता है। ऐसा करनेसे दवा बहुत सस्ती पड़ती है। अमेरिका या जर्मनीसे एकदम बनी बनायी दवा मँगाने पर वह तेज पड़ती है।

होमियोपैथिक दवा चार तरह के पदार्थों से तैयार की जाती है, यथा–(१) उद्भिज अर्थात् पौधे, वृक्ष तथा जड़ी

बूटियोंसे (२) खनिज अर्थात् खानसे निकले हुए पदार्थों से (३) प्राणिज अर्थात् जीवजन्तु या प्राणियों से प्राप्त पदार्थोंसे और (४) रोगज अर्थात् रोगके कीटाणु आदिसे। इन पदार्थों को स्पिरिटमें गलाकर जो मूल अर्क तैयार किया जाता है, उसे मदर टिञ्चर (*mother tincture*) कहते हैं। जो चीजें स्पिरिटमें नहीं गलतीं, उनकी मूल औषधि कूट पीसकर चूर्णके रूपमें तैयार की जाती है। जो चीजे केवल पानी में ही घुल सकती है, उनके मदर टिञ्चर पानी में घोल कर तैयार किये जाते हैं।

दवाओं के क्रम।

दवाओं के मदर टिञ्चर या मूल अर्क बड़े तेज होते हैं। उनमें केवल घुलने भरके लिये स्पिरिट या पानी आदि मिला रहता है। होमियोपैथी का तो सिद्धान्त है कि दवा सूक्ष्म से सूक्ष्म मात्रामे देनी चाहिये, इसलिये यह मानी हुई बात है कि यदि यह मदर टिञ्चर ही दवाके रूपमें प्रयोग किये जायें तो अधिकाश स्थानों में इनसे कोई लाभ नहीं हो सकता। इस-लिये मदर टिञ्चर में स्पिरिट आदि मिलाकर कहने के लिये तो उसकी तेजी घटा दी जाती है लेकिन ऐसा करनेसे दवा सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप धारण करती चली जाती है, जिससे उसकी रोग आराम करनेकी शक्ति घटने के बदले बढ़ती जाती है और वह उत्तरोत्तर तेज होती जाती है।

इस तरह दवाको तेज बनाने के लिये होमियोपैथिक दवाओंके १० वें, सौवें, हजारवें, दस हजारवें और लाखवें क्रम तक तैयार किये जाते हैं। दसवाँ क्रम दिखाने के लिये दवाका नाम लिखकर उसके आगे X, सौवें क्रमके आगे कुछ नहीं, ५०० के आगे D., हजारके आगे M, दस हजार के आगे C. M, पचास हजार के आगे D. M, और एक लाखके आगे M M प्रभृति सांकेतिक चिन्ह लिये जाते हैं। यदि कहीं "आर्सेनिक ६X"लिखा हो तो समझना चहिये कि आर्सेनिक के दसवें क्रममें से छठे क्रमकी दवा है। यदि केवल "आर्सेनिक ६" लिखा है, तो समझिये, कि आर्सेनिक के सौवें क्रममें से छठा क्रम है। यदि "आर्सेनिक M" लिखा हो तो समझ लीजिये कि आर्सेनिक का हजारवाँ क्रम बतलाया गया है।

दवाओं के १X, २X, ३X, ६, आदि दसवें क्रम, तथा ३, ६, १२, १८ और ३० आदि सौवें क्रम निम्न या हलके क्रम माने जाते हैं। इससे बड़े क्रम उच्च या तेज क्रम माने जाते हैं। कोई-कोई १२, १८, और ३० क्रमको मध्यम क्रम कहते हैं।

नीचे हम पाठकों की साधारण जानकारीके लिये क्रम तैयार करने की विधि अंकित करते है। होमियोपैथी के विद्यार्थियों को अवश्य इससे लाभ होगा, परन्तु साधारण पाठकोंको जान रखना चाहिये कि उन्हें कभी भी क्रम तैयार करनेकी झंझट न करनी होगी। दवा बेचनेवालों के यहाँ

सभी क्रमोंकी दवाएँ तैयार रहती हैं और उनसे जिस क्रमकी इच्छा हो, उस क्रमकी दवा मँगायी जा सकती है।

क्रम तैयार करने की विधि।

किसी भी दवाका १× क्रम तैयार करने के लिये एक हिस्सा मदर टिंचर मे ९ हिस्सा आल्कोहल या रेक्टीफाइड स्पिरिट मिलाना होता है। स्पिरिट मिलानेके बाद कमसे कम दस बार शीशीको अच्छी तरह हिला देना चाहिये। २× क्रम तैयार करने के लिये १भाग १× की दवा और ९ भाग आल्कोहल मिलाना चाहिये। ३× तैयार करने के लिये १ भाग २× की दवा और ९ भाग आल्कोहल होना चाहिये। इसी तरह चाहे जिस नवर का दसवॉ क्रम तैयार किया जा सकता है।

सौवॉ क्रम तैयार करने के लिये ९ भागके स्थान में ९९ भाग आल्कोहल मिलाना होता है। उदाहरण के लिये १ भाग मदर टिंचर में ९९ भाग आल्कोहल मिलाने से १ शतमिक क्रम तैयार होगा। १ शतमिक में ९९ भाग आल्कोहल मिलाने से २ शतमिक, २ शतमिक में ९९ भाग मिलाने से ३ शतमिक ३ शतमिक में ९९ भाग मिलाने से ४ शतमिक तथा इसी तरह और भी क्रम तैयार होते हैं।

यदि किसी दवाको तरल न बनाकर उसका चूर्ण बनाना होता है, तो इसी तरह आल्कोहलके बदले सुगर आफ मिल्क (दूधकी चीनी) मिलाकर विचूर्ण दवा तैयार की जाती है। विचूर्ण दवा ६× तथा ३ शतमिक क्रम तककी ही

लक्षणों से अधिक से अधिक मिलते हों, अतएव किसी भी रोगीको दवा देते समय उसके लक्षणों से दवाके लक्षणों को अच्छी तरह मिला लेना चाहिये और जिस दवाके लक्षण अधिक से अधिक मिलते हों, वही दवा देनी चाहिये। रोगके प्रत्यक्ष और परोक्ष सभी लक्षण जान लेना सहज काम नहीं है। इसके लिये रोगका कारण, रोगीका मल, मूत्र, भूख, प्यास, नाडीको गति, पसीना, मानसिक अवस्था प्रभृति जिन जिन विषयो की छान वीन करने की जरूरत रहती है, उनका हम आगे चलकर उल्लेख करेंगे। यहाँ हम केवल यही बतलाना चाहते हैं, कि दवाका चुनाव करते समय जहाँ तक हो सके रोगी और दवाके अधिक से अधिक लक्षण मिला लेने चाहिये। यही वास्तविक होमियोपैथी है। जल्दवाज होमियोपैथ या वे डाक्टर, जिनके यहाँ रोगियो की भरमार होती है, वे प्रायः ऐसा नहीं करते और इधर उधर के दो चार लक्षण देखकर ही दवा दे दिया करते हैं। कभी-कभी उनके अनुभवके कारण और कभी कभी रोगीके सौभाग्य से ऐसी दवाएँ काम भी कर जाती हैं, परन्तु है यह होमियोपैथी के सिद्धान्त के खिलाफ। किसी भी होमियोपैथी को दवाका चुनाव करते समय जल्दवाजी न करनी चाहिये।

दवा के क्रमका चुनाव।

होमियोपैथ को दवा देते समय उसके क्रम पर भी ध्यान रखना होता है, परन्तु यह विषय रोग लक्षणों (Symptoms)

के समान जटिल नहीं है। नये रोग में तथा जिस रोग में तुरन्त लाभ पहुँचाने की जरूरत हो उसमें प्रायः निम्न क्रम और पुराने रोगोंमें तथा जिन रोगोंको धीरे-धीरे आराम करना होता है, उनमें उच्च क्रम की दवा दी जाती है । एकोनाइट, बेलेडोना तथा कोलोसिन्थ आदि कई दवाएँ ऐसी हैं, जिनका निम्न क्रम ही अधिक फायदा करता है। यदि दवाका चुनाव अच्छी तरह हुआ हो तो नयी बीमारी में भी उच्च क्रमकी दवा से लाभ होता है।

सच बात तो यह है कि दवा के क्रम के सम्बन्ध में कोई निश्चित मत नहीं है । अनेक होमियोपैथ उच्च क्रम और अनेक निम्न क्रम देनेके पक्षपाती हैं। उच्च क्रम के बाद निम्न क्रम देना बेकार होता है, इसलिये रोग चाहे नया हो या पुराना, निम्न क्रमकी दवा से ही चिकित्सा शुरू करना अच्छा है। निम्न क्रमसे लाभ न हो तब उच्च क्रमकी दवा देनी चाहिये। यदि यह विश्वास हो कि दवाका चुनाव एकदम ठीक हुआ है, तो आरंभ से ही उच्च क्रमकी दवा दी जा सकती है। मध्यम अर्थात् ३०क्रमकी दवा भी अनेक बार बहुत अच्छी साबित होती है।

दवाकी मात्रा।

होमियोपैथिक दवाओं की मात्रा रोगी की उम्र और रोगकी अवस्था के अनुसार स्थिर की जाती है। साधारणतः पूरी उम्रवालों को तरल क्रम की दवा १ बूँद एक तोला

साफ पानी या १ रत्ती सुगर आफ मिल्कमें मिलाकर देनी चाहिये। ग्लोब्युल २ और पिल्युल ४ देना काफी है। विचूर्ण १ ग्रेन या आधी रत्ती देना चाहिये। बडी उम्र के बच्चों को इसकी आधी और एक दम छोटे बच्चो को इसकी चौथाई मात्रामें दवा दी जाती है। यदि दवा पानी में मिलाकर दी जाय तो पानी एकदम साफ होना चाहिये। जहाँ साफ पानी न मिले वहाँ साधारण पानी को आग पर खौलाकर, ठंढा करले और उसीमें दवा दे।

दवाकी सेवन विधि।

होमियोपैथिक दवा खानेके पहले मुँह अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिये। यदि दवा विचूर्ण हो, सुगर आफ मिल्कमें मिलाकर दी गयी हो अथवा गोलीके रूपमें हो, तो उसे जवान पर रखकर चूस डालना काफी है। यदि पानीमें मिलाकर खानी हो तो काँच, चीनी मिट्टी या पत्थर का वर्तन काम में लाना चाहिये। धातुके वर्तन में दवा खराब हो जाती है। जिस वर्तन में दवा खायी जाय वह वहुत ही साफ होना चाहिये। यदि उसमें दूध और पानीके सिवा और कोई चीज रक्खी गयी हो तो ठंढे और गरम पानी से धोकर उसे साफ कर लेना चाहिये।

दवा देनेका समय।

होमियोपैथिक दवा साधारणतः खाली पेटमे सुवह और शामके वक्त दी जाती है। किन्तु रोगकी अवस्था और दवाके

क्रमके अनुसार इसमें बहुत कुछ हेर फेर भी करना पड़ता है। यदि अधिक वार दवा देनेकी जरूरत मालूम हो तो खानेके एक घण्टा पहले और दो घण्टा बाद दवा देनी चाहिये। जो लोग नशीली चीजें खाते हो उन्हें नशा खाने के एक घण्टा पहले या तीन घण्टा बाद दवा देनी चाहिये।

बुखार में जिस समय बुखार आता हो अथवा जिस समय बुखार चढ़ रहा हो, दवा न देनी चाहिये। बुखार उतर जाने पर या बुखार की हालत मे दवा देना अच्छा है। हिस्टीरिया में जिस समय रोगका हमला हो उस समय दवा देनी चाहिये। स्त्रियों को रजोदर्शन के समय दवा देना मना है।

नयी और तेज बीमारी में दो,तीन या चार घण्टे के अन्तर से दवा देनी चाहिये। पुरानी बीमारी में ६, ८ या १२ घंटेके अन्तर से दवा दी जा सकती है। हैजा, खींचन, अकड़न, शूल, न्युमोनिया आदि खतरनाक और शीघ्रता से बढ़नेवाली बीमारियों में १०, १५, २० या ३० मिनट के अन्तर से दवा देनी चाहिये।

एक वार दवा देनेके बाद उसका फल देखकर दुबारा दवा देना अच्छा है। दवासे फायदा हो तो धीरे-धीरे समय बढ़ा कर–अधिक देरी करके दवा देनी चाहिये। किसी दवासे लाभ हो तो रोगको जल्दी आराम करने के लिये अधिक तादाद में या अधिक वार दवा देना भयकर भूल है। होमियोपैथिक दवा इस तरह नहीं दी जाती। जहाँ तक हो सके दवा का

कमसे कम प्रयोग करना चाहिये। ऊँचे क्रम की दवा सप्ताह में एक या दो बार देना काफी है। हजार या इससे ऊँचे क्रमकी दवा तो अवस्थानुसार एकसे लेकर तीन महीने तक में एक बार देनी चाहिये। साधारणतः ऐसी दवाएँ देने के बाद जब तक उनसे फायदा होता रहता है या जब तक फायदा होना बन्द नहीं हो जाता, तब तक दवाकी दूसरी खुराक नहीं दी जाती। उच्च क्रमकी दवा देने के बाद यदि रोगी चिकित्सक को और दवा देने के लिये तंग करता है या जब किसी रोगीको बिना दवा खाये सतोष ही नहीं होता, तो उसे प्रायः उससे छिपाकर सुगर आफ मिल्क की सादी पुडियाँ देदी जाती है, जिन्हें खाकर वह सन्तोष मानता है, परन्तु वास्तविक लाभ तो महीनों तक उस उच्च क्रमकी एकही खुराक से हुआ करता है।

नये रोगमें चुनी हुई दवा दो-तीन बार देनेसे लाभ न हो, तो उसका दूसरा क्रम आजमाना चाहिये। यदि दवा बहुत दिनों तक सेवन करनी पड़े तो सप्ताह में एक दिन दवा बन्द रखने से विशेष लाभ होता है।

दवा बदलना।

यह तो मानी हुई बात है कि जब एक दवासे लाभ नहीं होता तब दवा बदलनी पड़ती है, लेकिन होमियोपैथिक शास्त्र में एक समय केवल एकही दवा देने का विधान है। कई

दवाएँ एक साथ मिलाकर तो दी ही नहीं जा सकतीं। हाँ, कभी-कभी दो दवाएँ पर्याय क्रम या पारी-पारी से दी जाती है, लेकिन यह तभी करना चाहिये जब इसकी सख्त जरूरत हो और कोई ऐसी दवा मिलही न सके, जिससे दोनोंका काम निकल सकता हो। यदि एक दवासे लाभ न हो और यह विश्वास हो कि दवा ठीक दी गयी है, तो उसका क्रम बदल देना चाहिये। यदि किसी दवासे केवल रोगकी तेजी घट गयी हो अथवा रोग के कुछ लक्षण दब गये हों और कुछ ज्यों के त्यों बने हों, तो दवा न बदल कर उसी दवा को कुछ अधिक देरींसे प्रयोग करना चाहिये। दवा निम्न क्रम की हो तो उच्च क्रम की भी दी जा सकती है। यदि दवा देने पर रोग के कुछ लक्षण गायब हो जायें और कुछ बिलकुल नये लक्षण उत्पन्न हो जायें, जिन्हें आराम करने की शक्ति उस दवा में न हो, तब दवा बदलना आवश्यक हो पडता है और बदलना उचित भी है।

होमियोपैथी के प्रसिद्ध आचार्य डाक्टर हेरिंग का कथन है कि कभी-कभी एक रोग के अनेक कारण होते हैं और उन सबो के लिये एक ही दवा काफी नहीं होती। ऐसी अवस्थामें एक के बाद दूसरी दवा देनी चाहिये। सबसे पहले बुरेसे बुरे अथवा जो लक्षण सबसे अन्तमें प्रकट हुए हों, अथवा रोगका जो सबसे अन्तिम कारण हो, उसी को ध्यानमें रखकर दवा

भी असर उसमें न रह जाय। लेकिन सबसे सहल तरीका कार्क (काग) के सहारे बूँद टपकाने का है। इसके लिये काग के बीचमें शीशीका मुह लगा कर दवा ढालनी चाहिये (शीशीके मुहमें काग अड़ाकर नहीं) हाथ सध जाने और अभ्यास हो जाने पर इस विधिसे इच्छानुसार चाहे जितने बूँद टपकाये जा सकते हैं। ध्यान रहे, बूँद टपकाने के लिये उसी शीशीका काग काममें लाना चाहिये, जिसकी दवा टपकानी हो। दूसरी शीशीका काग व्यवहार करने से दवाका गुण नष्ट हो जाता है।

प्रतिषेधक दवा।

यदि कोई होमियोपैथिक दवा खाने से किसी तरह की हानि मालूम हो, तो २-३ बूँद अर्क कपूर खिला देने से उस दवाका दोष दूर हो जाता है लेकिन अगर हाईड्रेस्टिस या सिमिसिफिऊगा नामक दवाएँ दी गयी हों और उनसे हानि पहुँची हो, तो अर्क कपूर न देना चाहिये। अर्क कपूरसे इन दवाओं की क्रिया बढ़ जाती है।

एलोपैथिक, आयुर्वेदीय या हकीमी आदि दवा करानेके बाद यदि कोई रोगी होमियोपैथिक दवा कराने आये तो उन दवाओंकी क्रिया नष्ट करनेके लिये उसे पहले अर्क कपूर, नक्सवोमिका या सल्फरकी १-२ खुराकें देनी चाहिये।

होमियोपैथिक दवा खाते समय कोई दूसरी दवा न खाना चाहिये। दवा खानेके कमसे कम एक घण्टा पहले और एक घण्टा बाद पान या तम्बाकू न खाना चाहिये।

वाह्यप्रयोग की दवाएं।

अनेक रोगों में वाहर से धोने,मालिश करने या मलहम की तरह लगाने के लिये दवाओं की जरूरत पड़ती है। इसके लिये कई होमियोपैथिक दवाओंके मूल अर्क या मदर टिंचर अठगुने पानी, तेल, सावुन, चर्वी या मोम आदिमे मिलाने से धावन, मालिश का तेल या मलहम तैयार होता है। वाह्य प्रयोगकी कोई भी दवा वेसलिनमें तैयार करना ठीक नहीं।

आनुसंगिक नियम।

होमियोपैथिक दवा सेवन करते समय यदि जरूरत हो तो कुछ और उपचार भी किये जा सकते हैं। इनसे रोग आराम होने में सहायता पहुँचती है। फोड़ा हुआ हो और उसे पकाने या फोड़ने के लिये दवा दी गयी हो, फिर भी यदि उस पर तीसी, राख या नीम आदिकी पुल्टिस चढ़ायी जाय या जरूरत मालूम होने पर चीरा लगवा दिया जाय तो वह अनुचित नहीं। इससे लाभ ही होगा। बुखारके समय माथे में विकार उत्पन्न होने पर या शिरःदर्द के समय अथवा नाक, जरायु या जख्मसे खून वहता हो तो उसे वन्द करने के लिये वरफका प्रयोग किया जा सकता है। सेंक की जरूरत हो तो गरम पानी या फलालैन से सेंक भी करना चाहिये। दस्त कराने के लिये या क्रिमि आदि दूर करने के लिये मलद्वारमें पिचकारी भी दी जा सकती है। इस तरहके सभी उपचार

रोगींको आराम करने में सहायता पहुँचाते है और यह होमियोपैथी के प्रतिकूल नहीं माने जाते।

पिचकारी देने की विधि।

रोगीका मल बँध जाने पर उसे दस्त कराने के लिये यदि पिचकारी देनी पड़े तो पिचकारी के मुखमें तेल या घी लगाकर उसे मलद्वार में प्रवेश कराना चाहिये और रोगीको सुलाकर १० से लेकर २० छटाक तक ठंढा या गुनगुना पानी धीरे धीरे आतमे पहुँचा देना चाहिये। दस पन्द्रह मिनट में रोगीको दस्त हो जायगा। ५ से लेकर १० छटाक तक पानीमें २ ड्राम नामक मिलाकर उसकी पिचकारी देनेसे सूत जैसी कृमि नष्ट हो जाती है। पतले दस्त बन्द करने के लिये समय-समय पर ठढे जल की पिचकारी देनी पड़ती है।

पथ्यापथ्य विचार।

अन्यान्य दवाओं की तरह होमियोपैथिक दवा खाते समय भी पथ्यापथ्य और परहेजी पर ध्यान रखना होता है। पथ्यका निर्णय रोग और रोगीकी अवस्था देखकर करना चाहिये। साबूदाना, वार्ली, आरारोट, मिश्री, दूध, धानीका मॉड, मूँग या मसूरकी दालका पानी, कसेरू, सिंघाड़ा विदाना, अनार आदि चीजें सुपथ्य मानी गयी हैं। शराब, गॉजा, भॉग, लाल मिर्च, अदरख, हींग, कपूर, इलायची, लौंग गरम मसाला, प्याज, लहसुन, चाय, काफी सोडावाटर या

एसिडसे तैयार होनेवाले अन्य पानीय पदार्थ इत्यादि चीजें दवा खाने के समय निषिद्ध हैं। रोग आराम होने लगे तब रोटी और बाद को भात दिया जा सकता है। पुराने रोग मे एक वक्त रोटी और एक वक्त भात देना अच्छा है। प्यास दूर करनेके लिये कुछ गुनगुना पानी देना चाहिये। कै होती हो तो ठढा पानी पिलाना चाहिये या बरफके टुकड़े चूसने को देने चाहिये।

रोग-विचार।

स्वास्थ्य-रक्षाके नियमों का ठीक-ठीक पालन न करने के कारण अथवा शरीर में किसी तरह का विष प्रविष्ट हो जानेके कारण, शरीरकी साधारण अवस्था में जो गड़बड़ी पैदा हो जाती है, उसे रोग कहते हैं।

होमियोपैथिक शास्त्र में समस्त रोग तीन भागोंमें बांट दिये गये हैं यथा-(१) नया या तरुण रोग-Acute disease एक्यूट डिजिज(२)पुराना या पुरातन रोग-chronic disease क्रानिक डिजिज और (३) जायुज रोग Drug disease ड्रग डिजिज। इन तीनोंका विशेष वर्णन नीचे दिया जाता है।

तरुण रोग—इस कोटिके रोग दो भागों में बाँटे जा सकते हैं। एक तो वे रोग जो खान पानके दोष, ऋतु परिवर्तन, शोक, क्रोध आदि मानसिक उत्तेजना, अत्यन्त परिश्रम, सर्द स्थानमें रहना, स्वास्थ्य-रक्षाके नियमों का

दवाएँ इत्यादि चीजों के सेवन से उत्पन्न होते हैं। यह रोग होने पर किसी एक अंगका बहुत बढ़ जाना या दुर्बल हो जाना, समझने या अनुभव करने की शक्ति का घट जाना, यकृत आदि यन्त्रों में गड़बड़ी पैदा हो जाना आदि पुरातन रोग जैसे लक्षण प्रकट होते हैं। यह रोग साधारणतः अच्छे हो जाते हैं, परन्तु जब किसी रोगी के शरीर में पुरातन रोगों का विष मौजूद होता है, और उनसे मिलकर यह रोग जटिल हो जाते हैं, तब इनका इलाज बहुत कठिन हो जाता है और यह कठिनाई से आराम होते हैं।

रोगका निदान।

कोई भी चिकित्सक किसी भी रोगीका इलाज तब तक अच्छी तरह नहीं कर सकता, जब तक वह रोगका निदान नहीं कर पाता। रोगीको कौनसी दवा देनी चाहिये, इसका निर्णय करने के लिये, पहले उसे कौन रोग हुआ है, यह जानना होता है। अन्यान्य चिकित्सा-प्रणालियों में निदान का काम उतना जटिल नहीं है, जितना होमियोपैथी में। उनमें केवल रोगका नाम भर जान लेना काफी होता है। परन्तु होमियोपैथी एक तरह से लक्षण-चिकित्सा है। इसमें केवल यह जानना ही जरूरी नहीं होता कि रोगीको गठियाकी बीमारी हो गयी है, बल्कि रोगके बारीक से बारीक लक्षण देखने होते हैं। रोगीको गठिया किस कारण से हुआ है, उसके शरीर में नये या पुराने रोगोंका कोई विष मौजूद है या नहीं,

किन किन जोडोंमें दर्द है, दर्द कैसा है, किस समय बढता और किस समय घटता है, ठंढने बढ़ता है या गरमी में, हिलने डोलने से आराम मालूम होता है या कष्ट, इत्यादि न जाने कितनी बातें उसे जांचनी पडती है। होमियोपैथी में निदान के समय, रोगी मोटा है या पतला, गोरा है या काला, जवान है या बूढ़ा, उसका स्वभाव, प्रकृति, मौजी और खुश मिजाज है या चिडचिडा, कामी है या क्रोधी मानसिक अवस्था, प्रवृत्ति इत्यादि कुछ बातें ऐसी भी देखनी होती है, जो और किसी भी चिकित्सा प्रणाली के चिकित्सकों को नहीं देखनी पडती। खास कर रोगीकी मानसिक अवस्था का विचार जितना होमियो पैथीमें किया गया है, उतना और किसी चिकित्सा प्रणाली में नहीं। लक्षणों की जांचमें जरा भी फर्क पडते ही दवामें फर्क पड जाता है और रोगीको उस से लाभ नहीं होता। ऐसी अवस्था में निदान पर सबसे अधिक ध्यान रखना प्रत्येक चिकित्सक का प्रधान कर्तव्य होना चाहिये। नीचे हम वे बातें अंकित कर रहे हैं, जो साधारणत. प्रत्येक रोगीको देखते समय चिकित्सकको जांच लेनी चाहिये।

प्रकृति विचार।

भिन्न भिन्न मनुष्यों की प्रकृति भी भिन्न भिन्न होती है। मुख्य प्रकृति तीन प्रकार की होती है (१) वात प्रकृति (२) पित्त प्रकृति और (३) कफ प्रकृति। चिकित्सक के लिये इन तीनोंके लक्षण जान रखना आवश्यक है।

वात प्रकृति—इस प्रकृति का मनुष्य अधिक वाचाल होता है। शरीर में रक्त अधिक, रङ्ग उज्वल, शरीर की गठन अच्छी, मन प्रफुल्लित और शरीर सतेज होता है। वात प्रकृति के मनुष्य शारीरिक और मानसिक परिश्रम से नहीं डरते और उनके शरीर की गरमी तथा नाडीकी गति समान रहती है।

पित्त प्रकृति—इसके शरीर का रंग कुछ पीला या मलीन होता है। जरामें ही यकृत की क्रियामें गड़बड़ी पैदा हो जाती है। आमाशय में भी गडबड़ी रहती है। इसका पेशाब मलीन, मल मलीन या काला, पेटमें कब्जियत और नाडीकी गति तारके समान होती है।

कफ प्रकृति—इसका शरीर हृष्ट पुष्ट, मांस कोमल, ढीला और फूला हुआ और रंग साधारणतः गेहुँआ होता है। इसे दूसरोंकी अपेक्षा अधिक सरदी मालूम होती है और जरासी सरदी लगते ही तबियत खराब हो जाती है। इसके शरीर की गरमी कुछ कम और खून तथा नाडीकी गति मन्द होती है।

स्त्री–पुरुष विचार।

चिकित्सा करते समय रोगी स्त्री है या पुरुष–इस पर भी चिकित्सक को ध्यान रखना होता है। पुरुष और स्त्रियोंकी शारीरिक रचना, गठन, शक्ति, सहन शीलता इत्यादि में बड़ा अन्तर है। स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा अधिक कोमल और कम-

र होती है, इसलिये थोड़ी दवासे ही उनके रोग आराम हो
ते हैं। स्त्रियोंकी चिकित्सा करते समय यह विशेष रूप से
न लेना चाहिये कि उन्हें नियमित रजस्राव होता है या
हीं ? वे गर्भवती है या नहीं और उन्हें हिस्टीरिया या प्रदर
। बीमारी तो नहीं है ? पुरुषों के मामले मे यह जान लेना
वश्यक होता है कि वे वीर्य सम्बन्धी कोई रोगसे तो पीड़ित
हीं है अथवा उन्हें कभी सूजाक या गरमी की बीमारी तो
हीं हुई ? आरम्भ से ही यह सब बातें जॉच लेने पर रोग की
ाकित्सा करने मे बड़ा सुभीता होता है।

अवस्था-विचार।

चिकित्सा आरंभ करने के पहले रोगी की अवस्था या उम्र
ान लना भी आवश्यक है। रोगी के शरीर पर अनेक वार
सकी उम्र का भी प्रभाव पड़ता है। बाल्यावस्था में किसी भी
ीमारी के साथ मस्तिष्क के स्नायुओं की उग्रता उत्पन्न हो
कती है। युवकोंकी बीमारीमें प्रायः उनका मस्तिष्क आक्रान्त
ाता है। वृद्धावस्थामें अन्यान्य बीमारियोंके साथ पेटकी गड़-
ड़ी भी प्राय मौजूद रहती है। इसके अतिरिक्त बीमारी एक
ोने पर भी अवस्थानुसार भिन्न भिन्न रोगियों पर उसका
भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। कुछ बीमारियॉ ऐसी होती हैं जो
च्चों, युवकों या वुड्ढोंको ही अधिक होती है या उन्हींके लिये
अधिक घातक होती हैं, इसलिये रोगी की उम्र, खासकर जब
ोगी सामने मौजूद न हो तब, अवश्य ही जान लेनी चाहिये।

रोगीकी जीवनचर्या।

रोगी की आदतें, वह किस प्रकार अपना समय बिताताहै, क्या काम करता है, कितना शारीरिक या मानसिक परिश्रम करता है किस नगर या गॉव में रहता है, वहॉ का जल वायु कैसा है, क्या खाता है, कैसे कपड़े पहनता है, कैसे मकान में रहता है, कोई नशा खाता है या नहीं, प्रभृति बातें भी अच्छी तरह पूछ ताछ कर जान लेनी चाहिये।

नाड़ी–विचार।

आयुर्वेदमें नाडीका विचार जितना ऊंचा है, होमियोपैथी या एलोपैथी में उतना नहीं है। डाक्टर गए हाथ मे घडी लेकर केवल यह देखते है कि एक मिनट मे कितनी बार नाडी चलती है। वे केवल स्पन्दन गिन कर ही रोगीकी जीवनी-शक्तिका पता लगाते है, पर आयुर्वेदमें नाडीके सहारे बहुत सी बातें जाननेकी तरकीव बतलायी गयीहै। यह कहना व्यर्थ है कि नाडीका बढ़िया ज्ञान बिना गुरुके नहीं हो सकता।

नाडी देखते समय रोगी और चिकित्सक दोनोंका चित्त स्थिर होना चाहिये। सामने घडी रख कर बीचकी तीनों उँगलियों द्वारा मणिबन्धके पाससे ऊपरकी ओर धमनी नाडीमें नाडी देखनी चाहिये। नाड़ीकी गति अनेक प्रकारकी होती है जिसमेंसे तेज, मन्द, निर्जीव, शून्य, असमान, सपर्याय और पूर्ण यह सात गतियॉ मुख्य है।

गर्भस्थ भ्रूणकी नाडी प्रति मिनट १५० वार, तुरन्त के जन्मे हुए बच्चेकी १४० से १३० वार, एक वर्षकी उम्रतक १३० से ११५ वार, दो वर्षकी उम्रमें ११५ से १०० वार, तीसरे वर्षमें १०० से ६० वार, तीनसे लेकर सातवें वर्ष तक ६० से ८५ वार, सातसे लेकर चौदहवें वर्ष तक ८५ से ८० वार, मध्यम अवस्थामें ७५ से लेकर ७० वार और वृद्धावस्थामें ६५ से लेकर ५५ वार तक नाडी चलती है। कभी-कभी इस गणना में अन्तर भी, पड जाता है।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की नाडी प्रति मिनट १०–१५ वार अधिक चलती है। वैठे रहने की अपेक्षा खड़े या लेटे रहने पर नाडी अधिक तेज चलती है। मानसिक उत्तेजना या कसरत आदि करने के समय भी साधारण अवस्था की अपेक्षा नाडी की गति तेज रहती है। बुखार या बुखार वाली सभी बीमारियों में नाडी तेज रहती है। नाडी धीमी हो तो समझना चाहिये कि रोगी कमजोर हो गया है या उसके शिरमें रक्ताधिक्य हो गया है। नाडी सूत जैसी सूक्ष्म या लुप्तप्राय दिखायी दे तो समझना चाहिये कि रोगीकी जीवनी शक्ति घट रही है और वह मृत्युकी ओर अग्रसर हो रहा है। क्षीण होने पर भी नाडीका वलवती होना बहुत ही खराब लक्षण माना गया है। चलते–चलते एकायक नाडीका रुक जाना भी अशुभ लक्षण है।

थर्मामिटर द्वारा ज्वर की जाँच ।

आज कल थर्मामिटर का व्यवहार इतना अधिक होने लगा है कि अब इसका परिचय देना अनावश्यक प्रतीत होता है। यह कॉच की एक नलीका बना हुआ रहता है। नली के निचले हिस्से मे पारा भरा रहता है। नली पर छोटी बडी लकीरें और अक बने रहते हैं। थर्मामिटर बगल, जीभके नीचे या मल-द्वार में लगाने पर शरीर की गरमी से पारा ऊपर को चढ़ता है। नलीपर की बडी लकीर डिग्री और छोटी लकीर डिग्री का पॉचवॉ हिस्सा बतलाती है। पारा जिस डिग्री तक चढ़ता है,उतना ही बुखार माना जाता है। रोगी के शरीर में थर्मामेटर लगाते समय देखना चाहिये, कि थर्मामेटरमें बाहर की हवा न लगने पाये। ऐसे भी थर्मामेटर आते हैं जो आधे या एक मिनटमें ही शरीरकी गरमी दिखा देते हैं। वैसे, दो से लेकर पॉच मिनट तक थर्मामेटर लगा रक्खा जाता है।

एक डिग्री के दस पाइन्ट माने जाते हैं। दो डिग्रियों के बीचका अन्तर पॉच भागों में बँटा रहता है। प्रत्येक भाग के दो पाइन्ट समझना चाहिये। थर्मामेटर मे ९८ डिग्री ४ पाइन्ट पर एक तीर जैसा चिन्ह बना रहता है। यह मनुष्यके शरीर की साधारण या नार्मल गरमी मानी जाती है। थर्मामेटर मुँह में लगाने पर यही गरमी ९९ डिग्री ५ पाइन्ट तक दिखायी देती है।

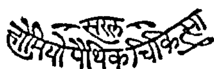
युवकों की अपेक्षा बच्चों के शरीर की गरमी कुछ अधिक और वृद्धों के शरीर की गरमी कुछ कम हुआ करती है। नींद और विश्राम के समय भी शरीर की गरमी डेढ़ डिग्री कम मालूम होती है। शरीर की गरमी ढाई डिग्री तक बढ़ जाय तो उतनी चिन्ता न करनी चाहिये, जितनी एक डिग्री घट जाने पर। प्रति दिन शरीर की गरमी स्वभावतः ही १.८ (१ डिग्री ८ पाइन्ट) से लेकर १.३ (एक डिग्री ३ पाइन्ट) तक बढ सकती है। यदि शरीर की गरमी ९७.२ तक घट जाय या ९९.५ तक बढ़ जाय तो वह साधारण ही मानी जाती है। इससे अधिक घटने या बढने पर समझना चाहिये, कि कोई रोग हुआ है। छोटी उम्र के बच्चों की गरमी का घट जाना अधिक चिन्ता का विषय समझना चाहिये।

शरीर की गरमी १०० से १०१ डिग्री तक हो जाने पर साधारण बुखार या हरारत, १०३ तक धीमा बुखार, १०५ होने पर तेज बुखार और १०६ या १०७ डिग्री हो जाने पर साघातिक या खतरनाक समझना चाहिये। १०८ से ११० डिग्री हो जाने पर समझना चाहिये कि रोगी की मृत्यु अवश्य और शीघ्र ही होगी।

मुख मण्डल के विसर्प, तरुण मस्तिस्कावरक झिल्ली प्रदाह, न्युमोनिया, लाल ज्वर, टायफस या मोह ज्वर और चेचक में १०६ से १०७ डिग्री तक बुखार चढता है। मेलेरिया बुखार में

भी शरीर की गरमी १०६ डिग्री तक बढ़ जाती है, पर यह बहुत खतरनाक हालत नहीं मानी जाती। दूसरे बुखारों में शरीर की गरमी १०३ से १०५ डिग्री तक ही रहती है। टायफाइड बुखार के दूसरे सप्ताह मे शाम के वक्त बुखार का १०५ डिग्री तक पहुँच जाना डर की बात मानी जाती है। नये वात रोग मे भी १०४ डिग्री तक बुखार का बढ़ना बहुत खतरनाक माना जाता है। सूतिका ज्वर में अनेक बार शरीर की गरमी १०५ डिग्री तक पहुँच जाती है। ६७ से ६० डिग्री तक गरमी का कम हो जाना शरीर की पतनावस्था का द्योतक है। हैजे के सिवा और किसी भी बीमारी मे शरीर की गरमी का ६३ डिग्री से अधिक कम हो जाना बहुत ही खतरनाक माना जाता है। हैजे में जब शरीर ठंढा पड़ने लगता है तब गरमी ८० डिग्री तक घट जाती है। इस रोग में ७७ से ७६ डिग्री तक की गरमी चिन्ताजनक मानी जाती है। एकज्वर, स्वल्प विराम ज्वर, सविराम ज्वर और क्षयकर पुराने रोग मे शरीर की गरमी का एकाएक कम हो जाना भय की बात मानी जाती है।

थर्मामेटर रोगी के शरीर में लगाने पर उसका पारा ऊपर चढ़ गया हो और उसे दुबारा लगाने की जरूरत हो तो ऊपर की ओर पकड़ कर नीचे की ओर झटकने से वह नीचे उतर जाता है। लगाने के पहले सदा इसी तरह पारे को ६८ डिग्री के नीचे उतार देना चाहिये।



श्वास प्रश्वास ।

श्वास लेना और छोडना शरीर की एक आवश्यक और स्वाभाविक क्रिया है, इसलिये नीरोग अवस्था में यह क्रिया विना किसी कष्ट और आवाज के सहज में ही हुआ करती है। रोग की हालत में इसमे कई तरह के दोष पैदा हो जाते है। पूरी उम्र के स्वस्थ मनुष्य १ मिनट में १६ वार साँस लेते और १५ वार छोडते हैं। १ वर्ष के वच्चे प्रति मिनट ३४–३५ वार, दो वर्ष के वच्चे २५–२६ वार और १५ वर्ष के वच्चे १८ वार साँस लेते और छोडते है।

रोग की हालत में श्वास प्रश्वास की गति ६० से लेकर ८० वार तक वढ़ जाती है या ८ से लेकर १० वार तक घट जाती है। अपरिमित आहार, व्यायाम आदि अगचालना, मानसिक उत्तेजना, अवसन्नता और आहार पचने के समय श्वास की गति कुछ वढ़ जाती है। मूर्च्छा, क्षय तथा ज्वर आदि रोगो के समय भी साँस तेज चलने लगती है। स्वस्थ अवस्था में साँस की गति का धीरा होना अच्छा लक्षण है। ठंढी और तेज साँस मृत्यु सूचक मानी जाती है। कमजोरी में भी श्वास की गति कम हो जाती है।

श्वास, नाड़ी और गरमी।

श्वास, नाडी और शरीर की गरमी में परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। शरीर की गरमी स्वाभाविक गरमी से एक डिग्री

बढ़ जाने पर नाडी की गति करीब १२ बार और श्वास प्रश्वास की गति २–३ बार बढ़ जाती है। शरीर की गरमी जब ६८ डिग्री ४ पाइन्ट होती है, तब नाडी की गति प्रति मिनट ७५ बार और श्वास की गति १८ बार होती है। शरीर की गरमी १०० डिग्री हो जाने पर नाडी की गति प्रति मिनट ६०–६५ बार और श्वास प्रश्वास की गति २३–२४ बार हो जाती है। साधारण अवस्था में १ बार साँस लेने पर ४ बार नाडी चलती है।

छाती--परीक्षा।

छाती में फेफडा और कलेजा या हृदय नामक दो बहुत ही महत्वपूर्ण यन्त्र हैं। इनका कार्य अच्छी तरह हो रहा है या नहीं, यह जानने के लिये छातीकी परीक्षा करनी होती है छातीकी परीक्षा देखकर, सुनकर और यंत्रद्वारा कान से सुनकर की जाती है। इसके लिये कुछ अनुभवकी जरूरत रहती है। केवल किताबी ज्ञानसे इसका काम अच्छी तरह नहीं चलता।

यदि छाती जाचने का यंत्र न हो तो रोगी को स्थिरता पूर्वक सामने बैठाकर अच्छी तरह देखना चाहिये कि रोगी की छाती अच्छी तरह फैली है या नहीं, जब वह साँस लेता तथा छोडता है तब छाती फूलती और सिकुडती है या नहीं तथा छातीका कोई भाग सूजा हुआ तो नहा है।

इसके अतिरिक्त रोगीकी छाती पर उँगली से चोट देकर भी छातीकी परीक्षा की जाती है। छाती पर बायाँ हाथ रखकर दाहिने हाथकी तर्जनी उँगली से उसपर चोट देने से ठन-ठन की आवाज हो तो समझना चाहिये कि स्वाभाविक अवस्था है। टप टप आवाज हो तो फेफड़े का प्रदाह या न्युमोनिया और छातीकी सूजन आदि जानना चाहिये। दमाकी बीमारी में अधिक हवा घुसने के कारण टन-टन की आवाज होती है।

छाती परीक्षाका यन्त्र विलायत से आता है। इसे स्टैथ-स्कोप कहते हैं। यह पहले काठका बनाया जाता था। अब सींग हाथीदाँत, जर्मन सिल्वर आदिका बनता है और उसमें रबड़की नलियाँ लगी रहती हैं। डाक्टरों को इसका उपयोग करते हुए सबने देखा होगा। इसके दो चोंगे कानमें लगाकर, तीसरे चोंगेको रोगीकी छाती पर लगानेमे छातीम तरह तरहकी आवाज सुनायी देती है और उसी परसे रोगकी परीक्षा की जाती है।

स्टैथस्कोप कानमें लगाने पर साधारण अवस्थामें सों-सों की आवाज सुनायी देती है। श्वासनाली प्रदाह,दमा, जन आदि रोगोंमें कई तरहके बाजोंकी सी ध्वनि सुनायी देती है। यदि कफ अधिक होता है तो घड़घड़ाहट मालूम देती है और न्युमोनिया में केश घसनेकी तरह तथा फेफड़े की झिल्ली के प्रदाहमें खस खस आवाज सुनायी देती है। ब्रोंकाइटिस और

फेफड़ेके रक्तस्राव में वृहत् श्वासनाली में टक वक टक वक आवाज होती है, मानो पानी वुजवुजा रहा हो।

फेफड़ेकी जॉच करनेके लिये छाती के सामने का भाग तथा पीठ देखनी पडती है। हृदयकी जॉच करनेके लिये वॉये स्तन के आस पास का स्थान देखना होता है। स्वाभाविक अवस्थामें हृदयकी गति एक समान मालूम होती है। रोगकी अवस्था मे रुकावट, असमानता तथा कमजोरी मालूम होती है।

जीभकी परीक्षा।

जीभकी अवस्था देखकर भी आजकल रोगके सम्बन्ध में बहुतसी वातें जानी जा सकती है। खास कर जीभका रंग देखकर पेट की अवस्था जानने मे वडी सहायता मिलती है। स्वस्थ अवस्थामें जीभ सदा ही सरस और निर्मल रहती है। नये वुखारमें जीभ सूखा हुई, स्फोट ज्वरमें लाली लिये हुए और पित्तज्वर में किनारा और आगेका भाग लाल दिखायी देता है। सान्निपातिक विकार ज्वरमें जीभ पर कॉटे कॉटे दिखायी देते हैं। सूखी जीभ रक्तकी कमी और कमजोरी वतलाती है। जव रोग घटने लगता है, तव सूखी जीभ तर हो जाती है और पीछेकी ओर से साफ होने लगती है। जव कब्जियत होती है या पाचन शक्ति खराव हो जाती है, तव जीभ पर सफेद लेप चढ़ जाता है। यकृत में गोलमाल होने से

जीभका रंग पीला हो जाता है। रक्त सचालन की क्रियामें गड़बड़ी पैदा हो जानेसे जीभ में नीलापन आ जाता है। भोजन अच्छी तरह न पचनेसे जीभ पर जख्म या छाले पड जाते है। पाण्डु या कमला की बीमारी में जीभ भी पीली पडजाती है। मन्दाग्नि की बीमारी में जीभके किनारे लाल तथा मध्य और मूल भाग पर सफेद लेप दिखायी देता है। स्नायविक और पाक स्थलीकी बीमारी में तथा उत्तेजना में जीभ भारी, फूली हुई और कोमल दिखायी देती है, तथा उस पर दॉत दबाने से दॉत के दाग पड जाते है। तेज बुखार में भी जीभ पर सफेद रगका बहुत मोटा लेप चढ़ जाता है।

जीभ का काला रग बहुत ही अशुभ लक्षण माना जाता है। आमाशयकी बीमारी में जीभ पर काले दाग पड जायें तो समझना चाहिये कि रोगीकी जीवनी शक्ति क्षीण हो रही है। चेचकमें जीभ काली पड जाने पर रोगीको अक्सर मृत्यु हो जाती है। मस्तिष्क अवश हो जाने पर जीभ का हिलना बन्द हो जाता है या जीभ बाहर निकलकर एक ओर पडी रहती है। पाण्डु रोग में जीभ पर काला लेप दिखायी दे तो समझना चाहिये, कि यकृतकी अवस्था बहुत ही खराब हो गयी है। किसी भी नयी बीमारीका प्रबल आक्रमण होने पर यदि जीभ कॉपने लगे और बोली में लडखडाहट दिखायी दे तो समझना चाहिये, कि रोगीका बचना कठिन है।

प्रदाह।

इस पुस्तक में अनेक रोगों का वर्णन करते समय "प्रदाह" शब्द व्यवहार किया गया है, इसलिये प्रदाह शब्द का अर्थ जान लेना आवश्यक है। शरीरका कोई भी स्थान लाल हो जाय, वहाँ सूजन मालूम हो, हाथ रखने से वह स्थान गरम मालूम हो और वहाँ पर दर्द हो तो समझना चाहिये कि उस स्थान में प्रदाह हुआ है। रक्तवाही शिराओं में रक्त संचय होने के कारण तथा वहाँ नये-नये कोष उत्पन्न होने के कारण वह स्थान सूज जाता है। आक्रान्त स्थान में रक्त की चला चल अधिक होने के कारण तथा टिस्सुओं का नाश और वृद्धि होने के कारण वह स्थान गरम मालूम होता है। स्नायुओं की उत्तेजना, रक्त का दबाव और क्रियाधिक्य के कारण उस स्थान में दर्द होता है।

प्रदाह में स्थान और अवस्थानुसार दर्द कम या अधिक होता है। प्रदाह में पीप उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है, परन्तु प्रदाह तथा रोगी की शारीरिक अवस्थानुसार पीप कभी जल्दी और कभी देरी से उत्पन्न होता है। नये प्रदाह में कभी-कभी बुखार भी आ जाता है और प्रदाह बढ़ने के साथ बुखार भी तेज हो जाता है।

वेदना या पीड़ा।

वेदना या पीड़ा द्वारा यह जानने में आता है कि रोगाक्रान्त यन्त्र की क्रिया किस प्रकार सम्पादित हो रही है। इसके

कई प्रकार है। जो वेदना किसी निर्दिष्ट स्थान में निर्दिष्ट समय के लिये प्रकट होती है, जो वेदना एकायक शुरू होकर एकाएक गायब हो जाती है, और जिस वेदना में चापने या दवाने से आराम मालूम होता है, उसे स्नायविक वेदना कहते है। जो वेदना दाब, मालिश या सेक से कम होती है तथा जो वेदना एकायक शुरू होती है और एकायक दूर हो जाती है, उसे आक्षेपिक वेदना कहते है। जो वेदना हर वक्त बनी रहती है, जिस वेदनामें आक्रान्त स्थान या समूचा शरीर गरम रहता है, जिस वेदनामें नाडीकी गति तेज होती है, जो वेदना हिलाने डोलाने, चापने और स्पर्श करने से बढती है तथा स्थिर रहने से आराम होता है, उसे प्रदाह जनित वेदना कहतेहै। यकृत प्रदाहके कारण दाहिने कन्धे की हड्डी मे और हृद्पिण्ड की बीमारी मे वायीं बॉह मे दर्द मालूम होता है। प्रदाहकी वेदना दवाने और पेशीकी वेदना हिलाने डोलाने से बढती है, किन्तु स्नायुशूलकी वेदना में दबाने या हिलाने डोलाने से कोई अन्तर नहीं पडता। पथरी रोग होने पर लिङ्गेन्द्रियके अगले भागमे वेदना मालूम होती है।

कै और हिचकी।

किसी रोगी को कै होती हो तो समझना चाहिये कि उसकी पाकस्थली, वक्षस्थल, फेफडा जरायु या मस्तिष्क की क्रियामें गोलमाल हो गया है। इसी तरह किसी रोगीको

हिचकी आती हो तो समझना चाहिये कि उसे क्रिमि, आमाशय या यकृत प्रदाह की शिकायत है।

भूख और प्यास।

स्वस्थ अवस्थामें भूख नियमित समय पर तथा नियमित रूपसे लगती है। रोगकी अवस्थामें कभी घट और कभी बढ़ जाया करती है। नये रोगों में अक्सर भूख बढ़ती है और पुराने रोगो में या रोगकी परिणामावस्था में घट जाती है। पुराने रोगो में मन्दाग्नि अशुभ लक्षण मानी जाती है। पाकाशय और क्रमिदोष के कारण भूख बहुत ज्यादा बढ़ जाती है।

बुखार और प्रदाह मे मुख में रक्ताधिक्य होनेके कारण और पाकस्थली में रसकी कमी के कारण मुँह सूखता है, इसलिये प्यास लगती है।

मल।

भिन्न-भिन्न रोगों में मलकी अवस्था भी भिन्न-भिन्न प्रकारकी हो जाया करती है। प्रादाहिक पीडा, मांस पेशी की दुर्बलता, छोटी आँतकी जड़ता, यकृतसे पित्त निकलकर उनका आँत में प्रवेश करना और शरीर में रक्त की कमी हो जाने पर कब्जियत उत्पन्न होतीहै। पित्तके अभावमे पाण्डु या मटमैला, पित्त की अधिकता में काला, पाकस्थली मे अम्लत्व होने पर हरा और आँतके प्रदाहमें खूनी आँव मिला दस्त होताहै। मल कठिन

हो तो समझना चाहिये कि अन्त्रावरक झिल्ली की उग्रता, भीतरी उत्ताप में कमी या अधिकता और आँतों के रस में कमी की शिकायत समझना चाहिये। आप ही आप अनजान में दस्त हो जाना बहुत ही बुरा लक्षण है। यह अकसर मृत्यु सूचक माना जाता है।

मूत्र।

मल की तरह मूत्र पर भी रोग का प्रभाव पड़ता है। पूरी उम्र के स्वस्थ मनुष्यों को दिन रात में एक सेरसे लेकर डेढ़ सेर तक पेशाब होता है। यकृत की बीमारी होनेपर पेशाब का रंग गहरा पीला होताहै और उसमें तली भी जमतीहै। यदि पेशाब वजन में ज्यादा और साफ हो तो स्नायविक बीमारी समझनी चाहिये। पेशाब में रक्त की मिलावट होने से उसका रंग धुमैला हो जाता है। पेट में कृमि होने से पेशाब करने के बाद दूध की तरह या चूने के पानी की तरह सफेद पेशाब होता है। पेशाब में अम्लत्व या एसिड रहने से उसका रंग गहरा लाल हो जाता है। रोग बहुत बढ़ जाने पर पेशाब का रंग काला पड़ जाता है। बुखार में जब नाड़ी तेज रहती है, तब पेशाब कम और लाल रंग का होता है। मधुमेह की बीमारी होने पर पेशाब में चीनी जाती है और रोगी जहाँ पेशाब करता है वहाँ चिउंटे लगते हैं।

स्वस्थ अवस्था में पेशाब का रंग सफेद किन्तु,कुछ पीला-पन लिये रहता है। वृद्धावस्था में पेशाब अधिक बार होने पर

भी परिमाण में कम, बदबूदार और गँदला होता है। ि
का मूत्र अक्सर सफेद होता है और उसमें तली पड़ती
जो लोग हमेशा काम में लगे रहते हैं, उनको पेशाव कम
गँदले रंग का होता है। जो लोग आलस्य में दिन बिताते
उनको पेशाव अधिक और सफेद रंग का होता है। खान
के पदार्थों के अनुसार पेशाव का रग और गन्ध भी बद
है। स्वस्थ अवस्था में पेशाव का फेना तुरन्त गायव
जाता है। परन्तु पेशाव मे अंड लाल की मिलावट होने
वैसा नहीं होता। यकृतकी बीमारीमें पेशाव में तली पडती
मूत्राधार प्रदाह, मूत्राशय मे पथरी का आना, मूत्रकृच्छ
सान्निपातिक बुखार में खूनी पेशाव होता है। मूत्र में
होने पर शुक्रमेह, अण्डलाल होने पर वृक्क प्रदाह, कफ
पर मूत्राशय प्रदाह और पत्थर के कण होने पर पथरी
बीमारी समझना चाहिये।

इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक ढंग से पेशाव की परीक्षा
यह भी बतलाया जाता है कि पेशाव में कौन पदार्थ कित
परिमाण में मिला हुआ है अथवा किस रोग के कीट उस
मौजूद है, परन्तु यह विधि साधारण पाठकों के लिये उपयो
और साध्य न होने के कारण, हम उसे यहाँ अंकित कर
उचित नहीं समझते। जिन्हे यह सब बातें जानने की इच्छ
हो उन्हें किसी लेबरेटरी या डाक्टर के यहाँ पेशाव भेज क
उसकी परीक्षा करवा लेनी चाहिये।

रोगी परीक्षा।

अब हम यहाँ कुछ ऐसी बातें अंकित करना चाहतेहैं,जिससे रोग की अवस्था भली भाँति समझी जा सके और रोग के बारीक से बारीक लक्षणों को ध्यान में रख कर दवाका चुनाव किया जा सके। यदि रोगी सामने हो तो चिकित्सक को चाहिये कि स्वयं देख भाल कर तथा रोगी से भली भाँति पूछ कर इन लक्षणों को समझ ले। यदि रोगी एक जगह तथा चिकित्सक दूसरी जगह हो तो रोगी को चाहिये कि निम्न-लिखित बातों में से अधिक से अधिक बातों का पता लगाकर वह डाक्टर को लिख भेजे, ताकि उसका इलाज अच्छी तरह हो सके और वह जल्दी आराम हो जाय।

यहाँ चिकित्सक को यह ध्यान में रखना चाहिये, कि सब से पहले रोगी को अपनी अवस्था बतलाने का मोका देना चाहिये। यदि रोगी न बतला सके तो उसके पास रहनेवाला आदमी बतला सकता है। जब वह हाल बतला चुके तब स्वयं चिकित्सक को तरह तरह के प्रश्न पूछ कर जरूरी बातों का पता लगा लेना चाहिये। रोग के कुछ लक्षण ऐसे होते हैं जिन्हें रोगी ही अनुभव करता है। यदि वह न बतलाये तो चिकित्सक उन्हें नहीं जान सकता। दर्द, मिचली, बेचैनी, मृत्युभय इत्यादि ऐसे ही लक्षण हैं। इन्हें प्रश्नगत या सबजे-क्टिव (subjective) लक्षण कहते हैं। ऐसे लक्षणों का पता रोगी से पूछ-पूछ कर चिकित्सक को अवश्य लगा लेना

चाहिये। जो लक्षण बाहर से प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं और जिनके लिये रोगी से पूछ ताछ करने की जरूरत नहीं रहती, उनको प्रत्यक्ष या अबजेक्टिव (Objective) लक्षण कहते हैं। चतुर चिकित्सक ऐसे लक्षणों को पहली ही नजर में ताड़ लेता है।

अच्छी तरह इलाज करने के लिये निम्नलिखित बातों की जाँच करनी आवश्यक है:—

(१) रोग का कारण, रोग क्यों हुआ ? सरदी गरमी से हुआ, खान पान के दोष से हुआ या शरीर में किसी रोग का विष प्रविष्ट होने से हुआ ? रोग कितने दिनों से है ? इस रोग के पहले किसी और रोग की शिकायत थी या नहीं ? रोग घट रहा है या बढ़ रहा है ? रोग की मौजूदा हालत क्या है ? ध्यान रहे, अनेक बार केवल रोग का कारण जान कर ही दवा देने से रोग आराम हो जाता है, इसलिये रोग के कारण की जाँच सब से पहले होनी चाहिये।

(२) रोग का कोई इलाज किया गया था या नहीं ? यदि किया गया था तो किसके द्वारा ? वह इलाज डाक्टरी (एलोपैथी) था या वैद्यक या हकीमी ? उसमें कौन दवा दी गयी थी ?

(३) रोग होने पर अथवा रोगके पहले कोई टीका या इन्जेक्शन तो नहीं दिया गया था ? कोई तेज बीमारी

या कोई चर्मरोग तो नहीं हुआ था? यदि हुआ था तो उसे आराम करनेके लिये कौन दवा काम में लायी गयी थी?

(४) पिता या माता को अथवा पिता माता के कुलमें क्षय, गरमी, सूजाक, गण्डमाला आदि बीमारियाँ तो न थीं?

(५) शरीरमें अगर दर्द है तो वह किस स्थानमें और कैसा है? दाहिनी ओर है या बायीं ओर? दर्दका असर कितनी दूर तक है? दर्द में जलन है, बारबार बदलता रहता है, इधर उधर घूमता है, कनकन, झनझन, टपक, कतरने की तरह, नोचने की तरह, काटने की तरह, चिबाने की तरह, कसकर पकडने की तरह, सुई भोकनेकी तरह, खींचने की तरह या किसी दूसरी तरह का है? सदा एक सी हालत बनी रहती है या उसमें परिवर्तन होता है? दर्द एकायक शुरू होकर धीरे-धीरे बन्द होता है या बन्द ही नहीं होता? दिनमें किसी खास समय दर्द होता है या नियमित रूपसे कुछ घंटों या दिनों के अन्तरसे होता है? शरीर हिलाने डोलाने, सेंकने, रगडने, दाबने या कोई और क्रिया करने से दर्द घटता बढ़ता है या ज्योंका त्यों रहता है? अंग सचालन, आराम, सोने, बैठने, झुकने, चलने, खड़े रहने, खुली या बन्द हवा लगने, उजाला, हो हल्ला या बातचीत से, खाने पीने से, भय, क्रोध आदि मानसिक विकारों से अथवा किसी और

बातसे घटता या बढ़ता है ? दर्द वाले स्थान का सम्बन्ध अगर शरीरके किसी दूसरे भाग से है तो किससे ? दर्दवाला स्थान लाल या सूजा हुआ है ? सूजन कड़ी है या मुलायम ? वहाँ उँगली से दबाने पर कोई चिन्ह (गढ़ा पड़ जाना आदि) बन जाता है या नहीं ?

(६) रोगीकी मानसिक अवस्था कैसी है ? वह रोग के विषय में अथवा रोग के कारण क्या सोचता या अनुभव करता है ? वह सब कुछ धीरता से सह रहा है, रोता है, चिन्ता करता है या डरता है ? रोगके कारण उसकी कोई मानसिकशक्ति (विचारशक्ति स्मरणशक्ति आदि) पर बुरा प्रभाव तो नहीं पड़ा ? कोई अंग बेकार तो नहीं हो गया ?

(७) रोगीके मनोभाव कैसे हैं ? उसे कोई झूठी आशंका तो नहीं होती ? गलेमें मानो कुछ अटका है, शरीर पर चिउटी रेंग रही है आँख बन्द करते ही गिर पड़ूँगा, पैर भीगे हुए हैं इत्यादि झूठी शंकायें तो वह नहीं करता ?

(८) शरीरके अन्यान्य अंगों की अवस्था कैसी है ? इन्द्रियों की तेजी, शरीरका दुबलापन, किस करवट सोनेसे आराम मिलता है, किस अंगसे किस अंगमें रोगका आक्रमण होता है—दाहिनेके बाद बायें में या बायेंके बाद दाहिने में ?— इत्यादि उपसर्ग भी ध्यान में रखनें चाहिये ।

(९) किसी जख्म या आंख, नाक, कान, मुह, जन नेन्द्रिय आदिसे कोई स्राव निकलता हो—कुछ बहता हो तो यह देखना चाहिये कि उसकी तादाद कितनी है? उसका रग कैसा है? कपड़े पर दाग लगता है या नहीं? उसकी गन्ध कैसी है? उसके निकलने या दूसरे स्थानमें लगने से जलन या खुजली आदि तो नहीं होती? किस समय या किस अवस्था मे स्राव घटता या बढ़ता है?

(१०) रोगी के स्वाभाविक लक्षण, जैसे कि बिछौनेसे उठते ही पाखाने की ओर दौड पडना, प्यास न होना या बहुत पानी पीना, शरीर दबवानेसे आराम मालूम होना, हमेशा लेटे या पड़े रहने की इच्छा, हमेशा अधोवायुका निकलते रहना इत्यादि।

(११) रोगीकी मानसिक अवस्था, वह प्रसन्न रहता है या खिन्न? उसके मनमे शोक, भय, क्रोध, ईर्ष्या आत्महत्या करने की इच्छा, उदासीनता, निराशा, भ्रान्त विश्वास, प्रतिहिंसा आदि भाव तो नहीं है? उसकी सूरत रोनी तो नहीं है? स्वभाव चिड चिडा तो नहीं है? वह सदा दूसरों से लड़ा तो नहीं करता?

(१२) आखकी कोई शिकायत तो नहीं? पलक, पपनी, पुतली, कोया आदिकी अवस्था ओर कार्य ठीक है? आँखों के सामने अँधेरा या चिनगारियाँ तो नहीं दिखायी देतीं? देखने की शक्ति में कमी या कोई दोष तो नहीं है?

(१३) कान या श्रवणशक्ति की शिकायत, कानमें भौं भौं सों सों या झनझन आवाज, कानके किसी भी भागमें जलन या दर्द, बहरापन या साफ न सुनायी देना अथवा वैसा ही और कोई दोष।

(१४) नाकमें कोई गोलमाल, नाक से श्लेष्मा या खूनका गिरते रहना, पपड़ी जमना, नाक का बन्द हो जाना सूँघनेकी शक्ति का लोप हो जाना इत्यादि।

(१५) दाँतों की अवस्था कैसी है ? मजबूत है, ढीले हैं, हिलते हैं या गिर गये हैं ? मसूढ़ों की हालत, सूजन या उनसे खून गिरना अथवा कोई दूसरी शिकायत।

(१६) मुँह और जीभकी अवस्था, लार और थूक कैसे हैं ? घटीका सुड सुड़ाना, जीभ साफ है या लेप चढ़ी ? मुँह में बदबू, छाले या जख्म तो नहीं रहते ? बोलने, चिबाने जीभ हिलाने और निगलने में कोई तकलीफ तो नहीं होती ? चीजों का स्वाद ठीक-ठीक मालूम होता है या वे किसी और तरहकी मालूम होती है ? कौन चीजें खाने पीनेकी इच्छा होती है ? खाने पीनेके बाद कोई बुराई तो नहीं पैदा होती ?

(१७) खानेके बाद डकारों का आना, डकारों का स्वाद कैसा रहताहै ? जो चीजें तुरन्त खायी जातीहैं उन्हीं का स्वाद रहता है या कोई और ? मुहमें लार या पानी तो नहीं भर आता ? उसका क्या स्वाद होता है ?

(१८) रोगीको कै तो नहीं होती ? अगर होती है तो किस समय ? कै का स्वाद, रंग और तादाद ? क्या जी मिचलाया करता है ? किस समय ? कै में खून गिरता है या खाये हुए पदार्थ ?

(१९) तलपेटमें दर्द, भार, खाली मालूम होना या ऐसी ही कोई और शिकायत तो नहीं है ?

(२०) गले में दर्द, सूजन, निगलने में तकलीफ, जलन या और कोई शिकायत ?

(२१) पेट या कोठे की हालत, वायु निकल जाती है या पेटमें घूमा करती है ? दस्त आसानी से होता है या नहीं ? दस्तकी प्रकृति, तादाद और रंग, दस्तके साथ खून या आँव आदिका जाना, दस्तके पहले, दस्तके समय या दस्तके बाद कोई तकलीफ तो नहीं होती ? दस्त में छोटे या बड़े क्रिमि तो नहीं रहते ? मलद्वार में किसी तरह के जख्म, सूजन, मसे या बवासीर आदिकी शिकायत तो नहीं है ?

(२२) पेशाब कैसा होता है ? पेशाब का रंग पेशाब की तादाद और पेशाब कितनी बार होताहै ? पेशाब रख छोड़ने से वह कैसा हो जाता है ? उसके नीचे सफेद या लाल अथवा बालू जैसी तली तो नहीं जम जाती ? पेशाब करते समय जलन या कोई तकलीफ तो नहीं होती ? पेशाब खुलासा होता है या बूँद बूँद ? पेशाब में खून पत्थर के कण या पीप तो नहीं रहता ?

(२३) पुरुषेन्द्रिय की कोई शिकायत तो नहीं है ? मेह प्रमेह और उसके कारण, इन्द्रिय को ढकनेवाले चमड़े, और सुपारी में खाज, इन्द्रिय का प्रदाह, दर्द, सूजन या कोई और शिकायत। कोई स्राव तो नहीं होता ? यदि होता है तो कब, कैसा और कितना ?

(२४) साँस लेनेमें कोई तकलीफ तो नहीं होती ? दमाकी शिकायत तो नहीं है ? रोगी ऊँचाईपर चढ़ सकता है ? गहरी साँस लेने में कोई कष्ट तो नहीं होता ?

(२५) रोगीको खाँसी या कफ की शिकायत तो नहीं है ? कफ निकलता है या नहीं ? कफ पतला है या गाढ़ा ? कफ का रंग, रूप, प्रकृति, स्वाद। खाँसी कितने दिनों से आती है ? खाँसते समय कैसी आवाज होती है ? कफ गले के पाससे ही निकलता है या छातीकी गहराई से ?

(२६) कलेजे में दर्द या धड़कन तो नहीं होती ? अगर दर्द होता है तो किस स्थान पर ?

(२७) फेफड़ेकी कोई शिकायत, दाहिने या बायें फेफड़ेमें दर्द, खाँसते समय ऐसा मालूम होना, मानो छाती फट जायगी, सुई चुभोने जैसा दर्द।

(२८) कान के नीचे, बगलमें, जबड़े के नीचे, पुट्ठे में या शरीरके किसी अन्य स्थान की गिल्टी या गोलीमें सूजन, पीड़ा या कोई और शिकायत तो नहीं है ?

(२६) शरीर की हड्डियो या जोड़ों में सूजन, दर्द या कोई और शिकायत तो नहीं है ? कोई भी स्थान लाल, फूला हुआ और दर्द भरा तो नहीं है ? हाथ पैर में सूजन तो नहीं है ? शरीर का कोई भाग बेकार तो नहीं हो गया ?

(३०) कोई चर्म रोग तो नहीं है ? हमेशा खुजली या एकजिमाकी तकलीफ तो नहीं बनी रहती ? बदन से बदबूदार पसीना निकलना, शरीर गरम बना रहना, पैर के तलवे या किसी दूसरे अग में अधिक पसीना आना, हाथ पैरों में जलन या ऐंठन अथवा कोई और तकलीफ, चमड़े पर फोड़े फुन्सियाँ हों तो उनका रंग रूप, प्रकृति, संख्या इत्यादि। नख और बालों की अवस्था, केशों का झड़ना, शिर में तकलीफ।

(३१) रोगी को सरदी अधिक लगती है या गरमी ? इससे उसको क्या तकलीफ होतीहै ? कोई बीमारी हो जातीहै या मौजूदा बीमारी घट बढ़ जाती है ?

(३२) पेट, पाकस्थली, प्लीहा और यकृत आदि की शिकायतें, पाकाशय में दर्द, अम्ल शूल, यकृत में सूजन और उसमें दर्द, पतले दस्त, पानी पीने की प्रबल इच्छा पर पानी पीते ही कै हो जाना, खाने पीने की चीजों में रुचि या अरुचि, किस समय पर भूख लगती है इत्यादि।

(३३) नींद कैसी आती है ? रोगी बारबार जाग पडता है या मुर्दे से बाजी लगा कर सोता है ? सोते मे बडबडाना या बातें करना, चौंक पडना, डर जाना, बुरे स्वप्न देखना। रोगी

किस करवट सोता है ? सोते समय मुँह खुला रहता है या बन्द ? वह सोने के समय सोता है या कमजोरी के कारण चाहे जिस समय सोने के लिये बाध्य होता है ?

(३४) रोगीने खून साफ करनेके लिये या ताकत बढ़ानेके लिये कभी कोई दवा तो नहीं खायी ? अगर खायी है तो कौन सी दवा ? कितने दिनों तक ? उस दवा से क्या लाभ या हानि मालूम हुई ?

(३५) रोगी की इच्छा और वासनायें, उसे किसी से प्रेम करके निराश तो नहीं होना पड़ा ? आशा, निराशा, सांसारिक दुःख, आवश्यकताओं का अनुभव तथा ऐसी ही अन्यान्य झंझटों का भी शरीर तथा रोग से घनिष्ट सम्बन्ध होता है।

(३६) रोगी अगर बच्चा हो तो यह बतलाना चाहिये कि उसके माता है या नहीं ? उसने माता का दूध पिया है या वह ऊपर का दूध पिला कर पाला गया है।

(३७) रोगी की कोई खास आदत हो, शराब, गाँजा, अफीम, भाँग या और नशा खाता पीता हो तो वह चिकित्सक से पहले ही बतला देना चाहिये।

(३८) गर्दन, पीठ या रीढ में किसी तरह का दर्द या कोई और शिकायत, बाँह केहुनी, हाथ के कब्जे, हाथ, उँगली, नख, उरु, पैर, घुटना, तलवा, पैर की उँगलियाँ आदि की हालत, किसी तरह का दर्द या और कोई तकलीफ।

(३६) रोग शुरू होने और बढ़ने के समय पर खास ध्यान रखना चाहिये। अनेक बार केवल समय को ही लक्ष्य बनाकर रोग का इलाज किया जाता है।

(४०) स्त्रियों के मामलेमें यह जान लेना परमावश्यक है, कि उनके मासिक धर्म या ऋतुस्राव की क्या हालत है? वह पहले पहल किस समय शुरू हुआ? नियमित रूप से निश्चित समय पर होता है या कोई गोलमाल है? स्राव का रंग, गन्ध प्रकृति और परिमाण। ऋतु के समय क्या-क्या तकलीफ या शिकायत रहती है? स्राव पर किसी क्रिया या रहन सहन का कैसा असर पड़ता है? थोड़ा रज, ठीक समय पर ऋतु का न होना, ऋतु के समय पेट में दर्द इत्यादि।

(४१) रोगिनी को प्रदर की शिकायत तो नहीं है? यदि है तो कितने दिनों से? प्रदर का स्राव किस समय होता है? स्राव का रंग कैसा है—सफेद, पीला, हरा, लाल या पानी जैसा? जरायु की कोई बीमारी तो नहीं है? कामेच्छा, उसकी पूर्ति और शरीर पर उसका प्रभाव।

(४२) रोगिनी अगर विवाहिता है तो उसके बच्चे हैं या नहीं अथवा होते हैं या नहीं? उसे कभी गर्भपात तो नहीं हुआ? गर्भपात के समय कोई खास तकलीफ तो नहीं हुई थी।

(४३) गर्भावस्था में रोगिनी की शिकायतें, प्रसव के समय कष्ट या कोई खास घटना। जख्म हो गये हों, बहुत रक्त

गिरा हो या कोई और बात हुई हो तो वह भी जान लेना चाहिये।

(४४) रोगीनी अपने बच्चेको खुद दूध पिलाती है या नहीं ? रोगिनी को कभी स्तनो की कोई बीमारी तो नहीं हुई ?

(४५) रोगी की रहन सहन, खान पान, पहनावा, व्यवसाय तथा ऐसे ही अन्य बातें भी किसी-किसी समय बडे काम की प्रमाणित होतीं हैं।

यही सब बातें है, जो चिकित्सक को चिकित्सा आरम्भ करने के पहले जान लेना जरूरी है। यदि डाक्कर मोजूद न हो तो रोगी को अपने नाम, पता आदि के साथ इस तरहकी सभी बातें डाक्टरको स्पष्ट अक्षरों में लिख भेजनी चाहिये। रोगी को यह न सोचना चाहिये कि मेरी बीमारी से और इन बातों मे कोई सम्बन्ध नहीं है। बीमारी के साथ किस बातका कितना सम्बन्ध है, इसका निर्णय स्वयं डाक्टर ही करेगा। कभी कभी ऐसा होता है कि सूज़ाक या गरमी की बीमारी का विष, जिसे रोगी समझता है कि वह अच्छी हो गयी है, किसी ऐसी बीमारी के रूप में फूट निकलता है कि रोगी की कौन कहे, चिकित्सक भी चक्कर में पड जाते हैं और वे यह निर्णय नहीं कर सकते कि यह रोग क्यों हुआ है ? कभी कभी ऐसा होता है कि किसी भयंकर निराशा या दुःख के कारण कोई विकट बीमारी हो जाती है और वह

हजार उपाय करने पर भी अच्छी नहीं होती, परन्तु रोग का ठीक ठीक कारण मालूम हो जाय तो होमियोपैथी में ऐसी दवाएं मौजूद हैं जिनकी एकही खुराक देने से रोग एकदम आराम हो जाता है। इसी लिये यह सब बातें चिकित्सक को बतलाना जरूरी माना गया है।

रोगी को एक बात और ध्यान में रखनी चाहिये। जिस समय वह होमियोपैथिक दवा खा रहा हो, उस समय कोई शिकायत दूर करने के लिये बिना डाक्टर से पूछे उसे कोई और दवा, जुलाब आदि न खा लेना चाहिये। इसमे उलटा असर पड सकता है। यदि किसी डाक्टर के इलाज मे लाभ न हो और डाक्टर बदलने की जरूरत पड़े तो पुराने डाक्टर को धोखा न देकर, उससे स्पष्ट बतला देना चाहिये कि दूसरे का इलाज हो रहा है। दवा सेवन करते समय क्या फायदा हो रहा है, रोग घट रहा है या बढ़ रहा है-इसकी सूचना समय समय पर चिकित्सक को देते रहना चाहिये। यह बात हम यहाँ एक बार फिर बतला देना चाहते हैं कि होमियोपैथी मे दवा देने पर रोग का कुछ बढ़ जाना या किसी चर्म रोग का उभर पडना अच्छा लक्षण माना जाता है। उस हालत में दवा से अवश्य ही फायदा होता है, इसलिये घबडा कर दवा खाना बन्द न कर देना चाहिये।

शरीर-रचना।

चिकित्सा करनेवालों को मानव शरीर की रचना का अच्छा ज्ञान होना चाहिये और इसके लिये इस विषय के

स्वतन्त्र ग्रन्थोंका अनुशीलन करना चाहिये। यहाँ हम सक्षेप में कुछ अंगो का परिचय दे देना आवश्यक समझते है, ताकि विद्यार्थियोंको चिकित्सा करते समय कुछ सहायता मिल सके।

हमारे शरीर मे जितने अंग, जितनी नसें या जितनी हड्डियाँ हैं, उन सवों के कुछ न कुछ नाम निर्दिष्ट हैं, परन्तु हम अपने पाठको को मोटी मोटी बातें वताकर ही सन्तोष मानना चाहते हैं।

हमारा शरीर दो भागों में वँटा है,—शिर और धड। शिर मे दिमाग या मस्तिष्क, आँख, नाक, कान, मुँह, जीभ आदि अंग हैं। दिमाग शरीर का सर्व श्रेष्ठ अंग है। ईश्वर ने इसकी रक्षा के लिये हड्डियों की मजबूत खोपडी वना दी है। मनुष्य की सारी शक्तियाँ और सारे गुणों का स्थान मस्तिष्क ही है। मस्तिष्क एक झिल्ली से ढँका रहता है। उसे मस्तिष्कावरक झिल्ली कहते हैं। तेज बुखार तथा अन्यान्य कई वीमारियो में मस्तिष्क तथा इस झिल्ली पर प्रभाव पडता है और इसमें प्रदाह आदि उत्पन्न होता है।

शिरका सामने का भाग चेहरा या मुख मण्डल कहलाताहै। चेहरे में सव से ऊपर कपाल रहता है। कपाल के नीचे भौंह और भौंहके नीचे आँखोंके गढ़े रहतेहैं। आँखोंके भिन्न भिन्न अग पपनी, पलक, तारा या पुतली और कोया आदि नामसे पुकारे जाते है। आँखों के अन्दर का काला भाग पुतली और सफेद भाग कोया कहलाता है। कपाल के दोनों सिरे पर आँख के

बगल में कुछ दवा हुआ एक स्थान रहता है, जिसे रग गण्ड-स्थल या कनपटी कहते है। दोनों आँखों के नीचे दो गाल और गालों बीच में नाक होती है। नाक के दोनों छिद्रों को नासारन्ध्र या नथुने कहते है।

नाक के नीचे दो होठ होते हैं। ऊपर के होठ पर पुरुषों के मूछ निकलती है। दोनों होठों के बीच में मुँह होता है। मुँह में दाँत और जीभ रहती है। दाँत जिस स्थान में लगे रहते हैं, वह मसूढ़ा कहलाता है। जीभ की जड़ के पास गले का छेद रहता है, जहाँ से अन्न और पानी आदि पेट में पहुँचता है। इस छेद के ऊपरी भाग में एक अंकुर सा लटका करता है। इसे घटी या आल जिह्वा कहते हैं। जब यह बढ़ जाती है, तब गला सुड़सुड़ा कर खाँसी आती है। मुँह और दाँत आदि दो जबड़ों में बँटे रहते है। नीचे का जबड़ा हिलता है, ऊपर का स्थिर रहता है। नीचे वाले होठ के नीचे दाढी रहती है। दोनों गालों के किनारे पर कान लगे रहते है। कान का बाहरी हिस्सा दिखावे भर का होता है। कान के छेद में एक झिल्ली या पर्दा होता है। उसी से सुनने की क्रिया होती है। कान और जबड़े के नीचे कुछ ग्रन्थियाँ या गोलियाँ रहती हैं। इन्हें अंग्रेजी में ग्लैण्ड कहते हैं। इनमें कभी कभी प्रदाह हो जाया करता है।

शिर और धड़ को जोडने वाला भाग कंठ या गर्दन कहलाता है। गर्दन के दोनों ओर दो भुजाएँ और नीचे छाती

रहता है। छाती के नीचे पेट, पेट के नीचे तलपेट या पेड़ू और उसके नीचे जननेन्द्रिय रहती है। शरीर के अधिकांश महत्व पूर्ण यंत्र इसी स्थान में पाये जाते हैं।

छाती में बायीं ओर हृदय या कलेजा नामक यन्त्र है। इसी से रक्त सञ्चालन का काम होता है। रक्त सञ्चालन का काम करने वाली नस को धमनी कहते हैं। हृदय का आकार सरीफे के फल जैसा होता है और यह मुठी जितना बड़ा होता है। यह दोनों फेफड़ों के बीच में तिर्यक भाव से स्थित रहता है। धमनी द्वारा शुद्ध रक्त समूचे शरीर में पहुँचाने का और शिराओं द्वारा दूषित रक्त को एकत्र कर फेफड़ों से शुद्ध कराने का काम हृदय द्वारा ही सम्पादित होता है। रक्त शुद्ध होने पर वह पुनः धमनी द्वारा समूचे शरीर में संचालित होता है।

छाती में दोनों ओर की पसलियों के नीचे फेफड़ा या फुसफुस होता है। यह भी एक झिल्ली से ढका रहता है। फेफड़े के नीचे दाहिनी ओर यकृत या लीवर और बायीं ओर प्लीहा या तिल्ली होती है। यकृत भी रक्त को शुद्ध करने के कार्य में सहायता पहुँचाता है। प्रधानतः यह पित्त तैयार करता है। पित्त खाये हुए पदार्थ में मिलने से वह पचता है और पेट साफ रहता है। तिल्ली में बहुत सा खून जमा रहता है, जो आवश्यकतानुसार यकृत, पाकस्थली तथा अन्यान्य स्थानों में पहुँचता है। यकृत और प्लीहा बढ जाने पर

पाकस्थली और आँतों में भी विकार पैदा हो जाता है और रोगी का शरीर पीला पड़ जाता है।

मूत्र से लेकर गुह्य द्वार तक एक नली बनी हुई है, जिसे आँत कहते हैं। इस नली का एक अंश फूला हुआ रहता है और वही पाकस्थली या पाकाशय कहलाता है। पाकाशय के नीचे और ऊपर दोनों ओर आँत जुड़ी रहती है। इस आँत के अलावा एक छोटी आँत भी होती है। इसका सिरा बड़ी आँत के सिरे से जुड़ा रहता है।

खायी हुई चीजें लार के साथ मिल कर गलनाली के मार्ग से पाकाशय में पहुँचती हैं। पाकाशय में गेस्ट्रिक जूस नामक एक पदार्थ निकलता है, जिससे पाचन क्रिया में बड़ी सहायता मिलती है। खायी हुई चीजों का एक अंश यहाँ रक्त के रूप में परिणत होता है, जो यकृत, फेफड़ा आदि स्थानों में शुद्ध होने के बाद शरीर के शुद्ध रक्त में मिल जाता है। रक्त बनने के बाद भुक्त द्रव्यों का जो अंश शेष रहता है, उस पर और भी कई प्रक्रियाएं होकर कई तरह के रस तैयार होते हैं, जो अन्त में रक्त बन जाते हैं। सब से अन्त में जो निःसार भाग बच जाता है, वह पित्त की मिलावट से पीला होकर मल द्वार से मल के रूप में तथा इसका सरल अंश पेशाब और पसीने के रूप में बाहर निकलता है।

तलपेट में मूत्राशय आदि यंत्र हैं जहाँ मूत्र तैयार और सचित होता है। इसे बाहर निकालने का काम मूत्र नाली

द्वारा सम्पादित होता है,जिसका सिरा लिङ्गेन्द्रियके सिरे पर जाकर निकलता है। लिङ्गेन्द्रिय तीन मांस पेशियो से बनती है। सबसे ऊपरके टुकड़े को लिङ्गमुण्ड या सुपारी कहते हैं। इस पर एक झिल्ली चढ़ी रहती है, जिसमें स्पर्श शक्ति बहुत ज्यादा होती है। सुपारी को ढकने वाला चमडा छुछुरा कहलाता है। यह ऊपर चढ़ाने से सिपट जाता है और नीचे उतारने से फैल कर सुपारी को ढक लेता है। सुपारी में एक छिद्र रहता है। इसमें वीर्यनली और मूत्रनली के सिरे मिले रहते हैं। संगम के समय वीर्य और पेशाव करते समय पेशाब यहीं से बाहर निकलता है। लिङ्गेन्द्रिय के नीचे एक थेली में दो अण्डकोश रहते हैं, जो नसों के सहारे थैली के अन्दर लटका करते हैं। मैथुन के समय वीर्य प्रस्तुत करने का काम इन अण्डकोशों द्वारा ही सम्पादित होता है। लिङ्गेन्द्रिय की दोनों बगल दोनों पुट्ठों में कुछ गोलियाँ या ग्लैण्ड रहते हैं। निम्नाङ्ग में जाँघ, घुटने, घुट्टी, पंजा, उँगली आदि साधारण अंग हैं, जिनके विशेष परिचय की कोई आवश्यकता नहीं।

स्त्रियों के स्तन तथा प्रजनन अंगों को छोड कर अन्यान्य अंगों की बनावट पुरुषों के ही समान होती है। स्त्रियों के स्तन में कुछ ग्रन्थियाँ होती हैं जो बच्चे का जन्म होने पर दूध तैयार करती है। तलपेट में जरायु, डिम्बकोष, डिम्ब वाहक नली और जननेन्द्रिय आदि अंग होते हैं।

स्त्रियों की जननेन्द्रिय पुरुषों की तरह बाहर निकली हुई नहीं होती। उसकी बनावट एक प्रनाली के समान होती है। इसमें बाहर की ओर दोनों तरफ से दो होठ जैसे होते हैं। इन्हें भगोष्ट कहते हैं। योनि के दूसरे सिरे पर, तलपेट में जरायु नामक अग होता है। जरायु का आकार नासपाती या अमरूद के समान होता है। यह भीतर से पोला होता है इसका आकार घट बढ़ सकता है। पुरुष का संयोग होने पर जब स्त्री गर्भवती होती है, तब जरायु में ही गर्भ रहता है। जरायु के दोनों ओर दो डिम्बकोष रहते हैं। इनका आकार बादाम के सदृश होता है। डिम्बवाहक नली डिम्बकोष और जरायु के बीच में रहती है। प्रतिमास ऋतुस्राव के समय डिम्बकोष से एक डिम्ब निकल कर इस नली में होकर जरायु में पहुँचता है और वहाँ पुरुष के शुक्रकीट से सयोग होने पर वह भ्रूण के रूप में परिवर्तित हो जाता है। जरायु के निचले भाग में एक छिद्र रहता है। इसे जरायु का मुख कहते हैं। यहीं से पुरुष का वीर्य जरायु में पहुंचता है, यहीं से मासिक स्राव बाहर निकलता है और यहीं से बच्चे का जन्म होता है। यह बतलाना अनावश्यक है कि बच्चे के जन्म के समय जरायु का मुख और योनि मार्ग रबर की तरह फैलकर काफी बडा हो जाता है।

योनिद्वार और मलद्वार के बीच का स्थान कहलाता है। बच्चा होते समय कभी-कभी यह फट जाता है। योनि में

सतीच्छद या हाइमन नामक चन्द्राकार एक पर्दा रहता है। यह पतली झिल्ली का बना होता है। प्रथम संयोग के समय यह फट जाता है। कभी कभी मजबूत होने के कारण और इसका कुछ भी अंश फटा न होने के कारण संयोग और ऋतु स्राव में बाधा पड़ती है। उस अवस्था में अस्त्र चिकित्सा कराने की जरूरत पड़ती है।

स्वास्थ्य रक्षा के कुछ नियम।

कोई रोग हो जाने पर दवा करना उचित है, किन्तु यदि स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों का पालन किया जाय और रोग होने ही न दिया जाय तो और भी अच्छा है। नीचे खान पान और रहन सहन के कुछ ऐसे नियम दिये जा रहे हैं, जिनके पालन से स्वास्थ्य को ठीक रखने में बहुत सहायता मिल सकती है।

आहार—मनुष्य को अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिये सब से पहले अपने आहार पर ध्यान रखना चाहिये। बहुत लोगों की यह धारणा होती है कि हृष्ट पुष्ट बने रहने के लिये सब माल खाते रहना चाहिये, पर यह धारणा ठीक नहीं। केवल नमक रोटी खाकर भी स्वास्थ्य अच्छा रक्खा जा सकता है और ताक़त बढ़ायी जा सकती है। ताकत खाने की चीजों में नहीं पर उनके हजम हो जाने में है। यदि एक मनुष्य रात दिन बैठा रहता है, कोई परिश्रम नहीं करता,

साधारण रोटी दाल भी नहीं पचा सकता और आधी रोटी अधिक खा जाने पर बदहजमी की शिकायत करता है तो यह कब सम्भव है कि आप उसे हलुआ पूड़ी और माल मलीदा खिला कर मोटा ताजा बना दें। शहर में रहने वाले और सारा माल ही खाने वाले धनिकों की अपेक्षा देहात के वह किसान जो रूखी सूखी रोटी खाते है, अधिक स्वस्थ और बलवान होते हैं। इसका कारण स्पष्ट है। पहली श्रेणी के लोग अच्छा भोजन करने पर भी वे उसे पचा नहीं सकते। उन्हें बदहजमी, कब्जियत, आँव, पनले दस्त की शिकायत बनी रहती है। देहाती अच्छा भोजन नहीं पाता, पर जो कुछ खाता है, उसे ठीक से पचा सकता है। पाचन शक्ति ठीक होने के कारण भोजन उसके शरीर में लगता है और कोई रोग भी उसके पास फटकने नहीं पाता। तात्पर्य यह, कि भोजन ऐसा होना चाहिये, जो हजम हो सके। आहार साधारण से साधारण होने पर भी यदि वह अच्छी तरह हजम होगा, तो उससे शरीर पुष्ट हुए बिना न रहेगा।

जिस तरह केवल माल मलीदा खाने से ही शरीर पुष्ट नहीं हो सकता उसी तरह यह धारणा भी गलत है कि अधिक खाने से शरीर का अधिक उपकार होता है। भोजन की तादाद भी पाचन शक्ति के ही अनुसार निश्चित करनी चाहिये और यह कहावत सदा स्मरण रखनी चाहिये कि "खाने के लिये जिया नहीं जाता बल्कि जीने के लिये खाया जाता है।"

भोजन के लिये हमारे देश मे जो चीजें काम में लायी जाती हैं। उनके गुण भिन्न भिन्न है। किसी पदार्थ में किसी तरह की शक्ति है तो किसी पदार्थ में किसी तरह की। साधारणतः हमारे यहाँ दाल, चावल, आटा, तरकारी, घी, दूध, मांस और मछली यही चीजें खायी जाती है। यह सभी चीजें अपने अपने ढंग की निराली और अच्छी है। खयाल केवल इस बात का रखना चाहिये, कि इनको पकाते समय इनमें गरम मसाला, मिर्च, घी, तेल, खटाई, मिठाई या प्याज आदि चीजें इस तरह न मिला दी जायें, जिससे इनका गुण बदल जाय और इन्हे हजम होने में देरी लगे।

मांस में बकरे का मांस सब से अच्छा होता है और यदि इसमें घी या मसाला अधिक तादाद में नहीं मिलाया जाता, तो आसानी से हजम हो जाता है। इसके पकाने में कसर न रहनी चाहिये। प्रति दिन खाने की अपेक्षा सप्ताह में एक या दो दिन मास खाना अच्छा है।

खाने की समस्त चीजों में दूध और अण्डे का स्थान अधिक ऊँचा है। इसका कारण यह है कि इन चीजों में वे सभी सत्व पाये जाते हैं, जिनकी शरीर-पोषण के लिये आवश्यकता पड़ती है। और किसी चीज में सब गुण एक साथ नहीं पाये जाते। निरामिष भोजियों के लिये अण्डा बेकार है। दूध को जहाँ तक अपना सकें, अपनायें। यह जल्दी हजम भी होता है और ताकत भी देता है। मनुष्य चाहे तो केवल दूध

ही पीकर जीता रह सकता है । गाय का दूध सब से अच्छा माना गया है। खाँसी और क्षय की बीमारी वालों को बकरी का दूध फायदा करता है। बच्चों के लिये माता का दूध ही सब से अच्छा खाद्य है। जिन लोगों को दूध हजम न हो, वे दही और मठा खा सकते हैं।

खाना अच्छी तरह चिबाकर धीरे २ खाना चाहिये। बड़ी उम्रवालों को खाने की तादाद घटा देना चाहिये, ताकि बद-हजमी की शिकायत न हो। जाड़े में घी आदि अधिक खाया जा सकता है। भोजन की मात्रा भी जाड़े में कुछ बढ़ जाने से कोई हानि नहीं होती। गरमी के दिनों में सीधा सादा भोजन कुछ कम परिमाण में खाना अच्छा है। तरकारी जब तब बदलते रहना चाहिये। साग सब्जी अधिक खाना ठीक नहीं। भोजन के बाद ठंढा पानी से जठराग्नि मन्द पड जाती है। अजीर्ण रोग वालों को भोजन के बाद सुसुम पानी पीने से लाभ होता है। भोजन के बाद कुछ देर आराम करना अच्छा है, परन्तु ठूँस ठूँस कर खाने के बाद तुरन्त ही सो जाना ठीक नहीं। ऐसा भोजन सोने के एक घण्टा पहले होना चाहिये बहुत देर तक भूखे रहने से भी हानि होती है। दिन की अपेक्षा रात का भोजन अधिक सादा और हलका होना चाहिये।

दोपहर और रात को भर पेट भोजन करना चाहिये सुबह और तीसरे पहर कुछ हलकी चीजें खाकर जलपान कर लेना

चाहिये। भोजन का समय बाँध रखना अच्छा है। नियमित समय पर नित्य भोजन करने से स्वास्थ्य को बड़ा लाभ पहुँचता है। खाने की चीजें हमेशा ढक कर रखनी चाहिये। जिस समय कोई संक्रामक रोग फैला हो, उस समय इस नियम का पालन बड़ी दृढ़ता से करना चाहिये।

भोजन के बाद दाँत और मुँह अच्छी तरह धो लेना चाहिये। दाँत में अन्न के कण रह जानेसे मुँहमें दुर्गन्ध आती है और दाँत खराब हो जाते हैं। दाँत अच्छी तरह न धोने और सुबह दतून या मंजन न करने से वे जल्दी खराब होकर गिर जाते हैं। जिनके दाँत कमजोर हो और मसूढ़ों से खून निकलता हो, उनके लिये सुबह दतून करना लाभदायक है।

जल—भोजन की तरह जल के सम्बन्ध में भी बहुत सावधानी रखनी चाहिये। पानी पीने से खायी हुई चीजें अच्छी तरह गल जाती हैं, फलतः उन्हें हजम होने में देरी नहीं लगती। पीने के अतिरिक्त भोजन बनाने, बर्तन धोने और नहाने के लिये भी जल की जरूरत पड़ती है। यह बत लाने की आवश्यकता नहीं कि इन कामों के लिये जो पानी व्यवहार में लाया जाय, वह बहुत ही शुद्ध होना चाहिये। अनेक स्थानों में तालाब या पोखरे का पानी पीने के काम में लाया जाता है, परन्तु यह ठीक नहीं। यदि ऐसा पानी पीना ही पड़े तो उसे गरम करके अथवा फिल्टर द्वारा शुद्ध कर लेना चाहिये। नदी का बहता पानी उतना हानिकर नहीं

होता, परन्तु वर्षा में वह गन्दा हो जाता है इसलिये उन दिनों में उसे भी साफ किये विना काम में न लाना चाहिये। कुएँ का पानी अच्छा होता है, परन्तु उसमें सड पतवार न गिरना चाहिये। जिस कुए का पानी पिया जाता हो, उस कुए पर नहाना, कपड़े धोना और वर्तन मलना ठीक नहीं। इससे कुएं का पानी गन्दा हो सकता है। जिस समय कोई वीमारी फैली हुई हो, उस समय कुएं का पानी भी गरम करके ही काम में लाना चाहिये। तालाव, पोखरे, चौवच्चे आदि साल में एक वार साफ करवा देना चाहिये।

वायु—जल और भोजन के विना तो हम लोग कुछ समय तक जीते रह भी सकते हैं, परन्तु वायु के विना एक क्षण के लिये भी हमारा काम नहीं चल सकता। हम सदा साँस लेते हैं। साँस लेने के लिये शुद्ध वायु की जरूरत पडती है। किसी स्थान में जीव जन्तु या घास फूस सडने तथा मल मूत्र पडा रहने से वहाँ की हवा खराव हो जाती है। हम लोग साँस से जो हवा छोडते हैं, वह भी गन्दी रहती है। जहाँ छोटे स्थान में वहुत आदमी रहते हैं और किवाड़े वन्द करके सो जाते हैं, वहाँ की भी हवा इसी कारण से गन्दी हो जाती है। ऐसी हवा से हमेशा वचना चाहिये। छोटी जगह में वहुत आदमियों का रहना या सोना ठीक नहीं। सोने के कमरे की दो एक खिडकियाँ अवश्य खुली रखनी चाहिये। यदि खिडकियों से अधिक हवा आती हो और सर्दी लग जाने का

भी हैजा, प्लेग आदि संक्रामक बीमारियों का अखाड़ा बना रहता है, इस लिये वैसा स्थान भी रहने के लिये हरगिज पसंन्द न करना चाहिये। शहरों में नीचे की अपेक्षा ऊपर का स्थान अधिक अच्छा होता है। मकान में सूर्यकी रोशनी आने से प्लेग, हैजा, चेचक आदि घातक रोगों के कीड़े मर जाया करते हैं, इसलिये मकान में रोशनी आनेका प्रबन्ध अवश्य रहना चाहिये। यदि इसमें कुछ कमी हो तो खुली हवा और रोशनी में घूम कर वह पूरी कर लेनी चाहिये। घरकी दीवारें और जमीन साफ रखने के लिये लीपने, पोतने, धोने और झाड़ने का काफी प्रबन्ध रहना चाहिये और यह काम अच्छी तरह होता है कि नहीं इसपर दृष्टि रखनी चाहिये।

निद्रा—मनुष्य रात दिन लगातार परिश्रम नहीं कर सकता। कर भी सके तो स्वस्थ्य नहीं रह सकता। विश्राम के लिये ही निद्रा की सृष्टि हुई है। शारीरिक अवस्थानुसार छः घण्टे से लेकर नव घण्टे तक सो लेना मनुष्य के लिये नितान्त आवश्यक है। युवकों की अपेक्षा छोटे बच्चों को अधिक नींद आती है और वृद्धों को कम। दिन के समय सोना हानिकर है। गरमी के दिनो में आधा या एक घण्टा दिन के समय सोया जा सकता है। रात में जागरण करने अथवा दिन को रात और रात को दिन बनाने से स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। यदि कोई सो रहा हो तो उसे कच्ची नींद

से जगाना ठीक नहीं। यकायक जोर से चिल्लाकर भी किसी को न जगाना चाहिये। इस तरह जगाने से सोने वाला चौंक पडता है और कभी कभी उसकी तबियत भी खराब हो जाती है। अच्छी तरह नींद न आती हो तो कोई नशीली चीज का सेवन न करना चाहिये, बल्कि किसी चिकित्सक से उसका इलाज कराना चाहिये।

स्नान—स्वास्थ्य रक्षा के लिये नित्य नियमित समय पर ठण्ढे जल से स्नान करना भी आवश्यक है। स्नान से शरीर साफ और शीतल हो जाता है। पसीने की बदबू भी दूर हो जाती है और शरीर की सहन शक्ति बढ़ती है। स्नान के पहले शरीरमें सरसों का और शिर में कोई सुगन्धित तेल लगाना अच्छा है। इससे कान्ति और स्वास्थ्य बढ़ता है। नहाने के लिये काफी पानी होना चाहिये। तालाब या नदी में नहाया जा सके तो और भी अच्छा है। डुबकी लगा कर नहाने से बड़ा लाभ होता है। जिन्हें कलका ही पानी मिल सकता हो, उन्हे टब रखना चाहिये। तात्पर्य यह कि चूल्लू भर पानी में नहाने की अपेक्षा न नहाना ही अच्छा है। जिन्ह ठढे पानी में नहाने से हानि पहुँचती हो या सरदी लग जाती हो, उन्हें गरम पानी से नहाना चाहिये। कमजोर तथा रोगी मनुष्यों को तो और वात तथा हृदयकी बीमारी वालों को ठढे जलसे स्नान न करना चाहिये। भोजनकी तरह स्नान के लिये भी एक निश्चित समय बाँध रखना अच्छा है।

स्नान करते समय वदनको तौलिये या अगौछे से खूब रगड़ना चाहिये। नहाने के वक्त पहले शिरपर तथा वादको दूसरे अंगों पर पानी डालना चाहिये। नहानेके पहले जिन्हे कसरत करनेकी आदत हो उन्हे अच्छी तरह ठंढानेके वाद नहाना चाहिये। परिश्रम करने से पसीना आ गया हो तो पसीना सूखने के वाद ही नहाना चाहिये। भोजन के वाद नहाना ठीक नहीं। यदि किसी कारण से नहाना ही पड़े तो एक घण्टे ठहर कर नहाना चाहिये। समुद्र के पानी मे या पानीमें थोड़ा सा नमक मिलाकर नहाना लाभ दायक है। वलवान मनुष्यों को सुवह और कमजोर मनुष्योंको कुछ देरीसे (९-१० वजे) नहाना चाहिये।

कसरत-कसरत करते रहने से शरीर सवल, फुर्तीला और स्वस्थ रहता है। भूख वढ़ती है और शरीर के समस्त यंत्रोकी क्रिया सुचारू रूपसे सम्पादित होकर मनुष्य दीर्घ जीवन प्राप्त करता है। आलस्य मानव-शरीरका शत्रुहै। इससे शरीर वेकार हो कर व्याधि मन्दिर वन जाता है। शहर के आलसी आदमियो मे नाना प्रकार की व्याधियों के कारण जो हाहाकार मचा रहता है, उसका कारण उनका आलस्य ही है। परिश्रमी मनुष्यों को उनकी तरह स्वप्न में भी रोगों की शिकायत नहीं करनी पड़ती।

व्यायाम या कसरत सुवह शाम दोनों वक्त की जा सकती है। दोनों वक्त न सध सके तो एकही वक्त करना

चाहिये। दंड, बैठक, मुद्‌गर की जोड़ी हिलाना, कुस्ती लड़ना आदि देसी कसरतें स्वास्थ्य के लिये बहुत अच्छी हैं। बेनेट और मेक फेडन आदि पश्चात्य व्यायाम शास्त्रियों की कसरतें भी की जा सकती हैं। खुली हवामें अपनी शक्तिके अनुसार अथवा जब तक कपाल पर पसीना न आजाय तब तक कसरत करना चाहिये। जिन्हें ऐसी कसरत करने में कोई असुविधा हो उन्हें सुबह शाम खुली हवामें घूमने का ही अभ्यास करना चाहिये। घूमने की कसरत भी बहुत अच्छी कसरत है। इसमें भी शरीर के समस्त अंगों की कसरत हो जाती है। घूमते समय सीना निकाल कर जवाँ-मर्दकी तरह तेजीसे चलना चाहिये। वृद्धों के लिये भी घूमने की ही कसरत सबसे अच्छी है। जो रोगीहों या बिलकुल ही न चल सकते हो वे गाड़ीमें बैठकर घूम सकते है। कई योगासन भी व्यायाम का काम देते हैं। कसरत चाहे जिस तरह की हो अपनी शक्ति देखकर ही करनी चाहिये। जिस तरह अधिक परिश्रम से हानि होती है, उसी तरह अधिक व्यायाम से भी हानि होती है।

मल मूत्र–मल मूत्र तथा छींक, प्यास, भूख आदि शरीर के अन्यान्य वेगों पर उचित ध्यान देना चाहिये। सुबह बिछौनेसे उठते हो मल त्याग से निवृत्त हो जाना चाहिये। सुबह मल त्याग की आदत न डालने से असमय में इसके लिये दौड़ना पड़ता है या वेग को रोकना पड़ता है, जिससे या तो कामका

हर्जा होता है या स्वास्थ्य बिगड़ता है। पेशाब के वेग को भी तुरन्त मिटा देना चाहिये। इन प्राकृतिक वेगों को रोकने से अनेक प्रकार की बीमारी हो सकती है।

दुर्व्यसन–संसार में ऐसे मनुष्यो की संख्या बहुत कम है, जो किसी न किसी दुर्व्यसन के चंगुल में न फँसे हो। जो मनुष्य किसी दुर्व्यसन में किसी भी कारण से फँस जाता है, वह फिर शायद ही उससे छुटकारा पा सकता है। जूआ आदि कुछ ऐसे भी दुर्व्यसन हैं,जिनसे केवल आर्थिक ही हानि होती है, परन्तु सबसे अधिक हानिकर दुर्व्यसन वे है जो देखते देखते स्वास्थ्य को मिट्टी में मिला देते है। वेश्या गमन, शराब खोरी, अफीम, भॉग, गॉजा, चरस आदि मादक द्रव्यों का सेवन तथा चाय, काफी, बीड़ी आदि पीने का शौक ऐसे ही दुर्व्यसनों में शुमार किया जा सकता है। इन दुर्व्यसनों से सिवा हानि के कोई लाभ नहीं। चाय काफी पीने वालों को अवश्य ही कुछ देर के लिये ताजगी मिल जाती है। उन्हें मालूम होता है कि शरीर तथा मन की थकावट दूर हो गयी है, परन्तु इसका आखिरी नतीजा बुरा ही होता है। अफीम खाने वाले, भग पीने वाले और शराबी भी अपने अपने नशेकी तारीफ ही करते हैं। नशीली चीजें खाने से अवश्य ही थोडी देर के लिये शरीर में कृत्रिम शक्ति आजाती है, परन्तु अन्त में शरीर की बची खुची शक्ति भी नष्ट हो जाती है। कभी–कभी तो इनके सेवन करनेवालों को भयकर बीमारीयों का शिकार

होना पडता है। दुर्व्यसन सभी बुरे हैं। हर हालत में। हर निगाह में बुरे हैं। स्वास्थ्य की सच्ची कामना रखने वालों को इनके प्रलोभन में भूल कर भी न फँसना चाहिये।

सावधान! स्वास्थ्य रक्षा के लिये इनके अतिरिक्त और भी अनेक बातों में सतर्क रहने की आवश्यकता है। बाजार से आनेवाली चीजों के साथ अनेक बार बड़े बड़े रोगों के बीज घर में घुस आते है,इसलिये सभी चीजें धोनेके बादही काम में लाओ। धोबी के यहाँ से आये हुए कपड़े भी घर में एक बार धो लेना लाभदायक है। जिस स्थान मे प्लेग, हैजा, चेचक आदि संक्रामक बीमारियाँ फैली हों। वहाँ के लोगों से कोई सम्बन्ध मत रक्खो। उनके यहाँ की कोई भी चीज घर में मत आने दो। क्षय और गरमी की बीमारी वालों से कोसों दूर रहो। उनका कोई भी कपड़ा या कोई भी वस्तु अपने काम में मत लाओ। अपने हृदय में सदा स्वस्थ रहने की कामना रक्खो और स्वास्थ्य रक्षा के नियमों का दृढता से पालन करो। ऐसी अवस्था में स्वास्थ्य के लिये हानिकर बातों का पता आपको अपने आपही लग जाया करेगा और आप उनसे दूर रह सकेंगे।

संक्रामक और स्पर्शाक्रमक रोग—जो रोग जल, वायु, दूध, मक्खी, मच्छर, खटमल, रूपये पैसे चिट्ठी पत्री, धूलिकण आदि पदार्थों द्वारा एक व्यक्ति के शरीर से दूसरे व्यक्ति के शरीर में स्थान से दूसरे स्थान में पहुँच जाते हैं, वे संक्रामक

रोग कहलाते हैं। जिन रोगों का विष स्पर्श से ही दूसरे शरीर में प्रवेश करता है, वे स्पर्शाक्रमक या लरछुत रोग कहलाते हैं। मूपिंग खॉसी और कर्णमूल प्रदाह आदि ऐसे ही रोग हैं। इसके अलावा कुष्ट, क्षय, आन्त्रिक या टाय फाइड ३३ ज्वर, चेचक, आरक्त ज्वर, न्युमोनिया, हैजा, रक्तामाशय, इन्फ्लुअंजा आदि बीमारियॉ ऐसी हैं जिनका विष उड़ कर भी फैलता है और छूने से भी, इसलिये यह स्पर्शाक्रमक और संक्रामक-उभयात्मक बीमारियॉ मानी जाती हैं। जिस समय यह बीमारियॉ फैल रही हों, उस समय इनसे बचने के लिये विशेष सावधानी रखन की जरूरत रहती है।

इन रोगों से बचने के लिये नाक में रुई आदि लगाकर धूलिके कण सॉस में जाने से रोकना चाहिये। इन रोगों से आक्रान्त रोगियों और उनके परिवार वालों से दूर रहना चाहिये। हैजा के रोगी की कै या दस्त तथा क्षयके रोगी का थूक यदि किसी तरह शरीर में लग जाय, तो उस स्थान को तुरन्त धो डालना चाहिये। रोगी के कमरे में खाने पीने का कोई सामान या दवा न रखनी चाहिये। रोगी के कमरेमें धूप, गन्धक, कपूर आदि डालना और फिनाइल छिड़कना चाहिये हलवाई या बनिये को यह रोग हुआ हो तो उसके यहॉसे कोई चीज न खरीदनी चाहिये और जिस स्थान में यह रोग जोरों से फैल रहे हों, वहॉ से आने वाली सभी चीजें धोकर या गरम पानी में उबाल कर काम में लानी चाहिये। वहॉ

के मनुष्यों से ही नहीं बल्कि 'बिल्ली, कुत्ते', चूहे और गाय बैल आदि जानवरों से भी दूर रहना चाहिये। यदि कभी इन रोगों के रोगियों की सेवा सुश्रूषा करनी पड़े तो बहुत ही सावधान रहना चाहिये और खाने पीने की कोई चीज छूनी हो तो पहले साबुन लगाकर हाथ अच्छी तरह धो डालने चाहिये। रोगीके कपड़े आदि जहाँ तक हो सके जला देना ही अच्छा है, क्योंकि अनेक बार ऐसे कपड़े किसी तालाब या कुएँ पर धोने से उसका पानी दूषित हो जाता है और उसे व्यवहार करने वाले समूचे गाँव में भयकर रूप से यह बीमारी फैल जाती है।

साधारण रोग।

ज्वर या बुखार।

यह पहलेही बतलाया जा चुका है, कि शरीर की गरमी ९७ ९८ डिग्री रहती है। जब किसी की यह गरमी इस से अधिक बढ़ जाती है, तब हम लोग कहते हैं कि उसे ज्वर या बुखार आया है।

बुखार अनेक कारणों से आता है। सरदी गरमी, पेटकी गड़बड़ी, अधिक परिश्रम, जागरण, ऋतु परिवर्तन, किसी अगमें प्रदाह या कष्टकर बीमारी का होना, शरीर में किसी प्रकार का विष घुस जाना आदि इसके कारण माने जाते हैं।

साइना ३० या २००–क्रिमिके कारण बुखार आनेपर इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०–पानी में भीगने या सरदी लगने के कारण बुखार, हाथ पैरमें पेंठन ऋतु परिवर्तन के समय बुखार, प्यास, अस्थिरता, करवट बदलते रहनेसे आराम मालूम होना।

युपेटोरियम पर्फो१Xया६–समूचे शरीर में पेंठन और दर्द, पित्तकी कै, शिरमें दर्द, जुकाम के साथ बुखार आना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहियें।

विरेट्रम विरिडि १X–तेज बुखार, शिरमें दर्द, जीभ सूखी और मैली या पीली कैकी इच्छा,कमजोरी, सर घूमना, बहुत कपकपी इत्यादि।

फेरम फस ३X, ६Xया, १२Xविचूर्ण–बुखारके साथ खाँसी शिरमें दर्द, और प्यास इसके प्रधान लक्षण हैं। इसका बुखार एकोनाइट की तरह तेज नहीं होता और नाडी जेल–सिमियमकी तरह कोमल नहीं होती।

इपीकाक ३X–जी मिचलाना,कै हो जाने पर मिचलीका बन्द न होना, श्वास कष्ट, खाँसी पेटमें गोलमाल, हरे या फेना फेना जैसे दस्त इत्यादि।

नक्सओमिका ६ या ३०–बुखार छूट जाने पर भी अगर कब्जियत बनी रहे तो इसकी २-३ खुराकें देने से

कब्जियत की शिकायय दूर हो जाती है और बुखा
दुबारा हमला होनेका भय नहीं रहता।

केमोमिला ६ या १२–बच्चों को दाँत निकलने के
बुखार आने पर तथा बेचैनी, चिड चिड़ाहट, रोते
इत्यादि लक्षण दिखाई देने पर इसे देना चाहिए।

पल्सेटला ६या ३०–घीमें पके हुए या देरी से
होने वाले पदार्थ खानेके कारण बुखारका आना, आधे
दर्द, प्यासका न होना, कै या मिचली, मुँह बेस्वाद, खा
इच्छा न होना इत्यादि।

एन्टिम क्रूड ६या३०–बदहजमी के कारण बु
भूख न लगना, अरुचि जी मिचलाना, जीभ पर सफेद
रोगी का दुःखी रहना, छूने से चिढ़ उठना।

आर्निका ६ या ३०–चोट या मार लगनेके
बुखार आने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिका ३० या २००–तेज प्यास पर थोड़ा
पानी पीना, रोगी सुस्त और उदास, शरीर में जलन दोपह
आधी रातको रोगका बढ़ना, कमजोरी, जीभ साफ, लस
पसीना इत्यादि।

विशेष सूचना–यह बुखार आसानीसे आराम हो
है। दिनमें ३-४ बार दवा देनी चाहिये। २४ घण्टे में एक
से फायदा न होने पर दूसरी दवा चुननी चाहिये। गरम

के ठंढा किया हुआ या सुसुम पानी पिलाना चाहिये। रोगी बालक या बहुत कमजोर न हो तो एक दिन उपवास कराना अच्छा है। बादको भूख लगने पर पहले साबूदाना, बार्ली आदि हलकी चीजें, बुखार छूट जाने पर क्रमशः मूंगकी दाल का पानी और रोटी आदि देना चाहिये। जब शरीर एक दम स्वस्थ मालुम हो तब स्नान करना चाहिये।

मैलेरिया ज्वर।

(Malarial Fever)

मैलेरिया भारतका वह भयंकर बुखार है, जिसके कारण प्रतिवर्ष इस देशके लाखों मनुष्य कई महीने तक शैय्या सेवन किया करते हैं। यह महारोग अब तक करोडो मनुष्यों की बलि ले चुका है और अब भी ले रहा है। विषम ज्वर, कम्प ज्वर, जूडी बुखार आदि और भी कई नामों से यह विख्यात है।

यह बुखार स्पर्शाक्रमक या लरछुत नहीं है। वैज्ञानिकों ने बड़ी छानबीन के बाद यह स्थिर किया है कि मैलेरिया बोर्सलस नामक जीवाणुही इस ज्वरका प्रधान कारण है। मच्छर इस रोगको फैलाने में सहायता पहुँचाते हैं। वे किसी रोगी को काटकर उसका विष अपने साथ ले जाते हैं और स्वस्थ मनुष्यों को काटकर उनका रक्त भी विषाक्त कर देते हैं, जिससे उन्हें भी वही बीमारी हो जाती है। इसी तरह एक शरीर से दूसरे शरीर में और दूसरे शरीरसे तीसरे शरीर में यह बीमारी

फैलती रहती है। नीची और तर जमीन में रहना, अनियमि आहार विहार, बहुत परिश्रम,मादक पदार्थों का सेवन, रात ठंढ और ओस लगना, बरसात या शरत ऋतु आदि इस उत्तेजक कारण माने जाते है।

इस देश में मैलेरिया बुखार कई तरह का दिखायी देत है। कभी-कभी रोगी को बुखार चढकर वह पूर्णरुप उत जाता है और कुछ समयका अन्तर देकर फिर चढ़ आता है ऐसे बुखार को सविराम ज्वर (Inter mittent Fever कहते हैं। कभी कभी बुखार अच्छीतरहसे नहीं उतरता-केवल कुछ समय के लिये उसकी तेजी घट जाती है और फिर वह ज्योंका त्यों हो जाता है। ऐसे बुखार को स्वल्पविराम ज्वर (Remittent Fever) कहते हैं। कुछ लोग इनको एक दूसरे से पृथक मानते हैं,परन्तु इनके लक्षण और इनकी चिकित्सा मे कोई विशेष अन्तर न होने के कारण हमने दोनों की चिकित्सा एक साथ ही लिखी है। इनके अलावा सांघातिक मैलेरिया नामक मैलेरियाका एक भेद और माना गया है। इसे अग्रेजी में Pernicious Malarial Fever कहते है और कुछ लोग इसे भी पृथक ज्वर मानते हैं।

साधारणत मैलेरिया में रोगी को पहले जाड़ा लगता है, फिर बुखार चढ़ता है, बाद को पसीना आकर बुखार उतर जाता है। बहुत दिनों तक इस रोग से पीडित रहने पर रोगी की तिल्ली और यकृत बढ़ जाते हैं तथा और भी कई शिकायतें

पैदा हो जाती है। कभी कभी ऐसे भी रोगी पाये जाते हैं, जिन्हें जूडी या बुखार आदि नहीं आते और बाहर से मैलेरियाका कोई भी लक्षण दिखायी नहीं देता, फिर भी उनके शरीर में मैलेरियाका विष मौजूद रहता है और उनकी तिल्ली तथा यकृत बढ़े हुए पाये जाते हैं। ऐसे रोगी भी मैलेरिया की ही दवा से आराम होते हैं, इसलिये यह भी मैलेरिया का ही एक भेद माना जाता है। इसे छिपा हुआ मैलेरिया (Masked Malarious Fever) कहते हैं। कभी-कभी बहुत दिनों तक मैलेरिया से पीड़ित रहने पर यकृत और तिल्ली के अलावा कमला, स्नायु शूल, पाकाशय की गड़बड़ी आई शिकायतें पैदा हो जाती हैं। यह भी मैलेरिया के ही अन्तर्गत होने के कारण इसका इलाज भी मैलेरिया के ही ढंग से किया जाता है।

लक्षण।

जूडी, बुखार और पसीना—यह तीनों मैलेरिया के प्रधान लक्षण हैं। जूडी की अवस्था में रोगी को जाडा लगता है, हाथ पैर ठंढे हो जाते हैं और रोगी कॉपने लगता है। कभी-कभी जाडा इतना तेज होता है, कि कई रजाई ओढाने पर भी रोगी को आराम नहीं मिलता। इस अवस्था में रोगी का चेहरा पीला पड़ जाना, दॉत कट कटाना, तेज श्वास-प्रश्वास, बार बार थोडा-थोडा पेशाब, नाडी शुद्ध, कठिन और तेज जीभ पर सफेद लेप, चेहरा सूखा, प्यास, मिचली

और कै आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। कुछ समय तक यह अवस्था रहने के बाद जाडा एकदम छूट जाता है और १०३ से लेकर १०५ डिग्री या इससे भी अधिक बुखार चढ आता है। इस अवस्था में चेहरा लाल सूखा और गरम हो जाता है, जोरों की प्यास लगती है, शिर में दर्द होता है, रोगी बेचैनी के कारण छटपटाता है और प्लीहा, यकृत तथा कमर आदि स्थानोंमें पीडा होती है। कई घंटे यह अवस्था रहने के बाद पसीना आना शुरू होता है। पसीना पहले कपाल और हाथ पैर में तथा बाद को समूचे शरीर में आता है। पसीना आने से बुखार उतर जता है और निश्चित समय के बाद फिर इसी तरह जाडा लगकर बुखार आता है। बुखार आने के पहले हडफूटन, हाथ पैर और पीठमें दर्द, शिरमें दर्द, जँभाई आदि लक्षण भी दिखायी देते हैं। बुखार पुराना हो जाने पर रोगीको जाडा नहीं लगता। यह भी नहीं मालुम होता कि बुखार किस समय आयेगा। एकायक किसी समय बुखार आ जाता है और कुछ घण्टोंके बाद पसीना आकर उतर जाता है। धीरे-धीरे रोगी कमजोर हो जाता है, यकृत और प्लीहा बढ़ जाते हैं, शरीर का खून घट जाता है और रोगीके हाथ पैर सूख कर पेट बाहर निकल आता है।

यह बुखार कभी चौबीस घंटेमें एक बार, कभी एक दिन का अन्तर देकर, कभी दो दिनका अन्तर देकर और कभी

तीन दिनका अन्तर देकर आता है। ऐसे बुखार एक जरा, दुजरा, तीन दिन जरा और चौथिया आदि नामों से पुकारे जाते हैं। कभी-कभी यह अन्तर इससे भी अधिक दिनोंका, कभी कई सप्ताहों का और कभी महीनों का हुआ करता है, परन्तु आम तोरसे पारी, तिजारी और चौथिया यही बुखार देखे जाते हैं। कभी-कभी दिनमें दो बार बुखार आता है। इस बुखार को दो वक्ता बुखार या द्विकालीन ज्वर कहते हैं। कोई कोई बुखार नित्य एकही समय पर आता है और कोई निर्दिष्ट समय के आगे या पीछे भी आता है। जिस बुखार में पित्तकी अधिकता होती है, वह एक दिन कम और एक दिन अधिक जोर करता है।

सविराम ज्वर प्रायः अच्छा हो जाता है। कभी-कभी वह स्वल्प विराम ज्वरके रूपमें परिणत हो जाता है। उस अवस्था में सन्निपातिक विकार दिखायी देते हैं। ऐसा हो तो सन्नि-पातिक ज्वर (टाय फाइड) का ही इलाज करना चाहिये। रोग सांघातिक हो जाने पर अजीर्णता, पतले दस्त, खूनी दस्त खूनी पेशाब, मुहमें जख्म और बदबू, नाक और मसूढ़ों से खून गिरना, शोथ, उदरी आदि लक्षण दिखायी देते हैं और बहुत दिनों तक भुगतने के बाद रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि मैलेरिया कई प्रकार का होता है। बुखार चढ़ने उतरनेके समय और ढग में भी विभिन्नता पायी जाती है, इसलिये हम पहले सभी तरह के बुखार, चढ़ने उतरने के समय, खास खास उपसर्ग आदिकी दवाओं की नामावली देकर बादको चुनी हुई दवाओं के लक्षण अंकित करेंगे।*

सविराम ज्वर—किनिनम सल्फ, युपेटोरियम पर्फो, आर्सेनिक एल्बम, वेराट्रम कार्व, केप्सीकम साइमेक्स आर्निका मोन्टेना, इपीकाक, इग्नेशिया, एन्टिमक्रूड, पोडोफिलाम, साइना, इलाटेरियम, रसटक्स, फोस्फरिक एसिड, एरेनिया, हाइड्रेस्टिस सीपिया, एन्टिमटार्ट, कार्बोवेज, ओपियम, कैक्टस, चायना, जेलसिमियम, वेप्टीशिया, नक्स-वोमिका, सल्फर, युकिलप्टस ग्लोब, मिनिएन्थिस, लेकेसिस, कल्केरिया कार्व, कल्केरिया आर्सेनिकम, एलस्टोनिया, केमोमिला, नेट्रम म्युरियटिकम, पल्सेटिला, फेरममेट, फेरम आर्सनिकम, सियेनोथस, मेलेरिया आफिसिनेलिस, आर्टिका युरेन्स, कष्टिकम, म्युरियटिक एसिड, एपिसमेल, विरेट्रम

* नामावली में जिन दवाओं के नीचे लकीर खींची हुई है, उनके लिये समझना चाहिये कि वे दूसरी दवाओं की अपेक्षा अधिक पसन्द करने योग्य है।

विरिडि, विरेट्रम एल्बम, लाइको पोडियम, सिड्रन, पल्सु रियस, हायोसायमस, कक्युलस, कोफिया इत्यादि ।

स्वल्प विराम ज्वर—एकोनाइट, बेलेडोना, जेलसिमियम, ब्रायोनिया, बेप्टीसिया, रसटक्स, युपेटोरियम पर्फो, इपीकाक, विरेट्रम विरिडि, एन्टिमक्रूड, आर्सेनिक, हायोसायमस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, ओपियम, साइना, कल्केरिया-कार्ब, कार्बोवेज, चायना, हेलीबोरस, लेकेसिस, म्युरेटिक-एसिड, स्ट्रेमोनियम, सल्फर, एन्टिमटार्ट, फोस्फरस, फोस्फरिक एसिड, लाइको पोडियम इत्यादि ।

सांघातिक ज्वर—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कैम्फर, कार्बोवेज, युपेटोरियम, पोडोफाइलम, रसटक्स, विरेट्रम विरिडि, ओपियम, आर्सनिक, फोस्फरस, क्रोटेलस, कैक्टस, हेमामेलिस, इत्यादि ।

जंगली स्थानों में—आर्निका, आर्सेनिक, कार्बोवेज, सिंकोना, साइना, फेरम, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, रसटक्स विरेट्रम ।

सरदी और जाड़े में—कल्केरिया, कार्बोवेज, सिंकोना, लेकेसिस, नक्स मस्केटा, पल्सेटिला, सल्फर, विरेट्रम ।

बसन्त और ग्रीष्म में—एन्टिम क्रूड, आर्सेनिक, बेलेडोना, केप्सीकम, कार्बोवेज, साइना, इपीकाक, लेकेसिस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर, विरेट्रम ।

पतझड के दिनों में--ब्रायोनिया, सिंकोना, नक्स वोमिका, रस, विरेट्रम।

अधिक क्वीनाइन खाने के कारण--आर्निका, आर्सेनिक, वेलेडोना, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, साइना, फेरम, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, नक्स-मस्केटा, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर, विरेट्रम।

प्रति दिन आने पर—एकोनाइट, आर्सेनिक, वेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, सिंकोना, इग्नेशिया, इपीकाक, लेकेसिस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

एक दिन के अन्तर से (तिजरा)-एन्टिमक्रूड, आर्निका, आर्सेनिक, वेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, केमोमिला, सिंकोना, इपीकाक, लेकेसिस, नेट्रम-म्यूर, नक्स मस्केटा, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

चौथे दिन (चौथिया) आने पर-एकोनाइट, आर्निका, आर्सेनिक, कार्बोवेज, इग्नेशिया, नक्समस्केटा पल्सेटिला, विरेट्रम।

दो दो सप्ताह में-आर्सेनिक।

प्रति वर्ष आने पर-आर्सेनिक, कार्बोवेज, लेकेसिस।

शाम को आने पर—एकोनाइट, आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, कार्बोवेज, इग्नेशिया, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर।

रात में आने पर—आर्सेनिक, बेलेडोना, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, केमोमिला, हिपर, मर्क्युरियस, नक्स-वोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

सुबह में आने पर—आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, कार्बोवेज, केमोमिला, सिंकोना, हिपर, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, सल्फर, विरेट्रम।

केवल जाड़ा और सरदी मालूम होने पर—ब्रायोनिया, केप्सीकम, सिंकोना, कोफिया, हायोसायमस, इपीकाक, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, विरेट्रम।

केवल जाड़ा और बुखार होने पर (पसीना नहीं)—एकोनाइट, आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया केप्सीकम, कार्बोवेज, केमोमिला, इग्नेशिया, इपीकाक, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर।

केवल जाड़ा और पसीना होने पर (बुखार नहीं)—आर्सेनिक, ब्रायोनिया, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

केवल बुखार, जाडा नहीं के बराबर और पसीना नदारद—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, कोफिया, इपीकाक, लेकेसिस, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, सल्फर, विरेट्रम।

केवल बुखार और पसीना (जाड़ा नहीं)—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, केमोमिला, सिंकोना, साइना, कोफिया, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

पसीना बहुत अधिक—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, कार्बोवेज, साइना, हिपर, मर्क्युरियस नेट्रमम्यूर, पल्सेटिला, रस, सेम्बुकस, सल्फर, विरेट्रम।

जाडा बुखार और पसीना एक समान—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, केप्सीकम, केमोमिला, सिंकोना, साइना, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

पहले जाडा, फिर बुखार—एकोनाइट, अर्निका, ब्रायोनिया, बेलेडोना, केप्सीकम, कार्बोवेज, सिंकोना, साइना, हिपर, हायोसायमस, इग्नेशिया, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

पहले बुखार, फिर जाड़ा—बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, केप्सीकम, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर।

जाडा और बुखार पारी पारी से—आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, सिकोना, मर्क्युरियस, ,नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, सल्फर, विरेट्रम।

जाड़ा और बुखार एक साथ—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, केमामिला, सिंकोना, इग्नेशिया, इपीकाक, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

बाहर से बुखार अन्दर से जाड़ा—एकोनाइट आर्सेनिक, बेलेडोना, कल्केरिया, कोफिया, इग्नेशिया, लेकेसिस, नक्सवोमिका, सल्फर।

अन्दर से बुखार बाहर से जाड़ा—आर्निका, ब्रायोनिया सिंकोना, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

जाड़े के साथ ही पसीना आना—आर्सेनिक, कल्केरिया, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर।

बिना बुखार के ही जाड़े के बाद पसीना—ब्रायोनिया; केप्सीकम, रस, विरेट्रम।

पसीना और बुखार एक साथ—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, केप्सीकम, केमोमिला, सिकोना, साइना, हिपर,

इग्नेशिया, इपीकाक, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, ओपियम, रस, विरेट्रम।

बुखार के बाद पसीना—आर्सेनिक, ब्रायोनिया, कार्बोवेज, केमोमिला, सिंकोना, साइना, कोफिया, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, ओपियम, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

बुखार के पहले प्यास—अर्निका, सिकोना, पल्सेटिला, सल्फर।

जाड़े के समय प्यास—एकोनाइट, एन्टिमक्रुड, आर्निका, आर्सेनिक, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, केमोमिला, सिंकोना, साइना, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, रस, सल्फर, विरेट्रम।

प्यास जाड़े के बाद, लेकिन बुखार के पहले—आर्सेनिक, सिंकोना, पल्सेटिला।

प्यास और बुखार एक साथ—एकोनाइट, वेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, केप्सीकम, केमोमिला, सिंकोना, हिपर, हायोसायमस, लेकेसिस, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

बुखार के समय प्यास का न होना—आर्सेनिक, वेलेडोना, केप्सीकम, कार्बोवेज, सिंकोना, इग्नेशिया, इपीकाक,

लेकेसिस, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, नक्समस्केटा, पल्सेटिला, रस, सेम्बुकस, सल्फर, विरेट्रम।

बुखार के बाद प्यास—सिंकोना, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला।

पसीने के समय प्यास—आर्सेनिक, केमोमिला, सिंकोना, हिपर, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

पसीने के बाद प्यास—नक्सवोमिका।

खास खास शिकायतें।

शरीर में दर्द—आर्सेनिक, सिंकोना, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, रस, विरेट्रम।

बहुत कमजोरी—आर्सेनिक, सिंकोना, फेरम, हायोसायमस, लेकेसिस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, रस।

शोथ के लक्षण—आर्सेनिक, सिंकोना, फेरम।

तन्द्रालुता और निद्रालुता—बेलेडोना, कार्बोवेज, हायोसायमस, लेकेसिस, ओपियम, पल्सेटिला, रस।

जाड़े के समय नींद—नेट्रमम्यूर, नक्स मस्केटा।

बुखार के समय नींद—इग्नेशिया।

जाड़े के बाद नींद—आर्सेनिक।

बहुत दुर्बलता और मानसिक उत्तेजना—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, केमोमिला, कोफिया, इग्नेशिया, नक्सवोमिका, पल्सेटिला।

शिर में रक्ताधिक्य—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कर्बोवेज, ग्लोनाइन, हायोसायमस, लेकेसिस, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, रस।

जोरों का सर दर्द—अर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, सिकोना, ग्लोनाइन, इग्नेशिया, लेकेसिस, नेट्रमम्यूर, नक्स वोमिका, पल्सेटिला, रस।

पाकाशय में गोलमाल—एन्टिमक्रूड, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, केमोमिला, सिकोना, इग्नेशिया, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर।

कै होने पर—एन्टिम क्रूड, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, सिकोना, साइना, इग्नेशिया, नक्सवोमिका, पल्सेटिला।

जाड़े के समय कै—ब्रायोनिया, इग्नेशिया।

जाड़े के बाद कै—आर्सेनिक, नक्सवोमिका।

बुखार के समय कै—नक्सवोमिका।

जीभ पर सफेद लेप—एन्टिम क्रूड, ब्रायोनिया, नक्स मस्केटा।

जीभ कड़ी और सूखी जाड़े के समय—ब्रायोनिया।

पतले दस्त—आर्निका, आर्सेनिक, केमोमिला, सिंकोना, इपीकाक, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम ।

कब्जियत- आर्सेनिक, ब्रायोनिया, मर्क्यूरियस, नक्स-वोमिका ।

तिल्ली में कड़ापन—नक्स मस्केटा ।

तिल्ली में दर्द—केप्सीकम ।

यकृत में दर्द और सूजन—आर्सेनिक, सिंकोना, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका ।

जुक़ाम के लक्षण—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, सिंकोना, हिपर, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर ।

छाती में तकलीफ और श्वासकष्ट—एकोनाइट, एन्टिम-क्रूड, आर्निका, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, सिकोना, फेरम, हिपर, इपीकाक, लेकेसिस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर ।

उपरोक्त शिकायतें बुखार आने के पहले—आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, कल्केरिया कार्ब, कार्बोवेज, सिंकोना, साइना, इग्नेशिया, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर ।

उपरोक्त शिकायतें जाड़े के समय—आर्निका, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, सिंकोना,

साइना, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, नक्स मस्केटा, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

उपरोक्त शिकायतें बुखार के समय—एकोनाइट, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, बेलेडोना, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, केमोमिला, सिकोना, कोफिया, हायो सायमस, इग्नेशिया, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, नक्स-वोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

उपरोक्त शिकातें पसीने के समय—एकोनाइट, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, केमोमिला, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नक्स-वोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

उपरोक्त शिकायतें बुखार उतर जाने पर—आर्सेनिक, ब्रायोनिया, कार्बोवेज, कोफिया, इग्नेशिया, लेकेसिस, नक्स-वोमिका, पल्सेटिला, रस।

नाड़ी में बीच बीच में रुकावट—आर्सेनिक, सिंकोना, लेचेसिस, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, ओपियम।

नाड़ी कठिन—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, हायो-सायमस, नक्सवोमिका, सल्फर।

नाड़ी छोटी—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, हायो-सायमस, लेकेसिस, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, ओपियम, विरेट्रम।

देना चाहिये, यह एक, दो या तीन दिनके अन्तर से आनेवाले, रोज आने वाले, क्वीनाइन के अपव्यवहार के कारण आनेवाले तथा शोथयुक्त बुखार में भी फायदा करता है।

चायना ३X, ६ या ३०—रातको छोड़ कर और किसी भी समय बुखार का आना हृदय में धड़कन, सिर में दर्द, पारी-पारी से जाड़ा और गरमी, पसीने के समय प्यास कभी-कभी दुबारा बुखार चढ़ने के वक्त प्यास का शान्त न होना, अनिद्रा या अच्छी तरह नींद का न आना, सो जाने और शरीर ढक रखने पर बहुत पसीना, बहुत कमजोर, एक दिन के अन्त से बुखार का आना या बढ़ना, यकृत और पिलही का बढ़जाना, उन्हें छूने से दर्द मालूम होना, पानी जैसा या लसदार पित्त मिला दस्त, कपालकी नसें फूली, जाड़े के पहले बहुत भूख प्यास, जाड़े के समय काँपना, इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। यदि जाड़े या गरमी की अवस्था में प्यास मौजूद हो अथवा रोगी को क्वीनाइन दी जा चुकी हो तो इसे न देना चाहिये।

फेरम मेट—६ या ३०—चायना जैसे लक्षण, साथही शिर में रक्ताधिक्य, आंख के आस पास तथा पैरों में सूजन तलपेट और पाकाशय में भार मालूम होना, खास कर खाना खाने के बाद, खाये हुए पदार्थों की के, दोनों तरफ तलपेट भरा हुआ या कड़ा मालूम होना, कमजोरी, शरीर की गरमी का

कम पड जाना, वहुत देर तक पसीना, कभी कभी पतले दस्त रह रह कर जाडा और कपकपी, पैर वरफ जैसे ठढे, रात में ठढा पसीना, यकृत और पिलही का वढ़ जाना, पुराना वुखार शरीर का पीला पड जाना इत्यादि।

अर्निका मेन्ट ६ या ३०–सुवह या दोपहर के पहले जाडा लगना, जाडे के पहले प्यास और जम्हाई, वुखार के पहले जोरों की हडफूटन, रोगी को किसी हालत में चैन न पढना और उसके कारण वारवार करवट वदलते रहना, शिर और चेहरा गर्म, दूसरे अंग ठढे, पसीना विलकुल न आना अथवा खट्टा और वदवूदार, श्वास प्रश्वास मे भी वदवू, वहुत कमजोरी, वेचैनी के कारण ओढ़ना वगैरह फेक देना, भीतर जाडा, वाहर गरमी, पानी पीने से जाड़े का वढना इत्यादि।

विरेट्रम एल्वम ३×या ३०–सुवह छ वजे वुखार आना, वुखार के पहले प्यास और जाडा, वहुत देर तक जाडा लगना, चेहरा और समूचा शरीर ठढा, पारी पारीसे जाडा और गरमी मालुम होना कब्जियत अथवा पहले दस्त जी मिचलाना और कै होना जॉघ और पीठमे दर्द कपाल में ठढा पसीना, पसीने के समय चेहरा फीका, कमजोरी और सुस्ती।

विरेट्रम विरिडि १×या३×–नाडी पूर्ण, कठिन, तेज और लम्फनशील, शरीर वहुत गरम, कलेजे में धड़कन,

तेज बुखार बुखार का किसी तरह कम न होना, कफ और पित्त की कै, कब्जियत, ओंतों की पेंठन, शिरमें रक्त संचय, निद्रालुता इत्यादि।

सेम्बुकस ६ या ३०–बहुत अधिक पसीना, बुखार उतर जाने पर पर भी दुबारा बुखार चढ़ने तक पसीने का आते ही रहना, अन्यान्य लक्षण इपीकाक, आर्सेनिक, चायना, फेरम, आर्निका और विरेट्रम के समान।

एन्टिमक्रूड६ या३०–जीभ पर बहुत ज्यादा लेप, मुँह का स्वाद कड़ुआ और मिचली युक्त, पाकाशय में गोलमाल, कै, प्यासका न होना अथवा बहुत कम होना, कब्जियत या पतले दस्त पारी पारी से, गरम स्थान में भी जाड़ा मालूम होना, खट्टी चीजें खाने की इच्छा, निद्रालुता, दोपहर को बुखार का चढ़ना, चिड़चिड़ा स्वभाव,पारी का बुखार इत्यादि। पल्सेटिला और इपीकाक से लाभ न होने पर इससे लाभ होता है। बूढ़े और मोटे जवानों को यह अधिक फायदा करता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—एन्टिमक्रूडसे मिलते जुलते लक्षण लेकिन प्यास बहुत तेज, अथवा जाड़ेके पहले ही शरीर का गरम हो जाना, जाड़े के समय गाल लाल, बुखार की अपेक्षा ठंढ अधिक लगना, सूखी खाँसी कब्जियत या पतले दस्त, पित्तकी कै, शिरमें भार छाती में सुई चुभोने जैसा

दर्द, तीसरे पहर बुखार का बढ़ना इत्यादि। प्राय. प्रथम सप्ताह में ही इसका प्रयोग होता है।

साइना ३० या २००—यह दवा बच्चों के मलेरिया में, खास कर जब उनके पेट में कृमि होते हैं, बड़ा फायदा करती है। चिडचिडा स्वभाव, सदा रोते रहना, चीज माँगना लेकिन मिलने पर फेंक देना, छूने से भी चिल्ला उठना, बुखार के पहले बुखार के समय अथवा बुखारके बाद के ओर गहसी भूख,जूड़ी या बुखार के समय प्यास, सदा नाक खुजलाते या रगडते रहना, पेट में दर्द, कब्जियत नींद में चिल्ला उठना, पेशाब सफेद या गँदला, पेशाब के अन्त में चूने का सा पानी निकलना, नींद में दाँत किडकिडाना, बहुत जाडा लगना इत्यादि लक्षणों में इसे अकेले या दूसरी दवा के साथ पर्याय क्रम में देना चाहिये।

इग्नेशिया ६, १२ या ०-शीतावस्था में प्यास, बुखार चढ़ आने पर प्यास का न होना, वाहरी गरमी से जाड़े का घटना, शरीरके कुछ अग गरम और कुछ ठंढे-कहीं जाडा और कहीं गरमी मालूम होना, केवल बाहर से गरमी, जाडे के समय पेटमे दर्द, बादको बुखार, बुखारके समय कमजोरी और निद्रालुता।

रसटक्स ६ या ३०—शामके करीब बुखारका हमला, जाडा बहुत तेज, शरीरके कुछ अग ठंढे और कुछ गरम आधीरात या सुबहके करीब पसीना, गरमी की अवस्था में

चमड़े पर पित्तीसी उछलना और उसमें खुजली होना, पेटमें दर्द और पतले दस्त, आमाशय में भार, हृदयमे धड़कन, उत्कंठा, जाड़ेके साथ खाँसी,सारे शरीर में या केवल कमर में दर्द लेटे रहने से तकलीफ का बढ़ना, हिलने डोलने से आराम, बारंबार करवट बदलते रहना इत्यादि। सविराम ज्वर से एक ज्वर हो जाने पर अथवा पानी में भीगने या गीले कपड़े पहननेके कारण बुखार आने पर इससे विशेष लाभ होता है।

नक्स वोमिका ३X, ६ या ३०–सुबह, तीसरे पहर, शामको या रातमें बुखार का हमला, हमले के साथ ही बहुत कमजोरी, हाथ पैरका ढीला पड जाना, पड़े रहने की इच्छा, जाड़ेके बाद गरमी और गरमी के बाद जाडा मालूम होना अथवा जाड़ेकी अपेक्षा गरमी बहुत अधिक, भीतरसे गरमी और बाहरसे जाडा अथवा बाहर से गरमी और भीतर से जाडा, चेहरा गर्म और लाल, गरमी, और पसीने की अवस्था में भी अच्छी तरह से कपड़े ओढ़े या पहने रहना, कपडा हटाते ही जाडा मालूम होना, बाहरी गरमीसे आराम न मालूम होना, शिरमें गरमी और दर्द, कानों में भन्नाहट, गरमी की अवस्था में प्यास और उत्कंठा, कब्जियत, सुबह या आधी रातके समय खट्टी गंध लिये पसीना हाथ पैर नख नीले पानी पीने से ठंढ का बढ़ना, जीभ पर सफेद या पीला लप, मुहका स्वाद कुडुआ, जी मिचलाना और कै, दस्तका

वेग मालूम होना पर दस्त साफ न होना इत्यादि। नित्य आगे बढ़कर आने वाले बुखार में इससे अधिक लाभ होता है।

केमोमिला १२ या ३०–बच्चों के लिये यह विशेष उपकारी है। दाँत निकल ने के समय बुखार आना, बच्चेका चिड़चिड़ा स्वभाव, गोदीमें ही चढ़े रहने की इच्छा, बेचैनी, एक गाल लाल और गरम, दूसरा फीका और ठढा, गरमी और पसीने की अवस्था में तेज प्यास, जाड़ा थोड़ा बुखार और पसीना अधिक, पतले दस्त, बच्चेका सदा रोते रहना।

पल्सेटिला ६, १२ या ३०–पाकाशय में जरा भी गोल माल होते ही छूटे हुए बुखार का फिर आ जाना, तीसरे पहर १ से ४ बजे तक में बुखार, प्यास का बिलकुल न होना अथवा केवल गरमी की अवस्था में होना, बुखार और जाड़ा एक साथ मुहका स्वाद कड़ुआ, पित्त या कफकी खट्टी या कड़वी कै, हर हालत में जाड़ेकी शिकायत शरीर की एक ओर (खास कर बायीं ओर) पसीना, जाड़ेका अधिक देर तक और बुखारका कम देर तक ठहरना, ठंढी खुली हवा में आराम, भोजन के बाद नींद, जीभ पर सफेद या पीला लेप और रूखी इत्यादि। नित्य रोग लक्षणों का बदलते रहना–आज कुछ लक्षण दिखायी दे और कल कुछ–ऐसे बुखार में पल्सेटिलासे बहुत लाभ होता है।

केप्सीकम ६ या ३०—जाडे की अवस्था में थोडी देर तक प्यास, वादको गरमी और गरमी की अवस्था में प्यास का न होना अथवा केवल गरमी की ही हालत में प्यास, जाडा वहुत तेज और वहुत देरतक ठहरने वाला, पीठमें दोनों कन्धों के बीच से जाडे का शुरू होना, वाहर और भीतर वहुत जलन, गले और मुह मे कफ भरा रहना, ज्वालाकर पतले दस्त आवाज विलकुल वरदास्त न कर सकना, पसीने से छाले पड़ जाना, वुखार के वाद नींद, जाडेके समय कमर में दर्द।

कोफिया ६ या ३०—स्नायविक उत्तेजना से पीडित रहने वाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है। धीमा वुखार, वुखार के समय से लेकर पसीने की अवस्था तक प्यास, पानी जैसे पतले दस्त इत्यादि।

ककयुलस ६ या ३०—जीभ पर पीला लेप, खाने की इच्छा न होना, मुँह सूखा और वदवूदार, पेट फूला हुआ, पेटमे दर्द मिचली और डकार, श्वासकष्ट, कब्जियत या ज्वालाकर पतला दस्त, वहुत कमजोरी, शिरमे खासकर कपाल में दर्द, माथेमें चक्कर, स्नायविक उत्तेजना इत्यादि।

नेट्रम म्यूर ३० या २००—यह जूडी वुखार की एक वढ़िया दवा है, लेकिन इसका फल तुरन्त नहीं दिखायी देता। फल के लिये कुछ दिन धैर्य के साथ प्रतीक्षा करनी पड़ती है। जाड़ेकी अवस्था मे जोरों का शिरदर्द, गरमी की

अवस्था में शिर दर्द का बढ़ जाना सुबह करीब दस बजे जाड़े का शुरू होना और बहुत देरतक ठहरना, गरमी की अवस्था में कुछ कुछ बेहोशी, होठ और खास कर मुँहके किनारों पर, छाले पड़ जाना, बुखार उतरने पर बहुत सुस्ती और पसीना हाथ पैरकी उँगलियों या कमर से जाड़े का शुरू होना, नाखून और होंठों का रंग नीला हो जाना, पसीने के समय आराम मालुम होना, हृदय की धड़कन के साथ शरीर का काँपना, शरीर एकदम शीर्ण, यकृत और पिलही का बढ़ जाना, क्वीनाइन या आर्सनिक के अपव्यवहार के कारण आने वाला बुखार इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। यह नये और पुराने दोनों प्रकार के बुखारों में काफी फायदा करता है।

लेकेसिस ३० या २००—दोपहर के बाद बुखार का आना, साथ ही कमर और पीठमें भयंकर वेदना, शिरमें जोरों का दर्द और चेहरा लाल, गरमी की अवस्था में अनवरत बातें करते रहना, अथवा बाहर से सरदी और अन्दर से गरमी, चेहरे का रंग पीला या मटमैला, नींद खुलने के बाद ही सब उपसर्गों का बढना, बगल के पसीने में लहसुन, की गन्ध, बुखार के समय शरीरका नीला रंग, पसीना आने पर आराम मालूम होना, पसीना ठंढा और पीला या लाल, शराबी और स्त्रियों को रजस्राव के समय जाड़ा बुखार इत्यादि। क्वीनाइन खाने से दबा हुआ बुखार फिर उभड़ने पर

अथवा खट्टी चीजें खाने के कारण बुखार लौटने पर अथवा प्रतिवर्ष वसन्त में ही बुखार आने पर इससे विशेष लाभ होता है। जेकेसिस के बाद पल्सेटिला देने से बहुत फायदा होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—चौबीस घंटेमें दो तीन बार बुखार का हमला होने पर बेलेडोना से अधिक फायदा होता है। जाडा धीमा, बुखार बहुत तेज अथवा बुखार धीमा और जाडा बहुत तेज, कब्जियत या खडिया मिट्टी जैसे पतले दस्त। कभी कभी शिरमें जोरोंका दर्द, चेहरा लाल, मस्तिष्क विकार और सुस्ती आदि लक्षण भी दिखायी देते है। जाड़े के समय प्यास नहीं रहती। पसीना बहुत कम आता है।

हायोसायमस ३० या २००—बेलेडोना से ही मिलते लक्षणों के साथ रातमें सूखी खाँसी लेटने पर खाँसी का बढ़ जाना और उठ बैठने पर आराम मालूम होना, आवाज या शोरगुल असह्य, गरमी के समय बेहोशी, अनिद्रा पैरोंमें पसीना इत्यादि।

नक्समस्केटा ६ या ३०—जीभ पर सफेद लेप, केवल गरमी की अवस्था में थोडी प्यास जाडेकी अवस्था में नींद, बाहरी गरमी से आराम मालूम होना, खुली हवा ना पसन्द, रोगी जिन अंगों के सहारे बैठे या लेटे उन्हीं का दर्द करने लगना इत्यादि।

हिपर सल्फर ३० या २००—सरदी के कारण बुखार, सिर और छाती में सरदी का असर, मुँह में कड़ुआ स्वाद, जाड़े के समय प्यास, बाद को बुखार और निद्रालुता, शाम को छः सात बजे बुखार का हमला, गरमी के साथ ही खट्टा और बदबूदार बहुत पसीना, हवा बरदास्त न कर सकना, होठों पर छाले, जाड़े के समय आमवात जैसा इरेपशन, उसमें खुजली और डंक मारने जैसा दर्द इत्यादि। बेलेडोना के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है।

ग्लोनाइन ६ या ३०—शिर की ओर रक्त का दौड़ना, ऐसा मालूम होना मानो आमाशय में एक लपट सी निकल कर शिर की ओर जा रही है, शिर में ठनक, चेहरे पर ठंढा पसीना, गरम पसीना आने पर बुखार का उतरना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—शाम के समय या रात को बुखार का आक्रमण, बिछौने पर पड़ने से अधिक ठंढ मालूम होना, बेचैनी के साथ शीघ्रता पूर्वक पारी पारी से जाड़े और गरमी का उपस्थित होना, प्यास, हृदय में धड़कन, चिकना और बदबूदार बहुत पसीना, कपड़े पर पसीने का पीला दाग लगना, बहुत प्यास, पसीना निकलने पर भी आराम न मालूम होना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—शाम को जाड़ा लग कर रात को बुखार और सुबह पसीना आना, हृदय में धड़कन, जाड़े

के पहले प्यास, जोर का बुखार, बुखार उतरने पर सुस्ती, जीभ सफेद या हलकी पीली, कोई चर्म रोग बैठ जाने के कारण बुखार का आना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। यदि कोई दूसरी दवा ठीक न की जा सके और सल्फर के दो एक लक्षण भी दिखायी दे तो सल्फर देने से या तो बुखार अच्छा ही हो जाता है या अन्यान्य लक्षण इस तरह स्पष्ट हो जाते हैं कि इसकी दवा चुनने में फिर कोई कठिनाई नहीं पडती। अक्सर एच सी ऐलन मैलेरिया में क्वीनाइन के बदले सल्फर देने के ही पक्षपाती हैं। सल्फर के बाद कल्केरिया न खिलाना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ३० या २००—रात को ग्यारह बजे विना जाडा और प्यास और प्यास के बुखार, साथ ही चेहरे का लाल हो जाना, बारी बारी से ठंढ और गरमी मालूम होना, बाहर से जाडा, अन्दर से गरमी मालूम होना, शिर और चेहरा गरम, शरीर के दूसरे अंग ठढे, तलपेट में जाड़ा मालूम होना, शिर और शरीर के अन्यान्य अंगों का भारी मालूम होना, पीठ मे जोरों का दर्द, उत्कण्ठा, ठंढी और गीली हवा में उपसर्गों का बढ़ना, सूखी और गरम हवा में आराम मालूम होना इत्यादि। पुराने सविराम और स्वल्प विराम ज्वर मे इससे बहुत लाभ होता है। मोटा और थुलथुला शरीर, शिर में बहुत पसीना, जरा में ही सर्दी लग जाना, पेट और शिर भारी इत्यादि लक्षणों वाले स्त्री, पुरुष या बच्चों के लिये यह दवा बहुत उपयुक्त मानी जाती है।

कार्बोवेज ६ या ३०—दाँत और हाथ पैर में दर्द के साथ बुखार का हमला, बुखार आने का समय अनिश्चित, केवल जाड़े की अवस्था में प्यास, गरमी के समय शिर में चक्कर, चेहरा लाल और पाकाशय में गोलमाल, बायें हाथ से ठंढ का शुरू होना और समूचे शरीर का ठंढा पड़ जाना, बायाँ हाथ और बायाँ पैर ठंढा, पसीना अधिक, खट्टा और बदबूदार।

एकोनाइट ३x या ६—जाड़ा और बुखार दोनों बहुत तेज, अथवा दोनों का एक साथ उपस्थित होना, बाहर से गरम, बहुत प्यास, बहुत अस्थिरता और घबराहट, मृत्यु भय इत्यादि। केवल रोग के प्रारम्भ में ही इन लक्षणों के मौजूद होने पर यह दिया जाता है।

ओपियम ६ या ३०—बड़ी उम्र के आदमी और बच्चों को सविराम ज्वर में इससे विशेष लाभ होता है। तन्द्रा और गहरी नींद, खुर्राटे लेना, शिर में रक्ताधिक्य, चेहरा लाल, अंगों का फड़कना, नाड़ी पूर्ण और मन्द, प्यास का न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

युपेटोरियम पर्फ ६ या ३०—अँगड़ाइयों के साथ पीठ में जाड़ा लग कर बुखारका आना, जाड़ेके पहले से लेकर जाड़े की अवस्था तक प्यास,पानी पीने से कै या पित्त की कै,बुखार के बाद थोड़ा पसीना, हड्डियों और जोड़ों में तेज दर्द, शिर

वेराइटा कार्व ६ या ३०—जाड़ा, गरमी या पसी-ना—किसी भी अवस्थामें प्यासका न होना इसका प्रधान लक्षण है।

साइमेक्स ३०-जाडे की अवस्था में जोड़ों में तेज दर्द, जाड़े के पहले या जाड़े के समय प्यास, पसीना, शिर भारी, जाड़े के आरम्भ में मुट्ठी बाँधे रहना, जाडे के बाद तेज प्यास, पानी के बाद हो पेशाव होना इत्यादि।

पोडोफिल्लाम ६–सुबह बुखार और उसके साथ ही पतले दस्त दस्तों का रंग हरबार बदला हुआ, जीभ पर सफेद लेप, भूख मन्द, श्वास में बदबू, यकृत और पिलही में दर्द, बुखार के पहले पीठ में तेज दर्द, पसीने की अवस्थामें नींद।

इलाटेरियम ३ या ६–सुबह बुखार, बुखार रुकने पर आमवात का हो जाना, खुजलाने से आराम मालूम होना इत्यादि।

फोस्फरिक एसिड २×–६–जाड़ा और बुखार बहुत तेज, पसीना कमजोर करने वाला, केवल पसीने की अवस्था में तेज प्यास, उदास भाव, गरमी नींद, प्रलाप सर भारी, बिना कष्टके पतले दस्त, स्वप्नदोप, रक्त बहना इत्यादि।

हाइड्रेस्टिस मदर टिञ्चर–मैलेरिया के विषके कारण धातुविकार, यकृत और पाकाशय में गड़बड़ी इत्यादि।

सीपिया १२ या ३०—पुराना बुखार, मासिक बुखार, गर्भावस्था का बुखार, हिलने डोलनेसे बहुत तेज जाडाइत्यादि।

केक्टस १—दोपहर के समय दिन मे केवल एक बार बुखार का आना, जाड़े के बाद बुखार, पीछे जलन जैसी दाह और तेज साँस, बाद को बूँद-बूँद पसीना, तेज प्यास, तलहत्थी बरफ की तरह ठंढी।

युक्लिप्टस ग्लोब मदर टिञ्चर—लक्षण स्पष्ट न होनेपर होमियोपेथी के कई आचार्यों ने इसे देने की सालाह दी है। तेज बुखार, हृदय में धडकन, पीव मिला कफ निकलना, पाकाशय मे गोल माल, मूत्र ग्रन्थी का प्रदाह, पाकाशय में वदर्, सुस्ती, खूनकी खराबी इत्यादि लक्षणों में भी यह लाभ करता है।

मिनिएन्थिस ३ या ३०—तेज जाडा, प्यास का होना तलपेट, हाथ, पैर और नाकका अगला भाग वरफ की तरह ठंढा, पेशियों का संकोचन, चौथे दिन आनेवाला चोथिया बुखार।

कन्केरिया आर्स ६ चूर्ण—यकृत और पिलही का बढ़ना, श्वास कष्ट, हृदय में धडकन, विपम ज्वर।

फेरमआर्स ६—बुखार, पिलही का वढ़ना, क्वीनाइनके अपव्यवहार के कारण खूनकी कमी, विपम ज्वर, अजीर्ण दस्त शरीर मे सूजन, पेशाव में दोप इत्यादि।

अर्टिका युरेन्स मदर टिंचर—मैलेरिया के कारण फोडा, गठिया, पिलही या यकृत की शिकायत होने पर इसके दस बूंद आधी छटाक गर्म पानी के साथ दिन में दो बार देना चाहिये। इसे देने से बुखार बढ़ कर फिर आराम हो जाता है। वर्ना नेट्रमम्यूर ६× विचूर्ण की. दो चार खुराकें देनी चाहिये।

किनिनम सल्फ या क्वीनाइन १× या ३ ×—सविराम ज्वरकी यह एक बढ़िया दवा है, लेकिन इसे देते समय दो बातों पर खास ध्यान रखना चाहिये। एक तो इसके लक्षणों पर, दूसरे इसकी मात्रा पर। लक्षण ठीक न मिलते हों तो दूसरी दवाएँ चुननी चाहिये और मात्रा कभी भी अधिक न होनी चाहिए।

सुबह १०–११ बजे, दोपहर को २–३ बजे या रात को १० बजे बुखार का हमला, रोज एकही समय पर बुखार का आना, पहले जाडा, बाद को बुखार और अन्त में पसीना तीनों अवस्थाओं का स्पष्ट रूपसे उपस्थित होना, तीनों अवस्थाओं में खासकर पसीनेकी अवस्था में प्यास, पसीना आनेपर आराम मालूम होना, जी मिचलाना शिर और कमर में दर्द, अनिद्रा या अच्छी तरह नींद न आना, चेहरा लाल और सूखा, जीभ साफ, बुखार का एक घटेसे लेकर तीन घटे तक ठहरना, बहुत कमजोरी आदि इसके प्रधान लक्षण हैं।

बुखार उतर जाने पर ही तीन-तीन घंटे के अन्तर से यह दवा देनी चाहिये। नये बुखार में इससे विशेष लाभ होता है। पुराने बुखार में, पिलही और यकृत बढ़ जाने पर और केवल गरमी या जाड़े की अवस्था में बहुत जोरो की प्यास होने पर इसे न देना चाहिये। पुराने बुखार में ऐसे ही लक्षणों में आर्सेनिक अधिक लाभ करता है।

यहाँ हम इस चिकित्सा प्रणाली के प्रेमियों को यह याद दिला देना चाहते हैं कि क्वीनाइन ही वह दवा है, जिसके कारण होमियोपैथी का आविष्कार हुआ है। क्वीनाइन अधिक मात्रामे खानेसे अवश्य हानि होती है, परन्तु थोड़ी मात्रा में खानेसे मैलेरिया बुखार को यह आराम करती है। अन्यान्य होमियो पेथिक दवाओं की भाँति इसके भी सूक्ष्मसे सूक्ष्म क्रम तैयार किये गये हैं, फिर भी होमियो पैथीके कई धुरन्धर आचार्यो का मत है, कि जहाँ इसके लक्षण ठीक मिलते हों, जहाँ जाड़ा गरमी या पसीने की अवस्था में उलट पलट या कमी बेशी न हो, वहाँ एक निश्चित परिमाण में क्वीनाइन दी जा सकती है। सभव है कि इसे कुछ लोग होमियो पेथीके विरुद्ध बतलायें, परन्तु होमियो पैथी के आचार्यों को यह स्वीकार करना पड़ा है, कि जहाँ क्वीनाइन के लक्षण ठीक ठीक मिलते हों, वहाँ अधिक मात्रामें और जरूरत हो तो मिक्चर के रूप में क्वीनाइन देकर रोगी को

शीघ्र आराम कर देना चाहिये, जिससे रोगी को बहुत दिनों तक शैय्या-सेवन न करना पड़े। *

सांघातिक मैलेरिया—(Pernicious Malarial Fever) स्वल्प विराम और सविराम मैलेरिया के सम्बन्ध में बहुत कुछ बतलाया जा चुका है। अब हम यह अध्याय समाप्त करने के पहले सांघातिक मैलेरिया के सम्बन्ध की कुछ बातें बतला देना अवश्यक समझते हैं, कि इसमें साधारण मैलेरिया की अपेक्षा कुछ विशेषता होती है। यह

---

* मिक्सचरकी आवश्यकता हो तो निम्नलिखित दो नुस्खों से काम लिया जा सकता है—

(१) कब्जियत के साथ क्वीनाइन के लक्षण होने पर—

सल्फेट आफ क्वीनाइन दो ग्रेन डाइल्यूट नाइट्रो म्युरेटिक एसिड चार बूँद साफ पानी या डिस्टिल्ड वाटर आधा आउन्स	एक खुराक

बुखार न होने पर चार चार घण्टे के अन्तरसे तीन चार बार देना चाहिये।

(२) कपकपी और जोरों का शिरदर्द—दर्द के कारण बेहोशी तक—होने पर—

हाइड्रो ब्रोमेट आफ क्वीनाइन दो ग्रेन आल्कोहल चार बूँद साफ पानी या डिस्टल्ड वाटर आधा आउन्स	एक खुराक

बुखार न रहने पर या ९९ डिग्री तक उतर जाने पर दो-दो-तीन-तीन घण्टे के अन्तर से कम से कम पांच बार देना चाहिये।

बुखार जंगल फीवर, मेलिग्नेन्ट फीवर, कजेस्टिव फीवर, ट्रापीकल टायफाइड आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

यह सविराम या स्वल्प विराम किसी भी ज्वरके रूपमें दिखायी देता है। वास्तव में साधारण ज्वरका प्रकोप वढ जाने पर जब वह बहुत उग्र रूप धारण कर लेता है, तब वह सांघातिक मैलेरिया कहलाता है। लक्षणानुसार यह सात भागों में विभक्त किया गया है (१) अचैतन्यता प्रधान या comatose (२) प्रलाप प्रधान या Delirious (३) उदरामय प्रधान या Diarrhoeic (४) हिमाङ्ग प्रधान या Algid (५) पसीना प्रधान या colliquative (६) पित्त प्रधान या Icterous और (७) रक्तस्राव प्रधान या Hæmorrhagic

अचैतन्यता प्रधान में रोगी के मस्तिष्क पर रोगका आक्रमण होता है और रोगी बेहोश हो जाता है। बुखार १०५ से १०७ डिग्री, शिरदर्द, शिरका घूमना, उदासी, बोल न सकना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। प्रलाप प्रधान ज्वरमें रोगी बहुत बक झक करता है। तेज सरदर्द, कान में भों भों आवाज बेचैनी आदि लक्षण भी दिखायी देते हैं। बादको शरीर ठंढा पड जाता है और कभी कभी उसी हालत में मृत्यु हो जाती है। उदरामय प्रधान ज्वरमें हैजेकी तरह रोगीको कै दस्त होते हैं और पेटमें दर्द, बहुत प्यास, अकडन, श्वास कष्ट,शरीर का ठंढा पड जाना इत्यादि लक्षण दिखायी देते हैं।

हिमाङ्ग प्रधान ज्वरमें रोगी का शरीर बहुत ठंढा पड़ जाता है, शरीर की गरमी घट जाती है, ठंढा पसीना आता है और रोगी की मृत्यु हो जाती है। पसीना प्रधान ज्वर में रोगी को इतना पसीना आता है, कि उसका शरीर ठंढा पड़ जाता है और सुस्ती बढ़ते-बढ़ते रोगीकी मृत्यु हो जाती है। पित्त प्रधान ज्वरमें पित्तकी कै, पित्तके दस्त, शरीर और आँखें पीली, दस्तके समय काँखना, थोड़ा पेशाब, बहुत पसीना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। रक्तस्राव प्रधान ज्वर मे नाक मुँह पाकाशय जननेन्द्रिय या मलद्वार के मार्गसे समय समय पर रक्तस्राव होता है। इस ज्वरमें, ज्वर चाहे जिस प्रकार का हो, रोगीके जीवन का खतरा रहता है। उदरामय प्रधान और हिमाङ्ग प्रधान ज्वर बहुत ही घातक माने जाते हैं। यदि बुखारका विरामकाल बढ़ता जाता है तो रोगी अच्छा भी हो जाता है और बुखारका प्रकोप बढ़ता जाता है तो रोगी की मृत्यु हो जाती है। इस ज्वरकी खास-खास दवाएँ नीचे लिखी जाती हैं। चुनी हुई दवा दो-दो तीन-तीन घंटेके अन्तर से देते रहना चाहिये।

अचैतन्यता प्रधान ज्वर—ओपियम ६ या ३०, रस-टक्स ६। प्रलाप प्रधान ज्वर—बेलेडोना ६ या ३० और हायो सायमस ६ या ३०। उदरामय प्रधान ज्वर-आर्सेनिक ३, ६, विरेट्रम एल्ब ६ पोडो फिलम ६, मार्क कर ६, हिमाङ्ग प्रधान

ज्वर—केम्फर, कार्बोवेज ३० विरेट्रम एल्ब ६ या ३० मिनिये-न्थिस ३०। पसीना प्रधान ज्वर—चायना ६, जेबो रेन्डी ३, फोस्फरस ६। पित्त प्रधान ज्वर—ब्रायोनिया ३, युपेटोरियम पर्फ १× और क्रोटेलस ३। रक्त स्राव प्रधान ज्वर—इपीकाक ३× या ३, कैक्टस ३×, हेमोमेलिस १×।

बुखारकी शीतावस्थामें कैम्फर, एकोनाइट या जेलसी-मियम से और गरमी की अवस्थामें एकोनाइट और बेलेडोना से अधिक लाभ होता है। बुखार उतर जाने पर रोगी की अवस्थानुसार (१० से ४० ग्रेन तक) कुनीनाइन देने से बुखार बढने नहीं पाता और साधारण आकार धारण करता है। यह डाक्टर हैम्पेल, गेचेल, कास्टिस, सेन्ड्स मिलस आदिकी राय है। डाक्टर मजूमदार साधारण अवस्थामें उच्चक्रम का आर्सेनिक और निम्न क्रमका नक्सवोमिका देने को तथा ज्वर के प्रकोप में एकोनाइट बेलेडोना या विरेट्रम विरिडि व्यवहार करने की सलाह देते हैं। शीत अवस्था में रोगी के हाथ पैर सेंकने चाहिये। रोगी सुस्त हो जाने पर ब्राण्डी या व्हिस्की का सेवन कराने से लाभ होता है साधारण अवस्था में गरम पानी और तेज प्यासमें बरफ के टुकड़े चूसनेको देने चाहिये।

मैलेरिया बुखार में पथ्य—नये बुखार में जब बुखार बहुत तेज हो, रोगी को गरम पानी के सिवा और कुछ न देना चाहिये। बुखार उतर जाने पर साबूदाना, आरारोट, बार्ली

धान की लाई आदि हलकी चीजें देना चाहिये। पुराने बुखार में बुखार होने पर यही हलकी चीजें और बुखार न होने पर पुराने महीन चावल का भात, दूध, रोटी आदि देना चाहिये। घी तेल की पकी चीजें, गुड, खटाई आदि देना ठीक नहीं।

दवा का प्रयोग—चढ़ते बुखार में दवा न देनी चाहिये। बुखार जब उतर रहा हो तब चुनी हुई दवा की दो एक खुराकें देनी चाहिये। अगर दूसरे दिन अधिक जोर से बुखार आये तो दवा बन्द रखनी चाहिये। बाद को अगर बुखार घटने लगे और फायदा मालूम हो तो उसी दवा की २-३ खुराकें और देनी चाहिये। रोग के लक्षण बदल जायें तो दूसरी दवा चुननी चाहिये।

आवश्यक सूचना—मैलेरिया के दिनों में मैलेरिया वाले स्थान को हो सके तो छोड देना चाहिये। अगर ऐसा न किया जा सके तो नीची जमीन में न रहकर ऊपर के तलवों मे रहना चाहिये रातको मसहरी लगाकर या अच्छी तरह ओढ़कर सोना चाहिये। ताकि मच्छड न काट सकें। मच्छड़ों का नाश करने के लिये मकान के आसपास कहीं भी पानी भरा न रहने देना चाहिये। जिस तालाब चौबच्चे या नाली आदि मे मच्छड रहते हों, उनका पानी निकाल देना चाहिये या मिट्टी डालकर उन्हें सुखा देना चाहिये। यदि ऐसा न हो सके तो पानी पर किरासिन तेल डालकर आग लगा देनी चाहिये। तालाब में हंस और मछली आदि रहने से वे भी मच्छडों के अण्डे खा

जाते हैं। युक्लीपृस तेल सूँघने से मैलेरिया से बचाव होता है। बुखार के दिनों में ठण्डे जल से बहुत नहाना, ठण्डी हवा का लगना, रात में अधिक जागना, दिन में सोना, अधिक परिश्रम करना आदि हानिकारक है। बुखार छूटने पर सर्दी लगने से पुनः बुखार आ जाने का डर रहता है।

मैलेरिया में पाण्डुरोग या कमला, लीवर और पिलही का बढ़ जाना, न्युमोनिया और ब्रोङ्काइटिस आदि लक्षण प्रकट होने पर उन्हीं को ध्यान में रखकर इलाज करना चाहिये। स्वल्प-विराम ज्वर कभी-कभी टायफाइड ज्वर के लक्षण दिखायी देते हैं, इसे टायफो-मैलेरिया कहते हैं। इसके लिये टायफाइड रोग की दवाए देखनी चाहिये।

जुकाम या सर्दी का बुखार।

(CATARR HAL FEVER)

जुकाम के साथ जो बुखार आता है, उसे सर्दी का बुखार कहते हैं। सर्दी लगना, पानी में भीगना, पसीने की हालत में ठण्डी हवा का लगना, रातमें ओस खाना, पेट का गरम होना, यकायक गरमी से सर्दी में जाना, दही खटाई आदि कफ-वर्धक चीजें अधिक परिणाम में खाना, इत्यादि कारणों से जुकाम या सर्दी हो जाती है और कभी-कभी उसके साथ ही हरारत या बुखार भी आ जाता है। सारे बदन में ऐंठन जैसा दर्द, आँख नाक से पानी जैसा कफ निकलना, शिर में भार, छाती में कफ, छींकें आना, आँखों से पानी निकलना, शिर

दर्द, छाती में दर्द, गले का बैठ जाना, खाँसी, जम्हाई आना, कब्जियत, कै या मिचली, साधारण जाडा लगकर बुखार आना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

सर्दी के आरम्भ में नाक से जब पानी जैसा कफ निकलता हो तब चीनी या बतासे के साथ एक-एक बूँद अर्क कपूर दिन में तीन चार बार खाने से काफी फायदा होता है। छींक बुखार, आँख नाक से पानी गिरना, प्यास बेचैनी इत्यादि लक्षणों में एकोनाइट ३×या ६। छींक, मिचली या कै, श्वास कष्ट, कफ निकलना प्रभृति लक्षणों में इपीकाक ६ या ३०। निद्रालुता या अच्छी तरह नींद न आना, आँखें और चेहरा लाल शिर दर्द, प्यास दाहिनी ओर तेज दर्द आदि में बेलेडोना ६ या ३०। आँख नाक से पानी गिरना, गले में सुडसुडाहट, आवाज भारी, बारम्बार बहुत पेशाब होना, हाथ पैर और शरीर में दर्द, बुखार, बन्द कमरे में और खास कर शाम के वक्त तकलीफ का बढ़ जाना, खुली हवा में आराम मालूम होना इत्यादि लक्षणों में एलियम सिपा ३×या६ सरदी के कारण बुखार, सरदी पक जाने पर रात को बुखार का बढ़ जाना, तर खाँसी, कफ निकलना, शिर में भार, किसी भी चीज की सुगन्ध या स्वाद न मालूम होना, प्रभृति लक्षणों में पल्सेटिला ६ बुखार के साथ खाँसी, छाती में दर्द, शिर में दर्द, शिर भारी, पीठ और हाथ पैर में दर्द, प्यास,

कब्जियत इत्यादि लक्षणों में ब्रायोनिया ६। कब्जियत, बुखार, नाक के एक या दोनों छिद्रों का कफ भर जाने के कारण बन्द हो जाना आदि में नक्सवोमिका ३०। छींक आये, नाक से जलन पैदा करने वाला पानी जैसा कफ निकले तो आर्सेनिक ६। पीला पीला कफ निकलना, सर्दी का पक जाना, कै या मिचली, कफ निकलते निकलते नाक में दर्द, मुँह का स्वाद कडुआ इत्यादि लक्षणों में मर्क्युरियस सल ६ या ३०। बायीं ओर तेज दर्द, फीका चेहरा आदि में स्पाइजिलिया ६ या ३०। लक्षणानुसार रसटक्स, नक्स-मस्केटा, युफ्रेशिया और सल्फर आदि दवाएँ भी दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—चुनी हुई दवा २४ घण्टे में तीन चार बार से अधिक न देनी चाहिये। रोगी को सर्दी से बचाना चाहिये। शरीर पर सदा कुछ कपड़े पहन या ओढ़ रखने चाहिये। पीने के लिए कुनकुना पानी काम में लाना चाहिये। नाक बन्द हो जाने पर नाक और छाती पर कडवा तेल मालिश करना चाहिये। जिन्हें हमेशा सर्दी हो जाया करती हो, उन्हें स्वस्थ अवस्था में तेल लगाकर ठण्डे पानी से अच्छी तरह नहाने की आदत डालनी चाहिये। बुखार के समय साबूदाना आदि हलकी चीजें और बुखार आराम हो जाने पर रोटी आदि खाने को देना चाहिये।

"इन्फ्लुएंजा" रोग और उसकी चिकित्सा देखिये।

माल्टा फीवर (MALTA FEVER)

माल्टाफीवर एक किस्म का बुखार है, जिसका प्रकोप माल्टा टापू में बहुत अधिक होता है। यहाँ इसका प्रसार बहुत कम होने के कारण हम संक्षेप में ही इसकी चिकित्सा अंकित करते है।

इसकी उत्पत्ति एक किस्म के जीवाणु से मानी जाती है। जैसे मैलेरिया मच्छड़ों से और प्लेग चूहों से फैलता है, वैसे ही यह बकरी के दूध से फैलता है, इसलिये जहाँ इसका प्रकोप हो वहाँ सब से पहले बकरी के दूध को काम में लाना छोड़ देना चाहिये।

आरम्भ में यह बुखार एक सप्ताह तक दबा रहता है। इसके बाद प्रति दिन बुखार आने लगता है और दो तीन सप्ताह तक लगातार आया करता है। इसके बाद कुछ दिनों के लिये यह छूट जाता है। कुछ दिनों के बाद फिर उभड़ने पर यह पाँच सात महीने तक आया करता है और रोगी को मरणासन्न बना डालता है। कभी कभी वर्षों तक यह पीछा नहीं छोड़ता। इसमें कब्जियत बहुत अधिक रहती है। खून की कमी, सुस्ती, पिलही का बढ़ जाना, स्नायु और जोड़ों में दर्द, सन्धिवात इत्यादि उपसर्ग भी दिखायी देते हैं।

चिकित्सा।

रोग के आरम्भ में ब्रायोनिया ३×३०, बेप्टीशिया मदर टिंचर या ३× और आर्सेनिक ३× या ६ तथा बाद को

आर्स आयोड ३ × मर्क्युरियस ६, नेट्रमम्यूर ३०, सियोनोथस १×, फेरमफस ३×, फोस्फरस ६, लाइकोपोडियम ६ या ३० सीपिया ३०, सिमिसिफ्यूगा ३ ×-और रसटक्स ६ या ३० आदि दवाएँ लक्षणों के अनुसार देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी को अलग रखना चाहिये और उसके मलमूत्र को सावधानी से फेंकना चाहिये। खाने को हलकी चीजे देनी चाहिये। रोगी को गरम पानी से नह लाया जा सकता है। बुखार १०५ डिग्री से अधिक हो जाय, तो ठण्ढे पानी से बदन पोछा जा सकता है। क्वीनाइन इस बुखार में फायदा नहीं करती।

काला बुखार।

मलेरिया की तरह एक जीवाणुसे ही यह ज्वर भी उत्पन्न होता है। श्वास प्रश्वास और खाने पीनेकी चीजों के अलावा खटमल द्वारा भी इसका विष एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करता है। चीन और मिश्र देश में इसका बहुत प्रसार है। भारत में लका और आसाम में ही यह पाया जाता था। आज कल मैलेरिया की तरह यह भी बंगाल में फैल गया है।

लक्षण—इसके अधिकाश लक्षण मेलेरिया से मिलते जुलते होते हैं। विशेषता यह है कि मैलेरिया की अपेक्षा इसमें यकृत और तिल्ली बहुत जल्दी जल्दी बढ़ते हैं। रोगी

के शरीर में खून की कमी हो जाने के कारण वह बहुत दुबला पतला और कमजोर हो जाता है। मसूड़े और नाक आदि से रक्त गिरता है, बुखार चढ़ने उतरने का कोई नियम या निश्चित समय आदि नहीं दिखायी देता, कभी कभी कुछ देर के लिये बुखार उतर जाया करता है और कभी कभी शोथ के लक्षण भी दिखायी देते हैं। इसमें रोगी का समूचा शरीर काला पड़ जाता है, इसीलिये इसका नाम काला ज्वर पड़ा है। अनेक बार यह रोग असाध्य हो जाता है,इस लिये आरंभ ही से सावधानी के साथ इसका इलाज होना चाहिये।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६, ३० या २००—दिनमें दोवार या किसी भी समय बुखार आना, पिलही और यकृतका बढ़ जाना, शरीर में खूनकी कमी, सूजन, इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०–नाक और मसूढ़ों आदिसे रक्त निकलना, छातीमें दर्द, खाँसी, सविराम ज्वरसे स्वल्प विराम ज्वरके से लक्षण हो जाना इत्यादि।

सियेनोथस १X–बुखार के साथ पिलही का बहुत बढ़ जाना।

एपिस ३X या ६–दोनों वक्त बुखार, सूजन, प्यास बिलकुल न होना, पुरानी बीमारी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

किनिनम सल्फ या क्वीनाइन ६ या ३०—जाड़ा, गरमी और पसीना-तीनों अवस्थाओं का स्पष्ट रूप से उपस्थित होना, बुखार के बाद पसीना, चेहरा फीका, शामको तीन बजे जाड़ा लगकर बुखार आना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। यह दवा बुखार उतर जाने पर दी जाती है।

कार्डुयस मेरियानस ३X—यकृत अधिक बढ जाने पर इससे विशेष लाभ होता है।

फेरम मेट ६—पुराना और अनियमित बुखार, यकृत और पिलहीका बढना, क्वीनाइन के कारण रुका हुआ बुखार हाथ पैर ठंडे, कमजोरी लाने वाला बहुत पसीना, पतले दस्त, खून की कमी, सूजन इत्यादि।

आयोडियम ६—बहुत कमजोरी और शरीर की क्षीणता बुखार उतर जाने पर पतले दस्त, पिलही के स्थान में दबाने से कड़ापन और दर्द मालूम होना।

फोस्फरिक एसिड ६ या ३०—बिना प्यास का बुखार, कमजोरी, नाड़ी दुर्बल और अनियमित।

क्रोटेलस ६—चेहरा लाल और फूला हुआ, आँखों में राग, लाल पसीना, रक्तस्राव, खूनका पतला पड़जाना, पेशाब में तकलीफ इत्यादि।

३ × या ६—सदा जाड़ा सा लगना, साघातिक मैलेरिया जैसा बुखार, शाम को तीन च्यार-बजे बुखार का आना इत्यादि।

एन्टिम टार्ट ६ या ३०—काले बुखार की यह भं बढ़िया दवा है। इसके सेवन से बहुत रोगी अच्छे हुए हैं।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—तीसरे पहर या शामको बुखार, हमेशा जाड़ा लगना, बहुत पसीना, हाथ पैर ठण्ढे यकृत बढ़ा हुआ, रात में बहुत गरमी मालूम होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस फेरम आयोड, फेरम आर्स, फेरम सियेनेट्रम आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार देने से फायदा करती हैं।

आवश्यक सूचना—निम्नक्रम की दवा दिन में दो तीन बार और उच्चक्रम की दो एक दिन के अन्तर से एक बार देनी चाहिये। अन्यान्य बुखारों की तरह इसमें भी पथ्य और परहेजों के नियमों का पालन करना चाहिये। एक डाक्टर ने एन्टिम टार्ट के सेवन और इन्जेक्शन से अधिकांश रोगी आराम किये थे। एन्टीमनी के इन्जेक्शन और क्वीनाइन के व्यवहार का भी अच्छा फल होते देखा गया है। दीवारों पर नारियल का तेल छिड़कने से खटमल कम हो जाते हैं।

पीला बुखार (YELLOW FEVER)

यह बुखार अमेरिका से यहाँ आया है, परन्तु सौभाग्य का विषय है कि इसका यहाँ अधिक प्रसार नहीं हुआ है। मैलेरिया की तरह इसका विष भी एक प्रकार के मच्छड़ ही फैलाते हैं। सांघातिक मैलेरिया के पित्त प्रधान ज्वर में

कमला के से जो लक्षण दिखायी देते हैं, और जिस तरह रोगी की आँखें आदि पीली हो जाती है, उसी तरह इसमें भी रोगी का रंग पीला हो जाता है और इसी लिये इसका नाम पीला बुखार पड़ा है। इसका स्थिति काल ७–८ दिन है।

लक्षण—इस बुखार की चार अवस्थाएँ दिखायी देती हैं। प्रारम्भिक अवस्था में जी मिचलाना, भूख न लगना और सुस्ती आदि लक्षण प्रकट होते हैं। दो–चार दिन के बाद दूसरी अवस्था उपस्थित होती है और जाड़ा, कपकपी, तेज बुखार, उदासी, शरीर में बदबू, शिरदर्द, कब्जियत, थोड़ा पेशाब, समूचे शरीर में दर्द, नाड़ी तेज आदि लक्षण प्रकट होते हैं। एक या दो दिन के बाद तीसरी अवस्था उपस्थित होती है। इस अवस्था में शरीर का दर्द बन्द हो जाता है और बुखार भी उतर जाता है। यदि अच्छी तरह इलाज होता है तो फिर रोग बढ़ने नहीं पाता और रोगी चंगा हो जाता है। अच्छी तरह इलाज न होने पर इस अवस्था में भी अनिद्रा, अजीर्ण या राक्षसी भूख, और कमजोरी आदि लक्षण बने रहते हैं। धीरे-धीरे चौथी अवस्था आती है। इसमें रोगी पीला पड जाता है और मिचली या यकृत के, गले या पेट में जलन, काली कै, कुछ काले खून के साथ कफ मिले दस्त, काला पेशाब, रक्तस्राव, शरीर ठण्ढा, पेशाब बन्द, बहुत सुस्ती अकभक, हिचकी, ऐंठन और बेहोशी आदि लक्षण उपस्थित होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। यह रोग बहुत सांघातिक

माना जाता है और आरम्भ से ही अच्छी तरह इलाज न होने पर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

प्रथमावस्था की दवाएँ—कार्बोवेज ३० या २००, इपीकाक ३, आर्सेनिक ६।

दूसरी अवस्था की दवाएँ–स्पिरिट कैम्फर, एकोनाइट ३ ×, सिमिसिफिउगा ६, ब्रायोनिया ३, जेल्सीमियम, ३ × इपीकाक ३।

तीसरी अवस्था की दवाए–कोफिया ६ मर्क्यूरियस ६, आर्सेनिक ३ या ३०।

चौथी अवस्था की दवाएं–क्रोटेलस ३ या ६, कैडमियम सल्फ ३ या ३०, आर्सेनिक ३ × या ६,

कार्बोवेज ३० या २००–यह इस रोगको सबसे बढ़िया दवा है। अनेक बार इसकी केवल एक ही खुराक देने से फिर दूसरी दवा देनेकी जरूरत नहीं पडती।

एकोनाइट ३×—बदन गरम, चमड़ा रूखा, चेहरा लाल सर मे दर्द, प्यास, अस्थिरता इत्यादि।

बेलेडोना ६–छाती या शिर में रक्ताधिक्य,हिलने डोलने से रोग लक्षणों का बढ़ना, चेहरा और आँखें लाल, शिरदर्द, प्रलाप, दाँत कटकटाने की इच्छा इत्यादि। बेलेडोना और – पर्याय क्रम में देने से भी बहुत लाभ होता है।

क्रोटेलस ३ या ६—आँख, नाक, कान, आदि से खून बहना, बहुत वक झक करना, चेहरा लाल और फूला हुआ, खूनका पसीने के रूपमें निकलना, रोगकी चौथी या पतनावस्था।

लेकेसिस ६ या ३०—यह भी रोग की चौथी अवस्थामें बहुत फायदा करता है। स्नायुदोष, काला खून बहना, जीभ सूखी और काँपती हुई, प्रलाप, काले रंगका पेशाब, रातमें प्रलाप का बढ़ना, बायीं करवट सो न सकना, सोने के बाद तकलीफों का बढ़ना इत्यादि।

आर्निका ३ या ६—बहुत सुस्ती, मुँहसे बदबू निकलना, हालत खराब होने पर भी तबियत के बारे में पूछने पर रोगीका यही कहना कि "अच्छी है।"

आर्सेनिक ३ या ३०—बहुत बेचैनी, ज्वाला कर वेदना, जी मिचलाना, हिचकी, काले पदार्थों की कै, बदबू-दार खूनी दस्त, प्यास, श्वासकष्ट, रोगकी चौथी अवस्था।

आर्सेनिक हाइड्रो ६ या ३०—चमडा पीला, मिचली, हिचकी, मूत्र स्थली में दर्द, कुछ खाने पीने से कै, हाथ पैर ठंढे।

कैडमियमसल्फ ३ या ६—चेहरा ठंठा, पेट में जलन और फतरने जैसा दर्द, पीले और काले रंगकी खट्टी कै, श्वास-कष्ट पैदा करने वाली मिचली इत्यादि।

आर्जेन्टम नाइट ६ या ३०—शिरमें दर्द और चक्कर शिरका पीछेकी ओर लटक पड़ना, मस्तिस्क विकार।

ब्रायोनिया ६ या ३०—पाकाशय में गोलमाल, समूचे शरीरमें दर्द, शिरदर्द, स्थिर रहने से आराम मालूम होना। इत्यादि। आर्जेन्टम और बेलेडोना के बाद इसे देने से अधिक लाभ होता है,

एन्टिमटार्ट ६×—निद्रालुता, सुस्ती, बहुत सा ठंढा पसीना, नाड़ी चीण और तेज, कै या कष्टकर मिचली।

कैन्थारिस ३×—पेशाबका बन्द हो जाना या तकलीफ के साथ पेशाब होना। आर्सेनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ३—रक्तस्राव और कमला जैसे लक्षणों में क्रोटेलस तथा लेकेसिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सिकेली ३×—गर्भवती स्त्रियों को यह रोग होने पर गर्भ गिर जानेकी आशंका हो तब इसे देना चहिये।

कोफिया ६—रातमें बहुत बेचैनी और नींद न आना।

स्पिरिट कैम्फर—रोगके आरंभ में बहुत देर तक ठहरने-वाले तेज जाड़े और कपकपी के लक्षणों में। (दस-दस पन्द्रह पन्द्रह मिनट के अन्तर से एक-एक बूँद)

सिमिसिफिउगा ६—शिर, हाथ, पैर, पीठ आदि स्थानों में गठिया जैसा दर्द।

इपीकाक ३–बहुत कै या मिचली।

जेल्सीमियम ३X–२४ घंटेके अन्दर बुखार जराभी कम न होने पर इसे देना चाहिये ।

मर्क्युरियस सल ६–दस्तमें खून, मलद्वारमें दर्द, बदन का पीला पड जाना।

आवश्यक सूचन—रोगी को साफ सुथरे स्थानमे रखना चाहिये और उसका मलमूत्र कहीं दूर लेजाकर गाड देना चाहिये। यह लरछुत बीमारी है, इसलिये लोगों को रोगवाले स्थानसे दूर रहना चाहिये। रोगी का बदन गरम पानी से पोछ देना अच्छा है। कब्जियत में साबुन पानी की पिचकारी देनेसे लाभ होता है। बुखार की हालत में केवल पानी या नारंगी का रस और बुखार उतर जाने पर साबूदाना, वार्ली, पानी मिला दूध आदि देना चाहिये। रोगकी अन्तिम अवस्था में रोगी एक दम सुस्त हो जायतो ह्विस्की, शेम्पेन या ब्राण्डी आदि देने से लाभ होता है। जहाँ यह बुखार फैला हो वहाँ प्रतिदिन बेप्टीशिया मदर टिंक्चर १x या सिमिसिफिउगा ३ या ६ की एक खुराक खाने से रोग नहीं होता। डाक्टर हेरिङ्ग का कथन है कि रोगीके मलमूत्र, कपडे बिछौने, रहने के स्थान तथा वहाँकी सभी चीजों पर कोयले का चूरा छिडकने और डालते रहने से यह बीमारी फैलने नहीं पाती। कोयला इसके विषको नष्ट कर देता है।

स्कारलेटीना या लाल बुखार

(SCARLATINA)

यह भी एक भयंकर और सांघातिक बीमारी है, परन्तु पीले बुखारकी तरह इसका भी इस देशमे अधिक प्रसार नहीं है। इसकी भी उत्पत्ति एक प्रकार के जीवाणुओं से होती है और यह भी सक्रामक तथा स्पर्शाक्रमक या लरछुत रोग है।

इस बुखार में चमड़े का रंग चमकीला, लाल या पीली आभा लिये हुए लाल रंगका हो जाता है। चमडे पर कोदवा माता जैसे दाने निकलते हैं। कुछ दिनों में दाने मुरझाने लगते है और आठ नौ दिनमें चमडा उड़ने लगता है इसका आरंभ मिचली या कै से होता है। इसके बाद थोडा जाडा या कपकपी होती है और फिर समूचा शरीर बहुत गरम हो जाता है। प्यास शिर दर्द, सुस्ती और प्रलाप आदि लक्षण भी प्रकट होते है। दाने पहले शरीर के उस भागमें निकलते है जो हमेशा ढका रहता है। बादको समूचे शरीर में निकल आते हैं। चेहरे का रंग भी लाल हो जाता है। जीभ पर सफेद लेप रहता है, लेकिन लाल दाने स्पष्ट दिखायी देते है। गले पर इस रोग का बहुत बुरा असर पड़ता है। गलेका रंग खाकी, सफेद, पीला या नीला हो जाता है और साँस लेने में तकलीफ होती है। टान्सिल भी बढ़ जाते है। कभी-कभी

गर्दन और जबड़े के नीचेकी गिल्टियाँ सूज जाती हैं, और आँख, नाक, कान आदिसे पीव बहने लगता है। कभी-कभी समूचे शरीर में दाने नहीं निकलते, लेकिन मुँह और चेहरे पर इसके लक्षण स्पष्ट दिखायी देते हैं। रोग कठिन होने पर गलेमें दर्द और जलन जीभमें सूजन, बहुत सुस्ती, रक्तस्राव, कमजोरी आदि लक्षण प्रकट होते हैं और हाथ, पैर, चेहरा तथा पलकों पर सूजन दिखायी देती है। इसमें बुखार १०४ से १०६ डिग्री तक और साघातिक अवस्था में १०० डिग्री तक चढ़ता है। नाड़ी की गति प्रति मिनट १२० से १६० तक रहती है। अनेक बार बच्चों को यह रोग होने पर उनके कान बहने लगते हैं और इसके फल स्वरूप वे बहरे तक हो जाते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X—यह दवा एकदम शुरूकी हालत में, जब दाने भी न निकले हों तब देना चाहिये। तेज बुखार, तेज नाड़ी, माथा गरम, हाथपैर ठंडे, प्यास इत्यादि लक्षणों में इस से लाभ होता है।

बेलेडोना ३ या ६—साधारण लाल बुखार की यह अच्छी दवा है। दानों का रंग चमकीला लाल, गले और जीभ में जलन तथा सूखापन, तेज प्यास लेकिन पानी न पी सकना, गला और जीभ का रंग भी चमकीला लाल,

टान्सिल में सूजन, गर्दन और जबड़े का अकड़ जाना, प्रलाप इत्यादि। बुखार वाले स्थानों में बुखार रोकने के लिये यह प्रतिपोधक दवाके रूप में भी व्यवहार किया जाता है।

मर्क्युरियस कर ३–गॉठें सूजी, गलेमें जख्म, बहुत लार गिरना, सॉसमें बदबू, सुस्ती, मूत्र ग्रन्थि में भी सूजन इत्यादि लक्षणों में ;और बेलेडोना से लाभ न होने पर यह अधिक फायदा करता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०–अगर दाने अच्छी तर न निकलें और सूखी खॉसी, छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, बहुत पसीना, जीभ सूखी, कब्जियत, हिलने डोलने से तकलीफ का बढ़ना आदि लक्षण दिखायी दें तो इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०–दानो का रंग बैंगनी, उनमें खुजली होना, शरीर में दर्द, नाकसे पीला कफ निकलना, जीभ सूखी, बहुत बक झक करना, बारबार, करवट बदलते रहना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०–बहुत अस्थिरता, हाथ पैर में दर्द और अनिद्रा, इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०–गलेमें, खराब जख्म, गलेकी गॉठें सूजी हुई, निगलते समय गलेमें डिप्थीरिया रोगकेसे लक्षण, सोनेके बाद तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

लाइको पोडियम ३०—लेकेसिससे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—तेज बीमारी, रोगीका बहुत सुस्त हो जाना, दानोंका देर से निकलना, निकल कर दब जाना या उनका रंग नीला हो जाना, अस्थिरता, गले के जख्म में सड़न, मृत्यु भय, बहुत गरमी, बदबूदार दस्त, तेज प्यास लेकिन अधिक पानी न पीना इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—दानोंका दब जाना, पेशाब कम, सबसे पहले जननेन्द्रिय में सूजन होना, जीभ लाल, गलेमें जख्म, नाकसे सफेद या रक्त मिला बदबूदार स्राव, जीभ में फफोले या दाने, तेज बुखार, रोगीका झूमना इत्यादि।

फाइटो लेक्का १x, सल्फर ३०, ६३ लेन्थस १x, क्युप्रम एसेटिकम ३x, एसिड म्यूर २x, कोटेलस ३, एकिन्नेसिया मदर टिंचर, हिपर ३०, एमोनिया कार्ब ३० आदि दवाएं भी लक्षण के अनुसार दी जा सकती हैं। सांघातिक बीमारी में आर्सेनिक, लाइको पोडियम और फोसफरिक एसिडसे बहुत फायदा होता है। चुनी हुई दवा दिन में तीन चार बार देनी चाहिये। रोगी को चार पाँच सप्ताह तक दूसरों के संसर्ग में न आने देना चाहिए। और रोग आराम हो जाने पर सर्दीसे बहुत बचना चाहिये। यह रोग अधिक से अधिक पन्द्रह दिनमें अच्छा हो जाताहै। यदि घातक हुआ तो दाने निकलनेके पहले ही तेजबुखार के कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है।

[डेंगू ज्वर DENGUE FEVER]

यह एक साधारण बुखार है। बंगाल में कभी-कभी इसका बहुत अधिक प्रकोप होता है। इससे भी शरीर पर छोटे-छोटे दाने निकलते है। हड्डियों और जोड़ों मे इतना दर्द होता है कि रोगी आराम हो जाने पर भी लँगड़ाया करता है। इसी लिये अमेरिकावालोंने इसका नाम ब्रेक बोन फीवर (Break bone fever) या हड्डीतोड़ बुखार रक्खा है। यह प्राय एक सप्ताह में अच्छा हो जाता है। यह लाल या पीले बुखारकी तरह सांघातिक नहीं है।

इस रोग का कारण कभी मालूम नही हो सका। कोई एक तरह का जीवाणु, कोई छुआछूत और कोई मौसम की खराबी (ठंडी हवा या दिनको गरमी और रातको जाड़ा इत्यादि) को इसका कारण मानते है।

इसका हमला किसी दिन अचानक होता है। समूचे शरीर और खास कर जोड़ों में तेज दर्द, शिरमें असाध्य वेदना, प्यास, भूख न लगना, मुख और आँखें लाल, कै, कब्जियत, गला और बगल आदिकी गॉंठों का फूलना और शरीर पर भिन्न-भिन्न रंगके दाने निकलना आदि लक्षण प्रकट होते है। तीसरे से लेकर पाँचवें दिन तक बुखार उतर जाता है, पर दर्द आराम नहीं होता। कभी-कभी दो-तीन दिन बाद इसका दुबारा हमला होता है। इस बार बुखार उतना तेज नहीं होता और दोही तीन दिनमें अच्छा हो जाता है। बुखार के

बाद पतले दस्त या अन्यान्य उपसर्ग होने पर रोगीको आराम होने में अधिक समय लग जाता है। साधारण बीमारी में बिना दवा खाये केवल उपवास करने से ही फायदा हो जाता है। दवाकी जरूरत हो तो निम्नलिखित दवाएँ प्रयोग करनी चाहिये।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x—तेज बुखार, शरीर और हड्डियों में तेज दर्द, अस्थिरता, प्यास इत्यादि।

ब्रायोनिया ३, ६ या ३०—सूखी खाँसी, छाती में दर्द, हिलने डोलनेसे तकलीफ का बढ़ना, जोड़ो पर साधारण लाली, जीभ पर सफेद लेप, पेट में गोलमाल, बहुत प्यास, कब्जियत इत्यादि ब्रायोनिया और एकोनाइट पर्यायक्रम में भी दिये जाते हैं।

बेलेडोना ३ या ६—रोगके आरम्भ में तेज बुखार और सिर दर्द, चेहरा लाल, बकझक करना, दिमाग मे विकार, जोड़ों में बिजलीकी तरह समूचे शरीर में दर्द का दौड़ना, जोड़ों में सूजन और लाली इत्यादि।

युपेटोरियम पर्फ ३ या ६—समूचे शरीर में खास करके हाथ और कलाई में तेज दर्द, जीभ पर पीला लेप, प्यास, पानी पीने पर कै, यकृत और आमाशय में दबाने से दर्द मालूम होना।

ओर हो जाता है। इन लक्षणों के बाद ८-१० दिनमें बुखार छूट जाता है और एक सप्ताह तक रोगी भला चंगा रहता है। एक सप्ताह के बाद फिर बुखार का हमला होता है। इसबार बुखार पहले की अपेक्षा कुछ धीमा होता है। इसी तरह चार-पाँच बार तक रोग अच्छा होता है और फिर उभड़ता है। इस प्रकार पुनः-पुनः आने के कारण ही इसका नाम पौन पुनिकज्वर पड़ा है। इसका दूसरा नाम फेमिन फीवर या अकाल ज्वर है। किसी-किसी का कहना है कि यह हलके ढगका टाइफस बुखार ही है।

चिकित्सा।

बेप्टीशिया १× या ३—यह एक बढ़िया दवा है। रोग के आरम्भ में ही इसे व्यवहार करना चाहिये। कै, कब्जियत, भूख न लगना, पकाशय में गोल माल इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

ब्रायोनिया ३ × या ६—शिर और हाथ पैर में दर्द, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना, कब्जियत, प्यास इत्यादि।

इपीकाक ३ या ६—बहुत जी मिचलाना या कै होना।

आर्सेनिक ६—कठिन बीमारी में इसे देना चाहिये। बहुत सुस्ती, अस्थिरता या बेचैनी, नाड़ी क्षीण और तेज,

बहुत प्यास, पर अधिक पानी न पीना, शरीरमें बहुत जलन, कै और दस्त इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—बुखार छूट जाने पर इसे देने से दुबारा हमला रुकता है।

युपेटोरियम पर्फ १X—लगातार पित्तकी कै, समूचे शरीरमें दर्द, हड्डियों में गठिया जैसा कष्टकर दर्द, बुखारका न छूटना, पेटमें गोलमाल इत्यादि।

बार्बेरिस ३X या ६—पिलही और यकृत बढ़ जाने पर इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६—बेचैनी, हिलने डोलने से रोगीको आराम मिलता है, इसलिये वह करवट बदलता रहता है।

फोस्फरिक एसिड ६ या ३०—रोग जब अच्छा हो चले तब इसे देने से बहुत फायदा दिखायी देता है।

कैम्फर—रोगका दुबारा हमला रोकने के लिये यह भी दिया जाता है।

इन दवाओं के अलावा मैलिरिया, टायफाइड और टायफस रोग में बतलायी हुई दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जाती है।

आवश्यक सूचना—अन्यान्य बुखारों की तरह इसमें भी पथ्य परहेजी का प्रबन्ध करना चाहिये। रोगी के श्वास-प्रश्वास की हवा स्वस्थ मनुष्य के श्वास में जाने से वह भी बीमार हो सकता है। यकृत और पिलही में दर्द होने पर गरम पानीका सेंक देना चाहिये।

मस्तिष्क—मेरु मज्जीय ज्वर ।

(CEREBRO-SPINAL FEVER)

यह बुखार भी एक प्रकार के संक्रामक विषके ही कारण होता है। बुखार के पहले कोई खास शिकायत नहीं होती। एकायक किसी दिन जाड़ा और कम्पके साथ बुखार आ जाता है। कभी-कभी यह बुखार १०३ से लेकर १०७ डिग्री तक जा पहुँचता है। और शरीर में ऐंठन, जोरोंका सरदर्द, शिरमें चक्कर, पेटमें दर्द, पित्तमिली कै, सख्त बेचैनी आँख की पुतली फैली हुई इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। धीरे-धीरे शिरका दर्द, गर्दन के पीछे और रीढ़ तक पहुँचता है। मांस-पेशियों में एँठन के कारण रोगी शिर पीछेकी ओर झुकाये रहता है, इसलिये वह धनुष्टङ्कारके रोगी की तरह टेढ़ा हो जाता है। इसके साथ साथ दाँत लग जाना, श्वासकष्ट, टेढ़ी नजर, आँखें खुली होने पर भी उनसे दिखायी न देना, पेशियों का संकोचन, बहुत सुस्ती, बेहोशी में बकते या सोते रहना, कानसे सुनायी न देना, शिर, पैर और रीढ़में तेज दर्द, चुपचाप पड़े रहना, तन्द्रा, स्नायुका लकवा, फेफड़े का प्रदाह प्रभृति लक्षण प्रकट होते हैं। इसमें ५० प्रतिशतसे अधिक रोगियों की मृत्यु हो जाती है। यदि बुखार धीरे-धीरे घटता गया और रोगी होशमें आता गया तो वह अच्छा भी हो जाता है। रोग के आरम्भ में रक्तस्राव होना और शरीर पर लाल-लाल दाग

दिखायी देना वहुत बुरा लक्षण माना जाता है । बच्चे और प्रौढ़ावस्था के मनुष्य इसके अधिक शिकार होते हैं। रोग के आरम्भ में मृत्युका जितना भय रहता है, उतना बादको नहीं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X–जाडा और कम्प, बेचैनी, तेज बुखार, चमडा सूखा, वहुत प्यास, घबड़ाहट, मृत्युभय इत्यादि।

साइक्यूटा ३ या ६–यह इस रोगकी वहुत बढिया दवा है। पीछेकी ओर या एक ओर को शरीर झुक जाने पर इससे अवश्य लाभ होता है। बेहोशी द्वित्वदृष्टि, ऑरा तथा हाथ पैर में दर्द या चमक, वहरापन, लकवा इत्यादि।

हेलीबोरस ३X–मन वहुत सुस्त, शिर और गर्दन के पीछे वहुत तेज दर्द।

सिमिसिफिउगा ३X–शिरमें बेहद दर्द, आँख और बदन में दर्द, गर्दनका अकड जाना, बेहोशी में बिल्ली कुत्ता आदि दिखायी देना इत्यादि, पेशियोंकी ऐठन दूसरी दवाओंसे बन्द न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

एमन कार्ब २००—कान के नीचे और पीछे जोरों का दर्द।

होमियोपैथिक चिकित्सा — सरल

ओपियम ३ या ६–तन्द्रा, धीमा श्वास प्रश्वास स्थिर दृष्टि, सब अंगों का टेढ़ा हो जाना, मुँह खुला, नाक से जोरों की आवाज इत्यादि।

अर्निका ३ या ३०—सोते रहना, स्पर्शाधिक्य, समूचे शरीर में फोड़े जैसा दर्द, तबियत खराब होने पर भी पूछने से अच्छी बतलाना।

आर्सेनिक ६ या ३०–बहुत कमजोरी, अस्थिरता, बहुत प्यास पर अधिक पानी न पीना, समूचे शरीर में जलन।

बेलेडोना ६ या ३०—शिर दर्द, आँखें और चेहरा लाल बहुत, बक झक करना, द्वित्वदृष्टि, सोते रहना इत्यादि।

विरेट्रम विरिडि ३X–शिर का पीछे की ओर झुकजाना, ऐंठन या खींचन इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०–जोरोंका शिर दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ जाना, गर्दन का अकड़ जाना, हाथ पैर और शरीरके जोड़ों में दर्द।

क्रोटेलस ३—सन्निपात जैसे लक्षण, रोगीका बहुत सुस्त हो जाना, रक्तस्राव होना, रक्तका विषाक्त हो जाना इत्यादि।

जेल्सीमियम ३X—कसकर बाँध रखने की तरह शिर दर्द, अधिक पेशाब होने से दर्दमें कमी, कमजोरी के कारण शरीरका काँपना, लकवा बहरापन आदि रोग के बाद के उपसर्ग।

एसिडहाइड्रो ३X—साधारण अवस्था से रोग का एकायक घातक रूप धारण करना, शरीर का ठंढा पड जाना इत्यादि।

ग्लोनाइन ३ या ६—शिरमें तेज दर्द, बेहोशी और मिचली के साथ आँखों से दिखायी न देना, चेहरा पीला, रीढ़ में दर्द इत्यादि।

सिलिका ६—बहरापन दूर करने के लिये इसे देना चाहिये।

इन दवाओं के अतिरिक्त, मेनिङ्गोकोक्किन, कल्केरिया कार्ब, सल्फर, फेरम आयोड, एपिस, आर्स आयोड,क्युप्रम-एसेट, डिजिटेलिस, मर्क्यूरियस कैल्कफस,रसटक्स, लाइको-पोडियम, केनाबिस इन्डिका, आर्जेन्टम, नाइट्रिकम आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जाती हैं।

आवश्यक सूचना—रोगी को जिस स्थान में रक्खा जाय वह हवादार तो अवश्य हो, पर वहाँ बहुत प्रकाश या शोरगुल न होना चाहिये। रोगी के शरीर को गरम पानीसे पोंछना लाभदायक है। पथ्यादि अन्य बुखारों की तरह ही देना चाहिये।

सन्निपातिक ज्वर।

(TYPHOID FEVER)

एक प्रकार का जीवाणु शरीर में घुस जाने से यह बुखार होता है। आयुर्वेद शास्त्रमें यह सान्निपतिक ज्वर के नाम से सम्बोधित किया गया है, क्योंकि इसमें वात, पित्त और कफ-खास कर वात और कफका प्रकोप होता है। इसमे आँतें खराब हो जाती हैं, इस लिये यह आन्त्रिक ज्वरके नाम से भी पुकारा जाता है। अंग्रेजी में इसे एन्टरिक या टायफाइड फीवर कहते हैं। इसमें पेटकी शिकायत प्रधान रूपसे मौजूद रहती है। अंग्रेज चिकित्सकोंने टाइफस फीवर को भी इसीके अन्तर्गत माना है, क्योंकि उसके भी अधिकांश लक्षण इसीके सदृश होते हैं, परन्तु उसमें पेटके बजाय मस्तिष्क विकारकी प्रधानता रहती है। गन्दे पाखाने, मोरी पनाले और सड़े हुए कूड़े से इसका विष उत्पन्न होता है। रोगी के मल मूत्र में भी इसके जीवाणु रहते हैं और उसे इधर उधर फेकने से चारों ओर फैलते हैं। यह संक्रामक रोग माना जाता है।

लक्षण।

इस रोग के लक्षण भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं और वे बड़ी शीघ्रता से बदलते रहते हैं। इसका स्थितिकाल प्रायः तीन सप्ताह है, पर कभी-कभी यह छः

सप्ताह तक मौजूद रहता है। इसके साधारण लक्षण नीचे दिये जाते हैं:—

प्रथम सप्ताह—बुखार आनेके पहले सुस्ती, कमर में दर्द, निरुत्साहिता, शिरदर्द, कमजोरी, भूख न लगना, अच्छी तरह नींद न आना, हमेशा जाड़ा सा लगना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इसके बाद बुखार आ जाता है, यह बुखार पहले सप्ताहके अन्त तक नित्य एक डिग्री के हिसाब से बढ़ता रहता है। सुबह जितना बुखार होता है,शामको उससे दो डिग्री बढ़ जाता है, लेकिन दूसरे दिन सुबह एक डिग्री घट कर शामको फिर दो डिग्री बढता है। इस तरह सप्ताह के अन्त में १०५ डिग्री तक बुखार हो जा सकता है। सुबह कुछ समयके लिये बुखार धीमा पड जाता है। इसके अतिरिक्त जीभ पर सफेद लेप, जीभ सूखी और अगला भाग लाल, जीभका कॉपना, प्यास का न होना, पहले कब्जियत, बादको दस्त,पेट दबाने से दर्द मालूम होना, पेट दबाने पर आँतों का बोलना, पेटमें गड गड़ाहट इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी-कभी आदिसे अन्त तक कब्जियत ही बनी रहती है। इस सप्ताह में रोगी अधिक बक झक नहीं करता।

द्वितीय सप्ताह—इस सप्ताहके आरंभ में और कभी-कभी प्रथम सप्ताह के अन्त में ही रोगी की छाती और पेट पर छोटे-छोटे लाल दाने निकल आते हैं। रोगके सभी लक्षण

बढ़ जाते हैं। पीले, रक्तमिले या उड़द की दाल के पानी जैसे दस्त, आँखें फीकी, पेशाब कम, इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। बुखार प्रायः हरवक्त बना रहता है। यदि रोग आराम होने को हुआ तो इस सप्ताह के अन्तसे बुखारकी तेजी तथा अन्यान्य लक्षण घटने लगते हैं। बीमारी तेज हुई हो तो उपरोक्त लक्षण बढ़ जाते है और न्युमोनिया, आँतो में जख्म, बेहोशी आदि उपसर्ग दिखायी देते हैं और रोगी की मृत्यु हो जाती है।

तृतीय सप्ताह—बुखार की तेजी के कारण रोगी कमजोर हो जाता है। जीभका काँपना, जीभ बाहर न निकाल सकना, तेज प्यास, बहुत बकना या बड़ बड़ाना, बिछौने से उठने और भागने की चेष्टा करना, बिछौना नोचना या खींचना, हाथ ऊपर को उठाकर हिलाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। यदि न्युमोनिया, मलमूत्र में खून इत्यादि लक्षण मौजूद हुए तो इस सप्ताह के अन्तिम भागमे रोगीके प्राण का बहुत खतरा रहता है। रोगीका डरना, चिल्लाना अनजान में पाखाना पेशाब हो जाना, खूनकी कै, खून के दस्त आदि भयंकर लक्षण इसी समय प्रकट होते है।

चतुर्थ सप्ताह—यदि रोग कठिन हुआ और रोगी किसी तरह तीन सप्ताह पार कर ले गया, तो चौथे सप्ताह में रोग के लक्षण घटने पर या तो रोगी आराम हो जाता है या रोग-लक्षण बढ़ने पर रोगी की मृत्यु हो जाती है। बुखार की

तेजी का घट जाना और अधिक समय तकविरामावस्था का रहना, वक झक, पेट का फूलना,प्यास इत्यादि में कमी आदि शुभ लक्षण माने जाते हैं।

यह बुखार बहुत ही बुरा होता है। साधारण बुखार होने पर दो सप्ताह में रोगी अच्छा हो जाता है। कठिन होने पर तीसरे या चौथे सप्ताह में या तो रोगी अच्छा होता है या मर जाता है।

ऊपर यह बतलाया जा चुका है कि टाइफस बुखार के लक्षण भी टायफाइड के समान ही होते है। लक्षणों की इस समानता के कारण इन दोनों को पहचानना कठिन हो पड़ता है और इससे चिकित्सा करने में कठिनाई पड़ती है। पाठकों की जानकारी के लिये हम इन दोनों का भेद नीचे अंकित करते हैं.—

(१) टायफाइड स्पर्शाक्रमक नहीं होता, टाइफस स्पर्शाक्रमक होता है (२) टायफाइड में दस्त आते हैं, टाइफस में दस्त नहीं आते, पर मस्तिष्क-विकार की प्रधानता रहती है (३) टायफाइड बहुत छोटे बच्चे और बूढ़ों को नहीं होता, टाइफस सभी उम्र के मनुष्यों को होता है (४) टायफाइड के लक्षण धीरे धीरे बढ़ते हैं, टाइफस रोगी को एक दम घर दबोचता है [५] टायफाइड कम से कम तीन सप्ताह ठहरता है, टाइफस दो सप्ताह से अधिक नहीं ठहरता [६] टायफाइड में रोगी की मृत्यु दो सप्ताह के पहले नहीं होती, टाइफस

का रोगी पहले ही सप्ताह में मर जाता है। [७] टायफाइड में बेहोशी और बक झक शुरू में नहीं रहते, टाइफस में यह शुरू से ही मौजूद रहते हैं [८] टायफाइड के दानों का रंग लाल होता है और वे हाथ पैर में नहीं निकलते, टाइफस के दानों का रंग काला होता है और वे समूचे शरीर में निकलते हैं [९] टायफाइड में प्रायः नाक से खून गिरता है, टाइफस में नाक से खून नहीं गिरता [१०] टायफाइड का बुखार रोज एक डिग्री के हिसाब से १०४ से १०६ डिग्री तक बढ़ता है टायफस में प्रायः दूसरे दिन से १०४–१०५ डिग्री बुखार रहने लगता है [११] टायफाइड में पतले या खूनी दस्त, आँत में जख्म, पेट में गडगड़ाहट आदि लक्षण मौजूद रहते हैं, टाइफस में यह सब नहीं होता, प्रायः कब्जियत ही बनी रहती है (१२) टायफाइड में पिलही बढ़ती है, टायफस में पिलही बढ़ती नहीं, कोमल मालूम होती है।

इन दोनों लक्षणों से यह दोनों बुखार पहचाने जा सकते हैं। यह दोनों ही कठिन रोग हैं, इसलिये इनकी चिकित्सा किसी होशियार चिकित्सकसे ही कराना चाहिये। चिकित्सक अच्छा होने पर वह रोगी को सम्हाले रहता है और रोग के लक्षणों को इस हद तक बढ़ने नहीं देता कि वे भयंकर या असाध्य हो जाये। इसके सम्बन्ध में यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिये कि इसका बुखार निश्चित समय में ही उतरता है, इसलिये पसीना आदि लाकर बुखार

उतारने की चेष्टा न करनी चाहिये। इसमें बहुत ही खतरा रहता है।

चिकित्सा।

बेप्टीशिया १X या ३X—बेचैनी या बेहोशी, बक झक करना, श्वास प्रश्वास, पसीना और मलमूत्र में बदबू, शिर और शरीर में तेज दर्द, रोगीको ऐसा मालुम होना कि उसके बदन के कई टुकड़े हो गये हैं, उन टुकड़ों को जोड़ने की चेष्टा करना, होठ और जीभ सूखी, कै या मिचली, स्लेट जैसे रंग के दस्त बात करते करते नींद सी आजाना, बिछौना कड़ा या कांटे जैसा मालूम होना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। अनेक चिकित्सक इसे टायफाइड की बढ़िया दवा मानते हैं। उनका कहना है कि शुरूमें इसे देनेसे रोग बढ़ने नहीं पाता।

टायफाइडिनम २००—यह इस रोगकी प्रतिषेधक दवा है। जहाँ यह रोग फैला हो वहाँ किसीको बुखार आते ही इसकी दो एक खुराके खिला देने से रोग आगे नहीं बढ़ने पाता। रोगकी अन्यान्य अवस्थाओं में भी यह काफी फायदा करता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—हिलने डोलने से तकलीफ का बढ़ना, अरुचि, मुहका स्वाद तीता, शिर, छाती और शरीर में दर्द, भूख न लगना, प्यास, खूब पानी पीना, खाँसी, खाँसते समय छातीमें दर्द होना और उसके कारण छाती को पकड़

लेना, स्वभाव चिडचिडा, हमेशा बडबडाते या बकते रहना इत्यादि लक्षणों में ब्रायोनिया देना चाहिये। यदि और उपसर्ग न दिखायी दें तो शुरूसे अन्त तक केवल यही दवा देते रहना चाहिये। उपसर्ग बदलने पर दवा बदलनी चाहिये।

बेलेडोना ३, ६ या ३०—तेज शिरदर्द, चेहरा और आँखे लाल, बहुत ज्यादा बकझक करना, जीभ सूखी लाल और फटी हुई, साधारण पसीना, बुखार का दिनमें दो बार बढ़ना, दिनमें नींद, रातमें अनिद्रा, आँखकी पुतलियों का फेल जाना, रोशनी से डर इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। शुरू शुरूमें बुखार बहुत तेज होने पर और बादकी बकझक या प्रलाप और उठकर भागना आदि मस्तिस्क विकार के तेज लक्षणों में इससे काफी लाभ होता है।

जेल्सीमियम ३× या ६—बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। जो बुखार न तो धीमा पडता है, न उतरता है बल्कि सदा एकसा बना रहता है, उसमें यह अधिक लाभ करता है। कमजोरी, चुप चाप पडे रहना, बदन में दर्द, तेज बुखार, साथही जाडा मालूम होना, मिचली, जीभका काँपना निद्रा, शिरमें चक्कर इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

रसटक्स ६ या ३०—तेज बीमारी के साथ पतले दस्त आते हों तो इसे देना चाहिये। छुट पटाना, पेटमें गडगड़ाहट, अनिद्रा, स्वप्न देखना, कमर में अधिक दर्द, बदबूदार और खून मिले दस्त, प्यास, बेहोशी, जाभ लाल और सूखी,

ब्रोंकाइटिस या न्युम्योनिया, बहुत खाँसी इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है। यह ब्रायोनिया के साथ पर्याय क्रममें भी दिया जाता है।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत बेचैनी, रोगी हाथ पैर हिलाये, पर शरीर न हिला सके, एकायक सुस्त हो जाना, शरीर में जलन, अनजानमें पेशाव, तेज प्यास, लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना, आधी रातके बाद रोगका बढ़ना, भूरे,खून मिले, बदबूदार या काले दस्त, नाड़ी कमजोर पसीना ठंढा, पानी पीनेसे पेटमें दर्द या के हो जाना, पेट फूलना,बहुत बकझक करना, बेहोशी, बिछौना नोचना,गलेका बैठजाना, श्वास कष्ट इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। रोगकी तेजीके समय या अन्तिम अवस्था में दस्तोंका जोर बढ़ने पर और रोगीके बहुत सुस्त हो जाने पर इससे बहुत फायदा होता है।

फोस्फरिक एसिड ३, ६ या ३० — बहुत कमजोरी, शारीरिक और मानसिक शक्तिका बहुत घट जाना, बेहोशी, सभी बातोंमें उदासीनता, उदरामय, पेटमें गड़ गड़ाहट, बहुत पसीना इत्यादि। प्रथमावस्थामें साधारण बकझक, पतले दस्त और कमजोरी के लिये और अन्तिम अवस्थामें केवल कमजोरीके लिये यह दवा व्यवहार की जाती है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—घबड़ाहट, चिन्ता के कारण नींद न आना, खाँसी, शिर में दर्द, बड़बड़ाना, पेट में

का लटक पड़ना, खून मिले दस्त इत्यादि। यह टायफाइड की खतरनाक हालत में व्यवहार किया जाता है।

सल्फर ६ या ३०—शिर का ऊपरी भाग बहुत गरम, जीभ सूखी, दिन में निद्रालुता, रात में नींद न आना, सुबह पतले दस्त, दस्त के बाद सुस्ती, नींद से चौंक पड़ना, सोते में बड़बड़ाना, बेहोशी, कुछ पूछने पर बहुत देर के बाद जवाब देना इत्यादि। जब बुखार की घटाबढ़ी स्पष्ट न मालूम हो तब यह विशेष फायदा करता है। किसी दवा का चुनाव ठीक होने पर भी जब लाभ न होता हो तो इसकी एक खुराक देने के बाद वह दवा देने से उसकी क्रिया प्रकट होती है।

ओपियम ६ या ३०—बेहोशी, आँखें आधी खुली हुई और आधी बन्द, प्रलाप, धीरे धीरे बड़बड़ाना, अनजान में पाखाना पेशाब, शिर में लकवा, पेट फूला हुआ, जीभ सूखी और काली, नींद के झोंके आना, पेशाब का बन्द हो जाना, मृदु श्वास प्रश्वास और उसमें घड़घड़ाहट इत्यादि। बेहोशी की हालत में इससे अधिक लाभ होता है।

स्ट्रैमोनियम ६ या ३०—बहुत अधिक बकझक करना, उजाले में और आदमियों के बीच में रहने की इच्छा, बिछौने से कूद कर भागने की चेष्टा करना, पागलों की तरह रोना, नाचना, जननेन्द्रिय पर हाथ रखना, नंगे हो जाना इत्यादि। अन्यान्य लक्षण बेलेडोना और हायोसायमस के समान।

हायोसायमस ६ या ३०—बेहोशी, बहुत बकझक, जागते में भी बड़बड़ाते रहना, बिछौना नोचना, उदासीनता चारों ओर आँखें घुमाना, हाथ पैर पटकना, अनजान में पाखाना पेशाब, जीभ लाल, सूखी और फटी हुई निर्लज्जता पूर्ण बातें करना, कम सुनना, बोलते समय जीभ का लड़खड़ाना, पेशाब बन्द इत्यादि। दूसरे सप्ताह के अन्त और तीसरे सप्ताह के आरम्भ की अवस्था तथा प्रलाप की यह बढ़िया दवा है।

लाइको पोडियम ६ या ३०—मुँह में बदबू, निचला ओंठ का लटक पड़ना, तन्द्रालुता, पेट फूलना, बड़बड़ाना, कब्जियत, नाक बन्द होने के कारण मुँह से साँस लेना, पेट में बहुत गड़गड़ाहट, पेशाब में तली जमना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। दूसरे सप्ताह के अन्त में भी अच्छी तरह दाने न निकलने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—जीभ पर मैला पीला लेप या जीभ का साफ होना, मुँह में सड़ा या तीता स्वाद जीभ पर दाँतों के दाग पड़ना, पतले दस्त, दस्तों में रूई सी दिखायी देना, बारम्बार पेशाब, अनिद्रा, बदबूदार बहुत पसीना पर उससे आराम न मालूम होना, कपड़े पर पसीने के दाग लगना, कमजोरी, नाक से खून गिरना, प्रलाप नहीं के बराबर, चपराता, लार बहना तेज प्यास इत्यादि।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—न्युमोनिया, कफ ढीला, गलेमें घड़घड़ाहट होना लेकिन कफका न निकल सकना, श्वास कष्ट, अधिक पसीना, जीभ पर लाल रेखा या सफेद और लसदार लेप, सुस्ती निद्रालुता, इत्यादि।

एपिस मेल ६ या ३०—बेहोशी, चुपचाप पड़े रहना, जीभ पर फुन्सियाँ होने के कारण बोल न सकना, मुँह और गला सूखा होनेके कारण निगल न सकना, पाकाशय में जख्म, कब्जियत या अनजान में खून और कफ मिले बदबूदार दस्त, कमजोरी, मृत्यु भयसे रोना, सूजन, पेशाब न रोक सकना, बेहोशी में बड़बड़ाना छाती और पेटपर सफेद दाने, नाकसे खून निकलना इत्यादि।

अर्निकामोन्ट ६ या ३०—शरीर में दर्द, करवट बदलते रहने की इच्छा, शरीर का ऊपरी भाग गरम, निचला भाग ठंढा, अनजान में मलमूत्र-त्याग, श्वास प्रश्वास में बदबू, तेज प्यास, पेट फूलना और गड़गड़ाना, तन्द्रालुता, अस्पष्ट प्रलाप, इत्यादि। इसके लक्षण रसटक्ससे मिलते जुलते होते हैं, परन्तु रसटक्सकी तरह अस्थिरता और रातमें रोग लक्षणों का बढ़ना यह लक्षण इसमें नहीं पाये जाते।

टेरोबिन्थीना ३ या ६—पेट फूलना, बदबूदार दस्त, बेहोशी, नाड़ी क्षीण या लापता, पाखाने या पेशाब में खून जाना इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—जीभ पर सफेद मोटा लेप, हरे रंगके कफ मिले दस्त, आँतोंमें जख्म और उनसे ताजा खून निकलना, मुँह और गलेमें जख्म, गलेमें कफ इकट्ठा होना, थूकमें खून, मृत्युभय, चूना और खड़ी मिट्टी खानेकी इच्छा, शरीर में वारंवार दर्द इत्यादि। खूनी दस्तों में इससे बहुत लाभ होता है।

पाइरोजिनम ३०—तेज बुखार, खून खराब हो जानेके लक्षण और उसीके कारण बुखार आना, तेज प्रलाप इत्यादि। सेप्टीशिया के बाद इसे देनेसे अधिक लाभ होता है।

जिङ्कम ६ या ३०—मस्तिष्क का आक्रान्त होना, पूर्ण बेहोशी, हाथ की पेशियों का काँपना, प्रलाप, एक ही ओर ताकते रहना, किसी को पहचान न सकना, बिछौने से सरक जाना और उठने की चेष्टा करना, हाथ पैर बरफ की तरह ठढे, हाथ उठाकर हिलाते रहना इत्यादि।

फेरमफस ३X या ६X—मैलेरिया और टायफाइड बुखार के सम्मिलित लक्षणों में इससे लाभ होता है। कुछ सुस्ती, जाड़ा लग कर बुखार आना, बुखार के साथ बहुत कमजोरी, मिचली और कै, नाक से खून गिरना, पाखाने में खून के छींटे दिखाई देना इत्यादि।

केलीफस ६—खून का खराब हो जाना, श्वास प्रश्वास मल और सभी तरह के स्रावों में बहुत बदबू, दांतों में बदबू-

द्वार लेप, स्नायविक और मानसिक अवसन्नता इत्यादि लक्षणों में इससे विशेप लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—जीभ सूखी होने पर भी प्यास का न होना, सदा थूकते रहना, मुँह का स्वाद तीता, जाड़ा सा लगना, मुँह में बदबू, रात में दस्त और पेट का गड़गड़ाना, कमजोरी, डराने वाले सपने, भोजन के बाद पेट में दर्द इत्यादि।

एबीसिन्थियम ६—शिर में रक्ताधिक्य के कारण अनिद्रा, प्रलाप, शिर में चक्कर, दाँत बैठ जाना, जीभ का बाहर निकल पड़ना।

युपेटोरियमपर्फ १×—बुखार के साथ हड्डियों में तेज दर्द, जी मिचलाना, कै और दस्त में पित्त गिरना, बहुत पसीना, पारी पारी से गरमी सरदी इत्यादि। मैलेरिया बुखार टायफाइड के रूप में परिणत हो जाने पर इससे विशेप लाभ होता है।

हेमामेलिस १×—गाढ़ा या काला काला सा खून निकलने पर इसे देना चाहिये।

कस्टिकम ६—आराम होनेके समय पेशाब अधिक होता हो, तो इसका सेवन कराना चाहिये।

शय्याक्षत—इस रोगमें रोगीमें उठने की शक्ति भी नहीं रहती और उसे बैठाने से हानि भी होती है। ऐसी अवस्थामें

बिछौने पर पड़े-पड़े उसकी कमर और कूलोंमें जख्म हो जाते हैं। यही शय्याक्षत कहलाते हैं। इन्हें आराम करने के लिये लेकेसिस ६ का सेवन और हाइड्रेस्टिस या केलेण्डुला धावन का वाह्य प्रयोग करना चाहिये। हाइड्रेस्टिस या केलेण्डुला मदर टिंक्चर १ भागमें ४० भाग साफ पानी मिलाने से इनके धावन तैयार होते हैं।

आवश्यक सूचना—इन दवाओं के अतिरिक्त मैलेरिया बुखार की दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जा सकती हैं। न्युमोनिया आदि भयंकर उपसर्गोंके लिये न्युमोनिया रोगकी दवाएं देखनी चाहिये। रोगके समय रोगीको ठंढा पानी, साबूदाना, वार्ली, आरारोट आदि हलकी चीजें देना चाहिये। बहुत कमजोरीमें प्लेजमन आरारोट या थोड़ासा दूध दिया जा सकता है। रोगीको अकेला भी न छोड़ना चाहिये और उसके कमरे में भीड़ भी न लगानी चाहिये। रोगीके कपड़े और बिछौना साफ सुथरा रहे। रोगीका मलमूत्र सावधानी से फेंकना चाहिये। शय्याक्षत से बचाने के लिये रोगीको करवट बदलाते रहना चाहिये। स्वास्थ्य रक्षाके अन्यान्य नियमों का भी समुचित पालन होना चाहिये।



द्वार लेप, स्नायविक और मानसिक अवसन्नता इत्यादि लक्षणों में इससे विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—जीभ सूखी होने पर भी प्यास का न होना, सदा थूकते रहना, मुँह का स्वाद तीता, जाड़ा सा लगना, मुँह में बदबू, रात में दस्त और पेट का गड़गड़ाना, कमजोरी, डराने वाले सपने, भोजन के बाद पेट में दर्द इत्यादि।

एब्रीसिन्थियम ६—शिर में रक्ताधिक्य के कारण अनिद्रा, प्रलाप, शिर में चक्कर, दाँत बैठ जाना, जीभ का बाहर निकल पड़ना।

युपेटोरियमपर्फ १X—बुखार के साथ हड्डियों में तेज दर्द, जी मिचलाना, कै और दस्त में पित्त गिरना, बहुत पसीना, पारी पारी से गरमी सरदी इत्यादि। मैलेरिया बुखार टायफाइड के रूप में परिणत हो जाने पर इससे विशेष लाभ होता है।

हेमामेलिस १X—गाढ़ा या काला काला सा खून निकलने पर इसे देना चाहिये।

कस्टिकम ६—आराम होनेके समय पेशाब अधिक होता हो, तो इसका सेवन कराना चाहिये।

शय्याक्षत—इस रोगमें रोगीमें उठनेकी शक्ति भी नहीं रहती और उसे बैठाने से हानि भी होती है। ऐसी अवस्थामें

छोने पर पड़े-पड़े उसकी कमर और कूलोंमें जख्म हो जाते । यही शय्याक्षत कहलाते हैं। इन्हें आराम करने के लिये फेसिस ६ का सेवन और हाइड्रैस्टिस या केलेण्डुला धावन का बाह्य प्रयोग करना चाहिये। हाइड्रैस्टिस या केलेण्डुला दर टिञ्चर १ भागमें ४० भाग साफ पानी मिलाने से इनके धावन तैयार होते हैं।

आवश्यक सूचना—इन दवाओं के अतिरिक्त मैलेरिया ज्वार की दवाएं भी लक्षणानुसार दी जा सकती हैं। न्युमोनिया आदि भयंकर उपसर्गोंके लिये न्युमोनिया रोगकी दवाए देनी चाहिये। रोगके समय रोगीको ठंढा पानी, साबूदाना, बार्ली, आरारोट आदि हलकी चीजें देना चाहिये। बहुत कमजोरीमें प्लेजमन आरारोट या थोड़ासा दूध दिया जा सकता है। रोगीको अकेला भी न छोड़ना चाहिये और उसके कमरे में भीड़ भी न लगानी चाहिये। रोगीके कपड़े और बिछोना साफ सुथरा रहे। रोगीका मलमूत्र सावधानी से फेंकना चाहिये। शय्याक्षत से बचाने के लिये रोगीको करवट बदलाते रहना चाहिये। स्वास्थ्य रक्षाके अन्यान्य नियमों का भी समुचित पालन होना चाहिये।



मोहज्वर या टाइफस ।

[Typhus Fever]

टायफाइड बुखार के अध्याय में इस बुखार के सम्बन्ध की अनेक बातें बतलायी जा चुकी हैं । यह भी टायफाइड की तरह एक संक्रामक और मियादी बुखार है और अपना समय पूरा करने पर ही रोगीका पीछा छोड़ता है, परन्तु टायफाइड में जिस तरह दस्तोंकी शिकायत प्रधान रहती है, उसी तरह इसमें मस्तिष्क विकार की प्रधानता रहती है। इसी लिये इसे मस्तिष्क विकार ज्वर भी कहते हैं ।

इसमें जाड़ा लग कर पहले से ही जोरोंका बुखार चढ़ आता है और उसके साथ शिर दर्द, स्नाय विक आँख और चेहरा लाल, आँखकी पपनी में सूजन, शरीर और हाथ पैरमें दर्द, साधारण जुकाम और खाँसी, जीभ फूली हुई और उस पर पीले दाग, कब्जियत, पिलही और यकृत में दर्द इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं । धीरे-धीरे रोग बढ़ने पर चेहरे पर बहुत लाली, निद्रालुता, और प्रलाप आदि लक्षण प्रकट होते हैं । पहले सप्ताह के अन्तमें चेहरा और गर्दन को छोड़ कर समूचे शरीर में दाने निकल आते हैं, जो देखने में नीले रंगके दाग जैसे मालूम होते हैं। रोग विकट होने पर प्रलाप बहुत बढ़ जाता है और बेहोशी, हाथ पैरोंका काँपना, बिछौना नोचना, श्वासकष्ट, सूखो खाँसी, निगलने में कष्ट, शरीर और मुहसे बदबू निकलना इत्यादि लक्षण प्रकट होकर रोगी की

मृत्यु हो जाती है। यदि रोग आराम होनेको होता है तो दूसरे सप्ताह के अन्तमें पसीना या दस्त आकर बुखार उतर जाता है और अन्य लक्षण भी घट जाते हैं। आराम होने के समय रोगी के केश झड़ जाते हैं और कानों से कम सुनायी देता है। जीभ सूखी, पेट फूलना, हिचकी, पेशाब का बन्द हो जाना और बेहोशी बुरे लक्षण माने जाते हैं। रोग बढ़ने पर कभी २ न्युमोनिया आदि फेफड़े की बीमारी भी हो जाती है।

चिकित्सा।

यह बुखार भी टायफाइड के समानही होने से टायफाइड की दवाएँ इसमें भी दी जा सकती हैं। बेप्टीशिया, ब्रायोनिया, इपीकाक, युपेटोरियम, आर्सेनिक, नक्सवोमिका, फोस्फरिक एसिड, एकोनाइट, एपिस, बेलेडोना, हायोसायमस, लेकेसिस, ओपियम, रसटक्स, स्ट्रेमोनियम, आदि इसकी प्रधान दवाएँ हैं। इनके लक्षण टायफाइड और मैलेरिया के अध्याय में लिखे जा चुके है। मैलेरिया रोग की दवाओं में से भी इसकी अन्यान्य दवाएँ चुनी जा सकती हैं। चुनी हुई दवा रोग की अवस्थानुसार तीन-तीन चार-चार घण्टे के अन्तर से देनी चाहिये। पथ्य और परहेजी आदि के नियम टायफाइड तथा मैलेरिया आदि ज्वरों की तरह ही पालन करने चाहिये।



पायमिया और सेप्टीसीमिया।

(Pyoemia And Septicoemia)

प्लेग, टायफाइड, पेचिश, जख्म इत्यादि के समय बाहर से कोई जीवाणु रक्त में प्रवेश कर जाने पर खून खराब हो जाता है और उसके कारण बुखार, विकार, पसीना, ग्रन्थियों में पीव भर जाना, खून का काला पड जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इसे सेप्टीसीमिया कहते हैं। बाहर से कोई विष या जीवाणु प्रवेश न करने पर भी कभी-कभी शरीर के अन्दर ही पीव आदि जमा होने के कारण उसमें विष पैदा हो जाता है और उसके कारण खून खराब होकर सेप्टीसीमिया की तरह ही बुखार आदि लक्षण पैदा हो जाते हैं, इसे पायमिया कहते हैं। इसमें शरीर के बाहरी तथा भीतरी अंशों में भयंकर फोडे और जख्म हो जाते हैं।

इस तरह खून खराब होने के प्रधान कारण तीन हो सकते है (१) खून मे कोई रासायनिक सडन पैदा करने वाला पदार्थ मिल जाना (२) बाहर से किसी जीवाणु का खून में मिल जाना और (३) शरीर के किसी भीतरी यन्त्र में भीतर ही भीतर फोडा आदि के कारण पीव का जमा हो जाना और उसके कारण खून खराब हो जाना। रात में पसीना, ठढ लगना, शरीर की गरमी का बहुत बढ़ जाना, नाडी की गति क्षीण और तेज इत्यादि लक्षण देखते ही सावधान हो जाना चाहिये और इलाज शुरू कर देना चाहिये।

सेप्टीसीमिया और पायमिया में कोई विशेष अन्तर न होने के कारण दोनों की चिकित्सा एक साथ ही नीचे लिखी जाती है।

चिकित्सा।

रसटक्स ६ या ३०—बहुत बेचैनी, कमजोरी, बडबड़ाना, चमडे पर नीले दाग, शरीर की ग्रन्थियों का आक्रान्त होना।

किनिनम सल्फ ३ ×—बहुत कमजोर बनाने वाला, हलका, धीमा तथा बहुत दिन रहनेवाला बुखार।

कार्बोवेज ६—जीवनी शक्ति का ह्रास, हाथ पैर ठण्ढे, ज्वाला कर वेदना इत्यादि।

एसिड म्यूर ६—बहुत सुस्ती, जीभ सूखी, दाँतों में मैल इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना इसका प्रधान लक्षण है।

बेप्टीशिया ३×—टायफाइड बुखार जैसे लक्षणों में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—खून का खराब हो जाना, जख्मों का सड़ना, कमजोरी, तन्द्रा, रोगी का बक झक करना इत्यादि।

मर्क्यूरियस सल ६–सड़ने का लक्षण, बहुत पसीना निकलना पर उससे आराम न मालुम होना।

आर्निका ३x–किसी तरह की भी चोट, मार, जख्म या चीरफाड़ के बाद यह रोग होना, प्रसव के बाद प्रसूती को यह रोग हो जाना।

आर्सेनिक ६ या ३०–बेचैनी, छटपटाहट, जलन पैदा करने वाला दर्द, बुखार के समय सुस्ती, जखम में सड़न, तेज प्यास, किसी स्थान से खून निकलना या चमड़े पर नीले दाग पड़ जाना, पुरानी खून की खराबी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यही इस रोग की प्रधान दवा है।

इनके अतिरिक्त फाइटोलेका, एसिड कार्बोलिक, केन्थरिस जेल्सीमियम, फोस्फरस, साइलीसिया, विरेट्रमविर, आर्गेटीन, पाइरोजेन इत्यादि दवाएँ भी लक्षणानुसार देने से लाभ होता है।

आवश्यक सूचना–शरीर में कहीं भी पीब जमा होने पर उसे निकाल देना चाहिये और उस स्थान को अच्छी तरह धोते रहना चाहिये। कब्जियत हो तो जुलाब देना चाहिये। गर्म पानी में नहाना और हवादार स्थान में रहना चाहिये। रोगी को पुष्टिकर पतले पदार्थ खानेको देना चाहिये। यदि कहीं फोड़ा हो गया हो और वह अपने आप न फूटे तो इसे चिरवा देना चाहिये। तेज बुखार, बेहोशी, पतले दस्त रक्त-स्राव आदि बहुत बुरे लक्षण हैं। इनसे सावधान रहना चाहिये।

ग्रन्थिल ज्वर ।

[Glandular Fever]

नीचे की चौह के नीचे गले में दाहिनी और बायीं दोनों ओर कुछ गाँठे हैं, जिन्हें अंग्रेजी में ग्लैण्ड कहते हैं। इन्हीं गाँठों में सूजन या प्रदाह उत्पन्न होकर जो बुखार आता है, उसे ग्रन्थिल ज्वर कहते हैं। यह बीमारी लरछुत होती है और प्रायः छोटे बच्चों को ही होती है। बुखार बहुत तेज—१०३ डिग्री तक आता है और यकृत तथा पिलही का बढ़ जाना, भूख का न लगना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। बुखार अधिक दिनों तक नहीं रहता, परन्तु गाँठों की सूजन १५-२० दिन तक बनी रहती है। जिन लोगों को बाल्यावस्था में यह बीमारी होती है, उन्हें बड़ी उम्रमें क्षय होने का खतरा रहता है।

चिकित्सा ।

बेलेडोना ६—गाँठें सूजी हुई और लाल, बुखार, आँखें और चेहरा लाल, दप दप वेदना, शिरदर्द इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे ताजे थुलथुले शरीर के और जिन्हें शीघ्र ही पसीना आ जाता है या जिनके शरीर का पोषण अच्छी तरह नहीं होता उन्हें इससे विशेष लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६—गाँठों में पीब उत्पन्न होने पर इसे देने से गाँठें फूट कर पीब बह जाता है।

सिलिका ६ या ३०—हिपर सल्फर के बाद इसे देने से यह जख्मों को भर कर सुखा देता है।

फाइटोलेका ६ या ३०—बुखार छूट जाने पर भी गाँठों की सूजन का दूर न होना और उनमें पीड़ा होना।

इनके अतिरिक्त पुरानी बीमारी में बेसीलिनम, केली आयोड, केल्क आयोड और वेराइटा कार्ब आदि दवायें लक्षणानुसार दी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—बच्चों को अच्छी और पुष्टिकर चीजें खाने को देनी चाहिये। स्वास्थ्य के अन्यान्य नियमों का भी पालन करना चाहिये। गाँठों में पीब पड़ जाने पर जब तक जख्म भर न जायें, तब तक उन्हें केलेण्डुला लोशन(केलेण्डुला मदर टिञ्चर १ भाग और पानी ८ भाग) से धोते रहना चाहिये।



इनफ्लुएन्जा (Influenza)

इनफ्लुएञ्जा सर्दी या जुकाम से मिलती जुलती एक बीमारी है, परन्तु साधारण जुकाम की अपेक्षा इसका प्रकोप बहुत भयंकर और व्यापक होता है। इसकी उत्पत्ति एक प्रकार के जीवाणु से मानी गयी है। यह जीवाणु स्वस्थ शरीर में प्रवेश करने पर दो एक मिनट के बाद जुकाम सा हो जाता है और बुखार आदि भयंकर उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। यह बीमारी इस देश में युरोप से आयी है। वहाँ पहले पहल यह नवीं

शताब्दि में दिखायी दी थी। बाद को और भी कई बार इसका प्रादुर्भाव हुआ। सन् १९१८ में, चार फीवर के नाम से यह स्पेन में दिखाई दिया और वहाँ से समस्त संसार में फैल गया। एक स्थान में इसका प्रकोप होने पर यह छुआछूत से बहुत थोड़े समय में चारों ओर फैल जाता है। कभी-कभी तो एक ही मनुष्य को एक से अधिक बार यह बीमारी होती है। सन् १९१८-१९ में थोड़े समय के अन्दर इस बीमारी ने भारत और अन्यान्य देशों में जितने मनुष्यों के प्राण लिये, उतने शायद और किसी बीमारी ने न लिये होंगे।

लक्षण—इस रोग के जीवाणु शरीर में प्रवेश करने पर पहले दो एक दिन तक तबियत कुछ अनमनी सी मालूम होती है। बाद को बारंबार जाडा लग कर १०० डिग्री से लेकर १०५ डिग्री तक बुखार चढ़ आता है। इसके बाद जुकाम की तरह छींक, नाक से पानी बहना, आँखों से पानी बहना, गले में दर्द, गला बैठजाना, कष्टकर खाँसी, श्वासकष्ट, समूचे शरीरमें तेज दर्द, मुँह बेस्वाद, अरुचि, भूख न लगना, शारीरिक और मानसिक कमजोरी, पेशियों की कमजोरी इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कब्जियत दिखायी देती है, कभी पतले दस्त आते हैं। किसी किसी रोगी को बहुत नींद आती है। कभी कभी नाक से खून भी गिरता है। कै या मिचली, गर्दन का अकड़ जाना, जीभ मैली, अनिद्रा, बहुत सुस्ती आदि लक्षण भी दिखायी देते हैं।

यह सब इनफ्लुएञ्जा के साधारण लक्षण हैं। इनसे रोगी को कष्ट तो अवश्य होता है, पर वह तीन से लेकर १० दिन तक भुगतने के बाद प्रायः आराम हो जाता है। परन्तु यह बीमारी तेज होने पर अथवा बीमारी की हालत में या बीमारी पूर्ण रूप से अच्छी न होने के पहले रोगी को सर्दी लग जाने से न्युमोनिया, ब्रोंकाइटिस, कठनाली प्रदाह आदि उपसर्ग पैदा हो जाते हैं और इनके कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है। कभी कभी यह टायफाइड का रूप धारण करती है और उस अवस्था में भी रोगी का बचना कठिन हो पडता है। रोगी को इस अवस्था से बचाने के लिये आरम्भ से ही सावधानी के साथ इसका इलाज करना चाहिये और रोगी जब तक एक दम भला चंगा न हो जाय, तब तक उसे सर्दी से बचाना चाहिये। जाड़े के दिनों में यह रोग हो जाने पर रोग बढ़ जाने की अधिक सम्भावना रहती है। गरमी के दिनों में उतना खतरा नहीं रहता।

चिकित्सा।

प्रतिषेधक—यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि यह संक्रामक और स्पर्शाक्रमक व्याधि है। एक स्थान में एक मनुष्य को यह व्याधि होने पर उसके संसर्ग से दूसरों को भी आसानी से हो जाती है। इसलिये कहीं भी इसका प्रकोप दिखायी देते ही इसे रोकने वाली या प्रतिषेधक दवा का सेवन अवश्य करना चाहिये ताकि इसके हमले से बचा जा सके।

इनफ्लुएञ्जिनम ३० या २००—इसकी सर्व प्रधान प्रतिपेधक दवा है। एक एक दिन के अन्तर से इसकी एक एक खुराक सेवन करने से यह रोग होने का डर नहीं रहता। इनफ्लुएञ्जिनम न मिले तो बैप्टोशिया १ X या ३ X का सेवन करना चाहिये। आर्सेनिक ३ रोज तीन चार वार सेवन करने से या दालचीनीं का तेल [Oil Cinnamon] दो बूँद थोड़े गरम पानी के साथ दिन में तीन वार सेवन करने से यह रोग नहीं होता। सर्दी और शरीर में दर्द होते ही नमक मिला पानी नाक से सुड़कने और कंठनाली धो डालने, तथा युक्लिप्टस आइल या कपूर रूमाल में रख कर सूँघने से भी लाभ होता है। यदि इन दवाओं से लाभ न हो और रोग घर दबाये तो लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाएँ देनी चाहियेः—

एकोनाइट ३ या ६—सूखी ठंढी हवा लग कर यह रोग होना, बुखार, प्यास, खाँसी, गला सुड़सुड़ाना, मृत्युभय, अस्थिरता, अनिद्रा इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—शिर में दर्द, शरीर में जलन, चेहरा और आँखें लाल, गले में दर्द, सूखी आक्षेपिक खाँसी, गले में सुड़सुड़ाहट होकर खाँसी का आना, थोड़ा पसीना, नींद से चौंक पड़ना, घड़बड़ाना या बकझक करना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—प्यास, बुखार, कमजोरी, शरीर में जलन, खाँसी, आधी रात के बाद रोग-लक्षणों का बढ़ना, अस्थिरता, बहुत कमजोरी, शरीर को ढक रखने की इच्छा, मृत्यु भय, ठंढा पसीना, श्वास कष्ट, नाक से पतला और गरम जलन पैदा करनेवाला कफ निकलना इत्यादि। डाक्टर ह्यूज के मतानुसार इनफ्लुएञ्जा की यह सर्व प्रधान दवा है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सूखी खाँसी, खाँसते और छींकते समय छाती में सुई चुभाने का सा दर्द, साँस लेते समय भी छाती में दर्द, शिर में दर्द, बुखार, कब्जियत, शरीर के दर्द के कारण हिल डोल न सकना, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, मुँह का स्वाद कड़ुआ, बहुत प्यास इत्यादि।

बेप्टीशिया १X या ३X—बहुत सुस्ती, आलस्य,एक ओर ताकते रहना, आँख और शिर में भार मालूम होना, काले और पतले दस्त, अस्थिरता, रोगी का यह समझना कि उसके शरीर के कई टुकड़े हो गये हैं और उन टुकड़ों को जोड़ न सकने के कारण कष्ट अनुभव करना इत्यादि। आरंभ में यह दवा देने से अनेक बार दूसरी दवा देने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

रसटक्स ६ या ३०—पानी में भीगने या सर्दी लगने के कारण यह रोग होना, समूचे शरीर में दर्द, हिलने डोलने से आराम मालूम होना, जीभ का अगला हिस्सा लाल, बहुत

बेचैनी, सूखी खाँसी, कमर आदि में वात की तरह दर्द, सान्निपातिक ज्वर के से लक्षण इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—समूचे शरीर में जाड़ा सा लगना, नाक का बन्द हो जाना, कब्जियत और पेट में दर्द, चिड़चिड़ा स्वभाव, अरुचि, भूख न लगना, शिर में दर्द, जी मिचलाना, दिन को कफ निकलना, रात को सूखी खाँसी।

जेल्सीमियम ६ या ३०—अमेरिकन डाक्टर आरम्भ में यही दवा देने की सलाह देते हैं। अल्पविराम ज्वर, चेहरा लाल, आँख नाक से पानी निकलना, छींक, दाहिनी नाक बन्द, ऐसा मालूम होना मानो सिर को किसी ने कसकर बाँध दिया है, गले और छाती में दर्द, वात जैसा दर्द, रोगी का चुपचाप पड़े रहना इत्यादि।

एन्टिम टार्ट ६—श्वास प्रश्वास में साँय साँय शब्द, कष्टकर खाँसी, शिर और पीठ में दर्द, कफ का न निकलना, कफ निकलने से आराम मालूम होना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६—नाक से पहले पानी जैसा बाद को पीला कफ निकलना, छींक, गले में दर्द, सूखी खाँसी, बहुत प्यास, बहुत पसीना निकलना, पर उससे आराम न मालूम होना, रात में खाँसी का बढ़ना, थूक जैसा कफ निकलना इत्यादि।

इपीकाक ६ या ३०—छाती में सॉय सॉय आवाज या कफ की घड़घड़ाहट, श्वास रोकने वाली खाँसी, खाँसते खाँसते कै हो जाना इत्यादि।

युपेटोरियम पर्फो ३ या ६—हाथ पैर और हड्डियों में तेज दर्द, सरदी, छींक, खाँसी, जी मिचलाना, पित्त की कै इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

डाल्केमारा ६—वर्षा ऋतु में पानी में भीजने के कारण यह रोग होने पर इससे बहुत लाभ होता है।

युफ्रेशिया ३ या ६—नाक और आँख से बहुत पानी गिरना और आँख के पानी से छाले पड़ जाना।

एलियम सिपा ३—बहुत छींके आना, नाक से पानी गिरना और उसके कारण छाले पड़ जाना।

लेकेसिस ६ या ३०—सोने के बाद सब तकलीफों का बहुत बढ़ जाना, गले में दर्द, कड़ी चीज निगलने में कष्ट।

सेङ्गुनेरिया ३ × या ६—खाँसी, नाक से पानी गिरना शिर में दाहिनी ओर दर्द, कफ निकालने में कष्ट, निकल जाने पर आराम मालूम होना।

फाइटोलेका १×—शिर दर्द, पीठ में वेदना, समूचे शरीर में वात का सा दर्द, तालुमूल बढ़ा हुआ और उसमें वेदना।

चायना ३x—कै और मिचली, कमजोरी,साथ ही पतले दस्त इत्यादि।

फोस्फरस ६—कष्टकर खाँसी,स्वर नाली और फेफड़े का प्रदाह, [न्युमोनिया], बायीं करवट सोने से खाँसी का बढ़ना, कफ पीला या सफेद और सूत की तरह कड़ा, कमजोरी, कफ न निकाल सकना, खून मिला या पीव जैसा कफ, शाम से लेकर आधी रात तक रोग लक्षणों का बढ़ना,स्वरभग,इत्यादि।

हाइड्रोसियानिक एसिड ३—लगातार खाँसी आये, जरा देर के लिये भी बन्द न हो तो इसे देना चाहिये अथवा ड्रोसेरा ३ x या रमेक्स ६ का प्रयोग करना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—भूख और प्यास नदारद, मुँह का स्वाद कड़ुआ, शाम के समय रोग लक्षणों का बढ़ना, सूखी खाँसी, शिर को कसकर बाँधने से आराम मालुम होना, स्वाद या गन्ध न मालुम देना इत्यादि।

नेट्रम सल्फ १२x बिचूर्ण—तर और ठंढी हवा लगकर यह रोग होना, रोग आराम होने पर भी कमजोरी और बहुत सर्दी मालूम होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त युफोर्बियम, स्टिक्टा, ग्लोनइन,कार्डुयस मेरी, मेलीलोटस, चेरिओलिनम, सेबेडिला इत्यादि दवाएँ लक्षणानुसार दी जा सकती हैं। न्युमोनिया ब्रोंकाइटिस आदि के लिये उन्हीं रोगों की दवाएँ देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी का कमरा साफ़, सूखा और हवादार होना चाहिये। रोगीको हमेशा गरम कपड़े से ढक रखना चाहिये, ताकि उसे सरदी न लग सके। शिर खुला रखना चाहिये। रोगीको बिछौनेसे उठने न देना चाहिये। ठंढे पानी से हाथ पैर धोना या नहाना और कफ पैदा करने वाली चीजें खाना मना है। पानी मिला दूध, नारंगी, केला, शहद, मीठा अनार, गरम करके ठंढा किया हुआ पानी आदि सुपथ्य हैं। रोगी की सेवा करने वालों को खूब सावधान रहना चाहिये। रोगी के थूक पर हमेशा चूनेका चूरा डालते रहना चाहिये। जहां यह रोग फैला हो वह स्थान खाली कर देना चाहिये। ऐसा न किया जा सके तो स्वास्थ्यके नियमोंका पालन करते हुए प्रतिषेधक दवाओं का व्यवहार करना चाहिये।

जहरबात या विसर्प।

(Erysipelas)

शरीर में कहीं चोट लगने या छिल जाने पर उस मार्ग एक प्रकार का जीवाणु शरीर में प्रवेश कर चमड़ा या श्लैष्मिक झिल्ली में प्रदाह उत्पन्न कर देता है। इस प्रदाह युक्त ज्वरका नाम ही जहरबात या विसर्प है। कभी-कभी यह अपने आप धातुगत दुर्बलता आदि के कारण से भी उत्पन्न होता है।

प्रकृति भेदसे विसर्प आठ प्रकार का दिखायी देता है:- (१) सिम्पल-इसका असर केवल चमड़े पर होता है (२) मिलिअरी-इसमें छोटे-छोटे छाले पड़ते हैं (३) फिलक्टेनस-इसके छाले बड़े होते हैं (४) इडिमेटस-इसमें सूजन भी रहती है (५) फ्लेगमोनस-यह चमड़े के नीचे गहराई में होता है और इससे पीव निकलता है (६) गैंग्रीनस-इसके जख्म में सड़न दिखायी देती है (७) एराटिक या वनडरिङ्ग-यह एक स्थानसे दूसरे स्थानमें घूमता रहता है (८) मेटस्टेटिक-यह एक स्थान में छिपकर दूसरे स्थान में प्रकट होता है। इस में तकलीफ कम होती है, पर यह दूसरों की अपेक्षा अधिक दिन में आराम होता है।

साधारण विसर्प में चमड़ेका प्रदाह, सूजन, दर्द और जलन इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कम्प, तेज शिरदर्द, जी मिचलाना और कै, बुखार इत्यादि लक्षण भी दिखायी देते हैं। रोगवाले स्थान में प्रदाह, टपटपी, जलन और सूजन होती है। कभी-कभी वहाँ छाले या फफोले पड़ जाते हैं और उन से पानी जैसा पीव बहता है। रोग भयंकर या साधातिक होनेपर तेज बुखार, भूख न लगना, नाड़ी तेज, प्रलाप तथा मस्तिष्क विकारके अन्यान्य लक्षण प्रकट होते हैं। साधारण रोग जल्दी आराम हो जाता है, लेकिन कमजोरी बहुत दिनों तक बनी रहती है। कठिन रोग जल्दी आराम नहीं होता। शिर और चेहरे पर यह रोग होने पर वह बहुत ही भयकर

रूप धारण करता है। होठ फटने पर यदि वहाँ से यह रोग प्रकट होता है, तो वह बहुत खतरनाक होता है।

यह रोग शरीरके किसी स्थान में प्रकट होकर चारों ओर फैलने लगता है। रोगी के संसर्ग में जो लोग आते है, उन्हें भी यह रोग हो जाता है और कभी-कभी यह बाप दादों से उनकी सन्तान को वीरासत में मिलता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६—प्रदाह के कारण बुखार, चेहरा लाल, नाड़ी पूर्ण और तेज,अस्थिरता मृत्युभय,होठ,सूखेआक्रान्त स्थान में बहुत दर्द और जलन, प्यास, चमड़ा सूखा।

बेलेडोना ३ या ६—यह साधारण विसर्प की बढ़िया दवा है। आक्रान्त स्थान गरम, लाल और कुछ सूजा हुआ, गोली लगने कासा दर्द,जोरोंका शिरदर्द, खींचन इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। यह चेहरे के विसर्प में बहुत अधिक फायदा करता है, खास कर जब चेहरा सूज गया हो, सूजन के कारण आंखें बन्द हो गयी हों, चेहरा पहचान में न आता हो, साथ ही शिर दर्द, प्यास, उत्ताप, चमड़ा सूखा, अस्थिरता और वक झक आदि मस्तिष्क विकार के भी लक्षण मौजूद हों।

रसटक्स ३ या ६—पीली या नीली आभा लिये हुए लाल रंगकी सूजन, अस्थिरता, बहुत दर्द, चेहरा लाल और

फूला हुआ, आक्रान्त स्थानमे खुजली, खुजलाने पर जलन होना इत्यादि। छोटी या बडी रसभरी फुंसियाँ या छाले पड़ जाने पर साथ ही मस्तिष्क विकार होने पर इससे विशेष लाभ होता है। बेलेडोना के बाद इसे देना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ६—छालेदार या एक स्थान से दूसरे स्थान में घूमने वाले विसर्प में इससे बडा लाभ होता है। रसटक्स से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। जिन्हें वार-वार विसर्प होता हो उन्हें यह दवा देनेसे उसका पुनराक्रमण नहीं होता।

ब्रायोनिया ६ या ३०—जोडों पर विसर्प, जरा भी हिलने डोलने से तकलीफ का वढ जाना। दाने अच्छी तरह न निकलने पर या निकल कर दव जाने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—ब्रायोनिया के बाद कभी-कभी सल्फर की जरूरत पडती है। ब्रायोनिया से पूरा लाभ न होने पर सल्फर उसका काम पूरा कर देता है।

लेकेसिस ६ या ३०—चेहरे पर खास कर वायीं ओर विसर्प, सोने के बाद तकलीफ का वढ़ जाना, शिर में एक ही ओर दर्द इत्यादि। छालों में नीलापन दिखायी देने पर इससे विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—रसटक्स के बाद इससे भी काफी फायदा होता है। घूमने वाला विसर्प, एक स्थानकी

लाली घटकर दूसरे स्थान में विसर्पका प्रकट होना, चमड़े का रंग नीलापन लिये हुए लाल, कान कौ विसर्प, आहार के दोषसे विसर्प का होना इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—दर्द भरे काले रंग के छाले, छालोमें पीब, सड़ने का लक्षण, सुस्ती, कमजोरी, प्यास बेचैनी, बुखार और सान्निपातिक उपसर्गों में इसे देना चाहिये।

कार्बोविज ६—पीव भरे छालों में आर्सेनिकके बाद कार्बोवेज देने से अधिक लाभ होता है।

एपिस ३ या ६—चोट के कारण विसर्प, खुजली, बहुत जलन, सूजन, चेहरे का विसर्प, आँखों की पपनी में सूजन, रोगी हाथसे छूने भी न दे, गरम स्थान में रहना असह्य इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ६—नाककी जड़से शुरू होकर आंखके चारो ओर विसर्पका फैल जाना, प्रदाह, फफोले,उनसे रस निकलना, प्यास, तेज दर्द।

युफोर्बिया ६–तेज बुखार, शिर और चेहरे पर पीले पीले फफोले, उनमें दर्द और जलन, छूने या ठंढी हवा लगनेसे दर्दका बढ़ना, सड़ने का खतरा।

हिपर सल्फर ३०–पारेके अपव्यवहार के कारण यह रोग होना और स्पर्श बरदास्त न होना। यदि छालोंमें पीव

भरा हो और उसे बढ़ाने की जरूरत हो या छालोंको पकाना हो तो इसे देना चाहिये।

ओपियम ६–बहुत निद्रालुता दिखायी दे तो बीच-बीच में इसे देना चाहिये।

आर्निका ३ या ६–चोटके कारण विसर्प, बहुत धीरे धीरे बढ़ना, आक्रान्त स्थान सूजा हुआ, फूला, गरम, लाल, दर्द और छालोंसे पूर्ण, सड़ने के लक्षण।

बोरेक्स ३ या ८–चेहरे का साधारण विसर्प, हँसने बोलने में तकलीफ मालूम होना।

एमन कार्ब–वृद्धोंका यह रोग होना, दाहिनी आँखसे लेकर बायीं आँख तक विसर्प का फैलना, मस्तिष्क विकार इत्यादि।

एइलेन्थस ६ या ३०–विसर्प के साथ टायफाइड केसे लक्षण दिखायी दें तो इसे देना चाहिये।

क्रौटेलस ६–सडन शुरू होने पर इसे देना चाहिये। विसर्पवाले स्थानमें सूजन, चमड़े का रंग बैंगनी, रोगीका निस्तेज हो जाना, बदबूदार पतले दस्त इत्यादि।

आवश्यक सूचना–रोगकी तेजीमें रोगीको सावदाना, बार्ली आदि हलकी चीजें खानेको देनी चाहिये। ३-४ बूंद रसटक्स मदर टिञ्चर गरम पानीमें मिलाकर सेंकने से लाभ होता है। छालों पर मठा लगाने से भी तकलीफ घटती है।

लाली घटकर दूसरे स्थान में विसर्पका प्रकट होना, चमड़े का रंग नीलापन लिये हुए लाल, कान का विसर्प, आहार के दोषसे विसर्प का होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—दर्द भरे काले रंग के छाले, छालोमे पीव, सड़ने का लक्षण, सुस्ती, कमजोरी, प्यास बेचैनी, बुखार और सान्निपातिक उपसर्गों में इसे देना चाहिये।

कार्बोविज ६—पीव भरे छालो में आर्सेनिकके बाद कार्बोवेज देने से अधिक लाभ होता है।

एपिस ३ या ६—चोट के कारण विसर्प, खुजली, बहुत जलन, सूजन, चेहरे का विसर्प, आँखों की पपनी में सूजन, रोगी हाथसे छूने भी न दे, गरम स्थान में रहना असह्य इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ६—नाककी जड़से शुरू होकर आंखके चारों ओर विसर्पका फैल जाना, प्रदाह, फफोले,उनसे रस निकलना, प्यास, तेज दर्द।

युफोर्बिया ६—तेज बुखार, शिर और चेहरे पर पीले पीले फफोले, उनमें दर्द और जलन, छूने या ठंढी हवा लगनेसे दर्दका बढ़ना, सड़ने का खतरा।

हिपर सल्फर ३०—पारेके अपव्यवहार के कारण यह रोग होना और स्पर्श बरदास्त न होना। यदि छालोंमें पीव

भरा हो और उसे बढ़ाने की जरूरत हो या छालोंको पकाना हो तो इसे देना चाहिये।

ओपियम ६–बहुत निद्रालुता दिखायी दे तो बीच-बीच में इसे देना चाहिये।

अर्निका ३ या ६–चोटके कारण विसर्प, बहुत धीरे धीरे बढ़ना, आक्रान्त स्थान सूजा हुआ, फूला, गरम, लाल, दर्द और छालोंसे पूर्ण, सड़ने के लक्षण।

बोरेक्स ३ या ६–चेहरे का साधारण विसर्प, हँसने बोलने में तकलीफ मालूम होना।

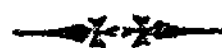
एमन कार्ब–वृद्धोंको यह रोग होना, दाहिनी आँखसे लेकर बायीं आँख तक विसर्प का फैलना, मस्तिष्क विकार इत्यादि।

एइलेन्थस ६ या ३०–विसर्प के साथ टायफाइड केसे लक्षण दिखायी दें तो इसे देना चाहिये।

क्रौटेलस ६–सड़न शुरू होने पर इसे देना चाहिये। विसर्पवाले स्थानमें सूजन, चमड़े का रंग बैंगनी, रोगीका निस्तेज हो जाना, बदबूदार पतले दस्त इत्यादि।

आवश्यक सूचना–रोगकी तेजीमें रोगीको सावदाना, बार्ली आदि हलकी चीजें खानेको देनी चाहिये। ३-४ बूंद रसटक्स मदर टिञ्चर गरम पानीमें मिलाकर सेंकने से लाभ होता है। छालों पर मठा लगाने से भी तकलीफ घटती है।

एपिस या रसटक्स का मदर टिञ्चर अठगुने पानीमें मिलाकर छालों पर वारंवार लगाना चाहिये और उन्हें रुईसे ढक रखना चाहिये। राईका चूरा या मैदा छिड़क देनेसे खुजली मिटती है। किसी दवाके प्रयोग से विसर्प को दवा देना ठीक नहीं। दब कर कभी-कभी यह दूने जोरसे फिर उभड़ता है। ऐसी अवस्था में क्युप्रम देना चाहिये।



हामज्वर या कोदवा।

(Measles)

यह बीमारी प्रायः बच्चोंको ही होती है। कभी-कभी बड़ी उम्रके आदमियों को भी होती है। उन्हें होने पर यह सांघातिक रूप धारण करती है। इसमें भी चेचक की तरह समूचे शरीरमें छोटे-छोटे दाने निकलते हैं। इसलिये लोग इसे छोटी माता कहते हैं और इसे चेचक का ही एक भेद मानते हैं, परन्तु वास्तव में यह चेचक से भिन्न बीमारी है। इसकी उत्पत्ति का कारण एक प्रकार का संक्रामक विष माना गया है। छुआछूतसे यह बीमारी बहुत फैलती है।

इस बीमारी का आरंभ सर्दीके लक्षणोंसे होता है। शरीर में विष प्रवेश करने के ८-१० दिन बाद रोगीको सर्दीसी हो जाती है और छींके आना, आँख नाकसे पानी बहना, शिर, हाथ पैर और पीठमें दर्द, चेहरा लाल स्वरभंग आदि लक्षण

प्रकट होते हैं। बुखार साधारणतः १०१ या १०२ डिग्री तक चढ़ता है, रोग विकट होने पर १०६ तक पहुँचता है।

बुखार आनेके दो-तीन दिन बाद अमोरी जैसे लाल लाल दाने निकलने शुरू होते हैं। यह सबसे पहले चेहरे पर, फिर गर्दन और छाती, इसके बाद समूचे शरीर पर दिखायी देतेहैं। दानो पर उंगली रखने से उनकी लाली गायब हो जाती है। उंगली उठालेने पर वे फिर लाल हो जाते हैं। तीन चार दिन के बाद यह दाने मुरझा जाते हैं और बुखार आदि लक्षण भी धीरे-धीरे घट कर गायब हो जाते हैं। अन्तमें दानोंकी छाल निकल जाती है और रोगी आराम हो जाता है।

यह साधारण हाम ज्वरके लक्षण हैं। कभी-कभी बीमारी बहुत विकट रूप धारण करती है। ऐसी अवस्था में बुखार १०३ से १०६ डिग्री तक चढ़ता है और निद्रालुता, भूख न लगना, मिचली, कै, कब्जियत या पतले दस्त, गलेमें दर्द, खाँसी, श्वासकष्ट, बहुत कमजोरी, हाथ पैर ठढे, जीभ सूखी, दाँतो पर मैल, बकझक, बेहोशी, रक्तस्राव, ब्रोंकाइटिस और न्युमोनिया आदि लक्षण प्रकट होते हैं। दानोंका आपस में मिल जाना या बैठ जाना और उनका रंग बैंगनी या काला हो जाना भी बुरा लक्षण है। कभी-कभी बीमारी साधारण होने पर भी आराम होनेके समय रोगीको सर्दी लग जानेके कारण ब्रोंकाइटिस या न्युमोनिया हो जाता है और इनके कारण उसकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा ।

साधारण अवस्था में दवा न देनेसे भी काम चल सकता है। दाने यथा समय निकल कर आपही आप मुरझा जायेंगे और रोगी आराम हो जायगा। यदि दवा देनेकी आवश्यकता प्रतीत हो तो लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाएँ देनी चाहिये।

एकोनाइट ३ या ६-बहुत तेज बुखार, चमड़ा सूखा और गरम, शिरमें गरमी, आँखें लाल, प्यास, अस्थिरता, बहुत कमजोरी, सूखी खाँसी, छींकें आना और नाकसे पानी बहना।

बेलेडोना ६ या ३०—गलेमें सूजन, दर्द, निगल न सकना, प्यास, सूखी खाँसी, रातमें खाँसी का बढ़ना, दाने न निकलना, आँखों पर बहुत सूजन, चेहरा लाल, बड़बड़ाना या बकझक करना।

युफ्राशिया ३ या ६-जब खाँसी, आँखों पर सूजन और आँसू तथा नाकसे ज्वालाकर पानी बहना आदि सर्दीके लक्षण बहुत प्रबल हों तब इसे देना चाहिये।

इपीकाक ६ या ३०-मिचली और कै बन्द करने की यह बढ़िया दवा है। खाँसी, श्वासकष्ट, गलेमें कफ घड़घड़ाना, दाने निकलने में देरी इत्यादि लक्षणों में भी इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०-इपीकाक देनेसे श्वासकष्ट और कै की शिकायत दूर न हो तो इसे देना चाहिये। तेज प्यास,

अस्थिरता, सुस्ती, उदरामय और सान्निपातिक लक्षणो में भी इससे लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०–सूखी खॉसी, छातीमें सुई चुभोने जैसा दर्द, श्वासकष्ट, कब्जियत, बिछौने से उठ बैठने पर जी मिचलाना, ठंढा पानी पीनेकी इच्छा, दानोंका बैठ जाना या अच्छी तरह न निकलना।

पल्सेटिला ३ या ६–एकोनाइट से बुखार घट जाने पर पल्सेटिला देनेसे बहुत लाभ होता है। छातीमें ढीला कफ, रातमे खॉसीका बढना, बारबार छींकें आना, स्वाद और गन्ध न मालूम होना, आँखसे पानी गिरना, उदरामय, खुली हवामें आराम मालूम होना। यह इस रोगकी सर्वोत्कृष्ट और प्रतिषेधक दवा है।

रसटक्स ६ या ३०–हाथ पैर और कमरमें दर्द, हिलने डोलने और करवट बदलने से आराम मालूम होना, अस्थिरता, सन्निपातिक ज्वरके से लक्षण।

एपिस ६ या ३०–हाथके साथ शरीर के किसी अगमें या आँखके पपोटेमें सूजन दिखायी दे तो इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम ६ या ३०–बेहोशी, रोगीका चुपचाप पड़े रहना, तेज बुखार, निद्रालुता, सर्दी, खॉसी, दाने निकलने में देरी होना या दानोंका बैठ जाना।

मर्क्युरियस ६ या ३०—गाल और गले की गाँठों का फूलना, मुँह में जख्म, बुखार, खूनी पेचिश,वारंवार छींक के साथ कफ निकलना।

सल्फर ३०—रोग अराम होने के समय इसे देने से वाद के उपसर्गों से छुटकारा मिलता है। फेफड़े के प्रदाह में भी इसे देना चाहिये।

केली बाइक्रोम ६—खाँसी और ब्रोंकाइटिसके लक्षण में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—रातको सूखी आक्षेप युक्त खाँसी, गले में पीडा, सोने के वाद रोग लक्षणों का बढ़ना।

चेलीडोनियम ३ या ६—हाम के साथ न्युमोनिया, श्वास प्रश्वास के समय नाक से पखे की सी आवाज।

फोस्फरस ६ या ३०—वेहोशी, टायफाइड जैसे लक्षण, गले में सुडसुडाहट, सूखी खाँसी, स्वर भंग, शाम से लेकर आधी रात तक रोग लक्षणों का बढ़ना, रोग घटने पर भी सूखी खाँसी का मौजूद रहना।

ड्रोसेरा ६—अनवरत आक्षेपिक खाँसी में इससे वहुत लाभ होता है।

एन्टिमटार्ट ६—गले में कफ का घड़घड़ाना लेकिन वाहर न निकलना, न्युमोनिया या ब्रोंकाइटिस के लक्षण दिखायी देना।

क्युप्रम ६–हाम के दांतों का वैठ जाना और उसके कारण एंठन होना।

क्रोटेलस ६–नाक और मुँह से पानी जैसा पतला खून निकलना।

कान के प्रदाह में फेरमफस, कान में पीव होने पर कल्केरिया पाइक्रोटा सूखी कष्टकर खाँसी में स्टिक्टा, पाकस्थली के गोलमाल में एन्टिमक्रूड,वदबूदार विना दर्द के पानी जैसे दस्तों में पोडोफिल्लाम, दस्त के साथ वायु निकलने और पट पट आवाज होने पर एलोज, टायफाइड जैसे लक्षणों में आर्सेनिक, ब्रायोनिया, फोस्फरस और रसटक्स, बीमारी बढ़ जाने पर केम्फर, आर्सनिक, एसिडम्यूर, फोस्फरस, बेलेडोना और रसटक्स—यह दवाएं लक्षणानुसार देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना–यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि रोग आराम होने पर रोगी को सर्दी से बहुत बचाना चाहिये। गंडमाला धातुवाले बच्चों को इस रोग के बाद गले की गाँठें प्रदाहित होने से बड़ा कष्ट होता है। कभी कभी आँखों में कोई असाध्य बीमारी हो जाती है या क्षय रोग की नींव पड़ती है। रोग आराम होने बाद खाँसी और दस्तों की शिकायत तो बिल्कुल साधारण बात है। पल्सेटिला इन शिकायतों की अच्छी दवा है।

बुखार न होने पर रोगी का शरीर कुसुम जल से पोछ देना चाहिये। बुखार के समय साबूदाना, बार्ली आदि हलकी चीजें खाने को देना चाहिये। ठढा पानी पिलाने से खाँसी बढ़े तो गरम पानी पिलाना चाहिये।

बड़ी उम्र के आदमी को यह रोग हो जाय, तो बच्चों को उसके पास न जाने देना चाहिये। घर में एक बच्चे को यह रोग होने पर दूसरे बच्चों को उसके हमले से बचाने के लिये पल्सेटिला ३ रोज तीन बार खिलाना चाहिये। दानों का निकलना किसी हालत में भी रोकना ठीक नहीं। दाने जितनी जल्दी और जितने अधिक निकलें उतना ही अच्छा है।

चेचक या शीतला
(Small Pox.)

चेचक की बीमारी इतनी साधारण है, कि इसका विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं। इसकी उत्पत्ति का कारण भी एक प्रकार का जीवाणु है, पर यह इतना छोटा होता है कि खुर्दबीन से भी दिखायी नहीं देता। यह बीमारी बहुतही संक्रामक और स्पर्शात्मक होती है। रोगी के कपड़े, हवा और मक्खियों द्वारा इसका विष एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचता है। यह रोग पूरी तेजी के साथ जीवन में एक ही बार होता है, परन्तु कभी कभी एक से अधिक बार भी होते देखा जाता है।

चेचक दो प्रकार का होता है-असंयुक्त और सयुक्त। असयुक्त चेचक की गोटिया अलग अलग होती है और सयुक्त चेचक की गोटिया एक दूसरे से मिली रहती है। सयुक्त चेचक में गोटियॉ अधिक निकलती हैं, बुखार भी तेज आता है और रोगियों की मृत्यु भी अधिक होती है। अन्यान्य लक्षण दोनों में प्रायः समान ही होते हैं।

लक्षण—चेचक का विष शरीर में प्रवेश करने पर पहले कई दिन तक कुछ भी मालूम नहीं होता। इसके बाद शिर और पीठ में जोरों का दर्द, जाड़ा और कम्प इत्यादि लक्षणों के साथ बुखार आ जाता है। चेचकका बुखार बहुत तेज होता है। साधारणतः १०३ या १०४ डिग्री और कभी कभी १०७-१०८ तक बुखार चढ़ता है। कभी कभी तो बुखार की तेजी के ही कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है। बुखार के समय बदन में बहुत दाह और मिचली या कै, शिर में चक्कर, श्वास प्रश्वास तेज, चेहरा लाल, कब्जियत, अस्थिरता, अनिद्रा, समूचे शरीरमें दर्द, कभी-कभी प्रलाप आदि लक्षण भी दिखायी देते हैं।

बुखार के तीसरे या चौथे दिन पहले पहल चेहरे पर गोटियॉ दिखायी देती हैं। बाद को समूचे शरीर में निकल आती है। पहले गोटियॉ लाल लाल दाग जैसी मालूम होती हैं। बाद को वे मसूर की तरह बड़ी और कड़ी हो जाती हैं।

उगली से दबाने पर उनके नीचे कडा पदार्थ स्पष्ट माल
होता है। प्रायः दूसरे दिन इन गोटियों में तरल रस
जाता है। अच्छी तरह रस भरने के बाद वे कुछ चिपटी
जाती हैं और उनका रस धीरे-धीरे पीव के रूप में परिणत
जाता है। पीव से भर जाने पर गोटियाँ फिर फूल उठती
और फूट कर उनका रस वह जाता है। पीव निकल जाने प
गोटियाँ सूखने लगती हैं। अन्त मे उनकी छाल निकल जात
है और रोगी आराम हो जाता है। कभी कभी गोटियाँ बिन
फूटेही सूख जाती हैं।

चेचक का बुखार गोटियाँ निकलने के पहले जितन
तेज होता है,गोटियाँ निकल आने पर उतना तेज नहीं रहता
कभी कभी तो वह उतर भी जाता है। बाद को जिस समय
गोटियों में पीव भरता है, उस समय फिर तेज बुखार आ
जाता है। इसके बाद ज्यों-ज्यों गोटियाँ सूखती जाती है, त्यों
त्यों बुखार भी उतरता जाता है।

असंयुक्त चेचक में अगर बुखार बहुत तेज न हुआ तो
कोई खतरा नही रहता। संयुक्त चेचक में खतरा अवश्य
रहता है। अधिकाश रोगियों की मृत्यु उस समय होती है।
जब गोटियों में पीव इकट्ठा होता है। तेज बुखार, श्वासकष्ट,
खून खराब हो जाना, नाक आदिसे खून बहना, न्युमोनिया,
ब्रोंकाइटिस, अंगों का प्रदाह, रोगके आरंभमें थोड़ा पेशाब,
कंठ नाली प्रदाह, अत्यन्त कमजोरी इत्यादि अशुभ लक्षण

माने जाते हैं और प्राय इन्हीं उपसर्गों के कारण रोगी की मृत्यु होती है।

इन उपसर्गों के अतिरिक्त और भी अनेक शिकायतें इस बीमारी के कारण पैदा हो जाती हैं। गलेके अन्दर गोटियाँ निकलने से गले में दर्द, और निगलने में तकलीफ होती है और लार बहती है। श्वास यंत्रमें गोटियाँ निकलने से श्वास-कष्ट, खाँसी और स्वरभंग आदि लक्षण प्रकट होते हैं। आँखों के अन्दर गोटियाँ निकलने से आँखें फूट जाती हैं। अधिक गोटियाँ निकलने से शिर, चेहरा, कन्धा और आँखके पट्टे फूल उठते हैं। सूजन के कारण आँखें बिलकुल खुल नहीं सकतीं। कानका पकना, आँखें आना, पतले दस्त, सर्दी, पेशाब में जलन इत्यादि उपसर्ग भी बीमारीकेसाथ या बीमारी के बाद प्रकट होते हैं। बुखार आनेसे बीमारी आराम होने तक में १३-१४ दिनका समय लगता है।

टीका और प्रतिषेधक—चेचक की बीमारी रोकने के लिये बच्चोंको टीका लगाया जाता है। मनुष्य की तरह गायों के भी चेचक निकलता है। टीका लगाने के लिये प्रायः उन्हीं की गोटियों का रस काम में लाया जाता है। मनुष्य की गोटियों का रस भी काममें लाया जा सकता है। टीका लगानेका प्रबन्ध हमारे देश में सरकार की ओर से किया जाता है और इसके लिये प्रत्येक बच्चे के माता पिता कानूनन मजबूर किये जाते हैं। परन्तु अब धीरे-धीरे इस टीका

के विरुद्ध लोग आवाज उठाने लगे हैं। अनेक वैज्ञानिकों का कहना है कि इससे जैसा चाहिये वैसा लाभ नहीं होता। कभी-कभी तो इससे हानि भी होती है, क्योंकि अन्तमें यह एक तरह का विपही है जो स्वस्थ शरीरमें प्रवेश कराया जाता है।

खैर, यह सब होने पर भी अभी टीका बिलकुल अनावश्यक नहीं प्रमाणित हुआ। बच्चों को जहाँ तक हो सके, दाँत निकलने के पहले ही टीका लगवा देना चाहिये (टीका लगवाने के समय क्या-क्या करना चाहिये, यह "बाल-रोग "के अध्याय में देखिये) यदि किसी कारण से टीका न लगे तो होमियोपैथिक दवाएँ खिलाकर भी वही काम निकाला जा सकता है, जो टीका लगवाने से निकलता है। बच्चेको वेक्सीनिनम ६x विचूर्ण की एक खुराक खिला देने से ही टीके का काम निकल जाता है और बीमारी का खतरा नहीं रहता। वेक्सीनिनम ३०, वेरियौलिनम३० या मेलेन्ड्रिनम३० इन तीन में से एक दवा दिनमें दोबार के हिसाब से करीब दो सप्ताह तक खिलानेसे भी टीके का काम निकल जाता है। यह दवाएँ खानेके कारण जब बच्चे को बुखार आजाय या कोई बीमारी हो जाय, तब दवा बन्द कर देनी चाहिये और समझ लेना चाहिये कि टीके का काम पूरा हो गया।

उपरोक्त तीनों दवाएँ इस रोग को रोकनेवाली (प्रतिषेधक) दवाएँ मानी जाती हैं। जहाँ शीतला का प्रकोप हो वहाँ स्वस्थ बच्चों को इस रोग से बचाने के लिये इन तीन में से एक दवा सप्ताह में कमसे कम एक वार अवश्य खिला देनी चाहिये। गधीके दूध में भी शीतला रोकने का गुण है। स्वस्थ बच्चों को प्रतिदिन इसके कई बूँद देने से बीमारी का खतरा कम रहता है।

चिकित्सा।

आरंभ के बुखार की एकोनाइट, बेलेडोना, बेप्टीशिया, सेरासिनिया, विरेट्रम विरिडि अच्छी दवाएँ हैं। इनसे तकलीफ घटती है। बुखार तो किसी दवा से नहीं उतरता। गोटियाँ निकलने पर एन्टिम टार्ट, थूजा मदर टिंचर, मर्क्युरियस सल, वेक्सीनिनम, पेलेन्ड्रिनम, पीव होने पर मर्क्युरियस सल, हिपर सल्फर, मेलेन्ड्रिनम, लेकेसिस और गोटियाँ सूखने पर सल्फर-यह इस रोग की चुनी हुई दवाएँ हैं। कुछ दवाओं के विशेष लक्षण नीचे दिये जाते हैं:—

एकोनाइट ३X—रोग के आरंभ में बुखार आने पर और बुखार बना रहे तो सभी अवस्थाओं में इससे लाभ होता है। शरीर सूखा और गरम, शिरदर्द, तेज बुखार, नाड़ी तेज, बहुत अस्थिरता, मृत्युभय कमर और पीठमें दर्द, मिचली और कै इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

बेलेडोना ६ या ३०—गोटियाँ निकलने के पहले रोगी का बड़बड़ाना या बक झक करना, शिरमें दर्द, चेहरा लाल, आँखों की सूजन, उत्कंठा, आवाज बरदास्त न कर सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये, गोटियाँ निकलने पर यदि उनका रंग बहुत लाल हो, गोटियाँ बैठ जानेके लक्षण दिखायी दें या गोटियाँ सूख जाने पर बहुत खुजली होती हो तो उस हालत में भी इससे लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६—बुखार के समय बेलेडोना से फायदा न होने पर और शिर तथा कमर में दर्द, खाँसी, छाती में तकलीफ, कब्जियत, गोटियों के निकलने में देरी होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—गोटियाँ निकलने और पकने पर-दोनों अवस्थाओं में इसका व्यवहार होता है। गले में जख्म, पेटमें दर्द, उदरामय, बहुत पसीना, बहुत लार बहना, श्वास प्रश्वास में बदबू इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—तेज बीमारी में, रोगी का बहुत सुस्त हो जाना, शरीर में दाह अस्थिरता, बहुत प्यास, जीभ सूखी, टायफाइड के लक्षण, शरीर पर काले या नीले

दाग, स्पर्शाधिक्य, बकझक करना, पतले दस्त इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—गोटियों में जब रस भरने लगे या सूखते समय जब बहुत खुजली हो तब इसे व्यवहार करना चाहिये।

एन्टिम टार्ट ६ या ३०—मिचली या कै, आक्षेप, निद्रालुता, प्रलाप, उदरामय, खाँसी, गले में घड़घड़ाहट इत्यादि लक्षणों में गोटी निकलने के समय, गोटियाँ धीरे धीरे निकलने पर, गोटियाँ काली पड़ जाने पर तथा आरंभ में चेचक निकलने का निश्चय हो जाने पर इसे देने से विशेष लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पीवकी अधिकता या पीव का बिलकुल न होना, खाँसी और सर्दी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इसे देने से अधिक पीव होनेका डर नहीं रहता।

सेरासिनिया ३—रोगकी प्रथमावस्था में इससे विशेष लाभ होता है। यह भी प्रतिषेधक दवा का काम करता है।

रसटक्स ६ या ३०—चेहरा नीलापन लिये हुए लाल, जीभके आगे भागमें त्रिकोण दाग, पीठ में दर्द, हिलने डोलने से आराम, संयुक्त चेचक, टायफाइड कीसी हालत, इत्यादि।

बेप्टीशिया १X—यह भी प्रथमावस्था में ही अधिक काम करती है। बहुत कमज़ोरी, मिचली और कै, अस्थिरता-श्वासकष्ट, श्वास प्रश्वास, मलमूत्र, पसीना आदि में बदबू, बहुत लार बहना, टायफाइड की सी हालत।

एपिस६ या ३०—चेहरा फूला हुआ और उसमें खुजली, चमड़े, पर और गलेमें लाली, सूजन, जलन, डंक मारने की तरह दर्द, तेज बुखार, हिलने डोलने से जाड़ा मालुम होना, अस्थिरता, श्वासकष्ट,पेशाब बन्द,जी मिचलाना और कै, तेज बीमारी इत्यादि।

वेरिओलिनम ६ या ३०—यह दवा रोग की सभी अवस्थाओं में दी जाती है। इसे देने से रोग की तेजी घट जाती है, खतरा कम हो जाता है, गोटियाँ फूल कर उन में जल्दी पाव भर जाता है और सुख जाती हैं।

लेकेसिस ६ या ३०—वेहोशी, वड़वड़ाना, जीभ सूखी, लाल या काली, साँस लेनेमें तकलीफ, निगलते समय गले में दर्द, शरीरमें सड़न पैदा होने के लक्षण, काला पतला खून निकलना, सोनेके वाद सभी रोग लक्षणों का बढ़ जाना इत्यादि। पीव भरने के समय विकार के लक्षणों में अधिक फायदा करता है।

हायोसायमस ३ या ६—देरसे गोटियों का निकलना, साथ ही स्नायविक उत्तेजना, आँखें लाल, बिछौने से बारंबार उठकर भागना, दाँत किड़मिड़ाना, निगल न सकना, पेशाब बन्द, रात के समय अनजान में दस्त, विकार की प्रधानता।

मेलिन्ड्रिनम ३० और वेक्सीनिनम ३०—यह दोनों दवाएँ प्रतिषेधक होने के अलावा रोग की सभी हालतों में थोड़ा बहुत लाभ करती हैं और रोग को तेजी तथा खतरा घटाती हैं।

फोस्फरस ६ या ३०—चेचक के साथ न्युमोनिया होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अलावा विरेट्रम विरिडि, सिमिसिफिउगा, स्ट्रेमोनियम, जेल्सीमियम, जिङ्कम, हेमामेलिस, कोफिया, ओपियम, नाइट्रिक एसिड, कार्बोवेज आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—रोगी का कमरा साफ सुथरा और हवादार होना चाहिये। रोगी को चेचक खुजलाने न देना चाहिये। गोटियाँ सूखते समय जो खुजली होती है, उसे दूर करने के लिये सुसुम पानी में जरा सा कार्बोलिक एसिड मिला कर उससे रोगी का शरीर धोकर पोछ देना चाहिये। तेल लगाकर सुसुम जल से स्नान करने पर छाल निकल जाती है। घी, वेसलिन या मक्खन में मैदा मिलाकर उक्तस्थानों पर लगाने से खुजली नहीं होती और चमड़े पर चेचक के दाग नहीं पड़ते। रोगी को करवट बदलाते रहना चाहिये। मुँह और गले में जख्म हो तो बरफ का टुकड़ा चूसने को देना चाहिये। रोगी का बिछौना बारंबार बदलते रहना चाहिये। रोगी आराम हो जाने पर उसके समस्त कपड़े जला देने से रोग फैलने का डर नहीं रहता। जायतून के तेल में मलाई मिला कर क्षतस्थानों में लगाने से भी चमड़े पर दाग नहीं पड़ते। रोग के समय रोगी को बार्ली साबूदाना सिंघाड़े, नारंगी, अनार अंगूर आदि चीजें खाने को और ठंढा पानी मिश्री का शर्बत, नीबू का रस, लेमनेड, सोड़ावाटर आदि पीने को दिया जा सकता है। आराम होने पर पुष्टिकर

चीजें खाने को देना चाहिये । मॉस मछली और सेम खाना मना है ।

जलचेचक या पनसाहा ।

(Chicken Poso)

यह बीमारी चेचक के समान ही होने पर भी इसकी उत्पत्ति एक दूसरे ही विषसे होती है । यह भी संक्रामक रोग है, पर चेचक जितना नहीं । यह उसके समान भयकर और मारक भी नहीं है । यह बीमारी भी बच्चों को ही अधिक होती है । इसका बुखार उतना तेज नहीं होता। इसकी गोटियॉ चिपटी न होकर ऊपर को उठी हुई और नुकीली होती है । तीन चार दिन बाद गोटियों में पानी जैसा रस भर जाता है और वे फूलकर छाले जैसी दिखायी देने लगती हैं । इसके बाद छठें और सातवें दिन से गोटियॉ फूट कर अथवा बिना फूटेही सूखने लगती हैं । सूखते समय उनमें खुजली होती है । आठ नो दिन के अंदर-अदर उनकी पपडी भी गिर जाती है और चमड़े पर कोई दाग तक नहीं रह जाता । इसमें रोगी के प्राण जाने का भय नहीं रहता । सर्दी लगने पर खॉसी आदि साधारण उपसर्ग उत्पन्न हो सकते है । साधारण बीमारी में इलाज करने की भी जरूरत नहीं । बहुत तकलीफ होने पर लक्षणानुसार किसी दवा की दो तीन खुराकें देना काफी है । अधिक दवा देना ठीक नहीं ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ X—तेज बुखार, अस्थिरता, प्यास, मृत्युभय, चमड़ा सूखा और गरम इत्यादि ।

रसटक्स ६—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। केवल इसी से रोग की प्रत्येक अवस्था में काफी लाभ हो सकता है।

एन्टिम टार्ट ६—रसटक्स से फायदा न होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६—जोरों का शिरदर्द, चेहरा और आँखें लाल, गले में दर्द, प्यास, प्यास के कारण गले का सूखना इत्यादि।

एपिस ३—गोटियाँ निकल आने पर यदि उनमें बहुत खुजली हो तो उसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम १ X—शरीर में बहुत दर्द, शिर में भार कपकपी, रोगी का चुपचाप पड़े रहना इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ६— गोटियों में पीव भरने के समय या जिस समय पीव बहरहा हो, उस समय कोई तकलीफ हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—जिस समय गोटियाँ सूख रही हों और उनकी छाल निकल रही हो, उस समय खुजली होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त जरूरत हो तो चेचक की दवाओं में से और दवाएं भी चुनी जा सकती हैं। रोग के समय रोगी को हलकी चीजें और रोग के बाद पुष्टिकर चीजें खाने को देना चाहियें। रोगी को सर्दी से बचाना चाहिये।

प्लेग (Plague)

यह एक बहुत ही सांघातिक संक्रामक और स्पर्शाक्रमक रोग है। मिश्रदेश इसका मूल उत्पत्ति स्थान माना जाता है। भारत में वर्तमान समय के पहले भी इसके प्रकोप का प्रमाण पाया जाता है। इधर सन १८९६ में बम्बई और सन १८९८ में कलकत्ता में इसका भीषण प्रकोप हुआ और कुछ ही दिनों में यह बीमारी समूचे देश में फैल गयी। आजकल इसका प्रकोप कम हो चला है, परन्तु उधर कई वर्षों तक इस महा रोग ने इस तरह जन संहार किया है, कि इसके कारण गाँव के गाँव

उजड गये हैं,जो आज तक अपनी पहले की आबादी को नहीं पहुँच सके हैं।

इस रोगका कारण आज तक ठीक नहीं किया जा सका। कोई एक प्रकार के सक्रामक विषको, कोई एक प्रकार के जीवाणु को, कोई जमीन से निकलने वाली गन्दी भाप को और कोई चूहों को इसका उत्पादक कारण मानते है।

लक्षण–इस रोग का विष शरीर में प्रवेश करने पर पहले कई दिनों तक तनमन की सुस्ती के सिवा और कोई लक्षण दिखायी नहीं देते। इसके बाद रोग का प्रबल आक्रमण होता है और सन्निपातिक बुखार की तरह जाडा कपकपी, तेज बुखार २–१०४ से १०७ डिग्री तक—शिर दर्द, हाथ पैर में ऐंठन, मिचली और कै, जीभ फूली हुई, लाल और कम्पन युक्त, नाड़ी क्षीण, तेज प्यास, अनिद्रा, तेज श्वास प्रश्वास, लाल पेशाब, हृदय, यकृत और प्लीहा का प्रदाह, प्रलाप या बकझक, बेहोशी, कमजोर बनाने वाला पसीना, शरीर के किसी यंत्र से खून बहना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इन लक्षणों के साथ तुरन्त या दो चार दिनके बाद बगल गर्दन या जाँघ के पट्ठे में दर्द पैदा होकर गाँठ या गिल्टी निकल आती है। इसके बाद किसी यंत्र से खून बहना, शरीर के भीतर यंत्रों में खराबी पैदा हो जाना, न्युमोनियाँ या फेफड़े का प्रदाह, कै दस्त और पेट की बीमारी, सन्निपात इत्यादि कठिन उपसर्ग पैदा होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। शरीर

पर काले दाग, पतले दस्त, रक्तस्राव गिल्टी का सड़ना इत्यादि लक्षण अशुभ माने जाते हैं। गिल्टी का बढ़ कर पक जाना और बुखार का उतर जाना शुभ लक्षण है।

चार भेद-भिन्न-भिन्न प्रकृति के कारण प्लेग चार प्रकार का माना गयाहै (१) ब्युबोनिक (Bubonic) या गिल्टी वाला प्लेग। हमारे देशमें यही अधिक पाया जाता है। इसमें उपरोक्त लक्षणों के साथ जाँघ, गर्दन या बगल में गिल्टी निकलती है (२) सेप्टी सिमिक (Septicimic) या सड़न पैदा करने वाला प्लेग। इसमें शरीर के समस्त यंत्रों पर रोग का हमला होता है और वे सड़ने लगते है। इसके शरीर का खून खराब हो जाता है और शारीरिक क्रिया बन्द होकर या कठिन उपसर्ग पैदा होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है (३) न्युमोनिक (Pneumonic) या फेफड़े के प्रदाह वाला प्लेग। इसमें न्युमोनिया होकर रोगी की मृत्युहो जाती है (४) इन्टेस्टाइनल (Intestinal) या आन्त्रिक प्लेग। इसमे आंतों पर रोग का हमला होता है और अतिसार, कै,पेटका फूलना, पेटमें दर्द इत्यादि उपसर्ग दिखायी देते हैं।

चिकित्सा ।

डाक्टर ह्यूज आर्सेनिक और लेकेसिसको डाक्टर हेरिङ्ग लेकेसिस, आर्सेनिक, किनिनम सल्फ और बेडियागाको, डाक्टर रॉ फेलीक्सको, डाक्टर विन्टरबर्न क्रोटेलसको और डाक्टर हनिगबर्जर इग्नेशियाको प्लेगकी अव्यर्थ औषधि मानते हैं । नीचे खास-खास दवाओं के लक्षण दिये जाते हैं:-

एकोनाइट ३X—आरंभ में तेज बुखार, चेहरा और आँखें लाल, तेज प्यास, मृत्युभय, रोगीका छटपटाना, बहुत बेचैनी, शरीर का चमड़ा सूखा और गरम ।

इग्नेशिया ६ या ३०—यह प्लेगकी विख्यात दवा है। इसके पक्षपातियों की संख्या बहुत बड़ी है । प्रथमावस्था में कम्पके साथ बुखार, मस्तिष्ककी जड़ता, शिरदर्द, जी मिचलाना और कै, गिल्टी निकलने के स्थानमें सूजन और दर्द इत्यादि लक्षणों में इससे बड़ा लाभ होता है ।

बेलेडोना ६ या ३०—तेज बुखार, चेहरा, और आँखें लाल, तूफानकी तरह रोगका आक्रमण, बहुत बक झक करना या बड़ बड़ाना, नींदसे चौंक पड़ना, पसीना, किसी स्थानकी गिल्टीमें सूजन और दर्द, बिछौने पर उछल कूद

करना, भागना, मारना, चिल्लाना इत्यादि मस्तिष्क विकार के लक्षणों की प्रधानता।

कोबरा या नेजा ३ विचूर्ण—यह दवा भी इस रोगकी बढ़िया दवा है। समूचे शरीरमें दर्द,बेचैनी, श्वासकष्ट, सुस्ती मानों रोगीने कोई नशा पिया हो, शरीर के किसी यत्रसे रक्त निकलना, नाडीका लोप हो जाना, शरीरका नीला पड जाना, शुरूसे ही दिमाग का खराब हो जाना, ऐसा मालूम होना मानो शीघ्रही हृदय की गति बन्द हो जायगी इत्यादि लक्षणों में रामवाण सा काम करती है। यह रोगकी अन्तिम या विकट अवस्था की दवा है। रोगीकी मरणासन्न अवस्था में हाइपोडार्मिक पिचकारी द्वारा रोगीके शरीर में यह दवा पहुँचायी जाती है और उस अवस्था में भी यह अपना चमत्कार दिखलाती है।

क्रोटेलस ३X विचूर्ण या ६—किसी गिल्टी का प्रदाहित होना, बकझक करना, बेहोशी, श्वासकष्ट, चेहरा फीका, हृदय में धडकन इत्यादि। शरीर के किसी यंत्र या अगसे खून निकलने पर इससे अधिक लाभ होता है।

कार्बोलिक-एसिड ३ या ६—एका यक बेहोश होजाना चेहरे पर ठंढा पसीना, आँखें स्थिर, नाडी तेज, कमजोर और सविराम कै, श्वास प्रश्वास में घड़ घड़ाहट, इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—तेज बुखार, हाथ पैर और शरीर में दर्द, बेचैनी, खाँसी, निद्रालुता, उदरामय, मस्तिष्कविकार, गर्दन की गिल्टीका फूल उठना इत्यादि।

बेप्टीशिया १X–६या ३०–सन्निपातिकबुखार, प्रलाप, पतले दस्त, सवाल का जवाब देते देते सो जाना, रोगीका यह समझना कि उसके शरीर के कई टुकड़े हो गये हैं और उन टुकड़ों को जोड़ने की चेष्टा करना।

पाइरो जिनम ६ या ३०—बेहद तेज बुखार, खूनका खराब हो जाना, प्रलाप, कब्जियत आँत पाकाशय और फेफड़े में विकार के लक्षण।

लेकेसिस ६ या ३०–रोगकी अन्तिम अवस्थामें सुस्ती, बेहोशी, श्वासकष्ट, कमजोरी, सड़न का उपक्रम, बायीं ओर गिल्टी, सोनेके बाद रोग लक्षणों का बढ़ना, गरमी से आराम मालूम होना।

फोस्फरस ६X या ३०–श्वास कष्ट, चिकना खूनमिला कफ, फेफड़े से खूनका निकलना, प्रलाप, टायफाइड जैसे

लक्षण और न्युमोनिक प्लेग या प्लेग के साथ न्युमोनिया होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—जाँघके पुट्ठेमें सुई चुभोने जैसा दर्द और जलन, बहुत बेचैनी, बारबार करवट बदलना, तेज प्यास किन्तु थोड़ा-थोड़ा पानी पीना, रातमें प्रलाप, कै और दस्त, पेटमें जलन, श्वासकष्ट, ठंढा पसीना, पेशाब बन्द या बहुत कम, चेहरा मुर्देकी तरह फीका, शरीर में जलन होने पर भी कपड़ा न उतारना, मृत्युभय इत्यादि। आन्त्रिक प्लेग की यह बढ़िया दवा है।

एन्थ्रासिनम ६ या ३०—सेप्टीसिमिक प्लेगमें इससे विशेष लाभ होता है। ब्युबोनिक प्लेगमें भी गिल्टी में सूजन और बहुत जलन होने पर यह दवा फायदा करती है। इसे आर्सेनिक के बाद देना चाहिये।

इलेप्स ६ या ३०—रक्तस्राव, खूनका रंग कालापन लिये हुए, अन्यान्य लक्षण आर्सेनिक और क्रोटेलसके समान।

एकिनेसिया ३X—सेप्टीसिमिक प्लेगमें इससे भी लाभ होता है।

कार्बोवेज ३०—रोगकी अन्तिम अवस्था में शरीर का ठंढा पड़ जाना, ठंढा पसीना, नाडी गायब, सॉस भी ठंढी, पेटका फूलना, हिमाङ्ग अवस्था इत्यादि।

केलीम्यूर १२X या ३०—रोगकी प्रथमावस्थामें इससे भी लाभ होता है।

लयमिन और व्युबोइन ३० या ३००—यह दोनों दवाएँ इस रोगकी प्रतिषेधक भी मानी जाती हैं और रोगके समय भी व्यवहार की जाती हैं।

एइलेन्थस ६ या ३०—गिल्टीका प्रदाहित होना, उसमें काला पीव भरना, गिल्टीवाले स्थानका रंग काला या बैंगनी हो जाना, बेहोशी प्रलाप इत्यादि।

इनके अतिरिक्त हायो सायमस, क्युप्रय एसेट, एन्टिम टार्ट, कार्बो एनिमेलिस, केलीफस, म्युरेटिक एसिड, फाइटो-लेका, ओपियम, स्ट्रेमोनियम, इपीकाक, एन्टिमक्रुड, हिपर-सल्फर, सिलिका, इत्यादि दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जाती हैं। टायफाइड और न्युमोनिया रोगकी दवाएँभी लक्षण मिलने पर प्लेगमें काफी फायदा करती हैं।

प्रतिषेधक दवाएँ—प्लेगिनम, लयमिन, ब्युबोइन आदि दवाएं प्लेगकी प्रतिषेधक मानी जाती हैं। जहाँ प्लेगका प्रकोप हो वहाँ इन दवाओं का ऊँचा क्रम सप्ताह में एक या दो बार सेवन करने से प्लेग होनेका खतरा कम हो जाता है। इग्नेशिया बीन छेद कर कमर या हाथमें बाँधनेसे अथवा इग्नेशिया ३० सप्ताह में दो बार सेवन करने से भी प्लेग होनेका डर नहीं रहता। सरसों का तेल अच्छी तरह मालिश करके नहाना, नीबू आदि खट्टी चीजें खाना, घरको सफाई, चूहोंको घरमें न रहने देना इत्यादि कार्यों से भी इस रोगका प्रतिषेध होता है।

आवश्यक सूचना—गिल्टी पर फाइटोलेक्का या वेडियागा का मदर टिंचर लगाने और सेंकने से बहुत फायदा होता है। गिल्टी पक जाये तो उसे चिरवा देना चाहिये या पुल्टिस चढ़ानी चाहिये, ताकि पीव निकल जाय। जख्म पर केलेण्डुला तेल (१ भाग केलेण्डुला मदर टिंचर और ८ भाग जायतूनका तेल) लगाने से जख्म सूख जाता है। रोगीका कमरा हवादार और साफ सुथरा होना चाहिये। रोगके समय साबूदाना वार्ली, आरारोट, दूध आदि हलकी चीजें खानेको देना चाहिये।



शोथ या सूजन।

(Dropsy)

शरीर के किसी अंगमें या समूचे शरीर में जल संचय होनेके कारण उस स्थानमें सूजन आ जाती है। इसे ही शोथ कहते हैं। यह कोई स्वतंत्र रोग नहीं है। प्रायः शरीरके किसी यंत्र में कोई बीमारी या प्रदाह होनेके कारण ही शोथ उत्पन्न होता है। फोडोंका बैठ जाना, आर्सेनिक का अधिक सेवन, लाल बुखार, हामज्वर, अधिक परिमाण में रक्तस्राव, मूत्र ग्रन्थकी बीमारी आदि कारणों से समूचे शरीर मे और हृदय, यकृत, मूत्र कोषकी बीमारी, रक्त हीनता, शराब खोरी और दुर्बलता इत्यादि कारणों से पेटमें शोथ उत्पन्न होता है। पेट के शोथको उदरी या जलोदर भी कहते है। शरीर के अन्यान्य अंगोंका शोथ उन्हीं अङ्गोंके नामसे पुकारा जाता है।

लक्षण—आक्रान्त स्थान फूल उठता है। उँगली से दबाने पर वहाँ गढ़ा हो जाता है, उगली उठा लेने, पर कुछ देर तक गढ़ा बना रहता है, बाद को भर जाता है। चमड़ा फीका, उज्ज्वल और ठढा मालुम होता है। साथ ही कमजोरी भूख न लगना, अरुचि, प्यास, उदरामय, पेशाब थोडा या लाल अथवा एकदम नदारद इत्यादि लक्षण उपस्थित होते हैं और रोग कठिन होने पर हृदय की गति बन्द होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

इस रोगकी चिकित्सा करते समय इसके कारण पर ध्यान रखना चाहिये और जिस यन्त्रकी बीमारी या दोष से यह रोग हुआ हो, उसका पहले इलाज करना चाहिये। सर्वाङ्गीन शोथ में आर्सेनिक एपिस, डिजिटेलिस, ब्रायोनिया, एपोसाइनम, उदरी में आर्सेनिक, एपोसाइनम, चायना क्रोटन, मस्तिष्क के शोथ में एपिस, बेलेडोना, हेलीबोरस, मर्क्युरियस, वक्षस्थल के शोथ में आर्सेनिक, ब्रायोनिया, डिजिटेलिस, हेलीबोरस, हृदय के शोथ में डिजिटेलिस, स्पाइजिलिया, आर्सेनिक और अण्डकोष के शोथ में आयोडियम, रोडोडेन्ड्रन, पल्सेटिला तथा ग्रेफाइटिस—यह दवाएं विशेष रूपसे व्यवहार की जाती हैं। प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे दिये जाते हैं:—

आर्सेनिक ६ या ३०-पेट, हाथ पैर या समूचे शरीर का शोथ, चेहरे का चमड़ा फीका और नीली या हरी आभा लिये हुए, बहुत कमजोरी, रातमें श्वासकष्ट, अस्थिरता, तेज प्यास, अनिद्रा, मृत्युभय इत्यादि। हृदय, यकृत, और पिलही की खराबी या क्वीनाइन के अपव्यवहार के कारण होने वाले शोथमें इससे विशेष लाभ होता है।

एपिस ३x या ३०-किसी खास अंग या समूचे शरीर का शोथ, ज्वालाकर वेदना, जलन के साथ थोड़ा पेशाब,

श्वासकष्ट, प्यासका न होना, प्रलाप, दाँत कड़ मड़ाना, शिर में पसीना, आधे शरीर का फड़कना इत्यादि। यह शोथकी बढ़िया दवा है। गरमी (सेंक, धूप लगना, गरम हवा, गरम पानी, गरम कपड़े इत्यादि) के प्रयोगसे तकलीफ का बढ़ना इसका खास लक्षण है।

एपोसाइनम ३ या ६–प्यास, पानी पीनेसे कै हो जाना श्वासकष्ट, मूत्राभाव, उदरामय, अनजान में पेशाव, पेट और छातीपर भार मालूम होना, शिर भारी, कमजोरी, तन्द्रालुता इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिये। इसका खास लक्षण एपिस से उलटा है। एपिस में गरमी के प्रयोग से तकलीफ बढ़ती है, इसमें शीतलता के प्रयोग से। यह अन्तर ध्यानमें रखना चाहिये।

डिजिटेलिस ६ या ३०–हृदय और मूत्र ग्रन्थिके दोषसे शोथका होना, चित न सो सकना, पेशाव में तकलीफ, चेहरा फीका, होठोंमें नीलापन, आक्रान्त स्थान गुदगुदा और कोमल-श्वास कष्ट इत्यादि।

टेरीबिन्थीना ३ या ६–पेशाव गँदला और रक्त मिश्रित होने पर इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—हृदय, यकृत और पिलहीके दोपसे शोथ, वायें अण्डकोपका फूल उठना, दाव वरदास्त न होना, पेशाव काला और परिमाणमें कम, सोनेके बाद रोग लक्षणोंका वढ़ना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—पैर, छाती, आँखके पपटे या समूचे शरीरका शोथ, दिनको शोथका वढ़ना और रात को कम हो जाना, हृदयमें सुई चुभोने जैसा दर्द, वहुत प्यास, थोड़ापेशाव, चिड़चिड़ा स्वभाव, सूखा और कड़ा मल।

हेलीवोरस ३—मस्तिष्क, पेट तथा अन्य स्थानों के नये शोथमें इससे लाभ होता है। उदरामय, थोड़ा और मैला पेशाव, वहुत कमजोरी, पेटमें दर्द, लेटनेसे श्वास कष्ट, इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

सल्फर ६ या ३०—शोथमें जलन, शरीर पर नीले दाग, चर्मरोग, बैठ जानेके कारण शोथका होना।

फेरम ६ या ३०—रक्त हीनता, वहुत कमजोरी, कब्जियत, भोजनके बाद जी मिचलाना इत्यादि लक्षणों के साथ शोथ होनेपर इसे देना चाहिये।

चायना ६ या ३०—चेहरा फीका, कमजोरी, यकृत और पिलही की खराबी इत्यादि। मैलेरिया बुखार, अधिक रक्तरक्त का स्राव और वृद्धावस्थाके कारण यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

किनिनम आर्स १२X विचूर्ण या ३०—चायनासे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

फेरस आर्स ३०—शोथके साथ बहुत ज्यादा कमजोरी हो तो इसे देना चाहिये।

एसेटिक एसिड ६—शरीरके निचले अंग और पेटका शोथ, प्यास, खट्टी डकार, मुहमें पानी भर आना, उदरामय, बहुत पसीना, शरीर दुर्बल, चमड़ा फोका।

कल्चीकम ६ या ३०—कष्टकर थोड़ा पेशाव, चेहरा पीला और फूला हुआ, चमड़ा सूखा और ठढा, पैरोंका शोथ, हृदय में धड़कन, कष्टकर थोड़ा पेशाव इत्यादि।

लाइको पोडियम ६ या ३०—शरीर का ऊपरी भाग सूखा, निचला भाग शोथयुक्त, एक पैर ठंढ़ा दूसरा गरम, थोड़ा

पेशाब और उसमें बालू जैसी सफेद तली जमना, शराबियों की बीमारी इत्यादि ।

स्टॊफेन्थस १X–हृदय के दोषसे शोथ, श्वासकष्ट, गलेके अन्दर और पेटमें जलन, उदरामय, मिचली या के इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

पल्सेटिला ६–स्त्रियोंके ऋतुमें गोल माल होनेके कारण उन्हें शोथ होने पर इससे लाभ होता है ।

स्कुइला ३X–नये शोथमें पेशाब रुक जाने पर इसे देना चाहिये ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०–रक्त प्रधान धातुवाले मनुष्योंका शोथ, खूनमें सफेद कणोंका बढ़ जाना, नहाने के बाद शोथका बढ़ना ।

आवश्यक सूचना–सर्द और गीले स्थानोंमें न रहना चाहिये । खानेकी चीजें हलकी और पुष्टिकर होनी चाहिये । यकृत की खराबीमें इसे अधिक न देना चाहिये । कब्जियत

हो तो मांस खाना मना है। दस्त न आते हों तो रोटी दी जा सकती है। पीनेको ठंढा पानी दिया जा सकता है। मूत्रयन्त्रकी बीमारी हो तो पानीके बदले दूध पिलाना चाहिये। गरम पानी से नहाना लाभ दायक है।

वेरी वेरी (Beri Beri)

वेरीवेरी शोथ का ही एक प्रकार का भेद है। इसमें पैरों को सूजन के अलावा साधारण बुखार, दस्त, हृदय में गोल माल, थोड़ा पेशाव, रक्तस्वल्पता, कै, श्वासकष्ट, प्यास इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते है। इस रोग का जिस समय प्रकोप होता है, उस समय यह जोरों से चारो ओर फैल जाता है। इसीलिये इसे Epidemic Dropsy या बहुव्यापक शोथ भी कहते हैं।

यह बीमारी प्राय वर्षा के अन्त में होती है, इसलिये सर्दी या वर्षा इसका उत्तेजक कारण मानी जाती है। इसके अलावा फल मूल, सर्दी वाले गुदामों का चावल, मिलावट वाला सरसों का तेल आदि चीजों के आहार से भी यह बीमारी होती है। इस बीमारी के समय भात खाना तो बहुत ही हानिकर माना गया है।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—इस रोग की प्रधान दवा है। रक्त स्वल्पता, शोथ, वेदना, शरीर के अंगों का वेकार सा

हो जाना इत्यादि लक्षणोंमें तथा सभी तरहके वेरी वेरीमें इससे लाभ होता है। एपिस भी अच्छी दवा है। इनके अतिरिक्त रसटक्स, फेरमफस, जेल्सोमियम, फेरम आर्स, फेरम मेट, फोस्फरस, केक्टस, नेट्रम सल्फ, क्रेटिगस, डिजिटेलिस, लेकेसिस, केलीफस, सीपिया, प्लम्बम, लाइको पोडियम, इलेटेरियम, एमिल नाइट्रेट, इत्यादि दवाएँ भी लक्षणानुसार प्रयोग की जाती हैं। इनमें से अधिकाश दवाओं के लक्षण शोथ की चिकित्सा में लिखे जा चुके है।

आवश्यक सूचना—साधारण रोग होने पर आसानी से आराम हो जाता है। रोग कठिन होने पर हृदय में खराबी पैदा होती है। उस हालत में रोगी के प्राण का भय रहता है। रोग के समय बुखार की तरह पथ्य देना चाहिये। गरम स्थान में रहना, गरम कपड़े पहनना आदि लाभदायक है। ठंढे पानी से नहाना मना है।

गण्डमाला (Sorofula)

यह एक धातुगत रोग है, जो बच्चों को माता पिता की ओर से वीरासत में मिलता है या अपने आप होता है। इसमें खून खराब हो जाता है और गला, गर्दन, बगल या जाँघ के पट्टे में बड़ी कड़ी गिल्टियाँ निकल आती हैं। इन गिल्टियों में कुछ पकती हैं और कुछ नहीं पकतीं। जो पकती है उनमें से पीब निकलता है और जख्म बहुत दिनों तक

सूखने नहीं आता। जो नहीं पकतीं, वे पत्थर जैसी कड़ी बनी रहती है। कभी-कभी छाती, नाक, कान, आँख इत्यादि स्थानों में घाव हो जाते हैं और लगातार कष्ट भोगने के कारण रोगी कमजोर हो जाता है।

माता पिता को गण्डमाला या गरमी की बीमारी होना, इन रोगों से ग्रसित स्त्री का दूध पीना, अस्वास्थ्यकर स्थान में रहना, पुष्टिकर भोजन न मिलना, मादक पदार्थों का सेवन, आलस्यमय जीवन व्यतीत करना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है।

गण्डमाला धातु का रोगी कई लक्षणों से शीघ्र ही पहचाना जा सकता है। थोडी उम्र में ही बुद्धि की परिपक्वता, रोगी चेहरा, आँखें नीली, पुतली फैली हुई, शिर बडा, शिर में रूसी या फुन्सियाँ होना, केश कड़े और खड़े-खड़े, पेट बडा, शरीर का मास कोमल और थुलथुला, उपला होठ और नाक फूली हुई, उंगलियाँ भद्दी और ठेढ़ी मेढ़ी, पेट बडा इत्यादि गण्डमाला धातु के प्रधान लक्षण हैं। ऐसे रोगी को कोई भी बीमारी होने पर उसका इलाज इस धातु पर ध्यान रखते हुए करना चाहिये।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६ या ३०—गिल्टियों का फूलना और उनमें प्रदाह, आँखों की पपनी में सूजन, आँख में जख्म, गले में दर्द और निगलने में तकलीफ। प्रदाह के कारण दर्द।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—पेट थुलथुला, शिर बड़ा, खोपड़के गढ़ेका जल्दी न भरना, जल्दी चल न सकना इत्यादि लक्षण वाले बच्चोंको इससे विशेष लाभ होता है। मेरु दण्ड टेढ़ा, हड्डियों का अच्छी तरह विकाश न होना, आँखोंमें जलन, पतले दस्त, गिल्टियोंमें सूजन और पीव, नाक लाल और फूली हुई, विकृत चेहरा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ३०—बच्चा देखने में सुन्दर, लेकिन शरीर कमजोर और क्षय जैसे लक्षण।

हिपरसल्फर ६ या ३०—गिल्टियों का पकना, आँखों का प्रदाह, पपटोंसे पानी या पीव निकलना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—हड्डियाँ, जोड़ और आँखों की बीमारी, रोगीके शरीरमें फुन्सियोंका निकलना, गिल्टियों का फूल उठना, शरीरमें जख्म।

सल्फर ३० या २००—गण्डमाला धातुवाले रोगीकी सभी बीमारियोंमें इससे लाभ होता है। गिल्टियोंका बढ़ना, कड़ा हो जाना और उनमें पीव भरना, जरामें ही सर्दी लगना,

रोगी चेहरा, अस्वस्थ शरीर, शारीरिक और मानसिक कमजोरी, बच्चेका चल न सकना इत्यादि ।

साइलीसिया ३०—शिर बड़ा, शिरके ऊपरी जोड (ब्रह्म-तालु) का न भरना, सभी गिल्टियोंमें सूजन और पीव, हड्डीका क्षय, कब्जियत, मल कठिन और उसका कष्टके साथ निकलना, शरीरमें फोडा या पीव होना । नासूर जैसे जख्म ।

कल्केरियाफस १२X विचूर्ण—गण्डमालाके रोगीको गठियाकी बीमारी हो तो इसे देना चाहिये । यह इस रोगकी बढ़िया दवा है ।

आयोडिन ३०—सदा भूखे बने रहना, खायापीया शरीर में न लगना, दिन पर दिन रोगियाते जाना ।

कष्टिकम ३०—गण्डमाला धातु के कारण स्नायु मण्ड-लका अच्छी तरह परिपोषण न होना ।

लेपिस एल्बस ६—शरीर के किसी भी स्थानकी गिल्टि-योंका सूज जाना या बाधी निकलना ।

इथियप्स एन्ट २ X या ६ X विचूर्ण-डाक्टरगौलन इसे गण्डमाला रोगीकी सर्वोत्कृष्ट दवा मानते हैं। यह दवा दिनमें दो चार दो दो तीन-तीन ग्रेन देनी चाहिये।

बेराइटा कार्ब ३०-शरीर सूखा, पेट बड़ा, शारीरिक और मानसिक कमजोरी, चर्मरोग, गिल्टियाँ कड़ी, भूखकी अधिकता इत्यादि।

थेरी डियन ६ या ३०-यह भी गण्डमाला की अच्छी दवा है। अन्य दवाओंसे लाभ न होनेपर इसे आजमाना चाहिये।

इनके अतिरिक्त लाइको पोडियम, साइना, बेराइटा आयोड, कल्केरिया आयोड, ग्रेफाइटिस, बेसीलिनम, अरम-पेट, फेरम, चायना, सीपिया, डाल्केमारा, बेडियागा, आर्सनिक आयोड,आर्सेनिक पेट इत्यादि दवाएं भी लक्षण मिलाकर देनेसे लाभ करती हैं।

आवश्यक सूचना-इस धातुवाले बच्चोंको धूप और विशुद्ध वायुका सेवन, खुली हवामें व्यायाम, निर्दोष आमोद, समुद्र स्नान, काडलिवर आइल का सेवन इत्यादि से लाभ होता है। खानेके लिये अच्छी हलकी और पुष्टिकर चीजें

देनी चाहिये। तरकारी और फल काफी देने चाहिये। देरसे हजम होनेवाली चीजें, उड़द, पका केला, दही, अधिक मिठाई इत्यादि खाना मना है।

रक्त हीनता या एनिमिया

(Anoemia)

स्वस्थ्य मनुष्य के रक्त में फी हजार १३० भाग लाल कण होते हैं। इन लाल कणों की कमी हो जाना और खून में नमक का अंश या सफेद कणों का बढ़ जाना ही रक्त हीनता रोग कहलाता है।

इस रोग के अनेक कारण होते हैं। पेट का गोलमाल अच्छी तरह भोजन हजम न होने के कारण कमजोरी, पेट भर खाने को न मिलना, भोजन का खराब या अपुष्टिकर होना, अनियमित जीवनचर्या, रस रक्त का अधिक क्षय, बहुत खून निकलना, किसी जख्म आदि से दीर्घ काल तक पीब का बहते रहना, बहुत दिनों तक दस्त की बीमारी रहना, बुखार, यकृत और पिलही का बढ़ जाना, क्वीनाइन का अधिक सेवन, बवासीर आदि से खून का अधिक निकलना, स्त्रियों को प्रदर की बीमारी या अधिक बच्चे होना, अस्वास्थ्यकर स्थान में रहना, स्त्रियों का बहुत दिनों तक बच्चों को स्तन पान कराते रहना, कठिन रोगों के कारण बहुत दिनों तक शैय्या सेवन करना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है।

इस रोग मे शक्ति की कमी, भूख न लगना, बदहजमी, शरीर में खून की कमी, शिर में दर्द या चक्कर, शरीर की गरमी मे कमी, शरीर दुबला, मलीन और पीला, आलस्य और सुस्ती, श्वासकष्ट, कलेजे में धड़कन, चेहरे पर सूजन, सूखी खाँसी, नाक से खून गिरना, पतले दस्त, हाथ पैर ठढे, पैरो में सूजन, चेहरा, आँखें और होठ आदि का रक्त शून्य हो जाना, नाडी निस्तेज, थोड़े परिश्रम में ही थक जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं और धीरे-धीरे कठिन उपसर्ग उत्पन्न होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। जवान स्त्रियों को और कभी-कभी पुरुषों को यह रोग अपने आप हो जाया करता है। उस समय यह हरित रोग के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

चिकित्सा।

फेरम मेट ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। सदा जाड़ा सा लगते रहना, शाम के वक्त हरारत या हलका बुखार, चेहरा फीका, भोजन के बाद कै, शरीर दुबला इत्यादि।

फेरम आर्स ३०—फेरम मेट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत सुस्ती, कलेजे का धड़कना, खट्टी चीजें खाने और शराब पीने की इच्छा, अस्थिरता, मृत्यु भय, शीघ्रता के साथ कमजोरी का बढ़ना।

चायना ६ या ३०—रस रक्त या वीर्य आदि का अत्यन्त स्राव, प्रदर, बहुत दिनों तक बच्चो को दूध पिलाना, अधिक रज स्राव, संग्रहणी इत्यादि के कारण इस रोग का होना। शिर में भार, दृष्टि हीनता, मूर्च्छा,कान मे गुनगुनाहट, खट्टी डकार, मन्दाग्नि, भूख का न लगना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—स्त्रियों को यह रोग होने पर खास कर ऋतु के गोलमाल के कारण।

कल्केरिया कार्ब—गण्डमाला धातु वाले रोगियों को यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

हेलोनियस ३X—यह भी स्त्रियों की रक्त हीनता में अधिक फायदा करता है। जरायु से रक्त स्राव, ऋतु का गोलमाल इत्यादि लक्षणों में इसका प्रयोग होता है।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—मैलेरिया के कारण यह रोग होना, पेट बड़ा, कब्जियत, चित्त का दुःखी रहना इत्यादि।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—पेट का गोलमाल, जीभ पर सफेद लेप, भूख का न लगना, डकार आना इत्यादि।

एसिडफस १X—कमजोरी, रज या वीर्य का अधिक भय, अधिक इन्द्रिय सेवा के कारण यह रोग होना।

इनके अतिरिक्त फोस्फरस, नक्सवोमिका, सीपिया, नेट्रम सल्फ, केली आर्स, वेसिलिनम, आर्जेनाई, हाइड्रेस्टिस, मर्क्युरियस वाइवस, क्युप्रम, प्लम्बम, एपिस, पिकरिक एसिड, लाइको पोडियम सल्फर, सियेनोथस इत्यादि दवायें भी लक्षणानुसार दी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—खुली हवा में थोड़ा थोड़ा घूमना, थोड़ा व्यायाम करना, इत्यादि लाभदायक है। रात को जागना अपरमित आहार विहार, परिश्रम, धूप या आग के सामने रहना, क्रोध या चिन्ता करना इत्यादि हानिकर है। हलके और पुष्टिकर पदार्थ खाने को देना चाहिये। दूध और मांस या मछली का शोरबा देने से विशेष लाभ होता है।

मेदाधिक्य या शरीरमें चरबीका बढ़ जाना।

(Fatty Degeneration)

घी, मक्खन, चरबी और चीनी मिले पदार्थ अधिक तादाद में खाना, परिश्रम न करना, आलसी की तरह पड़े-पड़े समय बिताना इत्यादि कारणो से यह रोग होता है। इसमें चरबी बढ़ जानेके कारण शरीर मोटा और थुलथुला हो जाता है। पेट, चूतड़, छाती और जघो में अधिक चरबी जमा हो जाती है, फलत चलनेमें तकलीफ होती है। श्वासकष्ट सहज परिश्रममें ही हॉफने लगना, हृदय की विकृति इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। यह रोग धातुगत होने पर माता पिता से बच्चो को भी बीरासत में मिलता है और उन्हें छोटी उम्र से ही इसके कारण तकलीफ उठानी पडती है।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब—मोटा और थुलथुला शरीर, जरामें ही सर्दी लग जाना, जरासेही परिश्रम से थक जाना और हॉफने लगना, हाथ पैर ठंढे और उनसे पसीना निकलना इत्यादि।

कल्केरिया आर्स—स्त्रियोंकी बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। हृदय की कमजोरी, हृदय का धड़कना, जाड़ा लगना इत्यादि।

एन्टिमक्रूड ५ या ३०—पाकाशय में गोलमाल, भूख का न लगना, क्रोधी स्वभाव, दिनो दिन चरबी का बढ़ते जाना।

लाइको पोडियम ३०—नम्र प्रकृति के स्त्री पुरुष या बूढ़ों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

बेराइटाकार्ब ६ या १२X—गण्डमाला धातुवाले रोगियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ३ X या ६—चर्मरोग, कब्जियत जरा में ही सर्दी लगना इत्यादि लक्षणों के साथ मेदाधिक्य, ऋतुस्राव में विलम्ब, स्त्रियों की बीमारी।

इनके अतिरिक्त गण्डमाला रोग की दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—इस रोग में अधिक दिनों तक औषधि सेवन करना पड़ता है। बीच-बीच में दवा बन्द रखने से अधिक लाभ होता है। शारीरिक परिश्रम और व्यायाम करना, घी, मक्खन, चर्बी और मिठाई की चीजें जहाँ तक हो

सके कम खाना, फल मूल अधिक खाना इत्यादि लाभदायक है।

क्षय या राजयक्ष्मा।

(Phthisis)

यह बहुत ही भयंकर और प्राण नाशक रोग है। इसमें शरीर क्षय होता जाता है, इसलिये इसे क्षय कहते है। अंग्रेजी में इसे थाइसिस के अलावा ट्यु बरक्युलोसिस और कन्जम्पशन भी कहते हैं। यह रोग बच्चों को शायद ही होता है। युवक और वृद्ध ही इसके अधिक शिकार बनते है।

यद्यपि यह रोग वंशगत नहीं है और यह जरूरी नहीं है कि माता पिता को यह रोग होने पर उनके बच्चों को भी यह रोग होना ही चाहिये, फिर भी ऐसे माता पिता के बच्चों को यह रोग होने की अधिक सम्भावना रहती है। साधारणतः अधिक मानसिक परिश्रम, खराब भोजन, अधिक स्त्री संग, हस्त मैथुन, अस्वास्थ्यकर स्थान में रहना, शारीरिक परिश्रम न करना, पारे का अपव्यवहार, गरमी या गण्डमाला की बीमारी होना, इत्यादि कारणों से शरीर कमजोर हो जाने पर यह रोग होता है। परन्तु इसका प्रधान कारण तो ट्यु बरकल बेसिलस (Tuberel-bocillus) नामक एक जीवाणु है। यह जीवाणु कमजोर शरीर में प्रवेश करने पर भिन्न-भिन्न यंत्रों में छोटीरगाँठें पैदा हो जाती है। इन गाँठों को अंग्रेजी में ट्यु बर-

कल कहते हैं। बाद को यह गाँठें अधिकाधिक बढ़ती जाती हैं और फूट-फूट कर वहाँ जख्म होते जाते हैं। यह गाँठें मस्तिष्क, जरायु, हड्डी, पाकाशय, आँत, यकृत और फेफड़ा आदि अनेक स्थानों में पैदा हो सकती है। यह जिस स्थान में पैदा होती है वहीं से क्षय की बीमारी शुरू होती है। हमारे देश में फेफड़े का क्षय सबसे अधिक पाया जाता है। आँत और हड्डी का क्षय भी होते देखा जाता है। आँत के क्षय में आँत और पाकाशय की क्रिया में विकृति, दस्त इत्यादि लक्षण पैदा होते हैं। हड्डी के क्षयमें शरीर के विभिन्न स्थानों में फोड़े हो जाते हैं,उनसे पीब बहता है और रोगी घुल घुलकर अन्त में मर जाता है।

लक्षण—इस रोग का आक्रमण बहुत धीरे-धीरे और गुप्त रूप से होता है। इसलिये आरंभ में यह निर्णय करना कठिन हो पड़ता है, कि रोगी को क्षय की बीमारी हुई है। कुछ दिनों के बाद बीमारी प्रबल हो जाने पर इसके स्पष्ट लक्षण दिखायी देते हैं। पहले सूखी, बाद को तर खाँसी, कफ में पीब या खून, शरीर का क्षय, शाम के वक्त हलका बुखार और रात को पसीना यह इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। इनके साथ साथ शारीरिक शक्ति की कमी, अजीर्ण, मन्दाग्नि, भूख न लगना, अरुचि, नींद न आना, सोने पर भी आराम न मालूम होना, आलस्य, श्वास कष्ट, गला बैठ जाना, चलने पर

हाँफना इत्यादि लक्षण भी दिखायी देते हैं। कभी-कभी खूनकी कै भी होती है। धीरे-धीरे रोगी बहुत कमजोर हो जाता है और अन्त में जीवनी शक्ति का ह्रास होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। तेज बीमारी में रोग भलीभाँति प्रकाशित होने के बाद प्राय ३-४ महीने में रोगी की मृत्यु हो जाती है। साधारण बीमारी में १०-१५ वर्ष तक रोगी जीता रह सकता है। आयुर्वेद में इस रोग की अवधि तीन वर्ष की मानी गयी है।

चिकित्सा।

इस रोग का पूर्ण विकाश हो जाने पर दवाओं से रोगी की तकलीफ भले ही घट जाय, पर वह शायद ही आराम होता है। रोग के आरंभ में इलाज होने से रोगी बच सकता है। इसका इलाज चतुर चिकित्सक द्वारा करवाना चाहिये। इसकी प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे लिखे जाते हैं:—

बेसिलिनम या ट्युबरक्युलिनम ३० या २००—पहले सूखी, बाद को तर खाँसी, अधिक तादाद में पतला कफ निकलना, जरा में ही रोगी को सर्दी हो जाना, शीघ्रता पूर्वक रोगी का दुबला होते जाना, नित्य नयी तकलीफ, बायें फेफड़े में क्षय की गाँठो का जमा होना, कफ के साथ खून निकलना, गले में दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यह दवा नीचे क्रम की और बारंबार न देनी चाहिये। ऊँचे

क्रम की दवा महीने में एक दो बार देना काफी है। बीमारी के आरंभ में इससे विशेष लाभ होता है, वैसे किसी भी अवस्था में दी जा सकती है। वेसिलिनम और ट्युबरक्युलिनम दोनों दवाओं का गुण समान है। कोई एक देना चाहिये।

एकालिफाइण्डिका ६ या ३०—बीमारी के आरम्भ में सूखी और कष्टकर खाँसी, कफ में खून, छाती मे सदा दर्द मालुम होना, सुबह शाम खाँसी का बढना, धीरे-धीरे रोगियाते जाना, खून का रंग सुबह लाल, शाम को चमकीला काला इत्यादि।

फोस्फरस ३० या २००—क्षय रोग की यह भी एक बढ़िया दवा है। छाती में सुडसुडाहट, सरल और सूखी खाँसी, बोलने, हँसने, पढने और खुली हवा में घूमने पर खाँसी का बढ़ना, स्वरभग, कमजोरी, कब्जियत, भूख न लगना, शाम को धीमा बुखार, रात को पसीना, छाती में दर्द इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला युक्त धातु, ठंढी हवा बरदास्त न होना, सुबह खाँसी का बढ़ना, थका

थका पीव या खून मिला पीले या हरे रंग का कफ, शिर में चक्कर, सीढ़ी चढ़ने पर हाँफना, सुबह खाँसी का बढ़ना।

कल्केरिया आर्स ३०—कल्केरिया कार्ब से फायदा न होने पर इसे देना चाहिये। धीमा बुखार, दुबला शरीर, बद-हजमी, शरीर में दाह, बदबूदार कफ निकलना, छाती में जलन, प्यास इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—छाती में दाहिनी ओर दर्द, सुबह स्वर भंग और अतिसार, बुखार, चमकीला, लाल खून निकलना, छाती में दाहिनी ओर सुई चुभोने जैसा दर्द, खाँसी के कारण सारी रात नींद न आना, छाती में कफ धड़धड़ाना, कफ बदबूदार और खून या कफ मिला, श्वास कष्ट, दिल में धड़कन इत्यादि।

एकोनाइट ३X—तेज बुखार, बारबार सूखी खाँसी, मृत्यु भय, प्यास, छाती में, दर्द, फेफड़े से खून निकलना।

ब्रायोनिया ६ या ३०—ज्यादा खाँसी, छाती और शिर में तेज दर्द, ऐसा मालूम होना मानो शिर फट जायगा, खाँसी के समय दर्द के कारण छाती पकड़ लेना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—खाँसी कभी सूखी कभी तर, सुबह और भोजन के बाद खाँसी का बढ़ना, कब्जियत, पेट में भार और दर्द।

पल्सेटिला ६ या ३०—रात में सूखी खाँसी, उठ बैठने से आराम, कफ तीता और पीला या हरा, स्त्रियों को ऋतु बन्द होने के कारण या सर्दी लगने के कारण यह रोग होना।

आर्सेनिक ६ या ३०—शरीर का क्षय, बुखार, पसीना, अतिसार, मन्दाग्नि, कमजोरी, सुस्ती, प्यास, श्वास कष्ट, छाती में दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, शाम और सुबह खाँसी का बढ़ना, हाँफना, हरा या नमकीन कफ निकलना, उत्कण्ठा इत्यादि।

ड्रोसेरा १X या ३—तेज और लगातार खाँसी, खाँसते-खाँसते खून आ जाना, खाँसी के कारण छाती में दर्द इत्यादि।

फेरममेट ६ या ३०—फेफड़े से खून निकलना, हाथ पैरों में सूजन, अतिसार, शरीर का सूख जाना, सूखी खाँसी, छाती में दर्द, खून निकलना, खायी हुई चीजों की कै, श्वास कष्ट।

बेलेडोना ६—सूखी खाँसी, शाम को बुखार, अधिक समय तक खाँसने पर खून मिला कफ निकलना, सोने के वक्त छाती में दर्द, साथ ही खाँसी का बढ़ना, गण्डमाला धातुवाले बच्चों की बीमारी।

इपीकाक ३०—दमा जैसी श्वास कष्ट युक्त खाँसी, कै या मिचली, चमकीला लाल खून निकलना।

सिलिका ३०—रात को बहुत पसीना, पीव जैसा कफ, खाँसी पहले सूखी बादको तर, जख्म और उनमें पीव इत्यादि।

सेङ्गइनेरिया ६ या ३०—शाम को चार बजे से बुखार का बढ़ना, श्वास और कफ में बदबू, हाथ पैर ठंढे, छाती में जलन, रात में अधिक पसीना, सोने से खाँसी का बढ़ना इत्यादि।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—आमाशय और पेटमें दर्द, दस्त का बन्द हो जाना, भूख न लगना, नमकीन कफ, सूखी खाँसी, फेफड़े में जलन, डकार में बदबू, पेट का फूलना, पेट में गड़गड़ाहट इत्यादि।

हिपर सल्फर ६ या ३०—गले का बैठ जाना, साधारण खाँसी, सूखी ठंडी हवा लगने से खाँसी का बढ़ना, खून या पीव मिला कफ निकलना, सोते समय श्वास कष्ट। गंडमाला धातुवाले युवक युवतियों को इससे विशेष लाभ होताहै।

आयोडियम ६ या ३०—गले में सुड सुडाहट के साथ लगातार खाँसी, शरीर की समस्त गिल्टियों का बढ़ जाना, लेकिन स्तनों का सूख जाना, अधिक ऋतुस्राव, सुबह पसीना, राक्षसी भूख, खाया पिया शरीर में न लगना, साफ कफ इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—पुरानी बीमारी में इसे बीच बीच में देने से विशेष लाभ होता है। सूखी खाँसी, कभी-कभी बहुत कफ निकलना, रात में पसीना, पसीने में बदबू, हाथ पैर के तलवों में जलन, शरीर सूखा, कमजोरी, फेफड़े में कफ का घडघडाना, सुबह बिछोने से उठते ही पाखाने को दौड़ना इत्यादि लक्षणों में इससे विशेष लाभ होता है।

स्टेनम ६ या ३०—छाती बहुत कमज़ोर, बोलने और खाँसने के बाद छाती खाली मालुम होना, रात में पसीना,

मीठा कफ, पीले या हरे रंग का कफ, साधारण हिलने से भी खाँसी का बढ़ना।

एसिडफस १X—रस, रक्त या वीर्य आदि का अधिक क्षय होने के कारण यह रोग होना, कमजोरी इत्यादि।

चायना ३०—जिन्हें कई बार न्युमोनिया हुआ हो उन्हें यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। रसरक्त का अधिक स्राव, बहुत दिनों तक बच्चे को अधिक दूध पिलाना, प्रदर इत्यादि के कारण स्त्रियों को यह रोग होना।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—बुखार, खून की कमी, दुबलापन, नमकीन चीजें खाने की प्रबल इच्छा इत्यादि।

हाइड्रेस्टिस मदरटिंचर—भोजन में अरुचि के सिवा कोई दूसरा लक्षण न दिखायी देने पर दिन में तीन बार तीन-तीन बूँद देना चाहिये।

आर्स आयोड ३X या ६X—गहरी सुस्ती, नाड़ी तेज, दिन में बुखार, रात में पसीना, बहुत दुबलापन, खून की कमी, इन्फ्लुएञ्जा के बाद इस रोग का होना इत्यादि। इसे भोजन के बाद खाना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—सोने के बाद खाँसी का बढ़ना, कष्ट के साथ कफ निकलना, मल में बदबू, रोग की शेषावस्था में मुँह में जख्म इत्यादि।

इनके अलावा कल्केरिया आयोड, जेबोरेन्डी, कल्केरिसा-फस, हेमामेलिस, एब्रोटेनम, नेट्रम आर्स, मिलिफोलियम, गेलिक एसिड, इरीजिरन, जेरानियम, थाइरो, मेलेन्ड्रिनम, कार्बोवेज, बालसमये पेरर, कोक्कस केक्टाई इत्यादि दवाएँ भी लक्षणानुसार देने से काफी लाभ करती है। बुखार की हालत में येप्टीशिया, सैंगुइनेरिया, फेरमफस, चायना, किनिनम आर्स, एकिन्नेसिया, पाइरो, बहुत पसीना आने पर कल्केरिया कार्ब, जेबोरेन्डी, एगारिकस, एसिडफस और सिलिका, अतिसार में आर्स आयोड, किनियम आर्स, एसिडफोस, रक्त निकलने पर जिरेनियम, एकालिफा, मिलिकोलियम, इपीकाक ट्रिलियम, फोस्फरस, हेमामेलिस, फेरमएसेट, अर्निका, लेकेसिस, फेफड़े की सूजन में एपिस, एपोसाइनम, आर्स आयोड, सेङ्गुइनेरिया, खाँसी तेज होने पर फोस्फरस, बेले-डोना, ड्रोसेरा, ब्रायोनिया, हायोसायस, कोनायम, स्टेनम, एन्टिमटार्ट, केली बाइक्रोम, केलीकार्ब और श्वासकष्ट में आर्सेनिक, एन्टिमटार्ट, स्ट्रिकनिया तथा नाइट्रिक एसिड—यह दवाएँ विशेष रूप से आजमानी चाहिये।

आवश्यक सूचना—जिन्हे यह रोग होने की संभावना हो उन्हें आहार विहार में वहुत नियमित और सावधान रहना चाहिये। रहने का स्थान साफ सुथरा और हवादार होना चाहिये। जलवायु के परिवर्तन और निर्मल वायु के सेवन से विशेष लाभ होता है। वकरी का दूध, वकरी का घी और वकरे का मास खाना, वकरियों के साथ रहना लाभदायक है। काडलिवर आइल के सेवन से भी लाभ होता है। रोगी को जो चीजें खाने को दी जायें वे पुष्टिकर और हलकी होनी चाहिये। मांस का शोरवा वहुत लाभदायक होता है। रात को जागना, सरदी, अधिक परिश्रम आदि मना है। स्त्रियों को रोग होने पर उन्हें स्वामि-सहवास एकदम वन्द कर देना चाहिये। इसी तरह पुरुषों के लिये स्त्री संग घातक है। रोगी के साथ रहना, उसके व्यवहार में आयी हुई चीजें काम में लाना, उसके साथ खाना पीना आदि मना है। क्षय-रोगी के लिये समुद्र तट का रहना लाभदायक माना गयाहै।

हैजा या कालेरा।

(cholera)

हैजा एक वहुत ही भयंकर सक्रामक रोग है। एक प्रकार का विषाक्त जीवाणु इस रोग का उत्पादक कारण माना जाता है। खाने पीने की चीजों के साथ यह जीवाणु स्वस्थ मनुष्य

पेट में पहुँचने पर उसे यह बीमारी हो जाती है। इसका आक्रमण इतनी शीघ्रता से होता है और यह बीमारी इतनी कठिन होती है, कि अनेक बार रोगी को चिकित्सा करने का भी समय नहीं मिलता और देखते ही देखते कुछ ही घण्टों के अन्दर उसकी मृत्यु हो जाती है।

हैजा के भिन्न-भिन्न भेद—चिकित्सा की सुविधा के लिये हैजा कई भागों में बाँट दिया गया है यथा—(१) डायरिक कालेरा (*Diarrhoeic* Cholera) या दस्त प्रधान हैजा (२) स्पेजमोडिक कालेरा (Spasmodic Cholera) या आक्षेप प्रधान हैजा (३) पेरेलिटिक कालेरा (Paralytic Cholera) या लकवा प्रधान हैजा। इनके अलावा कालेरा सिका या एशियाटिक कालेरा नाम का एक कालेरा और होता है, जो बहुत ही सांघातिक होता है।

दस्त प्रधान हैजा—इसमें दस्त अधिक होते हैं। साथ ही कै, पेट में दर्द इत्यादि लक्षण मौजूद रहते हैं। अन्त में खून का जलीय अंश घट जाता है और शरीर ठंढा तथा नीला पड़ कर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

आक्षेप प्रधान हैजा—इसमें आक्षेप या खींचन की प्रधानता रहती है। साथ ही श्वासकष्ट, नसों का सिकुड़ना, थोड़े बहुत कै दस्त और शरीर का ठंढा पड़ जाना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

लकवा प्रधान हैजा—इसमें पहले से ही रोगी ऐस
निर्जीव हो जाता है, मानो उसे लकवा हो गया हो। साथ ह
हैजा के अन्य लक्षण भी मौजूद रहते हैं।

कालेरा सिका—यह हैजा इतना तेज होता है वि
इसमें रोगी को कै दस्त करने की भी शक्ति नहीं रह जात
और कुछ ही घण्टों में उसका शरीर नीला होकर उसक
मृत्यु हो जाती है।

हैजे का कारण—बहुत लोग हैजे का मूल कारण एक
जीवाणु को मानते हैं, परन्तु यह जीवाणु कैसे, कहाँ से आ
जाता है, इसका पता नहीं लग सका। अनेक लोगों क
धारणा है कि गन्दी हवा या गन्दे स्थान में रहना, आसान
से हजम न होनेवाली चीजें खाना, अपरिमित भोजन, गन्द
पानी पीना, अनियमित परिश्रम, अधिक स्त्री संग, शराब
पीना, रात को जागना इत्यादि कारणों से रोगी के पाकाशय
में ही एक प्रकार का विष उत्पन्न हो जाता है और उसी के
कारण यह रोग होता है।

हैजे के लक्षण—भात के फेन, मॉड, चावल के धोवन
या सड़े हुए कोहड़े के पानी जैसे दस्त और कै, पेशाब का
बन्द हो जाना, चेहरा और आखों का बैठ जाना, बहुत कम
जोरी और सुस्ती, गले का बैठ जाना, हाथ पैर में अकड़न,
प्यास, बेचैनी, नाड़ी बहुत क्षीण, शरीर का ठंढा पड़ जाना

तन्द्रा, श्वास कष्ट इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। तेज बदहजमी, जिसे अंग्रेजी में कालेरिन और हिन्दी में विसूचिका कहते हैं उसमें भी हैजा जैसे ही लक्षण प्रकट होते हैं, परन्तु उसमे पित्त मिले हरे रंग के दस्त होते हैं। नाभी के चारो ओर दर्द रहता है, प्राय. पेशाब बन्द नहीं होता, रोगी बहुत जल्दी सुस्त नहीं होता और हैजे की तरह उसके रंगमें भी असाधारण अन्तर नहीं पड़ता।

हैजे की चार अवस्थाएँ—हैजे की बीमारी में एक एक के बाद चार अवस्थाएँ दिखायी देती हैं, यथा-(१) आरम्भावस्था (प्रिमोनिटरी स्टेज Promonitary stage) (२) विकाशावस्था या तेजी(डेवलपमेन्ट स्टेज Development stage) (३) पतनावस्था (कोलेप्स स्टेज Collapse stage) (४) प्रतिक्रियावस्था (रिएकशन स्टेज Reaction stage) इन चारो अवस्थाओंके प्रधान लक्षण और दवाएं नीचे अंकित की जाती है।

(१) आरम्भावस्था—इनमे सुस्ती, शिर में चक्कर, अनिद्रा, मुँह का स्वाद बिगड़ा हुआ, मिचली, कान मे भों-भों आवाज इत्यादि लक्षण दिखायी देते हैं और रोगी को साधारण ढंग से पतले दस्त आते हैं। कभी-कभी यह लक्षण इतने साधारण होते हैं कि डाक्टरों को भी सन्देह नहीं होता कि रोगी को हैजा होने जा रहा है। केम्फर, एकोनाइट, क्रोटन, आइरिस, एलोज, चायना, पल्सेटिला, नक्सवोमिका,

इपीकाक, पोडोफिल्लाम, आर्सनिक, एसिड फस, बेलेडोना, ब्रायोनिया, वेप्टीशिया, फोस्फरस, कार्बोवेज, केमोमिला और एन्टिम टार्ट आदि इस अवस्था की प्रधान दवाएँ है।

(२) विकाशावस्था—इसमें रोगी को चावल के धोवन की तरह बहुत से दस्त होते हैं। साथ ही पेट में दर्द, प्यास, ठंढा पसीना, आँखें और मुँह का बैठ जाना, आँखें और चेहरे का नीला हो जाना, बेचैनी, पेशाब का बन्द हो जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। यदि रोग आराम होने लगता है तो दस्तों का रग बदल कर पीला या हरा हो जाता है, वर्ना रोग की तीसरी अवस्था उपस्थित होती है। एकोनाइट, इपीकाक, रिसिनस, आर्सेनिक, विरेट्रम, क्युप्रम, क्युप्रम आर्स, सिकेली, टेबेकम, कन्थरिस, रसटक्स, इलाटेरियम, मर्क्युरियस, और क्रोटन टिग इत्यादि इस अवस्था की प्रधान दवाएँ है।

(३) पतनावस्था—पहले बहुत से दस्त, बाद को उनमें कमी, पानी पीते ही तुरन्त कै हो जाना, आँखों के किनारे कालिमा, शरीर का रग क्रमशः नीला हो जाना, आँखों की ज्योति का घट जाना और उनका गढ्ढे में घुस जाना, शरीर बरफ की तरह ठढा, रोगी का छटपटाना, चेहरे पर पसीने की बूँद, शरीर से बहुत अधिक ठढा पसीना निकलना, शरीर में जलन, स्वर भंग, बहुत कमजोरी, अनजान मे

थोड़ा थोड़ा दस्त होना या एकदम दस्त और पेशाब का बन्द हो जाना, पेट का फूल जाना, श्वासकष्ट इत्यादि इस अवस्था के लक्षण हैं। इसमें शरीर बरफ की तरह ठंढा हो जाता है, इसलिये इसे हिमाङ्ग अवस्था भी कहते हैं। अधिकांश रोगियों की मृत्यु इसी अवस्था मे होती है। एकोनाइट, आर्सनिक, विरेट्रम, क्युप्रम, कार्बोवेज, ओपियम, कोटेलस, लेकेसिस, नेजा, हाइड्रोसियेनिक एसिड, निकोटिन, कार्बोवेज, एगेरिसस, साइक्यूटा और फेलेसिये नेटम इत्यादि इस अवस्था की प्रधान दवाएं हैं।

(४) प्रतिक्रियावस्था—यदि तीसरी अवस्था में रोगी की मृत्यु न हुई तो तीसरी अवस्था के लक्षण धीरे-धीरे लोप होने लगते हैं और उनका स्थान स्वस्थता के लक्षण ग्रहण करने लगते हैं। दस्तो का रंग बदल कर पीला या हरा हो जाना, नाडी का अपने ठिकाने पर आ जाना, मल का गाढ़ा हो जाना, पेशाब होने लगना, शरीर का रंग स्वाभाविक हो जाना, हृदय की चाल का ठीक हो जाना, धीरे-धीरे आँखों की ज्योति, शरीर की गरमी और शक्ति का बढ़ना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं और रोगी स्वस्थ मालूम होता है। केन्थरिस, टेरीबिन्थ, नक्सवोमिका, बेलेडोना, केनेबिस इन्डिका, ओपियम, सलफर, एसिडफस, चायना, सिक्यूटा, सिना, पोडोफिलाम, मर्क्युरियस इत्यादि दवाएं लक्षणानुसार इस अवस्था में भी काम देती हैं। स्वास्थ्य अपने आप सुधर

रहा हो और कोई विशेष शिकायत न हो तो इस अवस्था में कोई भी दवा न देनी चाहिये।

रोग का पुनराक्रमण— अच्छी तरह रोग का इलाज न होने पर रोग आराम होने के समय फिर पलटा खा जाता है और अनेक कठिन उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। रोग आराम होने के बाद भी प्राय कुछ शिकायतें शेष रह जाती है। इनकी दवाएँ हम इस अध्याय के अन्त में अङ्कित करेंगे। यहाँ इस रोग की उपरोक्त चारो अवस्थाओं की प्रधान-प्रधान दवाओं के लक्षण अङ्कित किये जाते हैं:—

चिकित्सा।

रुबिनीका केम्फर या अर्क कपूर—सभी तरह के हैजा में और हैजा की सभी अवस्थाओं मे अर्क कपूर फायदा करता है। यकायक बहुत कमजोरी, चेहरे का बदल जाना, स्वरभंग, आँखों का धँसा जाना, शरीर का ठढा हो जाना, दस्त कम, कै अधिक, श्वासकष्ट, पेट में जलन, शिर में चक्कर सिक्का कालेरा, चिकना और ठंढा पसीना, शरीर नीला इत्यादि सभी लक्षणों में इससे आश्चर्यजनक लाभ होता है। पूरी उम्र-वालों को रोग की तेजी के अनुसार पॉच से लेकर पन्द्रह बूँद तक दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के अन्तर से चीनी, बतासा या मिश्री के साथ देना चाहिये। इस तरह दो घण्टे तक देने पर लाभ न हो तो दूसरी दवा चुननी चाहिये।

एलोपैथिक या आयुर्वेदिक चिकित्सा कराने के बाद रोगी होमियोपैथिक चिकित्सा कराने आये तो इसकी २-१ खुराकें देने के बाद ही दूसरी दवाएँ देना चाहिये।

एकोनाइट ३ X या ६—हैजे के साथ बुखार या खूनी के दस्त, घोले हुए तरबूज जैसे दस्त, ठंठ मालूम होना, मृत्यु-भय, प्यास, बेचैनी, पित्त मिले हरे दस्त, पेट में तेज दर्द इत्यादि लक्षणों में रोगी की आरम्भावस्था में तथा पतनावस्था में समूचा शरीर ठंढा होजाने पर इसका प्रयोग करना चाहिये।

आर्सेनिक एल्ब ६—अधिक फल मूल खाने या बरफ पीने पर यह रोग होना, बिना दर्द के पानी जैसे बदबूदार दस्त, मृत्युभय, बहुत बेचैनी, तेज प्यास, किन्तु एक साथ अधिक पानी न पीना, आधी रात के बाद लक्षणों का बढ़ना, बहुत कमजोरी, कै के बाद पेट में जलन, कष्टकर श्वास प्रश्वास, स्वरभग, व्याकुलता इत्यादि। हैजे की किसी भी अवस्था में बहुत बेचैनी, व्याकुलता, सुस्ती, तेज प्यास और मुर्दे का सा चेहरा-इन लक्षणों में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

क्रोटनटिग ३ या ६—जोर के साथ पिचकारी की तरह पानी जैसे पीले रग के दस्त, पानी पीने के बाद कै, दस्तों का बढना, पेट में नाभी के चारों ओर खींचने की तरह दर्द-इन लक्षणों के हैजे की यह अव्यर्थ ओषधि है।

आइरिस ३—खून मिले, पानी जैसे, पीले, कफ मिले, काले, हलके हरे या अजीर्ण के दस्त, मुह से लेकर मल-द्वार तक जलन, पिछली रात में रोग का हमला, डकार, मिचली, खट्टी कै, दस्त में खट्टी गन्ध इत्यादि। रोग की प्रथमा और द्वितीयावस्था में यह दवा व्यवहार की जाती है।

एलोज ३X या ३०—सुबह बिछोने से उठते ही हड़हड़ा कर पतला दस्त होना, दस्त में अजीर्ण पदार्थ, दस्त के समय वायु निकलने के कारण पट पट आवाज।

चायना ६ या ३०—पीले और पानी जैसे अजीर्ण के दस्त, साथ ही बहुत कमजोरी, गरमी दिनों में अतिसार, मल में बदबू, दस्त के पहले पेट में दर्द, पेट का फूलना, वायु निकलना, डकार आने पर आराम मालुम होना, रात में और भोजन करने के बाद तकलीफ का बढ़ जाना इत्यादि।

नक्सवोमिका-६ या ३०—शराब पीने, स्त्री-संग करने रात को जागने, मसालेदार चीजें खाने या अम्ल रोग के कारण यह रोग होना, बारबार दस्त का वेग मालुम होना, पर खुलकर दस्त न होना, पेट फूला हुआ, बदबूदार और पित्त मिले दस्त।

इपीकाक ६ या ३०—रोग की किसी भी हालत में
त जी मिचलाना और कै इसका प्रधान लक्षण है। हरे
र फेना जैसे दस्त, पेट में दर्द, खूनी दस्त, इत्यादि लक्षणों
भी इससे लाभ होता है। कै के लिये दूसरी दवाओं के साथ
दवा पर्याय क्रम मे भी दी जाती है।

पल्सेटिला ६ या ३०—घी, तेल या चरवी वाले पदार्थ
धिक तादाद मे खाने के कारण यह रोग होना, डकार में
यी हुई चीजो की गन्ध, मिचली, पेट मे गड़गड़ाहट, हरे
ग के आँव मिले दस्त, प्यास का न होना इत्यादि।

पोडो फिल्लाम ६ या ३०—विना दर्द के पिचकारी की
रह बहुत अधिक तादाद में जोरो के साथ गरम दस्त होना
सका प्रधान लक्षण है। बच्चो को इससे विशेप लाभ होता है।

टेबेकम ६ या ३०—दस्तों का बन्द हो जाना लेकिन
जारी रहना इसका प्रधान लक्षण है।

निकोटिन ६ या ३०—इसके लक्षण भी टेबेकम के
मान ही हैं। पतनावस्था में हाइड्रोसियेनिक एसिड के से
क्षणों में, खास कर श्वास कष्ट में भी इससे विशेप लाभ
ता है।

ओपियम ३—दस्त और पेशाब का बन्द हो जाना, पेट का फूल जाना, श्वासकष्ट, मृत्युकाल जैसे लक्षण।

क्रोटेलस या नैजा ३—चेहरा मुर्दे की तरह विगड़ा हुआ और बदरंग, शरीर बरफ की तरह ठंढा, नाड़ी गायब, निगल न सकना इत्यादि। आर्सेनिक से श्वास कष्ट कम न होने पर इससे लाभ होता है।

हाइड्रोसियेनिक एसिड ३ या ६—सूखा हैजा, विना कै दस्त हुए ही आँख मुँह का बैठ जाना, चेहरा नीला, मुर्दे की सी हालत, ठण्ढा पसीना, नाड़ी लोप, समूचा शरीर ठंढा, आँखें अधखुली, बेहोशी, श्वासकष्ट इत्यादि।

लेकेसिस ६—हैजे का हमला होते ही रोगी का बेहोश होकर गिर पडना, बाद को अनजान में कै दस्त होना इत्यादि।

एगेरिकस ६—बहुत तेज हिमाङ्ग अवस्था, पेशाव बन्द, पेट का फूल जाना, बिछौने से उठने की चेष्टा करना इत्यादि।

सिक्यूटा ६—श्वासकष्ट, पेट का फूल जाना, हिचकी, अकड़न के कारण रोगी का धनुष की तरह टेढ़ा हो जाना इत्यादि।

विरेट्रम एल्बम ३ या ६—भात के पानी की तरह ानक बहुत सा दस्त होना, कै, हरबार दस्त के बाद रोगी सुस्त हो जाना, कै और दस्त का एक साथ होना, अस्थि-ा, हाथ पैर का अकड़ जाना, पेट मे जलन, तेज दर्द, पानी ा के बाद ही कै होना, चेहरा ठंढा और नीला, दस्त के ाय कपाल पर ठण्ढा पसीना, स्वरभंग इत्यादि।

रिसिनस ३ या ६—बारम्बार बिना दर्द के पानी जैसे त, प्यास, कै, कै के साथ अन्न नाली और पाकस्थली में ान, पाकस्थली में अकड़न इत्यादि। दस्त प्रधान हैजे में से विशेष लाभ होता है।

क्युप्रम मेट ६ या ३०—अकड़न की यह बढ़िया दवा । समूचा शरीर ठण्ढा और हाथ पैरों में अकड़न, पानी े सफेद या लाल दस्त, पेट में दर्द, प्यास, हिचकी कै, ी पीने से आराम मालूम होना, नाड़ी गायब, बेहोशी ादि। अकड़न के लिये विरेट्रम के साथ यह पर्याय क्रम में दिया जाता है। सिकेली की अकड़न में उगलियाँ बाहर और झुक जाती हैं, क्युप्रम में भीतर की ओर। यह भेद ान में रखना चाहिये।

केन्थरिस ३ या ६—खून मिले दस्त और कै, पेशाब में तकलीफ या पेशाब का बन्द हो जाना, पेट में दर्द, गुह्यद्वार मे जलन, अस्थिरता, शरीर और हाथ पैर ठण्ढे इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

इलाटेरियम ३ या ६—बहुत दस्त, कै, निचले अंगों में कतरने जैसा दर्द इत्यादि।

जेट्रोफा ३ या ६—हड़हड़ाहट के साथ सोते की तरह पतला दस्त, पेट में जलन, गड़गडाहट के साथ दस्त, अकड़न, पसीना, अण्डे की सफेदी जैसी हड़हड़ा कर कै होना, प्यास लेकिन कै होने के डर से पानी न पीना।

युफोर्बिया कोरोलेटा ६ या ३०—एकायक मिचली के साथ बेहोशी, बाद को जोरों की कै, पहले खायी हुई चीजें, बाद को कफ, पानी और फेना निकलना, कुछ समय के बाद गड़गड़ाहट के साथ पानी जैसे दस्त, ठण्ढा पसीना, हाथ पैर ठंढे इत्यादि।

कल्चीकम ६ या ३०—लगातार दस्त होते रहने पर भी पेट भरा मालुम होना, पहले मलयुक्त बाद को पानी जैसे

दस्त, बिना दर्द के दस्त, दस्तों के बढ़ने पर कै का भी बढ़ना इत्यादि। रोगकी तेजीके समय यह दवा व्यवहार की जाती है।

इथ्यूजा ६—बच्चों की बीमारी, खूब पतला दस्त, डकार दही की तरह फटी फटी कै, कै के बाद ही बच्चे का सुस्त हो जाना, या सो जाना, सोकर उठते ही खाने को माँगना इत्यादि।

केलीब्रोम ३X विचूर्ण—बच्चों को यह रोग होने पर बहुत सुस्ती, शरीर ठण्ढा और नीला, नाडी गायब, ऐंठन या अकड़न आदि तीव्र लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेप्टीशिया १X६—साँस और पसीने में बहुत बदबू, शरीर में दर्द, सुस्ती, बकझक, बोलते बोलते सो जाना, दर्द होने पर भी काँखना, पेट का बैठ जाना, बुखार मिला हैजा इत्यादि।

मर्क्युरियस वाइवस ६X विचूर्ण—खून और आँव मिले दस्त, काँखना, मुँह से लार बहना इत्यादि।

रसटक्स ६—बुखार मिला हैजा, पेट में गड़गड़ाहट, बेहोशी जैसी नींद, कष्टकर सपने, अरुचि, तेज प्यास, ठंढा

पानी या ठण्डा दूध पीने की इच्छा, प्रलाप, खून मिले पीले कफ मिले या पतले और बदबूदार दस्त।

क्युप्रम आर्स ६ X—पेट में जोरों का दर्द साथ ही एंठन या अकड़न। बच्चों के हैजे में इससे विशेष लाभ होता है।

मक्युरियसकर ३ या ६—खूनी दस्त, खूनी कै, खूनी पेशाब, साधारण दस्तों के बाद हैजा हो जाना, पेट मे दर्द, बहुत काँखना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

केलीमियेनेटम ३ X विचूर्ण—श्वासकष्ट में हाइड्रो-सियेनिक एसिड से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। साँस करीब-करीब बन्द, बीच-बीच में छाती फूलने के सिवा जीवन का और कोई लक्षण न दिखायी देना।

टेरीबिन्थीना ६—पेशाब का बन्द हो जाना और पेट का फूला रहना इसके प्रधान लक्षण हैं। केन्थरिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

साइना ३X२००—पेट में क्रिमि होने के कारण हैजा होना या रोग आराम होने के बाद क्रिमि के कारण उसका फिर पलटा खा जाना।

प्रतिक्रियावस्था के विविध उपसर्ग ।

रोग कुछ कुछ आराम होकर फिर बढने लगे तो लक्षणानुसार उपरोक्त दवाएँ ही पहले की अपेक्षा ऊँचे क्रम की प्रयोग करनी चाहिये। प्रतिक्रियावस्था में अथवा रोग आराम होने के बाद जो उपसर्ग दिखायी देते हैं उनकी दवाएँ नीचे लिखी जाती हैं:--

पेशाब का बन्द हो जाना—बारबार वेग मालूम होने पर भी पेशाब का न होना, प्रलाप, आक्षेप, निद्रालुता आदि लक्षणों में केन्थरिस ३ या ६। केन्थरिस से लाभ न हो साथ ही पेट कुछ फूला हुआ हो तो टेरीबिन्थीना ६। अस्थिरता और बेचैनी हो तो आर्सनिक ३०। मूत्रस्थली में वेदना होने पर नक्सवोमिका ३०। बूँद बूँद पेशाब होने पर केनेबिस सेट ३ या ६। केन्थरिस और टेरीबिन्थीना से लाभ न होने पर नाइट्रिक इथर पाँच सात बूँद छटाक डेढ छटाक पानी में मिलाकर दो तीन बार देना चाहिये।

हिचकी—विरेट्रम ३० या आर्सनिक ३० इसकी अच्छी दवा है। जोरों की हिचकी, हिचकी के समय शरीर का काँप उठना या बिछौने से उठ बैठना आदि लक्षणों में बेलेडोना ६। बेहोश की तरह पड़े रहना, बीच बीच में जोरों की हिचकी आये तो साइक्यूटा ३। हिचकी के समय पेशाब निकल पड़े, कै, ऐंठन और पेट में गडगडाहट हो तो हायोसायमस ६।

हिलने से हिचकी, हिचकी के कारण सुस्ती, अधमुदीं आँखें आदि में कार्वोविज ६। भोजन के वाद या वीडी आदि पीने के समय हिचकी आये तो पल्सेटिला ६। खाने के वाद हिचकी आने पर इग्नेशिया ६ या ३० से भी वहुत लाभ होता है। निद्रालुता, मिचली, वारंवार मिचली इत्यादि में स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०। भोजन के वाद पाकस्थली में भार, साथही हिचकी होने पर फोस्फरस ६। इनके अतिरिक्त एन्टिमटार्ट, आर्सेनिक, क्युप्रम, सिकेली, एसिडफस, साइना आदि से भी काफी लाभ होता है।

मिचली या कै—इपीकाक इसकी सर्वप्रधान दवा है। नक्सवोमिका से भी काफी लाभ होता है। पानी पीने के कुछ समय वाद ही कै हो तो फोस्फरस ३०। इपीकाक और नक्सवोमिका से लाभ न होने पर पोडोफिल्लाम ३ या ६। ठंढा पानी पीने के वाद कै होने पर युपेटोरियम ३।

पेट में कृमि—पेट में कृमि होने पर मुँह में पानी भर आना, पेट में ऐंठन, दर्द, सोते समय दाँत कडमडाना, नाक खुजलाना, मल द्वार में सुड़सुडाहट या खुजली, वुखार मालूम होना, कफ मिले दस्त इत्यादि लक्षण दिखायी देते हैं। साइना ३ x या २०० इसकी वढिया दवा है। साइना से लाभ न हो तो सेन्टोनाइन १ x या ३ x विचूर्ण। इनके अलावा चायना ३ या ६, सिक्यूटा ३ और ट्युक्रियम ३ x से भी काफी लाभ होता है।

हैजे के बाद बुखार—साधारण बुखार अपने आप ही अच्छा हो जाता है। अच्छा न होने पर एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, रसटक्स या ज्वर की अन्यान्य दवाएं लक्षणानुसार प्रयोग करनी चाहिये।

आँव मिले दस्त—आँव मिले दस्त साथ ही बुखार हो तो एकोनाइट ३ x या ६। खून मिले दस्त, पेट में दर्द आदि लक्षणों में मर्क्युरियसकर ३ या ६। मिचली, कै, साधारण खून या आँव मिले दस्त आदि में इपीकाक ३ या ६। बारंबार दस्त का वेग पर दस्त न होना या थोड़ा थोड़ा होना, दस्त में खून के छींटे आदि में नक्सवोमिका ३ या ६।

पतले दस्त—साधारण दस्तों में दवा की जरूरत नहीं पड़ती, पेशाब होने पर दस्तों की शिकायत दूर हो जाती है। दवा की जरूरत हो तो पीले दस्त, कमजोरी आदि में चायना ३ या ६। पित्त मिले दस्त, सुबह के दस्त, अधिक तादाद में दस्त आदि मे पोडोफिलम ३ या ६। फोस्फरिक एसिड से भी बाद के दस्तों में काफी लाभ होता है।

पेट का फूलना—आँतों की जड़ता और यकृत दोष के कारण पेट फूलने पर नक्सवोमिका ३०। पेट में दस्त, बदबूदार मल आदि में एसाफिटिडा ३ या ६। निद्रालुता और कब्जियत में ओपियम ६। पेट में वायु के कारण गड़गड़ाहट, बदहजमी आदि में चायना ६ या ३०। पेट फूलना साथ ही

पतले दस्तों में कार्बोवेज ६ या ३०। पेट फूलना साथ ही कब्जियत में लाइकोपोडियम ६ या ३०।

हैजे के बाद जख्म—शैय्याक्षत में मर्क्युरियस सल ६, लेकेसिस ३०, कार्बोवेज ३०। मुँह के जख्म में नाइट्रिक एसिड ६, मर्क्युरियस ६। मसूढ़े से खून निकलने पर नाइट्रिक एसिड ६, कार्बोवेज ३, हिपर सल्फर ६। आँखों में जख्म होने पर मर्क्युरियस ६, पल्सेटिला ६ और युफ्रेशिया लोशन का वाह्य प्रयोग। फोडा होने पर हिपरसल्फर ६। फोड़े से पीव बहने पर सिलिका ३०। कान की गिल्टियाँ फूलने पर बेलेडोना ६, लेकेसिस ६, सिलिका ३०। सडा जख्म होने पर आर्सेनिक ६, लेकेसिस ६, कोटेलस ६।

मस्तिष्क विकार—पेशाब न होने पर प्रलाप, निद्रालुता, तन्द्रा इत्यादि मस्तिष्क विकार के लक्षण प्रकट होते हैं। धीमा प्रलाप, तन्द्राभाव, जननेन्द्रिय खुजलाना और खींचना आदि मे केनेबिस इन्डिका ३। स्थिर दृष्टि, अधमुँदी आँखें, तन्द्रा, आक्षेप, हिचकी आदि में सिक्यूटा ६। चेहरा और आँखें लाल, प्रलाप आदि में बेलेडोना ६। अधिक बकझक, बिछौने से उठना, काटने दौडना आदि में स्ट्रेमोनियम ६ या ३०। बेलेडोना और स्ट्रेमोनियम के लक्षणों से भी तेज लक्षण, जोरों का विकार आदि में हायोसायमस ६ या ३०। प्रलाप, तन्द्रा, मस्तिष्क की अवसन्नता, कब्जियत, बेहोशी, पेट का

फूलना आदि में ओपियम ६। बीच बीच में सल्फर ३० देने से विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोग बहुत तेज हो तो जल्दी जल्दी घंटे में दो तीन बार दवा देनी चाहिये। साधारण बीमारी में घंटे या दो घंटे के अन्तर से और दवा से फायदा हो रहा हो तो और भी देरी से देना चाहिये। दो तीन खुराक दवा देने पर फायदा न हो तो दूसरी दवा चुननी चाहिये।

रोगी का कमरा साफसुथरा और हवादार होना चाहिये। रोगी का मल मूत्र दूर फेकना चाहिये। जमीन में गाड देना सब से अच्छा है। पाखाने के स्थान में चूने का चूरा छिडकते रहना चाहिये। हाथ पैर में जहाँ अकडन हो वहाँ नमक या बालू की पोटली या फ्लानल से सेंक देना चाहिये। पीने के लिये खूब गरम पानी देना चाहिये। बरफ के टुकड़े भी चूसने को दिये जा सकते हैं। गरम पानी में नमक मिला कर पिलाना बहुत लाभदायक होता है। रोग की पहली, दूसरी और तीसरी अवस्था में खाने का कुछ भी न देना चाहिये। रोग की तेजी घट जाने पर प्रतिक्रियावस्था में आरारोट या बाली का पानी देना चाहिये। जब तक मल गाढ़ा और पीला या हरा न हो जाय, तब तक किसी तरह का पथ्य देना ठीक नहीं। बाद को ज्यों ज्यों अवस्था सुधरती जाय त्यों त्यों क्रमश: पानी का साबूदाना, दूध का साबूदाना, चावल का माँड, मूँग की दाल का पानी और पुराने चावल का भात

आदि चीजें देनी चाहिये। पथ्य देने में जल्दी न करनी चाहिये और बहुत सोच समझ कर पथ्य देना चाहिये। जिन्हें बदहजमी या दस्त की बीमारी हो उन्हें हैजा के रोगी की सेवा शुश्रूपा न करनी चाहिये। खाली पेट भी रोगी के पास जाना ठीक नहीं।

पिछली रात में हैजे का होना, शीघ्र ही सुस्त हो जाना, बारबार अनजान में कै या दस्तका होना, श्वास कष्ट, नाड़ीलोप, शरीर की गरमी का बहुत घटना या बढ़ना, पेट में दर्द, खूनी कै दस्त, पित्त का न निकलना, पेशाब न होना, ऐंठन का बन्द न होना, बहुत बक झक, निगल न सकना, बेहोशी, पैर पर पैर चढ़ा कर सोना, सन्निपात, गर्भवती स्त्री, शराबी, अफीमची, छोटे बच्चे, बूढ़े या कमजोर आदमी को यह रोग होना-आदि अशुभ लक्षण हैं। इन लक्षणों में प्राण का भय रहता है। लेकिन लक्षण बुरे होने पर भी रोगी से कोई ऐसी बात न कहनी चाहिये, जिससे वह डर जाय या दहशत खा जाय। गर्भवती स्त्री को हैजा होने से उसका गर्भ गिर जाता है।

चेहरे की कान्तिका खराब न होना, पेशाब का बन्द न होना, श्वॉस कष्ट न होना, ऐंठन और प्यास का कम होना, कै दस्त अधिक न होना, दस्त का रंग पीला या धुमैला, शरीर की गरमी का न घटना, शीघ्रतापूर्वक प्रतिक्रिया के लक्षण प्रकट होना आदि अच्छे लक्षण हैं। रोगी का इलाज बहुत सावधानी के साथ, किसी चतुर चिकित्सक से ही कराना चाहिये।

गरम, प्यास, शिर दर्द, बुखार, निद्रालुता, शाम को तीसरे पहर तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—घुटने और हाथ पैर की छोटी छोटी संधियों में वात, दर्द का एक जोड़ से दूसरे जोड़ में घूमते रहना, तीसरे पहर, शाम को और रात में दर्द का बढ़ना, खुली हवा में आराम, गर्मी में रोग का बढ़ना, ठंढी में घटना, स्त्रियोंको ऋतु की गड़बड़ीके कारण वातरोग होना।

सेलिसिलिक एसिड ६ या ३०—नये वात रोग में तेज बुखार और दर्द होने पर इससे भी बहुत लाभ होता है।

सिमिसिफिउगा ३X या ६X—पेशियों का वात, छाती में वात, वात के कारण शरीर में खोंचा मारने या बिजली की लहर सी दौड़ने जैसा दर्द, दर्द के कारण बेचैनी।

कोलोफाइलाम ३ या ६—उंगलियों के जोड़ और मणिबन्ध का वात, कन्धे और पीठ में दर्द, तेज बुखार, श्वास कष्ट इत्यादि।

एकोनाइट के साथ पर्याय क्रम में या एकोनाइट के बाद इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—हमेशा गरमी मालूम होना, शरीर के कपड़े उतार डालना, हाथ पैर के तलवों में गरमी मालूम होना, पसीने में खट्टी गन्ध, बायें अंग में अधिक दर्द, रात को दर्द का बढ़ना इत्यादि। यह नये और पुराने तथा सभी किस्म के वात रोग में फायदा करता है। बीच बीच में इसे देने से दूसरी दवाएं अधिक लाभ करती हैं। पर इसे अधिक मात्रामें या अधिक समय तक सेवन करना हानिकर है।

रसटक्स ६–हिलने डोलने से आराम मालूम होना, सेंकने से रोग का घटना, विश्राम करने पर, रात में, सुबह उठने के समय या बिछौने की गरमी से रोग का बढ़ना, बहुत बेचैनी, ठण्ढी हवा बरदास्त न होना, वर्षाऋतु में या ठण्ढी हवा लगने पर वात रोग होना, दूसरे स्थानों की अपेक्षा कमर में अधिक तकलीफ (कटिवात) इत्यादि में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६–आक्रान्त स्थान में सूजन और लाली, चुभोने जैसा या दपदप होनेवाला दर्द, शरीर सूखा और

गरम, प्यास, शिर दर्द, बुखार, निद्रालुता, शाम को तीसरे पहर तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—घुटने और हाथ पैर की छोटी छोटी संधियों में वात, दर्द का एक जोड से दूसरे जोड में घूमते रहना, तीसरे पहर, शाम को और रात में दर्द का बढ़ना, खुली हवा में आराम, गर्मी में रोग का बढ़ना, ठढी में घटना, स्त्रियोंको ऋतु की गडबडीके कारण वातरोग होना।

सेलिसिलिक एसिड ६ या ३०—नये वात रोग में तेज बुखार और दर्द होने पर इससे भी बहुत लाभ होता है।

सिमिसिफिउगा ३x या ६x—पेशियों का वात, छाती में वात, वात के कारण शरीर में खोंचा मारने या बिजली की लहर सी दौडने जैसा दर्द, दर्द के कारण बेचैनी।

कोलोफाइलम ३ या ६—उंगलियों के जोड और मणिबन्ध का वात, कन्धे और पीठ में दर्द, तेज बुखार, श्वास कष्ट इत्यादि।

केलमिया ३ या ६—दोनो हाथ, खास कर दाहिने हाथ और कलेजे का वात, एक स्थान से दूसरे स्थान में दर्द का घूमना।

लिडम ३ या ६—जाँघ के जोड़ में वात, नीचे से ऊपर की ओर वात का बढ़ना, शाम से लेकर आधीरात तक और हिलने डोलने या बिछौने की गरमी से रोग का बढ़ना।

कस्टिकम ६ या ३०—पेशियों में दर्द, जोड़ों का अटक जाना, रात में अस्थिरता, दर्द के कारण हिलना डोलना, पर आराम न मालूम होना, बायें हाथ का वात।

बेञ्जोइक एसिड ३ या ६—आक्रान्त स्थान में सूजन और लाली, दर्द के कारण वहाँ हाथ न लगाया जा सके, पेशाब में घोड़े के पेशाब जैसी तेज बदबू इत्यादि।

डालकेमारा ६—पानी में भीगने के कारण वात होने पर इसे देना चाहिये।

आर्जेन्टम मेटालिकम ६—घुटने या केहुनी में खोंचा लगने जैसा दर्द, लेकिन जलन या सूजन का न होना।

कल्चीकम ३ या ६—सुई चुभने, काटने या चिलक मारने जैसा दर्द, रात में दर्द का बढ़ना, पेशाब में सफेद तली, भोजन की गन्ध से जी मिचला उठना, आक्रान्त स्थान में कट-कट आवाज होना, इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ३ या ६—आक्रान्त स्थान में प्रदाह और दर्द, बहुत पसीना आना पर उससे आराम न मालूम होना, ठढी हवा और रात में रोग लक्षणों का बढना, गरमी से आराम मालूम होना इत्यादि। गरमी या उपदंश का दोष हो तो मर्क्युरियस बिन आयोड देना चाहिये।

रोडोडेन्ड्रन ३ या ६—बैठ रहने से दर्द का बढना, हिलने डोलने से आराम मालूम होना, वर्षा में रोग का बढ़ना पेशी और गर्दन का वात।

अर्निका ३Xया ६—चोट लगने के बाद वात रोग का होना, गर्मी से दर्द बढ़ना, आक्रान्त स्थान में झुनझुनी या जख्म जैसा दर्द।

कल्केरिया कार्ब ३०—जोड़ों में सूजन, ऋतु परिवर्तन के समय रोग का बढ़ना, रोगी के दोनों पैर ठढे और गीले रहना, मोटे और थुलथुले शरीर वालों को यह रोग होना।

फाइटोलेका ६ या ३०—सरदी के समय पेंठन जैसा दर्द, पेशाव लाल, कपड़े में लगने से लाल दाग पड़ना, आक्रान्त स्थान में सूजन और लाली गरमी और वरसात में रोग का बढ़ना।

केलीहाइड्रो १ X विचूर्ण या ३०—तेज वीमारी, वारंवार रोग लक्षणों का वदलना, जोड़ों की कमजोरी, चलने की शक्ति न होना, उपदंश के कारण वातरोग।

सेवाइना ६ या ३०—गरम स्थान में रह न सकना, ठंढी जगह में आराम मालूम होना, स्त्रियों को जरायु की वीमारी के साथ यह रोग होना।

आयोडियम ६ या ३०—पुराना वात रोग, सन्धियों में सूजन न होने पर भी रात के समय भयंकर दर्द।

केल्क सल्फ ६ या ३०—एक स्थान से दूसरे स्थान में रोग का आक्रमण, पहले स्थान में रोग का कोई लक्षण मौजूद न रहना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—रोग का दाहिने अंग से वायें अंग में वढ़ना, सोने के वाद रोग लक्षणों की वृद्धि, आक्रान्त

स्थान में स्पर्श बरदास्त न होना, हृदय में वात रोग, सूजन में नीलापन इत्यादि।

लाइको पोडियम ३०—दाहिने अंग में वात की शिकायत, खट्टी डकार, सुबह जी मिचलाना, पेट फूलना इत्यादि। ब्रायोनिया के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

सेङ्गुइनेरिया ६ या ३०—कन्धे का वात रोग, सूजन के कारण हाथ का अकड़ जाना और ऊपर न उठ सकना।

थूजा ३० या २००—टीका के विष या सूजाक के कारण वात रोग का होना, वात या गठिया, रोग का अच्छी तरह इलाज न होने के कारण रोग का बढ़ जाना, पेशाब में दोष, लिङ्गमुण्ड या मलद्वार में छोटे छोटे जख्म या मसे।

गुयेकम ६ या ३०—गरमी, पारा या सूजाक के दोष से यह रोग होना, अङ्गों का विकृत हो जाना, जोड़ और पेशियों में खींचन और अकड़न, हिलाने से दर्द का बढ़ना इत्यादि। कास्टिकम के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

नक्सवोमिका ३० या २००—शराबियों को यह रोग होना, सुबह रोग लक्षणों का बढ़ना, आलसी स्वभाव, काम करने की इच्छा न होना, मल का वेग मालूम होने पर भी दस्त का साफ न होना।

रूटा ६ या ३०—कलाई, पैर या कमर के वात रोग में इससे विशेष लाभ होता है। रोगी के पसीने में खट्टी बदबू आना इसका खास लक्षण है।

जिङ्कम ६ या ३०—छोटे छोटे जोडो का वात या गठिया, पैरों मे तकलीफ मालूम होने के कारण सदा हिलाते रहना, नींद में आक्षेप इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—जोडो मे सूजन, जलन और दर्द, बहुत कमजोरी और बेचैनी, आधी रात मे रोग का बढना, गरमी के प्रयोग से रोग लक्षणों का घटना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त एमन फस, एन्टिम क्रूड, एपिस, एपोसाइनम, केक्टस, नेफेलियम, लेकनेन्थिस, लिथियम, मेड्रेनम, मेग्नेशिया कार्ब, सिलिका, एक्टिया स्पाइकेटा, मेकोटिन, नेट्रम सल्फ, अरममेट, फोरस्फरस, लेक्टिकएसिड केली बाइक्रोम, क्लिमेटीज, मेडोरिनम, सिफिलिनम आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—आक्रान्त स्थान में बहुत सूजन और दर्द हो तो बालु की पोटली या फ्लानेल से सेंक देना चाहिये और उस स्थान को सदा गरम कपड़े आदि से ढक रखना चाहिये। ठंढी हवा, और पानी में भीगने से बचना चाहिये। रसटक्स या ब्रायोनिया के मदर टिञ्चर में आठ गुना तेल मिला कर मालिश करने से बहुत लाभ होता है। रोग के आरम्भ में बुखार होने पर साबूदाना बार्ली आदि हलकी चीजें खाने को देना चाहिये। बुखार न होने पर साधारण भोजन और पके फल देने में कोई हानि नहीं। खटाई मिर्च, गुड, तेल, मांस आदि चीजों के सेवन से हानि होती है।

कटिवात (Lambago)

कभी कभी बैठते उठते समय या चलने फिरने के बाद बैठते समय कमर की पेशियों में एकाएक दर्द पैदा हो जाता है। इससे रोगी सीधा बैठ या खड़ा नहीं रह सकता। इसमें सूजन नहीं होती। साधारण रोग आठ दस दिन में अच्छा हो जाता है।

चिकित्सा।

रसटक्स ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है। ठंढी हवा लगने या भारी चीज उठाने के कारण यह रोग

होना, छिल जाने या मोच आ जाने जैसा दर्द, रात में रोग लक्षणों का बढना, हिलने डोलने से आराम मालूम होना इत्यादि ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—पीठ में किलकिनी, खोंचा, लगने जैसा दर्द, उसके कारण रोगी का झुक कर चलना, हिलने डोलने से दर्द का बढना, कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि ।

नक्सवोमिका ३०—ऐसा मालूम होना मानो पीठ में चोट लगी है, हिलने डोलने और करवट बदलने से दर्द का बढना, सुबह ६ बजे तक अधिक कष्ट, कब्जियत ।

आर्निका ३ X या ३—भारी चीज उठाने या चोट लगने के कारण यह रोग होना। रसटक्स के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है ।

सिमिसिफिउगा ३ या ३०—पेशियों का वात, साथ ही अनिद्रा, बहुत दर्द और बहुत बेचैनी आदि लक्षणों में इससे लाभ होता है ।

मेक्रोटीन १ X—पेशी वात में सिमिसिफिउगा से लाभ होने पर इसे देनी चाहिये।

मर्क्युरियसवाइवस ६—ठंढी हवा में और रात के समय तकलीफ का बढना, बहुत पसीना आना, पर उससे आराम न मालूम होना।

एन्टिम टार्ट ६ या १२—पीठ, पीठ की हड्डियों और कमर में दर्द, ठढा और लसदार पसीना, कभी-कभो खींचन, हिलने डोलने, पसीना निकलने या कै होने पर दर्द का बढ़ना, लगातार दर्द का होते रहना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—पुराने रोग में बीच-बीच में इसे देना चाहिये।

इनके अलावा वात रोग की दवाओं में से भी दवाएँ चुनी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—तारपीन के तेल या रसटक्स के तेल (मदर टिंचर १ भाग, तेल ८ भाग) की मालिश से लाभ होता है। गरम कमरबन्द काम में लाना लाभ दायक है।

गर्दन का वात

(Stiff-Neck)

गर्दन के पीछे की रीढ में वात होने से गर्दन अकड जाती है। रोगी न तो शिर झुका सकता है, न घुमाकर इधर उधर देख सकता है। पानी में भीगने या सर्दी लगने के कारण प्रायः यह रोग होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—नयी बीमारी, सर्दी लगने के कारण यह रोग होना, बुखार, बेचैनी इत्यादि।

लेकनेन्थिस ३ या ६—यह इस रोग की बहुत बढिया दवा है। गर्दन का दाहिनी ओर झुक जाना, बहुत पसीना निकलना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०— तूफान की तरह रोग का अचानक आक्रमण और उसी तरह अचानक गायब हो जाना, बुखार, गले की गिल्टियों का फूल उठना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३—इससे भी इस रोग में काफी लाभ होता है।

चेलीडोनियम ३X—गर्दन की दाहिनी ओर तकलीफ, आक्रान्त स्थान कड़ा और वेदना पूर्ण।

मेग्नेशिया फस ६X विचूर्ण—नयी और पुरानी दोनों तरह की बीमारी में इससे लाभ होता है।

ब्रायोनिया ३—आक्रान्त स्थान में तेज दर्द, दबा रखने से आराम मालूम होना, हिलने डोलनेसे दर्दका बढ़ना।

रसटक्स ६ या ३०—पानी में भीगने या तर हवा लगने के कारण यह रोग होना, हिलने डोलने से कुछ आराम मालूम होना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—ठंढी हवा और सर्दी से बचना चाहिये। गर्दन पर गुलूबन्द लपेट रखना, सेंकना और मालिश करना लाभदायक है।

गठिया (Gout)

यह भी वात रोग या बाई का ही एक भेद है। शरीर के बड़े जोड़ों के अलावा जब पैर का अंगूठा, उंगलियों के जोड़ आदि छोटे जोड़ों में भी यह रोग होता है, तब यह गठिया

कहलाता है। पेशाव में युरिक एसिड या पथरी का होना कब्जियत, बदहजमी, धातुदोष, गरमी या सूजाक का विष शरीर में होना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। पैर के अगूठे का जोड विशेप रूप से फूल उठता है और वहाँ युरेट आफ सोडियम नामक पदार्थ सचित होता है। दर्द के कारण रोगी जमीन पर पैर नहीं रख सकता और चलना असंभव हो जाता है। पुरानी बीमारी में कभी कभी जोड़ टेढ़े मेढ़े भी हो जाया करते है। माता पिता को यह रोग होने पर बच्चे को भी हो सकता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X—नये रोग में, खास कर जब बुखार और बेचैनी हो, इसे आजमाना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—जोड़ों में सूजन होने पर भी लाली का न होना, हिलने डोलने से दर्द का बढना, मिचली, कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव।

कल्चीकम ३ या ६—आक्रान्त स्थान लाल, सचरणशील वेदना अस्थिरता, पैर में सूजन, चल न सकना, भोजन की गन्ध से जी मिचलाना।

अर्निका ६ या ३०—जोडो में प्रदाह और लाली, दर्द, रात में दर्द का बढना, बिछौना कडा मालूम होना, किसी तरह की चोट के कारण यह रोग होना।

नेट्रमम्यूर ३०—जोड़ों में दर्द, सदा जाडा सा मालूम होना।

रूटा ६ या ३०—समूचे शरीर और पैर की हड्डियो में घिसने जैसा दर्द, उसके कारण जोर से चल न सकना, वर्षा और जाड़े में रोग का बढ़ना।

लिथियम ६ या ३०—टेहुना और पैर की उगलियों में सूजन और दर्द, चलते समय घुटने मे दर्द, पेशाब में युरिक एसिड की तली जमना, कलेजे में दर्द।

लिडम ३ या ६—हाथ पैर की सन्धियों में सूजन, आक्रान्त स्थान छूने से ठंढे मालूम होना, तन्नाहट और कट जाने जैसा दर्द, अगूठे में दर्द, रात में दर्द का बढ़ना, शराबियों की बीमारी इत्यादि।

लाइको पोडियम ३०—उंगलियों की सन्धियों में दर्द पेटमें गोलमाल, यकृत में दर्द, पेशाव में लाल तली जमना इत्यादि।

एब्रोटेनम ६—उंगली की सन्धिमें युरिक एसिड का जमा होना, बुखार, रातमें तूफान और वर्षामें तथा जाडेमें दर्दका बढ़ना, हृदय पर रोग का हमला, पुराना रोग इत्यादि।

बेञ्जोइक एसिड ३ या ६—हाथकी उंगलियों में वातका होना, सञ्चरण शील वेदना, अंगूठे का वात।

एक्टिया स्पिकेटा ६—साधारण हिलने डोलने या परिश्रम करने से जोड़ोका फ़ूल उठना और स्थिर रहने से उनका अकड़ जाना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—वातका एक स्थान से दूसरे स्थानमें घूमते फिरना, स्त्रियोंको रजोदोषके साथ यह रोग होना, तीसरे पहर, शामको और रातमें तथा गरम स्थान में रोग लक्षणों का बढ़ना, ठंडे स्थान में आराम मालूम होना।

सल्फर ३० या २००—नशेखोर और ववासीर के रोगियों का गठिया, सब अंगोंका अकड़ जाना, कब्जियत या अतिसार। अन्यान्य दवाओं के साथ भी बीच-बीचमें यह दिया जा सकता है।

वात रोगकी अन्यान्य दवाओं से भी दवा चुनी जा सकती है। नये रोगमें सेनाइना से भी काफी फायदा होता है। पुरानी बीमारी में एमन फस, केल्कफस, कस्टिकम, लाइको-पोडियम, पल्सेटिला, नक्सवोमिका, एन्टिम क्रूड और सल्फ-रसे अधिक लाभ होता है। वात रोगकी भाँति इसमें भ पथ्य और परहेजी के नियम पालन करने चाहिये। सदा शारीरिक परिश्रम और विशुद्ध जल वायुके सेवन से बहुत लाभ होता है॥

गृध्रसी वात।

(Sciatica)

जाँघके एक स्नायुका प्रदाह होने पर यह रोग होता है। इसमें जांघके पीछे से लेकर टेहुने और कभी कभी पैरके पजे तक भयकर दर्द होता है। दर्द लगातार न होकर, रह रहकर लहर सी उठती है। इसके साथ पेटका गोलमाल भी प्राय

मौजूद रहता है। इसमें सूजन या लाली नहीं होती। तर हवा लगना और भारी चीज उठाना आदि कारणों से यह रोग होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X—तर हवा लगने के कारण यह रोग होना, रातमें अधिक तकलीफ, बेचैनी, उत्कंठा, मृत्युभय, नयी बीमारी।

कोलोसिन्थ ३ या ६—खासकर बायीं ओर दर्द, एका यक दर्दका उत्पन्न होना और एकायक गायब हो जाना, तेज दर्द, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना, अस्थिरता और उत्कंठा। यह इस रोगकी एक बढ़िया दवा है।

लेकेसिस ६ या ३०—स्त्रियोंको रक्तस्राव बन्द होनेके कारण यह रोग होना, नींदके बाद तकलीफ का बढ़ना।

नेफेलियम ६ या ३०—तेज दर्द, ऐंठन और विकार के लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०–किसी निश्चित समय पर ही दर्द होना, दर्दके साथ जोरोकी जलन गर्म प्रयोग से तकलीफ घटना ।

नेट्रम सल्फ १२X चूर्ण–आगे की ओर झुककर बैठने या बैठने के बाद उठने पर जोरका दर्द मालूम हो तब इसे देना चाहिये ।

रसटक्स ६ या ३०–तरी या सरदीके कारण रोग होना चलने फिरने से आराम मालूम होना ।

एमन म्यूर ३ या ६–बैठने पर दर्दका बढ़ना और चलने फिरने या लेटने पर दर्दमें कमी मालूम होना ।

इनके अतिरिक्त जेन्थक साइलम, सिमिसिफिउगा, सिनिसिओ, मेग्नेशिया फस, कार्बोनियम सल्फ, सल्फर, बेलेडोना, ब्रायोनिया, मर्क्युरियस, कल्केरिया तथा वात रोगकी अन्यान्य दवाएँ भी लक्षणानुसार फायदा कर सकती हैं ।



अंगोंमें अकड़न ।

(Cramp in the Limbs)

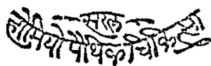
इस रोगमें हैजाकी तरह शरीर के विभिन्न अगोमें, खास कर एडी और हाथ पैरके तलवों में खींचन या अकडन पैदा होती है और उसके कारण बड़ी तकलीफ मालूम देती है। स्त्रियोंको गर्भावस्थामें भी यह रोग हुआ करता है।

चिकित्सा ।

सीपिया ६ या ३०—रात में बिछौने पर पैरमें अकड़न, गर्भावस्था में स्त्रियोंको यह रोग होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पैर सिकोड़ने के समय उनमें ऐंठन, कब्जियत, शराबियों को यह रोग होना।

सिकेली या क्युप्रम ३—यह भी इस रोगकी अच्छी दवाएं हैं। हाथ पैरकी उँगली भीतर की ओर झुक जानेपर क्युप्रम और बाहर की ओर झुक जाने पर सिकेली देना चाहिये।



कार्बोविज ६ या ३०—शामके वक्त लेटने पर पैरमें अकड़न पैरके तलवे में बहुत पसीना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातुवाले मनुष्यों को रातमें यह बीमारी होना।

अन्यान्य वात रोग।

इस परिच्छेद में प्रधान-प्रधान वात रोगो की विस्तृत चिकित्सा लिखी जा चुकी है। इनके अतिरिक्त इस रोग के सम्बन्ध मे कुछ और बातें भी जान रखना आवश्यक है, जो नीचे अकित को जाती है—

(१) कटि पेशी वात की तरह छाती और पेट के दोनों ओर दोनों पजर या पार्श्वों मे भी पेशी वात होता है। दर्द प्राय बिजली की चमक जैसा या चाट लगने जैसा होता है। कन्धे में भी ऐसा ही वात होता है। वात रोग और पेशी वात की दवाएँ इनमे भी फायदा करती है। पार्श्व वात में रेनन क्युलस बल्ब ३ या ३० से विशेष लाभ होता है।

(२) सुजाक या धातुगत रोग के कारण जो वात होता है वह प्रमेह जनित वात या गोनोरियल रिडमेटिज्म

Gonorrhaeal Rheumatism कहलाताहै। इसमें साधरण वात गृध्रसी वात और गठिया आदि सभी तरह के वात जैसी शिकायतें पैदा होती है। लक्षणानुसार पल्सेटिला मर्क्युरियस, फाइटोलेका, केली आयोड, सल्फर, सार्सापरीला, आदि दवाएं दी जाती हैं और इनसे थोड़ा बहुत लाभ भी होता है, परन्तु जब तक धातु दोष दूर नहीं होता तब तक कोई भी दवा जैसा चाहिये वैसा फायदा नहीं करतीं। धातु दोष दूर करने के लिये थूजा २०० या १००० दीर्घकाल तक सेवन कराना चाहिये।

(३) बहुत दिनों तक शरीर के किसी जोड़ में प्रदाह रहने पर वहाँ की हड्डी और बन्धन आदिमें भी खराबी पैदा हो जाती है। इससे जोड़ टेढ़ा मेढा अथवा मोटा या पतलाहो जाता है। इसमें बीमारी नयी होने पर पल्सेटिलम, एकोनाइट और ब्रायोनिया। पुरानी होने पर गुयेकय, कल्चीकय, सल्फर, रसटक्स, मर्क्युरियस, रोडोडेन्ड्रन, और सिलिका, स्त्रियों को यह रोग होनेपर पल्सेटिला, सेवाइना, सिमिसिफिउगा और कोलोफाइलम से विशेष लाभ होता है। सुबह शाम सेंकना और काडलिवर आइल की मालिश करना भी फायदेमन्द है।

४—स्नायुमण्डलके रोग।

मस्तिष्क या दिमाग और समस्त शरीर के स्नायु जालका एकत्र नाम स्नायुमण्डल या नर्वस सिस्टम (Nervous

System) है। इसकी शक्ति दो भागों में विभक्त है-(१) ज्ञान शक्ति (२) सञ्चालन शक्ति। ज्ञान शक्ति से हमें स्पर्श, चोट, ठढ, गरम आदि बातों का ज्ञान या बोध होता है। सञ्चालन शक्तिसे शरीर के विविध अंग और यन्त्रों का सञ्चालन होता है। इन शक्तियों में खराबी उत्पन्न होने से शरीर में अनेक प्रकारके रोग पैदा होते हैं जो स्नायुमण्डल के रोग कहलाते हैं। इस परिच्छेद में हम इन्हीं रोगों का विवरण अंकित करते हैं। मस्तिस्क स्नायुमण्डलके अन्तर्गत होने पर भी पाठकों की सुविधा के लिये उसके रोग हम एक स्वतन्त्र अध्याय में अंकित करेंगे।

उन्माद या पागलपन।

(Insanity)

शराब गॉजा और भॉग आदि नशे की चीजों का सेवन अधिक मानसिक उत्तेजना, मानसिक परिश्रम, शोक, दुःख, निराशा, मस्तिस्क, यकृत या जरायुका दोष, माता पिता को यह रोग होना आदि अनेक कारणों से मनुष्य पागल हो जाया करता है। इसमें बुद्धि नष्ट हो जाती है और उत्तेजना, गन्दे रहना, गन्दे पदार्थ खाना, नंगे रहना, उछल कूद करना, गाना, रोना, कपड़े फाड़ना, बकझक करना, नींद न आना आदि अनेक लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X—उत्कंठा, बहुत बेचैनी, मृत्युभय यहाँ तक कि पहले ही से मृत्युका दिन बतला देना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—अनिद्रा, बहुत बक झक करना शिरमें रक्ताधिक्य के कारण यह रोग होना, आँखें लाल इत्यादि।

स्ट्रैमोनियम ३० या२००—क्रोध और अत्याचार करने की प्रवृत्ति, बहुत बक झक करना, डरावनी चीजें दिखायी देना, गाना, नाचना, मारने और काटने दौड़ना, चिल्लाना, आक्षेप और पक्षाघात के लक्षण इत्यादि।

नक्सवोमिका ३० या २००—नशेखोरों को यह रोग होना, कब्जियत, आलसी स्वभाव जरामें ही उत्तेजित हो उठना, सुबह रोग लक्षणों का बढ़ना।

हायोसायमस ६ या ३०—रोगी को ऐसा मालूम होना मानो उसे विष देदिया जायगा या कोई ठग लेगा अथवा उसे भूत लगा है। आँखें फाड़ फाड़ कर इधर उधर देखते

ना, कपडे फाड़ना, नंगे हो जाना, बक झक और उपद्रव ना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०–नम्र स्वभाव के रोगियों को और यों को इससे विशेष लाभ होता है।

अरम मेट ६ या ३०—आत्महत्या करने की प्रबल छा, धर्मान्धता,सगम की प्रबल इच्छा, शिर में रक्ताधिक्य, का बहुत दुःखी रहना, सब चीजों का आधा हिस्सा ही ार आना।

कोफिया ३० या २००— अनिद्रा, मनमें तरह तरहके वार उठना और जरा भी नींद का न आना, कब्जियत, ाशा डरते रहना, वृद्धों की बीमारी।

इग्नेशिया६ या ३०–प्रेममें निराशा, सदा दुःखी रहना, न्वी साँसे लेना, चुप चाप रोना और काल्पनिक या मान- क पाप के लिये पछताते रहना।

प्लेटिना ६ या ३०–कामोन्माद और अहंकार, मृत्यु ार भूत का भय दृष्टिविभ्रम।

सीपिया ६ या ३०—आत्म हत्या करने की इच्छा, भ
क्रोध, काम में जी न लगना, किसी पर माया ममता न रहना
स्त्रियों को जरायु दोष के साथ यह रोग होना।

आवश्यक सूचना—रोगी को हमेशा ठंढे जल से स्नान करना चाहिये। उसपर क्रोध करना या उसे मारना ठीक नहीं। उसे प्रेम पूर्वक रखना और सान्त्वना देना चाहिये। ठण्ढी या तर और हलकी चीजें खाने को देना चाहिये।

लकवा या पक्षाघात।

(Paralysis)

शरीर के किसी आधे या समूचे अग की सञ्चालन और स्पर्शशक्ति का नष्ट हो जाना लकवा कहलाता है। यह लकवा कई तरह का होता है। किसी लकवे में केवल सचालन शक्ति नष्ट होती है, किसी में केवल स्पर्शशक्ति नष्ट होती है, किसी में दोनों शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और किसी में कम्प पैदा हो जाती है। यह कभी कभी समूचे शरीर, में कभी आधे शरीर में, कभी शरीर के किसी खास अग में और कभी चेहरे में ही होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X—मेरुदण्डमें रक्ताधिक्य, आक्रान्त स्थानमें झुनझुनी, नयी बीमारी।

बेलेडोना ६ या ३०—शिरमें रक्ताधिक्य, चेहरे का लकवा, एक तरफ लकवा, दूसरी तरफ आक्षेप, मुँह टेढ़ा हो जाना इत्यादि।

अल्केपारा ६ या ३०—ठंढ लगने या पानीमें भीगने के कारण लकवा, हाथ पैर और जीभका लकवा, यह अग बरफ की तरह ठंढे मालूम होना इत्यादि।

कक्युलस ३ या ६—जीभ, चेहरा और पैरका लकवा, हाथ पैर ठंढे, पैरके पंजेमें सूजन, नयी बीमारी इत्यादि। कमजोरी, मूर्च्छा और हृदय की धड़कन वाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—बहुत रसरक्त के स्रावके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

टेरेन्टयूला ६ या ३० —कपकपी लिये हुए लकवाकी यह बढिया दवा है।

जिङ्कम ३०—लिखते समय हाथ कॉपता हो तो इसे देना चाहिये। जेल्सीमियम से भी इसमें लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त सीपिया, मर्क्युरियस, स्पाइजिलिया, स्ट्रैमोनियम, आयोडियम, एलुमिना, आर्जेन्टम नाइट, आर्सेनिक, अरममेट, सल्फर, लेथाइरस, मर्क्युरियस, एन्टिम-टार्ट, एगरिकस, केनेविस इन्डिका और रूटा आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना--आक्रान्त स्थान में मालिश करते रहना लाभ दायक है। सरदी से बचना चाहिये। विजली के इलाज से भी अच्छा लाभ होता है, वशर्ते कि किसी चतुर चिकित्सक द्वारा कराया जाय। रोगी को हलके और पुष्टिकारक पदार्थ खाने को देना चाहिये।

मृगी या अपस्मार।

(Epilepsy)

मृगी रोग का वास्तविक कारण अभी मालूम नहीं हो सका, लेकिन दु ख, शोक, भय, क्रोध आदि मानसिक आवेग,

अधिक इन्द्रिय सेवा, हस्त मैथुन आदि दुराचार, मादक पदार्थों का सेवन और माता पिता को यह रोग होना आदि इसके उत्तेजक कारण माने जाते है।

इसमें रोग का हमला होने के पहले कभी-कभी शिर में चक्कर, अस्थिरता, शिर में भार, चेहरा फीका, तबियत ठीक न मालुम होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इसके बाद और कभी-कभी अचानक ही रोगी चिल्लाकर जमीन पर गिर पड़ता है, बेहोश हो जाता है और उसके शरीर में खींचन होने लगती है। दाँती बँध जाना, श्वास कष्ट, चेहरा बिगड जाना, आँख की पुतलियों का ऊपर चढ़ जाना और घूमते रहना, आँखें खुली रहना, मुँह से फेन निकलना आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। पाँच से लेकर बीस मिनट तक या कभी कुछ अधिक समय तक यह अवस्था रहतीहै। बाद को रोगी स्वस्थ होता है। कभी-कभी खींचन आदि बन्द हो जाने पर भी रोगी होश में नहीं आता, और कुछ समय तक चुपचाप नींद में पड़े रहने के बाद वह स्वस्थ होता है। यह रोग साघातिक नहीं होता, लेकिन आग या पानीके पास रोग का अचानक हमला होने पर वह आग में जल मरता है या पानी में डूब जाता है। पेड पर चढ़ने वालों को पेड पर भी मृगी आती है और वे नीचे गिर कर मर जाते हैं या उनके हाथ पैर टूट जाते है।

चिकित्सा।

क्युप्रममेट ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। एकाएक चिल्लाकर गिर पड़ना, निश्चित समय पर आक्षेप या खींचन, श्वास कष्ट, हाथ पैर से खींचन का शुरू होना, अनजान में पेशाब, भय, मानसिक उत्तेजना और पूर्णिमा को रोग का बढ़ना।

बेलेडोना ६ या ३०—चेहरा और आँखें लाल, शिर गरम, कम्प के साथ पीछे की ओर झुक पड़ना, शिर में रक्त संचार, आँख की पुतली फैली हुई।

कल्केरिया कार्ब ३०—रोग का हमला होने के पहले चिबाने की तरह मुँह चलाना, कलेजे में धड़कन, शिर में पसीना, भय के कारण, पुराना चर्म रोग दब जाने के कारण या ठंढा पेटा पीने के कारण रोगका होना। बच्चों की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है।

आर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

इनेन्थी क्रोकेटा ३ या ६—जवान आदमियों की नयी बीमारी में खींचन, मुँह से फेन निकलना, शरीर का अकड़ जाना, दाँतों का बन्द हो जाना, हाथ पैर ठढे आदि लक्षणों में इससे काफी लाभ होता है।

प्लम्बम ३०—क्युप्रम से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। पुरानी बीमारी में अधिक समय तक सेवन करना चाहिये।

ओपियम ३ या ६—कभी बेहोशी, कभी होश में रहना, नींद के समय रोग का हमला होना, श्वास प्रश्वास में घड़घड़ाहट इत्यादि।

कस्टिकम ६ या ३०—श्वास कष्ट, आक्रमण के समय नाक से खून गिरना, शिर का एक ओर झुक जाना, जीभ काटना, अनजान में पेशाब इत्यादि।

बिउफो ६—हस्त मैथुन के कारण मृगी रोग होने पर तथा पुराने रोग में इससे बहुत लाभ होता है।

इग्नेशिया ६ या ३०—शोक दुःख आदि मानसिक कारणों से रोग, नयी बीमारी, बीमारी के समय होश रहना, ज्वर भाव और आक्षेप।

साइक्यूटा ६—बच्चों की बीमारी, जोरों की खींचन, चेहरा नीला और फूला हुआ, एक ही ओर ताकते रहना इत्यादि।

आर्टिमेसिया १X—बारंबार जल्दी-जल्दी रोग का आक्रमण होने पर इसे देना चाहिये।

एसिड हाइड्रो ३X—नयी बीमारी, एक ही ओर तेज दृष्टि से देखते रहना, चिल्लाकर गिरना, बेहोश हो जाना और मुँह से फेन निकलना।

केनेबिस इन्डिका ३—इस रोग के साथ पाकाशय, मूत्र यन्त्र और जननेन्द्रिय के रोगो की शिकायत हो तो इसे आजमाना चाहिये।

एमिल नाइट्रेट—इस दवा को रोग के समय सुँघाना चाहिये।

केली फाइलम ३ या ६—ऋतुस्राव के समय स्त्रियों को यह रोग होना।

चायना ६ या ३०—हस्तमैथुन, रस रक्त का स्राव, स्नायविक दुर्बलता, कमजोरी आदि कारणों से रोग होने पर इसे देना चाहिये। डिजिटेलिस और फोस्फरस भी इसी अवस्था में लाभ करते हैं।

इनके अलावा नयी बीमारी में केलीब्रोम, एब सिन्थियम, स्ट्रेमोनियम, आर्जेन्टम नाइट्रिकम, हायो सायमस और जिजिया तथा पुरानी बीमारी में जिङ्कम, फोस्फरस, सल्फर और सिलिका आदि दवाएँ भी लाभ करती हैं। केलीम्यूर १२X, केलीफस १२X, चूर्ण और केलीसल्फ १२X, चूर्ण भी आजमाना चाहिये।

आवश्यक सूचना—यह रोग होने पर हिस्टीरिया का भ्रम हो सकता है। हिस्टीरिया में मृगी की तरह रोगी पूर्ण रूप से बेहोश नहीं होता, न बेहोश होने के पहले चिल्लाता ही है। पूरी बेहोशी, बेहोशी के पहले चिल्लाना और बेहोशी में खींचन का मौजूद रहना—इन लक्षणों से मृगी का पार्थक्य किया जा सकता है। रोग के समय रोगी के दांतों में लकड़ी का एक टुकड़ा या कोई दूसरी चीज रख देनी चाहिये, वर्ना

जीभ कट जाने का भय रहता है। रोग के समय उसे चोट आदि से बचाना चाहिये। उसे अकेले कहीं न जाने देना चाहिये। ठंढे जल में स्नान, व्यायाम, खुली हवा में घूमना और स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना लाभदाक है।

हिस्टीरिया या गुल्मवायु।

(Hysteria)

यह रोग प्राय स्त्रियों को ही होता है। कोई आकस्मिक दुर्घटना, द्वेष, आलसी स्वभाव, विलास प्रियता, जरायु दोष, प्रेम में बाधा, शोक, दुःख आदि कारणों से स्नायविक उत्तेजना होने के कारण यह रोग होता है। कभी-कभी दूसरी स्त्रियों को रोग के समय देखने से भी स्वस्थ्य स्त्रियों को यह रोग हो जाता है। पुरुषों को यह रोग शायद ही होता है।

इस रोग में स्त्रियाँ बेसिलसिले की बातें करती हैं और हँसकर या चिल्लाकर बेहोश हो जाती हैं। बेहोशी में दाँती लग जाना, हाथ पैर पटकना, मुँह से फेन निकलना। हाथ पैर का अकड जाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। रोगिनी को पेट में एक गोला ऊपर की ओर उठता मालूम होता है। इसी लिये इसे गुल्मवायु या वायुगोले की बीमारी भी कहते हैं। इसमें पूर्ण रूप से बेहोशी नहीं आती। आँखें अधखुली, पुतली फैली हुई, अनियमित और दीर्घ श्वास प्रश्वास आदि लक्षण

भी प्रकट होते हैं। हमारे देश में अज्ञानी मनुष्य इसे भूत व्याधि मानकर झाड फूँक और गण्डा तावीज से इसे आराम करने की चेष्टा करते हैं, परन्तु इससे लाभ के वदले उलटी हानि ही होती है।

चिकित्सा।

प्लेटिना ६ या ३०—उदासी, वेचैनी, अधिक ऋतुस्राव या रजस्राव वन्द हो जाने के कारण यह रोग होना इत्यादि। जो स्त्रियाँ दूसरो के सामने हमेशा अपना दुखड़ा रोया करती हैं, उन्हें इससे विशेष लाभ होता है।

इग्नेशिया ६ या ३०—भय, शोक, दुःख आदि मानसिक आवेगोंके कारण यह रोग होना, श्वास कष्ट, पेट से गले तक गोला उठता मालूम होना, आक्षेप या खींचन, आँखें जलपूर्ण, कभी खुशी और कभी उदासी आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये। जो स्त्रियाँ दूसरों के निकट अपना दिल नहीं खोलतीं और भीतर ही भीतर दुःख से घुला करती हैं, उन्हें इससे विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—रज वन्द होने या ऋतु के समय दर्द के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। इसी

अवस्था में सेपाइना, सिलिका और कक्युलस से भी काफी लाभ होता है।

एसाफिटिडा ६ या ३०—पेट से लेकर गले तक गोले का उठना साफ-साफ मालूम होना, पेट में गड़गड़ाहट और शूल जैसा दर्द, अधोवायु निकलने से आराम, रोगिणी का खुशी के साथ हँसना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—बहुत बकझक, मस्तिष्क विकार सोने की इच्छा होने पर भी सो न सकना, नींद में गों गों करना, पुरानी बातें याद करना और पानी में डूब मरने की इच्छा करना।

सिमिसिफ्यूगा ३ या ६—बायें स्तन के नीचे दर्द, चिड़चिड़ा स्वभाव, जी में दुःखित रहना, जरायु दोष से यह रोग होना।

हायोसायमस ६ या ३०—बेवकूफ और पागलों के जैसे लक्षण, हँसना, गाना, रोना चिल्लाना, नंगे हो जाना, इत्यादि।

वेलेरियाना ६—रोग के समय ऊटपटांग बातें करना, प्रलाप या बकझक इत्यादि।

अरमेट ६ या ३०—फिट या बेहोशी के समय पारी-पारी से हँसना और रोना, आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा, भय, अधिक रजस्राव, आक्षेप इत्यादि।

नक्समस्केटा ६ या ३०—भली बुरी सभी बातों में हँसना, अपने आप बड़बड़ाते रहना, मुँह सूखा होने पर भी प्यास का न होना, भोजन के बाद पेटका फूलना, निद्रालुता।

केम्फर—मूर्च्छा के समय इसे सुँघाने से रोगिणी होश में आ जाती है।

मरकस—इसका मदर टिंचर सुँघाने और १ या ३ क्रम सेवन कराने से लाभ होता है।

इनके अलावा कस्टिकम, नक्सव्होमिका, केमोमिला, केनेबिस इन्डिका, कोफिया, टेरेन्टयुला, जिङ्कमफस, सीपिया, कोनायम, कोलोफाइलम आर्सेनिक और लेकेसिस आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार देने से लाभ होता है।

संन्यास रोग।

(Apoplexy)

अपरिमित आहार, मादक पदार्थों का अधिक सेवन,भ
दुःख, शोक आदि मानसिक आवेग, चिन्ता अधिक मानसि
परिश्रम, अधिक इन्द्रिय सेवा, ववासीर के रक्त या रजस
का एकायक बन्द हो जाना, धूप या चोट लगना आ
कारणों से मस्तिष्क में रक्ताधिक्य, जलसचय या धमनी
घात होने पर इस रोग का आक्रमण होता है।

रोग का आक्रमण होने के पहले कभी-कभी शिर में चक
निद्रालुता, शिरदर्द, बोलने में तकलीफ आदि लक्षण प्रक
होते हैं, परन्तु साधारण तथा बिना किसी पूर्व लक्षण के
रोगी एकायक बेहोश होकर गिर पड़ता है। इस अवस्था
रोगी का चेहरा लाल, श्वास प्रश्वास में घड़घड़ाहट, अगों
अकड़ जाना, शिर का टेढ़ा हो जाना, चेहरे की नसें फू
हुई आदि लक्षण प्रकट होते हैं। प्रायः दो दिन के अन्दर
हिमाङ्गावस्था उपस्थित होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है
यदि बीमारी साधारण हुई तो रोगी को कुछ कुछ होश ब
रहता है और वह दो तीन दिन के बाद होश में आ जाता है
परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। यदि रोगी आराम भी हु
तो उसके आधे शरीर में लकवा हो जाता है, बोलने की शक्ति
नष्ट हो जाती है और मस्तिष्क भी खराब हो जाता है। य
रोग प्रायः बड़ी उम्र के पुरुषों को ही होता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३X या ६—शिर गरम, आँखें और चेहरा लाल, आँखें स्थिर, जीभ का लकवा और कम्पन, साफ साफ न बोल सकना, निगलने में कष्ट, बहुत बेचैनी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्निका ६ या ३०—शिर में रक्त-संचय या चोट लगने के कारण यह रोग होना।

बेलेडोना ६ या ३०—बेहोशी, बोल न सकना, चेहरा और हाथ पैरों में खींचन या लकवा, चेहरे पर रक्ताधिक्य के लक्षण, अनजान में पेशाब इत्यादि लक्षणों में इससे काफी लाभ होता है।

ओपियम ६ या ३०—घोर निद्रालुता या बेहोशी, आँखें अधखुली, श्वास कष्ट, हाथ पैर में खींचन, रोगी का गों गों करना, दीर्घ श्वास, या श्वास में घड़घड़ाहट, चेहरा भर्राया हुआ और लाल, हाथ पैर ठढे इत्यादि लक्षणों में घण्टे-घण्टे पर यह दवा देने से लाभ होता है।

बेराइटाकार्ब ६—बूढ़े और शराबियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। जीभ और दाहिने अंग के लकवा में इससे अधिक लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०—शिर में रक्त संचय होने या शिर से रक्त निकलने के कारण अथवा रात्रि जागरण तथा उत्तेजक पदार्थों के सेवन के कारण यह रोग होना।

हायोसायमस ३ या ६—एकाएक बेहोशी, मुँह से फेन निकलना, निगल न सकना, अनजान में पाखाना और पेशाब हो जाना।

हाइड्रोसियेनिकएसिड ६ या ३०—आँखें स्थिर, पुतलियाँ ऊपर टँगी हुई, नाड़ी लुप्तप्राय, श्वास प्रश्वास में घड़-घड़ाहट और खींचन।

लोरोसिरेसस ३ या ६—हाइड्रोसियेनिक एसिड से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

ग्लोनइन ३—शिर में चक्कर, शिर में आगे और पीछे दर्द, मिचली, प्रकाश में रोग का बढ़ना।

इनके अलावा विरिड्रम विरिडि, सिङ्कइनेरिया, एस्कुलस, कोनायम, जेलसीमियम और एनाकार्डियम आदि दवाएँ भी दी जा सकती हैं। सन्यास के बाद लकवा हो जाने पर कस्टिकम, क्युप्रम, कक्युलस, सल्फर, प्लम्बम, जिङ्कम, फोस्फरस और एञ्लेलिन या लकवा रोग की अन्यान्य दवाएँ आजमानी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी बेहोश हो जाने पर उसे हवादार स्थान में सुलाना चाहिये, शरीर के कपड़े निकाल देने चाहिये और शिर पर बरफ या जलपट्टी चढ़ानी चाहिये। पथ्य हलका और पुष्टिकर होना चाहिये। गरिष्ट और शराब मसाले आदि उत्तेजक चीजें न खानी चाहिये। सेंक और मालिश से हाथ पैरों की अकड़न में लाभ होता है। रोगी दवा न खा सके तो जीभ पर रख देना चाहिये या रूई में डाल कर सुंघाना चाहिये।

धनुष्टङ्कार।

(Tetanus)

यह एक आक्षेपिक स्नायु रोग है। प्रायः चोट लगने और कट जाने के कारण ही यह रोग होता है। कोई कोई एक तरह के विषाक्त जीवाणु को भी इसका कारण मानते हैं। तुरन्तके

जन्मे हुए बच्चों को भी नाला काटनेके दोपसे यह रोग होता है। इसमें मुँह न फैला सकना, गर्दन का अकड़ जाना, दाँत बँधजाना जबड़े या चौह का रुक जाना, ऐसा मालूम होना मानो रोगी हँस रहा है, बाद को चेहरे की और शरीर की पेशियों में अकड़न, शरीर का आगे या पीछे की ओर झुककर धनुप की तरह टेढा हो जाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं और अनजान में पाखाना पेशाब,श्वासकष्ट, जोरों की खींचन आदि लक्षण प्रकट होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। बच्चों को यह रोग बहुत ही सांघातिक होता है। लोग इसे भूत व्याधि मानकर कुचिकित्सा करते हैं और अपनी अज्ञानता के कारण उसे वास्तविक चिकित्सा से वंचित रखते हैं।

चिकित्सा।

हाइपेरिकम १x—रोग के आरम्भ में ही इसे देनेसे अनेक बार आश्चर्यजनक लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६—बुखार और उत्कण्ठा, चेहरा कभी लाल, कभी फीका, ठंढा पसीना, शरीरका पीछे की ओर झुक जाना।

आर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण यह रोग होना, शिर गरम और शरीर ठंढा, खींचन और श्वास कष्ट इत्यादि।

साइक्यूटा ६–शरीर कड़ा, स्थिर दृष्टि, बेहोशी, अगों का टेढा हो जाना, श्वासकष्ट, चेहरा लाल, मुँह से फेन निकलना, शरीर का पीछे की ओर झुक जाना।

नक्सवोमिका ३X या ६–तेज खींचन, शरीर का पीछे की ओर झुक जाना, श्वास बन्द सा हो जाना, शरीर कभी नरम, कभी कड़ा इत्यादि।

हायोसायमस ६ या ३०–चेहरा नीला और भर्राया हुआ, आँखों का बाहर निकल पड़ना, शिर का एक ओर झुक जाना, अनजान में पाखाना पेशाब, पारी–पारी से शरीर के उपले और निचले अगों में आक्षेप।

मस्कस ३X–बच्चों को धनुष्टकार और श्वासकष्ट के लक्षण में इसे देना चाहिये।

स्ट्रिकनिया ३X–नक्सवोमिका से लाभ न होने पर इसे आजमाना चहिये।

बेलेडोना३या ६-चेहरा और आँखें लाल, अस्थिरता, चौंह का रुक जाना, मुँह से फेन निकलना, दाँती लग जाना, शरीरका झुक जाना इत्यादि ।

क्युप्रम ६या३०-बेहोशी, चौंह का रुक जाना, मुँह में फेना, नींद से चौंक पड़ना, शरीर का सामने की ओर टेढ़ा हो जाना इत्यादि ।

इनके अतिरिक्त ओपियम, लेकेसिस,जेल्सीमियम,फाइटोलेक्का,प्लेटिना,रसटक्स,सिकेली स्ट्रेमोनियम,एसिड हाइड्रो, केनेबिस इन्डिका, फाइसस्टिग्मा, इनेन्थी, हाइड्रोसियानिक एसिड, विरेट्रम विर,इग्नेशिया,इत्यादि दवाएं भी लक्षणानुसार दी जाती हैं ।

आवश्यक सूचना-चुनी हुई दवा घण्टे में तीन चार वार देनी चाहिये । आराम मालूम होने पर समय बढ़ा देना चाहिये । घोड़े की लीद में इसके जीवाणु पाये जाते हैं,इसलिये जूता पहन कर घर में न जाना अच्छा है । मेरुदण्ड या रीढ़ पर बरफ रखने से भी लाभ होता है । रोगी को चोट से बचाने के लिये जमीन पर सुलाना चाहिये । रोग की हालत में साबूदाना, बार्ली, दूध आदि पतली चीजें खाने को देना चाहिये ।

जलातङ्क।

(Hydrophobia)

पागल कुत्ता, सियाल या बिल्ली के काटने से यह रोग होता है। इन जानवरों की लार में विष रहता है। काटने के लिये जब वह दाँत गडाता है और जख्म में लार भी लग जाती है तब १८ दिन से लेकर १८ महीने तक में यह रोग प्रकट होता है।

रोगके पहले अच्छी तरह नींद नहीं आती, शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता मालुम होती है और भयकर सपने दिखायी देते हैं। रोगी पतली चीजें या पानी गले से नीचे नहीं उतार सकता। इसके बाद वर्षा ऋतु आने पर या इसके पहले ही रोगी पागल सा हो जाता है। इस अवस्था में काटने दौड़ना, भोंकना, बकझक करना, आक्षेप या खींचन, मुँहसे लार गिरना, पानी को देखकर डरना और मुँह बिचकाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। आक्षेप बढ़ने पर धनुष्टंकार, बुखार और सन्निपात आदि कठिन उपसर्ग उपस्थित होते है और रोगी की मृत्यु हो जाती है। रोगी के काटने से स्वस्थ मनुष्य को भी यही रोग हो जाता है।

हाइड्रोफोबिन या लिसिन ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। पानी पीने की इच्छा न करना, मुहमें लार, शिर

में दर्द, हाथ पैर में खींचन आदि लक्षणो में इसे देना चाहिये। ऊँचे क्रमकी दवा मास में एक बार खाने से रोग होने का भय नहीं रहता।

बेलेडोना ६ या ३०—डाक्टर ह्यूज इसे इस रोगकी सर्वश्रेष्ठ दवा मानते हैं। चेहरा और ऑखें लाल, जोरोंका शिरदर्द, पानी घुटकने में तकलीफ, प्रलाप, काटने या थूकने दौडना इत्यादि लक्षणों में इसका प्रयोग करना चाहिये। आरम्भ में कुछ दिनों तक हाइड्रोफोबिन बाद को एक वर्ष तक दिन में दो बार खाते रहने से निःसन्देह इस रोग का भय नहीं रहता।

स्ट्रेमोनियम ६ या ३०—स्नायविक उत्तेजना और प्रलापकी अधिकता होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

लेकेसिस ६ या ३०—बहुत तेज खींचन में इसे आजमाना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—अपने आपको या दूसरों को काटने दौडना, टकटकी लगाकर देखना, चिल्लाना बकझक करना, आक्षेप और समूचे शरीर का अकड़ जाना।

कैन्थरिस ६—निगलने के समय गले में खींचन और दर्द, जननेन्द्रियकी कष्ट कर उत्तेजना, खींचन इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—इससे भी अनेक बार काफी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—कुत्ता या किसी पागल जानवर के काटने पर उस स्थान को गरम लोहा, नाइट्रिक एसिड या कास्टिक से जला देना अच्छा है। काटे हुए स्थान के कुछ ऊपर रस्सी का बन्द लगा कर जखमको चीर कर वहाँ का खून निकाल देने से भी विष निकल जाता है। कुत्ता के काटने पर भातके साथ घी खिलाना लाभदायक है।

अनिद्रा।

(Sleeplessness)

नींद बिलकुल न आना या अच्छी तरह न आना अनिद्रा रोग कहलाता है। इसमें रोगी जाग जाग पडता है या स्वप्न देखा करता है। क्रोध, शोक, दुःख भय, चिन्ता आदि मानसिक आवेग, मानसिक परिश्रम, चाय, काफी, आदि गरम और उत्तेजक पदार्थों का सेवन आदि कारणों से यह शिकायत पैदा होती है। अनेक बार किसी दूसरे रोग या कष्ट के कारण भी रोगी को नींद नहीं आती।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—बेचैनी या भय के कारण नींद का न आना, आधी रात को जाग पड़ना और सुबह तक जागते ही रहना इत्यादि ।

कोफिया ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है। मानसिक उत्तेजना, चिन्ता आदि कारणों से नींद न आने पर इसे देना चाहिये ।

इग्नेशिया ६ या ३०—शोक, दुःख, पश्चाताप आदि कारणों से नींद का न आना, आँख लगते ही चौंक पड़ना ।

नक्सवोमिका ६—शराब, चाय, काफी आदि पीनेके कारण नींद न आना, कब्जियत, आलसी स्वभाव, पिछली रात में नींद का न आना ।

पेसीफ्लोरा इन्कारनेटा १X—अनिद्रा रोग की यह बढ़िया दवा है । इससे पुराने रोगमें भी बहुत फायद होता है ।

चायना ६ या ३०—रस रक्त का स्राव, दस्त, चाय पीना, कमजोरी आदि कारणों से नींद का न आना ।

बच्चोंको दाँत निकलनेके समय अनिद्रा होतो केमोमिला
केमोमिला से लाभ न होने पर, साथ ही अस्थिरता, उत्क
आदि लक्षणों में बेलेडोना ३० । कामवासना के कारण सार
रात करवट बदलते ही बीते तो एम्ब्राग्रिशिया ३० । आधी
रातके पहले अनिद्रा रोग हो तो पल्सेटिला ३० । क्रिमि
कारण बच्चे को यह शिकायत होनेपर साइना २०० ।गरमी की
बीमारी या पारेके दोषसे अनिद्रा हो तो औरम ६ या नाइट्रिक
एसिड ३६ । गर्भावस्था या जरायु के दोष से स्त्रियों को अनिद्रा
रोग होने पर सीपिया ३० । इनके अतिरिक्त सिमिसिफिउगा,
फेरम फस, सल्फर, फोस्फरस, थूजा, लेकेसिस, केली ब्रोमेटम,
आर्सेनिक, केली आयोड और केम्फर आदि दवाएँ भी लक्षणा-
नुसार फायदा करती है।

आवश्यक सूचना—इस रोगमें ऊंचे क्रमकी दवाओं से अधिक लाभ होता है। सुबह जल्दी उठना, ठंढे जलसे स्नान करना, नियमित व्यायाम आदि लाभ दायक है। सोनेके पहले मुह और हाथ पैर धोना और गीले कपड़ेसे बदन पोंछ डालना अच्छा है। बहुत ऊँचा तकिया व्यवहार करना ठीक नहीं। सोनेके समय चित्त स्थिर रखने की चेष्टा करनी चाहिये।

ताण्डव या नर्त्तन रोग ।

(Chorea)

इच्छा न होने पर भी चेहरा या किसी दूसरे अंगकी पेशियों का फड़कना ताण्डव रोग कहलाता है। यह रोग किशोरावस्था के बालक बालिकाओं को अधिक होता है। जवानों को बहुत कम होता है। भय, प्रेममें निराशा, हस्त मैथुन, मानसिक उत्तेजना, वात, कमजोरी, कृमिदोष आदि कारणों से यह रोग होता है।

चिकित्सा ।

इस रोगमें आक्षेप या खींचन की दवाएँ व्यवहार की जाती हैं। भयके कारण रोग होने पर एकोनाइट इग्नेशिया, स्ट्रैमोनियम, क्रिमि के कारण रोग होनेपर साइना या सेन्टोनाइन, हस्त मैथुन के कारण रोग होनेपर एसिड फस, केन्थरिस, प्लाटिना और रोग का वास्तविक कारण न मालूम होने पर बेलेडोना, एगरिकस, क्युप्रम, हायोसायमस, स्ट्रैमोनियम, जिङ्कम आदि दवाएँ आजमानी चाहिये। कस्टिकम,टेरेन्टयूला, कल्केरिया कार्ब, स्पाइजिलिया, सिमिसिफिउगा, मर्क्युरियस, आयोड, फरेम आदि दवाओं से भी लाभ होता है। यह दवाएँ निम्नक्रम की देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी को पुष्टिकर पदार्थ खाने को देना चाहिये। बिजली के इलाज से अनेक बार काफी फायदा होता है। स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना लाभ दायक है।

भयकर स्वप्न।

(Nightmare)

इस रोग में रोगी को डरावने सपने दिखायी देते हैं। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसको छाती पर चढ़ बैठा है या किसी वजनी पदार्थ से छाती दबी जा रही है। रोगी न हिल डोल सकता है, न बोल सकता है, मनही मन घबड़ाता है। चिल्लाने की चेष्टा करने पर मुंहसे गों गों आवाज निकलती है। अन्तमें नींद खुलनेपर या दूसरों द्वारा जगाये जाने पर रोगीकी तबियत ठिकाने आती है। अजीर्ण, जैसे तैसे बिछौने में किसी तरह पड़ रहना, स्नायविकता, रातको देरी से भोजन करना, चित्तकी अस्थिरता आदि कारणों से यह रोग होता है।

चिकित्सा।

नक्सवोमिका ६—अधिक भोजन, नशेखोरी आदि कारण से यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

फेरम फस ६X–शिरमें रक्ताधिक्य होने के कारण यह रोग होना।

केली ब्रोमेटम १X– सोनेके पहले इसे सेवन करने से बहुत लाभ होता है।

पियोनिया ३X–केलीब्रोम से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

चायना ६–कमजोरी के कारण रोग का होना और छाती पर भार मालूम होना।

सल्फर ३०–रोगके समय कलेजे में जोरों की धड़कन पैदा हो जाना।

आवश्यक सूचना–उत्तेजक पदार्थ न खाने चाहिये चित सोना भी बन्द कर देना चाहिये।

लू लगना ।

(Sunstroke)

साधारणतः गरम हवा या लू लगने से जो बीमारी होती है, उसे ही हमलोग लू लगना कहते हैं। परन्तु तेज धूप और भट्टी, एन्जिन या कहीं भी आँचके सामने रहने से ठीक वैसी ही बीमारी हो सकती है, जैसी लू लगने से होती है। यह रोग आमतौर से गरमी के दिनोंमें ही होता है।

इस रोगमें आँख और चेहरा लाल, शिरमें चक्कर और दर्द, बहुत कमजोरी, जाड़ा सा मालूम होना, बुखार, दृष्टि-क्षीणता, पेटमें दर्द, कै या मिचली, बेहोशी, श्वासकष्ट, पाखाना पेशाब का रुक जाना या बारबार पेशाब होना, अंग प्रत्यंग की खींचन आदि लक्षण प्रकट होते हैं। बहुत तेज बुखार या हिमाङ्गावस्थाके कारण कठिन उपसर्ग उत्पन्न होने पर रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ६ या ३०—तेज धूप लगने के कारण यह रोग होना, तेज प्यास, शिरमें दपदपी, स्नायविक उत्तेजना, बेचैनी, उत्कंठा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—शिरमें भार और तेज दर्द, ऐसा मालूम होना मानो शिर फट जायगा, रोशनी और आवाज का बरदास्त न होना, रोगीका बहुत बक झक करना इत्यादि।

स्ट्रेमोनियम ६ या ३०—प्रलाप की अधिकता में बेले-डोनासे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६—शिरमें दर्द, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना, मिचली, कब्जियत और बेहोशी।

ग्लोनइन ६ या ३०—यह इस रोगको एक बढ़िया दवा है। तेज शिर दर्द, शिरमें चक्कर, बेहोशी, चेहरा और आँखें लाल, श्वासकष्ट, कलेजे में जोरोंको धडकन इत्यादि।

हेलीबोरस ६—शरीर की गरमी का बहुत घट जाना, तन्द्रा और शिर दर्द।

विरेट्रम विरिडि ६—शरीर की गरमी का बहुत अधिक बढ़ जाना और दस्त।

केम्फर १ या ३-एकायक शरीर का ठढा पड जाना और हृदयकी गतिका बन्द हो जाना।

जेल्सीमियम १X-शिरमें चक्कर, शिरमें दर्द, बारबार पेशाब आदि लक्षणोंमें और रोगकी प्रारम्भिक अवस्था में इससे लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त केक्टस, नेट्रम म्यूर, ओपियम, कार्बोवेज, हायोसायमस, एमिल नाइट्रेट, एन्टिमक्रूड, लेकेसिस, अर्निका आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना-रोगीको ठढे पानीसे नहलाना, शिर पर ठढा पानी छोडना, कपाल पर जलपट्टी चढ़ाना, शिरपर बरफ देना आदि लाभ दायक है। मिश्रीके शर्बत में नीबूका रस डालकर पिलाने से रोगीको तत्काल शान्ति मिलती है। कच्चे आमका पना इस रोगकी अमोघ औषधि मानी जाती है। खूब पतला सत्तू नमक डालकर पिलाने से भी काफी लाभ होता है।

स्नायुप्रदाह (Neuritis)

शरीर के सभी या कुछ स्नायुओं का फूल जाना, लाल हो जाना और उनमें दर्द पैदा हो जाना, स्नायु प्रदाह कहलाताहै।

सरदी या चोट आदि लगना तथा यक्ष्मा, कोढ या भीतरी यंत्रों की खराबी के कारण यह रोग होता है। इसमें आक्रान्त स्थानमें जलन या तन्नाहट होती है और कभी कभी वह स्थान शून्य भी मालूम होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—ठंढी हवा लगने के कारण यह रोग होना, तेज और असह्य वेदना, अस्थिरता, अनिद्रा इत्यादि।

बेलेडोना ३X—तेज बुखार, आक्रान्त स्थानको छूनेसे दर्दका बढ़ना, दपदपी, नोचने या फाडने जैसा दर्द, एकायक दर्दका आरम्भ होना और एकायक गायब हो जाना, शामको दर्द का बढ़ना।

आर्सेनिक ६ या ३०—रात में दर्दका बहुत बढ़ना, गरम से आराम मालूम होना, बहुत कमजोरी और बेचैनी।

स्ट्रिकनिया ३X—बेचैनीके लक्षण में आर्सेनिकसे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—सरदी और आधी रात से लेकर सुवह तक रोग लक्षणों का बढ़ना, आक्रान्त स्थान शून्य या जड़ मालूम होना, शराबियोंकी बीमारी।

सिमिसिफिउगा १x—वातकी शिकायत होने पर स्नायुप्रदाह हो तो इसे देना चाहिये।

हाइपेरिकम ३ या ६—चोट लगने के कारण स्नायु प्रदाह में इसे देना चाहिये।

मक्युरियस ६—दर्दके कारण बेचैनी, रात में बिछौने की गरमी से तकलीफ का बढ़ना, आक्रान्त स्थान कड़ा इत्यादि। बेलेडोनाके बाद इससे अधिक लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—कट जाने जैसा दर्द, गरम प्रयोग और हिलने डोलनेसे आराम मालूम होना।

लेकेसिस ६ या ३०—नींदके बाद रोग लक्षण बढ़ जाते हों तो इसे देना चाहिये।

स्नायुशूल (Neuralgia)

सर्दी या चोट लगना, ऋतु परिवर्तन, अधिक परिश्रम

सरदी या चोट आदि लगना तथा यक्ष्मा, कोढ़ या भीतरी यंत्रों की खराबी के कारण यह रोग होता है। इसमें आक्रान्त स्थानमें जलन या तन्नाहट होती है और कभी कभी वह स्थान शून्य भी मालूम होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—ठंढी हवा लगने के कारण यह रोग होना, तेज और असह्य वेदना, अस्थिरता, अनिद्रा इत्यादि।

बेलेडोना ३X—तेज बुखार, आक्रान्त स्थानको छूनेसे दर्दका बढ़ना, दपदपी, नोचने या फाड़ने जैसा दर्द, एकायक दर्दका आरम्भ होना और एकायक गायब हो जाना, शामको दर्द का बढ़ना।

आर्सेनिक ६ या ३०—रात में दर्दका बहुत बढ़ना, गरम से आराम मालूम होना, बहुत कमजोरी और बेचैनी।

स्ट्रिकनिया ३X—बेचैनीके लक्षण में आर्सेनिकसे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—सरदी और आधी रात से लेकर सुबह तक रोग लक्षणों का बढना, आक्रान्त स्थान शून्य या जड़ मालूम होना, शराबियोंकी बीमारी।

सिमिसिफिउगा १X—वातकी शिकायत होने पर स्नायुमदाह हो तो इसे देना चाहिये।

हाइपेरिकम ३ या ६—चोट लगने के कारण स्नायु प्रदाह में इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस ६—दर्दके कारण बेचैनी, रात मे बिछौने की गरमी से तकलीफ का बढ़ना, आक्रान्त स्थान कडा इत्यादि। बेलेडोनाके बाद इससे अधिक लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—कट जाने जैसा दर्द, गरम प्रयोग और हिलने डोलनेसे आराम मालूम होना।

लेकेसिस ६ या ३०—नींदके बाद रोग लक्षण बढ़ जाते हों तो इसे देना चाहिये।

स्नायुशूल (Neuralgia)

सर्दी या चोट लगना, ऋतु परिवर्तन, अधिक परिश्रम

उपदंश या धातु दोष आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। इसमें आक्रान्त स्थान में विजलीसी चमक जाती है। तीर लगने, सलाई भोंकने, काटने या दवाने जैसा भी दर्द होता है। यह रोग चेहरा,शिर, मस्तिष्क का पिछला भाग, गर्दन, वगल कमर, स्तन, पैर आदि अनेक अंगों में होता है और उन्हीं अंगोके नाम से सम्बोधित किया जाता है। वात रोगके परिच्छेदमें गृधसी वातका इलाज लिखा जा चुका है। वह भी इसी रोगके अन्तर्गत है। इस रोगकी प्रधान प्रधान दवाओंके लक्षण नीचे अकित किये जाते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—सर्दी के कारण यह रोग होना, चमक जैसा दर्द, वेचैनी और घवडाहट।

वेलेडोना ६ या ३०—चेहरे का स्नायुशूल, वुखार, अनिद्रा, छूने, हिलने डोलने और ठढी हवा लगने से तथा दोपहर से लेकर आधी रात तक दर्दका वढ़ना।

आर्सेनिक ६ या ३०—किसी निर्दिष्ट समय पर दर्दका शुरू होना, सुई चुभोने जसा दर्द और उस में जलन, आधी रात के वाद रोग का वढ़ना, गरम प्रयोग से आराम मालूम होना।

ब्रायोनिया ६ या ३०—हिलने डोलने से रोग लक्षणों का बढना।

रसटक्स ६ या ३०—पैर में झुनझुनी, बैठे या पड़े रहने पर तकलीफ का बढ़ना, चलने फिरने से आराम, पानी में भीगने या तर हवा लगने के कारण यह रोग होना।

कास्टिकम ६ या ३०—चेहरे का स्नायुशूल, दपदप वेदना, खाँसनेके समय अनजान में पेशाव का हो जाना, अकड़जाने जैसा दर्द।

स्पाइजिलिया ३—शिर और चेहरे में काटने या नोचने जैसा दर्द, आँखों तक दर्दका फैलना, शिर झुकाने या हिलने से दर्दका बढ़ना, साथही कलेजे में धड़कन और बेचैनी।

जेलसीमियम ३—स्नायविक दुर्बलता के कारण सब अंगों का फड़कना, साथही स्नायुशूल, पीठ, कन्धे और गर्दन के पिछले हिस्से में स्नायुशूल।

मेजिरिअम ३०—पैरका स्नायुशूल, बाहरसे पैर ठंढा, अन्दर से गर्मी मालूम होना, शामसे लेकर रात तक रोग लक्षणों का बढ़ना।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—छुरी से काटने जैसा तेज दर्द, अस्थिरता, हिलने डोलने से दर्दका वढ़ना, गरम प्रयोग, पूर्ण विश्राम और दवाने से आराम मालूम होना।

केमोमिला ६ या ३०—चिलकने या सुई चुभोने जैसा तेज दर्द, चिल्लाना, दर्दके कारण वेचैनी।

मेग्नेशिया फस ६X या १२X विचूर्ण—सब तरह के स्नायुशूल में इससे लाभ होता है। इसे गरम पानी के साथ सेवन करना चाहिये।

सिमिसिफिउगा ३X या ६—वात रोगके साथ स्नायुशूल होने पर इससे अधिक लाभ होता है।

कोफिया ६ या ३०—अनिद्रा और अस्थिरता, रातमें रोग लक्षणों का वढ़ना, दाहिनी ओर के आधे शिरमें तेज स्नायुशूल, हिलने डोलनेसे और शोरगुलसे दर्दका वढ़ना।

मर्क्युरियस ६ या ३०—उपदंश दोष, रातमें दर्दका वढ़ना, वहुत पसीना आना लेकिन उससे कोई आराम न मालूम होना।

अर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—छुरी से काटने या फाड़ने जैसा दर्द, गरम स्थान में और शामके वक्त दर्दका बढ़ना, ठंढे स्थानमें आराम मालूम होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त अर्जनाई, कल्केरिया, लाइको पोडियम, फाइटो लेक्का, रूटा, सीपिया, सल्फर, नेफेलियम, टिपर, इग्नेशिया, केली हाइड्रो, केली बाइक्रोम, लेकेसिस, प्लम्बम, केक्टस, हाइपेरिकम, प्लेन्टेगो, केलमिया, जिङ्कमफस आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार फायदा करती है।

आवश्यक सूचना—नये रोग में प्रतिदिन ३-४बार और पुराने रोगमें प्रतिदिन एक बार दवा देना काफी है। पूर्णरूप से विश्राम करना चाहिये। सर्दी, अनियमित आहार विहार उत्तेजक पदार्थोंके सेवन आदिसे बचना चाहिये। बिजलीका इलाज लाभदायक हो सकता है।

कम्परोग (Tremor)

स्नायविक दोष अधिक इन्द्रिय सेवा, बुढापा, मादक पदार्थोंका सेवन आदि कारणों से यह रोग होता है। इस में

एनाकार्डियम ३—अधिक वीर्यपातके कारण स्मरण-शक्ति का घट जाना।

प्लेटिना ६—सदा विषयवासना का चिन्तन करते रहने के कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

एसिडफस ६ या ३०—साधारण शारीरिक या मानसिक परिश्रम में ही थक जाना, सगमशक्ति की कमी, रातमें अधिक पसीना, शिरके केश का झड़ना।

जेल्सीमियम ३—हमेशा घूमने की इच्छा, रोगीका यह समझना कि न घूमने से उसके हृदय की गति वन्द हो जायगी, शिरके निचले भागो में भार मालूम होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—सुस्ती और कमजोरी मालूम होना, चलते समय रोगीका यह समझना कि वह गिर पड़ेगा, कब्जियत इत्यादि।

केक्टस १X—स्नायविक दुर्वलता और कलेजे में धड़कन।

कार्बोवेज ३०—पेटमें वायु सचय, बदबूदार अधोवायुका निकलना।

आर्निका ३—जरा में ही थक जाना और समूचे शरीर में कसरत करने की तरह दर्द।

इनके अतिरिक्त लेकेसिस, केमोमिला, पल्सेटिला, हायोसायमस, केली ब्रोमेटम, जिङ्कम, ब्रायोनिया, स्ट्रिकनिया सल्फ, स्ट्रिकनिया, वेलेरिन और मरकस आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—हलके और पुष्टिकारक पदार्थ खाने चाहिये। बकरे के मासका शोरबा बहुत फायदा करता है। खुली हवामें घूमना, नियमित आहार विहार और स्वास्थ्यके नियमों का पालन करना लाभ दायक है।

९—मस्तिष्क रोग।

मस्तिष्क-प्रदाह।

(Infamation of the Brain)

यह रोग दो भागों में बाँटा जा सकता है। जब मस्तिष्क के भीतरी पदार्थों में प्रदाह होता है तब यह मस्तिष्क प्रदाह

(Cerebritis) कहलाता है और जब मस्तिष्क को ढकनेवाली झिल्ली में प्रदाह होता है, तब वह मस्तिष्क झिल्ली प्रदाह या Meningitis कहलाता है। दोनों के ही लक्षण प्राय एक समान हैं। दोनों रोग बच्चों को ही अधिक होते हैं,लेकिन मस्तिष्क प्रदाह शायद ही आराम होता है और झिल्ली प्रदाह आराम भी हो जाता है।

मस्तिष्क प्रदाह मे आरम्भ ही से कोई स्नायविक क्रिया या स्पर्शशक्ति लोप हो जाती है, झिल्ली प्रदाह में पहले ही से ऐसा नहीं होता। मस्तिष्क प्रदाह में प्रलाप नहीं होता, झिल्ली प्रदाह में प्रलाप की प्रधानता रहती है। इसके सिवा अन्यान्य सभी लक्षण प्रायः एक समान होते हैं।

क्रोध शोक आदि मानसिक आवेग, सर्दी या गर्मी, चोट, टायफाइड, लाल ज्वर, हामज्वर, कान या नाकका प्रदाह, फोडोका वैठ जाना, सक्रामक रोगों से पीड़ित होना, उत्तेजक पदार्थों का सेवन, न्युमोनिया आदि अनेक कारणों से और अनेक वीमारियों के साथ यह रोग होते हैं। तेज बुखार, जोरों का शिरदर्द, शिर और गलेकी नसोंका फड़कना और दपदप होना, प्रकाश और आवाज बरदास्त न होना, अनिद्रा, प्रलाप मिचली और कै, पुतली सकुचित या फैली हुई और आक्षेप आदि इन रोगोंके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—रोगके आरम्भ में तेज बुखार, मस्तिष्कमें रक्त सचय, चेहरा लाल, उत्कंठा मृत्युभय, अनिद्रा, अस्थिरता, वारंवार करवट बदलना, उठ बैठने पर शिरमें चक्कर या बेहोशी।

एपिस ३X—यह एक बढ़िया दवा है। तकिये में शिर रगड़ना, जोरसे चिल्ला उठना आदि लक्षणों में और नयी बीमारी में इसे देनेसे अनेक वार दूसरी दवाकी जरूरत नहीं पड़ती।

जिङ्कम ३X—एपिससे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—शिरमें तेज दर्द और दपदपी, आँख और चेहरा लाल, बहुत बक झक करना, भागने की इच्छा करना, चिल्लाना, मारना काटना, तेज बुखार, नींदसे चौंक पड़ना, रोशनी बर्दास्त न कर सकना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—शिरमें रक्त सचय, शिरदर्द, विकार में अपने नित्यकर्म—व्यापार व्यवसाय या खेल कूदकी

बातें करना, बाहर होने पर घर जानेकी इच्छा प्रकट करना, प्यास, कब्जियत, हिलने डोलने से तकलीफ का बढना इत्यादि।

आर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण यह रोग होना, मस्तिप्क में रक्त सचय, घोर निद्रा, शिर गरम, शरीर ठढा इत्यादि।

स्ट्रेमोनियम ६ या ३०—गहरी बेहोशी, तेज प्रलाप, मारने दोडना, भागना, अँधेरे में, अकेले में और नींद खुलने पर डरना, दाँत किडमिडाना, दाँतों पर मैल जमना, स्थिर दृष्टि, काला और पतला मल इत्यादि।

हायोसायमस ६ या ३०—तन्द्रालुता, अस्पष्ट बातें कहना, स्थिर दृष्टिसे ताकना, अंगों का फडकना, मुँहमें फेन आना, सब चीजें दो दो दिखायी देना, अनजान में पाखाना पेशाव हो जाना, बड़ बडाना, जननेन्द्रिय पर हाथ रखना, नंगे होजाना, बिछौना नोचना, हाथ पैरका काँपना, नींदसे चौंक पडना इत्यादि।

सिना ३० या २००—क्रिमिके कारण यह रोग होना, नाक खुजलाना, सोतेमें दाँत किड़मिडाना, चौंक पड़ना, राक्षसी भूख या अक्षुधा इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—चेहरे का रंग बैंगनी, भय या शोक के कारण यह रोग होना, कब्जियत, नींद में डरना और चौंक पड़ना, आखें अधमुंदी, श्वास प्रश्वास में घड़घड़ाहट, बेहोशी इत्यादि।

हेलीबोरस ६ या ३०—शिरमें चक्कर, आँखे फाड़ फाड़ कर देखना, पुतली का घूमते रहना, आंखें अधमुंदी, टेढ़ी-दृष्टि, कपाल पर ठंढा पसीना, इच्छा न होने पर भी एक हाथ और एक पैर का हिलते रहना, बेहोशी में चिल्लाना, मुंह-चलाना, चेहरा मलीन और फूला हुआ इत्यादि।

साइक्यूटा ६ या ३०—शिरमें कम्पन और आक्षेप, शिर और गर्दन का पीछे की ओर झुक जाना, तन्द्रा, स्थिर-दृष्टि, चेहरा नीला, प्यास, निगल न सकना।

टेरेन्टयूला ६—दिमाग के अन्दर सुई चुभाने जैसा दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम ६ या ३०—बहुत कमजोरी सदा चुप चाप पड़े रहना, शिर गर्म हाथ,पैर ठढे, थोड़ा पसीना, प्यास नदारद।

पल्सेटिला ६ या ३०—कान या नाक का स्राव बन्द हो जाने के कारण यह रोग होना, शिर में चक्कर।

हाइड्रोसियानिक एसिड ६ या ३०–शिर दर्द, कै, श्वास और नाड़ी अनियमित, धक धक, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। रोगकी अन्तिम अवस्था में और आक्षेप युक्त बीमारी में इस से विशेष लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त क्युप्रम, टयुबरक्युलिनम, आयोडियम, रसटक्स, ग्लोनइन, विरेट्रम विरिडि, एपोसाइनम इत्यादि दवाएँ भी दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—रोगीको सदा सुला रखना चाहिये। उसके कमरे में शोर गुल या अधिक प्रकाश न होना चाहिये। शिरके केश काट कर बरफ की थैली या जलपट्टी चढ़ाते रहना चाहिये। हाथ पैर ठंढे मालूम हों तो गरम पानी से सेंक देना चाहिये और गरम कपड़े से ढक रखना चाहिये। दूध साबूदाना आदि पतली और हलकी चीजें खाने को देना चाहिये। यह रोग बहुत ही खतरनाक है। शुरू से ही चतुर चिकित्सक से इलाज कराना चाहिये।

मस्तिष्क में रक्ताधिक्य

(Rush of Blood to the Head)

हृदय की खराबी, उत्तेजक पदार्थों का सेवन, समुचित शारीरिक परिश्रम न करना, हर्ष, शोक, भय आदि मानसिक आवेग, रक्तस्राव आदि जनित कमजोरी आदि कारणों से शिर में रक्त सचय होता है।

शिरमे चक्कर, उसके साथ कभी कभी बेहोशी, चेहरा लाल, शिर गरम, भयंकर शिर दर्द, शिर और गर्दन में भार और दपदपी, शिर में जलन और तमाहट हाथ पैर बेकार, हृदयमें कष्ट मालूम होना, शरीर का रग मटमैला, कपाल और ब्रह्मतालु में दर्द पेशाब थोडा और लाल, तेज रोशनी या आवाज सहन न होना, इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण है। इस रोग में प्रलाप कभी रहता है, कभी नहीं भी रहता।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है। चेहरा और आँखें लाल, प्रलाप, आँखों की पुतली फैली हुई, रोशनी और आवाज का बरदास्त न होना, शिरमें चक्कर, अवसन्नता, शिर झुकाने पर तरह तरह के चिन्ह दिखायी देना इत्यादि।

एकोनाइट ३X—उत्कंठा, मृत्युभय, प्यास, चेहरा लाल, वदन सूखा, शिर झुकाने या धूपमें घूमने पर चक्कर आना आदि लक्षणों में और मानसिक आवेग के कारण यह रोग होने पर तथा बच्चों की बीमारी में इसे देना चाहिये।

ग्लोनइन ३—ऋतु का बन्द हो जाना, धूप, गरमी या लू लगने के कारण यह रोग होना, शिरमें तेज टनक पर बुखार का न होना।

आर्निका ६ या ३०—शिरमें किसी तरहकी चोट लगने के कारण यह रोग होना, शिरमें जलन, शिर गरम और शरीर ठंढा मालूम होना इत्यादि।

विरेट्रमविर ६ या ३०—बुखार, शिर गरम, चेहरा और आँखें लाल, गर्दन के पीछे से शिर तक दर्द, आँखोंकी पुतली फैली, सब चीजें दो दिखायी देना, शिर भारी, चेहरेकी पेशियों का फड़कना आदि एकोनाइट और बेलेडोना के सम्मिलित लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३० कब्जियत, शिरके अन्दर दर्द मालूम होना, मतवालों की तरह शिरमें चक्कर, मानसिक परिश्रम और शराब खोरीके कारण यह रोग होना।

जेल्सीमियम ३ या ३०—नयी बीमारी, शिरमें चक्कर, कपाल के चारों ओर कस कर पकड रखने जैसा दर्द, छिन्न-दृष्टि, मनकी अस्थिरता।

सल्फर ३०—जेल्सीमियम जैसे लक्षण लेकिन पुरानी बीमारी में इसे देना चाहिये।

ओपियम ६ या ३०—रात्रि जागरण, शराब खोरी और भय आदि कारणों से यह रोग होना, सुस्ती, कब्जियत, अध-मुँदी आँखें इत्यादि। वृद्धोंकी बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोगी को बिछौने से उठने न देना चाहिये। शिर और कपाल पर बरफ या जलपट्टी चढानी चाहिये। किसी तरह की भी शरीरिक या मानसिक उत्तेजना न पैदा होने देना चाहिये। दूध साबूदाना आदि पतली और पुष्टिकर चीजें खानी चाहिये।

मस्तिष्क में जल-सञ्चय।

(Hydrocephalus)

यह रोग बहुत छोटी उम्रके बच्चों को या आठ दस वर्ष की उम्र तक के बालक बालिकाओं को हुआ करता है। यह प्रायः अपने आप होता है। कभी कभी खाँसी, हाम ज्वर, चेचक आदि रोगों के बाद भी होता है।

इस रोग में पहले बुखार, अनिद्रा, अस्थिरता, चिड़चिड़ा-स्वभाव, शिर गरम, रोशनी और शोर गुल बरदास्त न होना, आँखकी पुतली का फैलना, नींद में से चौंक पड़ना और चिल्ला उठना आदि लक्षण प्रकट होतेहै। बाद को शिरमें जल-सञ्चय या शोथ पैदा होता है। इस अवस्था में रोना, चिल्लाना शिर हिलाना आदि लक्षण प्रकट होकर अन्त में खींचन या लकवा के कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है। रोगी कभी-कभी दोही तीन दिन में मर जाता है, कभी कभी दो तीन सप्ताह तक भोगता रहता है। यह रोग कंठमाला धातुवाले बच्चों को अधिक होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—रोग के आरंभ में मृत्यु भय, अनिद्रा, बेचैनी, उत्कंठा, चिल्लाना, बुखार, पतले दस्त आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब—गण्डमाला धातु, शिर बड़ा, ब्रह्म तालु का अच्छी तरह न भरना, शिर में अधिक पसीना, खास कर सोते समय जरा में ही सरदी लगना, मोटा और थुलथुला शरीर इत्यादि।

एपिस ३ या ६—तेज बुखार और प्रलाप, दाँत किड़मिड़ाना, स्थिरदृष्टि, एक अंग में फड़कना, दूसरे अंग में लकवा, शिरमें बहुत पसीना, बारबार थोड़ा-थोड़ा दस्त होना इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—गहरी नींद, बेहोशी, श्वास प्रश्वास में घड़घड़ाहट, आक्षेप के पहले या पीछे चिल्लाना, अधमुंदी आँखें इत्यादि।

सल्फर ६ या ३०—शिर में भार, शिर का अपने आप हिलना, दिनमें निद्रालुता, रात में अनिद्रा, मुँह में खट्टी गन्ध, चर्म रोग, गण्डमाला धातु, चर्म रोग दब जाने के कारण यह रोग होना।

बेलेडोना ६ या ३०—बुखार, चेहरा और आँखें लाल, आँखें घुमाना, सोते से चौंक या उछल पड़ना, प्रलाप, बिछौने

से उठने की चेष्टा करना, अनजान में पाखाना पेशाब, रोशनी और शोरगुल असह्य, नयी बीमारी।

ब्रायोनिया ६—चवेना चबाने की तरह मुँह चलाते रहना, मिचली, कब्जियत इत्यादि।

स्ट्रैमोनियम ६ या ३०—शिर हलका मालूम होना, बारबार झटके के साथ शिर उठाना, सोते में डर कर जाग पड़ना, मुँह सूखा, प्यास का न होना, काले रंग के पतले दस्त, बहुत बकझक करना, बिछौने से उठ उठ कर भागना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त हेलीबोरस, आर्जनाइ, आर्सेनिक, एपोसाइनम, इथूजा, इग्नेशिया, केली ब्रोमाइड, मर्क्युरियस, विरेट्रम एल्ब आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार फायदा करती हैं।

आवश्यक सूचना—शिर पर बरफ या जलपट्टी चढ़ाना और पैर के पंजे गरम पानी में डुबो रखना लाभदायक है। खाने के लिये साबूदाना, बार्ली आदि हलके पदार्थ देने चाहिये।

शिरमें टाल।

(Baldness)

अनेक कारणों से शिर के केश झड कर खोपडी साफ निकल आती है। इसे टाल पडना या गजे हो जाना कहते हैं। अधिक अध्ययन, मानसिक परिश्रम, शिर दर्द और चिन्ता, उत्कंठा, शोक, दुःख आदि मानसिक आवेग इसके प्रधान कारण कहे जा सकते हैं।

चिकित्सा।

कमजोरी के कारण केश झड रहे हों तो पहले सिकोना और बाद को फेरम दीजिये। अधिक पसीना आनेके कारण केश झडते हों तो मर्क्युरियस। क्वीनाइनके अपव्यवहार से यह रोग होनेपर बेलेडोना। पारे का अपव्यवहार हुआ हो तो हिपर या कार्बोवेज। बहुत दुःख या मुसीबत के कारण केश झडते हों तो फोस्फरिक एसिड इग्नेशिया या स्टेफीसेग्रिया। स्नायविक बुखार और प्रदाह वाले रोगों के बाद केश झडें तो हिपर, साइलीसिया या लाइको पोडियम। गठिया या हिस्टीरिया जनित पुराने शिर दर्द की बीमारी के साथ यह रोग होने पर हिपर या लेकेसिस। पेट के गोल मास के कारण पुराना शिर दर्द, शिर में खुजली और रूसी साथही

केशों का झड़ना—इन लक्षणों मे भी लाइको पोडियम से ही लाभ होता है। प्रसव के बाद यह रोग होने पर कल्केरिया कार्ब और सल्फर।

आवश्यक सूचना—अधिक से अधिक दिन में एक बार या दो दिन में एक बार दवा देनी चाहिये। अगर केश झड़ने के बाद नये केश अपने आप निकल रहे हों तो दवा देने की जरूरत नहीं। नये केश बहुत पतले निकलें तो महीने में एकाध बार कटवा देने चाहिये। नित्य ठंढे जल से स्नान करना और शाम को भी ठंढे जल से शिर धो डालना लाभदायक है। केश खुले छोड़ कर रात में सोना या बहुत कस कर बाँधना स्त्रियों के लिये हानिकर है। इससे प्रायः केश झड़ने लगतेहैं। एक बूँद कड़ुवे बादामका तेल दो चम्मच माठे बादाम के तेल में मिलाकर केशों में लगाने से बहुत लाभ होता है। केन्थरिस का मूल अर्क रम नामक शराब में मिला कर लगाने से भी लाभ होता है।

दिमागकी कमजोरी।

(Brain Fog)

अधिक मानसिक परिश्रम के कारण दिमाग थक जाता है और कमजोरी मालुम होती है। इसके कारण थोड़े परिश्रम में ही थक जाना, काम में जी न लगना, स्मरण शक्ति की कमी आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा ।

स्नायुओं की कमजोरी में एसिड फस ३ X । बहुत उदासी, किसी तरह की इच्छा ही न होने पर एसिड पिकरिक ३ । स्मरण शक्ति की कमी, बुद्धि की जड़ता आदि में जिङ्कम ६, इथ्यूजा ३ या एनाकार्डियम ६ । तेज बीमारी या गृहस्थी के भार से दिमाग कमजोर हो जाने पर कल्केरिया फस ६ X विचूर्ण । पुराने शिरदर्द, अधिक परिश्रम स्नायविक दुर्बलता आदि कारणों से यह रोग होने पर लिलिअम ६ । "स्नायविक दुर्बलता" रोग की दवाओं में से भी दवाएँ चुनी जा सकती हैं ।

स्मरण शक्ति की कमजोरी

(Weakness of Memory)

चोट, कमजोरी, बुढ़ापा, कठिन बीमारी आदि अनेक कारणोंसे स्मरणशक्ति कमजोर हो जाती है । इसकी शिकायत होने पर आदमियों के नाम या घटनाओं का भली भाँति स्मरण नहीं रहता ।

चिकित्सा ।

रसरक्त का अधिक स्राव होने के कारण कमजोरी अथवा ऐसे ही किसी दूसरे कारण से स्मरण शक्ति खराब हो जाने

पर चायना या लेकेसिस। बड़ी उम्र के आदमियों को जिन्हे हमेशा सरदी लग जाती हो और जिन्हे घर में ही रहना भला मालूम होता हो, उन्हें यह रोग होने पर नक्स मस्केटा देना चाहिये। ऐसे आदमियों को खुली हवा में जाने से सरदी लग जाती हो, फिर भी अगर उन्हें खुली हवा में ही रहना भला मालूम होता हो तो पलियम सिपा देना चाहिये। शिर में चोट लगने के कारण यह रोग हुआ हो तो आर्निका। शराब आदि पीने के कारण रोग होने पर नक्सवोमिका। भय, क्रोध, दुःख आदि मानसिक आवेगों के कारण रोग होने पर एकोनाइट, स्टेफीसेग्रिया, इग्नेशिया, या विरेट्रम। सर्दी लगने के बाद यह शिकायत होने पर रसटक्स या कार्वो-वेज। शिर में रक्त सचय के कारण रोग होने पर एकोनाइट और वेलेडोना। इच्छा करने पर भी किसी निश्चित विषय पर विचार न जम सके तो एपिस। चायना रसटक्स, मक्युरियस और सल्फर से भी इस अवस्था में लाभ हो सकता है।

आवश्यक सूचना—नयी बीमारी में निम्न क्रम की किन्तु पुरानी बीमारी में हमेशा ऊँचे क्रम की ही दवाएँ देना चाहिये। रोज शाम को ठंढे पानी से शिर धोकर ऊपर से रूमाल बाँधना और सुबह बहुत ठंढे पानी से कपाल और आँखें धोना लाभदायक है। सोने के पहले एक मिनट ठंढे पानी में

पर के पजे रखने के बाद उन्हे तौलिये से अच्छी तरह रगड़ कर पोछ डालना और बाद को सोना–इस प्रक्रिया से भी काफी लाभ होता है।

शिरमें चक्कर।

(Vertigo)

शिर में रक्त की कमी या अधिकता, पाकाशय का गोलमाल हस्तमैथुन या अधिक इन्द्रियसेवा, शराब आदि उत्तेजक, पदार्थों का सेवन, चोट लगना, फोडों का बैठ जाना, वृद्धावस्था इत्यादि कारणों से यह रोग होता है।

इस रोग में रोगी को चारों ओर की चीजें घूमती हुई मालूम देती है अथवा ऐसा मालुम देता है, मानो वह स्वय घूम रहा है। इसके साथ दृष्टि क्षीणता, मिचली और कै, आँखमें दर्द, आँखों के सामने चिनगारियाँ उड़ना, कानों में तरह तरहकी आवाज सुनायी देना, पेटमें दर्द, पेट का फूलना, छाती में जलन, आँखके सामने अँधेरा दिखायी देना, शिर में दर्द, दस्त इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। बुढ़ापे के कारण शिर में चक्कर आना बुरा होता है। अन्य सभी प्रकार का रोग इलाज करने पर आसानी से आराम हो जाता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—लेटने या बैठने के बाद खड़े होने पर अथवा नीचे या ऊपर को देखने पर चक्कर आना, चेहरा लाल, अचैतन्य भाव इत्यादि ।

बेलेडोना ६ या ३०—शिरमें रक्ताधिक्यके कारण यह रोग होना, शिरमें दर्द और दपदपी, आँख और चेहरा लाल, शिर झुकाने से दर्द का बढ़ना, आँख के सामने अँधेरा छा जाना या सब चीजें घूमती हुई दिखायी देना इत्यादि ।

नक्सवोमिका ६ या ३०—शराब, अफीम, तम्बाकू आदि उत्तेजक पदार्थों के सेवन, रात्रिजागरण और मानसिक परिश्रम के कारण यह रोग होना, शिर दर्द, भूख न लगना, कै, अजीर्ण दोष, भयंकर कब्जियत, कानों में सों सों आवाज इत्यादि ।

पल्सेटिला ६ या ३०—स्त्रियों को रजोदोष के कारण यह बीमारी होना । बैठने के बाद उठते समय शिर चकराना, शाम के समय तकलीफ का बढ़ना, मिचली और अरुचि,

गरम और बन्द स्थान में रोग लक्षणों का बढ़ना, खुली हवामें आराम मालूम होना इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—बिछौने से उठते ही शिर चकराना, इस तकलीफ के कारण फिर बिछौने पर लेट रहना।

अर्निका ३ या ६—शिर में चोट लगने के कारण यह रोग होना, मिचली, लेट रहने से आराम मालूम होना।

चायना ६ या ३०—अधिक रसरक्त के स्राव के कारण कमजोरी और उस कमजोरी के ही कारण शिर घूमना इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—विश्राम के समय तकलीफ का बढना, बैठते समय, खड़े होते समय या बिछौने पर पहले पहल आँख बन्द करते समय आँखों के सामने अँधेरा छा जाना, साथ ही शिर में दर्द और मिचली।

लेकेसिस ६—नींद से उठने पर शिर में चक्कर आना हो तो इसे देना चाहिये।

अन्यान्यदवाए–सोने के समय शिर चकराने पर कोनायम या नेट्रमम्यूर। रोगी को ऐसा मालूम होना, मानो वह उलट कर गिर पड़ेगा, वोरेक्स। मस्तिष्क के रोगों के कारण शिर चकराता हो तो कोफिया, नक्स मस्केटा, इग्नेशिया, जिङ्कम, थिरिडियन, एम्बा। कर्णरोग के कारण शिर चकराये तो कस्टिकम, जेल्सीमियम और रुट्रमोनियम। पाकाशय के गोलमाल के कारण यह रोग होने पर नक्सवोमिका, पल्सेटिला और ब्रायोनिया। शिर में रक्त स्वल्पता जनित रोग में वेराइटा कार्ब, ग्रेफाइटिस, साइलीसिया, लाइकोपोडियम और नक्सवोमिका। शिरमें रक्ताधिक्य के कारण यह रोग होने पर एकोनाइट, बेलेडोना, अर्निका, लेकेसिस और नक्सवोमिका। शिर चकराने के कारण सामने की ओर झुक जाने पर स्पाइजिलिया और साइक्यूटा। पीछे की ओर झुक जाने पर ब्रायोनिया, नक्सवोमिका और रसटक्स। दाहिनी या बायीं ओर झुकने पर सल्फर। स्नायविक दुर्वलता के कारण शिर चकराने पर फोस्फरस, एसिड फस, चायना और जिङ्कम। रोगके समय कै होती हो तो आर्सेनिक, इपीकाक, नक्सवोमिका पल्सेटिला और विरेट्रम। रोग के समय मूर्च्छा आ जाने पर केमोमिला, मस्कस, नक्सवोमिका, हिपर और सल्फर। दृष्टि क्षीणता के साथ केवल शामको शिर चकराने पर मर्क्युरियस। बिछौने पर सीधे होकर बैठते

हो चक्कर आये तो कक्युलस, फोड़े बैठ जाने के कारण यह रोग होने पर सल्फर और कल्केरिया कार्ब।

आवश्यक सूचना—ठढे जलसे नहाना और खुली हवामें घूमना लाभदायक है। पेट में गोलमाल हो तो हलके और रक्तहीनता या दुर्बलता के कारण रोग होने पर पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये।

शिरदर्द।

(Headache)

शिर दर्द एक बहुतही कष्टदायक रोग है। अधिकांश स्थानों में यह बतौर एक स्वतंत्र रोगके नहीं, बल्कि किसी दूसरे रोग के उपसर्ग के रूप में प्रकट होता है। यह जिस कारण से होता है उसी के नाम से सम्बोधित किया जाता है, जैसे कि रक्ताधिक्यके कारण होने पर रक्ताधिक्य जनित शिरदर्द पाकाशय के गोलमाल से होने पर पाकाशयिक शिर दर्द इत्यादि।

शिरदर्द के अनेक कारण हो सकते हैं। मस्तिष्क में रक्त स्वल्पता या रक्ताधिक्य, अजीर्ण दोष, उत्तेजक या विषैले पदार्थों का सेवन, शारीरिक यंत्रोमें गड़बड़ी, स्नायविक दुर्बलता, वात, ज्वर, सदाह अधिक परिश्रम, धूप लगना, अधिक इन्द्रिय सेवा या हस्तमैथुन, सदा चिन्ता करते रहना

अधिक लिखना पढ़ना, अनिद्रा, रात्रि जागरण, आहार विहार की अनियमितता, रजोदोष आदि इसके प्रधान कारण कहे जा सकते हैं। स्नायुप्रधान मनुष्यों और स्त्रियो का शिर बहुत जल्दी दुखने लगता है।

शिर दर्द का थोड़ा बहुत अनुभव सबको होता ही है, इसलिये इसके लक्षणों का वर्णन करना व्यर्थ है। सब शिर-दर्दों की प्रकृति एक सी नहीं होती। भिन्न भिन्न अवस्था और कारण के अनुसार दर्द भी भिन्न भिन्न प्रकार का होता है, परन्तु उनके अलग-अलग नाम नहीं हैं। सब शिरदर्द, फिर वे चाहे जिस तरह के हो, शिरदर्द ही कहलाते हैं। आधे शिर में जो दर्द होता है वह अधकपारी कहलाता है।

चिकित्सा।

शिरमें रक्ताधिक्य के कारण शिर दर्द-शिरमें रक्ताधिक्य या प्रदाह के कारण जो दर्द होता है उसमें बुखार, गर्दन की नसों का फड़कना, दर्द बढ़ने पर कै, शिरहिलाने से दर्द का बढना, पड़े रहने और कभी-कभी खड़े रहने पर आराम आदि लक्षण प्रकट होते है। ग्लोनइन, एकोनाइट, वेलेडोना, पल्सेटिला, रसटक्स, और नक्सवोमिका इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

जुकाम या सर्दीके कारण शिरदर्द—यह शिरदर्द प्राय कपाल में होता है। शिर मानो फटा जाता है और जलन सी होती है। सुबह कुछ आराम, शामको दर्दका बढ़ना, आँखें जलपूर्ण, नाक सूखी और गरम, बहुत सर्दी, थोड़ी खाँसी आदि लक्षण भी प्रकट होते है। नाकसे नमकीन पानी सुड़कना, एकोनाइट, साइना, नक्सवोमिका, आर्सनिक, एलियम सिपा आदि इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

वातके कारण शिरदर्द—इसमें सुई चुभोने या खींचने जैसा दर्द होता है। दर्द स्थान बदलता रहता है। कभी गर्दन, कभी कान और कभी कनपटी में मालूम होता है। छूने या हिलानेसे और निद्राके समय खासकर आधी रातको तकलीफ का अधिक बढ़ना, पसीना आना, इधर उधर कुछ कुछ फूल जाना, कभी कभी कै इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। केमोमिला, नक्सवोमिका, बेलेडोना, पल्सेटिला, इपीकाक, इग्नेशिया, कोलोसिन्थ, सल्फर, ब्रायोनिया और सीपिया इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

पेटकी गड़बड़ीके कारण शिरदर्द—पाकाशय और आँतों की क्रिया ठीक न होनेके कारण जो शिरदर्द होता है, उसमें जीभ पर लेप, मुँहका स्वाद बिगड़ा हुआ, भूख बिलकुल न

लगना, मिचली या कै इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। ब्रायोनिया, नक्सवोमिका, ओपियम, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, इपीकाक, विरेट्रम, लाइकोपोडियम और सीपिया इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

स्नायविक शिरदर्द या अधकपारी—इसके लक्षण और दवाएँ पृथक अध्यायमें अंकित की जायँगी।

साधारण शिरदर्द—इसमें लक्षणानुसार भिन्नभिन्न दवाएँ व्यवहार की जाती है। सेङ्गुइनेरिया, बेलेडोना, एकोनाइट, प्लेटिनम, मर्क्युरियस, एपिस, सीपिया, सल्फर, साइलीसिया, स्पाइजिलिया आदि दवाएँ मुख्य है।

सभी तरह के शिरदर्दोंकी प्रधान प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे अंकित किये जाते हैं —

एकोनाइट ३X या ६—तेज शिरदर्द, अवसन्नता, दर्दके कारण बेचैनी, कपाल में भार और पूर्णता मालूम होनी, ऐसा मालूम होना मानो कपाल के भीतरी पदार्थ बाहर निकल पड़ेंगे। कै या मिचली, बुखार, प्यास इत्यादि लक्षणों में, खासकर सर्दीके शिरदर्द में इससे विशेष लाभ होता है।

ग्लोडाना ६ या ३०—जोरोंका शिरदर्द, एकायक दर्दका शुरू होना और एकायक बन्द हो जाना, शिरमें दपदपी, रोशनी या आवाज बिल्कुल बर्दास्त न होना, दर्दके कारण आँखें बन्द कर रखना, शिर हिलाने से दर्दका बढ़ना, दबाने से आराम, रोज दोपहर से लेकर आधी रात तक दर्द का होना, अनिद्रा, अचेतन्य भाव इत्यादि। दाहिना ओर अधिक दर्द होने पर भी इससे लाभ होता है।

मेड्ड इनेरिया ३ या ६—किसी निर्दिष्ट अवधिके बाद शिरदर्द का होना अथवा सुबह दर्दका शुरू होना और रात तक मौजूद रहना, शिर ऐसा भरा हुआ मालूम होना मानो कुछ बाहर निकल पड़ेगा, या ऐसा मालूम होना मानो आँखें बाहर निकल पड़ेंगी, शिरके पिछले हिस्सेमें दर्दका शुरू होना और दाहिनी आँख पर ठहर जाना, अथवा समूचे शिरमें खींचने, झोंकने, मारने या खोदने जैसा दर्द, कपाल और दाहिनी ओर इस दर्दकी अधिकता, साथही ठंढ, मिचली, कै, पड़ रहने की इच्छा और हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—किसी निर्दिष्ट समय में शिर दर्द कपाल में भार, बायीं भौंहके नीचे तेज दर्द, दर्दके साथ जलन,

गर्दन या शिरके पिछले हिस्से में दर्द, कपालमें टनक, मिचली या कै, प्यास, बेचैनी, मृत्युभय, खुली हवामें और ठढे पानीसे धोनेपर आराम इत्यादि ।

सीपिया ६ या ३०—दाहिनी ओर पर तेज दर्द, मानो कोई खोंचा मार रहा है या सलाई भोंक रहा है, दर्दके कारण रोना, साथही मिचली या कै, शिर झुकाने या हिलाने से दर्द का बढ़ना, रजोदोष या प्रदर के साथ स्त्रियों को शिर दर्द होना ।

स्पाइजिलिया ३ या ६—बायीं ओरके समूचे शिरमें दर्द कभी कभी चेहरे और दाँतो तक दर्दका फैल जाना, सुबह से दर्दका शुरू होना, ज्यों ज्यों सूरज चढ़े त्यों त्यों दर्दका बढ़ना, दोपहर के बाद दर्दका घटना और सूर्यास्त होने पर आराम हो जाना, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना, दबाने से घटना, आवाज बरदास्त न होना इत्यादि ।

एपिस ६ या ३०—शिर भरा हुआ मालूम होना, शिरमें वजन और दबाव, खास बड़े कमरे में दर्दका बढ़ना,

मालूम होना, रातमें जराभी हिलने डोलने से ठंढ मालूम होना, चेहरा और हाथ गरम, बदन में खुजली, खुजली में जलन और दर्द।

नक्सवोमिका ६ या ३०—चलने या हिलने पर ऐसा मालूम होना मानो दिमाग सूज गया है, कनपटियों में दबाव, बैठने या लेटने से आराम न मालूम होना, सिर भारी, ऐसा मालूम होना मानो फट जायगा, खुली हवामें भोजन के बाद और सुबह में दर्दका बढ़ना, काफी, शराब आदि उत्तेजक पदार्थों के सेवन या कब्जियत के कारण शिर दुखना।

ग्रायोनिया ६ या ३०—ऐसा मालूम होना मानो शिर दोनों ओरसे दबाया जा रहा है, झुकाने पर मानो कपाल की सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, नाकसे पानी बहना, पर कोई आराम न मालूम होना, आँखें जल पूर्ण और उनमें जलन, मिचली और कै, शिरमें रक्त सञ्चय या कब्जियत के कारण शिरदर्द।

ओपियम ६ या ३०—शिरमें खोंचा मारने या फट जाने जैसा दर्द, शिरमें रक्त सचय, आँखोंमें तकलीफ मालूम होना, तेज प्यास, मुँह सूखा, कै करने की इच्छा इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—ओपियम के बाद इससे विशेप लाभ होता है। ऐसा मालूम होना मानो शिर फट जायगा या पट्टीसे कसकर बाँध दिया गया है, रातमें तकलीफ का बढ़ना, खोंचा मारने जैसा, ज्वालाकर या सलाई भोंकने जैसा दर्द।

पल्सेटिला ३ या ६—पेटकी गड़बड़ी, घी अथवा तेलकी चीजें खाने या रजोदोप आदिके कारण शिरदर्द, शिरमें एकही ओर दर्द, ठढ मालूम होना, प्यासका न होना, रोगी उत्तेजित, रो देनेकी इच्छा इत्यादि।

इपीकाक ६ या ३०—शिरदर्द के साथ मिचली या कै होने पर इसे देना चाहिये।

ग्लोनइन ३ या ६—शिर में एकायक तेज दर्द, शिरमें मानो खून चढ़ रहा है, शिर हिलाने से दर्दका बढ़ना और ठंढे जलसे धोने पर आराम मालूम होना, नाड़ी बहुत तेज, चेहरा और आँखें लाल, कानोंमें भन्नाहट, गरमी के दिनोंका शिर-दर्द, गेस या विजली की वर्चाके नीचे काम करने वालों को उनको गरमी से शिर दर्द होने पर इसे ही देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—कपाल या कानके पीछे टपक जैसा दर्द, खोपडी गरम, सुबह पतले दस्त, शिरमें रक्त संचय या बवासीर का रक्तस्राव रुकने के कारण शिरदर्द।

विरेट्रमविर ३X या ६—सब नसोंका फडकना, बेहोशी कानमें भों भों आवाज, कै या मिचली के साथ अतिसार, शिर भरा हुआ और भारी मालूम होना।

एसिड फोस्फरिक ६ या ३०—दृष्टि क्षीणता, स्मरण और श्रवण शक्ति की कमी, शिर और गलेके पीछे दर्द, स्नायविक दुर्बलता या धातु दौर्बल्य के कारण यह रोग होना।

चायना ६ या ३०—रसरक्तके स्रावके कारण कमजोरी और उसके कारण दर्द, कानमें गुन गुन आवाज, चेहरा लाल, एक दिनके अन्तर से शिरदर्द, शिरके पिछले भागमें दर्द, स्पर्श, टह और मानसिक परिश्रम से दर्दका बढना, चलने फिरने से आराम मालूम होना।

कार्बोविज ६ या ३०—अधिक शराब पीनेके कारण शिरदर्द, शिरके पिछले भागसे लेकर आँखके ऊपरी भाग तक दर्द, नाकसे रक्तस्राव होने पर दर्दका घटना इत्यादि।

कोफिया ६ या ३०—चिड़ चिड़ा और चंचल स्वभाव, शिरमें कॉटी ठोकने जैसा दर्द, शिर बहुत छोटा मालूम होना, ऐसा मालूम होना मानो टुकड़े टुकड़े हो जायगा, अनिद्रा, खट्टी डकार, खुली हवामें दर्दका बढ़ना।

केमोमिला ६ या १२—क्रोधी और चिडचिड़ा स्वभाव, सर्दी के कारण शिर दर्द, एक गाल लाल और गरम, दूसरा फीका और ठंढा, पित्तकी कै, दर्दके कारण रोगी का चित्त ठिकाने न रहना।

आर्निका ६ या ३० —चोट, रक्तसंचय या स्नायविक दुर्बलता के कारण शिरदर्द, आँखके पपटेका भारी मालूम होना, आँखों में जलन, शिर गरम, कपाल और गर्दनकी नसोका फड़कना, रोशनी, हिलने डोलने और सोने से दर्द का बढ़ना इत्यादि।

जेल्सीमियम ६ या ३०—शिर दर्द के कारण रोगीको अँधेरा दिखायी देना, दर्द के समय चुपचाप पड़े रहना, अधिक पेशाब और नींद से आराम।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—पुराना शिरदर्द, ऋतुकी गड़बड़ी के कारण स्त्रियों को यह रोग होना, शिर और पैर बहुत ठण्डे, शिर में रूसी इत्यादि।

साइलीसिया ६ या ३०-स्नायविक शिरदर्द, दर्द प्रायः एक ही ओर होता है। गर्दन के पास से शुरू होकर ऊपर को बढ़ता है। शिर झुकाने, ठढी हवा लगने, बोलने या मानसिक परिश्रम करने से दर्द का बढ़ना।

अरममेट ६ या ३०-गरमी या रक्ताधिक्य के कारण शिर दर्द, कपाल में सुई चुभोने जैसा दर्द, अनिद्रा, आत्महत्या करने की इच्छा, सुबह और ठढी हवा में दर्द का बढ़ना, चलने फिरने या गरमी में आराम।

लेकेसिस ६ या ३०—खोपड़ी में जलन, कपाल में दर्द, खड़े होने पर ऐसा मालूम होना मानो मूर्च्छा आ जायगी, शरीर और मन निस्तेज, सोने के बाद तकलीफ का बढ़ना।

फोस्फरस ६ या ३०—आँखों पर जोर पड़ने और मानसिक परिश्रम के कारण शिरदर्द, शिरका पिछला भाग ठंढा, हर तीसरे दिन दर्द होना।

मेली लोटस १ X—रक्तसंचय के कारण शिर दर्द, दर्द के कारण रोगी का व्याकुल होकर शिर पटकना, पागल की तरह बकझक करना इत्यादि लक्षणों में इसे देनेसे बड़ा लाभ होता है।

मेग्नेशिया फस १२ X चूर्ण—असह्य और भ्रमणशील वेदना, बीच बीच में दर्द का वन्द हो जाना इत्यादि। इसे गरम पानी के साथ सेवन करना चाहिये।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ६—शिरके अन्दर दर्द और चक्कर, कपड़े से शिर बाँधने पर आराम मालूम होना।

सिमिसिफिउगा ३—हिस्टीरिया रोगवाली स्त्रियों का शिरदर्द, शराबी और विद्यार्थियों का शिरदर्द, स्नायुघात और रजोदोष के साथ शिरदर्द, शिरके पिछले भाग में दर्द, प्रलाप, अनिद्रा और दृष्टि विकार।

आवश्यक सूचना—साधारण शिरदर्द के लिये दवा चुनते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि रोशनी बरदाश्त न होने पर बेलेडोना, आवाज न बरदाश्त होने पर स्पाइजिलिया

कमरे में आदमियों का चलना बरदाश्त न होने पर सेगुइने-रिया, किसी भी तरह की गन्द नापसन्द होने पर सल्फर या एकोनाइट और रोगी को छूना नापसन्द हो, बिछौने की शिकायत हो तथा ठंढी हवा, मेघ गर्जना तूफान आदि से दर्द बढ़ता हो तो सीपियासे अधिक लाभ होता है।

शिरदर्द में विशेष परहेज़ी करने की जरूरत नहीं, पर उत्तेजक और घी तेल के पके पदार्थ न खाना चाहिये। सभी तरह की मानसिक उत्तेजनाओं से बचना चाहिये और स्नायविक दर्द हो तो ठंढे पानी से स्नान करना चाहिये।

अधकपारी।

(Hemicrania)

किसी निर्दिष्ट समय पर आधे शिर में जो दर्द होता है, उसे अधकपारी या स्नायविक शिरदर्द कहते हैं। अधिक मानसिक परिश्रम, अनिद्रा, पेट का गोलमाल, जरायुदोष आदि कारणों से यह रोग होता है। कभी कभी मातापिता को यह रोग होने से उनके बच्चों को भी विरासत में मिलता है

इसमें शिरके दाहिने या बाँयें हिस्से में तेज़ दर्द होता है। कभी कभी ऐसा मालूम होता है मानो दर्दवाले स्थान में काँटी ठोक दी गयी है। दर्द प्राय. सुबह सूर्योदय के साथ शुरु होता

मेली लोटस १ x—रक्तसचय के कारण शिर दर्द, दर्द के कारण रोगी का व्याकुल होकर शिर पटकना, पागल की तरह बकभक करना इत्यादि लक्षणों में इसे देनेसे बड़ा लाभ होता है।

मेग्नेशिया फस १२ X चूर्ण–असह्य और भ्रमणशील वेदना, बीच बीच में दर्द का बन्द हो जाना इत्यादि। इसे गरम पानी के साथ सेवन करना चाहिये।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ६–शिरके अन्दर दर्द और चक्कर, कपड़े से शिर बाँधने पर आराम मालूम होना।

सिमिसिफिउगा ३–हिस्टीरिया रोगवाली स्त्रियों का शिरदर्द, शराबी और विद्यार्थियों का शिरदर्द, स्नायुवात और रजोदोष के साथ शिरदर्द, शिरके पिछले भाग मे दर्द, प्रलाप, अनिद्रा और दृष्टि विकार।

आवश्यक सूचना—साधारण शिरदर्द के लिये दवा चुनते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि रोशनी बरदाश्त न होने पर बेलेडोना, आवाज न बरदाश्त होने पर स्पाइजिलिया

कमरे में आदमियों का चलना बरदाश्त न होने पर सेगुइने-रिया, किसी भी तरह की गन्द नापसन्द होने पर सल्फर या एकोनाइट और रोगी को छूना नापसन्द हो, बिछौने की शिकायत हो तथा ठंढी हवा, मेघ गर्जना तूफान आदि से दर्द बढ़ता हो तो सीपियासे अधिक लाभ होता है।

शिरदर्द में विशेष परहेज़ी करने की जरूरत नहीं, पर उत्तेजक और घी तेल के पके पदार्थ न खाना चाहिये। सभी तरह की मानसिक उत्तेजनाओं से बचना चाहिये और स्नायविक दर्द हो तो ठंढे पानी से स्नान करना चाहिये।

अधकपारी।

(Hemicrania)

किसी निर्दिष्ट समय पर आधे शिर में जो दर्द होता है, उसे अधकपारी या स्नायविक शिरदर्द कहते हैं। अधिक मानसिक परिश्रम, अनिद्रा, पेट का गोलमाल, जरायुदोष आदि कारणों से यह रोग होता है। कभी कभी मातापिता को यह रोग होने से उनके बच्चों को भी विरासत में मिलता है

इसमें शिरके दाहिने या बाँयें हिस्से में तेज़ दर्द होता है। कभी कभी ऐसा मालूम होता है मानो दर्दवाले स्थान में कांटी ठोक दी गयी है। दर्द प्राय. सुबह सूर्योदय के साथ शुरु होता

पसीने में पेशाव जैसी गन्ध, साधारण अवस्था में थोड़ा या गॅदला पेशाव, दर्द के समय तादाद में अधिक और साफ पेशाव।

सीपिया ६ या ३०—दाहिनी ऑख पर तेज दर्द, मानो कोई खोचा मार रहा है या कॉटी ठोंक रहा है, दर्द के कारण रोना, साथ ही मिचली या कै, शिर झुकाने या हिलाने से दर्द का बढ़ना, रजोदोष या प्रदर के साथ स्त्रियों का शिरदर्द, ऐसा ही दर्द अगर बायीं ओर हो तो एकोनाइट ३ या ६। कुछ घटों में एकोनाइट से लाभ न हो तो सल्फर ३० या साइलीसिया ६।

आर्सेनिक ६ या ३०—बायी ऑख पर दपदपी जैसा दर्द, अस्थिरता, प्यास, कै, ठंढे पानी से क्षणिक आराम।

नक्सवोमिका ३०—सुबह सोकर उठने के बाद दर्द का शुरू होना, दिन को बढ़ना, जी मिचलाना और कै, विश्राम और मानसिक परिश्रम से दर्द का बढ़ना।

नेट्रमम्यूर ६ या ३०—सुबह से दर्द का शुरू होना, घूमने से दर्द घटना, खॉसने से बढ़ना।

और बेचैनी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। दो दिन में इस से लाभ न हो तो एपिस ६ या ३० दीजिये। इससे पानी भर जानेके कारण पपटोंकी सूजन, पपटोंका जुड़ जाना, आँखों का भारी मालूम होना, बहुत खुजली, सुई चुभोने जैसी ज्वालाकर वेदना आदि लक्षणों में काफी लाभ होता है। बारबार ठंढे पानी की पट्टी चढ़ाने से दर्द भी आराम हो जाता है। और सब शिकायतें दूर हो जायें लेकिन सिर्फ दर्द मौजूद रहें या पपटे सूजे हुए से मालूम हों तो हिपर सल्फर ६ या ३० देने से यह शिकायत भी दूर हो जाती है।

सल्फर ६ या ३०—बहुत अधिक सूजन, पपटे बहुत फूले हुए, लाल और गरम, जोरो की जलन, श्लेष्मा और पीब निकलना, रातमें पलकों का जुड़ जाना और रोशनी बरदास्त न होना—इन लक्षणों में हिपर सल्फर के बदले इसे देना चाहिये। इससे काफी लाभ न हो तो इसके बाद फिर एकोनाइट दीजिये।

बेलेडोना ३x या ६—हिपरसल्फर देने पर भी अगर फायदा न हो और पपटों में जलन, सूजन, लाली, खुजली, पलकों का जुड़ जाना, खोलने पर खून निकलना, उनका

करने से शिरदर्द उसके साथ ही आराम हो जाता है। धूप, अधिक इन्द्रियसेवा, मानसिक परिश्रम और उत्तेजक पदार्थों का सेवन इस रोग में हानिकारक है।

६–आँख के रोग।

पपटे का प्रदाह।

(Inflammation of the Eyelids.)

अनेक बार केवल आँख के पपटे या पलकों मे प्रदाह होता है। इस अवस्था में नीचे या ऊपर का एक अथवा दोनो पपटे सूज जाते हैं, लाल हो जाते हैं और उनमें प्रदाह पैदा हो जाता है। इसके कारण आँखे फूल जाती है, दुखती हैं, किरकिराती हैं, उनसे पानी गिरता है और रात मे दोनो पलकें जुड जाती है। लेकिन आँख के भीतरी हिस्से अर्थात् कोया और पुतली आदि में लाली, दर्द या किसी तरह की तकलीफ नहीं होती। इस रोग की प्रधान प्रधान दवाएँ नीचे लिखी जाती हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६–पपटों में लाली, कड़ी सूजन, ज्वालाकर गरमी, पपटे सूखे अथवा पपटे फीके, उनमें पीलापन लिये हुए लाली, सूजन, चमक, खींचन, साथ ही बुखार

और बेचैनी इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिये। दो दिन में इस से लाभ न हो तो एपिस ६ या ३० दीजिये। इससे पानी भर जानेके कारण पपटोंकी सूजन, पपटोंका जुड़ जाना, आँखों का भारी मालूम होना, बहुत खुजली, सुई चुभोने जैसी ज्वालाकर वेदना आदि लक्षणों में काफी लाभ होता है। बारम्बार ठंढे पानी की पट्टी चढ़ाने से दर्द भी आराम हो जाता है। और सब शिकायतें दूर हो जायें लेकिन सिर्फ दर्द मौजूद रहे या पपटे सूजे हुए से मालुम हों तो हिपर सल्फर ६ या३० देने से यह शिकायत भी दूर हो जाती है।

सल्फर ६ या ३०—बहुत अधिक सूजन, पपटे बहुत फूले हुए, लाल और गरम, जोरो की जलन, श्लेष्मा और पीब निकलना, रातमें पलकों का जुड जाना और रोशनी बरदास्त न होना—इन लक्षणों में हिपर सल्फर के बदले इसे देना चाहिये। इससे काफी लाभ न हो तो इसके बाद फिर पल्सेटिला दीजिये।

बेलेडोना ३X या ६—हिपरसल्फर देने पर भी अगर फायदा न हो और पपटों में जलन, सूजन, लाली, खुजली, पलकों का जुड जाना, खोलने पर खून निकलना, उनका

भारी या सुन्न मालूम होना आदि लक्षण मौजूद रहें तो इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०–पपटों के भीतरी भाग में सूजन, लाली और दर्द, बहुत जलन, आँखोंका मुश्किल से खुलना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०–आँख खोलने पर भी बल पूर्वक उसका बन्द हो जाना, सूजन, आँख खोलने में बड़ा कष्ट, काटने जैसा तेज दर्द, पलक के किनारे पपड़ी जमना, पलकका बाहरकी ओर मुड़ जाना, कभी कभी बिल्कुल ही दर्द न मालूम होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इससे पूरा लाभ न होने पर हिपर सल्फर ६ या ३०।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०–पपटों की सूजन के साथ चेहरे पर या कानके पीछे रसयुक्त खुजली के दाने निकलना, आँख खोलने पर पलकों का फट जाना और उनसे खून निकलना, पलकोंके किनारे दाने या पपड़ी।

रसटक्स ६ या ३०—छोटे और बड़े बच्चों के पपटों में भीतर की ओर जो सूजन होती है, उसमें इससे विशेष लाभ होता है। आँखों का सदा बन्द रहना, किसी तरह खोलने पर पपटों के भीतरी भाग में लाल और मोटी सूजन, उनसे पीला पीव निकलना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

युफ्रेशिया ६ या ३०—पुरानी बीमारी, दिनमें खुजली, रातमें जुड़ जाना, लाली, कुछ सूजन, पानी या पीव निकलना, रोशनी बरदाश्त न होना, कभी कभी शिरदर्द और शिर में गरमी मालूम होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पलकों के किनारों में जलन और खुजली, छूने से बहुत सूजन मालूम होना, खासकर सुबह के वक्त। युफ्रेशिया के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—नक्सवोमिकासे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एन्टिम क्रूड ६ या ३०—उपरोक्त दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये। खासकर, जब पपटे लाल बने रहें, आँखोंके कोनों में पीव इकट्ठा हो जाया करे, रोशनी बरदास्त न हो और काँटी ठोकने जैसा दर्द होता हो।

इनके अतिरिक्त पढ़ते समय पपटों में जलन और तकलीफ मालूम हो तो सल्फर देना चाहिये। पपटा बहुत भारी मालूम होने पर केमोमिला। आंखें बहुत सूखी, पलक उठाने पर तकलीफ और आख से आसू निकलना, आंखे गरम इत्यादि में विरेट्रम। पपटों में सूजन और कड़ापन होने पर कल्केरिया और आयोडियम। आँखें सूखी हुई, खासकर सुबह के वक्त, एलुमिना। पपटों के किनारे सूजन और लाली, पलकों का गिर जाना इत्यादि में एसिडफस। पलक का गिर जाना और किनारे पर छोटी छोटी फुन्सियां होनेपर सीपिया। यह दवाएँ नयी बीमारी में निम्न क्रमकी और पुरानी बीमारी में उच्चक्रमकी देनी चाहिये।

नेत्र प्रदाह या आँख उठना।

(Ophthalmia)

आँखमें धूल या बालूके कण गिरना, सरदी या ठंढ लगना, चोट या धुआँ लगना, चेचक, हाम या सूजाककी बीमारी होना

आदि कारणोंसे आँखमें प्रदाह होता है। लोग इसे आँख आना या आँख उठना कहते हैं। इसमें आँखके कोयेका लाल हो जाना, आँख में सूजन और दर्द, पानी गिरना, आँख में जलन, सोने पर पलको का जुड जाना, कभी कभी पीव या कफ सा पदार्थ निकलना, आँखो का किरकिराना इसके कारण आँख मलना या खुजलाना, साथ ही कभी कभी बुखार या शिरमें तेज दर्द इत्यादि लक्षण प्रकट होते है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ x या ६—यह इस रोगकी सबसे बढ़िया दवा है। खासकर जब तेजी के साथ रोगका हमला हो और आनन फानन बीमारी बढ़ती जा रही हो, साथ ही समूची आँख लाल या आँख में लाल डोरे, रोगीका बहुत रोना, आँखे सूखी या उनमें तेज दर्द आदि लक्षण मोजूद हों।

एपिस ३ या ६—आँखका प्रदाह, खासकर बायीं आँख का, रातको तकलीफ का बढ़ जाना, ऊपर का पपटा फूला हुआ, आँख लाल, उसमें जलन, खोंचा मारने जैसा दर्द, जल पूर्ण, पीव बहना, रोशनी बरदास्त न होना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—आँखकी अपेक्षा पलकों के कोनों में अधिक लाली, आँखों में जलन, मानो उनमें

बालू पड़ गया है, आँखो से बहुत आँसू निकलना, रोशनी बरदास्त न होना, खास कर सुबह में, साथ ही बुखार, सुबह और शामको बुखारका बढ़ जाना इत्यादि ।

केमोमिला, १२ या ३०–बच्चोंकी बीमारी, खोंचा मारने, दवाने या जलने जैसा दर्द, मानों आँखमें आग भरी हुई है, सुबह आंखो मे सूजन, आँखें बन्द या बहुत सूखी, दर्द के कारण रोगी का बहुत चिड चिड़ाना इत्यादि ।

बेलेडोना ६ या ३०–आँख एक दम लाल या उसमें बड़े बड़े डोरे, बहुत गरमी ज्वालाकर तेज आँसू अथवा आँखें एकदम सूखी हुई और रोशनी जराभी बरदास्त न होना, शिरमें दर्द, कभी कभी इस बीमारी के साथ तेज जुकाम ।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ३ या ६–बच्चों की बीमारी, गाढ़ा गाढ़ा मलाई जैसा या पीले रंग का बहुत पीब निकलना ।

पल्सेटिला ६ या ३०—अर्जेन्टम नाइट्रिकम से फायदा न होने पर इसे देना चाहिये। स्त्रियोंकी बीमारी में इससे अधिक लाभ होता है।

मर्क्युरियस सल ६—आँख लाल, ज्वालाकर वेदना, आँखसे बहुत आँसू या पतला स्राव निकलना, स्रावके कारण पलक और गालों का लाल हो जाना, रात में आँखके बाहर और भीतर का दर्द बहुत बढ़ जाना, आगकी लपट या बत्ती की रोशनी बहुत बुरी मालूम होना, गण्डमाला धातु या सूजाक के कारण यह रोग होना।

सल्फर ६ या ३०—रात में रोगी को हलका बुखार और बेचैनी आँखमें सुई चुभोने जैसा तेज दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। उपरोक्त दवाओंके लक्षण मोजूद होने पर भी जब उनसे पूरा पूरा लाभ न हो तब इसकी कई खुराकें देनेके बाद पुन वही दवाएं देने से अधिक लाभ होता है।

युफ्रेशिया ३ या ६—आंखमें भार मालूम होना, आंखमें श्लेष्मा ओर आसुओंका सञ्चय, पलकों का जुड़ जाना,

नक्सवोमिका ६ या ३०—नशेखोर या शराबियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—स्त्रियों को रजस्राव बन्द हो जाने के कारण यह रोग होना, धुंधला दिखायी देना, शामके वक्त तकलीफ का बढ़ना।

सल्फर ६ या ३०—आंखमें जलन, सूर्य की रोशनी बरदास्त न होना, आंखों के सामने काले काले धब्बोंका उड़ते रहना, खोपड़ी और हाथ पैरके तलवो में गर्मी या जलन।

मर्क्युरियस ६ या ३०—आंखों में जख्म और आंखों के सामने कुहासा दिखायी देना।

हायोसायमस ६ या ३०—बहुत कम दिखायी देना, आंखके सामने तरह तरह की चीजें दिखायी देना दो चीजों के बदले एक चीज दिखायी देना।

स्ट्रैमोनियम ६ या ३०—बहुत कम या बिल्कुल ही न दिखायी, देना, शिरमें पसीना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०-धुंधला दिखायी देना,पढ़ते समय अक्षरों का काँपना,आँख लाल, दीपक के चारो ओर गोल चक्कर सा दिखाई देना।

जेल्सीमिय ६ या३०—किसी चीज पर नजर गडाने से आँखका बन्द हो जाना, शिरमें चक्कर, धुंधला दिखायी देना या बिल्कुल ही न दिखायी देना इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०—अधिक इन्द्रिय सेवा या शोक और दु:ख आदि मानसिक आवेगों के कारण दृष्टि क्षीणता, पढ़ने के समय अक्षर धुधले दिखायी देना इत्यादि।

हृदयकी बीमारी के साथ यह रोग होनेपर केक्टस। तेज शिरदर्द या अध कपारी के साथ दृष्टि हीनता,होने पर सेङ्ग्इ-नेरिया। पुतली में दर्द रहने पर सिमिसिफिउगा। कोये में दर्द रहने पर स्पाइजिलिया या कोलोसिन्थ। खूनकी कमीके कारण कम दिखायी देने पर फेरम आर्सेनिक या युफेशिया तथा अदममेट, वेराट्रा कार्व, कल्केरिया, वेलेडोनियम,

कस्टिकम, लाइकोपोडियम आदि दवाएँ भी लक्षणानु
व्यवहार की जाती है।

आवश्यक सूचना—तेज रोशनी और धूप आदि
आँखको बचाना चाहिये। छोटे अक्षरों की पुस्तक प
सीना पिरोना, आँख पर जोर पड़ने वाले काम करना
हानिकारक है। पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये और
चतुर नेत्र परीक्षक की सलाह लेकर चसमा ले
चाहिये।

आँखके अन्यान्य रोग।

अर्धदृष्टि (Hemiopia)-इस रोग में दृष्टि दो
कारण सब चीजों का आधा हो हिस्सा दिखायी देता
कल्केरिया कार्ब, किनिनम सल्फ, एसिड म्यूर, नेट्रम म
रसटक्स, सीपिया, अरम मेट, डिजिटेलिस और फॉस्फ
इस रोगकी प्रधान दवाएं है। केवल दाहिनी
चीज दिखायी देने पर साइक्ले मेन, लिथि
पोडियम तथा बायां हिस्सा दिखायी देने
रिया, एसिडम्यूर तथा नेट्रमम्यूर से अ

वक्रदृष्टि (Strabismus-Squint

रोगके रोगियों को लोग कँचा कहा करते है। इस रोग में एलुमिना, स्पाइजिलिया, साइना हायोसायमस, जेल्सीमियम, साइक्लेमेन, स्ट्रेमोनियम, साइक्यूटा, फोस्फरस आदि दवाओं से काफी लाभ होता है। इस रोगके लिये खास तरह का चसमा मिलता है। अच्छी आँखको बन्द रखकर रोगी आँख से देखते रहने पर बहुत फायदा होता है।

दूर दृष्टि (Hypermetropia)—इस रोग में नजदीक की चीज साफ नहीं दिखायी देती, लेकिन दूरकी चीज अच्छी तरह देखी जा सकती है। इस रोग के रोगियों को चसमा व्यवहार करना पडता है। कल्केरिया, हायोसायमस, नेट्रम-म्यूर, नक्सवोमिका, सीपिया ओर सल्फर इन दवाओं के सेवन से भी लाभ होता है।

निकट दृष्टि (Myopia)—इस रोग में नजदीक की वस्तु साफ दिखायी देती है, पर दूर की वस्तु साफ नहीं दिखायी देती। अधिक पढने लिखने या सीने पिरोने वालों को यह रोग होता है। इस रोग में चसमा व्यवहार करना पडता है। आवश्यकतानुसार कल्केरिया, लाइकोपोडियम, फोस्फरस, पल्सेटिला ओर सल्फर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जाती हैं।

रतौन्धी [Himerolopia]—इस रोग के रोगियों को धीमी रोशनी या रात में कोई वस्तु दिखायी नहीं देती। फाइ-जस्टिग्मा इस रोग की अच्छी दवा है। नक्सवामिका, हेला-

थोरस, चायना, वेलेडोना, लाइकोपोडियम, हायोसायमस, रेननक्युलस, नाइट्रिक एसिड, पल्सेटिला, स्ट्रैमोनियम, विरेट्रम, सल्फर और मर्क्युरियस, आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

दिनौन्धी [Nyctalopia]—इस रोग में दिनके समय या उजाले में रोगी कुछ देख नहीं सकता पर अंधेरे में उसकी आँखें ठीक काम देती हैं। बोथूप्स इस रोग की प्रधान दवा है। लक्षणानुसार साइलीसिया, फोस्फरस, सल्फ्युरिक एसिड, वेलेडोना, स्ट्रैमोनियम,मर्क्युरियस, कोनायम, जेल्सीमियम, नक्सवोमिका और पल्सेटिला आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

द्वित्व दृष्टि [Diplopia]—इस रोग में सब चीजें दो दो दिखायी देती हैं। युफोविया, एगरिकस, एन्टिमटार्ट, अर्जेन्टम नाइट्रिकम और अरममेट आदि दवाओं से इस रोग में लाभ होता है।

धूम दृष्टि [Glancom]—इस रोग में आँखों के सामने धुआँ या कुहासा सा दिखायी देता है। एकोनाइट, अर्जेन्टम, नाइट्रिकम,फोस्फरस,वेलेडोना,जेल्सीमियम और स्पाइजिलिया आदि दवाएँ लक्षणानुसार देने से इस रोग में लाभ होता है।

जाल दृष्टि [Muscal Volita .tes]—इस रोग मे आँखों के सामने जाल सा बिछा हुआ दिखायी देता है। कभी

कभी फतिङ्गे, धूल के कण जैसी चीजें उड़ती दिखायी देती हैं। यह रोग प्रायः शारीरिक दुर्बलता या कमजोरी के कारण होता है, इसलिये पुष्टिकर चीजें खाने से यह रोग आराम हो सकता है। आवश्यकतानुसार चायना, एसिडफस और फोस्फरस आदि दवाओं के सेवन से भी लाभ होता है।

अंशिक दृष्टि [Partial Blindness] इस रोग में आँख के सामने की चीजें पूरी पूरी नहीं दिखायी देतीं। किसी वस्तु का केवल ऊपरी अंश दिखायी देने पर अरमेट, दाहिना अंश दिखायी देने पर लीथियाकार्ब और बायाँ अंश दिखायी देने पर लाइकोपोडियम से लाभ होता है। [अर्ध-दृष्टि देखिये]

क्लान्त दृष्टि—इस रोग में किसी चीज की ओर कुछ ही देर तक देखने से आँखें थक जाती हैं। कल्केरिया कार्ब और नेट्रमम्यूर से इस रोग में काफी लाभ होता है।

आँख का फड़कना [Nyctitation]-इस रोग में आँख की पलकें लगातार फड़का करती हैं। इससे कभी कभी कष्ट होता है। पल्सेटिला या इग्नेशिया के सेवन से इस रोग में काफी लाभ होता है।

पलक का पक्षाघात [Ptosis] इस रोग में आँख की ऊपरी पलक या पपटे में लकवा हो जाता है। इससे इच्छा करने पर पलक ऊपर को नहीं उठती और आँख सदा ढकी

रहती है। कुछ देखने की जरूरत होने पर उँगलियों से पलक को ऊपर उठाना पड़ता है। उपदंश जनित लकवा, मैलेरिया जनित कमजोरी और वृद्धावस्था के कारण यह रोग होता है। एलुमिना, कस्टिकम, युफ्रेशिया, जेलसीमियम, केलमिया, लेडम, नेट्रमम्यूर, रसटक्स, सीपिया और हायोसायमस आदि दवाओं से इस रोग में लाभ होता है।

पुतली का प्रदाह [Iritis]—गरमी, वात, चोट, आँखों का अधिक परिश्रम आदि कारणों से अनेक वार आँख की पुतली में प्रदाह उत्पन्न होता है। इससे पुतली का रंग बदल जाना, कम दिखायी देना, आँख में लाली, सूजन और दर्द, आँख से पानी गिरना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। नयी बीमारी और हरारत होने पर एकोनाइट ३ या ६। चोट लगने के कारण रोग होने पर आर्निका ३या६। दपदप वेदना, शिर दर्द और शिर में चक्कर होने पर बेलेडोना ६। वात के कारण रोग, आँख हिलाने पर और शामको तथा रात में तकलीफ बढ़ने पर ब्रायोनिया ६ या ३०। प्रदाह के साथ रक्त संचय और दर्द होने पर जेलसीमियम ६ या ३०। प्रमेह के कारण रोग होने पर फोस्फरिक एसिड ६ या ३०। इनके अतिरिक्त मर्क्युरियस ६या ३०, पल्सेटिला ६ या ३०, रसटक्स ६ या ३० और स्पाइजिलिया दवाओं से भी६ या ३० आदि लाभ होता है।

आँख मे ठेंठर—पुतली का प्रदाह होने पर अनेक वार उसमें जख्म हो जाता है और उस जख्म के रास्ते भीतर के टिसु गाँठ वन कर मटर को तरह वाहर निकल पड़ते हैं। इसे ठेंठर कहते हैं। आँख से लेकर शिर तक दर्द मालूम होने पर सिमिसिफिउगा। आँख में जलन और डक मारने जैसा दर्द होने पर एपिस। ज्वालाकर अश्रुस्राव, रोशनी वरदास्त न होना, वेचैनी आदि लक्षणों में आर्सेनिक। दर्द का वाहर की ओर से भीतर की ओर बढ़ना, रोशनी से डरना आदि लक्षणों में अरममेट। गहरा और सडना युक्त जख्म, शिर को ढक रखने की इच्छा आदि में साइलीसिया। गरमी या सूजाक के कारण रोग होने पर थूजा। यह सब दवाएँ ३ से लेकर ३० क्रम तक की व्यवहार करनी चाहिये। लक्षणानुसार अर्जेन्टम नाइट्रिकम, एसाफिटीडा, कल्केरिया कार्व, कल्केरिया आयोड, केमोमिला, सिना वारिस, कोनायम, क्रोटन, युफ्रेशिया, ग्रेफाइटिस, हिपर, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, मेकसिनिनम, सल्फर और केलीवाइकोम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आँख में फूली—पुतली के प्रदाह या जख्म के कारण आँख में एक तरह की झिल्ली पैदा हो जाती है। पुतली पर यह झिल्ली होने से रोगी को कम दिखायी देता है। झिल्ली वहुत मोटी या अधिक होने पर विल्कुल दिखायी नहीं देता।

पारा का दोष रहने पर नाइट्रिक एसिड, गण्डमाला धातु में कल्केरिया कार्ब,चोट लगनेकेकारण यह रोग होने पर अर्निका और साधारण रोग में युफ्रेशिया से इसमें फायदा होता है। युफ्रेशिया, मदरटिंचर १०बूंद आधी छटाक पानी या गुलाब जल में मिला कर तीन या चार बार आँख में डालने से बहुत लाभ होता है। चेलीडोनियम, क्युप्रम, एलुमिना, हिपर, केलीबाइक्रोम, नेट्रम सल्फ, पल्सेटिला, रसटक्स, साइलिसिया और स्पजिया आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

कई उपसर्गों की दवायें—आँखों में जलन मालूम होने पर बेलेडोना, आर्सेनिक और सल्फर। आँखें सदा खुजलाने पर सल्फर और पल्सेटिला। आँखों से पानी गिरने पर युफ्रेशिया और पल्सेटिला। ऐसा मालूम होना मानों आँखों में बालू पड़ा है—कस्टिकम, हिपर सल्फर, नेट्रमम्यूर और सल्फर। रातमें आँखोंका दर्द बढ़ने पर आर्सेनिक और सिफिलिनम। धूप या तेज रोशनी में दर्द बढ़ने पर मर्क्युरियस ३। पढ़ने के समय आँखें तुरन्त थक जाती हों तो जेबोरेन्डी या नेट्रम आर्स। पढ़ने के समय अक्षर जुड़े हुए मालूम होने पर नेट्रम म्यूर। पढ़ने के समय मानों अक्षर गायब हुए जाते हों—साइक्यूटा। आँखोंमेंठीक एकही समय दर्द शुरू होनेपर सिड्रन

आवश्यक सूचना—नेत्र रोग की सभी दवाएँ खासकर नयी बीमारी में निम्नक्रम की ही व्यवहार करनी चाहिये।

यदि होमियोपैथिक दवा खायी जाय तो बाहर से का जल, सुरमा, अजन या किसी तरह की भी कोई दवा आँख में न लगाना ही अच्छा है। यदि स्वय चिकित्सक ने ही कोई दवा बतलायी हो तो वह सहर्ष व्यवहार की जा सकती है।

७—कर्ण—रोग।

(Diseases of the Ear)

कर्ण—प्रदाह

(Otitis)

यह रोग प्राय' ठढ या सर्दी लगने के कारण होता है। कान में टनक, लाली और सूजन, कानके अन्दर जलन हिलने डोलने या हाथ रखने से दर्द का बढना, कम सुनायी देना, धीमा बुखार इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। कभी कभी किसी चर्म रोग के साथ भी यह रोग दिखायी देता है। कभी दर्द तो बन्द हो जाता है, पर कानसे पीब बहने लगता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६—नयी बीमारी, कान उज्ज्वल, लाल, फूला हुआ और गरम, कानमें प्रदाह, चिलकने जैसा दर्द, साधारण बुखार इत्यादि में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—कुछ कालापन लिये हुए लाली, कानके अन्दर दूर तक प्रदाह, दपदपी, काटने या दवा रखने जैसा दर्द इत्यादि। एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—कानके भीतर और बाहर प्रदाह छुरीसे कट जाने जैसा दर्द, कानसे पीब बहना, कान का बन्द हो जाना, कुछ सुनायी न देना, हाम ज्वरके बाद इस रोगका होना इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ३ या ६—कानके अन्दर दपदपी, तेजदर्द, कानसे सडा हुआ बदबूदार खून मिला पीब निकलना, कानमें फोड़ा फुन्सी, रातमें दर्दका बढ़ना इत्यादि। बेलेडोना के बाद इसे देनेसे अधिक लाभ होता है।

आर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण अथवा कान में फोड़ा होनेके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६—आर्निका से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—सर्दीके कारण कानका प्रदाह, दर्दके कारण रोगीका पागल हो उठना, चिडचिड़ा स्वभाव, सुई भोंकने जैसा दर्द इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या सल्फर ३०—पुरानी बीमारी में यह दवाएँ देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—कान को रूई या फ्लानेल से ढक रखना चाहिये ताकि सरदी न लग सके। फ्लानेल,नामक की पोटली, स्पज या गरम पानी द्वारा सेंकने से दर्द कम हो जाता है।

कर्णमूल प्रदाह।

(Mumps)

कानके सामने और कान के नीचे कई गिल्टियाँ रहती हैं। इन गिल्टियों में प्रदाह होने पर वह कर्णमूल प्रदाह कहलाता है। यह रोग प्राय वर्षा और जाड़ेमें ही होता है। युवक और बच्चों को छोड़ कर बड़ी उम्रके आदमियों को नहीं होता। यह संक्रामक भी होता है। रोगी की छुआ छूतसे दूसरों को भी हो जाता है। इसमें कानकी एक या दोनों ओरकी गाँठे

फूलकर कड़ी हो जाती है और तेज दर्द, साधारण बुखार, कुछ चिबा या निगल न सकना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी कान की गिल्टियोंका दर्द बन्द होकर स्त्रियोंके स्तन और पुरुषों के अंडकोष में यह बीमारी प्रकट होती है। उस अवस्था में यह रोग अधिक कष्टकर मालूम होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६—नयी बीमारी, बुखार, प्यास, बेचैनी, सरदी लगने के कारण यह रोग होना।

मर्क्युरियस बिन आयोडेटस ३X या ६—यह इस रोग की प्रधान दवा है। सरदी के कारण रोग होना, गिल्टी कड़ी और फूली हुई, चिबाने और निगलने में कष्ट, मुँह से लार बहना, मुँहमें बदबू, बुखार कम इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—कर्णमूलका प्रदाह, सूजन में लाली, बहुत दर्द, बाहर से सूजन का घट जाना और दिमाग पर आक्रमण करना, इसके कारण बेहोशी और बकझक आदि लक्षणोंका प्रकट होना।

हायोसायमस ६ या ३०—दिमाग आक्रान्त होने पर, बेलेडोना से लाभ न होतो इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—रोग स्थान बदल कर स्त्रियोंके स्तन और पुरुषों के अण्डकोष में प्रकट होने पर इसे देना चाहिये। पल्सेटिला से लाभ न होने पर मर्क्युरियस या सल्फर दिया जाता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सूजनका एकायक गायब होकर मस्तिष्क विकारके के भयकर लक्षण प्रकट होने पर इससे भी बहुत लाभ होता है।

रसटक्स ३ या ६—सूजन का रग गहरा लाल और बायीं ओर यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

हिपरसल्फर ६ या ३०—गिल्टियों में पीव उत्पन्न हो जाने पर इसे देनेसे वे फूटकर बह जाती है।

साइलीसिया ३० या २००—हिपरसल्फर के बाद इसे देना चाहिये। यह जख्मा को सुखाकर आराम कर देता है।

कार्बोवेज ६ या ३०—धीमा बुखार,सूजन में कड़ापन, पाकाशय में गोलमाल, इत्यादि लक्षणों में और मर्क्युरियस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। इससे भी लाभ न होतो कक्युलस देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त फाइटोलेक्का, आर्सेनिक, चायना, लेकेसिस, क्रियोजोट,डिजिटेलिस, स्पाइजिलिया और केक्टस आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जाती है। यदि यह रोग चेचक, हामज्वर, लाल ज्वर, मैलेरिया आदि रोगों के साथ प्रकट हो तो उसी रोग की दवाओं में से दवा चुनी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—रोगीको सदा सुला रखना चाहिये और सरदीसे बचाना चाहिये। सेंकने से लाभ होता है। रोगके आरंभ में और जब तक रोगी को चिबाने या निगलने में तकलीफ हो,साबूदाना बार्लो और शोरवा आदि हलकी पतली और पुष्टिकर चीजें खाने को देनी चाहिये।

कर्णशूल या कान में दर्द।

(Otalgia or Earache)

ठंढ या सरदी लगना, कानमें पानी या हवाका भर जाना, हाम और चेचक आदि बीमारियों का होना आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। इसमें भी कर्ण प्रदाह की तरह

लाली, दर्द हाथ न लगा सकना आदि लक्षण प्रकट होते हैं, परन्तु कर्ण प्रदाह की तरह इसमें दपदपी या टनक और बुखार यह लक्षण नहीं रहते।

एकोनाइट ३X या ६—सर्दी लगने के कारण रोग होने पर पहले इसे ही आजमाना चाहिये।

एलियम सिपा ६ या ३०—जुकाम के साथ कान में दर्द, रात में और बन्द कमरे में दर्द का बढ़ना, बायें कान में दर्द।

केमोमिला १२ या ३०—कान में छुरी मारने जैसा दर्द, कान सूखा और उसमें मैल का न होना, असह्य दर्द।

मर्क्युरियससल ६ या ३०—पसीना आना पर उससे कोई आराम न मालूम होना, गालों तक दर्दका फैलना, ज्वाला कर वेदना, बाहरसे जलन या भीतर से ठंढ मालूम होना, कान से जरा स्राव होना इत्यादि लक्षणों में और बच्चों की बीमारीमें इससे बड़ा लाभ होता है।

सल्फर ६ या ३०—मर्क्युरियस से काफी लाभ न होने पर और बारंबार रोगका होना बायीं ओर दर्द,

शामको या आधीरात के पहले दर्दका बढ़ना आदिलक्षणों में इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—वात रोगके साथ यह रोग होना, कान बाहर से लाल, गरम और फूला हुआ, समूचे चेहरे में दर्द, कानका बन्द हो जाना। शामको दर्दका बढ़ना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। स्त्रियों को, बच्चों को, जिन्हे जरामें ही सर्दी लग जाती है या जो जरामें ही रो पड़ते हैं उन्हें इससे विशेष लाभ होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—कानमें और कानके पीछे तेज दर्द, शिर और आँख तक दर्दका फैलना, छूने या हिलाने से दर्द का बढ़ना गलेमें भी दर्द मालूम होना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—एक ही ओर दर्द, खासकर दाहिनी ओर, बहुत तेज दर्द, दर्दके कारण रोगीका व्याकुल हो उठना, पिछली रातमें या दोपहर के पहले दर्दका बढ़ना इत्यादि।

डाल्कैमारा ६—पानी में भीगने या सरदी लगने के कारण यह रोग होना विश्रामके समय खासकर रात में दर्दका बढ़ना, जी मिचलाना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—एकायक पसीना रुक जाने या भीगनेके कारण कान में दर्द होने पर इससे भी बहुत लाभ होता है।

अर्निका ३ या ६—चोट लगने के कारण दर्द, कान के पीछे दर्द, कान गरम, तेज आवाज से दर्दका बढ़ना।

कानमें छेद होने या कुछ गड़ने जैसे दर्द में केप्सीकम, ज्वालाकर दर्दमें आर्सेनिक,डंक मारने जैसे दर्द में एपिस, निगलने के समय दर्द मालुम होने पर फाईटोलेक्का, दांतमें दर्दके साथ कानमें भी दर्द होने पर केमोमिला या मर्क्युरियस आदि दवाएं व्यवहार की जाती हैं। इनके अतिरिक्त नक्सवोमिका, चायना, हिपरसल्फर, प्लेटिना, फोस्फरिक-एसिड, एन्टिम क्रूड आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—मूलेनआइल दो तीन बूंद कानमें डालने पर दर्द घट जाता है। सेंकने से भी बहुत लाभ होता है। रुईसे कान ढक रखना चाहिये सरदी से बचना चाहिये।

कान बहना।

(Otiorhoea)

गण्डमाला धातु या गरमी के दोष से अथवा कान पकने, कानमें फोड़ा हो जाने आदि कारणों से कानमें जख्म

होकर कान बहने लगता है। कान से गाढ़ा या पतला पीव बहता है। यह बीमारी प्राय बच्चों को ही होती है। बहरे होनेके पहले बड़ी उम्रके आदमियों को भी यह रोग हो जाता है। इसका इलाज तुरन्त करना चाहिये क्योंकि कान और दिमागके बीचमें सिर्फ एकही हड्डीका अन्तर है। रोग पुराना हो जाने पर दिमाग तक उसका असर पहुँचता है और उस हालत में यह रोग आराम होना बहुत मुश्किल हो जाता है।

चिकित्सा।

केप्सीकम ६—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। कान से पीव निकलने पर सबसे पहले इसे ही आजमाना चाहिये।

मर्क्युरियस ६ या ३०—कान की गिल्टियों में सूजन और दर्द, बदबूदार और खून मिला पीव निकलना, कान का बन्द हो जाना और कान से कम सुनायी देना, चेचक के बाद यह रोग होना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—कान गरम और लाल गाढ़ा पीव, या बिना बदबू का पानी जैसा पीव निकलना, हाम के बाद यह रोग होना इत्यादि।

सल्फर ६ या ३०—बदबूदार पीब निकलना, पुरानी बीमारी तथा पल्सेटिला से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु वाले बच्चों को और बहुत पुरानी तथा कठिन बीमारी में इससे काफी लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पारे के अपव्यवहार और हाम या चेचक के बाद इस रोग का होना, बदबूदार पीब निकलना, कम सुनायी देना, दपदप होना, साँय साँय आवाज सुनायी देना इत्यादि।

अरममेट ६ या ३०—गर्मी के कारण यह रोग होना, बहुत पीब बहना, कान में दर्द, जलन और खुजली, हिलने डोलने, धोने और खुली हवा में रहने से आराम मालूम होना।

साइलीसिया ६ या ३०—कान बन्द, कान से पतला पीब निकलना, कान में दर्द, अमावस्या और पूर्णिमा को रोग का बढना इत्यादि।

ग्रेफाइटिस ६— खून मिला पतला पानी जैसा चिकना और बदबूदार स्राव होता हो तो इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—लाल बुखार या हाम के बाद यह रोग होना, कम सुनायी देना, कान की गिल्टियों में सूजन और दर्द।

टेल्लुरियम ६—बहुत पुरानी बीमारी में इसे देना चाहिये। डाक्टर हेरिङ्ग लिखते हैं कि पुरानी बीमारी में पहले मर्क्युरियस दीजिये, इसके आठ दिन बाद सल्फर। इससे लाभ न हो तो कल्केरिया दीजिये। शिरदर्द के साथ यह रोग होतो पहले मर्क्युरियस या सल्फर दीजिये। इससे लाभ न होने पर बेलेडोना और इसके बाद हेकेसिस। अगर इन दवाओं से लाभ न हो तो लगातार दो दिन साइलीसिया दीजिये और जरूरत मालूम हो तो एक या दो सप्ताह के बाद फिर इसे ही दीजिये। अगर स्राव बन्द न होकर गर्दन की गिल्टियाँ फूल उठें तो पहले पल्सेटिला दीजिये। बाद को मर्क्युरियस या बेलेडोना। तेज शिरदर्द और बुखार के साथ यह रोग होने पर पहले बेलेडोना दीजिये। लाभ न हो तो ब्रायो[illegible] या भीगने के कारण रोग हो और रोगी कसरत[illegible] को[illegible] डाल्कमारा दीजिये। अगर रोगी चुप[illegible]

तो वेलेडोना। बिछौने की गरमी से रोग बढ़े तो मक्युंरियस। पीव बन्द हो जाने पर कर्णमूल प्रदाह जैसी बीमारी हो जाय तो उसी रोग की दवाएं दीजिये।

आवश्यक सूचना—कान को सुसुम पानी से रोज अच्छी तरह धो देना चाहिये और दर्द वाले कान के आसपास छोटे तकिये या कपड़े की गद्दी रख कर उसी कान के बल रोगी को सुलाना अच्छा है। कान को रूई से बन्द रखना चाहिये। कान मे तेल डालना इस रोग में हानिकारक है। मूलेन आइल रोज दो तीन बूंद डालना अच्छा है। जब तक स्राव एक दम बन्द न हो जाय तब तक कान को सुसुम पानी से धोते रहना बहुत आवश्यक है, वर्ना रोग का दुबारा हमला होने का डर रहता है।

कर्णनाद।

(Buzzing in the Ear)

कान में कोई बीमारी होने पर उसके साथ और कभी २ बिना किसी बीमारी के ही कान में तरह तरह की आवाज सुनायी देती है।

चिकित्सा ।

नक्सवोमिका ६ या ३०— ठंढ के कारण रोग, सुबह रोग का बढ़ना इन दो लक्षणों में इसे दा देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—शाम के वक्त रोग का बढ़ना।
अस्केमारा ६—रात में तकलीफ का बढ़ना।

मर्क्युरियस ६ या ३०—जिन्हें बहुत पसीना आता हो उन्हें यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

केमोमिला ६ या १२—जिन्हें बिल्कुल ही पसीना न आता हो उन्हें इससे लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—कान में संगीत, घंटा बजने या हिस हिस जैसी आवाज सुनायी देना, पारे या क्वीनाइन का अपव्यवहार, बहुत दिनों तक बुखार या यकृत की बीमारी से पीड़ित रहना आदि कारणों से यह रोग होने पर इससे बहुत लाभ होता है।

कार्बोवेज ६ या ३०—अधिक जोर की भन्न भन्न आवाज सुनायी देने पर या चायना से लाभ न होने पर इसे

अर्निका ३ या ६—शिर में रक्त सञ्चय, बूढे आदमियों को यह रोग होना और खास कर एक ही कान में यह रोग होना। रोग दब कर जब जब उभडे तब तब इसे ही देना चाहिये।

एलियमसिपा ६ या ३०—बारंबार तेजी के साथ रोग का होना, तर हवा में रोग का बढ़ना, बन्द कमरे में तकलीफ का बढ़ना, खासकर लेट रहने पर, इस रोग के कारण कम सुनायी देना, साथ ही गले में दर्द, आँख से आँसू निकलना, पेशाब में तकलीफ इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एसिडफस ३०—कान में गर्जना, घंटा बजना, गुनगुन या भन भन जैसी आवाज होना साथ ही दुर्बलता आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—कान में गुन गुन और सों सों आवाज होने पर इससे लाभ होता है।

सल्फर ६ या ३०—कान का पुराना जख्म सूख जाने या कोई चर्मरोग दब जाने के कारण यह रोग होना।

हिस हिस आवाज होने पर ग्रेफाइटिस, कियोजोट, एसिड म्यूर, नक्सवोमिका, साइलीसिया और ट्यु क्रियम, मधुमक्खी की तरह गुन गुन या भन भन आवाज होने पर वेलेडोना, एमनकार्व, कस्टिकम, ग्रेफाइटिस, हायोसायमस, आयोडियम, नेट्रम म्यूर और पल्सेटिला, तथा मेघगर्जना जैसे आवाज में कल्केरिया, ग्रेफाइटिस, प्लेटिना, अरममेट, कस्टिकम और चेली डोनियम आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है।

थिओसिनामिन (सभी तरह के कर्णनाद में) केली अयोड (पुराने रोग में) और डिजिटेलिस, किनिनमसल्फ, विरेट्रम एल्वम, हाइड्रस्टिस कार्वोन सल्फ आदि दवाएँ भी आजमायी जा सकती हैं।

वहरापन।

(Deafness)

कान के स्नायु या पर्दे आदि में खरावी, कान का प्रदाह, चोट लगना, सरदी लगना, वहुत जोरों की कोई आवाज सुनना, कान में मैल जमना, क्वीनाइन का अपव्यवहार, दिमाग की खरावी, वृद्धावस्था आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। माता पिता को यह रोग होने पर कभी कभी वच्चे जन्म से ही वहरे पैदा होते हैं। जन्म की और वुढ़ापे की वधिरता शायद ही आराम होती है।

कमजोरी, स्नायविक रोग या वृद्धावस्था की वधिरता में आर्निका, पेट्रोल और फोसफरस, सर्दी लगने के कारण यह रोग होने पर एकोनाइट, बेलेडोना, पल्सेटिला, मर्क्युरियस, केमोमिला, कल्केरिया, आर्सेनिक, कार्बोवेज और ग्रेफाइटिस, चेचक आदि बीमारियों के कारण यह रोग होने पर पल्सेटिला, कार्बोवेज और मर्क्युरियस, रक्ताधिक्य के कारण यह रोग होने पर बेलेडोना, सल्फर, साइलीसिया और नक्सवोमिका, कर्णस्राव के साथ यह रोग होने पर ग्रेफाइटिस, कल्केरिया कार्ब, नाइट्रिक एसिड, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, सल्फर लाइकोपोडियम, और कस्टिकम। स्राव रुकने के कारण यह रोग होने पर आर्सेनिक, सल्फर, कस्टिकम और एन्टिमक्रूड, क्वीनाइन के अपव्यवहार से यह रोग होने पर कार्बोवेज, नाइट्रिक एसिड और कल्केरिया आदि दवाएं लक्षणानुसार व्यवहार की जाती है। कुछ दवाओं के लक्षण नीचे दिये जाते हैं —

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु और क्वीनाइन के अपव्यवहार के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कोनायम ६ या ३०—कान में मैल होने के कारण बहरापन, हो तो इसे देने से लाभ होता है।

लगाना हानिकारक है। जायतून का तेल या ओलिव आइल लगाने से लाभ होता है। जख्म को धो पोछकर साफ रखना चाहिये।

क्रम सुनायी देना—कान का पकना, सर्दी, कान में फोड़ा स्नायविक दुर्बलता आदि कारणों से कभी कभी श्रवण शक्ति घट जाती है। इस रोग में बेलेडोना, हिपरसल्फर, डाल्केमारा लेडम, कार्वोवेज, कल्केरिया कार्व, पेट्रोलियम, फोस्फरिक एसिड, नाइट्रिक एसिड, अर्जेन्टम नाइट्रिकम, सल्फर, एको नाइट, केमोमिला, मर्क्युरियस, कस्टिकम, साइलीसिया आदि दवाएँ व्यवहार की जाती हैं। "बहरापन" रोग की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है। यह सब दवाएँ ३ से लेकर ३० क्रम तक की देनी चाहिये। पुरानी बीमारी में ऊँचे क्रम की दवा दी जा सकती है।

---

८ नाक के रोग।

(Diseasas of th ᴈ Nosᴈ)

सर्दी या जुकाम।

(Nasal catarrh)

पानी में भीगना, ठंढी हवा लगना, पसीने का एकायक रुक जाना, बहुत ठंढे या गरम स्थान में रहना, गरम से एका

यक ठढ में जाना, नाक में चूना या धूल का जाना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है।

चिकित्सकों की सुविधा के लिये यह रोग दो भागों में बाँट दिया गया है—नया और पुराना। नये रोग में नाक का सुडसुडाना और खुजलाना, नाक से पानी बहना, बारबार छींक आना, शरीर में दर्द, शिर में भार, छाती में दर्द आदि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी श्वासकष्ट, खाँसी और बुखार आदि उपसर्ग भी पैदा हो जाते हैं। रोग पुराना होने पर नाक में जख्म हो जाते हैं, कफ गाढ़ा हो जाता है और उससे बदबू आती है। नाक का बन्द हो जाना, किसी वस्तु को सुगन्ध न मालूम होना, श्वासकष्ट, नाक में पपडी जमना, नाक से बदबू निकलना आदि लक्षण प्रकट होते है। यहाँ दोनों तरह के रोगों की चिकित्सा एक साथ लिखी जाती है।

चिकित्सा।

नयी बीमारी में—अर्क कपूर, एकोनाइट, डालकेमारा, ब्रायोनिया, नक्सवोमिका, जेलसीमियम, आर्सेनिक, पल्सेटिला, मर्क्युरियस, अरमट्राइ, एमन कार्ब, इपीकाक, एलियम सिपा, केली बाइक्रोम, नेट्रमम्यूर, कल्केरिया कार्ब, हिपरसल्फर और पुरानी बीमारी में कल्केरिया कार्ब, केली बाइक्रोम, केली सल्फलेकेसिस, लाइकोपोडियम, केली आयोड, मर्क्युरियस, साइलीसिया, स्टिक्टा, फोस्फरिक एसिड, अरम मेट, हिपर–

सल्फर, सल्फर, सोरिनम्, आर्स आयोड, हाइड्रेस्टिस, नाइट्रिक एसिड, सीपिया और नक्सवोमिका आदि दवाएँ विशेष रूपसे व्यवहार की जाती है। खास खास दवाओं के लक्षण नीचे दिये जाते हैं।

स्पिरिट केम्फर—कुछ कुछ जाडा, वदन मे दर्द, नाकसे पतला पानी निकलना आदि जुकाम के प्रारभिक लक्षण मालूम होते ही आधे आधे घंटेके अन्तर से कई घंटे तक इसका सेवन करने पर बीमारी प्राय· आगे नहीं बढ़ने पाती। (मात्रा—उम्रके अनुसार पॉचसे लेकर पन्द्रह बूँद चीनी या बतासे में डालकर)।

एकोनाइट ३ X या ६—नयी बीमारी, जाड़ा, हरारत, जम्हाई, शिरमें दर्द, बारबार छींक, शिरमें भार तेज प्यास, ओस या सर्दी लगकर रोग होना।

ब्रायोनिया ६ या ३०—जुकामके साथ सूखी खॉसी, खॉसते समय छाती में दर्द, पेटकी गडबडी, पसलियों में दर्द, कब्जियत।

मक्युरियस ६ या ३०—जिस समय चारों ओर यह रोग फैला हो उस समय, नाकसे पानी गिरना, शिरमे दर्द रातमें अधिक पसीना, बुखार, तेज प्यास, गरमी में तकलीफ

लेकिन सर्दी भी बरदास्त न होना, सुबह तकलीफ का बढ़ जाना, नाकसे पानी जैसा स्राव आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पुराने की बीमारी, आराम होकर रोगका फिर बढ़ जाना, पसीना रुक जानेके कारण यह रोग होना, बुखार, शरीर में दर्द।

बेलेडोना ६ या ३०—हिपर सल्फर से लाभ न होने पर और शिरदर्द, गलेमें दर्द, चेहरा लाल इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एलियमसिपा ६ या ३०—तर और ठंढी हवामें रोगका बढ़ना, आँखसे पानी बहना, शिरदर्द, खाँसी, प्यास, रातमें और बन्द कमरे में तकलीफ का बढ़ना, खुले स्थानमें आराम, नाकसे बहुत पानी निकलना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—बहुत तेज जुकाम, नाकसे बहुत ज्यादा पानी निकलना, नाकका फूल जाना।

आर्सेनिक ६ या ३०—गरमी में आराम मालुम होना थोड़ा थोड़ा पानी पीना, कमजोरी, बहुत बेचैनी, नाक और शरीर में जलन, नाक और आँखसे गरम पानी गिरना, वैसा

मालूम होना मानो नाक बन्द हो गयी है,फिर भी नाक बहना, रातमें नींद न आना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०-आर्सेनिक से लाभ न होने पर आर्सेनिक से मिलते जुलते लक्षणों में अथवा दिनमें नाक बहना, रातमें बन्द हो जाना, मुँह सूखा, कब्जियत, छाती जकड़ी हुई, शामके वक्त पारी पारी से गरमी और जाड़ा मालूम होना, शिर, चेहरा या समूचा शरीर बहुत गर्म आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

डाल्केमारा ६-कुछ लक्षण आर्सेनिक के और कुछ लक्षण नक्सवोमिका के, लेकिन चलते फिरते रहने पर रोगी को आराम मालूम होना और विश्राम से तकलीफ का बढ़ना, आदि लक्षणों में तथा तर हवा लगने या पानीमें भीगने के कारण रोग होनेपर इसे देना चाहिये।

इपीकाक ६ या ३०-जुकाम के साथ मिचली या क, कष्टकर खाँसी, श्वासकष्ट इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। आर्सेनिक और नक्सवोमिका के लक्षण होने पर भी उनसे लाभ न होने पर यह दवा दी जाती है।

पल्सेटिला ६ या ३०-भूख न लगना, गन्ध न मालूम होना, कफ गाढ़ा और पीलापन लिये हुए या हरा और बदबूदार इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०-सर्दी या तर हवा लगने और पानी में भीगने के कारण यह रोग होना, पीला पन लिये हुए गाढा कफ निकलना और नाकमें पपड़ी जमना।



केमोमिला १२ या ३०-बच्चोंकी बीमारी, पसीना रुकने के कारण जुकाम या सर्दी, एक गाल फीका और दूसरा लाल, प्यास, नाकमें जख्म इत्यादि।



साइलीसिया ६या ३०-बहुत दिनों तक जुकाम का आराम न होना या बारबार जुकाम का होना, नाकसे पानी बहते रहना अथवा बन्द हो जाना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इससे पूरा लाभ न होने पर कल्केरिया कार्ब ६ या ३०। दाँत निकलने के समय बच्चोंको जुकाम होने पर इन दवाओं से बहुत लाभ होता है।



केली बाइक्रोम ३ या ६-नाकसे गाढा गाढा रस्सी जैसा कफ निकलना, गला बैठ जाना, नाकसे सड़ी बदबू निकलना, नाकमें जख्म।



केलीसल्फ ३ या ६-पल्सेटिला देनेके बाद गलेमें कफ घड़घड़ाता रहे तो इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम ३०-रातमें नाक बन्द हो जाने के कारण मुँहसे साँस लेना।

केली आयोड ६ या ३०-पारे या गर्मीका दोष, नाकमें जख्म, काला काला या पीला पीला चिकना कफ निकलना।

स्टिक्टा ३ या ६-नाकका बन्द हो जाना, नाक सूखी, नाकमें पपड़ी, नाकमें दर्द, बारबार नाक छिड़कना, पर नाक से कफ न निकलना।

फोस्फरिक एसिड ६ या ३०-हमेशा नाक का खुजलाते रहना, नाकसे खून मिला पीब निकलना, नाकसे सड़ी बदबू।

कार्बोवेज ३०-नाकका बंद रहना, दिनभर आराम, शामके वक्त फिर जुकाम का प्रकट होना।

जेलसीमियम ६ या ३०-गलेमें दर्द, निगलनेमें तकलीफ, कानके अन्दर तक दर्द, हवामें साधारण परिवर्तन होने पर भी जुकाम हो जाना।

सल्फर ६ या ३०-स्वाद और सुगन्ध बिलकुल न मालूम होना, शिरमें चक्कर, सुबह बिछौने से उठते ही पाखाने दौड़ना, जरामें ही सर्दी लग जाना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एमन म्यूर ६ या ३०—नाकसे पानी गिरना, नाकमें जख्म जैसा दर्द, शिर झुकाने से नाकका अगला हिस्सा लाल हो जाना, ऐसा मालूम होना मानो नाक बन्द हो गयी है इत्यादि।

अरमट्रिक ६ या ३०—नाकसे ज्वाला और जलकर पानी निकलना, उसके कारण होठ और मुँहके कोनोंमें जख्म हो जाना, नाक बन्द रहना, नाक खुंजलाने के कारण उसमें जख्म हो जाना।

युफ्रेशिया ६ या ३०—नाक और आँखसे पानी निकलना, दिनमें खाँसी, उपला होठ फड़ा इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—पारी पारीसे नाकका सूखना और उससे पानी बहना, सुबह एक अथवा दोनों नथुनों का बन्द हो जाना, छींककी धमक से शिरमें दर्द, छाती जकडी हुई, स्वाद और गन्ध न मालूम होना।

सीपिया ६ या ३०—शिरके पिछले हिस्सेमें एकायक दर्दका शुरू होना, नाकसे बहुत पानी गिरना इत्यादि।

सेङ्गुइनेरिया ३०—आँखके कोनेमें भौंहके नीचे दर्द, छूनेसे दर्दका बढ़ना, गलेमें दर्द, खाँसी और दस्त।

अरममेट ६Х विचूर्ण—गर्मीका दोष, नाकमें पपड़ी या जख्म, हमेशा नाकका बन्द रहना, गाढ़ा बदबूदार स्राव, सदा खिन्न रहना, आत्महत्या करने की इच्छा इत्यादि।

कुछ उपसर्ग—किसी दवाके प्रयोग से जुकाम दब जाय, नाक से पानी निकलना बन्द हो जाय लेकिन उसके कारण शिरदर्द करने लगे तो एकोनाइट दीजिये। इससे फिर पानी बहना न शुरू हो तो पल्सेटिला या चायना दीजिये। अगर बायीं आँख पर जोरों का दर्द होता हो तो स्पाइजिलिया दीजिये। अगर समूचे कपाल में दर्द हो या दाहिनी ओर अधिक दर्द हो और पीला पीला पीब जैसा कफ निकलता हो तो बेलेडोना दीजिये। अगर रोज शाम को कुछ घंटो के लिये दर्द हो जाया करता हो तो आर्सेनिक दीजिये। छाती में सर्दी बैठ जाने के कारण श्वास कष्ट हो तो इपीकाक दीजिये इससे फायदा न हो तो ब्रायोनिया या आर्सेनिक अथवा दमा रोग की दवाओं में से कोई दवा दीजिये। उपरोक्त दवाओं में से किसी दवा से लाभ न हो तो सल्फर आजमाइये। खाँसी, बुखार आदि उपसर्गो के लिये उन्हीं रोगों की दवाओं में से दवा चुननी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोग के समय गरम पानी पीना, चीनी डाल कर गरम दूध पीना और नाक से गरम पानी की

भाप सांस में लेना लाभदायक है। नमक मिला पानी नाक से सुड़कने पर भी बहुत लाभ होता है। बुखार न होने पर गरम पानी से नहाकर शरीर पोंछ डालना चाहिये और शरीर को गरम कपड़े से ढक लेना चाहिये। भात न खाना अच्छा है। रोटी मजे में खाना जा सकती है। बुखार होने पर बुखार की तरह पथ्य परहेज़ी करनी चाहिए।

पीनस या नाक में जख्म।

(Ozoena)

बुखार, पुराना जुकाम, चोट, गण्डमाला धातु, नाक में अन्न या कोई दूसरी चीजका घुस जाना आदि कारणों से भी यह रोग होता है, लेकिन गरमी या उपदंश का दोष ही इस रोग का प्रधान कारण है। इसमें नाक में जख्म होकर उससे खून मिला बदबूदार पीव बहता है। जख्म तालुकी हड्डी तक फैल जाता है, नाक मे सूखी पपड़ी पड़ती है, नाक से इतनी बदबू निकलती है कि पास बैठा नहीं जाता। यदि रोग जल्द आराम न हुआ तो अन्त में नाककी हड्डी तक गल जाती है। फलतः नाक बैठ जाती है और रोगी नकिया नकिया कर बोलता है।

चिकित्सा।

आरमपेट ६ या ३०—गरमी के कारण बीमारी, नाक के अन्दर जख्म, वेदना, पपड़ी जमना पीले रंगका स्राव, पतला

और बदबूदार पीव निकलना, नाककी हड्डी का धीरे धीरे क्षय होना इत्यादि।

ऐसिड नाइट्रिक ६ या ३०–पारे या गर्मी का दोष, माता पिता में यह दोष होने के कारण बच्चों को पीनस होना, नाक में सूजन, बदबूदार पीव निकलना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केलीबाइक्रोम ६ या ३०—नाक से बहुत पानी या रक्त मिला बदबूदार पीव निकलना, किसी वस्तु की गन्ध न मालूम होना, नाक का बिचला भाग बैठ जाना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

मर्क्युरियस बिन आयोडेटम ६–खून मिला स्राव और नाक के अन्दर हड्डी में जख्म।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु, गाढा और पीले रंगका बदबूदार स्राव।

आयोडियम ६ या ३०–नाक के अन्दर जख्म और बदबूदार पीव निकलना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०–बहुत जलन, पानी जैसा पीव निकलना, छींक आना, गला बैठ जाना इत्यादि।

सोरिनम ३०—नाक से बहुत बदबूदार स्राव, किसी भी दवासे रोग का पूरी तरह आराम न होना।

एल्युमिना ६ या ३०—नाक में जख्म, उसमें पपड़ी पड़ना, गाढ़ा पीले रंगका स्राव इत्यादि।

हिपर सल्फर ३०—नाक में सूजन और लाली, स्पर्श बरदास्त न होना, नाक में हवा जाने से भी तकलीफ मालूम होना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—पीला या हरे रंगका गाढ़ा और बदबूदार कफ निकलना, नाकमें सूजन, खुजली और जख्म, स्वाद या गन्ध न मालूम होना, ऋतु दोष या प्रदर के साथ स्त्रियों को यह रोग होना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—लाल या पीले रंग का गाढ़ा और बदबूदार स्राव, दिनमें नाकका बहना, रात में बन्द हो जाना, नाक की जड़में सूजन, नथुनो में जख्म, कण्ठमाला धातु, सुबह स्वरभंग इत्यादि।

इनके अतिरिक्त एमन कार्ब, एगारिकस, एन्टिमक्रूड, अर्जेन्टम नाइट्रिकम, एसाफिटिडा, बेराइटा कार्ब, इलेप्स, ग्रेफाइटिस, कलो हाइड्रो, केलाफस, नेट्रम कार्ब, नेट्रम म्यूर,

पेट्रोलियम फोस्फरस, सीपिया, साइलीसिया, स्टेफासेग्रिया, सल्फर, ट्युक्रियम, सेङ्गुइनेरिया, हेमामेलिस, सिफिलिनम, सिन्टा, जिङ्क, साइक्ले आदि दवाएं भी लक्षणानुसार लाभ करती है।

आवश्यक सूचना—नाक साफ रखना चाहिये। पानी में नमक मिला कर उससे नाक धोना लाभ दायक है। सरसों का तेल भी सुड़का जा सकता है। हलके और पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये। *मास मछली आदि खाना मना है।*

नाक से खून बहना।

(Epistaxis)

शिरमें चोट लगना या रक्ताधिक्य, ऋतु, या बवासीर का खून बन्द हो जाना कमजोरी, पेट में कृमि आदि कारणों से यह रोग होता है। कभी कभी एकायक खून निकलने लगता है और कभी कभी शिरमें दर्द, शिरमें चक्कर चेहरा और आखें लाल, हाथ पैर ठंढे इत्यादि लक्षण प्रकट होने के बाद रक्त स्राव होता है। साधारण बीमारी में दवा देनेकी जरूरत नहीं। यदि बारंबार रक्तस्राव होता हो या अधिक तादातमें खून गिरता होतो लक्षणानुसार कोई दवा देनी चाहिये।

चिकित्सा।

आर्निका ६ या ३०—चोट, गिर पड़ना या जख्म के कारण नाकसे खून निकलना, नाक गरम मालूम होना, खून का रंग चमकीला लाल इत्यादि लक्षणों में और खासकर पुरुषोंकी बीमारी में इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—यह स्त्रियों की दवा है। बहुत कम ऋतुस्राव होना, ऋतुके समय नाक से खून गिरना, जुकाम के साथ यह रोग होना, दोपहर के बाद से लेकर आधीरात के पहले तक इस रोगका प्रकट होना।

एकोनाइट ३x या ६—रक्ताधिक्य धातु, जवानी में यह रोग होना, चमकीला लाल खून गिरना, शिरमें रक्त सचय या शराब पीने के कारण यह रोग होना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—एकोनाइट से फायदा न होनेपर और इस रोग के साथ शिर और छाती की भी शिकायत होने पर इसे देना चाहिये।

चायना ६ या ३०—बहुत दिनों तक रक्तस्राव होने के कारण कमजोरी, उसके कारण यह रोग होना, चेहरा फीका, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

कार्बो वेज ६ या ३०—नाकसे जरा में ही बहुत सा खून निकलना, दोपहर के पहले और रात में रोग का आक्रमण, नाक से खून गिरने के पहले और पीछे चेहरा फीका हो जाना, इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये। वृद्धे और कमजोर आदमियों की बीमारी में इस दवा से बहुत लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—अधिक परिश्रम या बहुत भार उठाने के कारण यह रोग होना, विश्राम के समय और रात में रोग का हमला, नाक फूटने के कारण नींद से जाग पड़ना इत्यादि।

क्रोकस ६—नाक से गाढ़ा और काला काला खून गिरना, रोग के समय कपाल में ठंढा पसीना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—रात में सोते समय या रात में बुखार के साथ नाक से खून निकलने पर इसे देना चाहिये।

साइना ३ या २००—बच्चों को पेट में कृमि होने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३० या २००—जिन्हें बारंबार यह रोग होना हो, उन्हें यह दवा देनी चाहिये।

सिकेली ६ या ३०—बहुत दुर्बलता के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—नाक से बूँद बूँद करके बहुत खून गिरना, रातके समय बच्चों का नाक फूटना, शिरमें रक्ताधिक्य के कारण यह रोग होना इत्यादि।

फेरम ६ या ३०—कमजोरी और रक्त हीनता के कारण रोग होने पर इससे लाभ होता है।

हेमामेलिस १X या३X—ऋतु का बन्द हो जाना, नाक स बहुत खून गिरना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३ या ६—बवासीर का खून बन्द हो जाने कारण यह रोग होना, कपाल में दर्द इत्यादि।

इनके अतिरिक्त मिलिफोलियम, नेट्रमनाइट्रिकम, जेलसीमियम, विरेट्रम विर, चायना, लेकेसिस, आर्सेनिक, पोडोफिलाम, फेरम पिक्रिकम आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—सरसोंका तेल, ठढा पनी या हेमामेलिस मदरटिञ्चर नासकी तरह सुड़कने पर लाभ होता है। अधिक रक्तस्राव होने पर कपाल, नाककी जड या जननेन्द्रिय पर बरफ रखने से फायदा होता है। खून निकलने के समय

मुँह बन्द कर नाकसे साँस लेना चाहिए। ठण्ढे पानी से नहाना और हलकी तथा पुष्टिकर चीजें खाना चाहिये। अधिक पढना लिखना या परिश्रम करना और उत्तेजक चीजें खाना पीना मना है।

नाकके अन्यान्य रोग।

गन्ध न मालूम होना—नयी या पुरानो सर्दी अथवा किसी दूसरी बीमारी के कारण कभी कभी नाक की घ्राणशक्ति खराब हो जाती है या लोप हो जाती है। जिस कारण से यह शिकायत पैदा हुई हो, वह कारण दूर कर देने से यह शिकायत अपने आप दूर हो जाती है। नयी बीमारी में एकोनाइट और पुरानी बीमारी मे पल्सेटिला, मर्क्युरियस तथा सल्फर व्यवहार किया जाता है। कल्केरिया कार्ब, सीपिया, जेल्सीमियम, केली बाइक्रोम और केलीआयोड से भी लाभ होता है।

नाकका प्रदाह—चोट, सर्दी और गण्डमाला धातु आदि कारणों से यह रोग होता है। नाकमें दर्द, सूजन, जलन, खुजली, फोड़ेकी तरह कड़ापन, कभी कभी पीव पड़जाना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। नयी बीमारी में एकोनाइट, बेलेडोना, मर्क्युरियस और आर्निका आदि दवाएँ व्यवहार की जाती हैं।

पीय पड जाने पर हिपरसल्फर, मर्क्युरियस, केलीबाइक्रोम और साइलीसिया आदि दवाएं देनी चाहिये।

नासारोग या नकड़ा (Palypus)—नाक के अन्दर लहसुन जैसी कोमल सूजन होने को नकडा कहते हैं। यह रोग नाक के एक या दोनों छेदों में हो सकता है। यह रोग सर्दी के साथ शुरू होता है। कभी कभी यह रोग होने पर बुखार भी आ जाता है। बेलेडोना या कल्केरियाकार्ब का सेवन और सेंगुइनेरिया या ब्युक्रियम मदरटिञ्चर का बाह्य प्रयोग इस रोग में बहुत लाभदायक होता है। केडमियम सल्फ, फासफरस, सोरिनम, केलीबाइक्रोम, मर्क्युरियस आयोड, थूजा, एसिड नाइट्रिक और मेलीलोटस पलवा आदि दवाएं भी लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

नाक मे फोड़ा फुन्सी—नाक का बाहरी भाग सदा लाल रहने पर बेलेडोना, सल्फर, अरमम्यूर, फ्लूरिक एसिड, एपिस और बोरेक्स आदि दवाएँ व्यवहार की जाती ह। नाक मे पीव भरी फुन्सियाँ होने पर पेट्रोलियम से वहुत लाभ होता है। नाक का नोक पर फुन्सी या फोड़े होने पर एमन-कार्ब, केलीब्रोम, बोरेक्स, केप्सीकम, सिलिका, आकजेलिक एसिड,कार्बोएनी और नाक टटाने पर ग्रेफाइटिस तथा केली-वाइक्रोम आदि दवाएँ लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—नाक की बीमारियाँ घातक नहीं होतीं, फिर भी इनका इलाज सावधानी से करना चाहिये। नाक में कोई चीज घुस जाने पर उसे ठेल ठेल कर ऊपर न चढ़ा देना चाहिये, बल्कि सूत का फन्दा या चिमटी आदि के सहारे धीरे धीरे उसे बाहर निकाल लेना चाहिये।

मुखके रोग।

(Diseases of the mouth)

मुख गह्वर में जीभ, दाँत, मसूढ़े, आलजिह्वा आदि अंग हैं। इनकी अधिकांश बीमारियाँ पेटकी खराबीके कारण उत्पन्न होती है। इसलिये उनकी गणना पेटकी बीमारियोंमें की जा सकती है। तथापि पाठकों की सुविधा के लिये उन्हें हम यहाँ अंकित करते हैं।

मुँहमें दुर्गन्ध।

(Offensive Breath)

दाँत या मसूढ़ोंकी खराबी, दाँत में मैल, अच्छी तरह मुँह न धोना, तमाखू या शराब पीना, पेटकी खराबी, पारेका अपव्यवहार, मुँहमें जख्म, जुकाम, गलेमें सूजन आदि अनेक कारणों से श्वास प्रश्वास या मुँह में बदबू आ सकती है। जिस कारण से मुँह में बदबू आती हो, उसे दूर करने की चेष्टा करनी चाहिये। आवश्यकतानुसार निम्नलिखित दवायें प्रयोग की जा सकती हैं—

चिकित्सा ।

केवल सुबह में बदबू मालूम देती हो तो नक्सवोमिका ६ या ३० । सुबह और रातमें मालूम होने पर पल्सेटिला ६ या ३० । सिर्फ भोजनके बाद मुँहमें बदबू मालूम होती हो तो कैमोमिला १२ या ३० । प्याज जैसी गन्ध मालूम देती हो तो एलियमशिपा ३० या पेट्रोलियम ६ । किस कारण से बदबू आ रही है, यह मालूम न होने पर आर्निका ३ । कार्बोवेज६ इस रोगकी अच्छी दवा है । दो सप्ताह तक इसे सेवन करनेके बाद कुछ दिनों तक हिपरसल्फर ६ या नाइट्रिक एसिड ३ सेवन करने से रोग अवश्य आराम हो जाता है । आवश्यकतानुसार ब्रायोनिया, आर्सेनिक, हायोसायमस, मर्क्युरियस, नक्स-मस्केटा, साइलीसिया और सल्फर आदि दवाएँ भी दी जा सकती हैं ।

मुख प्रदाह ।

(Stomatitis)

पेटकी खराबी या सर्दी और घाम आदि कारणों से यह रोग होता है । इसमें मसूढ़ों में सूजन और दर्द, मुँहके अन्दर और जीभ में छोटे छोटे जख्म या छाले, गले की गिल्टियों का फूल उठना, लार बहना, कभी कभी खून या पीब निकलना, रोग बढ़ने पर बुखार आजाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं ।

चिकित्सा ।

बेलेडोना ६ या ३०—रोगके आरंभ में जब लाली दिखायी दे तब इसे देना चाहिये ।

मर्क्युरियस ६—यदि पारेका अपव्यवहार न हुआ हो तो नयी बीमारीमें इससे बहुत लाभ होता है । यदि पारा खाया जा चुका हो तो कार्बोवेज देना चाहिये । मर्क्युरियस से पूरा लाभ न होने पर डाल्केमारा ।

आर्सेनिक ६—नमकीन पदार्थ अधिक खानेके कारण रोग हुआ हो तो इसे देना चाहिये । कार्बोवेज भी दिया जा सकता है । मसूढ़े काले पड जायँ तो आर्सेनिक ही देते रहना चाहिये ।

कार्बोवेज ६ या ३०—पारे या नमक का अपव्यवहार, मसूढ़ों से खून और बदबू निकलना इत्यादि । इससे लाभ न होने पर लेकेसिस या केप्सीकम आजमाना चाहिये ।

केलीक्लोरिकम ३—मुँह, गला और तालु में जख्म, जीभ पर छाले, मुहमें बदबू ।

नेट्रमम्यूर ६ या ३०-मुँहमें और जीभ में जख्म, मसूढ़ों में सूजन और रक्तस्राव, खाने, पीने और बोलने में भी तकलीफ इत्यादि लक्षणों में और उपरोक्त दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बोरेक्स ३-यह भी इस रोगकी एक अच्छी दवा है।

इनके अतिरिक्त हिपर सल्फर, सल्फर, सोरिनम, हेलीबोरस, क्रियोजोट, नेट्रम म्यूर, नाइट्रिक एसिड आदि दवाएँ भी दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—रोगके आरम में गरम पानी में नीबूका रस डालकर कुल्ली करनेसे लाभ होता है। मुँह के जख्मों में बोरेक्स २x विचूर्ण लगाना लाभदायक है। रोगकी अवस्था में गरम पानी से मुँह धोना चाहिये।

मुँह में गलित क्षत।

(Cancramorls)

पेट, यकृत, तिल्ली आदिकी खराबी या मेलेरिया आदि बुखारों के कारण होंठ, गाल, जीभ या दाँतों की जड़में एक तरह का जख्म होता है। उसमें बहुत दर्द, और जलन होती है।

जख्म धीरे धीरे बढ़ता जाता है। अन्तमें गाल या मुँहका कुछ अंश सड़कर गिर जाता है और मुँहसे बदबू तथा लार निकला करती है।

चिकित्सा।

इस रोग में आर्सेनिक, एसिड म्यूर, कार्बोवेज, एसिड नाइट्रिक, लेकेसिस, मर्क्युरियस, केली हाइड्रो, केली क्लोरिक और क्रियोजोट आदि दवाएँ लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं। मुख प्रदाह की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है।

मुँहमें खराब स्वाद।

(Bad tast in Mouth')

अनेक बार यह रोग दूसरे रोगों का लक्षण मात्र होता है। इसलिये, यदि मूल रोगका पता लग जाय तो उसीका इलाज करना चाहिये। यदि उसका पता न चले तो निम्नलिखित दवाएँ लक्षणानुसार पसन्द की जा सकती हैं:—

सुबह मुँहका स्वाद कड़वा—सल्फर, मर्क्युरियस, बाइवस, पल्सेटिला, ब्रायोनिया, कल्केरिया और साइलीसिया।

खानेकी चीजें कड़वी मालूम हों—सल्फर, ब्रायोनिया, रिउम, रसटक्स, हिपर, कोलोसिन्थ और फेरममेट।

खाने तथा पीनेकी भी चीजें कड़वी मालूम हों—पल्सेटिला और चायना।

खाने या पीने के बाद कड़वा स्वाद—पल्सेटिला, ब्रायोनिया और आर्सेनिक।

सुबह या शाममें कड़वा स्वाद—पल्सेटिला और अर्निका।

किसी दूसरे समय या सदाही कड़वा स्वाद—उपरोक्त दवाएं तथा एकोनाइट, बेलेडोना, विरेट्रम, नक्सवोमिका, केमोमिला, पल्टिमक्रूड, कार्बोवेज।

मुहमें मीठा स्वाद—मर्क्युरियस, वाइवस, सल्फर, क्युप्रम, बेलेडोना, पल्सेटिला, ब्रायोनिया, चायना, फेरम, स्पञ्जिया।

सुबह में मीठा स्वाद—सल्फर।

रोटियाँ मीठी मालुम होने पर—मर्क्युरियस वाइवस।

होमियोपैथिक-सरल-चिकित्सा

मुँहमें नमकीन स्वाद-कार्बोवेज, रिउम, फोस्फरिक-एसिड, नक्सवोमिका, सल्फर, आर्सेनिक नेट्रमम्यूर और क्युप्रम।

खाते समय नमकीन स्वाद-कार्बोवेज, सल्फर।

खाँसते समय नमकीनस्वाद-कार्बोवेज, कक्युलस।

मुहमें खट्टा स्वाद-रिउम, फोस्फरिक एसिड, नक्स-वोमिका, चायना, सल्फर, केप्सीकम, कल्केरिया, नेट्रमम्यूर, कक्युलस, क्युप्रम।

खाने की चीजें खट्टी मालूम होने पर-चायना अर कल्केरिया।

खानेके वाद खट्टा स्वाद-पल्सेटिला, नक्स वोमिका कार्बोविज, नेट्रमम्यूर, कक्युलस, साइलीसिया।

पानी पीनेके वाद खट्टा स्वाद-नक्स वोमिका और सल्फर।

दूध पीने के वाद खट्टा स्वाद-कार्बोवेज, सल्फर।

सुबह खट्टा स्वाद—नक्सवोमिका और सल्फर।

मुहमें सड़ा स्वाद—अर्निका, मर्क्युरियस, वाइवस, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कैमोमिला, पल्सेटिला, एकोनाइट, विरेट्रम, फोस्फरिक एसिड, सल्फर, रसटक्स, नेट्रम म्यूर, क्युप्रम और कस्टिकम।

सुबहमें सड़ा स्वाद—सल्फर और रसटक्स।

खानेके बाद सडा स्वाद—रसटक्स।

पीब जैसा स्वाद—पल्सेटिला।

स्वाद ही न मालूम होना—विरेट्रम, बेलेडोना पल्सेटिला, रिउम, ब्रायोनिया, हिपर और हायोसायमस।

पुरानी बीमारीमे—साइलीसिया और नेट्रमम्यूर।

मसूढ़ों से खून निकलना।

(Bleeding of the Gums)

यह रोग भी दूसरे रोगों का लक्षण मात्र है। मुँहमें जख्म, यकृत और पिलही की खराबी, पुराना या तेज बुखार आदि

मुँहमें नमकीन स्वाद–कार्बोवेज, रिउम, फोस्फरिक-एसिड, नक्सवोमिका, सल्फर, आर्सेनिक नेट्रमम्यूर और क्युप्रम।

खाते समय नमकीन स्वाद–कार्बोवेज, सल्फर।

खाँसते समय नमकीनस्वाद–कार्बोवेज, कक्युलस।

मुहमें खट्टा स्वाद–रिउम, फोस्फरिक एसिड, नक्स-वोमिका, चायना, सल्फर, केप्सीकम, कल्केरिया, नेट्रमम्यूर, कक्युलस, क्युप्रम।

खाने की चीजें खट्टी मालूम होने पर–चायना और कल्केरिया।

खानेके बाद खट्टा स्वाद–पल्सेटिला, नक्स वोमिका, कार्बोवेज, नेट्रमम्यूर, कक्युलस, साइलीसिया।

पानी पीनेके बाद खट्टा स्वाद–नक्स वोमिका और सल्फर।

दूध पीने के बाद खट्टा स्वाद–कार्बोवेज, सल्फर।

सुबह खट्टा स्वाद-नक्सवोमिका और सल्फर।

मुहमें सड़ा स्वाद-अर्निका, मर्क्युरियस, वाइवस, बेलेडोना, ब्रायोनिया, केमोमिला, पल्सेटिला, एकोनाइट, विरेट्रम, फोस्फरिक एसिड, सल्फर, रसटक्स, नेट्रम म्यूर, क्युप्रम और कस्टिकम।

सुबहमें सडा स्वाद-सल्फर और रसटक्स।

खानेके बाद सडा स्वाद-रसटक्स।

पीब जैसा स्वाद-पल्सेटिला।

स्वाद ही न मालूम होना-विरेट्रम, बेलेडोना पल्सेटिला, रिउम, ब्रायोनिया, हिपर और हायोसायमस।

पुरानी बीमारीमे-साइलीसिया और नेट्रमम्यूर।

मसूढ़ों से खून निकलना।

(Bleeding of the Gums)

यह रोग भी दूसरे रोगों का लक्षण मात्र है। मुँहमें जख्म, यकृत और पिलहो की खराबी, पुराना या तेज बुखार आदि

कारणों से यह रोग होता है। जिस कारण से यह रोग हुआ हो, पहले उसीका इलाज करना चाहिये। साधारणतः कल्केरिया कार्ब, मर्क्युरियस, कर्बोवेज, एसिड फस आदि दवाएँ इस रोगमें व्यवहार की जाती हैं।

मसूढ़ों में जख्म।

(Gun Boil)

मसूढ़ेमे दांतों की जड़में छोटासा फोड़ा होकर वह फट जाता है और उसीके कारण मसूढ़े में जख्म हो जाता है। दाँतमें दर्द, मसूढ़ेमें सूजन, पीब बहना, साधारण बुखार आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६या ३०—रोग के आरम्भ में प्रदाह और दप-दपी होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस वाइवस ६—यह इसकी उत्तम दवा है। बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६—पीब पैदा होने पर इसे देना चाहिए।

साइलीसिया ६—फोड़ा फट जाने के बाद इसे देने से जख्म जल्दी आराम हो जाता है।

सल्फर ३०—पुरानी बीमारी में इससे लाभ होता है।

आवश्यकसूचना—क्षय हुए दाँत उखड़वादेना अच्छा है। सूजनवाले स्थान में चीरा लगा कर खून और पीव निकाल देने से आराम मिलता है। आवश्यकता हो तो पुल्टिस चढ़ाई जा सकती है।

जिह्वा प्रदाह।

(Ghossities)

सर्दी, कमजोरी, चोट या जख्म, पारेका अपव्यवहार और एक तरह के जीवाणुके कारण यह रोग होता है। इसमें जीभ लाल हो जाती है, फूल जाती है और उसमे दर्द होता है।

चिकित्सा।

बीमारी के आरम्भ में एकोनाइट ३ x या बेलेडोना ६ से लाभ हो सकता है। मर्क्युरियस वाइवस ६ इस रोग की बढ़िया दवा है, बशर्ते कि रोगी ने पहले पारा न खाया हो। चोट लगने के कारण यह रोग होने पर आर्निका ३ या ६। जीभ में सूजन, प्रदाह, निगलने में तकलीफ, डंक मारने जैसी ज्वालाकर वेदना में एपिस ३ या ६। आग में जल जाने के

कारणों से यह रोग होता है। जिस कारण से यह रोग हुआ हो, पहले उसीका इलाज करना चाहिये। साधारणतः कल्केरिया कार्ब, मर्क्युरियस, कर्बोवेज, एसिड फस आदि दवाएँ इस रोगमें व्यवहार की जाती हैं।

मसूढ़ों में जख्म।

(Gun Boil)

मसूढेमें दांतों की जड़में छोटासा फोड़ा होकर वह फट जाता है और उसीके कारण मसूढ़े में जख्म हो जाता है। दाँतमें दर्द, मसूढ़ेमें सूजन, पीब बहना, साधारण बुखार आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६या ३०—रोग के आरंभ में प्रदाह और दपदपी होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस वाइवस ६—यह इसकी उत्तम दवा है। बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६—पीब पैदा होने पर इसे देना चाहिए।

साइलीसिया ६—फोड़ा फट जाने के बाद इसे देने से जख्म जल्दी आराम हो जाता है।

सल्फर ३०—पुरानी बीमारी में इससे लाभ होता है।

आवश्यकसूचना—क्षय हुए दाँत उखड़वादेना अच्छा है। सूजनवाले स्थान में चीरा लगा कर खून और पीब निकाल देने से आराम मिलता है। आवश्यकता हो तो पुल्टिस चढ़ाई जा सकती है।

जिह्वा प्रदाह।

(Ghossities)

सर्दी, कमजोरी, चोट या जख्म, पारेका अपव्यवहार और एक तरह के जीवाणुके कारण यह रोग होता है। इसमें जीभ लाल हो जाती है, फूल जाती हे और उसमें दर्द होता है।

चिकित्सा।

बीमारी के आरम्भ में एकोनाइट ३ x या बेलेडोना ६ से लाभ हो सकता है। मर्क्युरियस वाइवस ६ इस रोग की बढ़िया दवा है, बशर्ते कि रोगी ने पहले पारा न खाया हो। चोट लगने के कारण यह रोग होने पर आर्निका ३ या ६। जीभ में सूजन, प्रदाह, निगलने में तकलीफ, डक मारने जैसी ज्वालाकर पिस ३ या ६। आग में जल जाने से

कारण यह रोग होने पर आर्टिक युरेन्स ३या ६। तेज बीमारी, जलन, सड़ने का उपक्रम आदि में आर्सेनिक ६ या ३०। नींद के बाद तकलीफ का बढना, सडन, स्पर्श बरदास्त न होना इत्यादि लक्षणों में लेकेकिस ६ या ३०। पारे के अपव्यवहार के कारण रोग होने पर नाइट्रिक एसिड, अरम मेट, हिपर सल्फर या कार्बोवेज। मधुमक्खियों के काटने या ऐसेही किसी दूसरे कारण से यह रोग होने पर नेट्रमम्यूर ६ या ३०। नींद में जीभ कट जाने के कारण प्रदाह होने पर एसिडफस ६ या ३०। मुँह सदा साफ रखना चाहिये। अर्निका या आर्टिका युरेन्स के लोशन से कुल्ली करने पर लाभ होता है।

जीभकी अन्यान्य बीमारियाँ।

बच्चे जीभ के दोष से बोलना न सीखें तो नेट्रमम्यूर। पारा खाने के कारण जीभ में छाले पड जायें तो नाइट्रिक एसिड या हिपर सल्फर। बहुत गरम चीज खाने पीनेके कारण जीभका प्रदाह होने पर केन्थरिस। जीभ में छाले और जलन होनेपर नेट्रमम्यूर। जीभ अकड़ जाने पर कास्टिकम। जीभ निर्जीव मालूम होने पर जेल्सीमियम। गरमी के कारण जीभ की बीमारी होने पर एसिड कजोरिक। घी और पान का रस गर्म कर जीभ पर मालिश करने से जीभ के जख्म अच्छे हो जाते हैं।

दाँत में दर्द ।

(Toothache)

दाँतों में अनेक कारणों से दर्द होता है । दर्द कभी एक दाँत मे और कभी कई दाँतों मे एक साथ ही होता है। दर्द के कारण रोगी रोता है,दबा रखता है या खोद कर खून निकालता है । कभी कभी तो वह बेचेनी के कारण पागल की तरह इधर उधर घूमता फिरता है। दाँत के दर्द का इलाज कारण को ध्यान में रखते हुए करना पड़ता है ।

चिकित्सा ।

दाँत के दर्द में निम्नलिखित दवाएं विशेष रूप से व्यवहार की जाती हैं—एकोनाइट, एन्टिम क्रूड, एपिस आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, कार्वोवेज, कास्टिकम, एलियम सिपा, कैमोमिला, चायना, कोफिया, डालकेमारा, ग्लोनइन, हिपर सल्फर, हायोसायमस, इग्नेशिया, लेकेसिस, मर्क्युरियस, नक्स मस्केटा, नक्सवोमिका, फोस्फरस, फोस्फरिक एसिड, पल्सेटिला, रसटक्स,साइलीसिया, स्टेफीसेग्रिया और सल्फर । इनमें से प्रधान प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे लिखे जाते हैं —

एकोनाइट ३X—असह्य वेदना, दपदपी,बेचैनी,शिरदर्द, दर्दके कारण रोगीका पागल हो उठना, शिरमें रक्त-

संचय, सर्दी लगने के कारण यह रोग होना, बच्चों की बीमारी इत्यादि।

बेलेडोना ३x या ६—स्त्री और बच्चों की बीमारी, मसूढ़ों में सूजन और दर्द, चिलक मारने जैसा दर्द, दर्द के कारण बेचैनी, दाँत खोदकर खून निकालने पर आराम मालूम होना, चेहरा और आँखें लाल, शिरमें दर्द।

रसटक्स ६ या ३०—मसूढे में सूजन, खुजली, दर्द, जलन, चिलकना, दाँत का हिलना, विश्राम के समय और हवा में दर्दका बढना, दाँत बढ़े हुए मालूम होना इत्यादि।

ब्रायोनिया ३ या ६—मसूढ़ों में प्रदाह न होना लेकिन दाँत बडे और ढीले मालूम होना, चिलकना, गरमी और बीडी आदि पीने से दर्द का बढ़ना, ठंढे जलसे आराम मालूम होना।

कार्बोवेज ६ या ३०—दाँत की जड़में दर्द, खून बहना, प्यास न होने पर भी मुँह सूखा, चिबाने के समय दर्द।

कामोमिला ६ या ३०—असह्य दर्द, दर्द के कारण रोना, ठंढा पानी पीने से कुछ देर के लिये दर्द का घटना,

कडी चीज चिबाने पर दर्द का घटना, कुछ देरके बाद फिर बढ़ना।

पल्सेटिला ६ या ३०—एक ओर के दाँतो में दर्द, गरम से दर्दका बढ़ना, ठढसे आराम, शाम और रातमें दर्दका बढना, खुला हवा में आराम मालूम होना, दर्द के कारण दाँत को पकडना और फिर छोड देना, गर्भावस्था ऋतु के समय स्त्रियों के दाँत दुखना इत्यादि।

क्रियोजोट ३ या ६—कब्जियत, साँसमे बदबू, दाँतमें कीडा लगने कारण दर्द होना।

अर्निका ६ या ३०—चोट लगने या दाँत उखाडने के कारण दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

नक्स मस्केटा ६ या ३०—ठंढी हवा लगने के कारण यह रोग होना, गरम पानीसे कुल्ला या सेंक करने पर आराम मालूम होना, बच्चे और गर्भवती स्त्रियों को यह रोग होना इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—दाँत के दर्द की यह एक बढिया दवा है। दाँत में कीडा लगने के कारण दर्द, कान और

गले तक दर्द का फैलना, मसूढ़ों में सूजन, बहुत दर्द, लार बहना, गरम पानी से थोड़ी देर के लिये आराम, रात में दर्द का बढ़ना, क्रिमिया गर्भावस्था के कारण यह रोग होना इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२—स्नायविक दंतशूल, दाँत उठा हुआ मालूम होना, मसूढ़े और गाल में सूजन, गर्म चीज खाने या बिछौने की गर्मी से दर्द का बढना, रात में अधिक तकलीफ, चिडचिडा स्वभाव इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—दाँत पर दाँत रखने या ठंढा पानी लगने से फनकनाना, रात में कनपटी तक दर्द का बढना, गर्म प्रयोग से आराम इत्यादि।

सल्फर ६ या ३०—बायीं ओर के दाँत में दर्द, दाँत बड़ा मालूम होना, दाँत में हवा लगने से दर्द का बढ़ना, खाते समय दाँत ठंढे मालूम होना इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—पारे या गर्मी के दोष से दाँत में दर्द, मुँह से लार और मसूढ़े से खून बहना।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—क्षय हुए दाँत, दाँतों पर काले काले दाग, मसूढ़े में जख्म, दाँत की जड या समूचे दाँत में दर्द,

सुबह और रात्रिमें तथा खुली हवा लगने और ठंढी चीज खानेसे दर्दका बढ़ना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—सुबह और रातमें तथा ठढ लगने, मानसिक परिश्रम करने और ठढी वस्तु खाने से दर्दका बढना, गर्म चीज खाने पीनेसे आराम मालूम होना, कब्जियत, चिडचिडा स्वभाव इत्यादि।

स्पाइजिलिया ६ या ३०–स्नायविक दंतशूल में इससे लाभ होता है।

कल्केरिया ६ या ३०—स्त्रियोंको गर्भावस्थामें यह रोग होना, खोखले दाँतमें दर्द, दपदपी, ठंढी हवामें आराम मालुम होना, दाँतमें नासूर जैसा जख्म, गडमाला धातु।

प्लेन्टेगो मेजर १X या २X–इससे दाँतके दर्दमें बहुत लाभ होता है। इसका मदर टिंक्चर रूईकी फुरहरी से दर्दवाले स्थानमें लगाने से लाभ होता है।

ग्लोनाइन ३ या ६–गरमी के बाद एकायक ठढ लगने के कारण यह रोग होना, नीचे या ऊपर के दाँतोंमें दर्द, शिरमें रक्तसंचय और दर्द।

इग्नेशिया ६ या ३०—जो लोग बहुत दुःखी रहते हैं, या जो ज़रामें ही प्रसन्न और ज़रामें ही रोने लगते हैं, उन्हें तथा सामने के दाँतोंमें दर्द, सभी दाँतोंमें सूजन, खाने, बीड़ी पीने, लेटने और सुबह घूमने के बाद तथा शामको दर्दका बढ़ना, इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—दूध पिलाते समय माताओं को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६ या ३०—खानेके बाद, गरम कमरे में और रातमें दर्द बढ़ने पर इसे देना चाहिये। बेलेडोना और मर्क्युरियस के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

फोस्फरिक एसिड ६ या ३०-मसूढ़ों में सूजन और उनसे खून निकलना, बिछौने की गरमी और ठंढ तथा गरमी से दर्दका बढ़ना, खोखले दाँतोंमें दर्द, दर्दका शिरतक फैल जाना इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—मसूढ़ों में तेज दर्द, खून बहना, शिरदर्द इत्यादि।

साइलीसिया ६ या ३०–दिनरात जोरोंका दर्द, रातमें दर्दका बढ़ना, गाल और चेहरे की हड्डियों तक दर्दका फैल जाना, दाँतकी जड़ या मसूढ़ों से बदबूदार स्राव।

बायीं ओरके दाँतोंमें दर्द होने पर कैमोमिला नक्समस्केटा, फॉस्फरस और सल्फर, दाहिनी ओरके दाँतोंमें दर्द होने पर बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, काफिया, लेकेसिस, नक्स, स्टेफीसेग्रिया और फ्लोरिक एसिड, खोखले दाँतोंमें दर्द होने पर कल्केरिया, कैमोमिला, हायोसायमस, लेकेसिस, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, रसटक्स और स्टेफी सेग्रिया, मसूढ़ों में दर्द होने पर कल्केरिया, कार्बोवेज, मर्क्युरियस, नेट्रम म्यूर नक्सवामिका और स्टेफीसेग्रिया, हिलते हुए दाँतों में हायोसायमस, ठंढी चीज खाने पर दर्द बढ़ने से कल्केरिया, कैमोमिला, कस्टिकम, हिपर, मर्क्युरियस, नेट्रम, नक्स, सल्फर, साइलीसिया और स्टेफी सेग्रिया, गर्म चीज खाने पीनेसे दर्द बढ़ने पर ब्रायोनिया, कैमोमिला, नक्स-वोमिका, कल्केरिया और पल्सेटिला आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना–दाँत और मुँह हमेशा साफ रखना चाहिये। हानिकर दन्त मंजनों की अपेक्षा केवल खड़िया मिट्टी दाँत मलने के लिये काममें लाना अच्छा है। खाने पीनेके

गले तक दर्द का फैलना, मसूढ़ों में सूजन, बहुत दर्द, लार बहना, गरम पानी से थोड़ी देर के लिये आराम, रात में दर्दका बढना, क्रिमिया गर्भावस्था के कारण यह रोग होना इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२—स्नायविक दंतशूल, दाँत उठा हुआ मालूम होना, मसूढ़े और गाल में सूजन, गर्म चीज खाने या बिछौने की गर्मी से दर्द का बढना, रात में अधिक तकलीफ, चिडचिडा स्वभाव इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—दाँत पर दाँत रखने या ठढापानी लगने से भनकनाना, रात में कनपटी तक दर्दका बढना, गर्म प्रयोग से आराम इत्यादि।

सल्फर ६ या ३०—बायीं ओरके दाँतमें दर्द, दाँत बडा मालूम होना, दाँतमें हवा लगने से दर्दका बढना, खाते समय दाँत ठढे मालूम होना इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—पारे या गर्मीके दोषसे दाँत में दर्द, मुँहसे लार और मसूढ़े से खून बहना।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—क्षय हुए दाँत, दाँतों पर काले काले दाग, मसूढ़े में जख्म, दाँतकी जड या समूचे दाँतमें दर्द,

में तकलीफ, गला सूखा और उसमें जलन, मुँहसे लार बहना, कपाल में दर्द, जीभ पर लेप, खखारने में तकलीफ इत्यादि लक्षणों में और एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—रोग बढ़ जाने के कारण कान और गर्दन तक दर्दका फैलना, गले में जखम, लार बहना इत्यादि। बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—निगल न सकना, बहुत लार बहना, गलेमें कफ, स्पर्श बरदास्त न होना, बायीं ओरसे रोगका शुरू होना, सोनेके बाद और कभी सुबह, कभी दोपहरमें तकलीफ का बढ जाना आदि लक्षणों में तथा बेलेडोना और मर्क्युरियस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बेराइटाकार्ब ६ या ३०—तालुमूल और नाकके अन्दर लाली तथा जख्म होने पर इसे देना चाहिये। बेलेडोना और मर्क्युरियसके बाद यह दवा भी बहुत फायदा करती है।

एपिस ६ या ३०—नयी बीमारी, गले मे जलन, डंक मारने जैसा दर्द, सूजन, जीभ और तालु मूलमें सूजन तथा लाली।

एलुमिना ६ या ३०—पुरानी बीमारी, गलेमें जख्म की तरह दर्द, गला सूखा, स्वरभंग, पीला या भूरे रंगका बदबूदार स्राव इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०—ऐसा मालूम होना मानो गलेमें बत्ती रक्खी हुई है, कडी चीजोंकी अपेक्षा पतली चीजें निगलनेमें अधिक कष्ट, निगलते समय गलेमें गोली सी मालूम होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—निगलने में तकलीफ, गला तग मालूम होना, प्यास न होने पर भी गला सूखा, गलेके अन्दर बैंगनी रंगकी सूजन, शामको जाड़ा मालूम होना, जाड़े के बाद बुखार, बुखार के समय भी प्यास नदारद।

सल्फर ६ या ३०—गलेके भीतरी भाग और टान्सिल में सूजन, गला सूखा, गला बहुत ही तग मालूम होना।

ब्रायोनिया ६ या ३०—गला छूने या शिर हिलाने पर दर्द मालूम होना, निगलनेमें तकलीफ और दर्द, गलेमें कोई कड़ा पदार्थ अटका हुआ मालूम होना, गलेमें सूजन, गला सूखा हुआ, बोलनेमें तकलीफ, बुखार, चिचिड़ापन इत्यादि।

साइलीसिया ६ या ३०—बढ़ी हुई बीमारीमें पीब पड जानेके बाद इसे देनेसे लाभ होता है।

बेराइटा कार्ब ६ या ३०—टान्सिल पकनेके लक्षण मालूम होनेपर और मर्क्युरियस से काफी लाभ न होनेपर इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—पुरानी बीमारी में इससे भी लाभ होता है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—टान्सिल और आलजिह्वाकी सूजन, गलेमें दर्द, टान्सिलमें जख्म, पुराना रोग, इत्यादि। गण्डमाला धातुवाले रोगियोंको उससे अधिक लाभ होता है।

केप्सीकम ६ या ३०—प्यासके साथ जाड़ा लगकर बुखारका आजाना, मुँहमें छाले, गलेमें जख्म, खाँसी, खाँसते समय गलेमें बहुत दर्द, हमेशा पड़े रहने की इच्छा, ठंढ और हवा भली न मालूम होना इत्यादि लक्षणों में तथा उपरोक्त दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—गलेके प्रदाहकी सभी दवाएँ इसमें भी फायदा करती हैं, इसलिये उन दवाओंमें से भी दवा चुनी

जा सकती है। गरम पानीकी भाप लेना, गरम दूध पीना, सेंकना आदि लाभ दायक है। सरदी या ठंढ से बचना चाहिये। हलकी और पतली चीजें खाना चाहिये।

डिफ्थीरिया।

(Diphtheria)

यह बीमारी भी गलेके प्रदाह से मिलती जुलती है परन्तु उससे अधिक भयंकर और सक्रामक होती है। पनालेकी बदबू, मरे हुए प्राणियों के सड़ने की बदबू, एक तरहका विषाक्त जीवाणु आदि से यह रोग होता है। साधारण रोगों में निगलने में तकलीफ, गलेमें दर्द, जलन, शरीर में दर्द आदि लक्षण प्रकट होते हैं और रोगी प्रायः आराम हो जाता है। साधातिक डिफ्थीरिया में उपरोक्त लक्षणों के साथ जाड़ा बुखार के या दस्त, बहुत कमजोरी, बेचैनी, टान्सिल और आलजिह्वा में सूजन आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। साथही टान्सिल और आलजिह्वा पर एक तरह की कृत्रिम झिल्ली दिखाई देती है, यह झिल्ली चारों ओरसे बढ़ते बढते अन्तमें एक में मिल जाती है और इससे गला रुक आने और साँस लेने में तकलीफ होती है। अन्तमें इसी तकलीफके कारण रोगी की मृत्यु होजाती है। कभी कभी गलेका प्रदाह मुँह, नाक, श्वास, नाली और फेफड़े तक

फलकर कठिन उपसर्ग पैदा कर देता है। किसी तरह झिल्ली निकल जाने पर रोगी आराम होजाता है, वर्ना श्वास कष्ट तथा अन्यान्य कठिन उपसर्गों के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। यह रोग बच्चों को ही अधिक होता है। इसमें अधिक दिनों तक इलाज करना पडता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३—बीमारीके आरम्भ में बुखार, गले में दर्द, सूजन, उत्कंठा, बेचैनी आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—हिलने डोलने या हिलाने पर समूचे बदन में दर्द, जीभ सफेद, प्यास न होने पर भी मुँह सूखा अथवा बहुत अधिक पानी पीनेकी इच्छा।

बेलेडोना ३ या ६—गलेमें बहुत सूजन, बहुत बेचैनी, आँखकी पुतलियाँ फैली हुई, सुस्ती, लेकिन नींद न आना, नींद लगने पर तुरन्त ही जाग पडना।

लेकेसिस ६ या ३०—बेलेडोना देने पर दूसरे दिन फायदा न मालूम हो या सोकर उठने पर तकलीफ बढ़ी हुई अथवा टान्सिल पर झिल्ली के चिन्ह, बायीं ओर

अधिक तकलीफ, गले या गर्दन पर हाथ तक न रखने देना इत्यादि लक्षण दिखायी देने पर इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—दाहिनी ओर अधिक तकलीफ, गरम चीज पीनेसे तकलीफ का बढ़ना, नाकका बन्द हो जाना, मुँहसे साँस लेना, बिछौने पर उछलना, कूदना लातें मारना, आँखें फाड़ फाड़ कर इधर उधर देखना, किसी को पहचान न सकना, आँखें खुली होने पर भी सपने देखना, अकेले रहने में बहुत डर मालूम होना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—बहुत बेचैनी, बच्चा रोगी होने पर गोदीमें चढ़कर इधर उधर घूमने की इच्छा, नींदसे तुरन्त जाग पड़ना और गला दुखने की शिकायत करना, नींदमें खून मिली लार बहना, गिल्टियों मे सूजन, दस्त इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—शुरूसे ही बहुत कमजोरी, निगलते समय कानमें दर्द, श्वासनाली में बहुत कमजोरी मालूम होना, हाथ और पैरोंमें जड़ता या लकवा, पेशाब बन्द इत्यादि।

एन्टिम टार्ट ६ या ३०—श्वासकष्ट, के या मिचली, मुँह के अन्दर तथा जीभ पर चेचक जैसे दाने इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०—अनेकबार केवल इसी दवासे बहुत लाभ होता है।

मर्क्युरियस ६ या ३०—जीभ पर सफेद या पीले रंगका मोटा लेप, मुँहसे बहुत लार बहना, गिल्टियाँ फूली हुई, टान्सिलों पर झिल्ली।

डिफ्थीरिनम ३० या २००—आजकल यह इस रोगकी उत्कृष्ट दवा मानी जाती है। तेज बीमारी, गलेमें मोटा और काला पर्दा, कमजोरी, नाकसे खून गिरना, हाथ पैरों का सुन्न हो जाना इत्यादि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये। चारों ओर इस रोगका प्रकोप होनेपर बतौर प्रतिषेधक दवाके भी यह काम देती है।

एकिनेशिया १X—सड़नेवाली बीमारीमें यह दवा भी शुरूसे आखिर तक काम देती है।

आर्सेनिक ६—रोगकी अन्तिम अवस्था में जब रोगी बहुत सुस्त हो जाये, जख्मों से खून या पीब बहता हो, साँस में बदबू हो, तब इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त एसिडम्यूर, फाइटोलेक्का, कैन्थरिस, [illegible] कार्बोलिक एसिड, सल्फ्युरिक एसिड, कैलीम्यूर,

मर्क्युरियस, सायनेटस, ब्रोमिन, फ्रॉटेलस, बेप्टीशिया, नेजा, नाइट्रिक एसिड, लेकेसिस आदि दवाएं भी लक्षणानुसार लाभ करती है।

आवश्यक सूचना—रोग की प्रारम्भिक अवस्था में पुल्टिस चढ़ायी जा सकती है। फाइटोलेक्का का मदरटिञ्चर दस बूंद एक छटाक पानीमें मिलाकर उससे बीच बीचमें गला धो देना चाहिये। गरम पानीसे कुल्ले करना भी लाभदायक है। गरम पानी में टिञ्चर आइडिन या एमोनिया मिलाकर उसका भपारा लेनेसे भी बहुत फायदा होता है। दूध, वार्ली, सावूदाना आदि पतली और हलकी चीजें खानी चाहिये।

घेघा या गलगण्ड।

(Goitre)

जब गलेकी गिल्टी बढ़कर फूल उठती है लेकिन उसमें प्रदाह नहीं होता अर्थात् वह पकती फूटती नहीं, तब उसे घेघा कहते हैं। इस रोगमें और कोई उपसर्ग पैदा नहीं होते।

चिकित्सा।

गण्डमाला धातु और अमावस्याको रोग बढ़ने पर कल्केरिया कार्ब ६ या ३०। घेघा बहुत कड़ा साथ ही कमजोरी होने पर आयोडियम ३ X या ६। घेघा बहुत बड़ा और कड़ा, कॉटा गड़ने जैसा दर्द, खाँसी, रात में श्वासकष्ट इत्यादि

लक्षणों में स्पञ्जिया ६। दाहिनी ओर घेघा, वर्षाऋतु में या रातके समय तकलीफ बढना इत्यादि में फाइटोलेक्का ६। शिरमें गरमी और रक्ताधिक्य, निगलने में तकलीफ, छूने से दर्द इत्यादिमें बेलेडोना ६। रोगी की उम्रछोटी,रंग गोरा,आँखें नीली और केश पतले होने पर ब्रोमिअम ३०। घेघे में बहुत दर्द, घेघा फूला हुआ और कठिन इत्यादि में नेट्रम कार्ब ३०। घेघा पत्थरकी तरह कडा और शारीरिक अस्वस्थता होने पर कल्केरिया फ्लोरिका ६। इनके अतिरिक्त थाइरेडिन,नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ,कल्केरिया फस,कल्केरिया आयोड, केली आयोड, लेकेसिस, लाइको पोडियम, रसटक्स और ग्रेडियेगा आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करती हैं।

११—छाती के रोग।

(Diseases of the Chest)

हमारी छाती में श्वासनाली, फेफडा आदि श्वासयन्त्र, तथा हृदय और धमनी आदि रक्त सञ्चालनकी क्रिया सम्पादन करनेवाले यन्त्र अवस्थित हैं। इस अध्यायमें इन्हीं यन्त्रो के रोगों का इलाज अंकित किया जाता है।

स्वरभंग या गला बैठ जाना।

(Hoarseness)

सरदी लगना, बहुत चिल्लाना,गाना या लेक्चर देना आदि कारणों से यह रोग होता है। अनेकबार क्षय और खांसी

आदि अन्यान्य रोगों के साथ भी बतौर एक लक्षण के यह प्रकट होता है।

चिकित्सा।

कस्टिकम ६ या ३०—स्वरभंग, गला और छाती में दर्द, जुकाम इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यह इस रोगकी प्रधान दवा है। अनेक बार केवल इसी दवासे यह रोग आराम हो जाता है।

केली बाइक्रोम ३ या ६—कस्टिकम से लाभ न होनेपर और पुरानी बीमारी में इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—जुकाम के साथ स्वर भंग, खाँसी, गला सूखा, गलेमें जलन और प्यास, शामको बुखार, चिड़ चिड़ा स्वभाव इत्यादि लक्षणों में बच्चों को यह दवा देनेसे विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—जुकाम, पीला या हरा, बदबूदार कफ निकलना, छातीमें दर्द, सरदी, गलेमें सूजन, निगलने में तकलीफ, कई दिनों तक जोरसे न बोल सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इससे लाभ न हो तो सल्फर ३० या २००।

इत्यादि कारण से यह रोग होता है। इस रोग में जाड़े के साथ बुखार, गलेमें दर्द, जलन और सुड़सुड़ाहट, सूखी खाँसी, ऐसा मालूम होना मानो गले में कुछ अटका हुआ है, साँस लेते समय साँय साँय और घड़ घड़ आवाज, कर्कश स्वर, स्वर भंग या स्वर लोप, श्वास कष्ट रोग बहुत बढ जाने पर अवसन्नता और प्रलाप आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

यह रोग नया और पुराना दो भागों में बाट दिया गया है। पुराने प्रदाह में उपरोक्त लक्षण अधिक तेज होते हैं। साथ ही गलेमें जलन, काँटे चुभना, स्वरलोप आदि शिकायतें पैदा होती हैं। रोग पुराना हो जाने पर क्षय या श्वास नाली के क्षयके रूपमें परिणत हो जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६ नयी बीमारी, बुखार, बेचैनी, प्यास, सूखी खाँसी, गले में दर्द, ठढी हवा लगने से यह रोग होना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—बुखार, गले में दर्द, शिरमें दर्द, गले का बैठ जाना, गले में जलन, निगलने में तकलीफ, आधीरात के समय आक्षेपिक या कुत्ता भोंकने जैसी खाँसी इत्यादि।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—गानेवालों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

एन्टिम टार्ट ६ या ३०—गलेमें कफ घड़ घड़ाना लेकिन उसका बाहर न निकलना।

ब्रोमियम ६ या ३०—गलेमें छीलने जैसा दर्द, कफ जमने के कारण साँस रुकने,का उपक्रम, खाँसी और स्वरभग।

फोस्फरस ६ या ३०—गलेमें सुडसुड़ाहट, तेज खाँसी, शिरमें दर्द, स्वरभग, शामके वक्त तकलीफ का बढ़ना।

आयोडियम ६ या ३०—जरा जरा में सरदी लगना, पुरानी बीमारी, भूख अधिक लेकिन रोगी दुबला पतला।

हिपर सल्फर ६—गलेमें घड़ घड़ाहट और खुजली, श्वासकष्ट, पीब जैसा कफ निकलना, निगलने के समय एक कानसे दूसरे कान तक दर्द होना, स्वरनाली में जख्म, जाड़ेमें यह रोग होना इत्यादि।

स्पञ्जिया ६—स्वरभंग, सूखी खाँसी, गले में जलन, खाँसते समय साँय साँय या घ घं आवाज, शामको तकलीफ का बढ़ जाना इत्यादि । इससे लाभ न होनेपर हिपर देना चाहिये ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—स्वरभंग, गलेमें जख्म, शामको लेटने पर सूखी खाँसी, हाथ पैर ठंढे, जरामें ही सरदी, लगना गण्डमाला धातु इत्यादि ।

एलुमेन ६—बूढ़ों की पुरानी बीमारी में इससे अधिक लाभ होता है ।

कष्टिकम ६—स्वरभंग, गलेमें खुजली, खाँसी, गलेमें दर्द और कफका इकट्ठा होना, गानेवालों की बीमारी ।

ड्रोसेरा ६—गले में सुड़सुड़ाहट के साथ अनवरत खाँसी आती हो तो इसे देना चाहिये ।

इनके अतिरिक्त पपिस, कार्बोवेज अर्जेन्टम नाइट, ब्रायोनिया, रसटक्स, केमोमिला, डाल्केमारा, केलीबाइक्रोम, केली हाइड्रो, मर्क्युरियस, रिउमेक्स, लेकेसिस आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है ।

खाँसी ।

(Cough)

खाँसी स्वयं कोई रोग नहीं है, बल्कि दूसरे रोगों का एक लक्षण है । जब गलेकी कोई बीमारी या ब्रोंकाइटिस, न्युमोनिया, फुसफुसवेष्ट प्रदाह, स्वरभंग और क्षय आदि रोग होते है, तब उन बीमारियोंके कारण खाँसी आने लगती है। सर्दी या ठंढ लगना इसका उत्तेजक कारण कहा जा सकता है ।

खाँसी दो भागों में बाँटी जा सकती है-सूखी और तर या सरल । सूखी खाँसी होनेपर कफ नहीं निकलता तर खाँसी होनेपर आसानी से कफ निकल जाता है और रोगीको अधिक कष्ट नहीं होता ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—नयी और सूखी खाँसी, गलेके अन्दर सुडसुडाहट, ठढा पानी पीनेकी इच्छा, रातके समय और खानेपीने के बाद तकलीफ का बढना, चेहरा लाल, बेचैनी और तेज खाँसी ।

नक्सवोमिका ६ या ३०—शराब या कॉफी पीनेवालों की सूखी खाँसी, कब्जियत, शिर और पेट में दर्द, खाँसी के

कारण तड़के जग पड़ना या सुबह खाँसीका बढ़ना, रात में श्वास कष्ट और छाती में भार मालूम होना इत्यादि।

केमोमिला १२ या ३०—सूखी खाँसी, रातमें सोते समय भी खाँसीका बढ़ना, चिड़चिड़ा स्वभाव, गले में सुड-सुड़ाहट छाती में साँय साँय और घड़घड शब्द, बच्चों को ठढ लगनेके कारण जाड़ेमें या दाँत निकलनेके समय यह रोग होना।

हायोसायमस ६ या ३०—सूखी खाँसी, रातमें खाँसी का बढ़ना और उसके कारण नींद न आना, लेटने पर खाँसी का जोर, उठ बैठने पर आराम, घंटी बढ़ जाने के कारण गले में सुड़सुड़ाहट, बच्चे और बूढ़ों की खाँसी।

इपीकाक ६ या ३०—खाँसी के कारण सास लेनेमें तकलीफ, चेहरा फीका, हाथ पैरका अकड जाना अथवा बदबूदार कफ, साथही मिचली या क। गलेमें साँय साँय अवाज, छाती में कफ जमा होने परभी बाहर निकलना दमा के साथ खाँसी इत्यादि

बेलेडोना ३ या ६—इपीकाक जैसी श्वासरोधक खाँसी, गलेमें उत्तेजना और प्रवाह के कारण खाँसी, गले में दर्द, निगलने में तकलीफ ऐसा मालूम होता है याने गले में कुछ

अटका हुआ है। खाँसी में खूनके छींटे,रातमें खाँसी का बढ़ना इत्यादि।

मर्क्यूरियस६या३०—रात में सूखी और आक्षेपिक खाँसी अथवा सोनेके पहले खाँसी,कभी कभी कफ में खून जाना,छाती में दर्द, बच्चों की नाक से खून बहना, छाती और शिर में फट जाने जैसा दर्द, स्वर भग जुकाम या पतले दस्त इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—दिन में कई वार या शाम को खाँसी का जोर बढना, मिचली या कै, बुखार, पसीना आना, छाती में सूजन सफेद पीला या भुरे रग का कफ निकलना, छाती, श्वास नाली और शिर में दर्द, नमकीन या खट्टा कफ।

केप्सीकम ६ या ३०—सूखी खाँसी शाम के समय और रात में खाँसी का बढना, कभी कभी कै हो जाना शिर, गला, और कान में दर्द, शरीर के विभिन्न अगों में दर्द।

रसटक्स६या३०—शामसे लेकर आधी रात तक सूखी खाँसी, छाती में दर्द, लोहे के मोरचे जैसा कफ, ठंडी हवामें खाँसी का बढ़ना, चलने फिरने से या गरम स्थान में रहने से आराम मालूम होना, मुँह में खून का स्वाद इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—खुली हवामें खाँसीका बन्द हो जाना, गरम स्थान में बहुत बढ़ना, सुबह पीला, नमकीन या कडुवा कफ निकलना, स्वाद और गन्ध मालूम न होना, खाँसते समय पेशाब हो जाना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—गलेमें सुडसुडाहट के साथ सूखी खाँसी, खानेके बाद खाँसीका शुरू होना, गरम कमरे में खाँसीका बढ़ना, पीला पीला कफ और उसमें खून, शिर, गला, पसलियाँ, छाती और तलपेट में दर्द, हिलने डोलने से खाँसीका बढ़ना।

साइना ३X या २००—सूखी और आक्षेपिक खाँसी, जुकामके साथ अथवा पेटमें कृमि होनेके कारण खाँसी, नाकमें जलन या खुजली, छूने से चिढ़ उठना इत्यादि।

डाल्केमारा ६—सरदी लगने के कारण तर खाँसी, स्वरभंग, कभी कभी रातमें कफके साथ उज्ज्वल लाल रंगका खून निकलना, कमरे में या लेटने पर तकलीफ का बढ़ना, चलने फिरने से आराम।

ड्रोसेरा ६ या ३०—स्वरभंग के साथ सूखी या तर खाँसी, खाँसते समय छाती और पसलियों में दर्द होनेके कारण

उन्हें हाथसे पकड लेना, पहले खायी हुई चीजें, बाद को बलगम और पानीकी कै,हँसने बोलने,या लेटने पर खाँसी का बढना इत्यादि ।

फोसफरिक एसिड ६ या ३०—तर खाँसी,जोरोंका स्वर-भंग, गलेमें, सुड सुड़ाहट, सुबह पीला या सफेद कफ निकलना और शामको सूखी खाँसी, पीब जैसा कफ या काला खून निकलना, छाती में दर्द और जलन, खाँसते समय शिर में दर्द ।

इग्नेशिया ६ या ३०—रातदिन सूखी खाँसी, जुकाम, चित्तका दुःखी रहना, दिन में खाने के बाद, शामको लेटने पर और सुबह बिछौने से उठने पर खाँसी का बढना ।

आर्निका ६ या ३०—खाँसी कफके साथ खून निकलना, दमा, पेट, छाती और पसलियों में दर्द, बच्चों को सुबह या सोते समय खाँसी आना, खाँसी के कारण उनका रोना चिल्लाना ।

विरेट्रम ६ या ३०—गहरी खाँसी, चेहरा नीला, अपने आप पेशाबका निकल पडना, श्वासकष्ट, बहुत कमजोरी ।

आर्सेनिक ६ या ३०—तर खाँसी लेकिन बड़ी तकलीफके साथ बहुत थोड़ा कफ निकलना, पानी पीनेके बाद हमेशा खाँसी का आना, रातमें खाँसी,कफ में खून,श्वास-कष्ट, बहुत सुस्ती और कमज़ोरी रात में कलेजा धड़कना इत्यादि ।

साइलीसिया ६ या ३०—पीला पीव जैसा कफ,छाती में भार, खाँसते खाँसते तलपेट और गला दुखने लगना, अथवा गहरी सूखी खाँसी, कफ में खून, छाती में दर्द और सूजन,रातमें ऐसा मालूम होना मानो साँस रुक जायगी,अच्छी तरह साँस न ले सकना इत्यादि ।

सल्फर ६ या ३०—पुरानी सूखी खाँसी, दोपहर के बादसे लेकर आधी रात तक खाँसी का आना, रातमें नींद न आना, अथवा दिन में, पीले या हरे रंगका बदबूदार कफ और रात में सूखी खाँसी, खाँसते समय मानो छाती फट जायगी, श्वास कष्ट, छातीमें साँय साँय आवाज, कलेजा धड़कना, रातमें उठकर बैठने के लिये मजबूर होना अथवा शिरमें दर्द , आँखोंके सामने अँधेरा, शिर और चेहरा गरम, हाथ ठंढे इत्यादि ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु, रातमें खाँसी, स्वरभंग, स्वरनाली और गलेमें जख्म, छाती में कफ घड़घड़ाना, खाँसते समय शिरमें पसीना, पीला हरा या भूरे रंगका बदबूदार कफ, कफकी बदबू से कै हो जाना, रातमें पसीना, बहुत कमजोरी, इत्यादि।

ब्युप्रम ६ या ३०—सूखी और श्वास रोधक खाँसी, खाँसते खाँसते श्वास अटक जाना, ठंढा पानी पीने से आराम, रातमें तकलीफ का बढ़ना, दमा, हुपिंग खासी इत्यादि।

केली बाइक्रोम ६ या ३०—कष्ट के साथ गोंद जैसा चिकना कफ निकलना, खींचने पर कफ का रस्सी की तरह लम्बा होना इत्यादि।

स्पञ्जिया ६ या ३०—सूखी खाँसी, कुत्ता भौंकने की सी आवाज, गलेमें साँयसाँय होना, गले में सुड सुड़ाहट और जलन, सोने पर खाँसी का बढना इत्यादि।

कस्टिकम ६ या ३०—सरदी लगने के कारण सूखी खाँसी, चिल्लाने या गला बैठ जाने के कारण खाँसी, गले में जख्म मालूम होना, ठंढा पानी पीने से आराम इत्यादि।

आवश्यक सूचना—खाँसी के रोगी को सरदी से बचना चाहिये, लेकिन इस तरह नहीं कि सर्दी बरदाश्त करने की शक्ति ही नष्ट हो जाय। घूमना, फिरना और नहाना धोना समुचित ढंग से चालू रखना चाहिये। रोगी ठंढा पानी पीना पसन्द करे तो जबरदस्ती रोकना न चाहिये। गरम चीजें पीनेसे स्थाई लाभ नहीं होता। जुलाब लेना ठीक नहीं। बुखार की हालत में साबूदाना और बार्लो आदि तथा बुखार न होने पर रोटी आदि खाने को देना चाहिये। शाम को पानी और चीनी मिलाकर गरम दूध पिया जा सकता है मिठाई खाना मना है।

हुपिङ्ग खाँसी।

(Whooping Cough)

यह एक संक्रामक रोग है और बच्चों को ही अधिक होता है। इसमें खाँसते समय हुप हुप आवाज होती है, इस लिये इसे हुपिङ्ग खाँसी कहते हैं। सरदी लगने के कारण प्राय जाड़े में ही यह रोग होता है। कभी कभी चारों ओर यह रोग फैल जाता है।

इसमें पहले साधारण बुखार, सरदी और खाँसी होती है। धीरे धीरे खाँसी बढ़ जाती है और स्वरभंग आदि लक्षण प्रकट होते हैं। खाँसते खाँसते श्वास रुक सा जाता

है और चेहरा तथा आँखें लाल या नीली हो जाती है। अनेक बार कै भी हो जाती है। रात में खाँसी बहुत जोर करती है।

यह रोग दो तीन सप्ताह में और कभी कभी डेढ दो महीने में आराम होता है। मृत्यु बहुत कम होती है लेकिन रोगी कमजोर हो जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६—रोग के आरम्भ में, साधारण बुखार, साय साय आवाज, कफ न निकलना, गले में ज्वालाकर दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

डाल्केमारा ६—जोरों की सरदी लगने के कारण यह रोग होना, स्वरभंगके साथ तर खाँसी।

पल्सेटिला ६ या ३०—तर खाँसी, खाँसते खाँसते कै हो जाना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—सूखी खाँसी, कै, उत्तेजना, चेहरा नीला, श्वास रुक जानेका डर, आधी रातके बाद खाँसीका शुरू होना और सुबह तक रहना। नक्सवोमिका

देने पर कफ ढीला पड़े तो पल्सेटिला देना चाहिये। कै रुक जाय लेकिन श्वास रुकने का भय कम न हो तो इपीकाक देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—इपीकाक से लाभ न होने पर और दिन में खासकर सुबह के वक्त तथा आधी रात के पहले कई वार खाँसी आना, गला लाल, निगलने में तकलीफ, आँखे अश्रुपूर्ण, शिर में दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—नयी बीमारी, सूखी खाँसी, रात मे तकलीफ का बढ़ना, शिरमें रक्त सचय या दर्द, गलेमें सूजन इत्यादि।

रोगकी द्वितीयावस्था में जब आक्षेप के साथ खाँसी आती है, तब इपीकाक, विरेट्रम, ड्रोसेरा और साइना से अधिक लाभ होता है।

इपीकाक ६ या ३०—हरवार खाँसी आनेके बाद एक एक खुराक इसे देने से बहुत लाभ होता है।

विरेट्रम ६ या ३०—बहुत कमजोरी, बुखार, ठंढा पसीना, खास कर कपाल में, अपने आप पेशाब हो जाना।

रसटक्स ६ या ३०—केवल रात में खाँसी आती हो तो इसे देना चाहिये।

ड्रोसेरा ३ या ६—रातमें और विश्रामके समय खाँसी का जोर बढ़ना, ठंढके बाद प्यास, पसीना गरम, रात में ही पसीने का आना, घड़घडाहट के साथ खाँसी, स्वरभंग, हँसने या बोलने पर खाँसी का बढ़ना, श्वासका रुक जाना इत्यादि।

साइना ३X या २००—खाँसी के समय शरीर का अकड़ जाना, कृमिके कारण यह रोग होना, नाक खुजलाना, बुखार के समय भूख, मलद्वारमें खुजली इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—खाते समय खाँसी, के कारण खायी हुई चीजों की कै।

फस्युलस ६ या ३०—कल्केरिया जैसे ही लक्षणों में दाँत निकलने के समय बच्चों को यह दवा दी जाती है।

केलीकार्ब ६ या ३०—रात में तीन बजेके बाद खाँसी, सुबह खाँसीका जोर, खायी हुई चीजों की कै, आँखों के आस पास सूजन, ऊपर का पपटा बहुत फूला हुआ।

क्युप्रममेट ६ या ३०—खाँसते समय छाती में कफ घड़घड़ाना, खाँसीके बाद खींचन और कै। विरेट्रम के बाद इससे अधिक लाभ होता है। इसे देने से रोग की अवधि घट जाती है।

मर्युरियस ६ या ३०—ऊपर ऊपर दो बार खाँसी, बाद को बहुत देर तक खाँसी का न आना, रात में रोगका बढ़ना, कै, नाकसे खून निकलना, रातमें पसीना, क्रिमिके बाद यह रोग होना।

अर्निका ३ या ६—नाक और मुँहसे बहुत खून गिरना, आँखों में खून का चढ़ना, खाँसी के बाद बच्चे का रोना।

हिपरसल्फर ६ या ३०—कफ सूखा या कुछ ढीला, स्वरभंग, खाँसी के बाद बहुत अधिक रोना।

फेरमफस ६ या ३०—न्युयोनिया या ब्रोंकाइटिस के लक्षण, तेज बुखार, सूखी और कड़ी खाँसी, छाती में घड़घड़ाहट।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—रोगी का चेहरा नीला, छाती में कफ धड़धड़ाना लेकिन उसका बाहर न निकलना इत्यादि। रोगके आरम में इसे देनेसे बीमारी जल्दी अच्छी हो जाती है या उसका जोर घट जाता है।

इनके अतिरिक्त केमोमिला, स्कुइला, सिफाइटिस, चेलीडोनियम, सल्फर, पाडु सन आदि दवाओं से भी लाभ होता है। रोगीको सरदी से बचाना चाहिये। बुखार होने पर सायूदाना और बार्ली आदि तथा बुखार न होने पर हलकी और पुष्टिकर चीजें खानेको देना चाहिये।

क्रुप खाँसी।

(Croup)

यह एक तरहकी घातक खाँसी है। इसमें पहले साधारण खाँसी और सर्दी के जसे ही लक्षण प्रकट होते हैं। बादको धीरे या किसी दिन अचानक जोरों की खाँसी शुरू होती है और बच्चा खाँसते खाँसते बेदम हो जाता है। इस खाँसीमें खाँसते समय गधेके रेंकने जैसी, कुत्ते के भौंकने

जैसी या कॉसेके बर्तन को बजाने जैसा आवाज होती है। गलेमें सॉय साय अवाज, घड़घड़ाहट, स्वरभंग और श्वास-कष्ट आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। अन्त में रोग बढ़ने पर बदन ठंढा, नाड़ी गायब और बेहोशी आदि लक्षण प्रकट हो कर रोगी का मृत्यु हो जाती है। यह रोग सात वर्ष से बड़ी उम्रके बच्चों को नहीं होता। बीमारी तेज होने पर दोही तीन दिनमें रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६—रोगके आरंभ में जब साधारण सरदी या खाँसी जैसे लक्षण हों तब इसे देना चाहिये। खाँसी की अन्य दवाएँ खास कर हिपर सल्फर, सेम्बुकस, हायोसायमस, साइना, नक्सवोमिका, विरेट्रम, केमोमिला या होसेरा देनेसे भी बीमारी दब जा सकती है।

हिपरसल्फर ६ या ३०—पिछली रात में और सुबह खाँसीका बढना, गले में घड़घड़ाहट लेकिन कफ न निकलना, स्वरभंग, सूखी खाँसी, कुत्ता भोंकने जैसी आवाज।

स्पंजिया ६ या ३०—कर्कश आवाज, सॉय साँय होना, साँस में आरी चलने जैसी आवाज, दम फूलना, जाड़े

के दिनों में यह रोग होना, आधी रातके समय खाँसी का जोर बढ़ना।

फोस्फरस ६ या ३०—बहुत ज्यादा स्वरभंग, गले में दर्द, सूखी खाँसी, शामसे लेकर आधी रात तक खाँसी का बढ़ना इत्यादि लक्षणों में और उपरोक्त तीनों दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—आधी रातके बाद खाँसीका बढ़ना, बहुत कमजोरी, अस्थिरता, व्याकुलता, बारबार पानी माँगना, लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना।

बेलेडोना ३ या ६—बड़ी तेजीके साथ रोगका हमला, खाँसीके कारण साँसका रुक जाना, चेहरा लाल, काँपना, नींद न आना, नींद से चौंक पड़ना इत्यादि।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—रातमें नींदसे जाग पड़ना, जागते ही खाँसी का शुरू हो जाना, ठंडा पसीना, चेहरा नीला, श्वासकष्ट, गले में कफ घड़घड़ाना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त कार्बोवेज, केमोमिला, आर्निका, कल्केरिया कार्ब, फ्युमम, क्लोरम, जेल्सीमियम, कस्टिकम, आयोडियम, केली बाइक्रोम, लाइकोपोडियम, सेङ्गुइनेरिया, सेम्बुकस और ब्रोमिअम आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—इस रोगका इलाज बड़ी सावधानी के साथ किसी चतुर चिकित्सक द्वारा करवाना चाहिये । रोगके समय या रोग आराम हो जानेके बाद भी रोगीको सर्दी से बचाना चाहिये । खानेके लिये, साबूदाना और बार्ली आदि हलकी चीजें खानेको देना चाहिये ।

रक्तकास या खूनी खाँसी ।

(Hoemoptyses)

अनेक वार खाँसी आनेपर कफके साथ खून निकलता है । इसे ही रक्तकास कहते हैं । अधिक परिश्रम, भारी चीज उठाना, मल मूत्र या पसीनेका बन्द हो जाना, जोरसे बोलना या गाना, क्षय रोग, रजस्राव या बवासीरका खून रुक जाना आदि अनेक कारणोंसे यह रोग होता है । साधारण बीमारी में अधिक चिन्ता न कर धैर्यपूर्वक इलाज करना चाहिये, लेकिन जब अधिक खून निकले या बारंबार रोगका आक्रमण होनेके कारण रोगी कमजोर हो जाय, तब अवश्य चिन्ता करनी चाहिये ताकि रोग असाध्य न हो जाय ।

चिकित्सा ।

कफ के साथ खून—अनेक वार मसूढ़े या नाकसे भी खून निकलकर कफ या थूक में मिल जाता है। छाती से कफ निकलने पर वह नीचेसे आता हुआ मालूम होता है और वह गरम तथा मीठा मालूम देता है। साथ ही छाती में दर्द और जलनसी, मालूम होती है। यदि वास्तव में छातीसे खून आता हो लेकिन उसकी तादाद अधिक न हो, खाँसी भी साधारण ही हो, तो खाँसीको ही कोई दवा देनेसे वह आराम हो जाता है। बेलेडोना, मर्क्युरियस, कार्बोवेज, पल्सेटिला, ब्रायोनिया, चायना, डाल्केमारा, स्टेफीसेग्रिया, साइलीसिया और लेकेसिस आदि इसकी अच्छी दवाएँ हैं। "खाँसी" देखिये।

छाती में चोट—जोरसे गिर पड़ने, मार पड़ने या चोट लगनेके कारण मुँहसे खून गिरे तो पहले आर्निका देना चाहिये। कुछ दिनोंमें यदि बुखार आजाय और छातीमें दर्द मालूम हो तो एकोनाइट देना चाहिये। यदि इससे तकलीफ अधिक बढ़ जाय तो फिर आर्निका देनेसे काफीलाभ होता है।

खतरनाक हालत—खून निकलनेके कारण खतरनाक हालत मालूम हो तो एकोनाइट इपीकाक, आर्निका, चायना और ओपियम-इन दवाओं में से कोई दवा चुननी चाहिये।

रजस्राव रुकनेके कारण—यदि रजस्राव रुकनेके कारण स्त्रियों को यह रोग हो तो उन्हें पल्सेटिला या ब्रायोनिया देना चाहिये। फफ्युलस या विरेट्रम से भी लाभ होता है।

होमियोपैथिक चिकित्सा

एकोनाइट ३X या ६—छाती पूर्ण, जलन, कलेजे में धड़कन, बेचैनी, जरासा खाँसते ही आसानीके साथ बहुतसा खून निकलना।

इपीकाक ६ या ३०—एकोनाइट से खूनका निकलना रुक जाने पर भी मुँहमें खूनका स्वाद बना रहना, खाँसी, कफके साथ थोड़ा खून, मिचली और कमजोरी आदि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—एकोनाइट से पूरा लाभ न होना, बल्कि कलेजे की धड़कन का बढ़ जाना, रात में नींद न आना, शरीर में दाह इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इसे देने के बाद रोग का पुनः आक्रमण होने पर इपीकाक, नक्सवोमिका या सल्फर। इससे रोग बढ़ जाय तो फिर आर्सेनिक।

चायना ६ या ३०—बहुत सूखी खाँसी, खाँसते समय दर्द, मुँह में खून का स्वाद, बहुत खून निकलने के कारण कमजोरी और बेहोशी, हाथ पैर ठंढे, सदा पड़े रहना इत्यादि। इसके बाद फेरम, आर्निका या आर्सेनिक देने से अधिक लाभ होता है।

फेरम ६ या ३०–जरा सा खाँसते ही खालिस खून निकलना, खून की तादाद कम, बहुत कमजोरी, धीरे धीरे टहलने से आराम मालूम होना।

आर्निका ६ या ३०—काला काला गॉठ जैसा खून, खून का आसानी से निलकना, दमा, छाती में जलन और दर्द, बेहोशी जैसी सुस्ती, कभी कभी कफ मिला लाल खून निकलना।

पल्सेटिला ६ या ३०—कुछ दिनों की पुरानी बीमारी, खून काला और गॉठ गॉठ जैसा, रात में बहुत दुर्बलता, रोने की इच्छा इत्यादि। पल्सेटिला के बाद सिकेली से काफी लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—खून गाँठ जैसा लेकिन चमकीला लाल, बहुत उत्कण्ठा, अस्थिरता, चिड़चिड़ाना, रात के समय छाती में सुड़सुड़ाहट इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०–बवासीर का खून रुक जाने या शराब पीने के कारण यह रोग होना, छाती में सुड़सुड़ाहट, शिर में दर्द, सुबह तकलीफ का बढ़ना। इससे लाभ न होने पर सल्फर देना चाहिये।

ओपियम ६ या ३०—थक्का थक्का कफ मिला खून निकलना, बूढ़े शराबियों की बीमारी, श्वासकष्ट, कलेजे में जलन, बोलने में कमजोरी, तन्द्रा, कलेजे में जलन।

मर्क्युरियस ६ या ३०—ओपियम देने के बाद छाती पर पसीना आना, साथ ही बेचैनी का होना अथवा न होना।

हायोसायमस ६ या ३०—रात में लेटने पर सूखी खाँसी के साथ खून निकलना, नींद में रोग का आक्रमण। इसके बाद ओपियम और नक्सवोमिका से अच्छा लाभ होता है। इनसे भी लाभ न हो तो आर्सेनिक देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—गले में सुड़सुड़ाहट होने के कारण खाँसी आना और खून निकलना, छाती में रक्त सचय और दर्द मालूम होना, चलने फिरने से तकलीफ का बढ़ना।

डाल्केमारा ६—सर्दी लगने के कारण या बहुत दिनों तक तर खाँसी आने के बाद यह रोग होना, खून का रंग चमकता लाल, विश्राम के समय तकलीफ का बढ़ना, शेष लक्षण बेलेडोना के समान।

कार्बोवेज ६ या ३०—छाती में बहुत जलन, खून का निकलना बन्द हो जाने पर भी इस तकलीफ का मौजूद रहना। हवा का परिवर्तन बरदास्त न होना इत्यादि । हेमामेलिस इरेकथाइटिस और मिलिफोलियम भी इस रोग की अच्छी दवाएं है।

खून निकलने के बाद कमजोरी में—चायना फेरम, कोफिया, इग्नेशिया या फोस्फरिक एसिड देने से लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—बवासीर का खून या रजस्राव रुक जाने पर दूसरे रास्ते से खून निकले तो अधिक चिन्ता न करनी चाहिये और खून न रुककर कोई बुरा लक्षण दिखाई दे तो उसीका इलाज करना चाहिये। रोगी का हर हालत में शान्त और स्थिर रहना चाहिये। रोगी का कमरा ठंढा और हवादार होना चाहिये। पीने के लिये चाय काफी आदि गरम चीजें न देनी चाहिये। खाने की चीजें हलकी, पुष्टिकर और सुपाच्य होनी चाहिये। पीने को ठंढा पानी और बरफ के टुकड़े चूसने को देना लाभदायक है। परिश्रम, अधिक बोलना, गाना, सरदी लगना आदि हानिकारक है।

दमा या श्वासकास।

(Ast'm)

यह रोग सभी उम्र के आदमियों को होता है, लेकिन बड़े उम्र के आदमियों को अधिक होता है। धूल, तम्बाकू, चूना, सन या घास आदि के कण सॉस में जाना, माता पिता को यह रोग होना, रातमें अधिक भोजन, शारीरिक या मानसिक उत्तेजना, सर्दी लगना आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। इसमें आक्षेप पैदा होने के कारण श्वासकष्ट पैदा होता है और गले में सॉय सॉय आवाज होती है। छाती में भार मालूम होना, बिछौने पर सोया या बैठा न जाना, श्वासकष्ट, दूर करने के लिये हाथ ऊपर को उठाये रहना, सूखी खॉसी आना, कफ निकलने पर आराम मालूम होना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। यह रोग कष्टकर अवश्य होता है, पर घातक नहीं होता। बल्कि लोग कहते हैं कि दमाके रोगी अधिक दिन जीते हैं।

चिकित्सा।

ब्लैटाओरिएन्टलिस मदरटिंचर या ३X— सबसे पहले इस दमा को आजमाना चाहिये। इससे बहुत लोग अच्छे हुए हैं।

एकोनाइट ३X या ६—सर्दी लगने के कारण यह रोगहोना, श्वास कष्ट, बेचैनी गले में, घड़घड़ाहट, मृत्युभय इत्यादि।

लोबेलिया १X या ३—मिचली या कै, पाकस्थली में तकलीफ, आक्षेप युक्त दमा, श्वासरोध इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। रोग का हमला होतेही इसे सेवन करने से दमा का जोर घट जाता है।

इपीकाक ३ या ६—लगातार आक्षेपयुक्त खाँसी श्वास कष्ट, छाती में घड़घड़ाहट, तेज श्वास प्रश्वास, मिचली या कै, चलने फिरने से खाँसी का बढना, ऐसा मालूम होना मान दम अटक जायगा इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—फेफड़े में रक्त सचय, गले में साँय साँय आवाज, छातीमें जलन और ठढा पसीना, आधी रातके बाद तकलीफ का बढ़ना, अस्थिरता, बोलने, हँसने या लेटने पर रोगका बढ़ना इत्यादि। इपीकाकके बाद इसे देनेसे विशेष लाभ होता है।

एन्टिम टार्ट ३ या ६—छाती में कफ घड़घड़ाना लेकिन उसका बाहर न निकल सकना, तेज श्वास प्रश्वासके कारण उठकर बैठे रहने के लिये मजबूर होना इत्यादि।

सेनेगा मदर टिञ्चर—लगातार खाँसी, खाँसी पहले सूखी बादको तर, श्वासकष्ट, छातीमें घड़घड़ाहट, स्वर भग,

विश्राम करने या चलने फिरने से तकलीफ का बढ़ना, पसीना आने पर और शिर झुका लेने पर आराम मालूम होना इत्यादि लक्षणों में और इपीकाक, आर्सेनिक या लोबेलिया से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एसिड हाइड्रो ६ या ३०–बहुत श्वास कष्ट, श्वास रुक जाने का भाव, आक्षेप युक्त दमा।

क्युप्रम ६ या ३०–आक्षेप युक्त दमा, खाँसी, खाँसते खाँसते कै हो जाना, शरीर सूखा इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०–पेटमें गोलमाल, कब्जियत, पेट फूलना, खानपानका अत्याचार, शराबियोंका दमा, वायु नली भुजमें आक्षेप इत्यादि।

सल्फर ६ या ३०–दूसरी दवाओंका सेवन करते समय बीच बीच में इसे देने से अधिक लाभ होता है। गठिया, चर्म रोग या धातुविकार के कारण दमा होनेपर इसे ही देना चाहिये।

कैंटिकम ६ या ३०—सुबह स्वरभग और दमेका बढ़ना, कमर में दर्द, ठंढा पानी पीने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

विरेट्रमविरिडि ३ या ६—आक्षेप युक्त श्वास प्रश्वास, कै था मिचली, शरीर में ऐंठन और सुस्ती, नाक, कान और पैर ठंढे, चेहरे पर ठंढा पसीना।

सेम्बुकस १X या ३X—रात में रोग का हमला, बहुत अस्थिरता, श्वासकष्ट, आधीरात के समय दम अटकाने वाली खाँसी, शिर झुकाने और लेटने पर रोग का बढ़ना।

नेट्रमसल्फ ६X विचूर्ण—प्रमेह या मैलेरिया के रोगियों को या तर स्थान में रहनेवालों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त वेसीलिनम, केलीहाइड्रो, आयोनिया, लेकेसिस, वेलेडोना, आर्निका, पलियमसिपा, चायना, कोफिया, पल्सेटिला, इग्नशिया, केमोमिला, स्टेफीसेग्रिया और रस-टक्स आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोगी को अपना पेट साफ रखना चाहिये। रोग का हमला होने पर खुले बदन, खुली हवा में घूमने से आराम मिलता है। लोबेलिया और ब्लैटा आदि दवाओं से तुरन्त दमा दबता है। पहले इन दवाओं का सेवनकर, रोग दबने पर अन्य दवाओं का सेवन करना अच्छा है। तेल, खटाई, मिर्च आदि गरम चीजें खाने से दमे का जोर बढ़ता है। हलकी और पुष्टिकर चीजें खानी चाहिये ।

ब्रोंकाइटिस।

(Bronchitis)

श्वासनाली या वायुनली भुज की श्लैष्मिक झिल्ली के प्रदाह को ब्रोंकाइटिस कहते हैं। इसके तीन भेद हैं (१) नया ब्रोंकाइटिस (२) कैपिलरी ब्रोंकाइटिस और (३) पुराना ब्रोंकाइटिस। इनके प्रधान लक्षण नीचे अंकित किये जाते हैं।

नया ब्रोंकाइटिस—यह प्रायः सरदी लगने के कारण होता है, इसलिये सरदी से उत्पन्न होनेवाला ब्रोंकाइटिस भी कहलाता है। इसमें हाथ पैर में दर्द, छाती में दर्द, जाड़ा लगना, बुखार आना, सूखी या तर खाँसी, फेना जैसा कफ निकलना, कभी कभी कफमें खूनके छींटे, छाती में सॉय सॉय आवाज, तेज श्वास प्रश्वास, छाती में तरह तरह की आवाज, शामको बुखार और खाँसीका बढ़ना इत्यादि लक्षण प्रकट होते

है। चार पाँच दिन में रोग न घटने पर बुखार का बढ़जाना श्वास कष्ट, हाथ पैर ठंढे, बहुत सुस्ती और बेहोशी आदि कठिन उपसर्ग उपस्थित होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

कैपिलरी ब्रोंकाइटिस—केशिक नलियों की श्लेष्मिक झिल्ली प्रदाहित होने पर वह कैपिलरी ब्रोंकाइटिस कहलाता है। यह रोग प्रायः छोटी उम्रके बच्चोंको ही होता है। कभी-कभी बूढ़े और कमजोर आदमियोंको भी होता है। जाड़ा लगकर बुखार आना, फेफड़े में कफ जमना, साँस लेने पर पेटका फूलना, श्वासकष्ट, कभी पीला, कभी पीब जैसा और कभी खून मिला कफ निकलना, कफ बाहर न निकाल सकना, रोग बढ़ने पर बुखार का घटना, पसीना आना, बेचैनी, निद्रालुता, बेहोशी और अंतमें मृत्यु आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

पुराना ब्रोंकाइटिस—यह रोग प्राय बूढ़े आदमियोंको ही होता है। इसमें हमेशा बुखार नहीं रहता, बीच बीचमें आया करता है। परन्तु सरदी और खाँसी प्रायः हमेशा ही बनी रहती है। कभी रोग बढ जाता है और कभी घट जाता है। खाँसने पर बहुत कफ निकलता है। इसमें प्राणों का भय नहीं रहता, लेकिन तकलीफ हमेशा बनी रहती है।

चिकित्सा ।

नया ब्रोंकाइटिस–एकोनाइट, ब्रायोनिया, बेलेडोना, एन्टिम टार्ट, इपीकाक, मर्क्युरियस, फोस्फरस, केली बाइक्रोम इत्यादि ।

कैपिलरी ब्रोंकाइटिस–एन्टिम टार्ट, केली बाइक्रोम, मर्क्युरियस, एमन कार्ब, कार्बोवेज, आर्सेनिक, साइलीसिया, एकोनाइट, बेलेडोना, इपीकाक, ओपियम, सल्फर, केक्टस इत्यादि ।

पुराना ब्रोंकाइटिस–एन्टिम टार्ट, इपीकाक, पल्सेटिला, एकोनाइट, ब्रायोनिया, फोस्फरस, कार्बोवेज, कल्केरिया कार्ब, हिपर सल्फर, नक्सवोमिका, ड्रोसेरा, एमन कार्ब, स्टेनम इत्यादि ।

कई प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे अंकित किये जाते हैं:–

एकोनाइट ३ या ६–रोग की प्रारम्भिक अवस्था में सरदी, बुखार, सूखी खाँसी, गला सुड़सुड़ाना, खाँसी के कारण नींद का खुलजाना, सुबह और शाम खाँसी, प्यास, इत्यादि ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—कष्टकर सूखी खाँसी, पीले रंगका गाढ़ा और खून मिला कफ निकलना, खाँसते समय छाती को हाथ से पकड़ लेना, कब्जियत इत्यादि।

वेलेडोना ३ या ६—सूखी खाँसी, बुखार, शिर में दर्द, चेहरा और आँखे लाल, रोशनी या आवाज बरदास्त न होना, साधारण बक झक।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—श्वास रोधक खाँसी, थोड़ा थोड़ा कफ निकलना, गलेमें साँय साँय आवाज, छाती में घड़घड़ाहट, कमर, पीठ और शिरमें दर्द, कलेजे में धड़कन, आधी रातके बाद खाँसीका बढ़ना इत्यादि। इसके साथ पर्याय क्रममें वेलेडोना भी दिया जाता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—पीले रंगका बहुत कफ निकलना, बुखार का न होना, गर्म कमरे में या सोने पर खाँसीका बढ़ना, बूढ़े और कमजोर आदमियों का पुराना ब्रोंकाइटिस इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—खाँसीके कारण रातमें जाग पड़ना, नींदके समय श्वासकष्ट, थोड़ा कफ निकलना, खाँसते-खाँसते थोड़ा सा पतला कफ निकलना इत्यादि।

सरल होम्योपैथिक चिकित्सा

चायना ६ या ३० – ज्यादा कफ निकलने के कारण रोगीका बहुत कमजोर हो जाना इत्यादि।

फेरमफस ६ या ३०–आक्षेपिक खाँसी, खाँसते समय पेशाब का निकल पड़ना, बच्चों का कैपिलरी ब्रोंकाइटिस।

इपीकाक ६ या ३०–गलेका सुड़सुड़ाना, सूखी खाँसी, श्वासकष्ट, दम अटकना, खाँसने खाँसते कै हो जाना इत्यादि।

कार्बोभेज ६ या ३०—रोग की अन्तिम अवस्था, हाथपैर का ठढा हो जाना, बहुत सुस्ती, नख नीले, स्वरभग इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—सूखी खाँसी, पीला कफ, गलेमे दर्द, गलेमें सूजन, मुँहमे जख्म, श्वासकष्ट, शामके समय खाँसीका बढना, बहुत पसीना निकलना इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०–बच्चोंका कैपिलारी ब्रोंकाइटिस न्युमोनियाके रूपमें परिणत होनेपर इसे देना चाहिये।

हिपरसल्फर ६ या ३०—सूखी या तर खाँसी, साँय साँय आवाज, तेज श्वास प्रश्वास, आधी रातके वाद खाँसीका बढ़ना, श्वासरोध, पुरानी बीमारी इत्यादि।

सल्फर ३०—श्वासनाली में सुडसुड़ाहट, तर खाँसी, छातीमें दर्द, गाढा कफ निकलना, स्वरभंग, बीच-बीच में कफके कड़े टुकड़े निकलना, पुरानी बीमारी इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—कैपिलरी ब्रोंकाइटिस, बहुत श्वासकष्ट, साँस में घड़घड़ाहट, निद्रालुता, प्रलाप, कब्जियत, बहुत पसीना, रोगकी अन्तिम अवस्था इत्यादि।

एमनकार्ब ६—पुरानी बीमारी, कफमें खूनके छींटे, ठढी हवा लगने से खाँसी का बढ़ना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—तर खाँसी, गले में घड़-घडाहट, रातमें सूखी और दिनमें तर खाँसी, भोजन के बाद रोग का बढ़ना।

ड्रोसेरा ६ या ३०—लगातार आक्षेपयुक्त खाँसी, खाँसते समय छाती को हाथ से पकड़ लेना इत्यादि।

केली बाइक्रोम ६ या ३०—गोंदकी तरह चिकना और रस्सी जैसा कफ, श्वास कष्ट, सुबह सोकर उठने पर और खाने पीने के बाद तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—आधी रातसे लेकर सुबह तक सूखी खाँसी, शिरदर्द, कब्जियत इत्यादि।

आवश्यक सूचना—रोगी को सरदी से बचना चाहिये। छाती में फ्लानेलसे सेंकने, तीसीकी पुल्टिस चढ़ाने या सरसों का तेल मालिश करनेसे दर्द घटता है और खाँसी सरल होती है। खाने को साबूदाना और बार्ली आदि देना चाहिये। बुखार अधिक न होने पर दूध भी दिया जा सकता है। रोगी को धूल और सरदी वाले स्थान में न रखना चाहिये।

न्युमोनिया।

(Pneumonia)

फेफड़ेकी वायुनली प्रदाहित होने पर उसे ब्रोंकाइटिस कहते हैं—यह बतलाया जा चुका है। फेफड़े को ढँकनेवाली

झिल्ली प्रदाहित होनेपर उसे प्लुरिसी कहते हैं और फेफड़ा प्रदाहित होनेपर उसे न्युमोनिया कहते है। ब्रोंकाइटिस के साथ न्युमोनिया होने पर उसे ब्रोंकोन्युमोनिया कहते हैं। और प्लुरिसीके साथ न्युमोनिया होने पर उसे प्लुरोन्युमोनिया कहते है। एक फेफड़ा प्रदाहित होने पर उसे सिंगल न्युमोनिया और दोनो फेफड़े प्रदाहित होने पर उसे डबल न्युमोनिया कहते है।

अधिक परिश्रम, सरदी लगना, पानी में भीगना आदि कारणोंसे यह रोग होता है। अनेक बार बुखार, चेचक, खसरा आदि कठिन बीमारियोंमें एक उपसर्गके रूपमें भी यह बीमारी प्रकट होती है। यह रोग सभी उमरके आदमियों को होता है, लेकिन स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंको अधिक होता है।

इसमें पहले सरदी जेसे लक्षण, बादको जाड़ा और बुखार, कन्धेकी हड्डीके पास छातीमें दर्द, हिलने डोलनेसे दर्दका बढ़ना, छातीमें भार मालूम होना, पहले फेन जेसा पतला और चिकना, बादको गॉठ गॉठ जेसा पीला या हरा और अन्त में खून मिला कफ निकलना, कष्टकर श्वास प्रश्वास, खींच खींच कर सॉस लेना, सॉसते समय ठन ठन आवाज, बुखार बहुत तेज, प्यास, साफ बोल न सकना, अनियमित नाड़ी, अनिद्रा, बेचैनी, जलन के साथ लाल रंगका थोडा पेशाब, आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

रोग साधारण होने पर पहले चार पाँच दिन तक बुखार चढ़ता है। बादको पसीना या दस्त और पेशाब होकर बुखार घट जाता है और ८-१० दिनमें रोगी आराम होने लगता है। तेज बीमारी होने पर या अच्छी तरह इलाज न होने पर बुखार १०५-१०६ डिग्री तक चढ़ता है और तीसरे या चौथे दिनसे ही बुरे लक्षण प्रकट होने लगते हैं। अन्तमें बहुत श्वासकष्ट, अधिक रक्त स्राव और विकार या सन्निपात के लक्षण प्रकट होकर रोगीकी मृत्यु हो जाती है। जोरोंका बुखार, जल्दी जल्दी साँस लेना, विकार, कफमें अधिक खून जाना आदि इस रोगके अशुभ लक्षण माने जाते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—रोगके आरंभमें बुखार, चमड़ा सूखा, तेज श्वास प्रश्वास, जोरोंकी प्यास, बहुत उत्कण्ठा, छातीमें दर्द, सूखी खाँसी इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—खाँसी, लाल लाल मोरचा जैसा कफ, बहुत श्वासकष्ट, पार्श्व या छातीमें दर्द, हिलने डोलनेसे दर्दका बढ़ना, मुँह, सूखा, जीभ पर पीला या मोटा लेप, तेज प्यास और कब्जियत आदि लक्षणोंमें एकोनाइटके बाद इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—न्युमोनिया के साथ विकार के लक्षण प्रकट होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस ६ या ३०—बुखार साधारण, दर्द और श्वास-कष्टमें कमी न होना, बहुत पसीना किन्तु उससे कोई आराम न मालूम होना, बूढ़ोंकी छातीमें पसीना इत्यादि।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—छातीमें बहुत कफ घड़घड़ाना, लेकिन उसे बाहर निकलनेमें बड़ी तकलीफ, बहुत कमजोरी, मिचली या कै, इत्यादि लक्षणोंमें बूढ़े आदमी और छोटे बच्चों-को इससे बहुत लाभ होता है।

सल्फर ६ या ३०—शरीरमें दाह, छातीमें कफ बड़बड़ाना, श्वासरोधका भाव, शिर गरम, खाँसी इत्यादि। एकोनाइटके बाद इसे देनेसे रोग प्राय: आराम हो जाता है या रोगके लक्षण ऐसे स्पष्ट हो जाते हैं कि दूसरी दवा देनेमें सुविधा होती है।

फोस्फरस ६ या ३०—यह इस रोगकी एक बढ़िया दवा है। खाँसते समय दर्द, साँसमें आरी चलने जैसी आवाज,

रोग साधारण होने पर पहले चार पाँच दिन तक बुखार बढ़ता है। बादको पसीना या दस्त और पेशाब होकर बुखार घट जाता है और ८-१० दिनमें रोगी आराम होने लगता है। तेज बीमारी होने पर या अच्छी तरह इलाज न होने पर बुखार १०५-१०६ डिग्री तक चढ़ता है और तीसरे या चौथे दिनसे ही बुरे लक्षण प्रकट होने लगते हैं। अन्तमें बहुत श्वासकष्ट, अधिक रक्त स्राव और विकार या सन्निपात के लक्षण प्रकट होकर रोगीकी मृत्यु हो जाती है। जोरोंका बुखार, जल्दी जल्दी साँस लेना, विकार, कफमें अधिक खून जाना आदि इस रोगके अशुभ लक्षण माने जाते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—रोगके आरंभमें बुखार, चमड़ा सूखा, तेज श्वास प्रश्वास, जोरोंकी प्यास, बहुत उत्कण्ठा, छातीमें दर्द, सूखी खाँसी इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—खाँसी, लाल लाल मोरचा जैसा कफ, बहुत श्वासकष्ट, पार्श्व या छातीमें दर्द, हिलने डोलनेसे दर्दका बढ़ना, मुँह, सूखा, जीभ पर पीला या मोटा लेप, तेज प्यास और कब्जियत आदि लक्षणोंमें एकोनाइटके बाद इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—न्युमोनिया के साथ विकार के लक्षण प्रकट होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस ६ या ३०—बुखार साधारण, दर्द और श्वास-कष्टमें कमी न होना, बहुत पसीना किन्तु उससे कोई आराम न मालूम होना, बूढ़ोंकी छातीमें पसीना इत्यादि।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—छातीमें बहुत कफ घडघडाना, लेकिन उसे बाहर निकलनेमें बडी तकलीफ, बहुत कमजोरी, मिचली या कै, इत्यादि लक्षणोंमें बूढ़े आदमी और छोटे बच्चों-को इससे बहुत लाभ होता है।

सल्फर ६ या ३०—शरीरमें दाह, छातीमें कफ घडघडा-ना, श्वासरोधका भाव, शिर गरम, खाँसी इत्यादि। एकोना-इटके बाद इसे देनेसे रोग प्राय आराम हो जाता है या रोगके लक्षण ऐसे स्पष्ट हो जाते हैं कि दूसरी दवा देनेमें सुविधा होती है।

फोस्फरस ६ या ३०—यह इस रोगकी एक बढिया दवा है। खाँसते समय दर्द, साँसमें आरी चलने जैसी आवाज,

छातीमें भार, छाती जकड़ी हुई, सूखी खाँसी, शामसे लेकर आधी रात तक खाँसीका बढ़ना, श्वासकष्टके कारण पानी न पी सकना, खाँसते समय दस्त हो जाना, बकझक, विकारके लक्षण इत्यादि। रोगके आरम्भमेंही एकोनाइट या ब्रायोनियाके साथ इसे पर्यायक्रमसे देने पर साधारण बीमारी प्रायः अच्छी हो जाती है।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—पीला पीव जैसा कफ निकलना, कमजोरी, रातमें पसीना आना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत बेचैनी, तेज प्यास, बार-बार पानी माँगना लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना, चेहरा फीका और उत्कण्ठा पूर्ण, पतले दस्त इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—बहुत ज्यादा बेचैनी, तन्द्रालुता, कानसे कम सुनायी देना, अनजान में पाखाना और पेशाब, चमड़ा सूखा और गरम, जीभका अगला हिस्सा लाल, स्थिर रहने से तकलीफका बढ़ना इत्यादि।

सरल होमियोपैथिक चिकित्सा

ओपियम ६ या ३०–चेहरेका रंग नीला, श्वास प्रश्वासमें घड़घड़ाहट, फेन जैसा नीला कफ निकलना, गरम पसीना निकलना, बच्चों और बूढ़ोंकी बीमारी इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०–बायीं ओरसे रोगका शुरू होना, नींदके बाद तकलीफका बढ़ना, बदबूदार दस्त, खून और पीव मिला कफ निकलना, मुँह में बदबू, बहुत श्वासकष्ट इत्यादि।

विरट्रम विर ६ या ३०–रोगके आरम्भमें फेफड़ेमें रक्त सञ्चय, तेज बुखार, कलेजेमें धड़कन, जीभके मध्य भागमें लाल रेखा, आँखें लाल इत्यादि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये।

आर्निका ६ या ३०–चोट लगनेके कारण यह रोग होना, सूखी खाँसी, खाँसते समय समूचे शरीर का हिल उठना, खून मिला कफ निकलना इत्यादि।

बेलेडोना६या३०–शिर में रक्ताधिक्य चेहरा और आँखे लाल, नींद न आना, सोते से चौंक पडना, श्वासकष्ट, छाती में दर्द, कष्टकर खाँसी, ज़ोरों का शिर दर्द, हिलने डोलने से उसका बढना, शिर गरम हाथपैर ठंढे इत्यादि।

सरल होमियोपैथिक चिकित्सा

कैप्सीकम ६ या ३० — खाँसीके कारण नींद न आ[ना] साँसमें बदबू, लेटने से खाँसी का बढना, ठंढा पानी पी[ने से] आराम, खाँसते समय छाती और शिर में दर्द, पीठ और [...] स्थलोंमें सूई चुभोने जैसा दर्द।

कार्बोवेज ६ या ३०—रोग की अन्तिम अवस्था[...] चेहरा फीका, आँखे अधखुली, हाथ पैर ठंढे, ठंढा पसीना, बेहो[शी] चेहरा नीला और ठंढा, साँस तेज, बदबूदार दस्त आदि मृ[त्यु] काल के लक्षणों में इसे देना चाहिये।

फेरम फस ६ या ३०—रोग के आरंभ में कफ न निकलना अथवा पानी जैसा कफ, और उसमे खून के छीं[टे] फेफड़े में खून की अधिकता, तेज बुखार, तेज और कष्ट[कर] श्वास प्रश्वास, बेचैनी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

हिपरसलफर ६ या ३०—मर्क्युरियस से लाभ न हो[ने] पर, और पीब होनेका उपक्रम दिखाई देनेपर इसे देना चाहि[ये।]

केलीम्यूर ३ या ६—रोग की द्वितियावस्था में सफे[द] रंग का थक्का-थक्का कफ निकलना, जीभ पर लेप इत्या[दि] लक्षणों में इसे देने से लाभ होता है।

क्युप्रम ६ या ३०—न्यूमोनियाके साथ लकवा होनेका डर दिखाई दे तो इसे देना चाहिये।

जेलसीमियम ३X या ६०—दाहिने ओर के फेफडे का आक्रान्त होना, साथ ही यकृत में दर्द, गॉठ-गॉठ पीले रंग का पतला दस्त, श्वासकष्ट इत्यादि।

चेलीडोनियम ६ या ३०—तर खॉसी लेकिन कष्ट के साथ कफ का निकलना, दाहिने फेफड़ेका आक्रान्त होना, एक पैर गरम, और दूसरा ठंढा, दिनमें जड़ता, रातमें साधारण प्रलाप, चेहरापीला, मलका रंग सुनहला, इत्यादि लक्षणोंमें और यकृत की खराबी के साथ यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सेङ्गुइनेरिया ६ या ३०—दाहिने फेफड़े का न्यूमोनिया बुखार, छातीके ऊपरी हिस्से में जलन, सुई चुभोने जैसा दर्द, श्वासकष्ट, हाथ पैर अधिक गरम या अधिक ठंढ फेफड़े में रक्ताधिक्य इत्यादि।

केलीबाईक्रोम ६ या ३०—गाढा और चिपचिपा लसीकी तरह बढने वाला कफ, छाती में घड़घड़ाहट इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०--गण्डमालाधातु, शिर में अधिक पसीना, कफ का पानी में डूब जाना, इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है

आवश्यक सूचना—रोगी का कमरा साफ सुथरा और हवादार होना चाहिये,लेकिन उसे हवाके सीधे झोंके या सरदी से बचना चाहिये। रोगी को स्थिर रखना चाहिये, छातीपर रूई बाँध रखना आवश्यक है। सेंकनेसे भी लाभ होता है। साबूदाना बार्ली और आरारोट आदि हलकी चीजें खाने को देना चाहिये।

प्लुरिसी। (Pleurisy)

फेफड़े को ढकनेवाली झिल्ली (प्लूरा) के प्रदाह को प्लुरिसी कहते हैं। ठंढ या सरदी लगना, एकायक पसीना बन्द हो जाना, किसी तरह की चोट लगना, अधिक शारीरिक परिश्रम आदि कारणों से और कभी-कभी अन्यान्य रोगों के बाद यह रोग होता है। जाड़ा लगकर बुखार आना,छाती के नीचे और बगल में दर्द, खाँसने, साँस लेने, हिलने डोलने, दर्दवाले अंग को दबाकर लेटने या दबाने पर दर्द होना, स्तनके पास अधिक दर्द मालूम होना, श्वासकष्ट, कभी-कभी बहुत ही कष्टदायक खाँसी आना, छाती के पार्श्वोंका अधिक चौड़ा हो जाना, खोंचामारने या कतरने जैसा दर्द, खाँसने पर कफ

न निकलना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण है। साधारण और केवल एकही ओर प्लुरिसी होने पर रोगी आसानी से आराम हो जाता है। रोगी बहुत कमजोर होने पर या प्लूरामें सचित हो जाने पर रोग कठिनाई से आराम होता है। ब्राइट्स डिजीज, कैन्सर या विकार आदि के साथ यह रोग होने पर अनेक बार रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६–रोगकी प्रथमावस्था में सरदी और छाती में दर्द होकर बुखार आजाने पर इससे बड़ा लाभ होता है। जाड़ा लगकर बुखार आना, शरीर बहुत गरम, बेचैनी, छाती में दर्द, प्यास, भय, सूखी खाँसी, तेज श्वास प्रश्वास इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०–तेज बुखार, रोगका प्रबल आक्रमण, आँखें और चेहरा लाल, बकझक आदि विकार लक्षण इत्यादि।

एपिस ६ या ३०–पुरानी बीमारी, प्लुरा में जल सचय होनेके कारण श्वासकष्ट, तकलीफ के कारण रोगी का सो न सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केलीकार्ब ६ या ३०—सुई चुभोने जैसा दर्द, खास-कर बायीं ओर, कलेजे का धड़कना, पिछली रातमें तीन बजेके बाद खाँसीका बढ़ना, इत्यादि लक्षणो में और ब्रायोनिया से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०–गलेमें घड़घड़ाहट लेकिन कफ न निकलना, श्वासकष्ट, दम फूलना इत्यादि।

सेनेगा ६या३०–प्रदाह के बाद अधिक कफ निकलना छाती में जलन और दाब मालूम होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त रेननक्युलस, लोरोसिरेसस, स्कुइला, कैम्फर कार्बोवेज, फेरम, केली हाइड्रो, लेकेसिस, और साइलीसिया आदि दवाएं लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—छाती पर बारबार गरम पुल्टिस चढाना, छातीके चारों ओर फ्लानेल लपेट रखना और फ्लानेल से सेंकना लाभदायक है। साबूदाना, बार्ली आदि हलके पदार्थ खाना चाहिये। रोग आराम हो चले तब दूध आदि पुष्टिकर पदार्थ भी दिये जा सकते हैं।

छाती में दर्द ।

(Pleurodynia)

छाती में कभी कभी वात की तरह दर्द होता है। यह रोग होने पर प्लुरिसी का भ्रम होता है, परन्तु प्लुरिसीकी तरह इसमें खाँसी या बुखार के लक्षण नहीं रहते। प्राय. गला, गर्दन या कन्धेमें वात वेदना होकर वह छातीमें उतर जाता है अथवा सरदी आदि लगने के कारण यह रोग होता है। छाती के किसी भी स्थानमें दर्द, दर्द का एक स्थान से दूसरे स्थान में चला जाना, छूनेसे दर्द मालूम होना, पसलियों के बीच में उँगली से दबाने पर दर्दका बढना, पार्श्व या बगलमें सुई चुभोने जैसा दर्द, इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

आर्निका ३ या ६—यह इस रोग की प्रधान दवा है। चोट लगने के कारण यह रोग होना, अथवा बायीं ओर स्तनके पास सुई चुभोने जैसा दर्द, साँस लेते समय दर्दका बढना, दर्दके कारण अच्छी तरह साँस न ले सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सूखी खाँसी, छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, चुप रहने से आराम, हिलने डोलने और श्वास प्रश्वास से तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—हिलने डोलने से आराम, सोने से तकलीफ का बढ़ना, सरदी लगने के कारण रोग होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—लेटने पर कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द, रातमें दर्दका स्थान परिवर्तन, शामके समय, रातमें और बायीं करवट सोनेपर दर्द का बढ़ना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३ या ६—यह भी इस रोगकी अच्छी दवा है। रसटक्सके बाद इसे देने से अधिक लाभ होगा।

रेननक्युलस ६ या ३०—बायीं ओर स्तन के नीचे दर्द, दर्दके कारण हिल डोल न सकना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त नक्सवोमिका, एकोनाइट सल्फर तथा वात रोगकी अन्यान्य दवाओं से भी काफी लाभ होता है। वात रोग और पेशी वात देखिये।

हाइड्रोथोरेक्स ।

(Hydrothorax)

प्लूराकी थैलीमें शोथके कारण जल सञ्चय होनेको हाइड्रो-थोरेक्स कहते हैं। हृदय, मूत्र यन्त्र और यकृत आदि अंगोंकी बीमारी के कारण यह रोग होता है। इस सञ्चितजलके कारण फेफड़े पर दबाव पड़ता है, फलतः फेफड़े में रक्तसञ्चय होता है। परिश्रम करने, जोरसे चलने या सीढ़ी आदि चढ़ने पर हाँफना, घूमते समय हृदय में भार मालूम होना, कलेजे में दप दपी, रोग बढ़ने के साथ श्वासकष्टका बढ़ना, रात में सोने पर श्वासकष्टका और भी बढ़ जाना, रोगकी अन्तिम अवस्था में समूचे शरीर में शोथके लक्षणों का प्रकट होना चेहरा नीला पड़ जाना आदि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

एपिस ६ या ३०—लेटने पर कसकर पकड़ रखने जैसा तेज दर्द, थोड़ा पेशाब, अधिक श्वास कष्ट, प्यास का न होना, बुखार के बाद यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, साँस लेने और हिलने डोलने पर दर्द का बढ़ना, मिचली,

शिरमें फट जाने जैसा दर्द, अधिक प्यास, कब्जियत, प्लुरिसी या वात रोगके साथ इस रोग का होना।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत श्वासकष्ट, श्वास कष्ट के कारण लेट न सकना, कलेजे में धड़कन, रातमें तकलीफ का बढ़ना, प्यास, अस्थिरता, कमजोरी इत्यादि।

डिजिटेलिस ६ या ३०—हृदय रोग के साथ यह रोग होना, पेशाव में तकलीफ, नाड़ी में रुकावट इत्यादि।

कल्मीकम ६ या ३०—हृदय के वातके साथ यह रोग होना, पेशावका वेग मालुम होने पर भी बहुत थोड़ा पेशाव होना, हाथ पैर में शोथ, मिचली इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एपोसाइनम ६ या ३०—बीच बीच में साँसका रुक जाना बात न कर सकना, पेशावका पैदा ही न होना, पाकाशयकी उत्तेजना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—बदबूदार मल, पेशाब काला, नींदके बाद रोग का बढ़ना।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—चित्त सोने पर श्वसाकष्ट, तलपेट में बायीं ओर गड़गड़ाहट इत्यादि।

इनके अतिरिक्त सल्फर मर्क्युरियस, स्पाइजिलिया, सिड्रा आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—अधिक पानी पीना या अधिक नमक खाना हानि कारक है। रोटी, भात, दूध, शोरवा आदि पुष्टिकर चीजें खानी चाहिये।

हृदयका बढ़ जाना।

(Hypertrophy of the Heart)

हृदय को हमलोग कलेजा या दिल भी कहते हैं। अधिक परिश्रम या व्यायाम के कारण रक्तसचालन की क्रिया में रुकावट, हृदय की क्रिया में तेजी, अधिक चाय, काफी या तम्बाकू आदिका सेवन प्रभृति कारणो से इसका आकार बढ़ जाता है और यह गोल तथा भारी हो जाता है। यह रोग होने पर आवाज के साथ हृदय में धड़कन, श्वासकष्ट, गला

खुसखुसा कर सूखी खाँसी आना, शिर में दर्द और चक्कर, इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी छातीका बायाँ हिस्सा कुछ फूल उठता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६–हृदय की क्रिया में तेजी, धडकन, फेफड़े में रक्तसञ्चय, नाडी क्षीण, और तेज, बायीं ओर दर्द, श्वासकष्ट इत्यादि।

डिजिटेलिस ६–छाती में दर्द, जोरों के साथ कलेजे का धडकना, परिश्रम करने पर श्वासकष्ट, मूर्च्छा भाव, शिर में चक्कर इत्यादि।

केक्टस ३ X या ६–कलेजेका बढ़ना बहुत सुस्ती, श्वास कष्ट, इसके कारण सोने और बोलने में कष्ट, अनिद्रा पैरों में सूजन, हृदयका प्रदाह, कलेजे में धड़कन और दर्द।

स्पाइजिलिया ६–दाहिनी ओर हृदय बढ़ा हुआ मालूम हो तो इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०–कमजोरी, हाँफना, बेचैनी इत्यादि लक्षणों के साथ यह रोग होने पर इसमे विशेष लाभ है।

आर्निका ६—मल्लाह और मुदगर भाँजनेवाला व हृदय की वृद्धि, हृदय में दर्द या पेशीशूल होने पर इसे देन चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगीको स्थिर और शान्त रखन चाहिये। मानसिक उत्तेजना और शारीरिक परिश्रम से बचना आवश्यक है। पुष्टिकर अनुत्तेजक पदार्थ खानेको देने चाहिये।

हृदय में दर्द।

(Neuralgia of the Heart)

हृदय की कोई बीमारी, हृदयके पास चरबी जमा हो जाने से रक्तसञ्चालनकी क्रिया में बाधा, शराब आदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन, बदहजमी, आहार आदि का अत्याचार, मानसिक उत्तेजना या अवसन्नता इत्यादि कारणों से ग होता है। हृदय में कष्टदायक वेदना, दर्दका अच। होकर बढ़जाना, बीच बीच में कुछ देरके लिये कम हो तेज श्वास प्रश्वास, श्वासकष्ट, ऐसा मालूम होना मान रुक जायगा और मृत्यु हो जायगी, चलने फिरने से का बढ़ना, बैठ रहने से आराम मालूम होना, हाथ पैरके और चेहरा ठंढा, आधे घण्टेसे लेकर दो तीन घण्टे तक ९ का ठहरना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

सुरसुरा कर सूखी खाँसी आना, सिर में दर्द और ज्वर इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी छातीका बायाँ कुछ फूल जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—हृदय की क्रिया में तेजी, फेफड़े में रक्तसञ्चय, छाती जोर, और तेज, बायीं ओर श्वासकष्ट इत्यादि।

डिजिटेलिस ३—छाती में दर्द, धीरे के साथ जोरसे धड़कना, परिश्रम करने पर श्वासकष्ट, मूर्च्छा भाव फिर चक्कर इत्यादि।

कैक्टस ३x या ६—हृत्पिण्ड बहुत जकड़ा हुआ ख्याल होना, इसके कारण सोने और बोलने में कष्ट, और पैरों में सूजन, हृदयका प्रदाह, कलेजे में धड़कन और दर्द।

स्पाइजिलिया ३—धड़कने और हृदय दर्द छुरा मारनेसा हो तो इसे देना चाहिये।

नैजा ३ या ३०—[illegible] इत्यादि बन्द पड़ रोग होने पर इसने [illegible]

आर्निका ६—मत्लाह और मुद्गर भाँजनेवाल हृदय की वृद्धि, हृदय में दर्द या पेशीशूल होने पर इसे चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगीको स्थिर और शान्त वाहिये। मानसिक उत्तेजना और शारीरिक परिश्र रचना आवश्यक है। पुष्टिकर अनुत्तेजक पदार्थ खानेको ग़ाहिये।

हृदय में दर्द।

(Neuralgia of the Heart)

हृदय की कोई बीमारी, हृदयके पास चरबी जमा हो रक्तसञ्चालनकी क्रिया में बाधा, शराब आदि उत्ते दार्थों का सेवन, बदहज़मी, आहार आदि का अत्यान ानसिक उत्तेजना या अवसन्नता इत्यादि कारणों से यह ाता है। हृदय में कष्टदायक वेदना, दर्दका अचानक ाकर बढ़जाना, बीच बीच में कुछ देरके लिये कम हो जा ज श्वास प्रश्वास, श्वासकष्ट, ऐसा मालूम होना मानो क जायगा और मृत्यु हो जायगी, चलने फिरने से तकल ा बढ़ना, बैठ रहने से आराम मालूम होना, हाथ पैरके त ार चेहरा ठढा, आधे घंटेसे लेकर दो तीन घण्टे तक ठहरना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—कलेजे में दर्द, श्वास रोग का भाव, समूचे शरीर में पसीना, नाड़ी पूर्ण और सबल इत्यादि ।

आर्सेनिक ६ या ३०—हृदय में सुई चुभोने जैसा दर्द, उसके कारण मूर्च्छाभाव, अस्थिरता, उद्वेग इत्यादि ।

केक्टस ३ या ६—हृदय में आक्षेप, ऐसा मालूम होना मानो किसीने फौलादी पंजेसे कलेजा पकड लिया है, श्वास कष्ट, कलेजे में धड़कन, रातके समय आर बायीं करवट लेटने पर दर्द का बढ़ना ।

सिमिसिफिउगा ६ या २०—स्त्रियों के जरायु आदिकी बीमारी के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये ।

स्पाइजिलिया ६ या ३०—हृदय में सुई चुभोने जैसा दर्द, हिलने डोलने से दर्दका बढना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है ।

लेकेसिस ३०—उद्वेग और मूर्च्छा, सोनेके बाद समस्त रोग लक्षणों का बढना इत्यादि ।

ब्रायोनिया ३ या ६—छाती में सूई चुभोने या कतरने जैसा दर्द, तेज और कष्टकर श्वास प्रश्वास, हिलने डोलने से दर्दका बढना इत्यादि।

डिजिटेलिस ३ या ६—जोरों की धड़कन, रोगी को ऐसा मालूम होना मानो हिलने से साँस रुक जायगी, नाडी सविराम इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—कलेजा धडकना, नाडी पूर्ण, रात में अनिद्रा और बेचैनी इत्यादि।

एसिड हाइड्रो ३ या ६—बारबार बहुत देरतक कलेजे का धडकना, बेहोशी, बहुत व्याकुलता, नाडी क्षीण इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पाकाशयकी गडबडी के कारण यह रोग होनेपर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—हृदय के स्थान पर पुल्टिस चढ़ाना और हाथ पैर सेंकना लाभदायक है। रोगी को स्थिर रखना चाहिये। शारीरिक और मानसिक परिश्रम, मानसिक उत्तेजना, उत्तेजक पदार्थों का सेवन आदि हानिकारक है।

हृदय का धड़कना ।

(Palpitation of the Heart)

अधिक मानासिक उत्तेजना या अवसन्नता, स्नायुमण्डल की बीमारी, चाय, काफी और शराब आदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन, अधिक मानासिक परिश्रम, अधिक भय, शोक, दौड़ धूप, हस्तमैथुन, नाटक नावेल आदिका पढ़ना, गर्भावस्था आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। जोरों के साथ जल्दी जल्दी कलेजे का धड़कना इस रोग का प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—अधिक परिश्रम, भय, दौड़ धूप, तैरना आदि कारणों से यह रोग होना, मृत्युभय, बहुत बेचैनी छट-पटाना, धड़कन के कारण रोगी का सीधे होकर बैठ रहना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। मोटे ताजे युवकों की बीमारी में इससे अधिक लाभ होता है।

कोफिया ६—बहुत आनन्द या बहुत मानसिक उत्ते-जना के कारण रोग होने पर इसे देना चाहिए।

स्पाइजिलिया ३ या ६--जिन्हे वारवार यह बीमारी होती हो, साथ ही जिनके श्वास प्रश्वास में वदबू रहती हो, उन्हें यह दवा देनी चाहिए।

नक्समस्केटा ६ या ३०—कलेजे में धड़कन, मूर्च्छा, मूर्छा के वाद नींद आजाना इत्यादि।

चायना६या३०--अधिक खून, वीर्य, रज या दूध आदि निकलने के कारण यह रोग होना, बहुत कमजोरी, रात में अच्छी तरह नींद न आना, पेट में वायु का जोर।

वेलेडोना६या३०- कलेजे मे धडकन के साथ शिर और छाती में दर्द होने पर इसे देना चाहिए।

सल्फर६या३०--कोई चर्मरोग दव जाने या पुराना जख्म भर जाने के वाद यह रोग होना, उपर चढने या चढाई उतरने के वाद अधिक समय तक कलेजे का धडकने रहना इत्यादि लक्षणों में और वेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिए।

अर्निका ३ या ६। केटिगस मदरटिञ्चर इस रोग की एक बढ़िया दवा है। दिन में तीनवार पाँच पाँच बून्द सेवन करने से नयी बीमारी में आश्चर्यजनक लाभ होता है। क्रेटिगस से लाभ न होने पर और जब यकृत का भी शोष दिखायी दे, आइरिस मदरटिंचर दिन में दो तीन बार दो दो तीन तीन बून्द के हिसाब से देना चाहिए।

इनके अतिरिक्त, मस्कस १ कन्वेलरिया ३, केक्टस ३, एडनिस ३, वेलेरियाना ६, कोवा ३०, केलमिया लेट ३, कल्केरिया फस १२Xविचूर्ण आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—मानसिक उत्तेजना, दौड़ धूप, भारी चीज उठाना आदि मना है। रोज ठंढे जल से स्नान करना, थोड़ा थोड़ा व्यायाम करना, खुली हवा में घूमना इत्यादि लाभ दायक है। चाय, तम्बाकू, शराब आदि उत्तेजक पदार्थों से एक दम दूर रहना चाहिए। अधिक आहार, घी तेल या गरम मसाले की चीजें भी खाना मना है। जिस कारण से यह रोग हुवा हो, उस कारण पर ध्यान रखकर इलाज करने से विशेष और शीघ्र लाभ होता है।

हृदय में वात।

(Rheumatism of the Heart)

जैसे शरीर के अन्यान्य अंगो में वात या वाई की बीमारी होती है, वैसे ही हृदय पर भी इस रोग का आक्रमण होता है।

यह रोग होने पर छाती में बायीं ओर कलेजे के स्थान में दर्द का भार मालूम होता है। बायीं करवट सोने में तकलीफ, श्वासकष्ट, कलेजे में दपदपी, चेहरे पर उद्वेग, बहुत बुखार उसके साथ पसीना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। यह रोग बहुत बुरा होता है। पुराना होजाने पर कठिनाई से आराम होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—बहुत बुखार,कलेजे का काँपना, छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, भय, पेशाब का रुक जाना इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—हृदय का अकस्मात और अपरिमित संकोचन, कलेजे में धड़कन, छाती में दाब और भार मालूम होना, उसके कारण श्वास रुक जाने के लक्षण, दर्द का एकायक शुरू होना और एकायक गायब हो जाना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३ या ६-हृदय के चारों ओर भयकर दर्द, बायें कन्धे में भी दर्द मालूम होना, स्नायविक और वात वेदना।

रसटक्स ६ या ३०—हृदय की कमजरी , सुइ चुभने जसा दर्द, विश्राम के समय तकलीफ का बढ़ना, सरदी लगने के कारण यह रोग होना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—आक्षेपिक वेदना, हिलने डोलने और हाथ हिलाने पर दर्द मालूम होना, नींद के समय रोग का बढ़ना, लेटने पर श्वासकष्ट इत्यादि।

इनके अतिरिक्त वात रोग को दवाओं में से भी लक्षणानुसार दवाएं चुनी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना— रोगी को ठढी हवा और सरदी से बचाना चाहिये। साबूदाना और वार्ली आदि हलके पदार्थ खाने को और ठंढा पानी पीने को देना चाहिये।

नसों का फूल जाना।

(Varicosis)

रक्त संचालन में रुकावट होने के कारण हाथ, पैर, मलद्वार और अण्डकोष आदि की नसें फूल कर मोटी हो जाती हैं उँगली से टटोलने पर यह नसें टेढ़ी मेढ़ी और बैठे हुए साँप जैसी मालूम होती हैं। साधारणतः पैर की नसों में ही यह रोग अधिक होता है।

चिकित्सा।

हेमामेलिस ३X—यह इस रोग की अच्छी दवा है। इसे सेवन करते समय हेमामेलिस मदरटिंचर का (अठगुने-

पानी मे मिलाकर) वाह्य प्रयोग करने से अधिक लाभ होता है।

अर्निका ३ या ६—चोट लगने या अधिक चलने के कारण नसें फूलने पर इसे देना चाहिये।

वेलेडोना ६—नसो में प्रदाह, सूजन और लाली हो तो इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—नसें फूल गयी हों और उनमें जलन होती हो तो इसे देना चाहिये।

फ्लोरिक एसिड ३—बीमारी पुरानी होने पर इससे काफी लाभ होता है।

पल्सेटिला ६—नसें फूल गयीं हों और उनमें बहुत दर्द होता हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त कल्केरिया कार्ब, ग्रेफाइटिस, जिङ्कम, फेरमफस, प्लम्बम, लेकेसिस, फर्मिका और सल्फर आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है

आवश्यक सूचना—क्लिमेटीज़ धावन के बाह्य प्रयोग से भी काफी लाभ होता है। पैर में पट्टी बाँधने, मोजे पहनने अथवा बैण्डेज के व्यवहार से भी लाभ होता है।

१२–यकृत और प्लीहा के रोग।

(Diseases of the Liver & Spleen)

यकृत-प्रदाह।

(Hepatitis)

क्रोध और शोक आदि मानसिक उत्तेजना या अवसन्नता, किसी तरह की चोट लगना, के या दस्त करानेवाली किसी तेज दवा का सेवन, शराबखोरी आदि कारणों से यह रोग होता है। यकृत, पेट में दाहिनी ओर पसलियों के नीचे स्थित रहता है। यह रोग होने पर उस स्थान में दर्द और कनकनी होती है। हाथ से थपथपाने या दबाने पर जोर से साँस छोड़ने पर और खाँसी आने पर दर्द होना, दाहिने कन्धे और हाथ में दर्द दाहिनी ओर जलन और दर्द चुभोने जैसा दर्द, श्वास कष्ट, मल का रंग कीचड़ जैसा या सफेद और कब्ज़ियत आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। रोग का आरंभ जाड़ा बुखार, बहुत प्यास, थोड़ा पेशाब, मिचली और

, क्षुधाहीनता आदि लक्षणों से होता है। बीमारी
ाधारण होने पर बुखार नहीं भी आता अथवा बहुत कम
ाता है। प्रदाह शीघ्र आराम न होने पर वह
ोड़े के रूप में परिणत हो जाता है और फोडा फटने पर
, थूक और मलके साथ पीव निकलता है। नयी बीमारी
–१० दिनमें आराम हो जाती है। आराम न होने पर या
ो रोग पुराना आकार धारण करता है और यकृत बढ़ जाता
ः या फोड़े का रूप धारण करने के कारण रोगी की मृत्यु
ो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६–तेज बुखार यकृत में सुई
चुभोने जैसा दर्द, बहुत बेचैनी, प्यास घबड़ाहट सूखी
खाँसी, यकृत के ऊपरी भाग में प्रदाह, पित्त की कै, पेशाब
बन्द इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०–यकृत में तेज दर्द, दर्द का दूर
तक फैल जाना, हिलने डोलने दबाने, खाँसने और दाहिनी
करवट सोने पर दर्दका बढ़ना, काँपना, पीले रंग का पेशाब,
सिरमें दर्द, नींद से चौंक पड़ना, तेज बुखार इत्यादि

क्षणों में प्रदाह और बुखार के समय उसे देने से काफी लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०— दाहिनी ओर सुई चुभोने सा दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना कब्ज़ियत स्वभाव चिड़चिड़ा, जीभ पीली, मुँह का स्वाद कड़ुवा, पित्तकी कै इत्यादि। बुखार को तेजी घट जाने पर मर्क्युरियस के साथ पर्यायक्रम में भी यह दवा दी जाती है।

मर्क्युरियस ६ या ३०—हाथ लगाने पर बहुत दर्द, घबराहट, छींकने या खाँसने पर सुई चुभोने जैसा दर्द, दाहिनी करवट सो न सकना यकृत फूला और बढ़ा हुआ पीला चेहरा, पित्तकी कै इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। ब्रायोनिया के साथ पर्याय क्रम में या फोड़ा होकर पकने के लक्षण दिखायी देने पर इसे देने से बहुत लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०—यकृत में दर्द, दबाने से दर्द का बढ़ना, मुँह में खट्टा या कड़ुवा स्वाद, खाना अच्छी तरह हजम न होना, कब्जियत, मलका वेग मालूम होना, पर दस्त साफ न होना, अधिक मानसिक परिश्रम या शराब आदि के सेवन से यह रोग होना इत्यादि लक्षणों इसे देना चाहिये।

नेट्रम सल्फ ३०—हिलने डोलने, दीर्घ श्वास लेने या यकृत पर हाथ रखने से दर्द मालुम होना। पेट खाली होने पर नाभी के चारों ओर दर्द कुछ खा लेने पर आराम।

चेलीडोनियम ३ या ६—यकृत के स्थान में तेज या धीमा दर्द, चेहरा पीला, लेडी जैसा या खूब पीले रंग का मल, शिरके पिछले हिस्से में कानकी ओर खींचन सा दर्द।

पोडोफिलाम ६ या ३०—यकृत में दर्द और भार मालूम होना, मिचली या पित्तकी कै, यकृत में सदा हाथ लगाकर रगडते रहना, सुबह पतले दस्त, यकृत की क्रिया में गोल माल।

हाइड्रेस्टिस ३ या ६—बहुत कब्जियत, मल का रंग फीका, यकृत की जडता, पेट खाली मालूम होना, बुखार का न होना इत्यादि।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—यकृत के स्थान में चुटकी से काटने जैसा दर्द, बुखार, पेटका बढ़ जाना, पेट में गड़गड़ाहट इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—मुँह का स्वाद कडुवा, जीभ पर पीला लेप, मिचली और कै, रात में हरे रंगका चिकना दस्त, गरम स्थान में भी ठंढ मालूम होना, पेशाव में कतरने जैसा दर्द, शाम को तकलीफ का बढ जाना इत्यादि ।

लेपटान्ड्रा ६ या ३०—यकृत में कनकनी और धीमा धीमा दर्द, जीभ पर पीला लेप, काले रंगका बदबूदार मल, कमला रोग, तीसरे पहर और शाम को दस्तों का बढ़ना इत्यादि ।

चायना ३ या ६—यकृत के स्थान, में दर्द और भार मालूम होना, खोंचा मारने जैसा दर्द, रात में दर्द का बढ़ना, चेहरा फीका, बहुत कमजोरी इत्यादि लक्षणों में और नक्सवोमिका से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

लेकेसिस ६ या ३०—यकृत में बहुत दर्द, पाकाशय तक दर्द का फैल जाना, दाहिनी ओर काँटा लगने जैसा दर्द, किसी तरह का दबाव बरदास्त न होना, सोने के बाद सभी रोग लक्षणों का बढ़ जाना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

बेलेडोना या मर्क्युरियस के बाद इसे देने से अधिक फायदा होता है।

केलीकार्ब ६ या ३०–सुई चुभोने जैसा दर्द, कमर से लेकर घुटने तक दर्द का फैल जाना, सूजन, पाण्डु-रोग इत्यादि।

साइलीसिया ३०–यकृत का स्थान कड़ा और फूला हुआ, दप दप वेदना, हिलने डोलने या छूने से दर्द, का बढ़ना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०-भूख की कमी, सामने की ओर झुकने पर यकृत में सुई चुभोने जैसा दर्द, दर्द के कारण कमर में कस कर कपड़ा न पहन सकना, मटमैले रंग के कड़े ओर अजीर्ण पदार्थ मिले हुए दस्त, पैर गीले ओर ठंढे इत्यादि।

सल्फर ६ या ३०—शिर और हाथ पैर के तलवों में गरमी मालूम होना, समूची जीभ पर सफेद लेप लेकिन उसके अगले भाग में लाली, कपाल में भार मालूम होना पेट टटाना इत्यादि।

कार्डुयस मेरी १X—यकृत और पिलही का प्रदाह,उसमें दर्द इत्यादि।

बार्बेरिस १X—यकृत में रक्त संचय के कारण कमर, पट्टे, जाँघ और मूत्रनाली आदि स्थानों में दर्द।

थिरडियन ३०—यकृत में फोड़ा, शिर में चक्कर, यकृत के स्थान में जलन, पिलही के स्थान में दर्द, जी मिचलना इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—पहले यकृत का बड़ा और कड़ा हो जाना, बादको धीरे धीरे उसका छोटा हो जाना, और अन्त में जलोदर या कमलाकी बीमारी हो जाना।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—वायुके कारण पेट फूला हुआ, साथही कब्जियत, पेटमें दबा रखने जैसा दर्द, दबाने और जोर से साँस लेने पर दर्दका बढना, दाहिने पार्श्व और पीठमें दर्द इत्यादि।

सीपिया ३०—जरायु और मूत्राशयकी गडबडो के साथ यह रोग होना, कमजोरी, मन्दाग्नि गठिया और सूजन।

हिपरसल्फर ६ या ३०—सॉस लेने, खॉसने या हिलने से दर्दका बढ़ना, बवासीरको बीमारीके कारण यह रोग होना, पारे का अपव्यवहार इत्यादि।

आवश्यक सूचना—यकृत को फलानेल या चोकर की पोटली से सेंकना चाहिये। गायके छोटे बच्चे का गोबर गरम कर उससे भी सेंकने पर लाभ होता है। बुखार होने पर साबूदाना और वार्ली आदि हलकी चीजें खाने को देना चाहिये मॉस मछली और घी तेलके पके पदार्थ खाना एक दम मना है। खाना थोड़ा थोड़ा खाना चाहिये। एक साथ ही बहुत अधिक खा लेना हानिकारक है।

यकृतका बढ़ना।

(Enlargement of the Liver)

इस रोगमें यकृत का आकार अपने स्वाभाविक आकारकी अपेक्षा बड़ा हो जाता है। अधिक मॉस, मछली, घी, तेलके पके पदार्थ, और शराब आदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन,

धूपमें अधिक परिश्रम करना, अजीर्ण रोग, यकृत प्रदाहकी बीमारी का पुराना हो जाना, यकृत में रक्त सचय होना इत्यादि अनेक कारणों से यह राग होता है। यकृत बड़ा हो जाने पर टटोलने से हाथ में लगता है। यकृत का बड़ा और ऊँचा हो जाना, बैठने या खड़े होनेपर यकृत में भार मालूम होना, यकृत के स्थान में दबाने से दर्द मालूम होना, शरीर का रंग पाण्डु या पीला हो जाना, जीभ पर मैला लेप, कब्जियत, मल कठिन, भूखकी कमी, कभी कभी मिचली, शिरमें दर्द, कमजोरी, मलका रग मटमैला या सफेद, आँखें पीली इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण है। यह रोग प्राय. आराम हो जाता है, लेकिन कभी-कभी खानपान के अत्याचार से सूजन आदि उपसर्ग उत्पन्न होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। बच्चों के लिये यह रोग अवश्य खतरनाक होता है। बुखार शीघ्र न छूटने पर वे बड़ी कठिनाई से आराम होते है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—बहुत बुखार, यकृतवाले स्थान में सुई चुभोने जैसा दर्द, श्वास प्रश्वास में कष्ट, बहुत घबड़ाहट, मृत्युभय, अस्थिरता या बेचैनी इत्यादि।

ब्रायोनिया ३ या ६—यकृत में सुई चुभोने जैसा दर्द, बाहु और कन्धे तक दर्दका फैल जाना, कब्जियत, मल सूखा और कठिन, साधारण बुखार इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—यकृत में दर्द, पेशाबका रंग लाल, मलका रंग मटमैला या हरा, यकृत फूला और बढ़ा हुआ, कमला रोग जैसे लक्षण इत्यादि।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—यकृतमें दर्द, पतले दस्त या कब्जियत आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

सीपिया ६ या ३०—यकृत को पुरानी बीमारी में और स्त्रियों को यह रोग होने पर इससे बहुत लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०-घी तेल के पके पदार्थ खाने या शराब पीनेके कारण यह रोग होना, यकृत में दपदपी, खाने के बाद पेट बहुत भरा हुआ मालूम होना, कमर में कपड़ा न रख सकना, सुबह मुँह में खट्टा या कड़ुवा स्वाद, कब्जियत, कठिन मल, क्वीनाइनके अपव्यवहारके कारण यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। अनेक बार केवल इसी दवासे यह रोग आराम हो जाता है।

सल्फर ३०—नक्सवोमिका से पूरा पूरा लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। पुरानी बीमारी में इससे अधिक लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—बहुत कमजोरी, खाना हजम न होना, बिना दर्दके दस्त, साधारण बुखार, यकृतका फूल जाना, हाथ लगाने से दर्द होना इत्यादि।

पोडोफिल्लाम ३ या ६—यकृतकी खराबी के साथ पतले दस्त आते हों तो इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—दिनमें सोना, रातमें जागना, अधिक परिश्रम करना, सरदी लगना आदि हानिकारक है। ठंढे पानी से नहाना बरदास्त न हो तो गरम पानी से बदन पोछ डालना चाहिये। व्यायाम करना अच्छा है। हलके और पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये। घी तेलके पके पदार्थ खाना मना है। खान पान पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

यकृतकी शीर्णता।

(Cirrhosis of the Liver)

अनेक कारणों से जिस तरह यकृत बढ़ जाता है, उसी तरह यह रोग होने पर छोटा भी हो जाता है। अधिक शराब पीना, मैलेरिया वाले स्थान में रहना, गण्डमाला या उपदंश-दोष, गरमी में रहना, हृदयकी बीमारी आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यकृतका आकार छोटा होजाना, कब्जियत,

मटमैला, सफेद या पीले रंगका मल, यकृत में दर्द, कै, छाती में जलन, बुखार, कमला, कभी कभी पतले दस्त, जलोदर, धीरे धीरे रोगी का बहुत दुबला हो जाना, चेहरे पर नीली नीली नसें दिखायी देना, इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। रोग बढ़ने पर जलोदर, रक्तहीनता, रक्त स्राव, मस्तिष्क विकार आदि लक्षण प्रकट होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

अर्जेन्टम नाइट ६ या ३०—मलेरिया के कारण यह रोग होना, यकृतके स्थान में पूर्णता बोध, खोंचा मारने जैसा दर्द, चलते समय छाती तक दर्द मालूम होना, शोथ इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—दाहिनी ओर दर्द, सूजन और जलन, दबाने से दर्द मालूम होना, शरीर में जलन, अस्थिरता, अवसन्नता इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—शराबियों को यह रोग होना, नींदके बाद सभी रोग लक्षणों का बढ़ जाना।

लाइको पोडियम ३०—शराबियों की बीमारी, मुँह में खट्टा स्वाद, जरासा खानेसे ही पेट भर जाना लेकिन फिर भूख लगना, पेट में वायु संचय, डकार आना, कब्जियत इत्यादि।

नेट्रमम्यूर ३०—मैलेरिया के कारण यह रोग होना, कब्जियत, सुई चुभोने जैसा दर्द।

अरमभेट ३०—हृदय की बीमारी के कारण यह रोग होना, कमला, कब्जियत, सफेद या राखके रंगका दस्त होना।

कार्बोवेज ३०—दर्दके कारण यकृत मे हाथ तक न लगाने देना, कमर में कपड़ा न रख सकना, पेटमें वायु संचय, दस्तके समय पेटसे वायु निकलना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ३०—गण्डमाला धातु वाले रोगियों को इससे अधिक लाभहोता है

आयोडियम ६ या ३०— त मेंदर्द , अक्षुधा, शरीर दुबला पतला इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—पुरानी बीमारी, गरमी या पारेके दोषसे यह रोग होना, कीचड़ जैसा मल, मुँहमें बहुत बदबू इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—कमला, बवासीर या अम्ल रोगियों की बीमारी, शराब पीने के कारण यह रोग होना, यकृत फूला हुआ, कमर में कपड़ा पहनने पर तकलीफ मालुम होना इत्यादि।

सल्फर ३०—कब्जियत, यकृत कड़ा और फूला हुआ, अजीर्णता, अनेक प्रकारके चर्मरोग, चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—खुली हवाका सेवन और स्वास्थ्य रक्षाके नियमों का पालन करना चाहिये। शराबआदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन एकदम मना है।

पाण्डु या कमला।

(Jaundice)

यकृत की क्रिया में गड़बड़ी या गोलमाल होनेके कारण यह रोग होता है। वास्तव में इसे यकृत रोगका एक लक्षण

ही कहना चाहिये। यकृत की क्रिया में खराबी होने के कारण मल मूत्र द्वारा पित्त बाहर नहीं निकलते और खूनके साथ मिलकर समूचे शरीर में संचालित होते हैं। इसी लिये यह रोग होता है। सविराम ज्वर, या प्लीहाजनित ज्वर के साथ और स्त्रियों को गर्भावस्था में भी यह रोग हो जाता है। आँखें और चेहरा पीला पड़ जाना, समूचा शरीर भी पीला हो जाना, पेशाब का रंग पीला, जीभ मैली मुँह का स्वाद कड़ुवा, भूख न लगना, जी मिचलना, पित्तकी कै, सफेद, मटमैले या राखके रगके दस्त होना, कब्जियत, कमजोरी, साधारण बुखार, कभी-कभी शरीर खुजलाना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—मैलेरियाके कारण यह रोग होना, हमेशा धीमा बुखार आना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—यह इस रोगकी बढ़िया दवा है। मैलेरिया बुखार या किसी तेज बीमारीके बाद यह रोग होना, यकृत कडा और बड़ा, दबाने से दर्द, कीचड़ जैसे दस्त, मुँहका स्वाद कड़ुवा, मिचली, भूख कम, या अधिक लगना लेकिन भोजन में अरुचि पतले दस्त इत्यादि लक्षणों में और मर्क्युरियस के साथ पर्याय-क्रममें देने से अनेक बार यह रोग इसी दवासे आराम हो जाता है।

मर्क्युरियस ६ या ३०—यकृत में दर्द, राख या कीचड़ जैसे दर्द मिचली और कै, जीभ मैली, पतले दस्त इत्यादि लक्षणों में और चायना के साथ पर्याय-क्रम में देने से इससे बहुत लाभ होता है।

कैमोमिला ६ या १२—छोटे बच्चे और बालकों को, खासकर दाँत निकलते समय यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—यकृत कड़ा और बड़ा, उसमें दर्द, कब्जियत, अरुचि, मुँह में तीता या खट्टा स्वाद, मिचली या कै, साधारण बुखार इत्यादि।

ब्रायोनिया ३ या ६—यकृत में हाथ लगाने से सुई चुभोने जैसा दर्द, पित्तकी कै, जीभ पर पीला लेप, कब्जियत, बुखार इत्यादि लक्षणों में और नक्सवोमिका से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ३ या ६—गर्भावस्था में स्त्रियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

चेली डोनियम ३ या ६—यकृत में दर्द, यकृत बड़ा, मल सफेद, आँख, चेहरा और समूचा शरीर पीला इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

लेप्टेन्ड्रा ३ या ६—यह पाण्डु रोगकी बढ़िया दवा है। यकृत में दर्द, पतले दस्त, कीचड़ जैसा मल इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

पोडोफिल्लाम ३ या ६—पित्त रुक जानेके कारण यह रोग होना, जी मिचलाना, पित्तकी कै, यकृत में तनाहट और दर्द, कब्जियत या उदरामय इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

सल्फर ६ या ३०—चर्मरोगवाले रोगियों को यह रोग होना, खोपड़ी और हाथ पैरमें जलन, पित्त अथवा रक्तकी कै, दाहिनी ओर दर्द, पेट फुला हुआ, कब्जियत अनिद्रा, शामको बुखार इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—जीभ पर पीला लेप, मुंहका स्वाद कड़ुवा, हरे रंगके पतले दस्त, प्यास न होना, जाड़ा मालूम होना, शामको तकलीफ का बढ़जाना इत्यादि।

लाइको पोडियम३०या२००—यकृतकी पुरानी विमारी के कारण यह रोग होना, बहुत कब्जियत, पेटमें वायुसञ्चय इत्यादि।

अरममेट६या३०—यकृत और पेट के ऊपरा हिस्से में दर्द, मटमैला या हरे रंगका मल, शरीर के निचले अगों मे दर्द इत्यादि।

मिरिका ३X—तेज बीमारी, कन्धेकी हड्डियों में दर्द, पेट से वायु निकलना, पेशियों में दर्द इत्यादि।

इनके अतिरिक्त एकोनाइट, हाइड्रेलिटस, एसिडफस, स्टलिकस,वार्बरिस, बेलेडोना, नेट्रमसल्फ, कार्डुअस, डिजिटेलिस, जेल्सामियम, आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—खुली हवा में घूमना और व्यायाम आदि करना लाभ दायक है। हलके और आसानी से हजम होने वाले पदार्थ और पके फल खाना चाहिये। मद्य, मॉस, घी, मिठाई पक्वान आदि खाना मना है।

खानपान और स्वास्थ्य के नियमों पर ध्यान रखने से साधारण बीमारी में काफी लाभ होता है।

पिलही का प्रदाह ।

अधिक परिश्रम करने और सरदी या चोट आदि लगने के कारण पिलही में प्रदाह पैदा होता है। यह रोग होने पर पिलही के स्थान में दर्द, दप दपी, हँसने, खाँसने या सांस लेने पर दर्द का बढ़ना, बुखार, छाती और पेट में जलन, जी मचलना, शिरमें चक्कर, कब्जियत आदि लक्षण प्रकट होते हैं। यह रोग प्राय. आराम हो जाता है, परन्तु प्रदाह के कारण पीव पैदा होजाने पर रोग सांघातिक हो जाता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६–प्रदाह के कारण बुखार, बहुत घबड़ाहट, मृत्यु भय, बेचैनी, प्यास इत्यादि ।

आर्निका ६–चोट लगने के कारण यह रोग होने पर और सान्निपातिक लक्षण दिखायी देने पर इसे देना चाहिये ।

ब्रायोनिया ६ या ३०–पिलही के स्थान में सुईचुभोने जैसा दर्द, कब्जियत अथवा कै और दस्त, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि ।

आर्सेनिक ६ या ३०—जलन, पतले दस्त, खूनी कै,बहुत कमजोरी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३०—शराबियों को यह रोग होने पर और एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

पिलही का बढ़ना।

(Enlargement of the Spleen)

मैलेरिया बुखार आने पर तथा अधिक क्वीनाइन सेवन करने के कारण प्राय यह रोग होता है। कभी-कभी दूसरे रोगो के साथ एक उपसर्ग के रूपमें भी यह रोग प्रकट होता है। यह रोग होने पर पेट बडा दिखायी देता है, खास कर बायी ओर कभी-कभी पेट इतना बढ़ जाता है कि देखने में तोंबी जैसा मालूम होता है। पेट पत्थर जैसा कडा हो जाना, भूख न लगना, पतले दस्त होना, खूनी आँव होना, शोथ या जलोदर हो जाना इत्यादि इस रोग के प्रधान उपसर्ग है। इन्हीं के कारण अनेक बार रोग साघातिक हो जाता है।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—अधिक क्वीनाइन सेवन करने के कारण पिलही का बढ़ जाना और कठिन हो जाना, बायीं

आर खींचने और सुई चुभोने जैसा दर्द, पेट में जलन बहुत कमजोरी, खूनी दस्त और खूनी कै इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—क्वीनाइन का अपव्यवहार, कब्जियत, हिलने डोलने या दबाने से कांटा लगने जैसा दर्द।

कल्केरिया कार्ब ३०—प्लीहा का बढ़ जाना, वहाँ स्पर्श आदि बरदास्त न होना, सामने की ओर झुकने पर बायें पार्श्व में सुई चुभोने जैसा दर्द, तलपेट फूला हुआ इत्यादि।

चायना ६ या ३०—बहुत दिनों तक मैलेरिया बुखार आने के कारण यह रोग होना, पिलही बड़ी और कड़ी, उसमें दर्द, चलते [illegible] [illegible]नी, पेट फूलना, अतिसार, शोथ इत्यादि।

सियेनोथस १X–पिलही फूली और कड़ी, दर्द, दर्द के कारण बायीं करवट लेट न सकना, कब्जियत इत्यादि।

—

लाइकोपोडियम ३०–बायीं कोख में कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द, पेट फूला हुआ और वायुपूर्ण कब्जियत इत्यादि।

—

नेट्रम म्यूर ३०–पुरानी बीमारी में इससे, लाभ होता है।

—

फेरम आर्स ३०—पिलही का बढ़ना पिलही कड़ी, बुखार, शोथ, कब्जियत या पतले दस्त, रक्त हीनता इत्यादि।

—

बेसिलिनम २००—किसी दवासे लाभ न होने पर इसे अजमाना चाहिये।

१३--पेटके रोग।

(Diseases of the Stomach)

हमारे पेटका प्रधान यन्त्र है, पाकाशय या मेदा। हमलोग जो कुछ खाते या पीते हैं, वह पाकाशय में ही पहुँचता है

और वहाँ वह हजम होकर उसका रस, रक्त आदि बनता है। पाकाशयकी क्रिया में गड़बड़ी होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं। उन्हीं रोगों का निदान और चिकित्सा इस परिच्छेद में लिखी जाती है।

पाकाशय प्रदाह।

(Gastritis)

गरम शरीर में ठंढा पानी या बरफ आदि पीना, उत्तेजक पदार्थों का सेवन, तेज जुलाब लेना, किसी तरह का विष पेटमें जाना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। पेट में जलन और कतरने जैसा दर्द, तन्नाहट, हिलने डोलने से दर्द मालुम होना, कै में पहले खाये हुए पदार्थ, बादको कफ और खून निकलना, ठढा पानी पीने की इच्छा, तेज प्यास लेकिन पानी पीते ही कै हो जाना, पेट पर हाथ रखने से पेट गरम मालुम होना, बुखार, घुटने मोडकर चित सोना, कब्जियत, मूत्ररोध या थोड़ा पेशाव, जीभ पर सफेद लेप, रोगी बहुत कमजोर, और मृतवत् अवस्था आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। रोग बढने पर रोगी का चेहरा और आँखें बैठ जाती है और हाथ पैर तथा चेहरे पर ठंढा पसीना मूर्च्छा, प्रलाप आदि लक्षण प्रकट होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—ठंढी सूखी हवा लगकर रोग होना, तेज बुखार, पाकाशय में दर्द और जलन, तेज प्यास, बेचैनी और मृत्यु भय ।

पल्सेटिला ६ या ३०—पाकाशय में छुरी भोकने जैसा दर्द खाने पीने के बाद मिचली और कै, शिरमें चक्कर, जाड़ा मालूम होना, मुँह का स्वाद कड़ुवा, पतले दस्त, शामको तकलीफ का बढ़ना इत्यादि ।

नक्सवोमिका ६ या ३०-पेट में ऐंठन और जलन, खट्टी गन्ध युक्त कफ या खूनकी कै, कब्जियत, शिरमें दर्द, शराबियों को यह रोग होना इत्यादि ।

कार्बोवेज ६ या ३०—पाकाशय में जलन, खट्टी डकार, जरासा खानेसे भी दर्द, पेट में वायु संचय, खट्टी चीजें खाने की इच्छा इत्यादि ।

बेलेडोना ६ या ३०—दर्द का एकायक शुरू होना और एकायक गायब हो जाना, शिरमें रक्ताधिक्य और दर्द, आवाज और रोशनी बर्दास्त न होना, नींद से बारंबार चौंक पड़ना इत्यादि ।

आर्सेनिक ६ या ३०–पाकाशय में जलन के साथ दर्द, बहुत प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, कै होना, कै होते समय दर्द का बढ़ जाना, बेचैनी मृत्युभय अनिद्रा इत्यादि।

आर्निका ६ या ३०–पाकाशय में दबाने और कतरने जैसा दर्द, मिचली, डकार, मुँह का स्वाद कडुवा, समूचे शरीर में दर्द, शिर गरम, अन्यान्य अग ठंढे इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०–पाकाशय में सुई चुभोने जैसा दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढना, जीभ सूखी और उस पर सफेद लेप, तेज प्यास, कै इत्यादि।

इपीकाक ६ या ३०—पाकाशय में तेज दर्द और जलन मिचली या कै, हरे दस्त, पेट में शूल वेदना।

विरेट्रम ६ या ३०–तेज प्यास, किसी भी चीज का पेट में अधिक समय तक न ठहरना, कमजोरी, ठंढा पसीना, अधिक दस्त और कै, पेट में शूल इत्यादि।

केन्थरिस ६ या ३०—पाकाशय में जलन, कै, पेशाब करने की इच्छा, लेकिन बून्द बून्द पेशाब होना इत्यादि।

फोस्फरस ३ या ६—पेट में कतरने जैसा दर्द, हाथ पैर ठढे, ठंढ, मालूम होना, बहुत कमजोरी, खींचन इत्यादि लक्षणों में और आर्सेनिक के बाद इसे देने से अधिक लाभ होता है।

कैम्फर ६ या ३०—एकायक बहुत सुस्त हो जाने तथा कै दस्त होने पर इसे देना चाहिये।

हाइड्रेस्टिस ३X—यह भी इस रोगकी एक बढ़िया दवा है।

इनके अतिरिक्त एन्टिमक्रूड, मर्क्युरियस कर, थूजा, हायोसायमस, अर्जेन्टम नाइट, विस्मथ, मिटिलफोलियम, मर्क्युरियस सल, आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करतीहै।

आवश्यक सूचना—रोगकी तेजी के समय एकाएक या आधे-आधे घटे पर दवा देनी चाहिये। जब तक रोग आराम न हो तब तक थोडा ठंढा पानी या बरफ के टुकडों को छोड़ कर और कुछ भी खाने के लिये न देना चाहिये। रोग शान्त होने पर साबूदाना, बार्ली, दूध आदि दिया जा सकता है। जब तक पाचनशक्ति ठीक न हो जाय, तब तक कड़ी चीजे खाने को न देनी चाहिये।

भूख न लगना ।

(Anor. xia)

अनेक बार यह रोग किसी दूसरे रोगके लक्षण रूपमें ही प्रकट होता है। अधिक या अपरिमित भोजन, किसी प्रकार का शारीरिक व्यायाम न करना, सदा पढ़ते लिखते रहना, सदा घर में बैठे रहना, सराब, गाँजा, भाँग आदि मादक पदार्थों का सेवन करना इत्यादि कारणों से भी यह रोग होता है।

चिकित्सा

नक्सवोमिका ३ या ६—चाय काफी और शराब आदि पीने के कारण यह रोग होना, मुहँ में कड़ुवा स्वाद, कब्जियत, खाने की चीजों का स्वाद अच्छा न मालूम होना इत्यादि ।

चायना ६ या ३०—बहुत दिनों तक पतले दस्त आनेके बाद यह रोग होना, सभी चीजों पर अरुचि 'मुँहका स्वाद कड़ुवा ।

पल्सेटिला ६ या ३०—स्त्रियों को रजोदोषके साथ यह रोग होना। मुँहमें खडा या कड़ुवा स्वाद, घीके पके पदार्थ

मांस, दूध, रोटी आदि चीजें रुचिकर न मालूम होना, भोजन के बाद डकार आना, डकार में खायी हुई चीजों का स्वाद और गन्ध।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मुँहमें खट्टा स्वाद और खट्टी कै, शिर में दर्द, पतले दस्त इत्यादि।

हिपर सल्फर ३०—अधिक पारा या क्वीनाइन का सेवन करने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

जेन्टियाना लुटिया मदर टिंचर—भोजन के आधा घण्टा पहले इसका आधा बूँद खिलाने से बहुत लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त हाइड्रेस्टिस, एन्टिमक्रूड, फनस स्पार, इग्नेशिया और रसटक्स आदि दवाएं भी आजमायी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—सुबह शाम खुली हवा में घूमना, ठढे जलसे स्नान करना, तड़के उठना, नियमित व्यायाम करना लाभ दायक है। आसानी से हजम हों ऐसी चीजें खाना चाहिये।



मुहमें पानी भर आना ।

(Pyrosis)

यकृत और पाकाशय की क्रिया में गड़बड़ी होने से और भारी या अपुष्टिकर भोजन करने से यह रोग होता है। भोजन करने के बाद डकार आना और उसके साथ ही खट्टा या स्वादरहित पानी पेटसे निकल कर मुँहमें भर जाना इसका प्रधान लक्षण है ।

चिकित्सा ।

कार्बोवेज इस रोग में काफी फायदा करता है। पुरानी बीमारीमें लाइको पोडियम आजमाना चाहिये । नक्सवोमिका, एसिड सल्फ, ब्रायोनिया, पल्सेटिला आदि दवाओं से भी लाभ होता है । अजीर्ण या बदहजमी की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है । तेज बीमारी में रोगीको केवल मठा खिलाने से भी काफी फायदा होता है ।

अधिक भूख लगना ।

(Marbid Appetite)

पाकाशयकी खराबीके कारण जिस तरह कम भूख लगती है, उसी तरह कभी कभी बहुत ज्यादा भूख भी लगती है।

इसे अस्वाभाविक या राक्षसी भूख भी कहते हैं। यह रोग होने पर रोगीका पेटही नहीं भरता। वह हर वक्त खानेके लिये तैयार रहता है। पेटमें क्रिमि होना, किसी कठिन रोग से बहुत दिनों तक पीड़ित रहना, आदि कारणों से तथा स्त्रियों को गर्भावस्था और हिस्टीरिया रोगके समय यह रोग होता है।

चिकित्सा।

सिना ३० या २००—पेटमें क्रिमि होनेपर इसे देना चाहिये। सोते से चौंक पड़ना, दाँत किड़मिड़ाना, और नाक खुजलाते रहना, क्रिमिरोगके प्रधान लक्षण हैं।

चायना ६ या ३०—भयकर भूख, खासकर रातके समय प्यास, खट्टे फल खानेकी इच्छा इत्यादि।

साइलीसिया ६ या ३०-बहुत भूख लगना लेकिन खानेकी चीजें भली न मालूम होना, कब्जियत, अमावस्याका रोगका बढ़ना इत्यादि।

स्टेफीसेग्रिया ३ या ६-भोजन से पेट भरा हुआ होने पर भी भूख मालूम होना।

आवश्यक सूचना—रोग चाहे जिस कारण से हुआ हो, इसे सदा रोग ही समझना चाहिये और रोगीको भली बुरी सभी चीजें चाहे जितनी तादाद में न खाने देना चाहिये। खान पान में नियमित न रहने से रोगीको अन्य भयकर रोग हो सकते है।

बदहजमी या मन्दाग्नि ।

(Dyspepsia—Indigestion)

इस रोग को अग्निमान्द्य या अजीर्ण रोग भी कहते हैं। घी, तेलके पके पदार्थ खाना, अच्छी तरह चिबाकर न खाना, चाय, काफी, शराब तम्बाकू या ऊटपटांग दवाओं का अधिक सेवन, अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रम करना, अथवा बिलकुल ही परिश्रम न करना, खट्टी चीजें खाना, कमजोरी, सदा खिन्न रहना, स्नायुरोग या वात रोगका होना, सोरा धातु आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। पेटमें भार, मुँहमें पानी भर आना, छातीमें जलन, पेटमें दर्द, साँस में बदबू, कलेजा धड़कना, शिर में दर्द, कभी कभी राक्षसी भूख, पेट फूलना, कब्जियत या पतले दस्त, मिचली या कै, डकार आना, गला जलना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।

नक्सवोमिका ३x या ३०—तम्बाकू और शराब आदिके सेवन के कारण यह रोग होना, पेटमें भार और दर्द, कलेजे में जलन, कै, मुँहका स्वाद तीता या खट्टा, वेग होनेपर भी साफ दस्त न होना, सुबह शिरमें चक्कर इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—छाती में जलन, मिचली, शिरमें चक्कर, जीभ सूखी, पतले या आंव मिले दस्त, घी तेलकी पकी चीजें खानेके कारण यह रोग होना, स्त्रियों को रजोदोष के साथ यह रोग होना, सदा ठढ मालूम होना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—पाकस्थली में बहुत जलन, गरम पानी पीनेसे आराम मालूम होना, बरफ खानेके कारण यह रोग होना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—कच्ची या खट्टी डकार आना, खांसी, धीरे धीरे शरीर कमजोर और दुबला होते जाना, खट्टी कै, अधिक ऋतुस्राव इत्यादि। पल्सेटिला के बाद इससे अधिक लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पुरानी बीमारी, कोई भी चीज हजम न होना, खट्टी चीजें खानेकी इच्छा, पारेके अप-व्यवहारके कारण यह रोग होना।

चायना ६ या ३० मैलेरिया रोग होने के कारण या बहुत दिनों तक शराब पीनेके कारण यह रोग होना, शोथ और यकृत प्रदाह आदि लक्षण दिखायी देना इत्यादि।

सल्फर ३०—पाकाशय में भार, खट्टी डकार आना, भोजन के बाद तन्द्रा, मुँहमें और होठों पर जख्म या सूजन, कब्जियत, बवासीर इत्यादि। सुबह सल्फर ३० और शामको नक्सवोमिका ३० सेवन कराने से पुराने रोगमें बहुत लाभ होता है।

लाइको पोडियम ६ या ३०—कमजोर आदमियों को यह रोग होना, बदहजमी और पेट फूलना, कब्जियत, सदा तन्द्राभाव, खासकर भोजन के बाद, खट्टी डकार, खट्टी कै, थोड़ा सा खाने पर भी पेट भरा मालूम होना, पेटमें वायु संचय, दस्त साफ न होना इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—यह भी इस रोग की बढ़िया दवा है। सर्दी, बदबूदार और खट्टी डकार, हिचकी, डकार

आने या वायु निकलने पर आराम मालूम होना, भोजन की अनिच्छा, पेटमें गड़गड़ाहट, अतिसार और पेट फूलना, रोगीका कातर हो पड़ना इत्यादि।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—अधिक भोजन के कारण यह रोग होने पर तथा स्त्री, बच्चे और वृद्धोंको यह रोग होने पर इससे अधिक लाभ होता है। बदबूदार डकार, पारी पारीसे कब्जियत और दस्त, जीभ पर सफेद लेप, अरुचि, भूख न लगना, डकार और वायु निकलना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एबिस नाइग्रा ३X या ६—भोजन के बाद पेटमें बहुत दर्द, कब्जियत, वृद्धावस्था के कारण यह रोग होना।

फोस्फरस ६या३०—अधिक इन्द्रिय सेवा या हस्तमैथुन के कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—ग्रीष्म और वर्षाके दिनों में इस रोगका होना, भोजन के अन्त में मुँहमें पानी भर जाना, पाकाशय में पत्थर जैसा भार, खट्टी या तीती डकार, जीभ पर पीला लेप, कब्जियत, मुँहमें तीता स्वाद।

एनाकार्डियम ३—भोजन के बाद तुरन्त कोई तकलीफ न मालूम होना, लेकिन कुछ समय के बाद पेट में भी दर्द हो, तो इसे देना चाहिये।

नेट्रमम्यूर ३०—मुँहसे पानी निकलना, मुँहका स्वाद तीता, छातीमें जलन, खानेके बाद कलेजे में धड़कन रक्त हीनता, नमक खानेकी इच्छा, कब्जियत, अधिक इन्द्रिय सेवा या श्वेतसार पदार्थ खानेके कारण यह रोग होना।

सीपिया ६ या ३०—स्त्रियोंको जरायु दोषके साथ यह रोग होना, पुरानी बीमारी, मलद्वार में भार, मुँहका स्वाद खट्टा या तीता, खट्टी चीजें खानेकी इच्छा, शरीर मलीन और पीला इत्यादि।

थूजा ६ या ३०—अधिक चाय पीनेके कारण यह रोग होनेपर इसे देना चाहिये। मर्क्युरियस सल और एक्टि या रेसिमोसा से भी इसी लक्षणमें लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त हाइड्रेस्टिस, पेट्रोलियम, नक्स मस्केटा, केली बाइक्रोम, प्लम्बम, डालकेमारा, एकोनाइट, कोलेनसिन्थ आइरिस, बिस्मथ, और आर्निका आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोज कुछ समय तक घूमना, ठढे पानीसे नहाना, नियमित समय पर भोजन, भोजन के बाद कुछ देर विश्राम, दिनमें न सोना, भोजन के बाद काफी पानी पीना आदि बातें लाभ दायक हैं। जल्दी जल्दी खाना, रात में जागना आदि हानिकारक हैं। खानेके लिये ऐसी ही चीजें व्यवहार में लानी चाहिये, जो आसानी से हजम हो जायें। घीके पके पदार्थ मॉस, दही, घी, चाय, काफी आदि चीजें बिलकुल ही न खायी जायें तो अच्छा है।

अम्ल रोग।

(Acidity)

यह रोग भी एक तरह का अजीर्ण रोगही है और साधारणत अजीर्ण रोगसे ही यह रोग उत्पन्न होता है। छाती और पेटमें जलन होना, मुँहमें खट्टा पानी भरना, खट्टी डकार आना, कभी कभी भोजन के बाद पेटमें कुछ दर्द होना, कै, शिरदर्द, कब्जियत या उदरामय आदि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। मुँहमें खट्टा स्वाद और कै, जीभ पर सफेद या

पीला लेप, प्यास न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—अम्लरोग, सड़ी डकार आना, दस्तोंके कारण कमजोरी, पेटमें गड़गड़ाहट और वायु संचय, जी मिचलाना इत्यादि।

सल्फ्यूरिक एसिड ६ या ३०—कलेजे में जलन, खट्टी डकार, खट्टी कै, बदन से खट्टी गन्ध निकलना, काले दस्त हिचकी इत्यादि।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—पेटमें वायु सचय, पेटमें किसी भी चीजका ठहर न सकना।

नेट्रमफस १२X विचूर्ण-पेटमें दर्द, खट्टी डकार, खट्टी कै, डकार आने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट ६ या ३०—पुरानी बीमारी, डकार आना, राक्षसी भूख इत्यादि।

फोस्फरस ३०—खट्टी डकार या मुंहमें पानी भर आना बूढ़ोंको यह रोग होना इत्यादि।

सल्फर ३०—पुरानी बीमारी, कब्जियत सुबह के वक्त पतले दस्त, शिरमें जलन इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—भोजन के बाद पेटमें भार मालूम होना, पेट दबाने पर दर्द होना, कब्जियत,शराबी और अमिताहारियों को यह रोग होना इत्यादि।

रोबिनिया ३०—कै, तीती डकार, पेटमें जलन,कब्जियत इत्यादि लक्षणों में इसे बहुत दिनों तक सेवन करने से अच्छा लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त मेङ्गनम, मेग्नेशिया फस,केलीकार्ब आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—नियमित समय में नहाना, खुली हवामें घूमना, और व्यायाम करना लाभदायक है। घी और तेलवाले पदार्थ, मिठाई और श्वेतसार वाले पदार्थ खाना मना है। भोजन के दो घंटे बाद, कागजी नीबूका रस पीना लाभ दायक है।

फोस्फरस ३ या ६–पानी या कोई भी पतली चीज पेटमें कुछ देर ठहरने के बाद के हो जाती हो तो इसे देना चाहिये।

सिना ६ य ३०–कृमिके कारण के होने पर इससे लाभ होता है।

खाने के पदार्थों की गन्धके कारण कै हो जाय तो कल्पी कम। गर्भावस्था में स्त्रियों को यह रोग होने पर कोनायम, इपीकाक या नक्सवोमिका। जहाज की सवारी के कारण कै होने पर क्रियोजोट पेट्रोलियम या कक्युलस। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय यह रोग होने पर केमोमिला, खाँसी के साथ कै या मिचली होने पर इपीकाक, मर्क्युरियस, केप्सीकम, पल्सेटिला, ब्रायोनिया, चायना, ड्रासेरा, फोस्फरिक एसिड, सल्फर, कल्केरिया या लेकेसिस। तेज बीमारी में और अन्यान्य दवाओं से पूरा लाभ न होने पर चायना, फेरम, सल्फर, आर्सेनिक या हायोसायमस। खूनी कै में इपीकाक, इपीकाक से लाभ न होने पर हेमामेलिससे और हेमामेलिस से भी लाभ न होने पर अर्निका। जिस रोगके कारण कै होती हो उस रोग की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है।

आवश्यक सूचना–तेज बीमारी में आधे या एक घण्टे के अन्तर से और साधारण बीमारी में तीन चार घण्टे के

अन्तरसे दवा देनी चाहिये। रोगीको स्थिर भावसे सुला रखना चाहिये और बीच बीचमें बरफके टुकड़े चूसने के देने चाहिये। खानेके लिये हलकी चीजें देना चाहिये। एक साथ अधिक न खाकर थोड़ा थोड़ा कई बार खाना लाभदायक है।

खूनकी कै।

(Hoematemesis)

इस रोगको रक्तपित्त भी कहते हैं। कै के साथ खून निकलना इस रोगका प्रधान लक्षण है। कभी कभी अचानक खूनकी कै होती है और कभी कभी कै के पहले पेटमें भार और दर्द, मिचली, शिरमें चक्कर, कमजोरी आदि लक्षण प्रकट होते हैं। बारबार अधिक खून निकलना बुरा लक्षण है। कभी कभी पाखाने के साथ भी खून निकलता है। यह खून पाकाशय से निकलता है। पेटकी किसी नसमें जख्म हो जाना, किसी तरह की चोट लगना या शराब आदि पीनेके कारण यह रोग होता है। खूनी खांसीमें भी खून आता है, पर वह खून छातीसे निकलता है। खूनी कै में पाकाशय से खून आता है और उसके साथ कै, मिचली, पेटमें दर्द आदि लक्षण मौजूद रहते हैं।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३X या ६—पेटमें दर्द, कै के साथ चमकीला लाल खून निकलना, ज्वर भाव, हाथ पैर ठंढे, अस्थिरता, मृत्युभय इत्यादि लक्षणों में और रोगकी प्रथमावस्था में इसे देना चाहिये ।

इपीकाक ३ या ६—यह इस रोगकी सर्वप्रधान दवा है। एकायक खूनकी कै या जी मिचलाना और कै होना, काला खून निकलना, चेहरा मलीन, पेटमें दबाव मालूम होना, पेटमें दर्द, प्यास इत्यादि ।

हेमामेलिस १ या ३—काला खून निकलना पेटमें गडगडाहट, कमजोरी, खून निकलते समय कोई कष्ट न मालूम होना, इत्यादि लक्षणों में इससे भी बहुत लाभ होता है ।

आर्निका ३ या ६—पेट में किसी तरह की चोट लगने या अधिक परिश्रम करने के कारण खूनकी कै हो तो इसे देना चाहिये ।

चायना ६ या ३०—खूनका रंग काला, बहुत खून निकलना और उसके कारण रोगी का कमजोर हो जाना ।

आर्सेनिक ६ या ३०—क, पेटमें जलन, पेटमें दर्द, कमजोरी अस्थिरता, मूर्च्छाभाव, रोगी का बहुत सुस्त हो जाना, तेज बीमारी।

पल्सेटिला ३या ६—स्त्रियों को ऋतु बन्द हो जाने के कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०--बहुत कमजोरी, मृत्युकाल कीसी अवस्था, बारबार बेहोशी, हाथ पैर बरफ की तरह ठंढे, ठंढा पसीना, नाड़ी लुप्त प्राय, पेटका फूल जाना इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०--लाल रंगका खून निकलना, होठ आदि का रक्त शून्य हो जाना, पेटमें जलन, ठंढा पानी पीने से आराम मालुम होना।

इनके अतिरिक्त नक्सवोमिका, सिकेली, क्रोकस, बेलेडोना, फेरम, इरिजिरन और इरिजियम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—तेज बीमारी में घण्टे में दो तीन चार दवा देना चाहिये। मानसिक उत्तेजना, हिलना डोलना कठिन चीजें खाना आदि मना है। पेट पर ठंढे पानी की पट्टी चढाते रहना, बरफ के टुकड़े चूसना, और पूर्णरूप से विश्राम करना लाभदायक है। हलकी चीजें ठंढी करके खाने को देना चाहिये।

पेट में शूल।

(Colic)

यह एक तरह का स्नायविक दर्द है, जो पेटमें होता है आसानी से हजम न होनेवाली चीजें, अधपकी रोटियाँ तरकारी, घी तेलकी पकी चीजें आदि खाना पेटमें सरदी लगना, पेटमें मल इकट्ठा होना, गरम शरीर में वरफ आदि पीना, पेटमें वायुका सचित होना आदि इस रोगके प्रधान कारण हैं। शूल वेदना नाभी की जड़से शुरू होकर समूचे पेटमें फैल जाती है। वेदना बहुत ही कष्टदायक होती है, पर यह हमेशा वनी नहीं रहती। दर्द अचानक शुरू होता है। कुछ देर रहता है, वादको फिर शान्त हो जाता है। कुछ समय के वाद फिर शुरू होता है। दर्द के कारण रोगी पेटको हाथसे पकड लेता है, सामने की ओर झुक जाता है या जमीन पर पेटको दवाता है। जी मिचलाना, डकार आना, चेहरे पर ठंढा पसीना, कब्जियत, पेट फूलना, इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। वुखार नहीं रहता। दर्द किसी भी समय अचानक वन्द हो जाता है और रोगी अच्छा हो जाता है।

चिकित्सा ।

कोलोसिन्थ ३ या ६—यह इस रोगकी एक बढ़िया दवा है। पेटमें कतरने जैसा दर्द, ऐंठन,दर्दके कारण रोगीका छटपटाना, पेटको पकड़ रखना,सामनेकी ओर झुकजाना,पेट दवाने से आराम मालुम होना, कभी कभी पेटका फूल जाना, डकार आना इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये ।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—पेटमें वायु-संचय, कब्जियत इत्यादि लक्षणों में नक्सवोमिका से लाभ न होने पर और कोलोसिन्थ के साथ पर्यायक्रम में यह दवा दी जाती है ।

एकोनाइट१X या ३X—पेटमें कतरने जैसा दर्द, दर्द के कारण रोगीका चिल्लाना और छटपटाना,प्रदाह आदिके कारण यह रोग होना ।

केमोमिला १२ या ३०—नाभी के चारों ओर खींचने या सिकुडने जैसा दर्द, कब्जियत या पतले दस्त, पेट फूलना, रातके समय और गरमी में तकलीफ का बढ जाना ।

आयरिस ३ या ६—बहुत पेट फूलना, पेटके ऊपरी भागमें जलन, पित्तकी कै, मरोड़ने जैसा दर्द इत्यादि लक्षणों

में और कोलोसिन्थ, नक्सवोमिका तथा केमोमिला के बाद इससे अधिक लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०—अधिक भोजन या बदहजमी के कारण पेट फूलना, साथ ही पेटमें शूल, बारंबार दस्तका वेग मालूम होना, पर दस्तका न होना, कब्जियत, मूत्राशय में कतरने जैसा दर्द इत्यादि।

अयस्कोरिया ३ या ६—नाभी से शुरू होकर दर्दका समूचे पेट और शरीर में फैल जाना, साथ ही पेटका फूलना, पित्त और खायी हुई चीजों की कै, लेटने पर दर्दका बढ़ना, खड़े होने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—तूफान की तरह अचानक दर्दका शुरू होना और अचानक गायब हो जाना, कसकर पकड़ रखने या कुछ गड़ने जैसा दर्द, मल कठिन हो जानेके कारण दर्द, दबाने और घुटने तोड़कर सोने पर आराम मालूम होना, खड़े होने पर दर्दका बढना, जी मिचलाना, छोटे बच्चे और बालकों को यह रोग होना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—घी, तेलकी पकी चीजें खाने के कारण पेटमें शूल होने पर इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—पेटमें वायुसचय और गड़-गडाहट, डकार आना, भोजन के बाद तकलीफ का बढ़ जाना इत्यादि लक्षणों में और लाइकोपोडियम से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

विरेट्रम एल्बम ६—रातमें और भोजन के बाद पेटका फूल जाना, पेटमें गडगड़ाहट, समूचे तलपेटमें दर्द, मुँहमें पानी भर आना, चेहरा और हाथ पैर ठढे, ऐंठन।

प्लम्बम ६—पेटमे शूल, वेदना, साथही बहुत अधिक कब्जियत, लेंडी जैसा मल निकलना इत्यादि वार्बेरिस और ओपियम से भी इस लक्षणमें लाभ होता है।

कक्युलस ३ या ६—तलपेट में अधिक दर्द,पाकाशय में ऐंठन, वायु निकलना, पेट फूलना, स्त्रियोको गर्भावस्था में यह रोग होना इत्यादि।

साइना ६ या ३०—पेटमें क्रिमि होनेके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

इग्नेशिया ६–स्त्रियों को हिस्टीरिया रोगके साथ यह रोग होने पर इसे आजमाना चाहिये।

आवश्यक सूचना—तेज बीमारी में घण्टे में दो तीन बार दवा देनी चाहिये। फ्लानेल से पेट सेंकना लाभदायक है। पैर और पेटको सरदी से बचाना चाहिये। रोगके समय साबूदाना, वार्लो, गरम दूध आदि हलकी चीजे खाने को देनी चाहिये, दुष्पाच्य चीजें खाना मना है।

पित्त शूल।

(Bilious Colic)

पाकाशय और आंतों में पित्त सञ्चित होनेपर कभी कभी जो शूल वेदना होती है उसे पित्तशूल कहते हैं। पेटमें दर्द, साथ ही जी मिचलाना और कै, कै में पीले या हरे रंगके और खट्टे या कडवे पित्त निकलना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

कोलोसिन्थ ३ या ६—पाकाशय में दर्द कै में हरे रंगके पित्त निकलना, मुंहमें तीता स्वाद इत्यादि।

डायस्कोरिया ३ या ६—हिलने डोलने से आराम मालूम होना, पित्तशूल, साथही पतले दस्त।

इपीकाक ३ या ६—जी मिचलाना और कै, पाकाशय में दर्द, कड़ुवे पदार्थ की कै इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२—पाकाशय में आक्षेपिक वेदना, पित्तकी कै चिड़चिड़ा स्वभाव, बच्चोंकी बीमारी।

नक्सवोमिका, ब्रायोनिया तथा शूलवेदना की अन्यान्य दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—खाली पेट रहना और खाली पेटमें दूध पीना मना है। हलकी और पुष्टिकर चीजें खाना चाहिये। मिठाई खाना हानिकर है।

पित्त पथरी।

(Gall ston)

पित्त कोषमें पित्त सञ्चित होने पर पथरी पैदा हो जाती है। यह पथरी बालूके कणसे लेकर मटर के बराबर तक होती है। इसका आकार और रंग भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। जब यह पथरी पित्तकोष से निकल कर पित्तनाली में

पहुँचती है,तब शूल वेदना जैसी भयंकर वेदना होती है। यह वेदना दाहिनी कोखसे शुरू होकर चारो ओर फैल जाती है। साथ ही कै, ठंढा पसीना, हिमाङ्ग, श्वासकष्ट, मूर्च्छा आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। दर्द कभी-कभी कुछ समयके अन्तरसे उपस्थित होता है और कभी-कभी लगातार होता रहता है। पथरी आँत में पहुँचने पर दर्द बन्द हो जाता है और पथरी मलके साथ बाहर निकल जाती है। सदा घरमें बैठ कर मानसिक परिश्रम करने और मांस मछली खाने से भी यह रोग होता है। यह रोग सांघातिक नहीं होता।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—यह इस रोगकी, बहुत बढ़िया दवा है। शूल उठने पर पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के अन्तर से देना चाहिये।

बार्बेरिस १—Xकल्केरिया से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

कार्डुयस पेरियेनस १—Xयकृत में दर्द मालूम होने पर इसे देना चाहिये।

चायना ३X–रोगके समय कभी दर्दका शुरू होना और कभी बन्द हो जाना, बहुत कमजोरी इत्यादि।

अर्निका ३ या ६–शूलकी तकलीफ घट जने पर भी तनाहट बनी रहे तो इसे देना चाहिये।

कोलेस्टेरिनम १X या २X –पित्तपथरी के कारण शूल-वेदना होने पर इससे भी आश्चजयनक लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त कियोनेन्थस, हाइड्रेस्टिस, डायस्कोरिया, चेलीडोनियम, जेल्सीमियम, बेलेडोना, आर्सेनिक, मेग्नेशियाफस, एकोनाइट, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका और फोस्फरस, आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—फ्लानेल से सेंकना, दर्द के समय गरमपानी पिलाना, रोगीको गरम पानी के टबमें बैठाना या गरम पुल्टिस चढ़ाना लाभदायक है। खुली हवामें घूमना और स्वास्थ्यके नियमों का पालन करना चाहिये। आसानी से हजम होनेवाली चीजें खाना चाहिये। रोगका दुबारा आक्रमण रोकने के लिये चायना, चेलीडोनियम या कार्डुयस मेरियाना दीर्घकाल तक सेवन कराना चाहिये।

पाकाशय में दर्द।

(Pain in the Stomach)

खानपान की अनियमितता, कच्चे कन्दमूल आदि खाना, अफीम या शराब आदिका सेवन गर्मीके दिनों में अचानक सर्दी लगना आदि कारणों से यह रोग होता है। भोजनके बाद पेटमें रह रह कर खरोंचने या कसकर पकड़ने जैसा दर्द, दर्दके कारण रोगीका छटपटाना, पेट दबाने से आराम मालूम होना, मिचली और कै, कैहोकर खायी हुई चीजों का बाहर निकल जाना, इसके बाद आराम मालूम होना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

नक्सवोमिका ३ या ६—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। भोजन के बाद पेट में ऐंठन, सामने की ओर झुक जाना, पेट मलने पर आराम, तीती और खट्टी डकार, छाती में जलन, पेट फूलना, कै, कब्जियत या पतले दस्त, सदा दस्त का वेग मालूम होना, शराबियों की बीमारी इत्यादि।

कोलोसिन्थ ३ या ६—पाकाशय में ऐंठन, खोंचन या मोच जैसा दर्द, आगे की ओर झुक जाना, पेट में पैर मोड़

कर अड़ाने, दबाने और सेंकने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

आर्सेनिक ३ या ६—बहुत दर्द, दर्दके कारण रोगी का पागल सा हो जाना, ज्वालाकर वेदना, रात के समय दर्द।

बेलेडोना ३ या ६—काटने या कनकनाने जैसा दर्द, दर्द के कारण साँस रोककर रोगी का चुप चाप पड़े रहना, एकायक दर्द का शुरू होना और एकायक गायब हो जाना।

कक्युलस ३ या ६—भोजन के समय और भोजन के बाद पेट में भयकर अकड़न, ऐंठन और कतरने जैसा दर्द, पाकाशय में स्नायुशूल और श्वासकष्ट इत्यादि। कोलोसिन्थ से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—नक्सवोमिका से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त एकोनाइट, मेग्नेशिया फस, आर्निका, विस्मथ, ब्रायोनिया, फेरम, चेलीडोनियम, रोबिनिया, आर्ज-

संचय, डकार, कै आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। रक्त स्वल्पता और वहुमूत्र के साथ प्रायः यह रोग मोजूद रहता है। नक्सवोमिका ३ या ६ इस रोग की वढ़िया दवा है। भोजन के वाद दस पन्द्रह वूंद डाइल्यूट हाइड्रोक्लोरिक एसिड थोड़े पानी के साथ पीने से भी काफी लाभ होता है।

सोसिकनेस—जहाज आदि पर चढ़ने से वहुत लोगों को कै होती है। इस वीमारी को सीसिकनेस कहते हैं। ककयुलस ३या ६ इस रोग की प्रधान दवा है। शिर चकराता हो तो इसे ही देना चाहिये। कै के साथ कब्जियत या दस्त होने पर नक्सवोमिका ६ या ३०। ककयुलस से लाभ न होने पर क्रियोजोट ३ या ६ आजमाना चाहिये। पेट्रोलियम ६ इस रोग की प्रतिपेधक दवा मानी जाती है। नक्सवोमिका भी प्रतिपेधक है।

१४—तलपेट के रोग

(Diseases of the Abdomen)

हमारे तलपेट में आँतें, मूत्र यत्र, जननेन्द्रिय और मल-द्वार आदि अंग अवस्थित हैं। स्त्रियो के तलपेट में जरायु आदि प्रजनन अंग होते हैं। इस अध्याय में तलपेट के उन रोगों का इलाज हम अकित करते हैं जिनका सम्बन्ध आँतें और मलद्वार से पाया जाता है। मूत्र यन्त्र और जननेन्द्रिय

रोग पृथक अध्यायों में अंकित किये जायेंगे और स्त्रियों के प्रजनन अंग की चिकित्सा इसी रोग के अध्याय में लिखी जायगी।

अन्त-प्रदाह।

(Enteritis)

आँत दो भागों में विभक्त है। एक बडी आँत कहलाती है और एक छोटी। बडी आँत का प्रदाह आमाशय या रक्तामाशय कहलाता है। इसके लिये रक्तामाशय या खूनी आँव देखना चाहिये। छोटी आँत के प्रदाह का इलाज यहाँ लिखा जाता है।

अनियमित आहार, सरदी लगना, कृमि, पेट में चोट लगना, आँत में गाँठ-गाँठ मल का सञ्चित होना, शराब पीना, जुलाब या उत्तेजक औषधियों का सेवन करना आदि इस रोग के प्रधान कारण माने जाते हैं। यह रोग होने पर नाभी के चारों ओर काटने या कतरने जैसा दर्द, खाँसने, जोर से साँस लेने, हाथ लगाने या दबाने पर दर्द का बढ़ना हिल डोल न सकना, पैर मोड़ कर चित्त सोना, तेज बुखार, पेट फूलना, कब्जियत, कै, कभी-कभी पतले दस्त आदि लक्षण प्रकट होते हैं। साधारण बीमारी में लक्षण उतने तेज नहीं होते और रोग आसानी से आराम हो जाता है। तेज बीमारी में अधिक पसीना, हिचकी और कमजोरी आदि

लक्षणों के साथ पतनावस्था उपस्थित होती है और रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

एकोनाइट ३ या ६—रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तेज बुखार, बेचैनी, बहुत प्यास, चमड़ा सूखा, नाभी के चारो ओर कतरने जैसा दर्द, कब्जियत, सरदी लगकर यह रोग होना इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—पेट में दर्द, पेट फूला हुआ, पतले दस्त, पेट में हाथ न लगा सकना, चेहरा और आँखें लाल, प्रलाप इत्यादि लक्षणो में, खास कर जब दस्त आते हो तब इसे देना चाहिये।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—पाकाशय की खराबी, जीभ पर सफेद लेप, पतला दस्त, पेट में तनाव और दर्द इत्यादि।

ब्रायोनिया ३ या ६—नाभी के चारों ओर दर्द, पेट फूला हुआ, आँत में सुई चुभोने [illegible] हिलने [illegible] दर्द का बढ़ना, बहुत कब्जियत [illegible]

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत बेचैनी और घबड़ाहट, तेज प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना, शरीर में दाह, बदबूदार काले रंग के दस्त, बहुत कमजोरी, कठिन बीमारी।

कोलोसिन्थ ३ या ६—पेट में बहुत दर्द, दर्द के कारण रोगी का आगे की ओर झुक जाना, पेट दबाने से आराम मालूम होना, आँव मिले पतले दस्त इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—पेट में कतरने जैसा दर्द, स्पर्श बरदास्त न होना, अधिक आँव गिरना, बडबड़ाना।

आर्निका ६ या ३०—अनजान में दस्त और पेशाब, बहुत निद्रालुता, जीभ सूखी, पेट का फूलना, शरीर में नीले नीले दाग, चोट लगने के कारण यह रोग होना।

केन्थरिस ६ या ३०—बारंबार पेशाब का वेग मालम होना और बूंद-बूंद पेशाब होना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—पेट फूला हुआ, खून और आँव मिले दस्त, पुरानी बीमारी में पीब होने का उपक्रम।

इथ्यूजा ३ या ६—छोटे बच्चे और बालकों को इससे विशेष लाभ होता है। दूध हज़म न होना, बहुत कै होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—नाभी के आस पास दबाने जैसा दर्द, स्पर्श बरदास्त न होना, शूल, दर्द और पेट का फूलना, बदबूदार दस्त, सोने के बाद तकलीफ का बढ़ जाना।

पोडोफिल्लाम ६—तरह-तरह के अलग-अलग रंग के दस्त, सुबह रोग का बढ़ना, शरीर का रंग पीला, पेट का फूलना इत्यादि।

इपीकाक ३ या ६—पेटका फूलना, समूचे पेट में दर्द, लगातार मिचली या कै,पतले दस्त।

विरेट्रम एल्ब६—बारबार ज़ोर से दस्त होना, पेट में दर्द, सरदी मालूम होना, कपाल में पसीना इत्यादि।

पाइरोजन ३०—पेट में बहुत तेज दर्द हो तो इसे आजमाना चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी को स्थिर भाव से सुला रखना चाहिये। फ्लानेल से पेट सेकने पर लाभ होता है। खान पान पर विशेष ध्यान देना चाहिये। कड़ी और दुष्पाच्य चीजें खाना मना है।

अन्त्रावरण प्रदाह।

(Peritonitis)

तलपेट और आँत के भीतरी भाग एक झिल्ली द्वारा ढके रहते हैं। सरदी या चोट लगना, आँत मे जख्म, प्रसव या गर्भस्राव, चीरा लगवाना आदि कारणों से इस झिल्ली में प्रदाह उत्पन्न होता है। यह रोग होने पर, जाडा और कप के साथ बुखार, पेट में बहुत दर्द और तनाव, कै, पेट फूलना, कमजोरी, चित होकर पड़े रहना, कब्जियत और हिचकी इत्यादि लक्षण प्रकट होते हे। रोग कठिन होने पर आठ ही दस दिन में रोगी की मृत्यु हो जाती है। यदि इतने दिन वह बच जाता है, तो फिर प्राय. आराम हो जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—ठढ या सरदी लगकर यह रोग होना, बुखार, प्यास, बेचैनी, मृत्युभय इत्यादि लक्षणो में और रोग की प्रारम्भिक अवस्था में इसे देना चाहिये।

इथ्यूजा ३ या ६—छोटे बच्चे और बालकों को इससे विशेष लाभ होता है। दूध हज़म न होना, बहुत कै होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—नाभी के आस पास दबाने जैसा दर्द, स्पर्श बरदास्त न होना, शूल, दर्द और पेट का फूलना, बदबूदार दस्त, सोने के बाद तकलीफ का बढ़ जाना।

पोडोफिल्लाम ६—तरह-तरह के अलग-अलग रंग के दस्त, सुबह रोग का बढ़ना, शरीर का रंग पीला, पेट का फूलना इत्यादि।

इपीकाक ३ या ६—पेटका फुलना, समूचे पेट में दर्द, लगातार मिचली या कै, पतले दस्त।

विरेट्रम एल्ब ६—बारबार जोर से दस्त होना, पेट में दर्द, सरदी मालूम होना, कपाल में पसीना इत्यादि।

पाइरोजन ३०—पेट में बहुत तेज दर्द हो तो इसे आजमाना चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी को स्थिर भाव से सुला रखना चाहिये। फ्लानेल से पेट सेंकने पर लाभ होता है। खान पान पर विशेष ध्यान देना चाहिये। कड़ी और दुष्पाच्य चीज़ें खाना मना है।

अन्त्रावरण प्रदाह।

(Peritonitis)

तलपेट और आँत के भीतरी भाग एक झिल्ली द्वारा ढके रहते हैं। सरदी या चोट लगना, आँत में जख्म, प्रसव या गर्भस्राव, चीरा लगवाना आदि कारणों से इस झिल्ली में प्रदाह उत्पन्न होता है। यह रोग होने पर, जाड़ा और कंप के साथ बुखार, पेट में बहुत दर्द और तनाव, कै, पेट फूलना, कमजोरी, चित होकर पड़े रहना, कब्जियत और हिचकी इत्यादि लक्षण प्रकट होते हे। रोग कठिन होने पर आठ ही दस दिन में रोगी की मृत्यु हो जाती है। यदि इतने दिन वह बच जाता है, तो फिर प्राय. आराम हो जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—ठढ या सरदी लगकर यह रोग होना, बुखार, प्यास, बेचैनी, मृत्युभय इत्यादि लक्षणों में और रोग की प्रारम्भिक अवस्था में इसे देना चाहिये।

वेलेडोना ३ या ६-तेज बुखार, तलपेट फूला हुआ, गरम, छूने से दर्द होना, एकायक दर्दका शुरू होना और एकायक गायब हो जाना, पेशाव बन्द, पित्तकी कै इत्यादि।

आर्सेनिक ३ या ६—बहुत सुस्ती,लगातार कै, पेट में जलन, शूल वेदना, ठंढा पसीना इत्यादि।

कर्बोवेज ६ या ३०—हाथ पैर ठंढे, बहुत सुस्ती, पतनावस्था के लक्षण इत्यादि।

अर्निका ३ या ६—गिरने या चोट लगने के कारण अथवा प्रसव के बाद यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

लाइको पोडियम ३०—पेट में गड़गड़ाहट और वायु-संचय, पेट का फूलना और निद्रालुता।

लेकेसिस ३०-प्रदाह के साथ वेहोशी लेकिन पेट पर हाथ रखने से दर्द मालूम होना, कमर से लेकर जंघाओ तक दर्द, कब्जियत, जीभ का कॉपना इत्यादि।

केन्थरिस ३ या ६—तलपेट में जलन और दर्द हाथ रखने से दर्द का बढ़ना, निम्नाङ्ग ठंढा, पेशाब बन्द अथवा जलन के साथ बूँद बूँद पेशाब होना।

मर्क्युरिस ३०—तेज बीमारी में पीब सचित होने का लक्षण दिखायी देने पर इसे देना चाहिये।

ओपियम ६—तलपेट फूला हुआ, निद्रालुता, बारबार डकार और कै, दस्त और पेशाब बन्द इत्यादि।

रसटक्स ६—सर्दी लगने या पानी में भिगने के कारण यह रोग होना, तलपेट बहुत फूला हुआ, बेचैनी, कुछ कुछ प्रलाप, पेटमें कतरने या दबाने जैसा दर्द।

सल्फर ३०—प्रसव के बाद यह रोग होना, समस्त अंगोंकी अवशता, कमजोरी और अवसन्नता आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

कल्चीकम, विरेट्रम एल्ब, टेरीबिन्थीना, और मर्क्युरियस डालसिस आदि दवाएँ भी आजमायी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना–आँतोंको पूर्णरूप से विश्राम देना चाहिये। समूचे पेट पर तीसी की पुल्टिस चढ़ाने या सेंक करने से लाभ होता है। कड़ी चीजें खानेको न देना चाहिये। बरफ के टुकडे चूसने को दिये जा सकते हैं। साबूदाना या पानी में पकायी हुई वार्ली खाने को देना चाहिये।

कब्ज़ियत।

(Constipation)

पेटमें मल होने पर भी खुलासा दस्त न होनेको कब्जियत कहते हैं। अनियमित आहार या उपयुक्त आहारका अभाव, ठीक समय पर पाखाने न जाना, आँतोंकी क्रिया में गोलमाल, आलसी स्वभाव, एकान्तवास, देश भ्रमण, यकृतकी खराबी, बारबार जुलाब लेना, अफीम गाँजा आदि मादक पदार्थोंका सेवन, रक्त स्वल्पता आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर कभी दस्त बिलकुल ही नहीं होता, कभी मल सूखकर कड़ा हो जाता है और पाखाने जाने पर बहुत थोड़ा मल निकलता है, कभी बारंबार दस्तका वेग मालूम होता है, पर दस्त नहीं होता अथवा बहुत कम होता है। कुछ दिनों तक यह रोग रहने पर मन निस्तेज हो जाता है, भूख बहुत कम लगती है और पेटमें दर्द आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

कब्जियत होने पर जुलाब ले लेना बहुत आसान बात है, परन्तु होमियोपैथी के आचार्यों ने इसे बहुत ही घातक माना है। अधिक दस्त आना जितना बुरा है, कब्जियत उतनी बुरी नहीं। कब्जियतके रोगी यदि जुलाब ले ले कर अपनी जीवनी शक्ति नष्ट नहीं कर देते, तो दूसरों की अपेक्षा अधिक दिन जीते हैं। इस लिये, इस रोगवालोंको साधारण अवस्था में अधिक चिन्ता न करनी चाहिये। यदि रोग कष्टदायक हो पड़े, तो आहार विहार के नियमों का पालन कर इसे ठीक कर लेना चाहिये। यदि दवाकी ही जरूरत हो, तो ऐसी दवा का सेवन करना चाहिये, जो बिना दस्त लाये ही रोगको ठीक करदे। लक्षणानुसार निम्नलिखित होमियोपैथिक दवाएँ इस रोग में लाभ कर सकती हैं।

चिकित्सा।

नक्सवोमिका ३०या२००—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। अधिक भोजन, अधिक परिश्रम, शराब पीना, रातमें जागना आदि कारणों से यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। बारबार वेग मालूम होना, लेकिन खलासा दस्त न होना, मल कठिन, पेट फूलना,शिरमें दर्द, अच्छी तरह नींद न आना बदहजमी, आँतोंकी क्रिया में गोलमाल, कब्जियत, बवासीर के रोगियों की यह शिकायत इत्यादि में यह दवा व्यवहार की जाती है। ३० क्रमसे लाभ न हो तो २०० क्रम देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—गरमी के दिनो में कब्जियत, वात रोगियों को यह रोग होना, चिड़चिडा स्वभाव, रोगी को हमेशा जाडा मालूम होना, सूखा और कड़ा मल, पारी पारी से कब्जियत और पतले दस्त, बडा और कडा लेंड, बड़े कष्ट से निकलना, दस्तका वेग न होना, प्यास, शिरदर्द, डकार आना, यकृत की खराबी आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ओपियम ६ या ३०—दस्त का नियमित वेग न होना अथवा वेग होने पर भी ऐसे मालूम होना मानो मलद्वार बन्द हो गया है, कभी कभी तलपेट में भार मालूम होना, पाकाशय पर दवाव, मुँह सूखा, प्यास, भूख न लगना, मल कठिन और गुठली जैसा, बारबार जुलाव लेनेके कारण इस रोगका होना इत्यादि।

प्लेटिना १२ या ३०—बारंबार दस्तका वेग मालूम होना, लेकिन कांखने पर बहुत थोड़ा दस्त होना, पतला मल निकलने में भी तकलीफ, सफर के समय या सफर के वाद कब्जियत इत्यादि।

लाइको पोडियम ३०—पेट फूलना, पेटमें वायुसंचय और गड़गड़ाहट, कब्जियत या बड़ी तकलीफ के साथ सूखा

और कड़ा मल निकलना, भोजन के बाद तलपेटका फूलना, पेटमें गरमी मालूम होना, मुंहमें पानी भरना और डकार आना।

सल्फर ३०—स्वाभाविक कब्जियत, कड़ा और चक्का चक्का मल, सदा मल त्याग की इच्छा, पर मलका न निकलना, बदबूदार वायु निकलना, मलत्याग के बाद मलद्वार में जलन, बवासिर के रोगियों की कब्जियत इत्यादि लक्षणों में और नक्सवोमिका के बाद या नक्सवोमिका के साथ पर्यायक्रम में देनेसे इससे लाभ होता है।

प्लम्बम ६ या ३०—गुह्यद्वार में सिकुड़न और दर्द मालूम होना, बड़े कष्टके साथ बकरी की लेंडी जैसा मल निकलना, पेटमें दर्द इत्यादि लक्षणों में और ओपियमसे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—युवकों को यह रोग होना, पारी पारी से कब्जियत और दस्त, कड़ा मल, बड़े कष्टसे मलका निकलना, ऐसा मालूम होना मानो बहुत दस्त होगा लेकिन पाखाने जाने पर पहले वायुका निकलना और बादको थोड़ासा कठिन मल निकलना।

हाइड्रेस्टिस १X—कब्जियतकी यह एक बढ़िया दवा है। सभी तरहकी कब्जियत में इससे लाभ होता है।

नेट्रम सल्फ १X विचूर्ण—खानेकी चीजों में इसे पाँच ग्रेन मिलाकर खानेसे खुलासा दस्त होता है।

फोस्फरस ६ या ३०—खूब लम्बा और पतला लेंड निकलने पर इसे देना चाहिये।

एल्यूमेन ३०—बहुत तेज कब्जियत, बहुत दिनों तक पाखाने का वेग न मालूम होना।

एनाकार्डियम ३ या ६—पाखाने का वेग, लेकिन मल त्यागकी चेष्टा करते ही उसका बन्द हो जाना।

नाइट्रिक एसिड ३—प्रबल सूखी खाँसीके साथ कब्जियत हो तो इसे देना चाहिये।

सीपिया ३०—जरायु दोषवाली अथवा गर्भवती स्त्रियों को यह रोग होना, मलद्वार में दर्द इत्यादि।

सिलिका ३०—ऋतुमती स्त्रियों को कब्जियत, मलका थोड़ा निकलकर फिर मलद्वार में घुस जाना।

इनके अतिरिक्त, एस्कुलस, एमनम्यूर, कल्केरिया कार्ब, कस्टिकम, चेली डोनिअम, केलिन्सोनिया, ग्रेफाइटिस, आयोडियम, मेग्नेशियाम्यूर, मर्क्युरियस, पोडोफिल्लाम, पल्सेटिला, रूटा, रेटानिया, रोबिनिया, सेलिनियम, और विरेट्रम आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करती हैं।

आवश्यक सूचना—पेटमें मल सूख गया हो और दवा खाने पर भी बाहर न निकले तो मलद्वार में ग्लीसरीन की पिचकारी देनेसे मल बाहर निकल जाता है। दस्त चाहे हो या न हो, नियमित समय पर पाखाने जरूर जाना चाहिये। खुली हवामें घूमना, व्यायाम करना, ठढे जलसे स्नान करना, रातको सोते समय और सुबह उठने पर ठंढा पानी पीना आदि लाभदायक है। मास या बहुत बारीक आटेकी रोटी न खाना चाहिये। मोटे आटेकी रोटी खाना, छिलके समेत कच्चे या भुने चने चबाना, अधिक दूध पीना और आम पपीता आदि फल खाना लाभ दायक है।

अतिसार या पतले दस्त।

(Diarrhoea)

बिना फाखे बारबार पतले दस्त होनेको अतिसार या उदरामय कहते हैं। यही रोग जब पुराना हो जाता है तब

हाइड्रेस्टिस १X—कब्जियतकी यह एक बढ़िया दवा है। सभी तरहकी कब्जियत में इससे लाभ होता है।

नेट्रम सल्फ १X विचूर्ण—खानेकी चीजों में इसे पाँच ग्रेन मिलाकर खानेसे खुलासा दस्त होता है।

फोस्फरस ६ या ३०—खूब लम्बा और पतला लेंड निकलने पर इसे देना चाहिये।

एल्यूमेन ३०—बहुत तेज कब्जियत, बहुत दिनों तक पाखाने का बेग न मालूम होना।

एनाकार्डियम ३ या ६—पाखाने का वेग, लेकिन मल त्यागकी चेष्टा करते ही उसका बन्द हो जाना।

नाइट्रिक एसिड ३—प्रबल सूखी खाँसीके साथ कब्जियत हो तो इसे देना चाहिये।

सीपिया ३०—जरायु दोषवाली अथवा गर्भवती स्त्रियों को यह रोग होना, मलद्वार में दर्द इत्यादि।

चिकित्सा

एकोनाइट ३ या ६—सरदी लगने या बहुत गरमी के बाद ठंढ लगने के कारण यह रोग होना, पेटमें बहुत दर्द, हरे रङ्गके पतले दस्त, बेचैनी, शिरमें चक्कर, प्यास, जाड़ा मालूम होना, ज्वर भाव, हैजेके समय बीमारी के डरसे अथवा किसी भी कारण से डरजाने पर यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

स्पिरिट कैम्फर —जाड़ा, कम्प, पाकस्थली में दर्द, हाथ पर और चेहरा ठंढा, गरमी के दिनों में अथवा सरदी लगने के कारण यह रोग होना, किसी भी कारण से अचानक दस्तों का शुरू हो जाना।

किनिनमआर्स ६X—साधारण अतिसार की यह एक बढ़िया दवा है।

एपिस ३ या ६—रोज सुबह दस्त, बिना दर्दके हरे आमां लिये पीले रंगके दस्त।

संग्रहणी कहलाता है। गरमी के दिनोंमें बहुत गरमी और जाडेके दिनोंमें बहुत जाडा लगना, उपवास, शारीरिक या मानसिक परिश्रम, खराब, सडी गली या दुष्पाच्य चीजोंका खाना, खराब पानी पीना, कच्चे फल मूल या नया अन्न खाना, रातमें जागना, आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। बच्चोंको दॉत निकलने के समय भी यह रोग होता है। पाचन क्रिया की गडबडी, गण्डमाला धातु, पेटमें कृमि होना, आंतमें जख्म, यकृत की खराबी, खूनका खराब हो जाना इत्यादि कारणों से भी यह रोग हो सकता है।

रोग शुरू होने पर पहले साधारण दस्त होते हैं। फिर धीरे धीरे पतले दस्त होने लगते हैं और उनमें कफ या ऑव जैसा पदार्थ अथवा खायी हुई चीजें ज्योंकी त्यों मिली हुई दिखायी देती है। दस्तोंका रङ्ग कभी सफेद, कभी हरा, कभी पीला, कभी मटमैला और कभी कोई दूसरा ही रहता है। पेट फूलना, पेटमें गड़गड़ाहट, कभी भूख न लगना, कभी अधिक भूख, साधारण बुखार, पसीना और कमजोरी आदि लक्षण भी दिखायी देते हैं। पेटमें दर्द प्रायः नहीं होता। रोग बढने पर मूर्च्छा, कै, शिरमें चक्कर, हाथ पैरमें अकडन और हैजेकी तरह हिमाङ्गावस्था आदि लक्षण भी उपस्थित होते हैं। दस्त होते होते रोगी कमजोर हो जाता है और खाटसे लग जाता है। कभी कभी यह रोग हैजेके रूपमें भी परिणत हो जाता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—गरमीके दिनों में या ठढा पानी पीनेके कारण यह रोग होना, बैठने पर मिचली या वेहोशी दस्त में वदवू, मटमैले रगका मल, बहुत प्यास, चलने फिरने से आराम मालूम होना।

क्रोटन ६ या ३०—पतले पानी जैसे हरे या पीले रङ्गके दस्त, कुछ खाने या पीने पर रोगका बढ़ना, पिचकारी की तरह जोरके साथ मलका निकलना।

नक्सवोमिका ३ या ६—मैले, हरे या काले रङ्गके दस्त, सुवह या पिछली रातमें दस्तोंका वढना, वारवार वेग होने पर भी खुलासा दस्त न होना, रात्रि जागरण, खान पान का अत्याचार और शराव खोरी आदिके कारण यह रोग होना।

एलोज ६ या ३०—अनजान में दस्त, पेशाव या वायु निकलते समय अनजान में मलका निकल पडना, सुवह और खानेके वाद रोगका वढना, मलके साथ गरम वायुका निकलना, पीले रङ्गके दस्त, पेटमें वोतल से पानी ढालने की तरह कलकल आवाज इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

इपीकाक ३ या ६—बदबूदार या खून मिला दस्त, गरमी के दिनों में दर्दके साथ अतिसार, कै या मिचली, बच्चो के हरे या पीले रंगके दस्त, के के साथ दस्त।

चायना ६ या ३०—भोजन के बाद रात में या सुबह अजीर्ण दस्त, मलमे कुछ लाली, कमजोरी, प्यास, अरुचि, वारंवार पानी जैसे दस्त और पेटमें ऐंठन, फल खाने के कारण यह रोग होना इत्यादि। पतले दस्तका बड़े जोर से निकलना इस दवा का प्रधान लक्षण है।

डाल्केमारा ६—ठंढी और तर हवा लगने या सरदी के कारण यह रोग होना, तीसरे पहर पेट फूलने के साथ दस्त, रातमें पित्त मिला दस्त, कई रंग मिला दस्त, मलद्वार में जलन, वर्षा में यह रोग होना।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—पित्त, आँव या खून मिला दस्त, दस्तके पहले पेटमें दर्द, कीचड़ जैसा या पीले रंगका दस्त, वारवार पतले दस्त, आगे की ओर झुक जाने पर आराम मालूम होना, पेट खाली होने पर भी अधिक न खा सकना।

होना, बिना दर्द के दस्त, क्षय रोगी को यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में और चायना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ३ या ६—पुरानी बीमारी, बिना दर्द के दस्त, हरे रंगके आँव मिले या गलायी हुई चरबी जैसे पतले दस्त, दस्तमें खायी हुई चीजें दिखायी देना, मासके धोवन जैसे दस्त, मलद्वार का खुल जाना, मलमें खट्टी गन्ध, इत्यादि लक्षणों में और पुरानी बीमारी तथाकमजोरी में इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—वारंवार दस्तका रंग ढंग बदल जाना, मुँहका स्वाद तीता, कै या मिचली,डकार आना, तेल या घी की पकी हुई चीजें खाने के कारण यह रोग होना, पेटमें वायुसंचय, आँव या श्लेष्मा मिला दस्त रातमें रोग लक्षणोंका बढ़ना।

रिथुम ३ या ६—बच्चों को दाँत निकलते समय यह रोग होना, रोगीके मल और शरीरमें खट्टी गन्ध, पेटमें शूल, मल त्यागकी व्यर्थ चेष्टा इत्यादि।

थूजा ६ या ३०—पीले रंगके पानी जैसे पतले रक्त मिले चरबी या तेल जैसा दस्त, गड़गड़ाहटके

आर्सेनिक ६ या ३०—बरफ, बहुत ठंढी चीज या फल मूल खानेके कारण यह रोग होना, कालापन लिये हुए हरे रंगके दस्त, पेटमें दर्द और जलन, चेहरा और आंखोंका बैठ जाना, बहुत कमजोरी, अस्थिरता, प्यास, थोड़ा थोड़ा पानी पीना, शरीर में दाह, पानी पीनेके बाद कै, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—हरे या पीले रंगके दस्त, मलमें सड़े अण्डेकी गन्ध, बच्चोंको दाँत निकलने के समय पतले दस्त, बच्चोंका चिड़चिडा स्वभाव, गोदीमें चढ़कर घूमने की इच्छा, सदा रोना, पेटमें दर्द, पेट फूलना इत्यादि।

सिना ३० या २००—कृमिके कारण पतले दस्त, आँव मिले सफेद दस्त, नाक और मल द्वार में खुजली, दाँत किड़मिड़ाना, नींदसे चौंकना इत्यादि।

कोलोसिन्थ ३ या ६—पतले दस्तों के साथ पेट में बहुत पेंठन और कतरने जैसा दर्द, पेट को दबाने या पकड रखने से आराम, दर्द के कारण रोगी का छटपटाना इत्यादि।

फेरम मेट १२ या ३०—दस्त में खायी हुई चीजों के कण दिखायी देना, पुरानी बीमारी, शरीर फूला फूला मालुम

एन्टिम क्रूड ६–जीभ पर सफेद लेप, डकार आना मिचली, अरुचि, पानी जैसा पतला दस्त, पित्त मिला मल।

जिञ्जिबार ६–खराब पानी पीनेके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस कर ३ या ६–खून या पित्त मिला दस्त, पेटमें दर्द, आँव मिले दस्तके साथ काँखना, दस्त हो जाने पर भी काँखना बन्द न होना, मिट्टी जैसा या पीला दस्त सुस्ती।

विरेट्रम एल्बम ६ या ३०–पानी जैसा या चावलके धोवन जैसा अधिक दस्त, आवाजके साथ या बड़ी तेजी से मलका निकलना, अनजान में दस्त, पेट और पैरों में ऐंठन, कपाल पर ठढा पसीना, तेज प्यास, समूचा शरीर ठढा, शीघ्रता पूर्वक बढनेवाली अवसन्नता।

एसिडफास ३X या ६—विना दर्दका पतला दस्त, अनजान में दस्त, दस्तके बाद सुस्ती और कमजोरी मालूम होना।

सल्फर ६ या ३०—पीले या मैले रंगका विना दर्दका दस्त, अजीर्ण का दस्त, सुबह रोगका चढ़ना पुरानी, बीमारी, मलद्वार में जख्म, दस्तके वेगसे रोगीकी नींदका खुल जाना और उसी समय उसका पाखाने की ओर दौड़ना इत्यादि।

अपाच्य चीजें खाने के कारण अतिसार होने पर—पल्सेटिला, नक्सवोमिका और इपीकाक।

फल या खट्टी चीजें खानेके कारण—आर्सेनिक, कोलोसिन्थ, चायना।

गरमी के दिनोंमें—विरेट्रम, चायना, आर्सेनिक, आयरिस, एसिड फस, कल्चोकम, पोडोफिल्लाम, पल्सेटिला, ब्रायोनिया।

वर्षाके दिनोंमें—डाल्केमारा, रसटक्स।

जाड़ेके दिनोंमें—स्पिरिट कैम्फर, एकोनाइट, ब्रायोनिया।

स्त्रियोंको गर्भावस्था में—एन्टिम टार्ट, लाइकोपोडियम, एन्टिमक्रूड, चायना।

बच्चों को दाँत निकलने के समय—केमोमिला, कल्केरिया कार्ब, मर्क्युरियस, कोलोसिन्थ, पोडोफिल्लाम, बेलेडोना, सल्फर आर्सेनिक।

खराब पानी पीनेके कारण—केमोमिला, आर्सेनिक, बेप्टीशिया, जिञ्जिबार।

बालकों को यह रोग होनेपर—केमोमिला, कल्केरिया कार्ब, सोरिनम।

खून मिले दस्त होने पर–मर्क्युरियस सल या मर्क्युरियस कर, इपीकाक।

पित्तमिले दस्त होने पर–पोडोफिल्लाम, आइरिस, क्रोटन।

आवश्यक सूचना–तेज बीमारी में हरबार दस्तके बाद या अवस्थानुसार एकसे लेकर तीन से चार घंटे का अन्तर देकर दवा देनी चाहिये। पुरानी बीमारी में रोज एक या दो बार दवा देना काफी है। रोगी को स्थिर सुला रखना चाहिये नींद आजाय तो बढिया है। अधिक पानी पोना, गरम चीजें खाना या पीना, घी तेलकी पकी चीजें और साग सब्जी आदि खाना मना है। पथ्य पर बहुत ध्यान रखना चाहिये दूध न देना ही अच्छा है। रोगी बहुत ही कमजोर हो जाय तो बकरी का थोडा सा दूध दिया जा सकता है। नयी बीमारी में जब पानी जैसे दस्त होते हों तब कुछ भी खाने को न देना चाहिये मल गाढा पडने पर पहले आरारोट और बार्ली बादको पुराने चावल का भात आदि दिया जा सकता है।

आँव या खूनी आँव।

(Dysentery)

सरदी या ठंढ लगना, सड़ी, बासी या कच्ची चीजें खाना, एक तरह के जीवाणुका पेटमें जाना आदि कारणो से यह रोग होता है। बच्चों को दाँत निकलते समय भी यह रोग होते देखा गया है। गरम देशों में खासकर जब दिन में गरमी और रातमें सरदी होती है, तब यह रोग अधिक होता है।

पेटमें दर्द और ऐंठन, दस्तके समय काँखना, और मलमें आँव या खून मिला रहना इस रोगका प्रधान लक्षण है। अनेक बार पहले साधारण दस्त आते हैं। बादको यह बीमारी हो जाती है। साधारण बीमारी में बुखार नहीं आता और रोगी बहुत कमजोर नहीं होता। तेज बीमारी में बुखार, कमजोरी, शिर दर्द, कै या मिचली, पेटमें बहुत दर्द, नाभीके चारों ओर मरोंचन या ऐंठन, बहुत काँखने पर थोड़ा सा दस्त होना, बारबार पेशावका का वेग लेकिन बहुत थोड़ा पेशाब होना इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। दस्त में खून या आँवका हिस्सा घटते जाना शुभ लक्षण है। बीमारी बढजाने पर मल में बदबू पीव या मछली के धोवन जैसे दस्त और विकार लक्षण प्रकट होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। पुराने रोगी भी अच्छे होते है लेकिन कमजोरी, नाड़ी तेज और बहुत क्षीण, चेहरा और आँखें बैठ

जाना पेट फूलना, तेज बुखार, हिचकी, ठंढा पसीना, शोथ, खूनी दस्त और प्रलाप आदि बुरे लक्षण माने जाते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—आँव और खून मिले दस्त लेकिन खूनका अंश अधिक, बहुत बुखार, अस्थिरता, प्यास इत्यादि। रोगकी प्रारम्भिक अवस्था में तेज बुखार होनेपर तथा जिस समय दिनमें गरमी रात में सरदी रहती हो उस समय यह रोग होने पर इसे ही देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—रोगकी प्रथमावस्था में और बच्चे की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। आँव और खून मिले हरे रंगके दस्त, दस्तके समय और दस्तके बाद पेटमें दर्द, साँस रोक कर काँपने पर आराम मालूम होना, बुखार, प्यास, मलद्वार में जलन, बेहोशी, पेशाव में तकलीफ इत्यादि लक्षणों में और एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस कर ३ या ६—यह इस रोगकी एक प्रधान दवा है। नाभीके चारों ओर खरोंचन, पेटमें दर्द और काँखना, बारंबार थोड़ी-थोड़ी, आँव, लाल रंगका ताजा खून और आँव मिला दस्त, बुखार, मूत्रस्थली और गुह्यद्वार में जलन,

पेशाव करते समय जोर लगाना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। मल में खूनका भाग अधिक होने पर मर्क्युरियस कर और खूनका भाग कम होने पर मर्क्युरियस सल देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ३ या ६—काले और हरे रंगके आँव और खून मिले दस्त, मलमें खूनका अंश अधिक न होना, दस्तके पहले पेटमें दर्द काटने और दस्त होजाने पर भी दर्दका पूर्ण रूपसे आराम न होना, जब तब पेटमें शूल जैसा दर्द इत्यादि लक्षणों में और केवल आँव मिले दस्तों में इससे अधिक लाभ होता है।

कोलोसिन्थ ३ या ६—पेटको कसकर पकड़ने जैसा या नाभी के चारों ओर भयंकर असह्य दर्द, साधारण खून और आँव मिले दस्त, मल त्यागके समय पेशाव के द्वार में जलन, दस्त होजाने पर दर्द का कुछ कम हो जाना, पेट पकड़ने या दबाने पर आराम मालूम होना इत्यादि। मर्क्युरियस कर या मर्क्युरियस सलके साथ यह दवा पर्यायक्रम में भी दी जाती है।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत तेज बीमारी में और रोगी कमजोर हो जाने पर इसे देना चाहिये।

एलोज ३, ६ या ३०—नाभीके पास दर्द, पेटमें गड़-गड़ाहट, आँव और खून मिले तथा अतिसार जैसे दस्त, पेशाब करते समय पाखाने का वेग, मलत्याग में जलन, शूल जैसा दर्द, सुबह अधिक दस्त होना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—दस्तके पहले या दस्तके समय बहुत काँखना, लेकिन दस्त होजाने पर काँखने आदि तकलीफों का कम हो जाना, खूनके साथ गाँठ गाँठ आँवका निकलना, बारबार दस्त होने पर भी पेटका साफ न होना, थोड़ी थोड़ी तादाद में दस्त होना।

पोडोफिल्लाम ६ या ३०—मलमें खून लिपटा हुआ या आँव मिले दस्त में खूनकी लकीर दिखायी देना, बहुत काँखना पेटमें शूल वेदना, काँचका बाहर निकलना, मिचली हरी आँव या खून मिले दस्त, बच्चोंकी बीमारी।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—सफेद या पीली आभा लिये हुए अथवा हरे रंगके दस्त, शिरमें पसीना, मलद्वार मे तकलीफ, पैर बरफ जैसे ठंढे, गण्डमाला धातु।

इपीकाक ६ या ३०—घास जैसे हरे रंगके या काली आभा लिये लाल रंगके फेन भरे दस्त, पेटमें दर्द, काँखना,

पहले फेन भरे बदबूदार खूनी दस्त, बादको खून मिली आँव निकलना, लगातार कै या मिचली, बहुत ग्लानि, कच्चे फल या खट्टी चीजें खानेके कारण यह रोग होना।

एसिड नाइट्रिक ६—पुरानी बीमारी, हरे या खून और आँव मिले दस्त, दस्तमें सड़ी गन्ध, मलत्याग के समय काँखना और मल त्यागके बाद कमजोरी मालूम होना, उपदंश (गरमी) और पारेके दोषसे यह रोग होना इत्यादि।

आर्निका ३ या ६—दस्तमें लाल रंगका बहुत खून निकलना और काँखना।

केप्सीकम ६ या ३०—खून मिले दस्त अथवा आँव मिले दस्त, में काले खूनके छींटे दिखायी देना, मलत्याग के बाद बहुत काँखना, मलद्वार में जलन, एक साथही मलमूत्र का वेग इत्यादि। वर्षा के दिनों में अथवा जो लोग बहुत लाल मिर्च खाते हैं, उन्हें यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कल्चीकम ३ या ६—पेटमें दर्द और काँखना, केवल सफेद आँव मिले दस्त, मिचली पेटमें दर्द होनेके कारण पैर मोड़े रहना, भोजन में अरुचि, भोजन की गन्धसे जी मिच-

लाना इत्यादि लक्षणों में और मर्क्युरियस सलसे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—अनजान में वद्‌वूदार दस्त, पेट फूलना, पेटके अन्दर जलन, मलत्याग के समय वायुका निकलना, समूचा शरीर ठढा, नाडी कमजोर और अनियमित इत्यादि लक्षणों में और बीमारी बहुत तेज होने पर या रोगी खाट से लग जाने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—सफेद ऑव मिले और खूनकी रेखा युक्त दस्त, दस्तोंका रूपरंग हमेशा बदलते रहना, मुँह बे स्वाद, तीसरे पहर या शामको दस्तोंका बढ़ना इत्यादि। सफेद ऑवकी यह बढ़िया दवा है।

रसटक्स ६ या ३०—रातमें अधिक दस्त, अनजान में दस्त, लाल या मांसके धोवन जैसे दस्त, कमजोरी, प्यास, बेचैनी, रोग कठिन होकर सन्निपातिक अवस्था का उपस्थित होना इत्यादि।

सल्फर ३०—पुरानी बीमारी में अथवा जब किसी चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होता हो तब इसे देनेके बाद वह दवा देनेसे अधिक लाभ होता है।



बीमारी में वार्ली आरारोट, बकरी का दूध आदि चीजें चाहिये। बुखार होनेपर दूध देना मना है। कसेरू, सिंघाडा, मठा, भूना हुआ बेल, अनारका रस, भातका आदि चीजें सुपथ्य है। खाने पीने में बहुत सावधान र चाहिये। इनमें अत्याचार करने से यह रोग बढ जाता

बवासीर।

(piles)

सदा बैठकर काम करना, घी तेलकी पकी या मसालेदा चीजें खाना, कब्जियतके कारण दस्तके समय जोरसे कांख बारबार, जुलाब लेना, कामोत्तेजना, घोड़ेकी सवारी शर खोरी, रात्रि जागरण, पेटमें अधिक वायु सञ्चय, गर्भावस्था में कसकर कपड़े पहनना, यकृत की खराबी, ठंढे पत्थ भीगीघास या खूब मुलायम चीजपर बराबर बैठे रहना आ कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर मलद्वार भीतर और बाहर की नसें फूल जाती है और चमड़ा सख तथा कुञ्चित होकर मसे पैदा हो जाते हैं। यह देखने अगूर जैसे होते हैं। कभी यह मलद्वारके अन्दर होते हैं औ कभी बाहर। इन मसोंमें खुजली, दप दप, वेदना, तनाव औ जलन होती है। कभी कभी कांटा चुभने जैसा दर्द और जलन कांखना, कमर में दर्द आदि लक्षण प्रकट होते हैं। मलत्याग करते समय बड़ी तकलीफ और कभी कभी रक्तस्राव होताहै

वेप्टीशिया ३X—रोगीका बहुत सुस्त हो जाना,विकार या सन्निपातिक लक्षण।

एलस्टोनिया १X या ३X—मैलेरिया बुखार के साथ यह रोग होना, खूनकी कमी इत्यादि।

ट्रम्बिडियम ६ या ३०—खाने पीनेके बाद पेटमें ओर का दर्द, कॉखने से दर्दका बढ़ना,रवड़ के रंगके पतले खून मिले दस्त, साथही कॉखना इत्यादि लक्षणों में और मक्युरियस सलके बाद इससे विशेष लाभ होता है।

हेमामेलिस ३X—गाढ़े या कालिमा युक्त खूनके साथ बहुत मल निकलता हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त फेरमफस, थेम्बिडियम, प्लम्बम, आर्जेन्टम नाइट, एपिस, एल्युमेन, चायना, ब्रायोनिया,हाइड्रेस्टिस, लेकेसिस, विरेट्रम एल्बम और ज़िङ्कम आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—तलपेट में फ्लानेल लपेट रखना अच्छा है। मलद्वार में तकलीफ हो तो नमक या चोकर की पोटली अथवा फ्लानेल से सेकना चाहिये। रोगी कम ओर हो तो उसे बिछौने पर ही पाखाना फिरवाना चाहिये। नर्या

बीमारी में बार्ली आरारोट, बकरी का दूध आदि चीजें देनी चाहिये। बुखार होनेपर दूध देना मना है। कसेरू, कच्चा सिंघाड़ा, मठा, भूना हुआ बेल, अनारका रस, भातका माड़ आदि चीजें सुपथ्य है। खाने पीने में बहुत सावधान रहना चाहिये। इसमें अत्याचार करने से यह रोग बढ़ जाता है।

बवासीर।

(piles)

सदा बैठकर काम करना, घी तेलकी पकी या मसालेवाली चीजें खाना, कब्जियतके कारण दस्तके समय जोरसे कांखना, बारबार, जुलाब लेना, कामोत्तेजना, घोड़ेकी सवारी शराब खोरी, रात्रि जागरण, पेटमें अधिक वायु सञ्चय, गर्भावस्था में कसकर कपड़े पहनना, यकृत की खराबी, ठंढे पत्थर, भीगीघास या खूब मुलायम चीजपर बराबर बैठे रहना आदि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर मलद्वारके भीतर और बाहर की नसें फूल जाती है और चमड़ा सख्त तथा कुञ्चित होकर मसे पैदा हो जाते है। यह देखने में अंगूर जैसे होते है। कभी यह मलद्वारके अन्दर होते हैं और कभी बाहर। इन मस्सोंमें खुजली, दप दप, वेदना, तनाव और जलन होती है। कभी कभी कांटा चुभने जैसा दर्द और जलन, कांखना, कमर में दर्द आदि लक्षण प्रकट होते है। मलत्याग करते समय बड़ी तकलीफ और कभी कभी रक्तस्राव होताहै।

वेप्टीशिया ३X—रोगीका बहुत सुस्त हो जाना, विकार या सन्निपातिक लक्षण।

एल्सटोनिया १X या ३X—मेलेरिया बुखार के साथ यह रोग होना, खूनकी कमी इत्यादि।

ट्रम्बिडियम ६ या ३०—खाने पीनेके बाद पेटमें जोरों का दर्द, कॉखने से दर्दका बढ़ना, रबड़ के रंगके पतले खून मिले दस्त, साथही कॉखना इत्यादि लक्षणों में और मर्क्युरियस सलके बाद इससे विशेष लाभ होता है।

हेपामेलिस ३X—गाढ़े या कालिमा युक्त खूनके साथ बहुत मल निकलता हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त फेरमफस, थेम्बिडियम, प्लम्बम, आर्जेन्टम नाइट, एपिस, एल्युमेन, चायना, ब्रायोनिया, हाइड्रेस्टिस, लेकेसिस, विरेट्रम एल्बम और ज़िङ्कम आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—तलपेट मे फ्लानेल लपेट रखना अच्छा है। मलद्वार में तकलीफ हो तो नमक या चोकर की पोटली अथवा फ्लानेल से सेकना चाहिये। रोगी कम जोर हो तो उसे बिछौने पर ही पाखाना फिरवाना चाहिये। नयी

गाना, भोजन के बाद और पिछली रातसे लेकर सुबह तक कलीफ का बढ़ना, कभी खून निकलना, कभी न निकलना, लद्वार में सुई चुभोने जैसा दर्द इत्यादि। इसके साथ पर्याय ममें सल्फर देनेसे अधिक लाभ होता है।

सल्फर ३०—पुरानी बीमारी, बहुत कब्जियत, मलद्वार में जलन और खुजली, बारंबार मलत्यागकी इच्छा, पर दस्त न होना, मलमें कभी कभी खून दिखायी देना। सुबह सल्फर और शामको नक्सवोमिका—इन दवाओं से अनेक रोगियों को असीम लाभ हुआ है।

आर्सेनिक ३X या ६—पीठ में जोरका दर्द, मसे का बाहर निकलना, कमजोरी या सुस्ती, गरमी मालूम होना, ऐसा मालूम होना मानों मसे के भीतर से गरम सुई निकल रही है, रक्तस्राव, अतिसार इत्यादि। आर्सेनिक से लाभ न होने पर हेमामेलिस देना चाहिये।

एकोनाइट ६ या ३०—मलद्वारमें सुई चुभो ने जैसा दर्द और रक्तस्राव, मसे में भयकर तबाहट, अस्थिरता, प्यास, भूख न लगना, बुखार इत्यादि।

मसोसे खून निकलने पर खूनी ववासीर और खून न निकलने पर वादी ववासीर कहलाती है। इस रोगका इलाज करते समय पहले ऐसो दवाए देना चाहिये जिससे रोगी की तखलीफ घट जाय। इसके वाद रोगको निमू‍ल करनेकी चेष्टा करनी चहिये।

चिकित्सा।

इस्क्युलस ३ या ६—कमरमें तन्नाहट और पेट में दप दप वेदना मलद्वार में ऐसा मालूम होना मानो कोई धारदार काटी अटकी हुई है, मलद्वार में जलन और दर्द थोडा थोडा निकलना इत्यादि। इसके मदर टिञ्चर को घी या सिम्पल आइन्टमेन्ट में मिलाकर मलद्वार में लगाने से तकलीफ घट जाती है।

हेमामेलिस १X–खूनी ववासीर, काला काला बहुतसा खून निकलना, खून निकलने के कारण वहुत कमजोर हो जाना, मसे में दपदपी, ऐसा मालूम होना मानों मसा फट जायगा, कब्जियत इत्यादि।

नक्सवोमिका १X या ३०–आलसी और शराबियों की बीमारी, कब्जियत, दस्तका वेग होने पर भी दस्तका न होना, कभी कभी पतले दस्त, दस्तके समय मसेका बाहर निकल

कोलिन्सोनिया ६—कब्जियत के साथ बवासीर, स्त्रियों का गर्भावस्था में बवासीर की शिकायत, बवासीर से खून निकलना और दर्द।

रेटानहिया ३ या ६—दस्तके बाद बहुत देर तक मलद्वार में जलन, पुरानी बीमारी, कब्जियत, बवासीर से काले रंग का थक्का थक्का खून निकलना, शाम के वक्त दस्त, रात में तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

एल्युमिना ६ या ३०—बहुत कब्जियत, बिना कॉखे पतले मल का भी बाहर न निकलना, मलद्वार से जमे हुए खून की गॉठ निकलना, पहले कठिन मल, बादको पतला मल और खून निकलना, मलद्वार में दर्द और खुजली।

आर्निका ६ या ३०—घोड़े की सवारी के कारण यह रोग होना, मल पतला और फीते की तरह।

बेलेडोना ६ या ३०—बहुत प्रदाह, रक्तस्राव और दर्द, लाल रंगका थोड़ा पेशाब, शिर में रक्ताधिक्य।

हाइड्रेस्टिस १X—कब्जियत और रक्तस्राव, उसके कारण कमजोरी, शिरमें दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एलोज ३ या ६—ऐसा मालूम होना मानो मलद्वार नीचे को सरका जाता है, मसे में जलन, टपटपी, गर्मी मालूम होना और तन्नाहट, भगन्दर, रक्तस्राव, पेट फूलना, पतले दस्त, वायु निकलना, कॉपने पर काले रंग का खून निकलना इत्यादि।

मिलिफोलियम ३X—बहुत अधिक खून निकलना और मसे में दर्द।

लाइकोपोडियम ३०—कब्जियत, पेटमें वायुसञ्चय और रक्तस्राव होने पर इसे देना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ६—गाँठ गाँठ जैसा बहुत बड़ा लेंड निकलते समय बहुत तकलीफ इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—मसा देखने में प्याज की तरह या मसे का बाहर निकल कर मलद्वार में डाटकी तरह बैठ जाना। इससे लाभ न हो तो सीपिया ३० देना चाहिये।

कोलिन्सोनिया ६—कब्जियत के साथ बवासीर, स्त्रियों का गर्भावस्था में बवासीर की शिकायत, बवासीर से खून निकलना और दर्द।

रेटानहिया ३ या ६—दस्तके बाद बहुत देर तक मलद्वार में जलन, पुरानी बीमारी, कब्जियत, बवासीर से काले रंग का थक्का थक्का खून निकलना, शाम के वक्त दस्त, रात में तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

एल्युमिना ६ या ३०—बहुत कब्जियत, बिना कांखे पतले मल का भी बाहर न निकलना, मलद्वार से और हुए खून की गाँठ निकलना, पहले कठिन मल, बादको पतला मल और खून निकलना, मलद्वार में सुई और खुजली।

आर्निका ६ या ३०—घोड़े की सवारी के कारण यह रोग होना, मल पतला और फीते की तरह।

बेलेडोना ६ या ३०—बहुत प्रदाह, रक्तस्राव और दर्द, लाल रंगका थोड़ा पेशाब, शिर में रक्ताधिक्य।

कार्बोवेज ६ या ३०—मलद्वार से गोंद की तरह चिकना पदार्थ निकलना, उसके कारण जलन, वदहजमी, पेट का फूलना, नाक से रक्तस्राव, कमजोरी-इत्यादि।

कस्टिकम ६ या ३०—वहुत कब्जियत, चेष्टा करने पर भी दस्त का न होना, भगन्दर, मसा फूला हुआ और उसमें जलन।

इरिजिरन ३ या ६—खूनी ववासीर, मलद्वार के चारों ओर वहुत जलन, मल कठिन और रक्त मिश्रित।

इग्नेशिया ६ या ३०—मल त्याग के एक या दो घंटे वाद मलद्वार में ऐंठन, वहुत काँखना, काँच निकलना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—वैगनी रंग का मसा, मसेके कारण मलद्वार में डाट सी लग जाना, खाँसने या छींकने पर मलद्वार में दर्द।

मर्क्युरियस ६ या ३०—वडा मसा और उससे रक्तस्राव होना, मसे का पक जाना, पेशाव के वाद मूत्र-स्थली से रक्तस्राव।

सरल होमियोपैथिक चिकित्सा

फोस्फरस ६ या ३०—मल त्याग के समय धार बाँध कर खून का निकलना, मलद्वार में जख्म, उससे खून और पीव निकलना।

खूनी बवासीर में—एकोनाइट, सल्फर, हेमामेलिस, इस्क्युलस, एलोज, चायना।

बादी बवासीर—एकोनाइट, केप्सीकम, नक्सवोमिका, सल्फर।

पुरानी बीमारी में—सल्फर, आर्सेनिक, फेरम, नाइट्रिक एसिड, हिपर सल्फर,।

कब्जियत के कारण—इस्क्युलस, नक्सवोमिका, सल्फर, कोलिन्सोनिया, कार्बोवेज।

बवासीर से आव निकलने पर—मर्क्युरियस, एकोनाइट

रोगी बहुत कमजोर होजाने पर—आर्सनिक, फेरम, कार्बोवेज, एसिडफस या चायना।

कार्बोवेज ६ या ३०—मलद्वार से गोंद की तरह चिकना पदार्थ निकलना, उसके कारण जलन, बदहजमी, पेट का फूलना, नाक से रक्तस्राव, कमजोरी इत्यादि।

कस्टिकम ६ या ३०—बहुत कब्जियत, चेष्टा करने पर भी दस्त का न होना, भगन्दर, मसा फूला हुआ और उसमें जलन।

इग्निशिया ३ या ६—खूनी बवासीर, मलद्वार के चारों ओर बहुत जलन, मल कठिन और रक्त मिश्रित।

इग्नेशिया ६ या ३०—मल त्याग के एक या दो घंटे बाद मलद्वार में ऐंठन, बहुत काँखना, काँच निकलना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—बैंगनी रंग का मसा, मसेके कारण मलद्वार में डाट सी लग जाना, खाँसने या छींकने पर मलद्वार में दर्द।

मर्क्युरियस ६ या ३०—बड़ा मसा और उससे रक्तस्राव होना, मसे का पक जाना, पेशाब के बाद मूत्र-स्थली से रक्तस्राव।

में उसका शरीर रोगी हो जाता है। किसी किसी का शरीर ऐसा होता है, कि खान पान दूषित होने पर भी उसे यह रोग नहीं होता।

कृमि कई तरह के होते हैं, जिनमें तीन तरह के प्रधान माने जाते हैं (१) सूत जैसे कृमि (Small thread worms) इनकी लम्बाई चौथाई इञ्चसे लेकर एक इञ्च तक होती है। देखने में सूतके टुकड़े जैसे होते हैं। यह मलद्वार के पास दल बाँध कर रहते हैं। यह कभी कभी पुरुषों की मूत्र नाभी और स्त्रियों के योनिमार्ग में चले जाते हैं, इसलिये वहा जलन और खुजली होती है तथा धातु निकलता है (२) केंचुए की तरह लम्बे कृमि (Long round worms)—यह केंचुए की तरह ६ से लेकर छोटी आत में रहते है। यह १२ इञ्च तक लम्बे, गोल और सफेद रंग के होते हैं और यह पाकस्थली के मार्ग से कै के साथ कभी कभी मुंह से और कभी कभी मल के साथ बाहर निकलते है (३) फीते की तरह लम्बे कृमि (Tape worms)—यह सफेद, चिपटे, गाँठ गाँठ जैसे और १० फीट से लेकर २०० फीट तक लम्बे होते हैं। यह कृमि मनुष्य के शरीर में एक से अधिक नहीं रहता और मलके साथ इसका थोड़ा थोड़ा अश निकलता रहता है। हमारे देश में यह कृमि नहीं पाया जाता।

आवश्यक सूचना-बहुत दर्द हो तो गरम पानी या पाटली से सेंकना चाहिये। खुजली होने पर वेसलिन में सुहागे का चूरा मिलाकर लगाना चाहिये। बहुत जलन और तकलीफ होने पर इस्क्युलस का मलहम व्यवहार करना चाहिये। बहुत खून बहता हो तो एक छटाँक पानी में १५ बूँद हेमामेलिस मदरटिंचर मिलाकर उसकी पट्टी चढ़ाना चाहिये। सभी तरह के उत्तेजक और गरम पदार्थ मांस, लाल-मिर्च, गरम मसाला, आदि खाना मना है । पपीता, अमरूद, आम, नारंगी, दूध, मक्खन आदि चीजें सुपथ्य हैं। भिगोया हुआ कच्चा चना खाने से कब्जियत दूर होती है। दही के साथ सरसों या तीसी की पुल्टिस तैयार कर दिन में चार पाँच बार गरम गरम मलद्वार में चढ़ाने से तकलीफ बहुत कम हो जाती है। कुरसी पर बैठ कर गरम पानी का वफारा लेना भी लाभदायक है। घोड़े की सवारी, मल-मूत्र का वेग रोकना, इन्द्रिय, सेवा बहुत अधिक या बहुत कम परिश्रम करना, और बहुत मुलायम बिछौने में सोना हानिकारक है।

कृमि (Worms)

मनुष्य के पेट में थोड़े बहुत कृमि सदा ही मौजूद रहते हैं, लेकिन किसी किसी के शरीर में खान पान के दोष से इनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है और उस अवस्था

चिकित्सा ।

छोटे कृमि में एकोनाइट, टयुक्रियम, साइना, सेन्टोनाइन, और सल्फर, केचुआ जैसे कृमि में चायना, साइना, सेन्टोनाइन, फेरम, कल्केरिया, इग्नेशिया, टयुक्रियम, मर्क्युरियस, नक्स-वोमिका और सल्फर तथा फीता जाति के कृमि में कल्केरिया, ग्रेफाइटिस, प्लेटिना, पल्स, सेबाडिला, फिलिक्समस, क्युप्रम एसेट, स्टेनम, साइना, कस्, नक्सवोमिका नेट्रमम्यूर और सल्फर आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६—कृमि के कारण बुखार, अस्थिरता, पेट में दर्द, मुँह में पानी भर आना, अनिद्रा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एपोसाइनम ३ या ६—बहुत मिचली और के, गुह्याङ्ग के अगले भाग में खुजली, पेट में केचुआ जैसे कृमि, जोरों की छींक के साथ नाकका खुजलाना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—बहुत निद्रालुता, नींद से चौंक पड़ना, दाँत किड़मिड़ाना, अनजान में दस्त और पेशाव या पेशाव में तकलीफ, मसाने में कृमियोंका सचालन मालूम होना।

चायना ६ या ३०—जी मिचलाना, पेट में दर्द, गान के समय और भोजन के बाद दर्द का बढ़ना

ज्वर भाव, शरीर दुबला, दाँत किडमिडाना, चिड़चिड़ा स्वभाव, नाक के अगले भाग और मलद्वार में खुजली मुँह में पानी भर आना, पेट में दर्द, मिचली या के, भूख बिलकुल ही न लगना या बहुत अधिक लगना, चेहरा मलीन, नींद से चौंक पडना, पतले दस्त आदि इस रोग के साधारण लक्षण हैं। सूत जैसे छोटे कृमि में नाक और मलद्वार का खुजलाना, भूख कम या अधिक लगना, नींद से चौंकना, इत्यादि लक्षणों की प्रधानता रहती है। केंचुवा जाति के कृमि में पेट में दर्द, दाँत किडमिडाना, जी मिचलाना, मुँह में पानी भरना, चेहरा मलीन, आक्षेप, आँखों के नीचे काले दाग, पेट कड़ा और गरम, चेहरा पीला, आँव मिला दस्त, कभी बहुत भूख, कभी अरुचि, साँस में बदबू, बेहोशी, पेशाब गँदला इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। फीता जातीय कृमि के लक्षण भी उपरोक्त कृमि के समान ही हैं।

अधिक परिमाण में मिठाई खाना, शरीर का अच्छी तरह परिपोषण न होना, खराब पानी पीना, गुड, केला, नारियल, पक्वान्न, साग सब्जी और खटाई खाना आदि इस रोग के प्रधान कारण हैं। बच्चों को यह रोग अधिक होता है। पेट में कृमि होने पर उन्हें बाहर निकाल देना अच्छा है। बाहर न निकलने पर भी यदि रोग लक्षण घट जाते हैं तो रोगी को विशेष तकलीफ नहीं होती।

चिकित्सा।

छोटे कृमि में एकोनाइट, ट्युक्रियम, साइना, सेन्टोनाइन, और सल्फर, केंचुआ जैसे कृमि में चायना, साइना, सेन्टोनाइन, फेरम, कल्केरिया, इग्नेशिया, ट्युक्रियम, मर्क्युरियस, नक्स वोमिका और सल्फर तथा फीता जाति के कृमि में कल्केरिया, ग्रेफाइटिस, प्लेटिना, पल्स, सेबाडिला, फिलिक्समस, क्युमम एसेट, स्टेनम, साइना, कस्, नक्सवोमिका नेट्रमम्यूर और सल्फर आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६—कृमि के कारण बुखार, अस्थिरता, पेट में दर्द, मुँह में पानी भर आना, अनिद्रा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एपोसाइनम ३ या ६—बहुत मिचली और कै, पुरुषाङ्ग के अगले भाग में खुजली, पेट में केंचुआ जैसे कृमि, जोरों की छींक के साथ नाकका खुजलाना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—बहुत निद्रालुता, नींद से चौंक पड़ना, दाँत किडमिडाना, अनजान में दस्त और पेशाब या पेशाब में तकलीफ, मसाने में कृमियोंका सञ्चालन मालूम होना।

चायना ६ या ३०—जी मिचलाना, पेट में दर्द, रात के समय और भोजन के बाद दर्द का बढ़ना, पेट में भार

मालूम होना, बहुत कमजोरी, पेट फूला हुआ, नाक में खुजली इत्यादि।

साइना (सिना)६, ३० या २००—यह इस रोग की प्रधान और उत्कृष्ट दवा है। छोटे और बडे दोनों तरह के कृमि में इससे लाभ होता है। भूख न लगना, जी मिचलाना, कब्जियत, या पतले दस्त, नाक खुजलाना, नाक से खून गिरना, आँख के तारे का बढ़ना, नींद में दाँत किडमिडाना, मुँह मे पानी भरना, सोते मे बोलना, अच्छी तरह नींद न आना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। पहले निम्नक्रम, और निम्नक्रम से लाभ न हो तो उच्चक्रम की दवा देनी चाहिये।

सेन्टोनाइन ३X या २००—केचुआ जैसे कृमि में इस दवा से विशेष लाभ होता है। छोटे कृमि में भी फायदा करती है। एलोपैथिक सेन्टोनाइन एक या दो ग्रेन दिया जाता है

टयुक्रियम ३X या ३०—छोटे कृमि की यह भी बढ़िया दवा है। मलद्वार में खुजली, नाक खुजलाना, मलद्वार से कृमि का बाहर निकलना इत्यादि, लक्षणों में इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—कृमि के कारण पेट में शूल वेदना होने अथवा चूनी हुई दवासे पूरा लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

स्टेनम ६ या ३०—साइना से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

स्पाइजिलिया ३ या ६—छोटे कृमिमें यह दवा भी फायदा करती है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—शिरमें दर्द, आँखके चारों ओर काले दाग, चेहरा फीका और फूला फूला, नाभीके चारों ओर दर्द, पेट फूला हुआ, पेटकी बीमारी, हिलने डोलने से पसीना, गण्डमाला धातु इत्यादि।

सेबाडिला ३Xया६—ऐसा मालूम होना मानो कृमि गले में अटके हुए है, मिचली और कै, पेटमें जलन और एँठन, कै के साथ मुँह से कृमि निकलना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त टेरीबिन्थीना, इग्नेशिया, फेरम, सिकुटा, फिलिक्समस, ऐस्किलपिअम, अर्जेन्टम नाइट आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—पानी में नमक मिलाकर मलद्वार में उसकी पिचकारी देनेसे छोटे कृमि मर जातेहै। एक सेर पानी में एक लहसुन पकाकर उसकी पिचकारी देनेसे भी लाभ होता

है। रातमें सोनेके समय १-२ ग्रेन एलोप्रेथिक सेन्टोनाइन खिलाकर दूसरे दिन सुबह थोड़ासा रेंड़ीका तेल पिलानेसे दस्तके साथ कृमि निकल जाते हैं। अधिक मिठाई और सड़ी या बासी चीजें खाना मना है। मिठाई छोड़े बिना इस रोगसे छुटकारा नहीं मिलता। अच्छी और पुष्टिकर चीजें खाना लाभदायक है।

कांच निकलना।

(Prolapsus Ani)

यह रोग होने पर दस्तके समय मलद्वार से सरलान्त्र बाहर निकल आती है। बच्चे और बूढ़ोंको यह रोग अधिक होता है। बहुत दिनोंतक ऑव या अतिसारकी बिमारी होनेके कारण जोर लगा लगाकर मल त्याग करना, बवासीर या कब्जियतकी बीमारी होना, कमजोरी इत्यादि इस रोगके प्रधान कारण माने जाते हैं।

चिकित्सा।

नक्सवोमिका ६ या ३०—जिन्हें हमेशा कब्जियत की शिकायत रहती है उन्हें और बच्चोंको इससे विशेष लाभ होता है।

पोडोफिल्लाम ६ या ३०—सुबह पतले दस्त, दस्तके समय या दस्तके बाद कॉचका निकलना, कॉखना, बदबूदार दस्त

मर्क्युरियस वाइवस ३—कॉंच निकलने के साथ खुजली और पीले रंगका कफ निकलना, अतिसार, मलत्यागके समय बहुत कॉंखना और जोर लगाना।

कल्केरिया कार्ब ३—शिशु कालेराके समय कॉंचका निकलना, मलत्याग के समय मलद्वार मे जलन और खुजली। बच्चे और गण्डमाला धातुवाले लोगोंकी बीमारी।

इग्नेशिया ३ या ६—कब्जियत, बहुत कष्टके साथ मल निकलना, बवासीरका मसा बाहर निकलना, मलद्वार में छुरे लगने जैसा दर्द, खुजली इत्यादि।

गेम्बोजिया ३—अतिसारके साथ कॉंचका निकलना, हरा या पीला मल, जलन जैसा दर्द, वेग होने पर भी थोड़ा थोड़ा मल निकलना।

लाइकोपोडियम ३० या सल्फर ३०—अन्यान्य दवाओंसे लाभ न होने पर इन्हें आजमाना चाहिये।

लक्षणानुसार एलोज, म्युरियटिक एसिड, आर्निका, फौस्फरस, सीपिया, ब्रायोनिया और इस्क्युलस आदि दवाओंसे भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—मल त्याग करते समय काँखना या जोर लगाना ठीक नहीं। भोजन हलका और पुष्टिकर होना चाहिये। कांच बाहर निकलने पर उसे खूब ठण्ढे पानी से तर कर भीतर चढ़ा देना चाहिये। जब कांच अपनी जगह पर बैठ जाय, तब मलद्वार में कपड़े की एक गोली लगाकर पट्टी से मजबूत बाँध देना चाहिये। मलद्वार में सूजन और दर्द हो तो ठण्ढे पानीकी पट्टी चढ़ानी चाहिये। खड़े खड़े मलत्याग करना इस रोग में लाभदायक है। इससे काच बाहर नहीं निकलने पाती।

आंत उतरना।

(Hernia)

पेटसे आँव उतर कर नाभी, पट्ठा या अण्डकोषमें प्रवेश करने को आँत उतरना कहते हैं। जाँघ या पट्ठे की ओर आंत जाने पर उसे इंगुइनल हार्निया कहते हैं। पट्ठे के नीचे आत जाने पर उसे फेमोरल और अण्डकोष की ओर आत जाने पर उसे स्क्रोटल हार्निया कहते हैं।

अनवरत चलना या घोड़े की सवारी करना, भारी चीज उठाना, पेटकी पेशियों पर लगातार दबाव पड़ना, बाँसुरी बजाना, जोर लगाकर दस्त या पेशाब करना, कब्जियत का वेग, कसकर कपड़े पहनना, हूपिंग खांसी, जोर जोरसे हँसना, अधिक परिश्रम करना इत्यादि कारण रोग होता है। आँत उतरने [illegible] या अण्ड

सरल होमियोपैथिक चिकित्सा

प्लम्बम ६—नाभी के चारों ओर भयकर दर्द, जोरों की कब्जियत, अवरुद्ध हर्निया, आँतके के भीतर आँत प्रविष्ट होने के कारण शूल वेदना और मलकी कै।

सल्फ्युरिक एसिड ३—आँत उतरने पर अधिक कै होती हो तो इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ३० या २००—आँत उतरने पर उसमें सडन शुरू हो जाय तो इसे देना चाहिये।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—बच्चोंके इगुइनल हार्निया में और कंप के साथ पेटमें ऐठन हो तो इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—छोटे बच्चोका हर्निया, पेटमें शूलकी तरह दर्द, पेटका फूलना, पेटमे गडगडाहट, सोते समय शिरमें पसीना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—दाहिनी ओर इगुइनल हार्निया, ऐसा मालूम होना मानों दाहिनी ओर के छेद से कुछ बाहर निकल पड़ेगा, नाभीके चारों ओर डोलने जैसी या संकोचक वेदना, पेटका फूलना इत्यादि।

साइलीसिया ३०—बच्चोंको यह रोग होना, आक्रान्त स्थानमें हाथ न लगाने देना इत्यादि।

कक्युलस ६—दाहिनी ओरका हार्निया, ऐसा मालूम होना मानो आँत टूट गयी है, पेटका फूलना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—पेट कठिन और कुछ फैला हुआ, मानसिक अस्थिरता, जलन, आँतमें ऐंठन, आँतका सड़ना इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—पेटका फूलना, कै, बारबार पाखाना, पेशाबकी इच्छा, डकार, तन्द्रा, चेहरा लाल, पेट में कतरने जैसा दर्द इत्यादि।

कर्बोवेज ६ या ३०—वायु सचयके कारण पेटका फूलना, पेट से बहुत वायु निकलना, कसकर कपडे न पहन सकना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—रोगीको चित्त सुलाकर दोनों पैर ऊँचे कर पकडे रहने से आँत आपसे आप अपने स्थान में चली जाती है। हार्निया के कारण फूले हुए स्थानमें बरफ या

ठंढे पानीकी पट्टी चढ़ानी चाहिये। बहुत चलना फिरना या खड़े रहना हानिकारक है। रोगके समय रोगीको मिश्री या चीनीका शर्वत पिलाना अच्छा है। आँतके बैठ जानेपर कमर बन्द (Truss) का व्यवहार करने से फिर आँत उतरने की सभावना घटती है। आँतके न बैठने पर या दवाओं से लाभ न होने पर अस्त्र चिकित्साकी जरूरत पड सकती है।

भगन्दर।

(Fistula in Ano)

मलद्वारके पास फोड़ा होकर एक प्रकार का जख्म हो जाता है। यही भगन्दर कहलाता है। यह जख्म आसानी से नहीं सूखता और नासूर जैसा हो जाता है। क्षय रोगकी अन्तिम अवस्थामें प्रायः ऐसा ज़ख्म हो जाता है। पहले दर्द, बादको सूजन और जलन पैदा होकर ज़ख्म का हो जाना, इसके बाद जख्म से पीब और वायु का निकलते रहना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

बेलेडोना ३ X या ६—फोडा होनेके बाद उसमें टपक जैसा दर्द, मलद्वार लाल और शिरमें दर्द।

मर्क्युरियस सल ६—बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

हिपरसल्फर ६ या ३०—फोड़ेमें पीब होनेकी तैयारी दिखायी दे तो इसे देना चाहिये।

साइलीसिया ३०—जख्म से बहुत पीब निकलता हो या नासूर हो गया हो तो इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ६—दर्द न होना, साधारण पीब बहना, क्षय रोगकी आशंका, शारीरिक क्षीणता इत्यादि। इन्हीं लक्षणों में कल्केरिया फोस भी दिया जाता है।

कस्टिकम ६ या ३०—मलद्वार में एकायक भयंकर दर्द स्पर्श बरदास्त न होना, मलद्वारमें खुजली इत्यादि लक्षणों में तथा किसी दूसरी दवासे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

थूजा ३० या २००—भगन्दरके साथ मलद्वार में गोभी के फूल जैसे मसे, मसेके चारों ओर दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त चायना, कल्केरिया कार्ब, फ्लोरिक एसिड, कल्केरिया फ्लोर, नक्सवोमिका, नाइट्रिक एसिड, ग्रेफाइटिस, इस्क्युलस, एलोज, वार्वेरिस और रेटानहिया आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—कैलेण्डुला मदरटिञ्चर का वाह्य प्रयोग करने से लाभ होता है। मांस मछली खाना मना है। पुष्टिकर चीजें खानी चाहिये।

मलद्वार का फट जाना।

(Fissure in Ano)

कब्जियत होनेके कारण जो लोग मल त्याग करते समय बहुत ज़ोर लगाते या कॉखते हैं, उनके मलद्वार की मासपेशी या उसके चारों ओरकी श्लैष्मिक झिल्ली कभी-कभी फट जाती है। फटने के समय कभी-कभी रोगी बेहोश तक हो जाता है। इस रोगके कारण मलद्वारमें जलन और दस्त होते समय बहुत तकलीफ होती है।

चिकित्सा

इस्क्युलस ३—मलद्वार में जलन, खुजली और भार मालुम होना, मलद्वार में छुरी भोंकने जैसा दर्द, मलत्याग के एक घंटे बाद मलद्वार में दर्द।

ग्रेफाइटिस ६ या ३० — मलद्वार का फट जाना, नख की बीमारी, मलद्वार में जख्म इत्यादि ।

रेटानहिया ३–मलत्याग के बाद बहुत जलन, कतरने जैसा दर्द, अतिसार या कब्ज़ियत ।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०–दस्त के समय और दस्त के बाद कतरने जैसा दर्द, कब्जियत और कड़ा मल निकलना ।

हेमामेलिस ३X—ज़ख्मसे बहुत रक्तस्राव होता हो तो इसे देना चाहिये ।

आर्सेनिक ३ या ६–बहुत दर्द अथवा रक्तस्राव के लक्षण में इसे देना चाहिये ।

आवश्यक सूचना—केलेण्डुला, हेमामेलिस या इस्क्युलसका मलहम प्रयोग करना चाहिये । पाखाने जाते समय मलद्वार में घी या तेल लगा लेनेसे मल आसानी से निकल जाता है । कब्जियत दूर करने के लिये गरम पानी की पिचकारी लेनी चाहिये और फल मूल अधिक तादाद में खाना चाहिये ।

मलद्वारमें खुजली ।

(Pruritus Ani)

पेटमें मल संचय, एकायक किसी चर्मरोगका स्राव रुक जाना, रजोरोध, बवासीर, क्रिमि और अफीम आदिके सेवन के कारण मलद्वार में खुजली होती है

चिकित्सा ।

रेडियम ब्रोमेटम ३०—प्रति सप्ताह एकबार सेवन करने से काफी लाभ होता है।

इससे लाभ न हो तो सल्फर, लाइको पोडियम, पेट्रोलियम, आर्सेनिक और नेट्रमम्यूर आजमाना चाहिये । रोग के मूलकारण पर ध्यान रखकर दवा चुनने से विशेष लाभ हो सकता है। बोरेक्स, कार्बोलिक एसिड, मर्करी, केलेण्डुला, इस्क्युलस और हेमामेलिस आदि दवाओं के मलहम या धावनों के बाह्य प्रयोग से भी फायदा होता है।

पेट फूलना ।

(Tympanitis Flatulence)

पेट फूलने या पेटमें वायुसचय होनेसे रोगीको बड़ा कष्ट होता है, किन्तु यह शिकायतें प्राय अन्यान्य रोगों के ही

कारण उत्पन्न होती हैं। अजीर्ण इनका प्रधान कारण हो सकता है। अनेक बार बुखार, हैजा और टायफाइड आदि रोगों के साथ भी यह शिकायतें पैदा होती हैं। पेट फूलना, पेटमें गड़गड़ाहट, डकार आना, अधोवायु निकलना, श्वास कष्ट, कलेजे की धड़कन आदि इन रोगोंके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

चायना ६ या ३०—पेट फूलना, पीले रंगके दस्त, पेटमें गड़गड़ाहट या भुटभुट आवाज।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पेट फूलना और पेट में वायु सञ्चय, खट्टी या तीती डकारें, कब्जियत, छाती में भार मालूम होना।

कार्बोवेज ६—पेटमें वायुसञ्चय, पतले दस्त और कब्जियत।

कार्बोलिक एसिड ३ या ६—पेट में वायु सञ्चय, साथ ही बहुत डकारें आना।

लाइको पोडियम ६ या ३०—पेट में वायु सञ्चय के साथ कब्जियत होने पर इसे देना चाहिये।

टेरीबिन्थीना ६—बुखार और प्रदाह के कारण पेट फूले तो इसे देना चाहिये।

एसाफिटीडा ६—स्त्रियों को हिस्टीरिया रोग के साथ पेट फूलने की शिकायत हो तो इसे देना चाहिये।

रेफेनस ६—पेट फूला हुआ साथ ही कडा भी हो तो इसे आज़माना चाहिये।

सिना और कोलिन्सोनिया से भी इन रोगों में काफी लाभ होता है।

जलोदर।

(Ascites)

पेट के शोथ को जलोदर कहते हैं [वास्तव में] यह स्वयं कोई रोग नहीं है। प्राय हृदय, यकृत, पिलही और मूत्र-ग्रन्थिकी बीमारी के कारण ही यह रोग होता है। यह रोग होने पर पेटकी आवश्यक झिल्ली या पेरिटोनियम में जल सचित होता है। इससे रोगी का पेट फूल जाता है। लेटने पर पेट के दोनों पार्श्व, खडे होने पर पेटका निचला हिस्सा अधिक फूला हुआ मालूम होता है। वैसे समूचा पेट समान रूप से फूला रहता है। कभी-कभी जननेन्द्रिय और जाँघें तक फूल जाती हैं। रोगी का पेट

थपथपाने या पेट पर उगली से आघात करने पर पेट में पानी की हिलोर या लहर सी उठती स्पष्ट दिखायी देती है। रोग बढ़ने पर यकृत और पिलही का आकार छोटा हो जाना, मलमूत्र में कमी, श्वास कष्ट, शरीर के ऊपरी अगो का सूख जाना और निचले अगों में शोथ आदि लक्षण प्रकट होते है।

चिकित्सा।

एपिस ६ या ३०—बहुत सूजन, पेट में बहुत तनाव, श्वासकष्ट, प्यास का न होना, शरीर के भिन्न भिन्न स्थानों में डक मारने जैसी ज्वालाकर वेदना, मैले रग का थोडा पेशाव, इत्यादि लक्षणों में और अण्डप्रदाह या जरायु अर्बुद के साथ यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

एपोसाइनम ३ X या ६—जलोदर की यह एक बढ़िया दवा है। पेट में कोई भी चीज न ठहरना, हमेशा एक तरह का दर्द, सोने पर चेहरे का फूल उठना, बैठने पर फिर उसका ठीक हो जाना, पतले दस्त, कीचड जैसा पेशाव।

आर्सेनिक ६ या ३०—चेहरा फीका या पीला, बहुत कमजोरी, जीभ सूखी हुई, बहुत प्यास लेकिन एक साथ अधिक

पानी न पीना, श्वासकष्ट बेचैनी, घबड़ाहट, शरीर में जलन रात में तकलीफ के कारण नींद से उठ बैठना, जलोदर के साथ हृदय की बीमारी।

चायना ६ या ३०—रसरक्त का बहुत क्षय या यकृत और पिलही की बीमारी के कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

डिजिटेलिस ६ या ३०—पेशाब में बहुत तकलीफ, चेहरा बहुत फीका, ठढा पसीना, शरीर फूला हुआ, हृदय की बीमारी, शोथवाले स्थान को दबाने से वहाँ गढ़ा हो जाना इत्यादि।

आयोनिया ६ या ३०—शिर में रक्ताधिक्य, नींद से उठने पर शिर का चकराना, हिलने डोलने से श्वास-कष्ट, बहुत प्यास, थोड़ा पेशाब, पेशाब में जलन बहुत, कब्जियत।

लेकेसिस ६ या ३०—यकृत, पिलही और हृदय की बीमारी के साथ यह रोग होना, बुखार, काले रंगका थोड़ा पेशाब, नींद के बाद तकलीफ का बढ़ना।

फ्लोरिक एसिड ३ या ६—शराबियों को यकृत की बीमारी होकर यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

लाइको पोडियम १२ या ३०—ऊपरी अंग सूखे हुए और निचले अंगो में शोथ, थोडा पेशाव होना और उसमें लाल तली जमना, शराबियो की बीमारी, रक्तस्राव या सविराम ज्वर के बाद यह रोग होना, एक पैर ठंढा दूसरा गरम इत्यादि।

सिनिसिओ ३०—निचले अगों का शोथ, तलपेट में तनाव, स्त्रियों की कमर और डिम्बाशय में दर्द, लाल रंग का बहुत थोडा अथवा पानी जैसा बहुत अधिक पेशाव।

मर्क्युरियस ६ या ३०—यकृत की खराबी के कारण यह रोग होना, पेट फूला हुआ और ठंढा।

हेली बोरस ६ या ३०—लाल ज्वर के बाद यह रोग होना, निद्रालुता, पूछी हुई बातका शीघ्र उत्तर न मिलना, आँत में दर्द, बारबार थोडा पेशाव।

कल्चीकम ६ या ३०—आधी रात के बाद श्वास-कष्ट, कलेजे में धड़कन, पेट मे जलन, जी मिचलाना और कै, बदबूदार थोड़ा पेशाब।

कानवालव्युलस ३ या ६—पेट जलपूर्ण, कब्जियत, पेशाब एकदम बन्द, बहुत अधिक खाना, फिर भी कमजोरी।

आवश्यकतानुसार शोथ रोग की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती हैं। रोगी को सरदी से बचाना चाहिये और खाने को ऐसी चीजें देना चाहिये, ताकि मलमूत्र अधिक परिमाण में हो।

एपेन्डिसाइटिस।

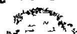
(Appendicitis)

पेट में दाहिनी ओर उपाङ्ग नामक एक नाली है। इसका एक मुँह खुला और दूसरा बन्द रहता है। खुले मुँह से यदि कोई पदार्थ इस नाली में चला जाता है, तो वह फिर बाहर नहीं निकल सकता। साधारणतः इसी कारण से इस नाली में प्रदाह होता है। यही उपाङ्ग या एपेन्डिस प्रदाह अथवा एपेन्डिसाइटिस कहलाता है। एक प्रकारके जीवाणुद्वारा आँतका उत्तेजित होना, अधिक आहार, पेट में मलकी गाँठे बंधजाना, कब्जियत, कृमि, जल्दी जल्दी खाकर आफिस दौड़ना, साइकिल

या मोटर पर चढ़कर बहुत घूमना आदि कारणों से भी यह रोग हो सकता है।

दाहिनी कोख में दर्द, जी मिचलाना और कै होना इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। इनके अतिरिक्त शिर में जोरों का दर्द, रोशनी बरदाश्त न होना, जीभ मैली, कभी कभी कब्जियत, पेट से वायु निकलना, पैर मोड़े रहना, तलपेट में बहुत दर्द, एक सो से लेकर एक सौ तीन डिग्री तक बुखार, कभी-कभी यकृत और पिलही का बढ जाना और भूख न लगना आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। इसका दर्द बहुत भयंकर होता है और धीरे-धीरे बढ़ता जाता है। आरम्भ में इस दर्द से कई सप्ताह तक रोगी पीडित रहता है। बादको अन्यान्य लक्षण प्रकट होते है, और क्रमश कठिन उपसर्ग उत्पन्न होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

यह रोग बहुत भयकर माना जाता है। एलोपैथिक चिकित्सक इसका नाम सुनते ही हताश हो जाते है। वे आपरेशन कर उपाङ्गनली चीर देते हैं, फिर भी अधिकाश रोगी मृत्युमुख में पतित हो जाते हैं। यदि आरभ से ही सावधानी के साथ होमियोपैथिक दवाओं का सेवन किया जाय तो यह रोग आसानी से आराम हो सकता है और चीर फाडकी जरूरत ही नहीं पड सकती।



चिकित्सा।

इकोनाइट ३X या ६—रोगकी आरम्भिक अवस्थामें तेज बुखार, प्यास, बेचैनी, आदि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—तेज बुखार, दाहिनी कोखमें बहुत दर्द, हाथ लगाने या बिछौना छू जाने पर भी दर्द मालूम होना, जी मिचलाना और कै।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सुई चुभोने और जलन जैसा दर्द, हिलने डोलनेसे दर्द का बढ़ना, कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव, तबियत अलील मालूम होना।

जिनसेङ्ग १X या ३X—दाहिनी कोखमें दर्द और सूजन, कॉटा गड़ने जैसा दर्द, पेटमें गड़गड़ाहट, प्रलाप, जीभ सूजी इत्यादि।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पेटमें बहुत दर्द, और सूजन, पर मोड़े रहना, बारबार दस्त और पेशाब की इच्छा, पीब होने के लक्षण।

मर्क्युरियस ६ या ३०—दाहिनी कोखमें दर्द, और फूलन, वह स्थान गरम, लाल और कड़ा, छूने से दर्द मालूम होना, बहुत प्यास, कब्जियत, कॉखने पर ऑव जैसा मल निकलना, बहुत पसीना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—दाहिनी ओर पेट फूला हुआ और कठिन, बैठने या दाहिना पैर फैलाने पर बहुत दर्द, बेचैनी, हाथ पैरमें दर्द, बायीं करवट न लेट सकना, हिलने डोलने से आराम।

लेकेसिस ६ या ३०—पेट छूनेसे बहुत दर्द मालूम होना, दाहिनी कोख फूली हुई, कमरमें अकड़न, कब्जियत, थोड़ा पेशाब, पेशाबमें लाल तली जमना, मूत्र कष्ट, चित होकर जाँघ पेटकी ओर मोड़कर सोना, शाम को ३ बजे बुखार का बढना, नींदके बाद रोग लक्षणोंका बढ़ना, साधारण बुखार के साथ कै इत्यादि।

अर्निका ६—चोट लगनेके कारण यह रोग होना, बुखार, शरीरमें दर्द, कै और पसीना।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत सुस्ती और बेचैनी, उत्कंठा, बहुत प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, जीभ लाल।

एसाफिटिडा ६—कै में मलकी गन्ध होने पर इसे देना चाहिये।

प्लम्बम ६—कब्जियत और गॉठ गॉठ मल, दाहिनी कोख फूली हुई, हाथ लगानेसे दर्द, छींकने, खॉसने या हिलने से दर्द का बढ़ना, प्यास, मिचली और कै।

लाइकोपोडियम ३०—पेट में भयंकर दर्द, वायुसंचय और कब्जियत आदि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

आइरिस ३०—लेकेसिस या एपिससे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त विरेट्रम, कोलोसिन्थ, सल्फर, मेग्नेशिया फस, केमोमिला, कल्चीकम, साइलीसिया और नक्स-वोमिका आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

रोगकी आरम्भिक अवस्था में वेलेडोना 3X और मर्क्युरियस सल 3X केवल यही दो दवाएं पर्याय-क्रमसे आधे-आधे घंटे में देनसे काफी लाभ होते देखा गया है।

आवश्यक सूचना—गरम पानी पीना, बोतल में गरम पानी भरकर उससे सेंकना और गरम पानी की पिचकारी लेना लाभदायक है। खाने को पतली और हलकी चीजें देनी चाहिये। रोगके आरभ से ही होम्रियोपैथिक दवाओं का सेवन करने पर रोग भयकर रूप धारण नहीं करता। यदि असावधानीके कारण रोग बढ़ जाय अथवा दवाओंसे पूरा लाभ न हो तो चीरा लगवाया जा सकता है।

१५–मूत्रयन्त्र के रोग

गुर्दा या मूत्रग्रन्थि प्रदाह

(Nephritis)

कमर के पास मेरुदण्ड के दोनों ओर दो ग्रन्थियाँ हैं, जो पेशाब उत्पन्न करने का काम करती हैं। इन ग्रन्थियों को अंग्रेजी में किडनी (Kidney) और देशी भाषाओं में मूत्र-ग्रन्थि, मूत्रकोष, मूत्रपिण्ड, वृक्कक या गुर्दा कहते हैं। सरदी या ठंढ लगना, पानी में भीगना, मूत्रकारक उत्तेजक दवाएँ खाना, शराब पीना, कठिन परिश्रम करना, चोट लगना, रात में जागना इत्यादि कारणों से इन ग्रन्थियों में प्रदाह पैदा होता है।

मूत्रग्रन्थियों में प्रदाह होने पर बहुत जाड़ा लगकर बुखार आना, एक या दोनों मूत्र ग्रन्थियों में दर्द, जलन और गरमी मालूम होना, मूत्रस्थली पर्यन्त दर्द का बढ़ना, बारम्बार पेशाब का वेग लेकिन बहुत कष्ट के साथ थोड़ा-थोड़ा पेशाब होना, खून की, तरह लाल पेशाब होना, इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। साधारणत. बायाँ मूत्रकोष ही प्रदाहित होता है। दोनों मूत्रकोष प्रदाहित होने पर पेशाब एकदम बन्द हो जाता है। और सीधे खड़े होने पर बहुत जोरोंका दर्द होता है।

पेशाब में अण्डे की सफेदी या माड़ जेसा पदार्थ (अण्ड-लाल) निकलना, एल्बु मिनूरिया, (Albuminuria) कहलाता है। डाक्टर ब्राइट ने इस रोग के सम्बन्ध में सर्व प्रथम अनुसन्धान किया था, इसलिये यह उनके नाम से ब्राइट्स डिज़ीज (Bright's Disease) भी कहलाता है। परन्तु वास्तव में यह कोई पृथक रोग नहीं है। मूत्रग्रन्थि प्रदाह होने पर पेशाब में अण्ड लाल रहता ही है, इसलिये इस रोग की चिकित्सा पृथक रूप से न अंकित कर हम एक साथ ही अंकित करते हैं। पाठक गण इन रोगों की दवाएं भी लक्षणा-नुसार इन्हीं दवाओं में से चुन लें।

चिकित्सा

एकोनाइट ३ या ६—गुर्दे में सुई चुभाने जैसा दर्द, तेज बुखार, प्यास, अस्थिरता, कालापन लिये हुये लाल

पेशाब, प्रदाह इत्यादि लक्षणों में रोग की प्रारम्भिक अवस्था में इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ३ या ६—गुर्दे और कमर में चिलकने या काटने जैसा दर्द, जलन, बारम्बार पेशाब करने की इच्छा, परन्तु बूँद-बूँद पेशाब होना, कभी-कभी उसके साथ खून निकलना, बहुत बुखार, इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है। यह इस रोग की एक प्रधान दवा है।

आर्सेनिक ६ या ३०—काले या मैले रंग का एल्बुमेन मिला थोड़ा पेशाब, बहुत अस्थिरता, निद्राहीनता, मृत्युभय, प्यास, चेहरे पर सूजन इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—दुबले और कमजोर रोगियों को नया गुर्दे की बीमारी के साथ न्युमोनिया होने पर इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—हाथ पैर के पंजे और चेहरे पर सूजन, गुर्दे में तनाव, बारंबार पेशाब लगना, जोर लगाने पर तकलीफ के साथ थोड़ा पेशाब होना, कभी अण्डलाल मिश्रित और कभी दूध जैसा सफेद पेशाब।

बेलेडोना ३ या ६--गुर्दे से लेकर मूत्राधार तक चिलक मारने जैसा दर्द, पेशाव थोड़ा, पेशाव में जलन, लाल रंग का पेशाव और उसमें सफेद तली जमना।

टेरिबिन्थीना ३ या ६--दाहिने गुर्दे से लेकर पट्ठे तक जलन, ऐसा मालूम होना मानो किसी ने कस कर पकड़ रक्खा है, पेशाव में काली तलो जमना, अण्ड लाल और कभी-कभी खून मिला पेशाव।

मर्क्युरियसकर ६ या ३०- पेशाव के साथ काले सूत मास जैसा पदार्थ निकलना और चेहरे पर शोथ होना।

लाइकोपोडियम ६ या ३०--गुर्दे में भयंकर दर्द, पेशाव में लाल तली जमना इत्यादि।

हिपरसल्फर ६ या ३०--गुर्दे में दपदपी, पीव होने के लक्षण, पुरानी बीमारी, लाल, कालापन लिये हुये अथवा खून मिला पेशाव।

हेलोनियस ३ या ६—स्त्रियों को यह रोग होना, बार-म्बार पेशाव लगना, अण्ड लाल मिला फीके रंगका बहुत सा पेशाव होना।

बार्बेरिस ३ या ६-गुर्द में दर्द, पेशाब के साथ गोंद जैसा कफ निकलना, खूनी पेशाब, थोड़ा पेशाब इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

केनेबिससेट १ X या ३X-बारबार कष्ट के साथ पेशाब होना, पेशाब करने समय और पेशाब करने के बाद मूत्रनाली में साधारण जलन, थोड़ा पेशाब इत्यादि लक्षणों में और केन्थरिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ३ या ६-स्त्रियों को ऋतु बन्द होने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सेबाइना ३ या ६-स्त्रियों को यह रोग होने पर रोगकी प्रथमावस्था में इससे भी लाभ होता है।

सल्फर ३०—पुरानी बीमारी में तथा अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—गाढ़ा गाढ़ा धुमेले रंग का थोड़ा पेशाब, छातीमें दर्द, दमेकी तरह श्वासकष्ट, हिलने डोलनेसे तकलीफका बढ़ना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०–चेचक या दानेवाली कोई बीमारी होनेके कारण यह रोग होना, रोगी बहुत कमजोर, अल्प परिश्रम में ही हाँफने लगना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०–डिफ्थीरिया या लालज्वर के बाद यह रोग होना, शराबियोंकी बीमारी, पेशाब गँदला या काला, बायें पैरमें शोथ इत्यादि।

कन्थीकम ६या ३०–पेशाब खून मिला और स्याही की तरह काला, सीधे होकर खड़े न हो सकना, दर्दके कारण पैर सिकोड़े रहना इत्यादि।

रसटक्स या डाल्केमारा ६–पानीमें भीगने के कारण यह रोग होनेपर इन दवाओंको आजमाना चाहिये।

नक्सवोमिका ३X या ६–शराबियों और मन्दाग्नि के रोगियों को इस दवासे विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना–मूत्र ग्रन्थिशोथपर सेंक देनेसे तकलीफ घट जाती है। सर्दी से बचना चाहिये। हलकी और पतली चीजें खाना चाहिये। नमक जहाँ तक हो सके कम खाना

चाहिये। मास मछली खाना मना है। मिठाई पक्वान्न, शराब, चाय, काफी, तम्बाकू आदि चीजें भी हानिकारक हैं। अनेक बार रोगी को कोई दूसरी चीज या दवा न खिलाकर केवल दूध पिलानेसे ही आश्चर्य जनक लाभ होता है।

मूत्रस्थली प्रदाह।

(Cystitis)

तलपेटमें जननेन्द्रियके ऊपरी भागमें मूत्रस्थली या पेशाब की थैली रहती है। इसे अंग्रेजी में ब्लैडर कहते हैं। मूत्र ग्रन्थियों द्वारा पेशाब उत्पन्न होकर मूत्र-स्थलीमें जमा होता है और काफी तादाद में जमा होने के बाद यहीं से मूत्रमार्ग द्वारा वह बाहर निकलता है। इसमें प्रदाह होने को मूत्रस्थली प्रदाह कहते हैं।

ठढ या सरदी लगना, पानीमें भीगना, मूत्रस्थलीमें पथरी होना, किसी तरह की चोट लगना, प्रसवके समय स्त्रियोंकी मूत्रस्थलीमें चोट लगना या दबाव पड़ना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। मूत्रस्थली में दर्द और भार, दबाने पर दर्द मालूम होना, पेशाब में जलन, बारबार पेशाब लगना, कभी बहुत थोड़ा और कभी बूँद-बूँद पेशाब, मूत्रनाली में बहुत जलन, जोर लगाये बिना पेशाब का न उतरना, लाल रंगका पेशाब, पेशाब में जब तब कफ, पीब या खूनके छींटे दिखायी देना, मूत्रस्थली और तलपेटका कुछ फूल उठना,

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—चेचक या दानेवाली कोई बीमारी होनेके कारण यह रोग होना, रोगी बहुत कमजोर, अल्प परिश्रम में ही हाँफने लगना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—डिफ्थीरिया या लालज्वर के बाद यह रोग होना, शराबियोंकी बीमारी, पेशाब गंदला या काला, बायें पैरमें शोथ इत्यादि।

कन्चीकम ६या ३०—पेशाब खून मिला और स्याही की तरह काला, सीधे होकर खड़े न हो सकना, दर्दके कारण पैर सिकोड़े रहना इत्यादि।

रसटक्स या डाल्केमारा ६—पानीमें भीगने के कारण यह रोग होनेपर इन दवाओंको आजमाना चाहिये।

नक्सवोमिका ३X या ६—शराबियों और मन्दाग्नि के रोगियों को इस दवासे विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—मूत्र ग्रन्थियोंपर सेंक देनेसे तकलीफ घट जाती है। सरदी से बचना चाहिये। हलकी और पतली चीजें खाना चाहिये। नमक जहाँ तक हो सके कम खाना

चाहिये। मांस मछली खाना मना है। मिठाई पकवान, शराब, चाय, काफी, तम्बाकू आदि चीजें भी हानिकारक हैं। अनेक बार रोगी को कोई दूसरी चीज या दवा न खिलाकर केवल दूध पिलानेसे ही आश्चर्य जनक लाभ होता है।

मूत्रस्थली प्रदाह।

(Cystitis)

तलपेटमें जननेन्द्रियके ऊपरी भागमें मूत्रस्थली या पेशाब की थली रहती है। इसे अंग्रेजी में ब्लैडर कहते हैं। मूत्र ग्रन्थियां द्वारा पेशाब उत्पन्न होकर मूत्र-स्थलीमें जमा होता है और काफी तादाद में जमा होने के बाद यहाँ से मूत्रमार्ग द्वारा वह बाहर निकलता है। इसमें प्रदाह होने को मूत्रस्थली प्रदाह कहते हैं।

ठंढ या सरदी लगना, पानीमें भींगना, मूत्रस्थलीमें पथरी होना, किसी तरह की चोट लगना, प्रसवके समय स्त्रियोंकी मूत्रस्थलीमें चोट लगना या दबाव पड़ना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। मूत्रस्थली में दर्द और भार, दबाने पर दर्द मालूम होना, पेशाब में जलन, बारबार पेशाब लगना, कभी बहुत थोड़ा और कभी बूँद-बूँद पेशाब, मूत्रनाली में बहुत जलन, जोर लगाये बिना पेशाब का न उतरना, लाल रंगका पेशाब, पेशाब में जब तब कफ, पीब या खूनके छींटे दिखायी देना, मूत्रस्थली और तलपेटका कुछ फूल उठना,

मल त्याग करने में बहुत कष्ट इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। रोग पुराना होने पर दर्द घट जाता है और गँदला पेशाब होता है। पेशाबमें कफ या श्लेष्मा जम जाता है। गुर्देके प्रदाहमें दर्द नीचेकी ओर मूत्रस्थली तक फैलता है। मूत्रस्थली प्रदाहमें दर्द, ऊपरकी ओर कमर तक फैलता है। यह रोग प्रायः आराम हो जाता है। रोग कठिन होने पर मूत्रस्थली बढ़ जाती है और रोगीको अवस्था सांघातिक हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—मूत्र ग्रन्थि और मूत्रस्थली में दर्द, बारंबार पेशाब लगना, थोड़ा या बूँद-बूँद पेशाब होना, मूत्रस्थली में जलन, बुखार, प्यास, अस्थिरता, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इसके साथ पर्यायक्रम में केन्थरिस देने से विशेष लाभ होता है।

बेलेडोना ३ या ६—पेशाब थोड़ा, गरम और लाल, कभी-कभी उसके साथ खूनका निकलना, बड़े कष्टसे, बूँद-बूँद पेशाब होना, बुखार, स्पर्श बरदास्त न होना इत्यादि लक्षणोंमें और एकोनाइट से लाभ न होनेपर इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ६ या ३०—मूत्रस्थली में बहुत जलन, लगातार पेशाबका वेग होना, जलनके साथ बूँद-बूँद पेशाब होना, खून मिला पेशाब अथवा पेशाबके बदले केवल खून ही निकलना।

मर्क्युरियस कर ३ या ६—कमजोरी, पीठ में डङ्क मारने जैसा दर्द, बारबार पेशाब लगना, पेशाब थोड़ा, गँदला और बदबूदार खून और पीव मिला पेशाब।

पल्सेटिला ६ या ३०—मूत्रस्थली में जलन और दर्द खून या कफ मिला पेशाब, चलने फिरते या खाँसते समय अपने आप पेशाबका हो जाना।

केनेबिस सेट १ या ३-मूत्र मार्गमें जलन, पेशाब बन्द या हमेशा पेशाबका वेग, बूँद बूँद पेशाब होना, पेशाब करते समय साधारण जलन। केन्थरिससे लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

टेरिबिन्थीना ३ या ६—पेशाब करते समय कष्ट और दर्द होने पर तथा केन्थरिस या केनेबिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३० या २०० — खून या कफ मिला पेशाब, पेशाब में बदबू, जलन, पेशाब का वेग रोक न सकना इत्यादि।

टेरेन्टुला ६ या ३० — मूत्रस्थली कठिन और फूली हुई, तेज बुखार, भयंकर दर्द, लेकिन एक बूँद भी पेशाब न होना।

सार्सापरीला ६ या ३० — मूत्रस्थली में पेंठन, पेशाब में सफेद पीब और कफ, पेशाब लाल और गँदला, उसमें सड़े कोहड़े जैसा पदार्थ दिखायी देना, पेशाब के बाद भयंकर जलन और कष्ट।

फोस्फरस ६ या ३० — दही जैसा सफेद पेशाब, उसमें लाल तली जमना, कब्जियत, इत्यादि।

लेकेसिस ३० — पुरानी बीमारी में इसे आजमाना चाहिये।

इनके अतिरिक्त एपिस, आर्सेनिक, पेरेरा ब्रेवा, चिमाफिला, बेन्जोयिक एसिड, नाइट्रिक एसिड, केली आयोड आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।



आवश्यक सूचना—बहुत दर्द होने पर तलपेट में गरम पानीका सेंक देना चाहिये। चित सोना चाहिये। मास, मछली, लालमिर्च और शराब आदि चीजें हानिकारक हैं। शर्बत पीनेसे पेशाब खुलासा होता है। बुखार होने पर साबूदाना और बार्ली आदि हलकी चीजें खानेको देना चाहिये

मूत्रनाली-प्रदाह ।

(Urithritis)

मूत्रनाली में सलाई डालने या पथरी निकालने के कारण चोट आनेपर यह रोग होता है। मूत्रनाली या मूत्रमार्ग में दर्द, जख्म, पेशाब करते समय जोरोंकी जलन खून या पीब निकलना आदि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

अर्निका ३x—चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसका सेवन करना चाहिये। साथ ही अर्निका, मदर-टिंचर दसगुने पानी में मिलाकर जलपट्टी चढ़ाने से बहुत लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६—प्रदाह के साथ बुखार, दर्द, प्यास, बेचैनी आदि लक्षण मोजूद होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६—बुखार के साथ प्रदाह, टपक जैसा दर्द इत्यादि।

केन्थरिस ३ या ६—पेशाब करते समय ज़ोरों की जलन होती हो तो इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम ३ x—यह भी इस रोग की एक लाभदायक औषधि है।

आवश्यक सूचना—चोट आदि लगनेके कारण मूत्रनाली में जो प्रदाह होता है, वह आसानी से आराम हो जाता है। सूजाक के कारण जो प्रदाह होता है, वह कठिन होता है। उसके लिये सूजाक की दवाओं में से लक्षणानुसार दवा चुननी चाहिये।

मूत्रनाली का संकोचन।

(stricture)

मूत्रनाली की मांसपेशियाँ सिकुड़ने पर वह आक्षेपिक संकोचन कहलाता है और श्लैष्मिक झिल्लियाँ पतली तथा

कड़ी हो जाने पर वह यान्त्रिक सकोचन कहलाता है। इस प्रकार का सकोचन होने पर मूत्रनाली बहुत तग हो जाती है, फलत, पहले थोड़ा थोड़ा पेशाब होता है,बाद को पेशाब होना एकदम ही रुक जाता है।

चिकित्सा।

आक्षेपिक संकोचन—रोग के आरम्भ में स्पिरिट कैम्फर मदर टिंश्चर दो-दो बूँद पाँच-पाँच-सात-सात मिनट के अन्तर से देना चाहिये। बुखार के साथ आक्षेप होने पर एकोनाइट ३x या ३। पुरानी बीमारीमे नक्सवोमिका ६या३०।

यान्त्रिक सकोचन—रोग के आरम्भ में क्लिमेटिज ३। इससे लाभ न होने पर फोस्फरस, डल्केमारा, केन्थरिस, साइलीसिया, थिओसिनिनम, प्रुनस्पाइ, एपिस, एकोनाइट, बेलेडोना, टेरिबिन्थीना, एसिडफस, आयोड, आर्सेनिक आदि दवाएँ आजमानी चाहिये।

आवश्यक सूचना—गरम पानी से नहलाना, मलद्वार और जननेन्द्रिय के बीच में गरम पानी से सेंकना आदि लाभ दायक है, आवश्यकता हो तो सलाई डाल कर पेशाब करा देना चाहिये। सलाई डालने के पहले एकोनाइट और सलाई डालने के बाद आर्निका की एक खुराक खिलाने से रोगी को विशेष कष्ट नहीं होता।

पथरी ।

(Gravel or Calculus)

पित्त पथरी की तरह मूत्रग्रन्थि या गुर्दे में भी छोटी बड़ी और भिन्न-भिन्न आकार की पथरियाँ उत्पन्न होती हैं। यहाँ उत्पन्न होने के बाद पथरी मूत्रस्थली में पहुँचती है और बाद को वहाँ से मूत्रनाली में जाती है। मूत्रनाली में पथरी आने पर मूत्र मार्ग बन्द हो जाता है और रोगी दर्द के कारण बेचैन हो जाता है। धीरे-धीरे पथरी बाहर निकल जाने पर तकलीफ घट जाती है।

बारबार पेशाब होना, पेशाब के समय या पेशाब करने के बाद लिङ्ग मुख में दर्द, पथरी बाहर न निकल जाने तक बार-बार पेशाब लगना, कफ या खून मिला पेशाब, कभी-कभी खून निकलना, मूत्रस्थली में पथरी आते समय पट्ठे और अण्डकोष आदि स्थानों में भयकर दर्द इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। इस रोग की चिकित्सा करते समय इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि पहले जितनी जल्दी हो सके रोगी की तकलीफ कम हो जाय और बाद को पथरी बाहर निकल जाय।

चिकित्सा।

वार्बेरिस मदरटिंचर—पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के अन्तर से इस दवा के पाँच-पाँच बूँद सेवन करने पर प्रायः सब तकलीफ दूर हो जाती है। आठ दस बार दवा खाने पर भी कोई लाभ न हो तो वार्बेरिस ६ क्रम व्यवहार करना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ३०—यह भी इस रोग की बढ़िया दवा है। वार्बेरिस से लाभ न होने पर १५-१५ मिनट पर इसे देना चाहिये। इससे पेशाब की तकलीफ तुरन्त दूर हो जाती है। बारबार पेशाब लगना, मूत्रयन्त्र में वेदना, रात में दर्द का बढ़ना, बदबूदार पेशाब और उसमें सफेद तली जमना, गण्डमाला धातु आदि इसके प्रधान लक्षण हैं।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—बारबार पेशाब लगना, पेशाब करने के पहले कमर में दर्द, पेशाब में ईंट के चूरे जैसी लाल तली जमना, कब्जियत, बदहज़मी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ओसिमम केनम ३X या २००—दर्द के कारण रोगी का छटपटाना, चिल्लाना, पेंच की तरह घूमना, या हाथ मलना,

लाल पेशाब, पेशाब में तलो जमना, इत्यादि। यह दवा न मिले तो इसके स्थान में तुलसी के पत्तो का रस पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के अन्तर से देना चाहिये।

सार्सापरीला १ या ३—मूत्राशय में शूल, पेशाब करने में तकलीफ, पेशाब में कफ या पीव का होना, पेशाब में छोटी-छोटी पथरियाँ दिखायी देना, पेशाब में तली जमना इत्यादि।

डायस्कोरिया १X—शरीर में ऐंठन जैसा दर्द, दर्द के कारण एक क्षण भी स्थिर न रहना, बहुत छटपटाना इत्यादि।

पेरेराब्रेवा १ या ३०—पेशाब में जलन और बूँद-बूँद पेशाब, कमर और मूत्रस्थली में दर्द, इत्यादि लक्षणो में और अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

केन्थरिस ३ या ६—मूत्रग्रन्थि में दर्द, मूत्रस्थली तक दर्द का फैलना, पेशाब का कष्टदायक वेग, जलन के साथ बूँद-बूँद पेशाब होना इत्यादि।

लीथियम कार्ब ६ या ३०—मूत्रस्थली में दर्द, जलन के साथ थोड़ा पेशाब, पेशाब में कफ दिखायी देना इत्यादि।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०—पेशाब में खट्टी गन्धयुक्त सफेद तली जमती हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त आर्टिका युरेन्स, कोक्कसकेक्टाई, एसिड-फास, किनिनम सल्फ, सीपिया, नेट्रमम्यूर, आक्जेलिक एसिड, बेलेडोना, ओपियम, नक्सवोमिका, एपोसाइनम, आइपोमिया रूटा, चायना, जिङ्कम, मर्क्युरियस और साइलीसिया आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करती हैं।

आवश्यक सूचना—रोग की तेजी के समय घंटे में दो, तीन या चार बार तक दवा देनी चाहिये। तेजी घटने पर दवा देने का समय भी बढा देना चाहिये। दर्द के स्थान में सेंकना ठंढे जल से नहाना, खुली हवा का सेवन करना, नियमित परिश्रम करना आदि लाभदायक है। चीनी, मिठाई, मास, मछली, घी के पके पदार्थ, शराब, चाय, काफी, तम्बाकू और चूना खाना मना है। सोडा, साफ पानी और गाय का ताजा दूध अधिक तादाद में पीना लाभदायक है। पेट में वायु न सञ्चित होने देना चाहिये। खाली पेट रहना भी ठीक नहीं है।

अनजान में पेशाव ।

(Involuntary Urination)

इस रोग को अंग्रेजी में Incontinence of Urine भी कहते है। मूत्रस्थली की पेशाव धारण करने या रोकने की शक्ति लोप हो जाने पर अनजान में पेशाव हो जाता है। पेट में कृमि होना, मूत्राशयको उत्तेजना, मूत्राशय में पथरी होना, मूत्रयंत्र की विविध बीमारियाँ आदि कारणों से यह रोग होता है। छोटे बच्चों को यह रोग होने पर वे विछौने पर मूत दिया करते हैं। स्त्रियों और बड़ी उम्रके पुरुषों का भी यह रोग होता है। रोगी को कभी-कभी स्वप्न में ऐसा मालूम होता है, मानो पेशाव लगने पर वह बाहर किसी स्थान में पेशाव कर रहा है, पर वास्तव में उसे विछौने पर पेशाव हो जाता है। किसी किसीको यह रोग होने पर बूँद बूँद पेशाव होने लगता है और किसी को इतने जोर से पेशाव लगता है कि वह उसके वेग को नहीं सम्हाल सकता और उसी क्षण पेशाव करने दौड़ता है।

चिकित्सा ।

सिना ३० या २००—कृमि के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। सूत जैसे छोटे कृमि होने पर सिना के बदले ट्युक्रियम १x व्यवहार करना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—नींद से चौंक चौंक कर जगना, बूँद बूँद पेशाब, पिछली रात में बिछौने पर अनजान में पेशाब।

कास्टिकम ६ या ३०—जाड़े के दिनों में रात दिन होने पर पेशाब करना अथवा खाँसते या हँसते समय पेशाब का निकल पड़ना, आधी रात के पहले ही बिछौने पर पेशाब करना।

बेंजोयिक एसिड ६ या ३०—बड़ी उम्र की लड़कियों को यह रोग होना, पेशाब में घोड़े के पेशाब जैसी तेज गन्ध इत्यादि।

फेरमभेट ६ या ३०—रात में कई बार पेशाब करना, पेशाब में नौसादर की गन्ध और कीचड़ जैसी तली जमना।

पल्सेटिला ६ या ३०—बैठने या चलने फिरने पर बूँद बूँद पेशाब होना, खाँसने पर बहुत सा पेशाब निकल पड़ना, रात में सो जाने पर अनजान में पेशाब।

सीपिया ६ या ३०—बड़ी उम्रके बच्चोंको यह रोग होना, नींद के बाद आरम्भ में ही अनजानमें पेशाब, पेशाबमें दर्द।

जेल्सीमियम ६ या ३०—वैसे अपने आप सदा पेशा
का टपकते रहना, लेकिन पेशाव करने की इच्छा करने प
पेशाव का न होना।

हायोसायमस ६ या ३०—वार वार थोड़ा थोड़ा पेशा
होना, रात में वारंवार उठा कर पेशाव कराने पर भी विछौ
पर पेशाव कर देना।

मूलेन आइल—बच्चों को इस दवा से भी वहुत ला
होता है।

सल्फर ३०—एक सप्ताह तक दिन में दो वार य
दवा सेवन करने पर इस रोग में आश्चर्यजनक लाभ होता है

इग्नेशिया ६—स्त्रियों को हिस्टीरिया रोग होने प
वेहोशी के समय पेशाव हो जाता हो तो इसे देना चाहिये।

एसिड फस ३X या ३०—अधिक वीर्यपातके कार
यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कोनायम ३—वूढ़ोंकी वीमारीमें इसे आजमाना चहिये

इनके अतिरिक्त इरिजिरन, नक्सवोमिका, मर्क्युरियस सल, स्पाइजिलिया, क्रियोजोट, फ्लोरल, कल्केरिया फस, थूजा आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—सोने के तीन घंटे पहले से पानी न पीना चाहिये। सोते समय और रात में समय समय पर उठ कर पेशाब कर देना चाहिये। दिन में पेशाब रोकने का अभ्यास बढ़ाना चाहिये। ठंढे पानी से नहाना, चित्त सोना, पुष्टिकर चीजें खाना और कठिन शय्यापर सोना लाभदायकहै।

खूनी पेशाब।

(Hoematuria)

गिर जाना, चोट लगना, अधिक परिश्रम करना, प्रदाह, प्रमेह अथवा किसी अन्य रोग के कारण खूनी पेशाब होता है। यह रोग होने पर खून कहाँ से आता है, यह जान लेने पर इलाज करनेमें सुविधा होती है। मूत्रग्रन्थि या गुर्देसे खून निकलने पर वह पेशाब के साथ मिलकर निकलता है, तादाद में अधिक होता है, साथ ही गुर्दे और कमर म दर्द मालूम होती है। मूत्रस्थली से खून आने पर पहले साफ पेशाब होता है, बाद को थोड़ा सा खून निकल पड़ता है। मूत्रनाली से खून आने पर वह पेशाब के साथ नहीं निकलता, बल्कि किसी दूसरे समय बूँद बूँद निकलता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—सरदी लगने के कारण यह रो
होना, खून मिला पेशाब, पेशाब के साथ दर्द इत्यादि।

आर्निका ३ या ६—चोट लगने के कारण यह रो
होने पर इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ६ या ३०—बहुत काँखना, जलन के सा
बूँद बूँद पेशाब होना, मूत्रग्रन्थि से लेकर पट्ठे तक दर्द, ख
मिला पेशाब इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यह इ
रोग की प्रधान दवा है।

केनेबिस ३ या ६—केन्थरिस से लाभ न होने प
इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ३० या २००—अधिक इन्द्रिय सेवा
कारण कमजोरी और उसके कारण खूनी पेशाब, जल्दी जल
पेशाब लगना, मूत्रद्वार में जलन इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—शराबियो को यह रोग होने पर अथवा ववासीर का खून बन्द हो जाने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

हेमामेलिस १X या ३X—काला काला खून पेशाब के साथ निकलने पर इसे देना चाहिये।

इरिजिरन ६ या ३०—पेशाब का रुक जाना, या पेशाब करते समय बहुत तकलीफ होना, बूँद बूँद पेशाब होना, पेशाब करने के बाद जलन।

इरेकथाइटिस१X—यह भी इस रोग की एक बढ़िया दवा है।

मेजेरियम ३—पेशाब करने के बाद ताजा खून निकलने पर इसे देना चाहिये।

लाइको पोडियम ३० या २००—पेशाब का प्रबलवेग, लेकिन बहुत देर तक बैठे रहने पर भी पेशाब का न होना, लाल रंग का थोड़ा पेशाब।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—गहरे लाल रंग का खूनी पेशाब, सूजाक के कारण यह रोग होना इत्यादि।

टेरिबिन्थीना ६ या ३०—खून मिला पेशाब, गुर्दे में जलन और दर्द। अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

जिङ्कम ६ या ३०—ऋतु या बवासीर आदि का खून रुक जाने के कारण मूत्रनाली से रक्त स्राव होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३० या ३०—कोई चर्मरोग दब जाने के बाद यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त सिकेली, मिलिफोलियम, मर्क्युरियस, लेकेसिस, कैम्फर, कल्केरिया कार्ब और आर्सनिक आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। यदि खूनी पेशाब होने का कोई कारण ठीक ठीक समझ में न आये तो केन्थ रिस, थ्रूस्पी बार्सा, सिनेसिओ, मिल्लि फोलियम या आर्सेनि-कम हाइड्रोजे निसेटम आदि दवाएं व्यवहार करनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी को एकदम स्थिर रहना चाहिये। गरम और उत्तेजक चीजें खाना पीना ठीक नहीं। धूप में रहना या काम करना मना है। हलकी और पुष्टिकर चीजें खाना चाहिये। स्त्री-संग बिल्कुल न करना चाहिये।

मूत्रकृच्छ्रता ।

(Strangury)

यह एक बहुत ही कष्टदायक रोग है । बारबार पेशाब लगना लेकिन कष्ट के साथ बूँद बूँद पेशाब होना अथवा बिल्कुल ही पेशाब का न होना इस रोग का प्रधान लक्षण है । पेशाब करते समय मूत्राशय प्रदेश में बहुत जलन भी होती है । सूजाक, पथरी, जरायु दोष, मूत्रग्रन्थि प्रदाह, गठिया, वात, हिस्टीरिया, क्रिमि आदि रोग होने पर अक्सर यह शिकायत पैदा हो जाती है । रोग पुराना होने पर पेशाब के साथ कफ या पीव भी निकलता है ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—सर्दी लगने के कारण यह रोग होना, बारबार पेशाब का वेग, लाल रंग का बूँद बूँद पेशाब होना, ज्वर भाव, उत्कण्ठा इत्यादि ।

केन्थरिस ६ या ३०—यह इस रोग की एक बढ़िया दवा है । वेग मालूम होने पर भी बूँद बूँद पेशाब होना, पेशाब का रुक जाना, पेशाब करते समय मूत्रनाली में कतरने जैसा दर्द और जलन ।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—गहरे लाल रंग का खूनी पेशाब, सूजाक के कारण यह रोग होना इत्यादि।

टेरिबिन्थीना ६ या ३०—खून मिला पेशाब, गुर्दे में जलन और दर्द। अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

जिङ्कम ६ या ३०—ऋतु या बवासीर आदि का खून रुक जाने के कारण मूत्रनाली से रक्त स्राव होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३० या ३०—कोई चर्मरोग दब जाने के बाद यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त सिकेली, मिलिफोलियम, मर्क्युरियस, लेकेसिस, कैम्फर, कल्केरिया कार्ब और आर्सेनिक आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। यदि खूनी पेशाब होने का कोई कारण ठीक ठीक समझ में न आये तो केन्थरिस, थूस्पी वार्सा, सिनेसिओ, मिलि फोलियम था आर्सेनिकम हाइड्रोजे निसेटम आदि दवाएँ व्यवहार करनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी को एकदम स्थिर रहना चाहिये। गरम और उत्तेजक चीजें खाना पीना ठीक नहीं। धूप में रहना या काम करना मना है। हलकी और पुष्टिकर चीजें खाना चाहिये। स्त्री संग बिल्कुल न करना चाहिये।

मूत्रकृच्छ्रता।

(Strangury)

यह एक बहुत ही कष्टदायक रोग है। बारबार पेशाब लगना लेकिन कष्ट के साथ बूँद बूँद पेशाब होना अथवा बिल्कुल ही पेशाब का न होना इस रोग का प्रधान लक्षण है। पेशाब करते समय मूत्राशय प्रदेश में बहुत जलन भी होती है। सूजाक, पथरी, जरायु दोष, मूत्रग्रन्थि प्रदाह, गठिया, वात, हिस्टीरिया, क्रिमि आदि रोग होने पर अक्सर यह शिकायत पैदा हो जाती है। रोग पुराना होने पर पेशाब के साथ कफ या पीब भी निकलता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—सर्दी लगने के कारण यह रोग होना, बारबार पेशाब का वेग, लाल रंग का बूँद बूँद पेशाब होना, ज्वर भाव, उत्कण्ठा इत्यादि।

केन्थरिस ६ या ३०—यह इस रोग की एक बढ़िया दवा है। वेग मालूम होने पर भी बूँद बूँद पेशाब होना, पेशाब का रुक जाना, पेशाब करते समय मूत्रनाली में कतरने जैसा दर्द और जलन।

कोनायम ३ या ६—प्रोस्टेट ग्रन्थि वढ़ जाने के कारण बीच बीच में पेशाव का रुक जाना, अधिक स्त्री संग करने के कारण यह रोग होना, वूढ़ों की बीमारी इत्यादि।

आर्सेनिक.६ या ३०—बहुत कष्ट के साथ थोडा पेशाव होना, पेशाव करने की इच्छा होने पर भी पेशाव का न होना इत्यादि।

एसिड फस ३०—पथरी होने की संभावना मालुम होने पर इसे देना चाहिये।

क्लिमेटिज ६ या ३०—पेशाव का रुक जाना, बहुत देर तक जोर लगाने पर पतली धार मे पेशाव होना, पेशाव में कफ जैसा पदार्थ निकलना।

लाइको पोडियम ६ या ३०—ऐसा मालूम होना मानो पेशाव होने चाहता है, लेकिन फिर भी पेशाव का न होना, पेशाव में लाल तली जमना।

बेलेडोना ३X—बच्चे या हिस्टीरिया रोगवाली स्त्रियों को यह रोग होना, कष्टकर पेशाव।



एपिस ६–पेशाव में बहुत जलन साथ ही मूत्रग्रं
जननेन्द्रिय या हाथ पैरोंमें सूजन होने पर इसे देना चाहिये

डाल्केमारा ६ या ३०–तर जगह में रहने, पानं
भींगने या वर्षाके दिनोंमें यह रोग होने पर इसे देना चाहिये

इनके अतिरिक्त केप्सीकम, पेट्रोसेलिनम, फेरम, फोपेर
और स्पिरिट कैम्फर आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना–पेशाव एकदम बन्द हो जाने प
सलाई देकर पेशाव करा देना चाहिये। सलाई देनेके पहले
एकोनाइट ३X और सलाई देनेके बाद आर्निका ३X की एक
खुराक देनेसे रोगीको अधिक तकलीफ नहीं होती।

मूत्रावरोध।

(Retention of Urine)

मूत्रस्थलीके मुखकी मास पेशियोंका आक्षेप, सूजाक के कारण मूत्रनाली संकोचन, प्रोस्टेट ग्रन्थिका बढ़ना, मूत्रस्थली प्रदाह, पथरी आदि अनेक कारणों से मूत्रस्थली में पेशाव होने पर भी पेशाव बाहर नहीं निकलता। पेशाव का बिलकुल न होना और तलपेट का फूल जाना इस रोगका प्रधान लक्षण है। इसे मूत्रावरोध या Retention of Urine कहते हैं।

खूनमें विषाक्त पदार्थ मिलने के कारण कभी कभी मूत्र ग्रन्थियो में पेशाब बनने का काम ही रुक जाता है। इस अवस्था में भी पेशाब नहीं होता, लेकिन इसमें मूत्ररोधकी तरह तलपेट नहीं फूलता। विकार, ज्वर, हैजा, सूजाक, मूत्र-ग्रन्थि प्रदाह, मूत्रस्थली प्रदाह या चोट लगने पर भी यह रोग होता है। इसे मूत्रनाश या Suppression of Urine कहते हैं।

किसी भी कारण से पेशाब रुक जाने पर पेशाब के साथ निकलने वाले दूषित पदार्थ शरीर मे ही रह जाते है और उनके कारण शिरमें दर्द, शिरमें चक्कर, जोरोंको नींद, प्रलाप, सबल आक्षेप, बेहोशी जैसी नींद, चेहरा मलीन, नाड़ी तेज, आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इस रोग को मूत्ररोधविकार या Uroemia कहते हैं। इन तीनों रोगोंको दवाएँ नीचे लिखी जाती है।

चिकित्सा।

मूत्रावरोध—स्पिरिट कैम्फर, नक्सवोमिका, कस्टिकम, नक्समस्केटा, इग्नेशिया, जेल्सीमियम, पल्सेटिला, वेराट्रम कार्व, एकोनाइट और केन्थरिस।

मूत्रनाश—एकोनाइट, टेरिबिन्थीना, ओपियम, इग्नेशिया केन्थरिस और केली बाइक्रोम।

मूत्ररोध-विकार—आयोडिन, टेरिबिन्थीना, मर्क्युरियस कर, आर्सेनिक, केन्थरिस, केली वाइक्रोम, क्युप्रम एसेट, ओपियम, आर्टिका युरेन्स, एमोनकार्ब, हाइड्रोसियानिक एसिड, क्रियोजोट और प्लम्बम इत्यादि।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—साधारण बीमारी, पेशाब न होने के कारण बच्चोंका चिल्लाना और जननेन्द्रिय पर हाथ रखना, पेशाब बिल्कुल न होना, बूँद बूँद होना अथवा खून मिला पेशाब होना।

आर्निका ६ या ३०—किसी तरहकी भी चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत कष्ट और जलन के साथ थोड़ा-थोड़ा पेशाब होना, पेशाब का वेग होने पर भी पेशाब का न होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पेशाब का निष्फल वेग, कब्जियत और पेट फूला हुआ, अनजान में बूँद बूँद पेशाब।

सीपिया ३०—तेज बुखार के कारण मूत्ररोध या मूत्र नाश, बहुत देर तक काँखने पर थोड़ा सा गँदला पेशाब होना, पेशाब में तेज बदबू।

डाल्केमारा ६—तर हवा लगने या पानीमें भीगने के कारण यह रोग होना, खून मिला गँदला पेशाब।

ओपियम ६ या ३०—मोह और आँखें अधमुँदी होने पर इसे देना चाहिये।

नक्समस्केटा ३X—हिस्टीरिया रोग वाली स्त्रियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। इग्नेशिया या जेलसीमियम से भी इसे लक्षण मे लाभ होता है।

टेरिबिन्थीना ३X—मूत्ररोधकी यह प्रधान दवा है। इससे लाभ न होने पर मर्क्युरियसकर, आर्सेनिक, केन्थरिस या केली बाइक्रोम आजमाना चाहिये।

क्युप्रम एसेट ३—मूत्ररोध के कारण बेहोशी जैसी नींद आती हो तो इसे देना चाहिये। इससे लाभ न होने पर ओपियम और ओपियम से लाभ न होने पर आर्टिका युरेन्स मदरटिञ्चर (पाँच पाँच बूँद) देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—वात रोग और सरदी लगने के कारण यह रोग होना, मूत्रस्थली का लकवा, खून जैसा पेशाव इत्यादि।

आवश्यक सूचना—जिस कारण से रोग हुआ हो उस कारण पर ध्यान रखकर इलाज करने से विशेष लाभ होताहै। मूत्रयंत्रके अन्यान्य रोगोंकी दवाओं में से भी लक्षणानुसार दवा चुनी जा सकती है। गरम पानीका वफारा लेना और पतले पदार्थ खाना लाभदायक है।

मधुमेह।

(Diabetes)

इस रोगका वास्तविक कारण अभी तक नहीं मालुम हो सका। लेकिन किसी तरह की चोट लगना, कोई स्नायविक रोग होना, भय, क्रोध, चिन्ता आदि मानसिक आवेग, अधिक मानसिक परिश्रम, अधिक मिठाई खाना या शराब आदि पीना, मैलेरिया वाले स्थानमें रहना, सरदी लगना, कोई कठिन बीमारी होना, गठिया या वात रोग होना, अधिक शारीरिक परिश्रम, अधिक स्त्री संग करना आदि इस रोगके उत्तेजक कारण माने जाते है।

यह रोग होने पर आरंभ में चमडा सूखा और रूखडा, शरीर की गरमी ६४ से लेकर ६७ डिग्री, तेज प्यास, वहुत भूख, कब्जियत या सूखा मल, वहुत पेशाव होना, शरीर का

सूखते जाना, श्वास प्रश्वास में बदबू इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। बादको भूख न लगना, शरीर दुबला पतला, पैर फूले हुए, दूषित फोड़े या कार्बङ्कल, स्त्रियोंके जरायु में खुजली, पुरुषों में कामेच्छा की वृद्धि इत्यादि उपसर्ग दिखायी देते हैं। इस रोगके रोगीको दिन भरमें ४ से लेकर २० सेर तक पेशाब होता है। पेशाब का वजन बढ़ जाता है। पेशाब में चीनी रहने के कारण वह मीठा होता है, इसलिये कभी कभी उसमें मक्खियाँ और चिउटियाँ लगती है। रोगीको रातमें बहुत प्यास लगती है और प्यासके कारण उसका गला सूख जाता है। यह रोग छोटे बच्चोंको नहीं होता। स्त्रियोंको कम होता है। युवा पुरुषों को होने पर उनकी शीघ्र मृत्यु हो जाती है। प्रौढ़ावस्था या बूढ़े उम्रके पुरुषों को अधिक होता है, पर वे युवकों की तरह बहुत जल्दी नहीं मरते। इस रोगके अधिकांश रोगियों को न्युमोनिया, क्षय या ऐसे फोड़े हो जाया करते हैं, जो दिनों दिन सड़ते चले जाते हैं और आसानी से आराम नहीं होते। प्रायः ऐसे ही उपसर्गों के कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एसिड फस १x या ६–किसी स्नायविक रोग के साथ यह रोग होना, बारबार पेशाब, रातके समय कमर में दर्द, शरीर का क्षय, धातुदौर्बल्य, उदासी या सुस्ती, चीनी मिला बहुत पेशाब पीठ, और गुर्देमें दर्द।

युरेनियम नाइट्रिकम 1X या 3—बदहजमी, प्यास, कब्जियत, नींद न आना, पेशाब में जलन, कमजोरी, पेशाब में बहुत चीनी इत्यादि लक्षणों में इसे देनेसे बहुत लाभ होता है।

लेकटिक एसिड १X या ३X—बहुत प्यास, बारंबार बहुत प्यास, चमड़ा मैला और सूखा, बहुत कब्जियत, जीभ चिकनी, पाकाशय का गोलमाल, बहुत कमजोरी, वात व्याधि।

सिजिजियम जेम्बोलिनम १X—रोगकी सभी अवस्थाओं में इससे लाभ होता है। इसे देने पर पेशाब का वजन और चीनीका अंश कम हो जाता है।

लाइको पोडियम ३० या २००—बहुत खिन्नता, चिड़चिड़ा स्वभाव, सदा भूख और प्यास लगना, पेट फूला हुआ, कब्जियत पेशाब में लाल तली जमना।

कल्केरिया फस ६X—बहुमूत्रके साथ फेफड़ेकी बीमारी होने पर इसे देना चाहिये।

एसेटिक एसिड ६ या ३०—पेशाब में चीनी की अधिकता, बहुत प्यास, ठंढा पानी पीनेसे पेटमें भार, बहुत पेशाब

होना, जलोदर, शोथ, बहुत कमजोरी, शरीर सूखा हुआ और मोमकी तरह विवर्ण।

टेरिबिन्थीना ३ या ६—पेशाव में चीनी, किसी काममें जी न लगना, पेशाब में जलन इत्यादि।

नेट्रम म्यूर ३०—पेशाव अधिक, खाँसते या चलते फिरते समय अपने आप पेशाव का निकल पड़ना, पेशाव करने के बाद दर्द।

आर्सेनिक ६ या ३०—शरीरका रग फीका, सड़ने वाले जख्म होना, जरासे परिश्रम में ही श्वास कष्ट और कलेजे का धड़कना, शोथ।

क्रियोजोट ६ या ३०—वारंवार पेशाव करने की इच्छा, लाल रगका या वर्ण हीन, वजनदार पेशाव, पेशाव का वेग न रोग सकना।

कोडिनम ३X—बहुत पेशाव, मानसिक विकृति, कमजोरी और अवसन्नता, अस्थिरता, समूचे शरीर में खुजली, शरीर और हाथ पैरका काँपना इत्यादि।

अर्जेन्टम मेटालिकम ३ या ६ विचूर्ण—पेशाब गॅदला और उसमें मोठी गन्ध, अधिक बार और अधिक तादाद में पेशाब होना, पैरके पजेमें सूजन, शरीर दुर्बल इत्यादि।

प्लम्बम ३०—यह भी इस रोगकी एक बढ़िया दवा है।

नेट्रम फस और नेट्रम सल्फ २००—यह दोनों दवायें चार पॉच सप्ताह सेवन करने से चीनीका भाग बहुत कम हो जाता है और चार पॉच मास तक सेवन करने पर अनेक रोगियों का रोग जडसे आराम हो जाता है।

इनके अतिरिक्त सिकेली, हेलोनियस, केन्थरिस, आर्निका, ओपियम, स्कुइला, परमङ्गाह, डिजिटेलिस, और नक्सवोमिका आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—स्वास्थ्य के नियमोंका पालन, भ्रमण, वायुपरिवर्तन, अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रम न करना लाभदायक है। खान पान पर विशेष ध्यान रखने से इस रोगसे छुटकारा मिल सकता है। चीनी, मिठाई और आलु एक दम खाना मना है। भात भी अधिक न खाना चाहिये। बिना मलाई का दूध खाया जा सकता है। मांस, मछली, दाल, रोटी, साग सब्जी, अडे, खट्टे फल, खारया

ककड़ी, मूँग, परवल, गूलर आदि चीजें सुपथ्य हैं। मीठे फल भी खाना मना है। पथ्य पर ध्यान रखने से रोग बढ़ने नहीं पाता और रोगी अधिक दिन जीता है।

मूत्रमेह।

(Diabetes Insipidus)

इस रोगमें भी मधुमेह जैसे ही लक्षण प्रकट होते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि इसमें मधुमेह की तरह पेशाबमें चीनी या अण्डलाल नहीं रहता। बहुत पानी पीना और बारंबार पेशाब करना इस रोगका प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।

स्कुइला ३X—रात दिन बारंबार बहुत अधिक तादाद में पेशाब होता हो तो इसे देना चाहिये।

कास्टिकम ६—बूढ़े पुरुषों को या हिस्टीरिया रोग वाली स्त्रियोंको यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

केलीकार्ब ६—रातमें बारंबार पेशाब करने के लिये उठना, पेशाबका वेग होने पर भी, बहुत देर में पेशाब होना।

फोस्फरिक एसिड ६–बारंबार अधिक तादाद में पानी जैसा पेशाब, रातमें बारबार पेशाब लगना।

सिला ६–बारबार पेशाब करने के कारण कमजोरी और अस्वस्थता।

काल्सबैड ६—पानी पीनेके बादही पेशाब करने दौड़ना इसका प्रधान लक्षण है।

इनके अतिरिक्त इग्नेशिया, एसेटिक एसिड, नक्सवोमिका, साइना, युपेट पर्फ तथा मधुमेह की अन्यान्य दवाएँ भी व्यवहार की जाती है। पथ्य और परहेजी के नियम भी मधुमेह की तरह ही पालन करने चाहिये।

जननेन्द्रिय के रोग।

अण्डकोष प्रदाह।

(Orchitis)

इस रोगको एकशिरा या सांजर भी कहते हैं। यह रोग होने पर अण्डकोष अथवा अण्डकोष की थैलीमें प्रदाह पैदा

हो जाता है। प्रायः इसमें एक ही ओरका अडकोष प्रदाहित होता है। अण्डकोष का लाल हो जाना, फूल जाना और उसमें दर्द होना इसका प्रधान लक्षण है। कभी कभी अण्डकोष में पीव पड़कर वह अपने आप फूट भी जाता है। कभी कभी इस रोगके साथ बुखार और के आदि लक्षण भी प्रकट होतेहैं। कभी कभी अमावस्या और पूर्णिमा को इस रोगकी तकलीफ बढ़ जाया करती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६ या ३०—प्रदाह के साथ जोरोंका बुखार, अण्डकोष में दर्द और सूजन, अण्डकोष का कड़ा हो जाना।

आर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण यह रोग होना, अण्डकोष फूला और कड़ा, उसमें दर्द इत्यादि।

क्लिमेटिज ६ या ३०—सूजाक के कारण यह रोग होना, अण्डकोष पत्थर की तरह कड़ा, उसमें दर्द, मूत्रनाली की उत्तेजना, स्पर्श बरदास्त न होना, रातमें बिछौने की गरमी से तकलीफ का बढ़ना।

रोडोडेन्ड्रन ३ या ६—बहुत तन्नाहट, तलपेटसे लेकर जाँघो तक दर्दका फैल जाना, अण्डकोष फूला और कड़ा, दाहिने अण्डकोष का प्रदाह, सूजाक के बाद यह रोग होना।

रसटक्स ६ या ३०—दर्द और सूजन, सरदी लगने के कारण यह रोग होना, सरदी लगने पर तकलीफ का चढना।

हेमामेलिस 1^X या ३—स्नायविक वेदना, पाकाशय तक दर्दका वढ जाना, जी मिचलाना, हलका वुखार, वहुत तवाहट और विपर्य भाव।

पल्सेटिला ६ या ३०—रोगकी आरम्भिक अवस्था में वुखार होने पर इस दवासे भी काफी लाभ होता है।

मर्क्युरियस ६ या ३०—सुजाक और गरमी के कारण यह रोग होना, अण्डकोष फूला, कड़ा और लाल।

साइलीसीया ३०—अमावश्या, और पूर्णिमा को तक-लीफ वढ जाती हो तो इसे देना चाहिये।

स्पञ्जिया ६—अण्डकोष में सूजन और दर्द, फूलकर कड़ा हो जाना, विछौने पर हिलने डोलने या कपड़ा छू जाने से टपक जैसा दर्द होना।

अरममेट ६ या ३०—गरमी या पारेके दोषसे यह रोग होना, दाहिने अण्डकोष की बीमारी, छूने से दर्दका बढ़ना इत्यादि।

कोनायम ६, ३०या २००—बूढ़े आदमियों को यह रोग होना, पुरुषत्व हीनता, अण्डकोष फूला और कड़ा।

थूजा ६ या ३०—सुजाक का स्राव बन्द होने के कारण यह रोग होना, साथही गँठिया, अण्डकोष में शूल जैसा दर्द, चलने फिरने से दर्दका बढना।

लाइको पोडियम ३०—पुरानी बीमारी, बायें अण्ड-कोषका प्रदाह, जाँघों तक तनाहट।

इनके अतिरिक्त ग्रेफाइटिस, पपिस, जेल्सीमियम, स्टेफी सेग्रिया, सल्फर, सीपिया, हिपर आदि दवाओं से भी लक्षणा-नुसार लाभ होता है। हेमामेलिस धावन का बाह्य प्रयोग फायदेमन्द है।

अण्डकोष की वृद्धि।

(Hydrocele)

यह शोथ की जाति का एक रोग है। अण्डकोष की दोनों गोलियाँ या कोडियाँ दो पर्दों से ढकी हुई हैं अथवा यों कहिये कि दोहरे चमड़े की एक थैली में अण्डकोष की गोलियाँ नसों के सहारे लटकी रहती हैं। इस थैली में एक तरह का जलीय पदार्थ टपक टपक कर आता है और वह थैली के चमड़े को तर रखता है। किसी कारण से इस थैली में जब अधिक जल सञ्चित होता है और वह नियमानुसार शोषित नहीं होता, तब अण्डकोष फूलकर बड़ा हो जाता है। यह रोग एक या दोनों अण्डकोषों में हो सकता है। लोग इसे पानी उतरना भी कहते हैं। यह रोग होने पर पहले कोई तकलीफ नहीं होती। धीरे-धीरे पानी बढ़ता जाता है और अण्डकोष फूल कर बहुत बड़ा हो जाता है। दर्द और तनाव कभी रहती है और कभी नहीं भी रहती। रोग बढ़ने पर अण्डकोष का चमड़ा और उसकी नसें फूलकर मोटी हो जाती हैं। कभी-कभी रोग बढ़ जाने पर अण्डकोष में पीब पैदा होकर प्रदाह भी हो जाता है।

अरममेट ६ या ३०—गरमी या पारेके दोषसे यह रोग होना, दाहिने अण्डकोष की बीमारी, छूने से दर्दका बढ़ना इत्यादि।

कोनायम ६, ३०या २००—बूढ़े आदमियों को यह रोग होना, पुरुषत्व हीनता, अण्डकोष फूला और कड़ा।

थूजा ६ या ३०—सूजाक का स्राव बन्द होने के कारण यह रोग होना, साथही गँठिया, अण्डकोष में शूल जैसा दर्द, चलने फिरने से दर्दका बढ़ना।

लाइको पोडियम ३०—पुरानी बीमारी, बायें अण्डकोषका प्रदाह, जाँघों तक तनाहट।

इनके अतिरिक्त ग्रेफाइटिस, एपिस, जेल्सीमियम, स्टेफीसेग्रिया, सल्फर, सीपिया,हिपर आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। हेमामेलिस धावन का वाह्य प्रयोग फायदेमन्द है।

होमियोपैथिक चिकित्सा

कोनायम ६ या ३०—अण्डकोष फूला और कड़ा, चोट लगने के कारण यह रोग होना, वृद्धों की बीमारी।

रसटक्स ६ या ३०—सरदी लगने के कारण यह रोग होना, दर्द, लाली, सूजन इत्यादि लक्षणों में और रोडोडेन्ड्रन से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ६—बहुत छोटी उम्र के बच्चों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। यदि यह रोग जन्म से ही हो तो ब्रायोनिया ३ देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त हेमामेलिस, आर्निका, आयोड और सल्फर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—सुई या बेल के काँटे से दो तीन छेद कर अण्टकोष का पानी निकाल देना अच्छा है। ऐसा करने में भय मालूम हो तो चीरा लगवा देना चाहिये। लंगोट पहनना लाभदायक है। अधिक जलपान या जलीय पदार्थ न खाने चाहिये।

चिकित्सा ।

एपिस ६ या ३०—अण्डकोप में सुजन और विपर्प जैसी लाली होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—गण्डमाला धातु वाले बच्चों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

रोडोडेन्ड्रन ३ X या ६—नयी बीमारी, दाहिने अण्डकोप का बढ़ना, तन्नाहट जैसा दर्द।

स्पञ्जिया ३ X या ६—अण्डकोप फूला हुआ, लाली और टनक जैसा दर्द।

पल्सेटिला ६ या ३०—बायें अण्डकोप की बीमारी, धीरे-धीरे अण्डकोप का बढ़ते जाना, किसी तरहका दर्द या तकलीफ न होना।

साइलीसिया ६ या ३०—अमावश्या और पूर्णिमा को रोग बढ़ता हो तो इसे देना चाहिये।

कोनायम ६ या ३०—अण्डकोष फूला और कड़ा, चोट लगने के कारण यह रोग होना, वृद्धों की बीमारी।

रसटक्स ६ या ३०—सरदी लगने के कारण यह रोग होना, दर्द, लाली, सूजन इत्यादि लक्षणों में और रोडोडेन्ड्रन से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ६—बहुत छोटी उम्र के बच्चों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। यदि यह रोग जन्म से ही हो तो आयोनिया ३ देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त हेमामेलिस, आर्निका, आयोड और सल्फर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—सुई या बेल के काँटे से दो तीन छेद कर अण्डकोष का पानी निकाल देना अच्छा है। ऐसा करने में भय मालूम हो तो चीरा लगवा देना चाहिये। लंगोट पहनना लाभदायक है। अधिक जलपान या जलीय पदार्थ न खाने चाहिये।

हस्त मैथुन ।

(Masturbation)

हस्तमैथुन एक रोग नहीं बल्कि एक कुटेव या बुरीआदत है, जिसके कारण अनेक रोगों का जन्म होता है । हस्त द्वारा अस्वाभाविक रूप से रति क्रिया सम्पादन कर वीर्य-पात करने को हस्त मैथुन कहते हैं। बच्चे जब बाल्यावस्था अतिक्रमण कर किशोरावस्था में पदार्पण करते हैं, उस समय संगति दोषसे उन्हें यह आदत लग जातीहै । अश्लील पुस्तकें पढ़ना, प्रेम लीला पूर्ण नाटक सिनेमा देखना, गन्दी बातें सुनना, पशुओं की रमण क्रिया देखना इत्यादि कारणों से भी किशोर किशोरियों के मन में संगमेच्छा उत्पन्न होती है और वे इस प्रकार अस्वभाविक उपाय से वीर्यपात करने लगते हैं ।

बच्चों को यह आदत लग जाने पर उनका चेहरा निस्तेज और फीका हो जाता है और एकान्तप्रियता, लज्जाशीलता, भीरुता, मानसिक और शारीरिक निस्तेजता, कर्कश स्वर स्मरण शक्ति का ह्रास इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं । यदि शीघ्र ही इसका कोई उपाय किया गया और बच्चों को इस रोग से छुटकारा मिल गया, तब तो गनीमत है वर्ना कुछ ही दिनों में नसें कमजोर पड़ जाने के कारण स्वप्न में या मल मूत्र के साथ वीर्य का निकलना,

और मानसिक कमजोरी और अन्त में क्षय तक की बीमारी हो जाती है। आरंभ में ही इस व्याधिका इलाज न करने पर बच्चों का जीवन ही नष्ट हो जाता है और गार्हस्थ्य जीवन में उन्हे कोई आनन्द ही नहीं आता।

माता पिताओं को बच्चों पर सन्देह होते ही उन पर कड़ी दृष्टि रखनी चाहिये और उन्हें समझा बुझा कर भले कामों में लगाकर तथा सभी सम्भव उपायों को काम में लाकर इसे चेष्टा से विरत रखना चाहिये। बच्चों को बुरे नौकर चाकर या लड़के लड़कियों के साथ बैठने उठने न देना, उन्हें गन्दी पुस्तकें न पढ़ने देना, थियेटर, बायस्कोप आदि देखने से रोकना, नीति ज्ञानकी बातें बतलाना, सदा किसी न किसी काम में लगाये रखना, उनसे व्यायाम करवाना आदि ऐसी बातें हैं, जिनके अवलम्बन से बच्चों को इस कुटेव से छुटकारा मिल सकता है। नीचे कुछ ऐसी दवाओं के नाम दिये जा रहे हैं जिनके सेवन से इस कुटेव और इसके कुफलों से परित्राण मिल सकता है।

चिकित्सा।

केन्थरिस ३ या ६—बच्चों को यह दवा खिलाने से उनकी संगमेच्छा घट जाती है और यह आदत छूटने में सहायता मिलती है।

प्लाटिना ६—वालिकाओं की यह आदत छुड़ाने के लिये यह दवा देनी चाहिये।

ओरिगेनम मेजोरेना ३—किसी किसी के मत से यह दवा भी इस आदत को छुड़ाने के लिये वहुत अच्छी है।

कल्केरिया कार्व ३०—हस्त मैथुन के कारण कमजोरी और सदा भय मालुम होने का दोष उत्पन्न हो गया हो तो इसे देना चाहिये।

चायना ३०—जननेन्द्रिय की कमजोरी और शिथिलता, शरीर का वहुत दुर्वल हो जाना।

ककुलस ६—पीठ में कसकर पकड़ रखने जैसा और उसके नीचे दर्द मालूम होना।

एसिडफस ६ या ३०—वहुत कमजोरी, वहुत पेशाव होना, ज़रामें ही जननेन्द्रिय का उत्तेजित हो उठना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—वदहजमी, कब्जियत और शिर में दर्द।

फोस्फरस ३० या २००—बहुत कमजोरी, शारीरिक और मानसिक शक्तियों का ह्रास हो जाना।

आवश्यक सूचना—नियमित व्यायाम, ठंढे जल से स्नान, एकान्त वासका त्याग, सदा किसी न किसी काम में लगे रहना, दिमाग को किसी भी समय बुरी बातें न सोचने देना आदि लाभदायक है। गरम मसाला तथा उत्तेजक पदार्थ न खाने चाहिये। सात्विक भाव से रहना और सात्विक पदार्थ खाने चाहिये।

धातु दौर्बल्य।

(Spermatorrhoea)

इस रोगको शुक्रमेह या धातुकी बीमारी भी कहते है। अनजान में या इच्छा न होने पर भी वीर्यपात हो जाना, इस रोगका प्रधान लक्षण है। यह रोग अधिकाश में हस्त मैथुन और अधिक स्त्री सग करने के कारण होता है। कभी कभी बवासीर, जननेन्द्रिय की खुजली, कृमि, कब्जियत आदि अन्यान्य रोगों के कारण भी यह शिकायत पैदा होती है, परन्तु वह बहुत साधारण होती है। हस्तमैथुन आदिके कारण जो रोग होता है, वह बहुत भयकर होता है और उससे मनुष्य का जीवन ही नष्ट हो जाता है।

यह रोग होने पर जननेन्द्रिय का कमजोर हो जाना और उसके कारण वीर्य धारण करने की शक्ति का घट जाना,

नक्सवोमिका ३० या २००—स्वप्नदोष, स्मरण शक्ति की कमी, हस्तमैथुन का कुफल, शिर और पीठमें दर्द, अधिक इन्द्रिय सेवाके कारण यह रोग होना, सहज में ही कामेच्छा, परन्तु संगके समय इन्द्रिय का पूर्णरूप से उत्तेजित न होना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—स्वप्नदोपके बाद शिर और कलेजेमे दर्द, हाथपैर ठंढे, गण्डमाला धातु, थोडे परिश्रममें ही थक जाना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—हस्तमैथुन या स्वप्नदोपके कारण बहुत कमजोरी हो जाने पर इसे व्यवहार करना चाहिये, इस में वीर्यपात जनित सुस्ती तुरन्त दूर करने का गुण है।

अरममेट ६ या २००—बहुत उदासी, आत्महत्या करने की इच्छा, पुरुषाङ्गका शिथिलता और उसके कारण वीर्यपात, सगम की इच्छा बहुत तेज, लेकिन इन्द्रिय का उत्तेजित ही न होना।

लाइकोपोडियम ३० या २००—पुरुषेन्द्रिय का पूर्ण रूपसे उत्तेजित न होना, उसी अवस्था में बहुत सा वीर्यपात,

वीर्यपात के बाद मूत्र नालीमें जलन, नपुंसकता, लिङ्ग शीतल और सिकुडा हुआ, कब्जियत और बवासीर की शिकायत, बूढ़ोंको यह रोग होना।

फोस्फरस ३० या २००—प्रबल सगमेच्छा, सदा स्त्री संग या हस्तमैथुन करने की प्रकृत्ति, कामवासना का विचार आते ही इन्द्रिय का उत्तेजित हो उठना, बहुत कमजोरी, छाती में दर्द इत्यादि। लम्बे और पतले शरीर के युवकों को इससे विशेष लाभ होता है।

डिजिटेलिन १ या ३ विचूर्ण—अधिक स्त्री संग या हस्त मैथुन के कारण वीर्यपात, स्वप्नदोष, कमजोरी साथही कलेजे का धडकना, कलेजे में दर्द, काममें मन न लगना, इत्यादि। यह दवा केवल सुवह के ही वक्त सेवन करनी चाहिये। इन लक्षणों में डिजिटेलिस से भी लाभ होता है।

कल्केरिया फस १२ या ३०—हस्तमैथुन के कारण धातु दौर्बल्य और वीर्य नाशकी यह भी बढ़िया दवा है।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—हस्तमैथुन के कारण शरीर का दुर्बल हो जाना, आँखके चारों ओर नीले दाग, चेहरा निस्तेज, लज्जाभाव इत्यादि।

एनाकार्डियम ३० या २००—धातु दौर्बल्य, दिमाग का कमजोर हो जाना, स्मरण शक्तिकी कमी, मल और मूत्र त्याग के समय वीर्य निकलना।

पिक्रिक एसिड ६ या ३०—संगम के समय कुछ ही देरमें पुरुपेन्द्रिय का शिथिल हो जाना और बहुत सा वीर्यपात होना, स्त्री सगकी प्रवल इच्छा, रात भर नींद न आना नपुंसकता इत्यादि।

आवश्यक सूचना—सात्विक भोजन, सात्विक जीवन, सद्विचार, सद्ग्रन्थ वांचन आदिको अपनाना चाहिये। कामोद्दीपक सभी बातोंका त्याग करना चाहिये।

स्वप्नदोष।

(Noeturnal Pollution)

रात या दिनमें सोते समय रतिक्रिया विषयक स्वप्न देखना और स्वप्नमेंही वीर्यपात होना, स्वप्नदोष कहलाता है। वास्तवमें यह धातु दौर्बल्य का एक लक्षण मात्र है। अधिक स्त्री संग या हस्तमैथुन आदिके कारण धातु दौर्बल्य होनेपर युवकों को यह रोग हो जाया करता है। अनेक बार मानसिक व्यभिचार या निरन्तर कामचिन्ता करने के कारण, उन नवयुवकों

को भी यह रोग हो जाता है, जो हस्तमैथुन या स्त्री संग आदि कभी नहीं करते। यह रोग सभी अवस्था के आदमियों में पाया जाता है, परन्तु बडी उम्रके विद्यार्थी और नवयुवक इसके विशेष रूपसे शिकार होते हैं। इस रोगके कारण भीतर ही भीतर उनका बडा अपकार होता है, क्योंकि शर्मके कारण न तो वे इस रोगका हाल किसीसे कह ही सकते हैं न स्वयं कोई इलाज ही कर सकते हैं। इसके परिणाम स्वरूप स्मरण शक्तिकी कमी, बुद्धि की क्षीणता, मानसिक शक्तियों का ह्रास, शारीरिक दुर्बलता, लावण्य नाश, आँखोंके चारों ओर काले दाग पड़ना, शिरमें चक्कर, मन्दाग्नि, उदासीनता आदि लक्षण प्रकट होते हैं। बच्चोंके माता पिता और अभिभावकोंको बच्चोंमें यह लक्षण देखते ही उनका इलाज कराना चाहिये। रोगके कारण पर ध्यान रख कर इलाज करने से शीघ्र लाभ होता है।

चिकित्सा।

चायना ६ या ३०—बारंबार जननेन्द्रिय की उत्तेजना और स्वप्नमें वीर्य पात, भूख न लगना, आलस्य, हस्तमैथुन के कारण यह रोग होना इत्यादि। यह स्वप्नदोष की बढ़िया दवा है। स्वप्नदोष के बाद इसकी एक खुराक खानेसे सुस्ती और कमजोरी तुरन्त दूर हो जाती है।

वेराइटा कार्व ६—स्वप्नदोषकी यह भी एक बढ़िया दवा है।

अरसमेट ६ या ३०—हस्तमैथुन अथवा स्वप्नदोष के कारण सदा उदास रहना, आत्महत्या करनेकी इच्छा, पेशाब के समय वीर्य जैसा लसदार पदार्थ निकलना।

कार्वोवेज ६—सो जानेपर अनजान में वीर्यपात, अजीर्ण दोष, पेटमें वायु सञ्चय।

एसिडफस ६ या ३०—बहुत दिनो तक स्वप्नदोष होनेके कारण शारीरिक और मानसिक दुर्बलता, मलत्याग के समय वीर्यपात।

सीपिया ६ या ३०—अधिक स्वप्नदोषके कारण स्मरण शक्तिकी कमी, थकावट, हताश भाव, शिरमें भार, पुरुषाङ्ग की शिथिलता इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बहुत कब्जियत,साथही स्वप्न-दोष, मलत्यागके समय वीर्यपात, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

कोनायम ६ या ३०—स्वप्नदोष, पीठमें दर्द, कामेच्छा होने पर भी जननेन्द्रिय का उत्तेजित न होना, वीर्यपात होते समय कष्ट।

वोविष्टा ६ या ३०—अधिक स्त्री सग के कारण यह रोग होना, शिरमें दर्द और भार मालूम होना।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—कामोद्दीपक स्वप्न देखना और उसी समय वीर्यपात होना, सदा उदास रहना, चिड़-चिड़ा स्वभाव, स्मरण शक्तिकी कमी, रोग के विषय में सोचते रहना इत्यादि।

सार्सापरीला ३ या ६—रातमें स्वप्न दोष, सुबह कमर में दर्द और कमजोरी मालूम होना।

फोस्फरस ६ या ३०—अनजान में वीर्यपात, स्नायविक दुर्बलता, जननेन्द्रिय में बहुत उत्तेजना होने के कारण हस्तमैथुन या स्त्री संग करना।

सोलेनियम ३०—स्वप्न देखकर वीर्यपात होने की यह भी एक बढ़िया दवा है। अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमानी चाहिये।

ओपियम ६ या ३०—नींद में प्रेमलीला के स्वप्न देखना और उसके कारण जननेन्द्रिय का उत्तेजित हो उठना, इसके बाद जागने पर वीर्यपात होना।

कुकुलस ६ या ३०—अत्यन्त कामेच्छा, रात में स्वप्नदोष, अण्डकोष में दर्द इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे और थुलथुले शरीर-वाले रोगियों को इस दवा से काफी लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त डिजिटेलिस, इरिजिरन, केलीब्रोमेटम लेकेसिस, मर्क्युरियस, थूजा, जिङ्कम, पिक्रिक एसिड और सल्फर आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। धातु दौर्बल्य की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—हस्तमैथुन और अधिक स्त्री सग आदि बुरी आदतें छोड़ देनी चाहिये। कामोद्दीपक विचार, नाटक, उपन्यास या गन्दी पुस्तकें पढ़ना, थियेटर, बायस्कोप देखना, कामोद्दीपक बातें करना या सुनना इत्यादि एकदम छोड़ देना चाहिये। नित्य ठंढे पानी से नहाना, नियमित व्यायाम करना, स्वास्थ्य वर्धक चीजें खाना, कठिन शैय्या में सोना, तड़के उठना, अच्छी बातें करना इत्यादि लाभदायक है। सोने के पहले पुरुषेन्द्रिय और पैरों को ठंढे जल से धो डालना फायदेमन्द है। सभी तरह के उत्तेजक पदार्थों का खाना पीना त्याग देना चाहिये।

कामोन्माद ।

(Nymphomania)

सदा अश्लील या कामोद्दीपक बातें सोचते रहना, गन्दी पुस्तकें पढना, जननेन्द्रिय की खुजली, अधिक विलासिता, आलस्य, जननेन्द्रिय की विकृति आदि कारणों से स्त्री और पुरुषों को यह रोग हो जाया करता है। यह रोग होने पर मनुष्य की काम वासना बहुत बढ़ जाती है और उसकी पूर्ति के लिये वह मान, लज्जा, भय और न्याय अन्याय तक का विचार छोड देता है। इसी को कामोन्माद कहते हैं। नगे हो जाना, तरह तरह के इशारे करना, वेशरमी के साथ बातें करना, हस्तमैथुन आदि अप्राकृतिक क्रियाएं करना आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। अच्छी तरह इलाज न होने पर यह रोग अवसाद या क्षय जैसे भयकर रोगों के रूप में परिणत हो जाता है।

चिकित्सा

केन्थरिस ६ या ३०—पुरुषों के कामोन्माद की यह बढ़िया दवा है। स्त्रियों को भी नयी उम्र में इससे लाभ होता है।

प्लाटिना ६ या ३०—स्त्रियों के कामोन्माद की यह बढ़िया दवा है।

कैनेबिस इन्डिका ६ या ३०—तरह तरह की अश्लील कल्पनायें करना, पुरुषों को यह रोग होना इत्यादि।

एगारिकस ६ या ३०—प्रबल कामेच्छा, जननेन्द्रिय की खुजली, सगम के बाद अवसन्नता इत्यादि लक्षणों के साथ स्त्रियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कोका १X—स्त्रियों की बीमारी में इस दवा से भी बहुत लाभ होता है।

हायोसायमस ६, ३० या २००—अश्लील बातें करना, अश्लील गाने गाना, नंगे हो जाना, बहुत प्रबल कामेच्छा इत्यादि लक्षणों में स्त्री और पुरुष दोनों को इस दवा से लाभ होता है।

नक्सवोमिका ३० या २००—आलसी स्वभाव के आदमियों और युवकों की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। खासकर जब कामोन्माद के साथ कब्जियत की भी शिकायत हो।

सेवाडिला ६ या ३०—पेट में छोटे कृमि होने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ३० या २००—अविवाहित व्यक्तियो और विधवा स्त्रियों के कामोन्माद में इसे देना चाहिये।

म्युरेक्स ६ या ३०—असह्य कामेच्छा, साधारण स्पर्श से ही कामोद्दीपन इत्यादि।

लाइका पोडियम ३० या २००—वृद्ध और कमजोर आदमियों का यह रोग होना, सगम के समय नींद का आना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—रोगी को सदा ऐसे उपदेश देने चाहिये ताकि उसकी धार्मिक और नैतिक भावना जागरित हो। उसे सदा अच्छे कामों में लगाये रखना चाहिये। हलके और पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये। स्नान, विशुद्ध वायु का सेवन और व्यायाम आदि स्वास्थ्य रक्षा के नियमों का पालन करना चाहिये।

जेल्सीमियम ६ या ३०—नसों की कमजोरी के कारण इन्द्रिय का पूर्ण रूप से उत्तेजित ही न होना, इन्द्रिय की शिथिलता।

कल्केरिया कार्ब—गण्डमाला धातु, मोटा और थुल-थुला शरीर, जरा सा परिश्रम करते ही हाँफने लगना इत्यादि लक्षणोंवाले पुरुष या स्त्री को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३० या २००—सदा आलसी की तरह पड़े रहना, कोई भी काम करने की इच्छा ही न होना, बहुत कब्जियत इत्यादि लक्षणों के साथ यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सेवाल सेकलेटा मदर टिञ्चर—की खुराक पाँच से लेकर दस बूँद तक सेवन करने पर नपुंसकता और कमजोरी में इससे काफी लाभ होता है।

पिडफो ३०—अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर अन्त में इसे आजमाना चाहिये।

इनके अतिरिक्त आर्निका, हाइपेरिकम, फ्युरम एसेट, सेलिनियम, सल्फर, नाइट्रिक एसिड, एनाकार्डियम आदि

दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। धातु दौर्बल्य, स्वप्नदोष आदि रोगों की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—सात्विक भाव से रहना चाहिये। घी, दूध, मक्खन आदि पुष्टकर चीजें खाना चाहिये। विज्ञापनों के फेर में पढ़कर उत्तेजक दवाओं का सेवन भूल कर भी न करना चाहिये। इससे रही सही शक्ति भी नष्ट हो जाती है और रोग असाध्य हो जाता है।

सूजाक या प्रमेह।

(Gonorrhœa)

गोनोकोक्कस नामक एक विषाक्त जीवाणु इस रोग का मूल कारण है। रोगी पुरुष के संसर्ग से नीरोग स्त्री को और रोगिनी स्त्री के संसर्ग से नीरोग पुरुष को यह रोग हो जाता है। इसका विष जननेन्द्रिय में प्रवेश करने पर एक तरह का प्रदाह सा पैदा होता है, और पीव जैसा स्राव निकलता है। यह रोग दो भागों में बाँट दिया गया है। एक साधारण सा होता है। लोग उसे एकाङ्गीन या अप्रकृत प्रमेह कहते हैं। इसका विष केवल जननेन्द्रिय या मूत्रयन्त्रों तक ही फैलता है। दूसरा प्रकृत या सर्वाङ्गीन प्रमेह कहलाता है। यह कठिनाई से आराम होता है और इसका विष शरीर के समस्त अंगों में फैल जाता है। अधिकांश लोगों को साधारण कोटि का ही

सूजाक होताहै और वह चिकित्सा करने पर आसानोसेआराम हो जाता है। हस्तमैथुन, अधिक स्त्री संग, स्वप्न दोष, गरम और उत्तेजक चीजें खाना, स्तम्भन की गरम दवाएँ व्यवहार करना आदि कारणों से भी सूजाक जैसी एक बीमारी हो जाती है, परन्तु वह वास्तविक सूजाक नहीं कहा जा सकता। वास्तविक सूजाक वही है जो सूजाक रोगी के सहवास से नीरोग आदमियों को हो जाया करता है।

चिकित्सकों ने चिकित्सा की सुविधा के लिये इस रोग की कई अवस्थाएँ निर्धारित की हैं, परन्तु हम इसे दो ही भागो में विभक्त करेंगे—(१) नया सूजाक (२) पुराना सूजाक। इन दोनों अवस्थाओ के लक्षण नीचे दिये जाते है।

सूजाक का विष शरीर में प्रवेश करने पर तीन चार दिन के अन्दर पहले जननेन्द्रिय की उत्तेजना, बाद को मूत्रनाली में खुजली और सुड़सुड़ाहट, लाली, सूजन, जलन और पतला पतला सफेद स्राव आदि लक्षण प्रकट होते हैं। धीरे धीरे प्रदाह और सूजन बढ़ती जाती है, सफेद या पीले रंग का पीव अधिक तादाद में निकलने लगता है और कभी कभी खून निकलना, पेशाब करते समय बहुत दर्द होना, मूत्रनाली में बहुत जलन, मूत्रनाली भीतर से मानो जुड़ी जा रही है ऐसा होना बारंबार पेशाब का वेग, बड़े कष्ट और पतली धार से बहुत थोड़ा या बूँद बूँद पेशाब होना, पेशाब करते समय काँखना इत्यादि लक्षण बहुत ही तीव्र रूप में प्रकट होते हैं।

इस अवस्था में समूचा लिङ्ग में बहुत सूजन, लाली और दर्द पैदा हो जाता है। सूजन के कारण कभी कभी लिङ्गमुण्ड या सुपारी को ढकने वाला चमड़ा जहाँ का तहाँ ही रह जाता है, फलतः सुपारी बन्द होती है तो खुलती ही नहीं और खुली होती है तो फिर बन्द नहीं की जा सकती। यह लक्षण पूरी तेजी में पहुँचने के बाद फिर धीरे धीरे घटने लगते हैं। यदि अच्छी तरह इलाज हुआ तो दो तीन सप्ताह में रोग निर्मूल हो जाता है और आगे नहीं बढ़ने पाता, वर्ना लक्षणों की तेजी घट जाने पर भी रोग आराम नहीं होता और बीमारी पुरानी हो जाती है।

पुराने सूजाक को अंग्रेजी में क्रानिक गनोरिया या ग्लीट कहते हैं। इसमें किसी तरह का दर्द नहीं होता। पतला और स्वच्छ स्राव होता है। जलन भी उतनी नहीं होती। कभी-कभी पेशाब के पहले सूत की तरह गाढ़ा और जमा हुआ पीब निकलता है और पेशाब करने के बाद बूँद बूँद पेशाब टपकता है। मूत्रनाली दबाने या कई घण्टे के बाद पेशाब करने पर पीब जैसी रसी निकलती है। कभी कभी मूत्रद्वार में साधारण सूजन मालूम होती है और पेशाब करते समय मूत्रनाली में कुछ गरमी और जलन मालूम होती है। सुबह सोकर उठने पर अथवा कई घण्टे तक पड़े बैठे रहने के बाद मूत्रनाली या जननेन्द्रियका मुखस्थाने पर सफेद सफेद अथवा बिना रंग का पीब जैसा पदार्थ निकलता दिखायी देता है।

परन्तु यह इतना कम होता है कि वहाँ से बाहर नहीं निकाला जा सकता, न धोती आदि में इसका दाग ही लगता है।

प्रकृत सूजाक, जीवन में एक बार से अधिक नहीं होता लेकिन फिर भी, जिन लोगों को यह रोग एक बार होता है, वे बारंबार यह रोग होने की शिकायत किया करते है। इसका कारण यह है कि उनका रोग पूर्ण रूप से आराम न होकर पुराना हो जाता है और उस अवस्था में उन्हें कोई तकलीफ न होने के कारण वे मान लेते है कि उनका रोग आराम हो गया। बाद को किसी भी समय अधिक स्त्री संग करने या मिर्च खटाई आदि गरम और उत्तेजक चीजें खाने से उनका रोग फिर उभड पडता है और वे समझते है कि उन्हें फिर वही बीमारी हो गयी।

पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी यह रोग होता है परन्तु उनका मूत्रमार्ग बहुत ही छोटा होने के कारण पुरुषों की तरह उन्हें अधिक तकलीफ नहीं होती। रोग कठिन होने पर कभी कभी जरायु आदि भीतरी प्रजनन अंग भी आक्रान्त होते है, परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। स्त्रियों को यह रोग होने पर उन्हें भी लक्षणानुसार वही दवाएँ देनी चाहिये जो पुरुषों को दी जाती हैं। नीचे इस रोग की चुनी हुई दवाओं के लक्षण दिये जाते हैं। बीमारी नयी है या पुरानी, इस बात पर ध्यान रखते हुए इस रोग का इलाज करना चाहिये।

चिकित्सा

नयी बीमारी में—एकोनाइट, अर्जेन्ट नाइट, केनेबिस सेट, केन्थरिस, जेलसीमियम, केप्सीकम, क्युबेबा, मर्क्युरियस सल, कोपेबा, पेट्रोसेलिनम इत्यादि।

पुरानी बीमारी में—मेडोरिनम, कल्केरिया कार्ब, केली बाइक्रोम, केलीम्यूर, क्लिमेटिस, नेट्रमम्यूर, मेजेरियम, हाइड्रेस्टिस, ग्रेफाइटिस, फेरम, फ्लुरिक एसिड, केली सल्फ, पेट्रोलियम, पल्सेटिला, सीपिया, साइलीसिया, सल्फर, थूजा इत्यादि।

स्त्रियों की बीमारी में—एकोनाइट, केनेबिस सेट, आर्सेनिक और नेप्थेलीन इत्यादि।

एकोनाइट ३X या ६—प्रदाह की प्रारम्भिक अवस्था में जब बहुत जलन, बहुत स्राव, रात में बारबार कष्टदायक लिङ्गोत्थान, बूँद बूँद पेशाब होना, बुखार इत्यादि लक्षण हों तब इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ३ या ६—लिङ्ग में पेशाब में जलन, मूत्रनाली में सुड़सुड़ाहट, सड़

क्युवेबा ३ या ६—कोपेवा से लाभ न होने पर इससे अनेक वार लाभ होता है।

पिट्रोसेलिनम ६—केन्थरिस और केप्सीकम के लक्षण होने पर भी उनसे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

मेडोरिनम ३० या २००—पुरानी विमारी में इससे विशेष लाभ होता है। इसके लक्षण सल्फर और थूजासे मिलते जुलते हैं।

कल्केरिया कार्ब ३० या २००—मोटे ताजे गण्ड माला धातु वाले रोगियों की बीमारी में और सल्फर के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

मेजेरियम ६ या ३०—पानी जैसा स्राव, मूत्रनाली में और उसके अग्रभाग में जलन और दर्द, कभी-कभी खूनी पेशाव इत्यादि।

पन्सेटिला ६ या ३०—पुरानी बीमारी की यह एक बढ़िया दवा है। कमर में थोड़ा थोड़ा दर्द और अण्डकोष प्रदाह इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

पेट्रोलियम ३०—मूत्रनाली में सकोचन और खुजली, पूर्णरूप से लिङ्गका उत्तेजित न होना और वीर्यपात इत्यादि।

फेलोम्यूर ६ या ३०—पुराने सूजाक के साथ चर्मरोग की शिकायत हो तो इसे देना चाहिये।

क्लिमेटिस ६ या ३०—पेशाव करने के समय जलन और दर्द, बहुत देर तक बठने के बाद कई बूंद पेशाव होना, मूत्रनाली का संकोचन, अण्डकोष प्रदाह इत्यादि।

फ्लूरिक एसिड ६ या ३०—रातमें साधारण स्राव, कपड़े में पीले दाग लगना इत्यादि।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—निर्मल पीले रंगका स्राव, पेशाव करने के बाद कतरने जैसा दर्द।

साइलीसिया ३० या २००—गाढ़ा बदबूदार और पीब मिला स्राव निकलता हो तो इसे देना चाहिये।

हाइड्रैस्टिस ६ या ३०—प्रचुर परिमाण में अनवरत स्राव, पीला या पीली आभा युक्त स्राव इत्यादि लक्षणों में

सूज़ाक के कारण अन्यान्य रोग।

अण्डकोष प्रदाह—पानी में भीगने या सरदी आदि लगने के कारण सूज़ाक का स्राव बन्द होकर कभी कभी यह रोग हो जाता है। पिचकारी देने के कारण स्राव बन्द होकर यह रोग हो तो पल्सेटिला या क्लिमेटिस देना चाहिये। इनसे लाभ न हो तो मर्क्युरियस। इनके अतिरिक्त एगनस केक्टस, ओरम, हेमामेलिस, नक्सवोमिका, फाइटोलेक्का, रसटक्स, थुजा इत्यादि दवाओं से भी लाभ होता है।

नेत्र प्रदाह—सूज़ाक का स्राव या पीव आँख में लगने से आँख आ जाती है। नाइट्रिक एसिड ३० या २०० रोग के आरम्भ में व्यवहार करने से विशेष लाभ होता है। आँख में लाली और जलन हो तथा उससे पानी निकलता हो तो आर्सेनिक। बहुत पीव और बहुत दर्द हो तो अरजेन्टम। इनके अतिरिक्त मर्क्युरियस कर, मर्क्युरियस सल, पल्सेटिला, हिपर सल्फर, और बेलेडोना आदि दवाओं से भी लाभ होता है। एक औंस डिस्टिल्ड वाटर में एक या दो ग्रेन कास्टिक मिलाने से कास्टिक लोशन बनता है। इससे आँख धोने पर बहुत आराम मिलता है।

वात रोग—सुजाक का स्राव रुक जाने से वात रोग भी हो जाया करता है। दर्द एक स्थान से दूसरे स्थान में फिरता रहे तो पल्सेटिला। पारे का अधिक सेवन किया गया हो तो परीला। रोगी के शरीर में पारे या गरमी का विष हो तो केलीआयोड या फाइटोलेका। इनके अतिरिक्त हिपर सल्फर, मर्क्युरियस और थूजा आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है।

प्रोस्टेट प्रदाह—प्रोस्टेट या मूत्रशायी ग्रन्थि का प्रदाह होने पर अण्डकोष के नीचे से लेकर मलद्वार तक दर्द और पेशाब में तकलीफ होती है। मर्क्युरियस, नाइट्रिक एसिड, फोस्फरस, पल्सेटिला, सेलिनियम, सल्फर और थूजा आदि दवाओं से इस रोग में लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—सुजाक की बीमारी में गरम मसाला, माँस, मछली, लाल मिर्च, खटाई और अधिक मिठाई आदि खाना मना है। पानी मिला दूध, मिश्री का शर्बत, सुबह सोकर उठने पर और शाम को सोते समय ठंढा पानी पीना लाभदायक है। बुखार हो तो नहाया जा सकता है। रात में जागना और अधिक परिश्रम करना ठीक नहीं। प्रदाह की हालत में पूर्ण रूप से विश्राम करना चाहिये।



गरमी या उपदंश।

(Sydqılıs or Chancre)

साधारणत यह रोग इस रोगवाले स्त्री पुरुषों के सहवास से नीरोग आदमियों को होता है। इसके अतिरिक्त रोगी की लार, पेशाब, पसीना, दूध और कभी कभी उसके पहने हुए कपड़ों द्वारा भी यह रोग स्वस्थ मनुष्यो के शरीर में प्रवेश करता है। माता पिता को यह रोग होने पर बच्चों को जन्म से ही यह रोग वीरासत में मिलता है। इसे चिकित्सक गण कौलिक या जन्मगत उपदंश कहते हैं।

यह रोग दो भागो में विभक्त है, यथा—(१) कोमल क्षत उपदश या सौफ्ट सैंकर [Soft Chaucre] और [२] कठिन क्षत उपदंश या हार्ड सैंकर (Haıdc hancre)।

कोमल क्षत उपदश का विष शरीर में प्रकट होता है। इसके ज़ख्म कोमल होते यह नाम पडा है। इस तरह की गरमी न्द्रिय तक ही परिमित रहता है, इसका विष माता पिता से सन्तानों मिलता। कभी कभी बाघी हो जाया बहुत ही साधारण ढग का उपदश

कठिन क्षत उपदंश के जख्म मटर जैसे कड़े होते हैं। वास्तव में यही प्रकृत गरमी रोग है। यह बहुत ही भयंकर होता है। इसका विष स्वस्थ शरीर में प्रवेश होने के बाद एक से लेकर चार सप्ताह के अन्दर जख्मों के रूप में प्रकट होता है। इन जख्मों से बहुत कम पीव निकलता है। बाघी एक या एक से अधिक भी हो सकती है। कुछ ही समय में इसका विष समूचे शरीर में फैल जाता है और शरीर के अन्यान्य अंगों में भी जख्म आदि भयंकर लक्षण दिखायी देने लगते हैं। माता पिता को यह रोग होने पर बच्चों को वीरासत में भी मिलता है और कई पीढ़ी तक इसका असर बना रहता है। बच्चो को यह रोग वीरासत में मिलने पर जन्म के बाद कुछ ही दिन में समूचे शरीर में तरह तरह के जख्म, फोड़े या चर्मरोग, नाक बैठी हुई, बात, दाँत की बीमारी इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इस रोग का विष आसानी से नष्ट नहीं होता। औषधोपचार से यदि रोग दब जाता है, तो वर्षों के बाद फिर उभड़ता है।

जिन स्त्री पुरुषों को यह रोग होता है, उनकी जननेन्द्रिय की श्लैष्मिक झिल्ली में एक तरह का जख्म या दाग सा रहता है। इसी के द्वारा संगम के समय, यदि स्त्री को यह रोग हुआ तो पुरुष के और पुरुष को यह रोग हुआ तो स्त्री के शरीर में इसका विष प्रवेश करता है। विष प्रवेश करने पर पुरुषों के लिङ्ग मुण्ड, मूत्रद्वार और लिङ्ग में तथा स्त्रियों के भगोष्ट,

योनि, मूत्रनाली और जरायु ग्रीवा आदि स्थानों में यह प्रकट होता है।

कोमल क्षत उपदंश में, विष शरीर में प्रवेश करने के बाद २४ घण्टे के अन्दर लिङ्ग के अगले भाग में एक फुन्सी जैसी प्रकट होती है। धीरे धीरे वह जख्म का रूप धारण करती है। पास पास कई फुन्सियाँ उत्पन्न होकर वे भी जख्म बन जाती हैं और अन्त में यह जख्म एक दूसरे से मिलते जाते हैं। इन जख्मों का किनारा ऊँचा नहीं रहता। बीच का भाग एक तरह की रस्सी से भरा रहता है। इन जख्मों से पानी जैसा पतला और कभी कभी पीली आभा वाला पीब निकलता है। इन जख्मो की मुलायमियत देखकर ही मालूम हो जाता है कि यह कोमल जाति का उपदंश है।

कठिन क्षत उपदश का विष प्राय प्रथम सप्ताह में ही प्रकट होता है। कभी कभी अधिक समय भी लग जाता है। पहले पहल जननेन्द्रिय में एक लाल,कड़ी और दर्द हीन फुन्सी दिखायी देती है। बाद को होंठ, जीभ, स्तन की भिटनी, उंगली नाभी, उरु, मलद्वार आदि स्थानों में भी जख्म दिखायी देते हैं। धीरे धीरे यह विष खून और शरीर के तन्तुओं में प्रवेश कर उन्हें भी दूषित कर डालता है। इस रोग में निम्नलिखित तीन अवस्थाए दिखायी देती हैः—

(१) प्राथमिक अवस्था (Primary Stage)—इस अवस्था में जख्म होता है। बाद को पट्ठे की गाँठे बड़ी और

कड़ी होकर वहाँ वाघी पैदा होती है। महीने डेढ़ महीने बाद जख्म धीरे धीरे आराम होने लगता है और वाघी भी बैठने लगती है। अच्छी तरह इलाज न होने पर और रोग कठिन होने पर जननेन्द्रिय का कुछ भाग गल कर इस अवस्था में गिर पड़ता है। दो सप्ताह से लेकर छ: महीने तक प्राथमिक अवस्था रह सकती है। पहले का घाव और वाघी आराम हो जाने पर रोग की द्वितीयावस्था शुरू होती है।

(२) द्वितीयावस्था (Seconduary Stage)—इस अवस्था में रोगी के शरीर का खून दूषित हो जाता है और ज्वरभाव, कमजोरी, शिर दर्द, रक्त स्वल्पता, गले में जख्म, स्थान स्थान की श्लैष्मिक झिल्ली में जख्म, चर्मरोग, उपतारा प्रदाह, केश उड़ना, सन्धि और हड्डियों में दर्द, इत्यादि उपसर्ग उपस्थित होते हैं। यह अवस्था एक से लेकर पचास वर्ष तक रह सकती है।

(३) तृतीयावस्था (Tertiary Stage) साधारणत दोतीन वर्ष तक दूसरी अवस्थाके लक्षण मौजूद रहने के बाद अथवा रोगी कुछ दिन तक आराम रहने के बाद धीरे धीरे तीसरी अवस्था शुरू होती है। इस अवस्थामें शरीर के तीसरी तन्तु अर्थात्, रस, रक्त, हाड़, मास और भीतरी यन्त्रोंके उपादान आक्रान्त होकर नष्ट होने लगते हैं। साथ ही मुख-गह्वर, जलकोष तथा शरीर के भिन्न भिन्न स्थानोंमें जख्म और पीब सञ्चय, पेशी, हृदय और हड्डियोंमें तरह तरहकी बीमा-

रियॉ, अस्थिवेष्ट, अण्डकोष, मस्तिष्क और यकृत आदिमें अर्बुद होना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

इसरोगकी दूसरी और तीसरी अवस्थामेंइनके अतिरिक्त और न जाने कितने उपसर्ग तथा कितनी शिकायतें पैदा होती हैं। उन सबोंका वर्णन करनेके लिये एक स्वतन्त्र पुस्तक, चाहिये। सक्षेपमें हम इतनाही कहेंगे कि यह रोग होने पर यदि रोगी शीघ्रही मर गया तब तो ठीक है, वर्ना उसका शरीर व्याधि मन्दिर बन जाता है और वह जब तक जीता है, तब तक नारकीय यातना भोग किया करता है।

उपदंश रोगी के समस्त रोग लक्षण या कष्ट हमेशा रात हीके समय बढ़ते हैं।

चिकित्सा।

मर्क्युरियस सल ६—यह इस रोगकी प्राथमिक और द्वितीयावस्था की प्रधान दवा है। साधारण बीमारीमें केवल इसीके सेवनसे रोग घटने लगता है। द्वितीयावस्थाके गले हुए जख्म और पीव भरे फोडोंमें भी इससे बहुत लाभ होता है। रोगके आरम्भसे ही इसका सेवन करने पर बाघी प्रायः पकने नहीं पाती। इसका १x चिचूर्ण जख्मोंपर छिडकनेसे भी बहुत लाभ होता है। पीव भरे जख्म, जख्मोंका चारो ओर फैलते जाना, मुख और गलेके अन्दर प्रदाह, जख्मोंसे बदबूदार पीव निकलना, जरामें ही खून बहने लगना, मसूढ़ोंमें जख्म, दाँतोंमें दर्द इत्यादि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये।

होमियोपैथिक चिकित्सा

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत कमजोरी, शरीर सूखा और दुबला पतला, आक्रान्त स्थानमें जलन, सड़े और काले जख्म, होठ नीले और उनमें काले काले दाग, बारंबार पेशाब का वेग, अनजानमें पेशाब, पेशाब में जलन, कानमें दर्द इत्यादि। रोगकी दूसरी या तीसरी अवस्थामें आर्सेनिक आयोडेट्स से विशेष लाभ होता है।

मर्क्युरियस कर ३ या ६—छोटे—छोटे जख्म और उनमें खुजली, खून मिला पीव बहना, जख्मोंमें बहुत दर्द, जख्मोंमें मलाई जैसा सफेद आवरण, गरमीके साथ सूजाक और बाघी तथा अनेक प्रकार के चर्मरोग मौजूद हों तो इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस प्रोटोआयोड ३ या ६—कठिन घाव, उनमें दर्द न होना, साधारण चर्मरोग, जख्मोंमें पीव न पड़ना इत्यादि।

मर्क्युरियस बिन आयोड ६ या ३०—गरमीके साथ बाघी हो और वह आसानीसे आराम न होती हो तो इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—बाघीमें प्रदाह, लाली, दर्द, सूजन और गरमी मालूम होना, लिङ्ग मुण्डको खोल या ढक

न सकना, दाहिने अंगोंमें अधिक तकलीफ, लेटने पर आराम मालुम होना।

हिपर सल्फर६ ३०या२०० - यदि यह रोग होनेके पहले या रोग होने पर पारेका अपव्यवहार हुआ हो तो इसे देना चाहिये। हड्डी में दर्द न होना, सहजमें ही रक्तस्राव होना, जखमके किनारे ऊँचे होना, जखमोमें पीव, फाइमोसिस से पीव निकलना इत्यादि।

अरममेट ६ या ३० - गरमीकी दूसरी अवस्थामें और पारेका अपव्यवहार करनेके बाद हड्डी, नाक, मुँह और जीभ में जखम होना, केश झडना, आत्महत्या करनेकी इच्छा इत्यादि लक्षणोंमें इससे विशेष लाभ होता है।

केली आयोड ६ या ३० — पारेके अपव्यवहार और रोगकी तीसरी अवस्थामें इससे विशेष लाभ होता है। जखमों के किनारे कठिन, गाढा पीव बहना, शिरमें दर्द, हड्डीमें चिग्राने जैसा दर्द, नाक और कपालकी हड्डीमें जलन और दपदपी इत्यादि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये।

केली हाइड्रो ६ या ३० — गला, मुँह और नाकमें जखम, रातके समय जखमोंमें दर्द, समूचे शरीरमें चेचक जैसे

दाने निकलना, और उनका गायब हो जाना, गरमीमें आराम मालूम होना, चमड़े पर जख्म, कई जख्म होनेके बाद उनपर पपड़ी जमना इत्यादि।

केली बाइक्रोम ६ या ३०—मुँह और गलेमें जख्म, हड्डीमें सुई चुभोने जैसा दर्द, निर्दिष्ट समय पर दर्द का इधर उधर घूमना, नाक और गलेमें जख्म होकर नासूर हो जाना, समूचे शरीरमें चेचक जैसे दाने निकलना।

लेकेसिस ६ या ३०—गरमीके कारण वातरोग, गलेके अन्दर जख्म, स्पर्श बरदास्त न होना, बायें अंगकी बीमारी इत्यादि लक्षणोंमें और सड़नेवाले जख्म तथा फाइमोसिस से विशेष लाभ होता है।

फाइटोलेक्का ३ या ३०—रोगकी दूसरी अवस्था गलेके अन्दर और लिङ्गमें जख्म, घूमने फिरने वाला वातरोग जोड़ोंमें सूजन और लाली, दीर्घास्थि और मांस पेशियोंके संयोग स्थान में दर्द, खासकर रातके समय और गीली हवामें, ग्लैण्ड या गिल्टियोंमें सूजन या प्रदाह इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

न सकना, दाहिने अंगोंमें अधिक तकलीफ, लेटने पर आराम मालुम होना।

हिपर सल्फर६ ३०या२०० – यदि यह रोग होनेके पहले या रोग होने पर पारेका अपव्यवहार हुआ हो तो इसे देना चाहिये। हड्डी में दर्द न होना, सहजमें ही रक्तस्राव होना, जख्मके किनारे ऊँचे होना, जख्मोंमें पीव, फाइमोसिस से पीव निकलना इत्यादि।

अरममेट ६ या ३० – गरमीकी दूसरी अवस्थामें और पारेका अपव्यवहार करनेके बाद हड्डी, नाक, मुँह और जीभ में जख्म होना, केश झड़ना, आत्महत्या करनेकी इच्छा इत्यादि लक्षणोंमें इससे विशेष लाभ होता है।

केली आयोड ६ या ३० — पारेके अपव्यवहार और रोगकी तीसरी अवस्थामें इससे विशेष लाभ होता है। जख्मो के किनारे कठिन, गाढ़ा पीव बहना, शिरमें दर्द, हड्डीमें चिबाने जैसा दर्द, नाक और कपालकी हड्डीमें जलन और दपदपी इत्यादि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये।

केली हाइड्रो ६ या ३० — गला, मुँह और नाकमें जख्म, रातके समय जख्मोंमें दर्द, समूचे शरीरमें चेचक जैसे

दाने निकलना, और उनका गायब हो जाना, गरमीमें आराम मालूम होना, चमड़े पर जख्म, कई जख्म होनेके बाद उनपर पपड़ी जमना इत्यादि ।

केली बाइक्रोम ६ या ३०—मुँह और गलेमें जख्म, हड्डीमें सुई चुभोने जैसा दर्द, निर्दिष्ट समय पर दर्द का इधर उधर घूमना, नाक और गलेमें जख्म होकर नासूर हो जाना, समूचे शरीरमें चेचक जैसे दाने निकलना ।

लेकेसिस ६ या ३०—गरमीके कारण वातरोग, गलेके अन्दर जख्म, स्पर्श बरदाश्त न होना, बायें अंगकी बीमारी इत्यादि लक्षणोंमें और सड़नेवाले जख्म तथा फाइमोसिस से विशेष लाभ होता है ।

फाइटोलेक्का ३ या ३०—रोगकी दूसरी अवस्था गलेके अन्दर और लिङ्गमें जख्म,घूमने फिरने वाला वातरोग जोड़ोंमें सूजन और लाली, दीर्घास्थि और मांस पेशियोंके संयोग स्थान में दर्द, खासकर रातके समय और गीली हवामें, ग्लैण्ड या गिल्टियोंमें सूजन या प्रदाह इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है ।

कार्बोविज ६ या ३०—पारेका अपव्यवहार, जख्मों के किनारे ऊँचे और कड़े, लिङ्ग पर फफोला, योनिद्वार में जलन, जख्म से बदबूदार पीव और खून निकलना।

कार्बोएनी ६ या३०—पत्थर जैसी सख्त बाघी, कठिन जख्म, चेहरे और शरीर पर लाल दाग।

नाइट्रिक एसिड ६ या३०—जख्म के किनारे टेढ़े मेढ़े और ऊँचे, छूने से बहुत दर्द होना, बहुत खून बहना, बदबूदार और क्षतकर स्राव, नाक में जख्म, बाघी में पीव पड़ने के लक्षण, शिर में चक्कर, आँख में काले काले दाग, शिर के केश झड़ जाना इत्यादि लक्षणों में और पारे के अपव्यवहार में इससे लाभ होता है।

आयोडाइड ३ या ६X—प्रथमावस्था में द्वितीयावस्था के कुछ लक्षण दिखायी देने पर और गण्डमाला धातु होने पर इससे लाभ होता है।

स्टेलिञ्जिया १Xया६—रोग की द्वितीयावस्था में गले और जनेनिन्द्रिय में जख्म, वात, जाड़ों में सूजन लाली और दर्द इत्यादि।

सिकिलिनम ३० या २००—गरमी के कारण चर्म-रोग होने पर रोग पुराना होने पर और जन्म से यह रोग होने पर इस से विशेष लाभ होता है। अन्यान्य दवाओं का सेवन करते समय भी बीच बीच में इसे सेवन करने से काफी लाभ होता है। यह दवा खाने के दो तीन दिन पहले और पीछे दूसरी दवा न खानी चाहिये।

क्युप्रम सल्फ ६ या ३०—मुँह और गले के अन्दर जख्म सगम की प्रबल इच्छा, पतला पीव, हाथ पैर की हड्डियों में दर्द, पेशाब बहुत बदबूदार इत्यादि लक्षणों में इसे चाहिये।

थूजा ६, ३० या २००—लिङ्ग में जख्म और उनसे खून निकलना, गोल गोल ऊँचे और धुमले जख्म, जख्मों का किनारा लाल फूल गोभी मसे इत्यादि नाइट्रिक एसिड के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है।

वायोला ट्रिकलर ६ या ३०—मुँह तालू और गले में जख्म गरमी, के कारण स्वर भंग, बगल, स्तन और योनिद्वार में फुन्सियाँ इत्यादि।

फोस्फरिक एसिड ३० या २००—जख्म असमान होने के कारण जल्दी अच्छा न होता हो इसे देना चाहिये लाइको पोडियम से भी इस लक्षण में काफी लाभ होता है।

सल्फर ३० या २००—पारे का अपव्यवहार, जख्म में खुजली और पपड़ी, प्रदाह युक्त, कठिन बाघी, माता पिता से बच्चों को वीरासत में इस रोग का मिलना चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेडिआगा ६ या ३०—बच्चोंकी गरमी, गिल्टियों का बढना, बायीं ओर कठिन बाघी और उसमें जलन।

सिना बारिस ३०—शिर और बालोंको दर्द मालूम होना, दाहिनी आँखमें प्रदाह, खुजली, दबाने जैसा दर्द, जीभ और तालु में छोटे छोटे जख्म, पुरुषाङ्ग और लिङ्ग मुण्डके आवरण में सूजन, लाली और खुजली, कष्टकर लिङ्गोत्थान, अण्डकोष कठिन इत्यादि।

कोनायम ६ या ३०—रोशनी भली न मालूम होना, आँखमें पीलापन, कनपटी की गिल्टीका प्रदाह, नाकसे पीब निकलना, चेहरे पर जख्म, मसूढ़ों में सूजन और उनसे रक्त स्राव, अण्डकोष में प्रदाह इत्यादि।

कोरालियम ६ या ३०—जिन लोगों को खाज खजली हुआ करती है, उन्हें इस दवासे विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना-नीम के पत्तों को उबाल कर उसी पानी से जख्म धोना चाहिये और उसपर गेंदे के पत्ते का रस या फेनुएडुला मदरटिंचर का प्रयोग करना चाहिये। बाघी पक जाय तो दिन में तीन चार बार तीसी की पुल्टिस चढानी चाहिये। माँस मछली दही मिठाई और शराब आदि चीजें खाना पीना मना है। रात में जागरण न करना चाहिये। हलकी चीजें खानी चाहिये। बुखार न होने पर गरम पानी से नहाया जा सकता है।

बाघी।

(Bubo)

हमारे शरीर में कनपटी, गला, बगल और जाँघके सन्धि स्थान में कुछ गिल्टियाँ या गाँठें हैं। भिन्नभिन्न रोगों के समय यह गाँठे फूलकर प्रदाहितहो उठती हैं। सूजाक और गरमी की बीमारी में जाँघ या पट्टे की गाँठे प्रदाहित होती हैं। लोग इसे बाघी निकलना या बाघी होना कहते हैं। गण्डमाला धातु के बालकों को अपने आप यह रोग हुआ करता है। सरदी लगने गिर पडने चोट लगने और जोर से चलने के कारण भी यह गिल्टियाँ प्रदाहित हो सकती हैं परन्तु गरमी। और सूजाक के समय इन गिल्टियों का प्रदाहित होना दूसरी ही बात है। और उस समय विशेष रूपसे इसकी चिकित्सा करनी पडती है।

सल्फर ३० या२००—पारे का अपव्यवहार, जख्म खुजली और पपड़ी, प्रदाह युक्त, कठिन बाघी, माता पिता बच्चों को वीरासत में इस रोग का मिलना चुनी हुई दवा पूरा लाभ न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेडिआगा ६ या ३०—बच्चोंकी गरमी, गिल्टियों का बढ़ना, बायीं ओर कठिन बाघी और उसमें जलन।

सिना बारिस ३०—शिर और बालोंको दर्द मालूम होना, दाहिनी आँखमें प्रदाह, खुजली, दबाने जैसा दर्द, जीभ और तालु में छोटे छोटे जख्म, पुरुषाङ्ग और लिङ्ग मुण्ड के आवरण में सूजन, लाली और खुजली, कष्टकर लिङ्गोत्थान, अण्डकोष कठिन इत्यादि।

कोनायम ६ या ३०—रोशनी भली न मालूम होना आँखमें पीलापन, कनपटी की गिल्टीका प्रदाह, नाकसे पीव निकलना, चेहरे पर जख्म, मसूढ़ों में सूजन और उनसे रक्त स्राव, अण्डकोष में प्रदाह इत्यादि।

कोरालियम ६ या ३०—जिन लोगों को खाज खुजली हुआ करती है, उन्हें इस दवासे विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना-नीम के पत्तों को उबाल कर उसी पानी से जख्म धोना चाहिये और उसपर गेंदे के पत्ते का रस या फेंचुएडुला मदरटिंचर का प्रयोग करना चाहिये। बाघी पक जाय तो दिन में तीन चार बार तीसी की पुल्टिस चढानी चाहिये। मांस मछली दही मिठाई और शराब आदि चीजें खाना पीना मना है। रात में जागरण न करना चाहिये। हलकी चीजें खानी चाहिये। बुखार न होने पर गरम पानी से नहाया जा सकता है।

बाघी।

(Bubo)

हमारे शरीर में कनपटी, गला, बगल और जांघके सन्धि स्थान में कुछ गिल्टियां या गांठें हैं। भिन्नभिन्न रोगों के समय यह गांठे फूलकर प्रदाहितहो उठती है। सूजाक और गरमी की बीमारी में जांघ या पट्टे की गांठे प्रदाहित होती है। लोग इसे बाघी निकलना या बाघी होना कहते हैं। गण्डमाला धातु के बालकों को अपने आप यह रोगहुआ करता है। सर्दी लगने गिर पडने चोट लगने और जोर से चलने के कारण भी यह गिल्टियां प्रदाहित हो सकती हैं परन्तु गरमी। और सूजाक के समय इन गिल्टियों का प्रदाहित होना दूसरी ही बात है। और उस समय विशेष रूपसे इसकी चिकित्सा करनी पडती है।

यह रोग होने पर पहले एक तरह का दर्द या तनाहट होती है। बाद को जॉघ तक दर्द फैल जाना, अधिक चल न सकना, जाड़ा लगकर बुखार आना, गॉठ में सूजन, लाली और जलन इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। लाल रग की बाघी में शीघ्र ही पीव पैदा हो जाता है। नीले रगकी बाघी में आसानी से पीव नहीं पड़ता और वह सड़ने लगती है। इसके अतिरिक्त एक किस्म की बाघी ऐसी भी होती है जो बहुत धीरे धीरे बढ़ती है, उसमें बुखार या दर्द आदि लक्षण नहीं दिखायी देते। आरभ में पथराकर कड़ी हो जाती है बाद को धीरे धीरे बढ़ती है। यह आलसी या मन्द प्रकृतिकी बाघी कहलाती है।

चिकित्सा

साधारण चिकित्सा—गरमी या सुजाकके कारण साधारण ढंग की बाघी होने पर उसके लिये केवल मर्क्युरियस सल ३ या ६ ही काफी है। इससे बाघी बैठ जाती, पीव नहीं पड़ने पाता और साधारण पीव होता है तो वह सूख जाता है। यदि रोगी पारे का बहुत व्यवहार कर चुका हो तो मर्क्युरियस के बदले नाइट्रिक एसिड ६ देना चाहिये। तीन दिनके अन्दर काफी लाभ न हो तो कार्बो एनिमेलिस या बेडियेगा ६ सेवन कराना चाहिये। इससे भी बाघी बैठ जाती है। यदि बाघी में पीव पैदा हो तो फिर उसे बैठाने की चेष्टा न कर पकाने और बढ़ाने की दवाएं देना चाहिये अथवा बारबार पुल्टिस चढ़ाकर

अच्छी तरह पक जाने पर चिरवा देना चाहिये। इस रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाओं से लाभ होता है।

एपिस ६ या ३०—बाघी का रंग चमकीला, लाल सूजन और गरमी, स्पर्श बरदास्त न होना, जलन और डंक मारने जैसा दर्द।

बेलेडोना ६ या ३०—प्रथमावस्था में लाली और बहुत प्रदाह दर्द और दपदपी या टपक इत्यादि।

आर्सेनिक आयोड ३ या ६—पकने की सम्भावना और दपदपीमें इसे देने से अनेक बार बाघी बैठ जाती है।

आर्सेनिक ६या३०—बाघीके जख्म में नीलापन दिखायी देना, जख्म के किनारे मे सड़ने का उपक्रम बदबूदार पीब निकलना और जलन होना इत्यादि।

बेडियेगा ३ या ६—पत्थर जैसी कड़ी और असमान बाघी, कई गाँठों का एक स्थान में फूल उठना, रातके समय भिन्न भिन्न प्रकार का तेज दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे सेवन कराना चाहिये। इसका मदरटिंचर भी बाघी को बैठाने के लिये बाहर से लगाया जाता है।

अरम ६ या ३०—पारेका अपव्यवहार, रातके समय हड्डियों में दर्द होना इत्यादि।

कार्बो एनीमेलिस ६ या ३०—बाघी पत्थर जैसी कड़ी होने पर भी जब ऐसा मालुम हो कि वह पक जायगी, तब इसे देना चाहिये। साधारण पीब पडना, बेढब जख्म, जख्म के किनारे कड़े, बदबूदार स्राव इत्यादि लक्षणों में भी इससे लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६, ३० या २००—इसका ऊँचा क्रम देने से बाघी बैठती है और नीचा क्रम देने से पक कर फूट जाती है। पारा व्यवहार करने वालों को इससे विशेष लाभ होता है।

नाइट्रिक एसिड ६या ३०—पारेका अपव्यवहार। जख्म के किनारे ऊँचे, जरा में ही खून गिरना इत्यादि लक्षणों में कार्बो एनीमेलिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

केली आयोड ६ विचूर्ण या ३०—मन्दप्रकृति की बाघी नासूर हो जाने की सम्भावना, काला, पतला, बदबूदार और क्षयकारी स्राव, पारे का व्यवहार, गण्डमाला धातु इत्यादि लक्षणों में और नाइट्रिक एसिड के बाद इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस आयोड ३ या ६ विचूर्ण—कड़ी वाघी
से देने से बैठ जाती है और यदि पकने का डोल होता है तो
जल्दी पक जाती है।

रसटक्स ६ या ३०—सरदी लगने या जोर से चलने
के कारण वाघी होने पर इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—वाघी के स्थान में नीलापन या
जड़न दिखायी देने पर इसे देना चाहिये।

फाइटोलेका ३ या ६—जख्म में चरबी जैसा पदार्थ,
कमजोरी, उपदंश की द्वितीयावस्था में यह रोग होना।

साइलीसिया ३० या २००—पुरानी बीमारी, बदन्-
पर पीव निकलना, नासूर इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये
नासूर की यह बढ़िया दवा है। इसे देने से जख्म जल्दी भर
जाता है।

सल्फर ३० या २००—पुरानी बीमारी में या चुनी
हुई दवासे पूरा लाभ न होने पर बीच बीचमें इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—वाघी होने पर पूर्ण रूप से विश्राम करना चाहिये। हिलने डोलने या चलने फिरने से रोग बढ़ता है और जल्दी आराम नहीं होता। गरम पानी या नमक की पोटली से सेंकने पर दर्द घटता है। वाघी बडी हो जाय और जब मालूम हो कि इसका बैठना मुश्किल है, तब तीसी या मैदे की पुल्टिस चढ़ा कर इसे पका देना अच्छा है। जख्म हो जाने पर उसे खूब साफ रखना चाहिये। जख्म में सड़न दिखायी दे तो उसे गरम पानी से साफ कर आयडोफार्म की बुकनी छिड़कना चाहिये। वाघी अपने आप न फूटे तो डाक्टर से चिरवा देना चाहिये। शोरवा, रोटी, दूध, पूडी, हलुआ आदि सुपथ्य है।

१७—चर्म रोग।

(Diseaees of the Shin)

शरीर के अन्दर किसी तरह का विष होने पर वह चर्म-रोग के रूप में बाहर प्रकट होता है। ऐसी अवस्था में मलहम आदि लगा कर चर्म रोग को दवा देने का अर्थ उस विष को फिर शरीर में प्रवेश कराना होता है। इसके अतिरिक्त महात्मा हनीमैन ने बहुत छान बीन के बाद स्पष्ट घोषित किया है, कि शरीर के भीतर का कोई विषैला रोग आराम होते समय अनेक बार चर्म रोग हो जाया करता है। इस लिये

बाह्य प्रयोग की दवाओं से चर्म रोग को दवा देना ठीक नहीं। खोज करने पर यह भी मालूम हुआ है कि मलद्वार के बाहर के चर्म रोग दवा देने पर यकृत की वृद्धि, लिङ्गमुण्ड या उसके आवरण के चर्म रोग दवा देने पर नपुंसकता, कान के पश्चात भाग के चर्म रोग दवा देने पर खाँसी ओर नेत्र रोग, शिर के चर्म रोग दवा देने पर क्षय रोग, बाहु और हाथ के चर्म रोग दवा देने पर स्वर नाली का क्षय, हथेली का चर्म रोग दवा देने पर दमा ओर चेहरे का चर्म रोग दवा देने पर हृदय का रोग हो जाया करता है। पाठकों को यह बातें ध्यान में रख कर चर्म रोग का इलाज करना चाहिये।

दाद।

(Ring Worm)

यह एक बहुत ही साधारण लेकिन स्पर्शाक्रमक रोग है। लोमकूप या रोएँ की जड मे एक तरह का जीवाणु प्रवेश करने पर यह रोग होता है। इसमें पहले छोटे छोटे दाने पड़ते हैं ओर उनमें बहुत खुजली होती है। दानों की संख्या धीरे धीरे बढ़ती जाती है और अन्त में एक दूसरे से मिल जाते हैं। यह दाने छल्ले की तरह गोल चक्कर बनाते हुए प्रकट होते हैं, इसीलिये अंग्रेजी में इसे रिङ्ग वार्म कहते हैं। दाद सूखी ओर तर दोनों किस्म की होती है। सूखी दाद में छाल सी उठा करती है।

चिकित्सा ।

नेट्रमसल्फ २००—यह इस रोग की एक अच्छी दवा है। महीने में दो एक खुराकें देना काफी है।

वेसिलिनम ३० या २००—इसे देने से धातुगत दोष दूर होकर रोग धीरे-धीरे आराम हो जाता है।

कस्टिकम ६ या ३०—गर्दन के आस पास की दाद, पुरानी बीमारी, शाम के वक्त बहुत खुजली इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—खुजलानेके बाद और आक्रान्त स्थान में हाथ रखने पर जलन, दाद से रस या स्राव निकलना।

रसटक्स ६ या ३०—शरीर में दाहिनी ओर रोग का होना, अनवरत खुजली, जलन और सुड्सुडाहट इत्यादि।

सीपिया ३०—तर दाद, जलन, बहुत खुजली इत्यादि लक्षणों में इससे भी बहुत लाभ होता है।

टेलुरियम ६—यह भी दाद की एक प्रसिद्ध दवा है।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—सूखी दाद, उस पर पपड़ी पड़ना, खुजलाने से आराम मालूम होना।

कमक्लोडिया ३ या ६—दोनों पैरों में दाद होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०या २००—सादे दाने, चारों ओर पपड़ी, खुजलाने के बाद जलन होना इत्यादि।

हिपरसल्फर ३० या २००—दाद में पीव पड़ जाता हो तो इसे देना चाहिये।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—पैर के टेहुने और हाथ की केहुनी में दाद का होना, तर दाद, बहुत खुजली इत्यादि।

सोरिनम २००—तर दाद, गरमी में बहुत खुजली, और आधी रात के पहले और खुले स्थान में खुजलीका बढ़ना।

थूजा ३० या २००—समूचे शरीर में दाद, खुजली और जलन, भूसी की तरह बहुत छाल निकलना।

केलेडियम-सेङ्गुइनम ६ या ३०—स्त्रियों की दाद में इससे विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—चुनी हुई दवा सप्ताह में दो एक बार सेवन करनी चाहिये। दादवाले स्थान को खूब साफ रखना चाहिये।

फुन्सी।

(BAoil)

छोटे फोड़े का फुन्सी कहते हैं। शरीर में जहाँ बहुत कम मास होता है (जैसे चेहरा) वहाँ प्रायः फुन्सियाँ ही होती हैं। फुन्सियाँ गोल, कड़ी, लाल और वेदना पूर्ण होती हैं। पकने पर इनसे पहले खून या खून मिला पीब ओर बाद को सफेद सफेद पीब निकलता है। इन फुन्सियो के मध्य भाग में चावल जैसी कील रहती है। फुन्सी पकने पर उसे दवा कर कील निकाल देने से वह जल्दी आराम हो जाती है।

कुछ आदमियों का शरीर धातु ही ऐसा होता है कि उन्हें फुन्सियाँ बहुत होती है। ऐसे आदमियों को फुन्सियाँ होने पर थोड़ा बहुत बुखार या दूसरी बीमारियाँ भी हो जाया करती हैं। हमारे देश में गरमी के दिनों में यह रोग विशेष रूप से होता है।

चिकित्सा ।

अर्निका ३ या ६—इसे देने से दर्द और सूजन कम हो जाती है और नयी फुन्सियों का होना रुकता है ।

सल्फर ३०—अर्निका के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है और बारबार नयी फुन्सियो का होना रुकता है ।

बेलेडोना ३ या ६—फुन्सी का रंग चमकीला, लाल या फुन्सी के स्थान में पित्ती का सा चकत्ता दिखायी देना, अथवा फुन्सी के साथ बगल या जाँघ की गिल्टी का फुल आना, साथ ही बुखार, प्यास और शिर दर्द इत्यादि ।

हिपर सल्फर ६ या ३०—फोडे से बहुत थोड़ा पीब निकलता हो तो इसे देना चाहिये ।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—पीब बहुत निकलने पर सूजन मोजूद हो तो इसे देना चाहिये ।

लेकेसिस ६ या ३०—फुन्सी में बहुत दर्द आदि नीलापन दिखायी दे तो इसे देना चाहिये ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातुवाले लोगो को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

साइलीसिया ३०—वारंवार फुन्सियाँ होने के लक्षण में और आर्निका के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है।

कार्बोवेज ६ या ३०—जवानी में चेहरे पर फुन्सियाँ होने पर इसे देना चाहिये।

सार्सापरीला ३ या ६—वारंवार फुन्सियाँ होने की यह भी अच्छी दवा है।

एसिड फस ३०—यौवनावस्था में हस्तमैथुन या इन्द्रिय सेवा के कारण चेहरे पर फुन्सियाँ निकलती हों तो इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—फुन्सीमें बहुत दर्द हो और जल्दी न फूटे तो पुल्टिस चढ़ानी चाहिये। आर्निका मदरटिञ्चर पानी में मिलाकर फुन्सी पर लगाने से वह अपने आप फूट जाती है।

मुंहासे।

(Puberty Boils)

युवावस्था में युवक युवतियों के चेहरे नाक और कपाल आदि स्थानों में छोटी छोटी फुन्सिया निकलती हैं, जो मुहासे कहलाती हैं। फुन्सियाँ पकने पर उनसे कील निकलती है।

चिकित्सा।

आर्निका ३०—गरमी के दिनोमें बारबार बहुत मुँहासे होते हों तो इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६—लाली दर्द और प्रदाह होने पर इस से लाभ होता है।

मर्क्युरियस ६—पाकनेका ढंग दिखायी देने पर इसे व्यवहार करना चाहिये।

बोरेक्स ३X—मुहाँसे की यह भीथ्पक अच्छी दवा है।

पल्सेटिला ६—स्त्रियों के मुँहासों में इससे विशेष लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६—मुहाँसों में पीव दिखायी देने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—बारबार अनवरत मुँहासे होते रहते हों तो इसे देना चाहिये।

पेट्रोलियम ६ या ३०—मुहासो में बहुत खुजली होतो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त फुन्सीकी दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है।

फोड़ो।

(Abscess)

रक्त दूषित होने पर शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानों में फोड़े हुआ करते हैं। फोड़ा होनेपर उस स्थानमें सूजन, लाली और

दर्द होता है। पकनेके समय दपदपी और तन्नाहट होती है। कुछ दिनोंमें फोडा अपने आप पककर फूट जाता है। न फूटने पर उसे पकाना होता है। साधारण अवस्था में गरम पानीसे सेंकने या ठंढे पानीकी पट्टी चढ़ाने से फोडा अपने आप फट जाता है। हिपर सल्फर आदि फोडने वाली दवाओ से भी काम हो जाता है। इनसे फोडा न फूटे तो पुल्टिस चढ़ा कर पकाना चाहिये और आवश्यक हो तो चीरा लगवा देना चाहिये।

चिकित्सा।

बेलेडोना ३ या ६—साधारण बुखारके साथ फोड़े में बहुत दर्द, सूजन, लाली, दपदपी और तन्नाहट हो तो इसे देना चाहिये।

हिपरसल्फर ३ या ६—फोड़े में दर्द, टपदपी, प्रदाह, थोड़ा थोडा पीव और कठिनता आदि लक्षण दिखायी देने पर उसे फोड़नेके लिये इसे देना चाहिये। यदि फोडा बैठाने योग्य हो तो इसीका ऊँचा क्रम (३० या २००) देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—फोड़ा फूटने और बहने पर भी अगर कडा बना रहे तो इसे देना चाहिये।

साइलीसिया ३०—फोड़ा बहुत दिनों तक बहता रहे और जख्म जल्दी न भरे तो इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—फोड़ा सड़नेके लक्षण, बदबूदार पानी जैसा खून मिला पीव निकलना, बहुत जलन, कमजोरी इत्यादि।

अर्निका ३०—गरमी के दिनों में जो साधारण फोड़े होते हैं, उनमें इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ६ या ३०—स्तनमें फोड़ा होने पर आरम्भ में ही इसे देने से प्रायः पीव नहीं पड़ने पाता।

फाइटोलेका १ या ३०—स्तनके फोड़ेमें इससे भी काफी लाभ होता है।

लेकेसिस ६ या ३०—जख्म सड़ने की संभावना, जख्मका रंग काला हो जाना, उसमें जलन और बदबू होना इत्यादि लक्षणों में और आर्सेनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—पुराने फोड़ेमें या बारबार फोड़ा होने पर इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—फोड़ेमें जलन और डंक मारने जैसा दर्द इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—बगल या कर्णमूलकी गिल्टियों का प्रदाहित होकर फोड़ेके रूप में परिणत होजाना, स्पर्श करनेसे दर्दका बढ़ना, खूनमिला पीब, स्राव, डंक मारने या चियाने जैसा दर्द, सूजन और लाली इत्यादि।

टैरेन्टुला ६ या ३०—फोड़ेमें दर्द बढ़ने की सम्भावना, पासकी गिल्टियोंका प्रदाहित हो उठना इत्यादि।

साधारणतः पीब पैदा होनेके पहले एकोनाइट, बेलेडोना और मर्क्युरियस, पीब पैदा होनेके समय हिपर सल्फर, साइलीसिया और आर्सेनिक, पीब पैदा होने के बाद सल्फर, कल्केरिया कार्ब, चायना और एसिडफस, गर्दन और कर्णमूलकी गिल्टियाँ प्रदाहित होने पर मर्क्युरियस, डाल्केमारा, और कल्केरिया कार्ब आदि दवाओंसे विशेष लाभ होता है। दाँत की जड़में फोड़ा होने पर मर्क्युरियस वाइवस, मलद्वारमें होने

आर्सेनिक ६ या ३०—प्रदाहका चारों ओर बढ़ना, जलन के साथ दर्द, रातमें दर्दका बढ़ना, समूचे शरीर में बहुत कमजोरी रात में बेचैनी अथवा फोड़ेमें सड़न, साथही बहुत जलन और दर्द चिड़चिड़ाना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

हिपरसल्फर ६ या ३०—जख्म पैदा करने वाला बहुत स्राव होना उसके कारण कमजोरी, छेदोंका एक दूसरे से मिल जाना, बोलनेमें कमजोरी मालुम होना, नींद न आना, जख्मके किनारे डंक मारने जैसी जलन।

साइलीसिया ३० या २००—मध्यम प्रकार का दर्द और जलन शिरकी गरमी और अस्थिरता के कारण सो न सकना, शिरमें पसीना, नासूर होने की सम्भावना, जख्मका जल्दी न भरना इत्यादि लक्षण में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—जख्म पर नीले नीले दाग या फुन्सियाँ, बड़े छेदके आसपास छोटे छोटे छेद, सड़ने वाला कार्वङ्कल इत्यादि।

एन्थासिन ६ या ३०—कार्वङ्कलमें बहुत जलन, सड़ सड़कर मासका गिरना जख्म पैदा करने वाला पतला पीब

निकलना, इत्यादि लक्षणों में और आर्सनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—जहरवात जैसा कार्बङ्कल में जलन और डंक मारने जैसा दर्द।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—जख्मका सड़ना और उस से रक्तस्राव होना, बहुत कमजोरी, रातमें पसीना, उपदंश या पारेका दोष।

म्युरेटिक एसिड ६ या ३०—जख्मका सड़ना, मसूड़े में जख्म और उससे खून निकलना, सदा पेशाबका वेग, अधिक तादादमें साफ पेशाब होना इत्यादि लक्षणोंके साथ कार्बङ्कल होने पर इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—कार्बङ्कलके चारों ओर जलन और खुजली, शिरमें चक्कर, चेहरा फीका बहुत बेचैनी, हिलने डोलनेसे आराम मालूम होना इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—काले या नीले रगका कार्वङ्कल उसमें से सडन जैसी बदबू चेहरेका बिगड़ जाना, खूनका, खराब होजाना इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—फोड़ेका रग चमकीला लाल, उसमें दपदपी, ज्वरभाव और शिरदर्द अच्छी तरह नींद न आना इत्यादि।

टेरेन्टुला ३०—इसे देनेसे दर्द और तकलीफ कम हो जाती है।

आवश्यक सूचना—फोड़ेमें पीव पड़ने लगे और बहुत दर्द हो तो तीसीकी पुल्टिस चढ़ानी चाहिये। आसानी से न फूटने पर चिरवा देना चाहिये। जख्म पर कोयले का चूरा छिडक देनेसे उसका सडना और उसमें से बदबू का निकलना बन्द हो जाता है। नीमके पत्ते उबाल कर उसी पानी से जख्म धोने और घीमे नीमके पत्ते पकाकर उसे जख्म पर लगाने से लाभ होता है।

खुजली और खसड़ा।

(Itches and Scabies)

खुजली दो तरह की होती है—सूखी और तर। तर खुजली को लोग खसडा या कलकल भी कहते हैं। यह दोनों तरह को खुजली एक तरहके जीवाणुके कारण उत्पन्न होती है। जीवाणु की मादा चमड़ेके नीचे प्रवेशकर वहाँ अण्डे देती है इसीसे प्रदाह उत्पन्न होता है।

सूखी खुजली में छोटे छोटे दाने पडते हैं, उनमें वहुत खुजली होती है, खुजलाते खुजलाते उनका मुंह फट जाता और उनसे पानी जैसा या खूनमिला रस निकलता है। इस के बाद इन पर पपडी पड जाती है। अनेक बार इन दानों में पीव पैदा होकर सूखो खुजली तर खुजली के रूपमें परिणत हो जाती है। तर खुजली में दाने वड़े वडे होते हैं, उनमें पीव भरा रहता है अथवा वडे वड़े फफोले पड जाते हैं। हाथ, कलाई, उंगलियों का मध्यभाग, केहुनी, चूतड, जननेन्द्रिय और तलपेट आदि स्थानों में इसका अधिक जोर रहता है। चेहरे पर यह रोग कभी नहीं होता।

चिकित्सा

मर्क्युरियस सल और सल्फर ३०—यह दोनों दवाएं सूखी खुजली में वहुत फायदा करती हैं। चार चार या आठ-

आठ दिनके अन्तरसे पर्याय क्रममें यह दोनों दवाएँ देनेसे यह रोग प्राय, इन्हीं से आराम हो जाता है। तर खुजली में भी इन दवाओं से काफी लाभ होता है।

कार्बोवेज ६* या ३०—उपरोक्त दवाओं से कुछ अन्तर पड़ने पर इसे देना चाहिये। इससे लाभ न हो तो हिपरसल्फर ६। कभी कभी पीव दिखायी दे तो कस्टीकम ६, कस्टीकम के बाद सीपिया ३०।

लाइको पोडियम और सल्फर—यह दोनों दवाएँ ३० क्रमकी चार चार या आठ आठ दिनके अन्तरसे पर्यायक्रम में देने पर तर खुजली या खसड़ा आराम हो जाता है पीव भरे फफोले या फुन्सियाँ, बिछौने पर लेटने से बहुत खुजली, खजलाने पर पहले आराम, बादको दर्द मालूम होना, जोड़ों और उँगलियोंके बीच में तर खुजली, दिनमें या गरमी होने पर बहुत खुजली इत्यादि लक्षणों में इन्हें व्यवहार करना चाहिये। इनसे पूरा लाभ न होने पर सुबह शाम पानी के साथ कस्टिकम देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—अगर फफोले पीले या नीले रंग के हों तो इसे देना चाहिये। जब जब दर्द या तकलीफ बढ़े तब तब इस दवाको दोहराना चाहिये।



क्रोटनटिग ६ या ३०—बहुत खुजली, जलन, पीब निकलना खसडे पर पपडी जमना इत्यादि।

सल्फ्युरिक एसिड ६ या ३०—हरसाल वसन्त ऋतु में खसडा होने पर अथवा रोग पूरी तरह आराम न होने के कारण दुवारा होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—टेहुने में खसड़ा, उसमें जलन और खुजली,गरम प्रयोग से आराम मालुम होना।

रसटक्स६ या ३०—लाल रंगके रसभरे दानों में इसे देना चाहिये।

फेगोपाइरम ३ या ६—समूचे वदन में बहुत खुजली होनेके कारण रोगी पागल हो उठे तो इसे देना चाहिये।

मेजेरियम ६ या ३०—शरीर के किसी स्थान में बहुत खुजली, खुजलाते खुजलाते वहाँ खून निकाल देना, इत्यादि।

डलिकस ३—पीठ या शरीर का अन्य भाग खु
कारण दीवार या किवाडे आदि कडी चीजोंसे रगडना,
आराम मालूम होना इत्यादि।

इग्नेशिया ३—वदनमें खुजली खुजलाने पर उस
में मच्छड़ काटने की तरह फूल उठना।

आवश्यक सूचना—खुजली और खसडा स्पर्श
रोग हैं, इसलिये रोगी का कपड़ा, अँगौछा या विछौना
चीजें व्यवहार में न लानी चाहिये। नीम के पत्ते उबा
उसी पानी से खसडे के जखम को धो देना चाहिये।
पर लेवेन्डर आइल या पेट्रोलियम लगाने से इस
जीवाणु मर जाते है। गन्धक के मलहम से इस रोग में
लाभ होता है, परन्तु अच्छे चिकित्सक इसका व्यवहार
उचित नहीं समझते। शरीर जहाँ तक हो सके कम खुज
और वाह्य प्रयोग की दवाएँ कम व्यवहार करना अच्छा

उकवथ या एकज़िमा।

(Eczema)

यह एक तरह का प्रधान चर्म रोग है। साधारणतः
पैर में दाने निकल कर चमडे का काला पड जाना, दाने

बहुत खुजली और उनसे रस निकलना इत्यादि लक्षणों युक्त जो चर्म रोग होता है, उसे ही लोग-उकवथ कहते हैं, परन्तु पाश्चात्य चिकित्सकों ने इसके अनेक प्रकार के भेद निश्चित किये हैं। उनका कथन है कि यह रोग भिन्न-भिन्न अवस्था में, शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में, भिन्न भिन्न रूप में प्रकट होता है। कहीं यह दल वन्द रस या पीब पूर्ण फुन्सियों के रूप में, कहीं जख्म के रूप में, कहीं दरार के रूप में, कहीं दाद के रूप में और कहीं रूसी के रूप में प्रकट होता है।

शिर में रूसी होना, अथवा एक तरह की पपड़ी जमना और उसके कारण शिर के केशों का जटा की तरह एक दूसरे से सट जाना, छोटे बच्चों के चेहरे पर खुजली होना, पीवदार फुन्सियाँ होना, चमड़े पर लाल रंग का प्रदाह होकर उसपर फुन्सियाँ या खुजली होना, बड़ी बड़ी पपड़ी के साथ खुजली होना, रसपूर्ण फुन्सियाँ होना, जाँघ के पट्टे में खुजली सी होना, पैर में पपड़ीदार खुजली होना, हाथ या पैर के तलवे से रूसी या छाल सी निकलना, स्त्रियों के स्तन की घुण्डी या मिटनी में एक तरह का जख्म होना, पसीना या पानी लगने के कारण पैर की उँगलियों के बीच में खुजली और जख्म सा हो जाना आदि सभी रोग एकजिमा के अन्तर्गत हैं। हमारे यहाँ यह सब रोग भिन्न भिन्न नामों से पहचाने जाते हैं यथा,— शिर में एकजिमा होने पर गंज और रूसी, हाथ में एकजिमा होने पर छाजन और अपरस, कान के पीछे होने पर कानचढ़ा,

के लिये मजबूर होना, एक स्थान खुजलाते २ दूसरे स्थान का खुजला उठना इत्यादि।

एल्युमीना ३०—सूखा, गरम और लाल रंग का पुराना एकज़िमा, साथ ही गठिया रोग की शिकायत इत्यादि।

पेट्रोलियम ६—फटे हुए खून जैसे रंग के अण्डकोष के एकजिमा में इससे लाभ होता है। अण्डकोष के एकजिमा में हिपर सल्फर भी दिया जाता है।

आर्टिका युरेन्स ३X—जलन, डंक मारने जैसा दर्द, बहुत खुजली इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—जरा सा खुजलाते ही उसके चारों ओर प्रदाह जैसा हो जाना, जलन, पीले रंग की पपड़ी पड़ना, कान के पिछले भाग में एकजिमा इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—शिर में और कान के पिछले भाग में फुन्सियाँ, बहुत खुजली, बहुत बदबू, जरा में ही फट कर खून निकलना।

सोरिनम ३०—यह भी एकज़िमा की बढ़िया दवा है।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—जख्म और प्रदाह युक्त एक जिमा, उससे अनवरत जख्म पैदा करने वाला स्राव, केशवा स्थान में एकजिमा नष्ट हो जाता है।

लाइको पोडियम ३०—मोटी पपड़ी पड़ने और उसके नीचे से बदबूदार स्राव निकलना, खुजलाने पर खून बहना इत्यादि।

साइक्यूटा ६ या ३०—जलन और खुजली, एकजिमा का रस निकलने पर उसी की पीली पपड़ी जम जाना, पुरुषों का दाढ़ी का एकजिमा इत्यादि।

क्लिमेटिस ६ या ३०—शुक्ल पक्ष में आक्रान्त स्थान का प्रदाहित होना और कृष्ण पक्ष में सूख जाना।

थेराइटा कार्ब—शिर के बालों का उड़ जाना, गर्दन की गिल्टियों का बढ़ना इत्यादि।

क्रोटन ६ या ३०—पपड़ी के चारों ओर रसदार फुन्सियाँ, जहरबात जैसा रोग, बहुत खुजली, खुजलाने पर जलन, चेहरे और जननेन्द्रिय का एकजिमा।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—फुन्सो में बहुत पीव होने पर इसे देना चाहिये।

बेविष्टा ६—तलहत्थी के पिछले भाग में एकजिमा होने पर इसे देना चाहिये।

गीली पपड़ी पड़ने पर—ग्रेफाइटिस, लाइको, सोरिनम, रसटक्स, रूटा, साइलीसिया, सल्फर, हिपर, नेट्रमम्यूर, थूजा, स्टेफीसाइग्रिया इत्यादि।

गीली और बदबूदार पपड़ी पड़ने पर—ग्रेफाइटिस, लाइकोपोडियम, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, ओलियेन्डर, रसटक्स, साइलीसिया।

सूखी पपड़ी पड़ने पर—आर्सेनिक, कल्केरिया, मर्क्युरियस साइलीसिया, सीपिया, सल्फर।

तर एकजिया—कल्केरिया कार्ब, क्लिमेटिस, डाल्केमारा, ग्रेफाइटिस, हिपरसल्फर, लाइकोपोडियम, मर्क्युरियस, मेजेरियम, नेट्रम म्यूर, फाइटोलेक्का, रसटक्स, सीपिया, साइलीसिया, स्टेफीसेग्रिया, सल्फर।

सूखा एकजिमा—आर्सेनिक, वेराट्रा, कल्केरिया, केन्थरिस, फ्लोरिक एसिड, पेलीकार्व, लाइको, सीपिया, साइलीसिया, सल्फर।

—

ज्वालाकर स्राव होना—आर्सनिक, क्लिमेटिस, ग्रेफाइटिस, आयोड, नेट्रम, सल्फर।

—

बदबूदार स्राव—आर्सेनिक, ग्रेफाइटिस, हिपर, लाइकोपोडियम, मर्क्युरियस, मेजेरियम, सोरिनम, रसटक्स, सीपिया, साइलीसिया, स्टेफीसेग्रिया, सल्फर, थूजा इत्यादि।

—

जलपूर्ण फुन्सियाँ—रसटक्स, मर्क्युरियस, लाइको, आर्सेनिक, क्रोटन।

—

पीवदार एकजिमा—हिपर सल्फर, कल्केरिया, ग्रेफाइटिस, साइलीसिया।

—

हथेली की पीठ पर एकजिमा—अर्जेन्ट नाइट, केलीनाइट्रेट, मेजेरियम, प्लम्बम, थूजा, जिङ्कम।

पैर में एकजिमा—आर्सेनिक, कार्बोवेज, ग्रेफाइटिस, लाइको लेकेसिस, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, सल्फर, रसटक्स, साइलीसिया, सीपिया, नेट्रमम्यूर, पन्थासिनम, पल्सेटिला ।

जननेन्द्रिय पर एकजिमा—अर्जेन्ट नाइट, क्रोटन, आर्सेनिक, ग्रेफाइटिस, हिपर, लाइको, नेट्रम, नाइट्रिक एसिड, पेट्रोलियम, रसटक्स, सीपिया, थूजा इत्यादि।

दाढी में एकजिमा—कस्टिकम, हाइड्रेस्टिस, लाइकोपोडियम, नेट्रमम्यूर, नाइट्रिक एसिड, साइक्यूटा, सल्फर।

आवश्यक सूचना—साबुन और गरम पानी से अथवा नीम के पत्ते उबाल कर उस पानी से आक्रान्त स्थान को धोते रहना चाहिये । आक्रान्त स्थान पर गरम तेल लगाकर ऊपरसे केले का पत्ता रखकर बाँध देने से खुजली नहीं होती। जहाँ तक हो सके, कम खुजलाना अच्छा है ।

आमवात या पित्ती ।

(Urticaria)

यह रोग होने पर पहले शरीर खुजलाता है, बाद को ...पूचे शरीर में लाल या कुछ फीके रंग के चकत्ते चकत्ते आते हैं। आक्रान्त स्थान खुजलाता है और गरम मालूम

होता है। यह रोग अचानक पैदा होकर कई घण्टे या कई दिनों के बाद अपने आप आराम हो जाता है। रोग पुराना हो जाने पर तकलीफ होती है। कभी कभी इसके साथ श्वास-कष्ट या दमा जैसी शिकायत पैदा हो जाती है। कब्जियत, सर्दी या ठंढ लगना, भारी चीजें खाना, पित्त का बढ़ना, यकृत की खराबी इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। कभी कभी इसके साथ बुखार आ जाता है और मिचली या कै भी होती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या६—बुखार के साथ पित्ती निकलना, चमड़ा सूखा और गरम, प्यास, जीभ पर लेप, अस्थिरता और उत्कण्ठा इत्यादि।

डाल्केमारा ६—सर्दी, ठंढ या तर हवा लगने के कारण यह रोग होना अथवा बुखार, मुँह का स्वाद कड़ुवा, रात में पतले दस्त, जीभ मैली, जोरों की खुजली और जलन इत्यादि।

पल्सेटिला ६या३०—अधिक खाने के कारण यह रोग होना, और सुबह में पतले दस्त आना इत्यादि लक्षणों में स्त्रियों और नाजुक प्रकृति के लोगों को विशेष लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—यदि पित्ती निकलने के बाद एकायक गायब हो जाय और गायब होने के बाद श्वासकष्ट, छाती में दर्द इत्यादि लक्षण प्रकट हों तो इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—पित्ती के साथ जोरों का शिरदर्द, चेहरा लाल, बच्चों को यह रोग होने पर उनका बहुत रोना, चकत्तों में लाली के साथ कुछ पीलापन, रगड़ने से खुजली का कम होना।

एपिस ६ या ३०—चकत्तों में लाली के साथ कुछ नीलापन अथवा फीके चकत्ते, बहुत फूलन, खुजली और जलन, रगड़ बिल्कुल बरदास्त न होना, अथवा जोरों से रगड़ने पर आराम मालूम होना, जरा में ही क्रोधित हो उठने वाले बच्चों को यह रोग होना।

हिपर सल्फर ६ या ३०—जोरों की सरदी या जुकाम के साथ इस रोग का होना, खासकर माथे में और दाहिनी ओर अधिक तकलीफ, हाथ और छाती से पित्ती का शुरू होना, खुली हवा में तकलीफ का बढ़ना, तेज और चिड़चिड़े के आदमियों को यह रोग होना।

एलियम सिपा ६ या ३०—जुकाम के साथ यह रोग होना, जाँघों में पहले पहल पित्ती का निकलना, खुली हवा में आराम मालूम होना, निद्रालु, डरपोक और उत्कंठित प्रकृति के लोगों की बीमारी।

नक्सवोमिका ३०—शराबियों की बीमारी में इस दवा से विशेष लाभ होता है।

आर्सेनिक ६ या ३०—कच्चे फल खाने के कारण यह रोग होना अथवा बहुत तेज बीमारी, रात में तकलीफ का बढ़ना, क्रुप जैसी खाँसी, रोग का एकायक दब जाना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—ठंढे पानी से नहाने के बाद तुरन्त ही पित्ती निकले तो इसे देना चाहिये।

स्पिरिट कैम्फर—खट्टे फल या खटाई खाने के बाद यह रोग होने पर इसका एक बूँद चीनी या बतासे पर डाल कर देने से अनेक बार बहुत लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—जलन और खुजली, चमड़ा फूला और लाल पानी में भीगने के कारण यह रोग होना, ठंढी हवा में तकलीफ का बढ़ना, चलने फिरने से आराम, वात रोग के साथ यह रोग होना।

सीपिया ६ या ३०—जरायु दोष के साथ यह रोग होना, ठढे स्थान में तकलीफ का बढ़ना और गरम स्थान में आराम मालूम होना।

आर्टिक युरन्स ३ या ६—कोई दूसरी शिकायत न होने पर अनेक बार केवल इसी दवा से रोग आराम हो जाता है।

सोरीनम ३० या २००—परिश्रम करने के बाद यह रोग होना, अथवा बारंबार रोग का आक्रमण।

रिउमेक्स ६ या २००—शरीर के भिन्न भिन्न स्थानों में खुजली, निचले अंगों में अधिक खुजली, शरीर खोलने पर खुजली का बढ़ना।

सल्फर ३० या २००—पुरानी बीमारी, बहुत खुजली रात में बिछौने पर खुजली का बढ़ना।

एनाकार्डियम ६ या ३०—मानसिक उद्वेग के कारण यह रोग होना, फफोले जैसे चकत्ते निकलना, असह्य खुजली जलन, और फूलन, शाम के समय और बिछौनेपर लेटने से खुजली का बढ़ना।

पुरानी बीमारी में—कल्केरिया, लाइको पोडियम, कस्टि-कम, सल्फर, कार्बोवेज, एपिस, आर्सेनिक और नेट्रमम्यूर से विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—ठंढा और सरदी से बचना चाहिये। कुसुम पानी से नहाना, हलकी चीजें खाना, नीबू काटकर उससे बदन घिसना और कमली ओढना इस रोग में लाभदायक है।

जख्म या घाव।

(Ulcer)

कट जाना, चोट लगना, जल जाना, प्रदाह होना, गण्डमाला, गरमी या पारेका दोष होना इत्यादि अनेक कारणों से शरीर के किसी भी स्थान में घाव या जख्म हो सकता है। घाव होने पर चमड़ा फट जाता है और वह स्थान पक कर उससे पीव निकलता है। साधारण घाव होने पर वह

आसानी से भर जाता है । शरीर में कोई विष या दोष होने पर घाव जल्दी नहीं भरता । किसी किसी जख्म में विशेष दर्द या तकलीफ नहीं होती । किसी जख्म में तरह तरह का दर्द, सूजन, लाली गरमी आदि लक्षण दिखायी देते है । किसी जख्म का किनारा ऊँचा होता है और उसमें स्पर्श का ज्ञान नहीं होता । कोई जख्म पचन शील होते हैं । इनका मांस सड़ सड़ और गल गल कर पीव के साथ निकलता है या वैसे ही गिरता है । जख्म पुराना हो जाने पर, खास कर उस स्थान का जख्म, जहाँ अधिक मांस नहीं है, नासूर के रूप में परिणत हो जाता है । खराब ढंग के जख्म देरी से आराम होते है ।

चिकित्सा ।

पारे या गरमी का दोष होनेपर—हिपरसल्फर, अरम मेट, लेकेसिस, साइलीसिया, केली हाइड्रो, नाइट्रिक एसिड ।

खराब जख्म—सल्फर, नाइट्रिक एसिड, कस्टीकम, कार्बोवेज, आर्सेनिक, लाइकोपोडियम, साइलीसिया ।

नासूर जैसे जख्म—साइलीसिया, कल्केरिया, लाइको-पोडियम, फोस्फरस, एसिड फस, सल्फर, कार्बोवेज, कस्टी-कम आर्सेनिक, ग्रेफाइटिस, लेकेसिस, मेजेरियम, हाइड्रे-स्टिस, सल्फ्युरिक एसिड, एसिड, नाइट्रिक, मर्क्युरियस-सल इत्यादि।

सड़नेवाले जख्म—कार्बोवेज, लेकेसिस, आर्सेनिक, सल्फर, लाइको पोडियम, साइलीसिया।

गहरे जख्म—साइलीसिया, सल्फर, आर्सेनिक, कल्केरिया, रसटक्स, लेकेसिस।

चिपटे जख्म—सल्फर, आर्सेनिक, लाइकोपोडियम, कार्बोवेज, एसिड फस, नाइट्रिक एसिड।

फूले हुए जख्म—सल्फर, साइलीसिया, रसटक्स लाइकोपोडियम, सीपिया।

ऊँचे किनारे का जख्म—सल्फर, कल्केरिया, साइली-सिया, आर्सेनिक, लाइकोपोडियम, लेकेसिस, रसटक्स।

जख्म से पीला पीव निकलना—सल्फर, कल्केरिया, साइलीसिया, हिपर सल्फर।

जख्म से पतला पीव निकलना—साइलीसिया, सल्फर, आर्सेनिक, कार्बोवेज, लेकेसिस, लाइको पोडियम।

जख्म से खून निकलना—फोस्फरस, लेकेसिस, सल्फर, आर्सेनिक, कार्बोवेज, लाइकोपोडियम, साइलीसिया, हिपर सल्फर।

आर्सेनिक ६ या ३०—जख्म में बहुत जलन, खून बहना, आसपास का स्थान कड़ा हो जाना, गरम मालूम होना, खून मिला या काले रंग का पीव निकलना।

नाइट्रिक एसिड ६—पारे या गरमी का दोष होने पर इसे देना चाहिये।

हाइड्रेस्टिस १ या ३—नाक, मुँह, आँख इत्यादि स्थानों के जख्म में इससे विशेष लाभ होता है। मुँह के जख्म में इसका लोशन बनाकर उससे कुल्ला करना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ६—बदबूदार गाढ़ा पीव बहना, जख्म में खुजली या डंक मारने जैसा दर्द, जख्मवाले स्थान का मांस बढ़ना, नासूर जैसा जख्म।

लेकेसिस ६ या ३०—सड़नेवाला या नासूर जैसा घाव, घाव के चारों ओर छोटी छोटी फुन्सियाँ, बदबूदार पीव निकलना।

मेजेरियम ६ या ३०—बनाहट, जरा में ही खून निकलना, रात में तकलीफ का बढ़ना, पीव जमकर पपड़ी पड़ना, उसके नीचे पीव का संचित रहना।

सल्फ्युरिक एसिड ६—खुजली, टपक या कतरने जैसा दर्द, हाथ लगाने से जरा में ही खून का निकल पड़ना, खून में खट्टी गन्ध, हड्डीतक पहुँचे हुए पचनशील नासूर इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ६—गहरा घाव, किनारे ऊँचे, लाली, छूने से दर्द का बढ़ना, घाव से खून गिरना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु, जरा में ही जख्म होना और उसमें पीव का पड़ जाना, नासूर जैसा जख्म, उसके आसपास लाली।

हिपर सल्फर ६, ३० या २००—जख्म से बदबूदार पीब निकलना, स्पर्श बरदास्त न होना, डंक मारने जैसा दर्द, पारे का दोष, जख्म के चारों ओर फफोला, ज्वालाकर स्राव।

लाइको पोडियम ६ या ३०—पैर मे पुराना जख्म, उसमें रात के समय फटने जैसा दर्द, नासूर, जख्म का किनारा कड़ा, लाल और उलटा हुआ, धोने के समय जलन और रक्त-स्राव।

साइलीसिया ३० या २००—गहरा घाव, काले रंग का घाव, उससे खून निकलना, नासूर या सड़नेवाला जख्म, पुराना जख्म, बदबूदार पतला पीब निकलना, घाव भरने में देरी लगना इत्यादि। घाव को जल्दी भरने की और नासूर की यह बढ़िया दवा है।

सल्फर ३० या २००—जख्म का किनारा ऊँचा और फूला हुआ, ज़रा में ही खून बहने लगना, ज़ख्म के चारों ओर फुन्सियाँ, फटने या डंक मारने जैसा दर्द, बदबूदार पीब निकलना, नासूर, शोथ, गाढ़ा और, पीला पीब निकलना इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—बदबूदार जख्म, उससे खून या ज्वाला कर बदबूदार स्राव निकलना, जलन के साथ दर्द, कठिनाई से आराम होने वाला पचनशील जख्म इत्यादि।

अर्निका ६ या३० — नीले रंग का जख्म और उससे सहज में ही खूननिकलना, चोट लगनेके कारण जख्म होना इत्यादि।

केलेण्डुला मदर टिञ्चर— जख्मों के लिये वाह्य प्रयोग की यह एक बढिया दवा है। इसमें आठगुना तेल मिला कर जख्मों में लगाने से जख्म जल्दी भर जाते हैं। एक औंस केलेण्डुला मदरटिञ्चर आधा सेर पानी में मिलाने से इसका लोशन या धावन तैयार होता है। इसमें साफ कपड़े की पट्टी भिगोकर सडनेवाले जख्मों पर चढाने से उनका सडना बन्द हो जाता है।

कुछ खास दवाएँ— घाव में यदि जलन हो तो सबसे पहले आर्सेनिक दीजिये। जलन के साथ बदबू भी हो तो कार्बोवेज। घाव फैल रहा हो या उसके आस पास छोटी छोटी फुन्सियाँ या जख्म हों तो लेकेसिस। जलने के कारण फफोलेवाले जख्मों में साइलीसिया। जख्मों पर नीले धब्बे हों और गरमी बरदास्त होती हो तो आर्सेनिक, लेकिन गरमी से दर्द बढ़ता हो तो सिकेली। मसे या घट्टों के आस पास जख्म हों तो एन्टिमक्रूड।

इनके अतिरिक्त फोसफरस, केली बाइक्रोम, पियोनिया, हेमामेलिस, केली आयोड, क्रोटेलस, कैल्क फ्लोर, थूजा,

एन्थ्रासिनम, सार्सापरीला, रसटक्स, सोरिनम, चायना, कल्केरिया फस, और आर्सेनिक आयोड आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—जख्मों को वाहरी चोट से वचाने के लिये उन पर साफ रूई या वोरिक ,काटन आदि रखकर बाँध रखना चाहिये। दिन में कम से कम एक बार केलेण्डुला धायन या नीम के पत्ते उवाल कर उसके पानी से जख्म को अच्छी तरह धोकर पोंछ देना चाहिये। घी में नीम के पत्ते पका कर उस घी को जख्म पर लगाने से या केलेण्डुला का तेल लगाने से जख्म जल्दी सूख जाते हैं। माँस, मछली, खटाई और मिठाई खाना ठीक नहीं। दाल, रोटी, दूध, हलुवा और शोरवा आदि चीजें सुपथ्य है। जख्म को वहुत जल्दी सुखा देने वाले मलहम आदि व्यवहार करने से अनेक वार हानि होती है। विकट जख्मों का इलाज चिकित्सकों से ही कराना अच्छा है।

कैन्सर या कर्कट रोग।

(Cancer)

खून की खरावी, मानसिक चिन्ता और कष्ट, कमजोरी, अधिक परिश्रम करना इत्यादि करणों से यह रोग होता है।

रोग होने पर शरीर के किसी भी स्थान में किसी भी

आकार का अर्बुद उत्पन्न होता है। स्त्रियों के जरायु और स्तन में तथा पुरुषों के पाकाशय, अस्थि और चर्म पर यह रोग विशेष रूपसे प्रकट होता है। एकबार कैन्सर होनेपर वह उसी स्थान में या दूसरे स्थानमें बारंबार हुआ करता है। दर्द, घाव, सूजन इत्यादि इस रोग के स्थानिक लक्षण हैं। वृद्धावस्था में कैन्सर होने पर रोगी की प्राय. मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६—कैन्सर की यह एक बढ़िया दवा है। जलन, प्यास, बेचैनी, बुखार, शरीरकी क्षीणता इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक आयोड ३X—जलन के साथ दर्द, रात के समय और शीतलता से दर्द का बढ़ना, गरमी में आराम मालूम होना।

कल्केरिया कार्ब ३०—कैन्सर में सड़न, पीले रंग का बदबूदार पीब निकलना, शरीर का क्षीण होते जाना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—अर्बुद के स्थान में जख्म, उसके चारों ओर का चमड़ा काला, हाथ लगाने से जलन और दर्द।

साइलीसिया ६ या ३०—अन्यान्य दवाओं से रोग पूरा पूरा आराम न होने पर इसे देना चाहिये। इसके बाद सल्फर देने से रोग अक्सर अच्छा हो जाता है।

फाइटोलेका १X–स्त्रियोंके स्तन में कैन्सर, सूजन और कड़ापन इत्यादि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये।

एपिस ६–गहरा घाव, चारों ओरके किनारे ऊँचे और सड़े हुए सफेद मांस युक्त, जलन, खुजली, डंक मारने जैसा दर्द, पीला पीव निकलना, प्यास न होना।

बेलेडोना ६–आक्रान्त स्थानमें हाथ रखने से जलन, जख्म पर लाल पपड़ी, बुखार और रक्त स्राव इत्यादि।

हाइड्रैस्टिस २X–दुबला पतला शरीर, फीका और पीला चेहरा, अवसन्नता, कब्जियत इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

कोनायम ३०—चोट आदि लगने के कारण छाती में . होनेपर इसे देना चाहिये।

बेराइटाकार्ब ६—बूढ़ोंकी बीमारी, अर्बुदका धीरे धीरे बढ़ते जाना इत्यादि।

केलीसियेनेटम ३—जीभ के अर्बुद में इससे लाभ होता है।

कार्बोएनीमेलिस ६—पाकाशय में कैन्सर, अर्बुद कड़ा और वेदना पूर्ण, अर्बुदके बाहरी स्थानमें जख्म, अजीर्णता, पेटमे वायु संचय और पतले दस्त इत्यादि।

इनके अतिरिक्त फोस्फरस, कंडयुरेंगा, एसिड कार्बोलिक, रूटा, आयोडियम, केली ब्रोम, सिकेली, क्रियोजोट, सल्फर, सेङगुइनेरिया, फेरमआयोड, युफोर्बिया, एकिन्नेसिया और प्लाटिना आदि दवाओंसे भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—अर्बुद बराबर बढ़ता जारहा हो तो चिरवा देना चाहिये, लेकिन यदि समूचे शरीरका खून दूषित हो जाता है, तो चीरा लगवाने पर भी कोई लाभ नहीं होता। इस रोग में दूध और नमक खाना मना है ताजे फल खाना लाभदायक है।

हार्पिस या इन्द्रविदर।

(Herpes)

यह भी एक प्रकार का चर्मरोग है। इसमें एक या एक साथ अनेक जलपूर्ण फुन्सियाँ प्रकट होती हैं जो देखने में छोटे छोटे फफोले जैसी मालूम होती हैं। इन में खुजली, जलन सुड सुड़ाहट और दर्द होता है। बुखार आनेपर कभी-कभी होठों पर दाने निकलते हैं। लोग इसे होठ फलना या बुखार फदकना कहते हैं। वास्तवमें यह शिकायत भी इसी रोग के अन्तर्गत है। छाले पककर फूट जानेपर उनसे पानी निकल जाता है और उनपर पपड़ी जम जाती है।

यह रोग होने पर थोड़ा बहुत बुखार भी आता है. और शरीर में दर्द होता है। भिन्न-भिन्न स्थानो में हार्पिस होने पर भिन्न-भिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है। यथा-चेहरे पर होनेसे हार्पिस फेसियालिस, कपाल और आँखके पपुटों पर होने से हार्पिस फ्लिक्टी नोइडस, लिङ्गमुण्ड के आवरण पर होने से हार्पिस प्रिप्युशियेलिस इत्यादि। इनमें से हार्पिस जोस्टर नामक हार्पिस विशेष कष्टदायक होता है। यह शरीर के एक ही पार्श्वमें, खासकर दाहिनी ओर होता है। रोग बहुत थोड़े स्थान में प्रकट होता है। बादको चारों ओर नये दाने प्रकट होकर एक दूसरेसे मिलते जाते हैं। दाने

पककर छाले या फफोले बन जाते हैं और उनके फूटने पर जख्म हो जाता है। कभी कभी रोग आराम होने पर स्नायविक दर्द पैदा हो जाता है। साधारण बीमारी एक सप्ताहके अन्दर अच्छी हो जाती है। रोग तेज होने पर उसे पूर्ण रूपसे आरोग्य होनेमें दो तीन सप्ताहका समय लग जाताहै।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—छाले जैसी फुन्सियाँ और उन में जलन, फुन्सियों पर मछलीके खाल जैसी पपड़ी, बहुत जलन के साथ दर्द, रातमें रोगका बढना, बेचैनी इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—वसन्त ऋतुमें यह रोग होना, बायीं ओरकी बीमारी, बड़े-बड़े फफोले और उनमें जलन।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०—कान, पीठ, पट्ठा, गर्दन, हाथ और पैरकी सिकुड़नवाली जगहों में छाले उनसे चिकना-चिकना रस निकलना इत्यादि लक्षणों में और अन्यान्य दवाओंसे लाभ न होनेपर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस ६ या ३०—इससे नयी फुन्सियों का निकलना रुक जाता है और पुरानी फुन्सियाँ आराम हो जाती हैं।

रसटक्स ६—बुखार, जलन और बहुत खुजली इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एकोनाइट ३ या ६—चमड़ा लाल, जलन, और बुखार या प्रदाह होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—फुन्सी पर मुर्दा चमड़ेको पपड़ी सी जमना, पीव भरी फुन्सियाँ, बहुत खुजली, बारबार इस रोग का होना।

क्रोटन ३ या ६—जलन, खुजली, जलभरी फुन्सियाँ और उनमें दर्द इत्यादि लक्षणों में इससे बहुत लाभ होता है। अर्धाङ्ग के हार्पिस की यह बढ़िया दवा है।

आयरिस ६ या ३०—दाहिने तरफकी बीमारी, पाकाशय में गोलमाल इत्यादि।

केलमिया ६ या ३०—अर्धाङ्गमें हार्पिस होने के बाद स्नायुशूल जैसा दर्द हो जाने पर इसे देना चाहिये।

मेजेरियम ६ या ३०—अर्धाङ्ग में हार्पिस होनेके बाद स्नायुशूल, साथ ही फुन्सियों पर भूरे रंगकी पपड़ी जमना।

नेट्रमसल्फ ६ या ३०—हजामत बनवानेके बाद दाढ़ी

ओर गाल आदि स्थानों पर इस रोग का प्रकट होना जल-पूर्ण फुन्सियाँ इत्यादि ।

पल्सेटिला ६ या ३०—हार्पिसके साथ पाकाशय में गोलमाल, शाम के वक्त तकलीफ का बढना, कोमल और क्रन्दन शील प्रकृति इत्यादि ।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—जोडों के नीचे, हाथ, जाँघ, और पैरमें हार्पिस, उसपर सूखी पपडी,एक स्थान में खुजलाते खुजलाते दूसरे स्थानमें खुजलीका शुरू हो जाना इत्यादि ।

थूजा ३० या २००—खुजलाने से जलन, शरीर में सूजाकका विष होनेके कारण यह रोग होना ।

जिङ्कम ६ या ३०—आक्रान्त स्थान में सुई चुभोने जसा दर्द, फुन्सियों में पीब इत्यादि ।

रेननक्युलस बल्बोसस ६ या ३०—हार्पिसके साथ पसलियोंमें शूल वेदना, खुजली, -छालोंसे दाह और पतला रस निकलना ।

कार्बोएनी ६ या ३०आक्रान्त स्थान चमकीला, लाल, और चिकना,उस स्थान में पीव पड़ने की सम्भावना इत्यादि।

केलीआर्स ६ या ३०–चमड़े का रंग बदरंग हो जाने पर इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०–आक्रान्त स्थान सुन्न हो जाने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त ग्रेफाइटिस, आस्टिलेगो, पिरारा आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। रोग के आरम्भ से ही चावलमोगरे का तेल मालिश करने से असीम लाभ होता है।

श्वेतकुष्ट

(Leucoderma)

इस रोग का प्रकृत कारण अभी तक नहीं मालूम हो सका। साधारणतःपारे या गरमी का दोष अथवा स्नायविकता आदि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर शरीर में पहले छोटे छोटे सफेद दाग पड़ते हैं। बाद को बढते बढते समूचा शरीर सफेद हो जाता है।

चिकित्सा

आर्सेनिक ६ या ३०—श्वेतकुष्ट की यह प्रधान दवा है।

नाइट्रिक एसिड ६—पारे का दोष होने पर इस दवा से लाभ होता है ।

पाइपर मिथिष्टिकम६—रोग के आरम्भमें जब बहुत छोटे छोटे दाग दिखायी दें, तब इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पारे या गरमी का दोष शरीर में होने पर इसे व्यवहार करना चाहिये।

इनके अतिरिक्त, कार्बोएनी, मर्क्युरियस, अर्जेन्टनाइट, सल्फर और साइलीसिया आदि दवायें भी व्यवहार का जाती हैं।

उंगली पकना

(Whitlow)

इस रोग को बलैया निकलना भी कहते हैं। यह रोग होने पर उँगली का अग्रभाग पक जाता है और उसमें काँटा चुभने जैसा अथवा टपटपी जैसा बहुत ही कष्टदायक दर्द होता है।

कार्वोएनी ६ या ३०आक्रान्त स्थान चमकीला, लाल, और चिकना,उस स्थान में पीव पडने की सम्भावना इत्यादि।

केलीआर्स ६ या ३०—चमडे का रग वदरंग हो जाने पर इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—आक्रान्त स्थान सुन्न हो जाने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त ग्रेफाइटिस, आस्टिलेगो, पिरारा आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। रोग के आरम्भ से ही चावल मोगरे का तेल मालिश करने से असीम लाभ होता है।

श्वेतकुष्ट

(Leucoderma)

इस रोग का प्रकृत कारण अभी तक नहीं मालुम हो सका। साधारणत.पारे या गरमी का दोप अथवा स्नायविकता आदि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर शरीर में पहले छोटे छोटे सफेद दाग पडते हैं। वाद को वढते वढते समूचा शरीर सफेद हो जाता है।

एन्थ्रासिनम ६ या ३०—भयकर जलन के साथ मास सड़ सड कर गिरता हो तो इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—जलन के साथ डंक मारने जैसा दर्द होने पर इससे लाभ होता है।

लिडम ६—सुई, कोई नोकदार चीज या फॉस लगने के बाद यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—यदि पीब पड़ने लग जाय तो तीसी की पुल्टिस चढा कर शीघ्र पका देना चाहिये। अपने आप न फूटे तो चीरा लगवा देना चाहिये। इससे तकलीफ घट जाती है। बारबार यह रोग होता हो तो सल्फर ३० और साइलीसिया ३० छ• या आठ आठ दिन का अन्तर देकर पारी पारी से देना चाहिये इससे पुन रोग होने का भय नहीं रहता।

मसे [Warts]

चमडे पर छोटे बडे भिन्न भिन्न आकार के मसे होते हैं। इनके कारण न तो किसी तरह का दर्द होता है न कोई कष्ट। कहीं कहीं के मसे देखने में अवश्य बुरे मालुम होते हैं—

पीव बह जाने पर रोग आराम हो जाता है,परन्तु अनेक बार उँगली का कुछ अंश गलकर नष्ट हो जाता है या आखिरी पोर सदा के लिये टेढा हो जाता है।

चिकित्सा

मर्क्युरियस सल६या ३०—रोग के आरम्भ में इसे देने से प्राय पीव नहीं पडने पाता। इसके बाद सल्फर ३० देने से रोग पूर्ण रूप से आराम हो जाता है।

हिपर सल्फर ६—बहुत तेज़ दर्द और पीव पड़ने की सम्भावना दिखायी देने पर इसे देना चाहिये। इससे अगर ज़रा भी लाभ न हो तो कस्टिकम दे।

साइलीसिया३०—हिपर से कुछ लाभ होने पर इसे देना चाहिये। इससे सूजन और दर्द आराम हो जाता।

लेकेसिस६ या ३०—आक्रान्त स्थान का रंग गहरा लाल या नीली आभायुक्त होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत जलन, तेज दर्द और । का रग काला हो जाने पर इससे लाभहोता है।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—मसे कड़े हों और आसानी से टूट जाते हों तो इसे देना चाहिये।

ओरमम्यूर ६ या ३०—पारे या गरमी का दोष होने के कारण, जीभ, योनिद्वार या मलद्वार में होने पर इससे लाभ होता है।

लाइको पोडियम ३०—दो या इससे अधिक भागों में बंटा हुआ मसा, उसके चारों ओर दाद सी हो जाना या उससे छाल निकलना।

सीपिया ६ या ३०—मसे के मध्य स्थान में नोकदार मास का बढ़ना, हाथ और चेहरे पर चिपटे, छोटे और कड़े मसे, उनमें खुजली इत्यादि।

सिनावेरिस ६ या ३०—जननेन्द्रिय के आवरण पर मसे हों तो इसे देना चाहिये।

सल्फर ३० या २००—अधिक तादाद में मसे होते हों तो इसे देना चाहिये।

मसे कटवा देने से वे अनायास अच्छे हो जा सकते हैं, परन्तु अनेक बार इससे कोई दूसरा रोग हो जाने का डर रहता है।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—चेहरा, गर्दन या हाथ पर मसे होना, गण्डमाला धातु और वात रोगियों को यह रोग होना।

कास्टिकम ६ या ३०—नाक, चेहरा और उंगली के अगले भाग पर बहुत दिन के पुराने मसे हों तो इसे देना चाहिये।

थूजा ३० या २००—यह मसों की बढ़िया दवा है। इसे सेवन करते समय इसका अथवा रसटक्स का मदरटिंक्चर बाहर से लगाने पर विशेष लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—थूजा से लाभ न होने पर इसे चाहिये।



एन्टिमक्रूड ६ या ३०—मसे कड़े हों और आसानी से टूट जाते हों तो इसे देना चाहिये।

अरमम्यूर ६ या ३०—पारे या गरमी का दोष होने के कारण, जीभ, योनिद्वार या मलद्वार में होने पर इससे लाभ होता है।

लाइको पोडियम ३०—दो या इससे अधिक भागों में बँटा हुआ मसा, उसके चारो ओर दाद सी हो जाना या उससे छाल निकलना।

सोपिया ६ या ३०—मसे के मध्य स्थान में नोकदार मास का बढ़ना, हाथ और चेहरे पर चिपटे, छोटे और कड़े मसे, उनमें खुजली इत्यादि।

सिनाबेरिस ६ या ३०—जननेन्द्रिय के आवरण पर मसे हों तो इसे देना चाहिये।

सल्फर ३० या २००—अधिक तादाद में मसे होते हों तो इसे देना चाहिये।

मसे कटवा देने से वे अनायास अच्छे हो जा सकते हैं, परन्तु अनेक बार इससे कोई दूसरा रोग हो जाने का डर रहता है।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—चेहरा, गर्दन या हाथ पर मसे होना, गण्डमाला धातु और वात रोगियों को यह रोग होना।

कास्टिकम ६ या ३०—नाक, चेहरा और उंगली के अगले भाग पर बहुत दिन के पुराने मसे हों तो इसे देना चाहिये।

थूजा ३० या २००—यह मसों की बढ़िया दवा है। इसे सेवन करते समय इसका अथवा रसटक्स का मदरटिञ्चर बाहर से लगाने पर विशेष लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—थूजा से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—मसे कड़े हों और आसानी से टूट जाते हों तो इसे देना चाहिये।

अरमम्यूर ६ या ३०—पारे या गरमी का दोष होने के कारण, जीभ, योनिद्वार या मलद्वार में होने पर इससे लाभ होता है।

लाइको पोडियम ३०—दो या इससे अधिक भागों में बँटा हुआ मसा, उसके चारों ओर दाद सी हो जाना या उससे छाल निकलना।

सोपिया ६ या ३०—मसे के मध्य स्थान में नोकदार मास का बढ़ना, हाथ और चेहरे पर चिपटे, छोटे और कड़े मसे, उनमें खुजली इत्यादि।

सिनाबेरिस ६ या ३०—जननेन्द्रिय के आवरण पर मसे हों तो इसे देना चाहिये।

सल्फर ३० या २००—अधिक तादाद में मसे होते हों तो इसे देना चाहिये।

थूजा, कल्केरिया कार्व और सल्फर इस रोग प्रधान दवायें है। छोटे मसों में कल्केरिया, डाल्केम एसिड नाइट और थूजा, बड़े मसों में कस्टिकम, डाल्केम एसिड नाइट और सीपिया, कड़े मसों में एन्टिम कल्केरिया और सल्फर आदि दवाओं से विशेष लाभ होता मसे में सदा हाथ लगाते रहना बुरा है। इससे वे जल्दी बढ़ जाते है।

शिर में दाद।

[Scald Head]

यह रोग साधारणत बच्चों को ही होता है। बालों जड़ो में बहुत सी छोटी छोटी लाल फुन्सियां निकलना, उ एक दूसरे से जुड़ कर एक हो जाना, उनसे चिकना वि बदबूदार रस निकलना, और उन पर मोटी पपड़ी जाना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। यह संक्रामक होता है। अनेक बार इसके दर्द के कारण गले गॉठे फूल उठती है और रोग पुराना हो जाने पर शिर केश नष्ट हो जाते हैं।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्व ३०—मोटे और थुलथुले शरी बच्चों को यह रोग होना, सूखी फुन्सियाँ, उनपर कड़ी प जब तब उनमें बहुत खुजली होना इत्यादि।

हिपर सल्फर ३०—जरा सा कुछ लगते ही उसका पक उठना, फुन्सी से रस निकलना, कपाल, गर्दन और चेहरे तक फुन्सियों का फैल जाना इत्यादि।

ग्रेफाइटिस ३०—रस भरी फुन्सियाँ और उनसे बदबूदार रस निकलना, शिरमें फुन्सियाँ होकर, कान के पीछे तक उनका फैल जाना।

रसटक्स ६ या ३०—रोग के आरम्भ में जल भरी छालों जैसी फुन्सिया निकलना, फुन्सियों से जरा में ही खून निकलना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—गण्डमाला धातु, कृमि दोष, सूखी फुन्सियाँ, उनसे रूसी सी झड़ना, बहुत खुजली इत्यादि।

आवश्यक सूचना—यह संक्रामक रोग है, इसलिये रोगी की टोपी, अँगौछा कंघा, ब्रश इत्यादि चीजें दूसरों को न व्यवहार करना चाहिये। बाल बहुत छोटे छोटे काट देना चाहिये और शिर सदा साफ रखना चाहिये। मोटी पपड़ियों

थूजा, कल्केरिया कार्ब और सल्फर इस रोग की प्रधान दवाएँ है। छोटे मसों में कल्केरिया, डाल्केमारा, एसिड नाइट्र और थूजा, बड़े मसों में कस्टिकम, डाल्केमारा, एसिड नाइट्र और सीपिया, कड़े मसों में एन्टिमक्रूड, कल्केरिया और सल्फर आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है। मसे में सदा हाथ लगाते रहना बुरा है। इससे वे बहुत जल्दी बढ़ जाते हैं।

शिर में दाद।

[Scald Head]

यह रोग साधारणत बच्चों को ही होता है। बालों की जड़ो में बहुत सी छोटी छोटी लाल फुन्सियां निकलना, उनका एक दूसरे से जुड़ कर एक हो जाना, उनसे चिकना चिकना बदबूदार रस निकलना, और उन पर मोटी पपडी पड़ जाना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। यह रोग संक्रामक होता है। अनेक बार इसके दर्द के कारण गले की गाँठे फूल उठती हैं और रोग पुराना हो जाने पर शिर के केश नष्ट हो जाते हैं।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ३०—मोटे और थुलथुले शरीर के बच्चों को यह रोग होना, सूखी फुन्सियाँ, उनपर कड़ी पपड़ी, जब तब उनमें बहुत खुजली होना इत्यादि।

हिपर सल्फर ३०—जरा सा कुछ लगते ही उसका पक उठना, फुन्सी से रस निकलना, कपाल, गर्दन और चेहरे तक फुन्सियों का फैल जाना इत्यादि ।

ग्रेफाइटिस ३०—रस भरी फुन्सियाँ और उनसे बदबूदार रस निकलना, शिरमें फुन्सियाँ होकर, कान के पीछे तक उनका फैल जाना ।

रसटक्स ६ या ३०—रोग के आरम्भ में जल भरी छालें जैसी फुन्सिया निकलना, फुन्सियों से जरा मे ही खून निकलना इत्यादि ।

सल्फर ३० या २००—गण्डमाला धातु, कृमि दोष, सूखी फुन्सियाँ, उनसे रूसी सी झड़ना, बहुत खुजली इत्यादि ।

आवश्यक सूचना—यह संक्रामक रोग है, इसलिये रोगी की टोपी, अँगोछा कघा, ब्रश इत्यादि चीजें दूसरों को न व्यवहार करना चाहिये । बाल बहुत छोटे छोटे काट देना चाहिये और शिर सदा साफ रखना चाहिये । मोटी पपड़ियाँ

को नारियल के तेल से तर कर, धीरे धीरे निकाल देना चाहिये। गरम पानी या नीम के पानी से रोज एक दो बार शिर धो देना लाभदायक है।

बच्चों की फुन्सियाँ।

(Milk Crust)

दुधमुँहे बच्चों को, खासकर दाँत निकलने के समय यह रोग होता है। इसमें पहले आक्रान्त स्थान लाल होता है, बादको वहाँ छोटी छोटी छालें जैसी सफेद फुन्सियाँ दल बाँध कर प्रकट होती हैं। चेहरा और कपाल आदि स्थानों में यह फुन्सियाँ विशेष रूपसे निकलती हैं। इन फुन्सियों में बहुत खुजली होती है,खुजलाने के बाद उनसे रस-निकलता है। इसके बाद उनका मुँह सूख कर उनपर पपड़ी पड़ जाती है। कभी कभी कई छोटी फुन्सिया एक साथ मिल कर एक बड़ी फुन्सी हो जाती है।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—फुन्सियों में जलन, उनसे रस निकलना और खुजली इत्यादि।



कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—फुन्सी के उपर पपड़ी पड़ने पर और गण्डमाला धातु वाले बच्चों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०—जिन्हें जरा सा जख्म होते ही पीब पड़ जाता हो, उन्हें इससे विशेष लाभ होता है।

सीपिया ६ या ३०—चकत्ते चकत्ते जैसी फुन्सियाँ निकलनेपर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—फुन्सियों में बहुत खुजली, होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त लाइको पोडियम, डाटकेमारा, रसटक्स आदि दवाओं से भी लाभ होता है। फुन्सियों पर ग्लीसरीन, मक्खन या नारियल का तेल लगाने से आराम रहता है।

फीलपाँवा या हाथीपाँवा।

(Elephantiasis)

इस रोग को श्लीपद या गजाङ्गी भी कहते हैं। एक प्रकार का शोणित, कृमि, प्रदाह, विसर्प, पामा इत्यादि कारणों से यह रोग होता है, परन्तु लसिका प्रनालीमें रुकावट पैदा होना इस रोग का एक प्रधान कारण है। यह रोग होने पर पैरका चमड़ा और उसके नीचेके टिस्सू मोटे हो जाते हैं। कभी कभी रक्तवहा नाड़ी, मांसपेशी, स्नायु और अस्थियों का आकार भी बढ़जाता है। आक्रान्त स्थानमें रस भरी फुन्सियाँ निकलती हैं और उनसे पानी या दूध जैसा रस निकलता है। आक्रान्त स्थानमें खुजली चमड़े पर पीब भरे जख्म और बुखार इत्यादि उपसर्ग भी दिखायी देते हैं। रोगीका पैर फूल कर हाथीके पैरकी तरह मोटा हो जाता है और शरीर सूख जाता है।

चिकित्सा।

हाइड्रोकोटाइल १X या ३X—यह इस रोगकी सबसे बढ़िया दवा है।

एनाकार्डियम १X या ३—हाइड्रो कोटाइल से लाभ न हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त साइलीसिया, आर्सेनिक, हाइड्रेस्टिस, मर्क्युरियस सल, फोस्फरस इत्यादि दवाओं से भी लाभ होता है। जख्म हो जाने पर आर्सेनिक, लेकेसिस, साइलीसिया, सल्फर, ओर नसें फूल जाने पर अर्निका, हेमामेलिस लेकेसिस, पल्सेटिला ओर सीपिया आदि दवाएं देनी चाहिये। बुखार ओर खुजली आदिकी दवाएं उन्हीं रोगोंकी दवाओं में से चुननी चाहिये।

अन्यान्य चर्मरोग।

हाथ पैर फटना (Chilblain)—जाडे के दिनों में ठढ लगने के कारण वदन या हाथ पैर फट जाया करते हैं। पैरो में कभी कभी दरार या जख्म हो जाता है, जिसे बेवाई कहते हैं। इसमें बहुत दर्द होता है। जख्म में बहुत जलन हो तो आर्सेनिक ६ या ३०। ठंढ के कारण किसी भी स्थान में जख्म हो जाने पर एगारिकस ६ या ३०। यह इस रोग की बढिया दवा है। हाथ पैर की उँगलियों का फटना और उसमें जख्म, जलन ओर खुजली हो तो फोस्फरस ६। पैर की उंगली में जख्म ओर फफोला होने पर सल्फर ३०।पल्सेटिला और रसटक्स से भी काफी लाभ होता है। टैमास, मदर टिञ्चर ओर ग्लीसरीन दोनों समान भाग में लेकर फटी हुई जगह में लगाना चाहिये। कैन्थरिस या अर्निका लोशन से आक्रान्त स्थान को धोना लाभदायक है।

उस्तरे का विष (Barbar's Itch) खराब उस्तरे से हजामत बनवाने पर दाढ़ी में दाद जैसी फुन्सियाँ निकलती हैं और जख्म हो जाते हैं। इन जख्मों से रस भी निकलता है। ग्रेफाइटिस ६ या ३० इस रोग की बढ़िया दवा है। एन्टिम टार्ट ६ से भी काफी लाभ होता है। एन्टिम टार्ट से लाभ न हो तो मर्क्युरियस सल ६। इनके अतिरिक्त नाइट्रिक एसिड, कार्बो एनी और साइलीसिया आदि दवाओं से भी लाभ होता है। फुन्सियाँ पक जायँ और उनमें बहुत दर्द हो तो पुल्टिस चढ़ानी चाहिये।

सेहुँआ या सिहुली—यह रोग होने पर चेहरा, गर्दन और छाती आदि स्थानों में सफेद सफेद दागसे पड़ जाते हैं। रोग वाले स्थान में खुजली होती है। धूप लगने से खुजली बढ़ती है। कभी कभी भूसी जैसी छाल निकलती है। रोग साधारण होने पर सलफर ६ या ३० और तेज होने पर नाइट्रिक एसिड ६ या ३० देना चाहिये। ग्रेफाइटिस ६ या ३० भी एक अच्छी दवा है। केली कार्ब, नेट्रम म्यूर और केन्थरिस भी इस रोग में लाभदायक हैं।

पानी लगना (Escoriation)—वर्षा के दिन में भींगे पैरों से रहने पर अथवा पानी में खड़े होकर कपड़ा

[ध]ादि धोने से पर के तलवे या उँगलियों के बीच में यह रोग [ह]ोता है। यह रोग होने पर आक्रान्त स्थान का चमडा क्षय [ह]ो जाता है, वह स्थान सफेद दिखायी देता है और उसमें [ब]हुत खुजली होती है। गीला कपडा पहनने या पसीना लगने [के] कारण जॉघ आदि स्थानों में भी ऐसी ही शिकायत पैदा [हो] जाती है। फेमोमिला ६ इस रोग की बढिया दवा है। अगर बारबार यह रोग हो जाता हो तो लाइको पोडियम [३]० या २०० देना चाहिये। अगर दर्द हो तो मर्क्युरियस सल [६] या ३०। चलने फिरने की रगड और पसीना लग कर [ज]ॉघ में चमडा छिल जाय तो इथ्यूजा ३ या ६। बच्चों का [प]ाछा छिल जाने पर फेमोमिला ६ या ३०। एक्जिमा रोग की [द]वाओं में से भी इसके लिये दवाएँ चुनी जा सकती है।

घट्टे (Corns) जूते की रगड या दाव के कारण कड़े [घ]ट्टे पड जाते हैं। कभी कभी इनमें बहुत दर्द होता है। चर्खी [च]लाने, या कुएँ से पानी भरने या कुटाई आदि का काम [क]रने से तलहत्थी में भी घट्टे पड जाते हैं। कभी कभी धातु [द]ोष के कारण भी यह रोग होता है। घट्टे को गरम पानी से [आ]ध घंटे तक भिगोकर, जब वह मुलायम हो जाय, तब तेज [च]ाकू से कटवा देना चाहिये और ऊपर से आर्निका लोशन [ल]गाना चाहिये। फेरम पिकरिक ३ नये घट्टे की बढ़िया दवा [है]। घट्ठे में जलन या पीब होने पर नाइट्रिक एसिड ३ या

६ देना चाहिये। धातु दोष के कारण घट्ठे होने पर लक्षणानुसार फोस्फरस, सल्फर, कल्केरिया कार्ब, लाइको पोडियम, एन्टिम क्रूड, सीपिया और साइलीसिया आदि दवाएँ व्यवहार करनी चाहिये। हाइड्रेस्टिस मदर टिञ्चर एक ड्राम, एक औंस ऑलिव आइल में मिलाकर रातमें सोते समय लगाने से लाभ होता है।

रूसी (Dandruff)—वास्तव में यह रोग एकूजिमा रोग के अन्तर्गत है। शिर में यह रोग होने पर शिर बहुत खुजलाता है और रूसी जैसी छाल निकलती है। कभी कभी आक्रान्त स्थान लाल और गरम हो जाता है। आर्सेनिक ६ या ३० इस रोग की बढिया दवा है। आर्सेनिक से लाभ न हो तो ग्रेफाइटिस ६, लाइको पोडियम १२ या सीपिया ३० देना चाहिये। रेडियम ब्रोम, वेखिलिनम, क्रिसोफेनिक एसिड, टेलुरियम, फ्लोरिक एसिड, मेजेरियम, कल्केरिया कार्ब, सल्फर आदि दवाओं से भी लाभ होता है। शिर सदा मलते रहना चाहिये। सफाई रखने से बहुत लाभ होता है। नारियल का तेल अथवा भूने हुए सुहागे का चूर्ण ग्लीसरिन के साथ मिलाकर लगाना लाभदायक है।

अमौरी—गरमी के दिनों में गरमी के कारण समूचे शरीर में जलपूर्ण छोटे छोटे दाने निकलते हैं, इन्हें अमौरी

कहते हैं। कभी कभी यह पक कर फुन्सियो के रूप में परिणत हो जाती हैं। सुसुम पानी मे सोडा घोलकर लगाने या चंदन का लेप करने से लाभ होता है। आवश्यकतानुसार एन्टिम क्रूड, सल्फर, आर्सेनिक, एपिस, लिडम, एकोनाइट और रसटक्स आदि दवाओं में से कोई दवा भी सेवन की जा सकती है। अमोरी वडी बडी हों तो हिपर सल्फर ६। वार-वार होने पर अर्निका ६ या ३० देना चाहिये।

कुनख [Ingrowing Toe-nail]—अंगूठे के नाखून की नोक कभी कभी बेढगे तौर से बढ़कर मास में घुस जाती है और वहाँ जख्म हो जाता है। जख्म न होने पर भी उस स्थान में बहुत दर्द होता है। अगूठे में दर्द, जख्म और काँटा चुभने जैसा दर्द हो तो साइलीसिया ६ या ३०। आक्रान्त स्थान में कालापन, बदबू और जलन हो तो आर्सेनिक ६ या ३०। अगूठा फूलकर बहुत मोटा हो जाय, उसमें तपाहट और दर्द हो, पीब पड जाय या मॉस बढ जाय तो सल्फर ३०। मर्क्युरियस और एन्टिम क्रूड से भी लाभ होता है। अगूठे में बहुत दर्द और तपाहट हो तो गरम पानी में डुबो रखना चाहिये। नाखून मुलायम हो जाने पर उसे काट देना चाहिये। काटने के बाद क्लोराइड आफ आयरन विचूर्ण उस स्थान में लगाने से दर्द आदि तकलीफ दूर हो जाती है।

छोटी फुन्सियाँ [Pimple]—मुँहासे की तरह छोटी छोटी, नोकदार और कड़ी फुन्सियाँ होने पर कार्बोवेज ६। पुरानी बीमारी में रेडियम ब्रोम ३० [सप्ताह में एक बार] या केली ब्रोम ३X या सल्फर ३०। कार्बोएनी, हाइड्रो कोटाइल, रसटक्स, आर्स आयोड आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

पीली फुन्सियाँ [Impetigo]—यह फुन्सियाँ नाक, कान, कपाल और चेहरा आदि स्थानों में निकलती हैं। यह पहले अलग अलग रहती हैं, बाद को एक दूसरे से जुड़ जाती हैं। इनसे गाढ़ा, पीला और बदबूदार पीब निकलता है। ऊपर पपड़ी जम जाती है, पर नीचे का स्थान कोमल और लाल होता है। नयी बीमारी में वायोला ट्राइ ३ और पुरानी बीमारी में एन्टिम टार्ट ३ का सेवन कराना चाहिये। बहुत जलन हो तो साइक्यूटा ३, डंक मारने जैसी खुजली हो तो क्रोटनटिग ६, शिर में पपड़ी युक्त फुन्सियाँ हों तो कैल्कम्यूर १X। इनके अतिरिक्त आर्सेनिक, एन्टिमक्रूड, केली आइकोम और मेजेरियम आदि से भी लाभ होता है।

लाली (Erythema)—इस रोग में बदन का चमड़ा केवल लाल होता है। खुजली आदि कोई तकलीफ नहीं होती,

बेलेडोना इसकी अच्छी दवा है। बूढ़ों की बीमारी में मेजेरियम देना चाहिये। भोजन के बाद यह रोग हो तो नक्स-वोमिका। वात रोग के साथ यह शिकायत हो तो एपिस, रसटक्स या केली बाइक्रोम देना चाहिये।

कण्डुयन (Prurigo)—यह एक तरह की खुजली है। खुजलाते खुजलाते चमड़े का रंग बदल जाता है और कभी २ खून तक निकल आता है। मलद्वार और जननेन्द्रिय में यह रोग विशेष रूप से होता है। इस रोग में रेडियम ब्रोमेटम ३०। सप्ताह में सिर्फ एक बार सेवन करने से बहुत लाभ होता है। इसके अतिरिक्त एकोनाइट, सल्फर, आर्सेनिक, इग्नेशिया, डालिकस, फैगोपाइरम, कस्टिकम, लाइको पोडियम, मर्क्युरियस, एपोसाइनम और कार्बोवेज आदि दवाओं से भी लाभ होता है। आक्रान्त स्थान को साफ रखना चाहिये। मेजेरियम मदरटिंक्चर दसगुने पानी में मिलाकर बाहर से लगाने पर लाभ होता है।

लाल या सफेद दाने (Strophulus)—यह रोग छोटे बच्चोंके बदन में आमवात की तरह फूट निकलता है। कैमो-मिला इसकी बढ़िया दवा है। एपिस, एन्टिमक्रूड, कल्केरिया कार्ब, सल्फर, और रसटक्स आदि दवाओं से भी लाभ होता है। आक्रान्त स्थान में सज्जी मिट्टी लगाना लाभदायक है।

शैवालिका (Lichen)-इस रोगमें समूचे शरीर में अमौरी की तरह लाल फुन्सियाँ निकलती हैं और वे खुजलाती हैं। बादको उनपर छिलके जैसी पतली और सफेद पपड़ी पड़ जाती है। सल्फर, एन्टिमक्रूड, एपिस, लिडम और आर्सेनिक इस रोगकी अच्छी दवाएँ हैं। आवश्यकतानुसार मेजेरियम, रसटक्स, फाइटोलेका, ग्रेफाइटिस और नेट्रमम्यूर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जा सकती है।

सोरा एपिस (Psoriasis)—इस रोगमें शरीर के किसी भी स्थानका चमड़ा लाल होकर फूल उठता है और उस स्थानमें कुछ ऊँचा तथा कड़ा चकत्ता सा हो जाता है। बादको इस चकत्ते पर पपड़ी पड़ जाती है। पपड़ी उखाड़ने पर उसके नीचेका समूचा स्थान लाल दिखायी देता है। रेडियम ब्रोम, सल्फर, आर्सेनिक, फोस्फरस, कल्केरिया, सीपिया, नाइट्रिक एसिड, साइक्यूटा, ग्रेफाइटस, थूजा और क्रिसोफेनिक एसिड आदि दवाओं से इस रोगमें विशेष लाभ होता है।

कुछ खास दवाएँ—टीका लगवाने के बाद कोई भी चर्मरोग हो तो थूजा। चोट लगने या गिर जानेके कारण चर्मरोग हो तो आर्निका। सारा बदन खुजलाये लेकिन कोई

फोड़ा फुन्सी न दिखलाई दे तो डालिकस। समूचे वदन में जलभरी फुन्सियाँ, उनमें खुजली; खुजलाने पर जलन हो तो कार्बोलिक एसिड। जो चर्मरोग जाड़ेमें रहें, पर गरमी में गायब हो जायें, उनमें मेजोरियम। स्पञ्जिया मदर टिञ्चर दो बूँद दिनमें तीन वार सेवन करने से सभी चर्मरोगों में लाभ होता है।

१८—मानसिक रोग।

भय जनित रोग।

(Fright)

अनेक वार डर जानेके कारण तरह तरह की बीमारी हो जाया करती है। स्त्री और बच्चे इस तरह की बीमारियों के शिकार विशेष रूपसे होते हैं। इस रोगमें लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाएं व्यवहार करनी चाहिये।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ x या ६—डर जानेके कारण काँपना, छातीका धड़कना, मनमें बहुत देर तक डरते रहना, मृत्युभय इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

शैवालिका (Lichen)-इस रोगमें समूचे शरीर में अमौरी की तरह लाल फुन्सियाँ निकलती हैं और वे खुज- जाती हैं। बादको उनपर छिलके जैसी पतली और सफेद पपड़ी पड़ जाती है। सल्फर, एन्टिमक्रूड, एपिस, लिडम और आर्सेनिक इस रोगकी अच्छी दवाएँ हैं। आवश्यकता- नुसार मेजेरियम, रसटक्स, फाइटोलेका, ग्रेफाइटिस और नेट्रमम्यूर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जा सकती हैं।

सोरा एसिस (Psoriasis)—इस रोगमें शरीर के किसी भी स्थानका चमड़ा लाल होकर फूल उठता है और इस स्थानमें कुछ ऊँचा तथा कड़ा चकत्ता सा हो- जाता है। बादको इस चकत्ते पर पपड़ी पड़ जाती है। पपड़ी उखाड़ने पर उसके नीचेका समूचा स्थान लाल दिखायी देता है। रेडियम ब्रोम, सल्फर, आर्सेनिक, फोस्फरस, कल्केरिया, सीपिया, नाइट्रिक एसिड, साइक्यूटा, ग्रेफाइटिस, थूजा और क्रिसोफेनिक एसिड आदि दवाओं से इस रोगमें विशेष लाभ होता है।

कुछ खास दवाएँ—टीका लगवाने के बाद कोई भी चर्मरोग हो तो थूजा। चोट लगने या गिर जानेके कारण चर्मरोग हो तो आर्निका। सारा बदन खुजलाये लेकिन कोई

फोड़ा फुन्सी न दिखलाई दे तो डालिकस। समूचे बदन में जलभरी फुन्सियाँ, उनमें खुजली, खुजलाने पर जलन हो तो कार्बोलिक एसिड। जो चर्मरोग जाड़ेमें रहें, पर गरमी में गायब हो जायें, उनमें मेजोरियम। स्पंजिया मदर टिंचर दो बूँद दिनमें तीन बार सेवन करने से सभी चर्मरोगा में लाभ होता है।

१८—मानसिक रोग।

भय जनित रोग।

(*Fright*)

अनेक बार डर जानेके कारण तरह तरह की बीमारी हो जाया करती है। स्त्री और बच्चे इस तरह की बीमारियों के शिकार विशेष रूपसे होते हैं। इस रोगमें लक्षणानुसार निम्न-लिखित दवाएँ व्यवहार करनी चाहिये।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x या ६—डर जानेके कारण काँपना, छातीका धड़कना, मनमें बहुत देर तक डरते रहना, मृत्युभय इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये।

होमियोपैथिक चिकित्सा

बेलेडोना ६ या ३०—डर जानेके कारण खींचन की बीमारी हो जाना, खासकर बच्चोंको, चिल्लाना, हाथ पैरोंका कांपना, शिरमें रक्त-सञ्चय, चेहरा लाल इत्यादि।

कोफिया ६—एकायक डर जाना, बहुत स्नायविक उत्तेजना, कम्पन, मूर्च्छा, नींद बिलकुल न आना इत्यादि।

जेल्सीमियम ६—डर जानेके कारण पेटमें गोलमाल हो जाना, शराबियों की तरह सुस्ती इत्यादि।

ओपियम ३ या ६—डर जानेके कारण अंग प्रत्यंग में कम्प या खींचन, अस्वाभाविक निद्रा, सोते समय नाकसे आवाज निकलना, कष्टकर श्वास प्रश्वास, बेहोशी, प्रलाप इत्यादि। डर जानेके बाद तुरन्त यह दवा देनेसे विशेष लाभ होता है। लेकिन अगर एक घन्टा या इससे अधिक समय बीत जाय, तो एकोनाइट देना चाहिये।

डर जानेके बाद रोगी बहुत उदास हो जाय तो इग्नेशिया ६। ओपियम से लाभ न होने पर इग्नेशिया या ग्लोनइन देना चाहिये। ओपियम डर जानेकी प्रधान दवा है।

आवश्यक सूचना—रोगीकी हालत बहुत खराब हो तो जल्दी-जल्दी दवा देनी चाहिये। रोगीको स्थिर और शान्त रखना चाहिये तथा उससे ऐसी बातें करना चाहिये, ताकि उसका भय दूर हो जाय।

शोक और दुःख जनित रोग।

(Grief and sorrow)

शोक और दुःखके कारण मनुष्य की शारीरिक और मानसिक अवस्था खराब हो जाती है। जो शोक या दुःख मनमें ही दबा रहता है और दूसरोंके सामने प्रकट नहीं किया जाता, उसका परिणाम और भी बुरा होता है। इसके कारण शारीरिक और मानसिक परिश्रम करने की शक्तिका घट जाना, हृदय और यकृत की खराबी, भूख न लगना, कब्जियत, तन मनकी सुस्ती इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

इग्नेशिया ६ या ३०—मनमें शोक या दुःखका दबा रहना, प्रेममें निराश होना या न भुलायी जा सके ऐसी हानि होना, दुःख या शोकका लगातार मनपर असर पड़ना, सभी बातों में उदासीन भाव,शोक या दुःखके कारण बेहोशी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ककुलस ३ या ६—सदा खिन्न रहना, रातमें चौंकना, रोगीके पास बैठने के कारण अनिद्रा इत्यादि।

एसिड फस ६ या ३०—बहुत कमजोरी, जीवनके सभी कामोंमें उदासीनता, चुपचाप एकान्त में बैठे रहने की इच्छा, सुबह के वक्त पसीना और निद्रालुता इत्यादि।

लेकेसिस ३०—सोने या खानेके बाद तबियत खराब मालूम होना, तरह तरह की बेढंगी बातें कहना, बात करते करते बातचीत का विषय बदल देना, सबके सामने अपना दुखड़ा रोना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—खिन्नता, जरामें ही रो पड़ना या रोनेकी इच्छा होना, सभी बातों में उदासीनता, नम्र-प्रकृति इत्यादि।

हायोसायमस ६ या ३०—प्रेमियों में लड़ाई होती रहे, रोगीका स्वभाव ईर्षालु हो, बहुत बकझक करता हो, रातमें नींद न आये, चेहरा फूला हुआ मालूम हो तो इसे देना चाहिये।

प्रेममें निराशा—प्रेममें निराशा भेटने से, खासकर जब एक गाल लाल हो जाता हो इग्नेशिया। इससे पूरा लाभ न हो और रोगी चुपचाप बैठा रहता हो, अथवा उसे धीमा बुखार आ जाता हो या दोनों गाल लाल हो जाते हों तो एसिड फस। दहशत और बदहजमी के लक्षण मोजूद हों तो स्टेफीसेग्रिया।

बेहोशी—शोक या दुःखके कारण रोगी बेहोश होजाय तो पहले इग्नेशिया दीजिये। इससे लाभ न हो तो बेहोशीके समय ओपियम और दूसरे दिन एसिड फस।

अनिद्रा—शोक या दुःखके कारण अथवा रोगीकी सेवा शुश्रूषा करने के कारण नींद न आये साथ ही शिरदर्द और कमजोरी मालूम हो तो ककुलस। अगर बहुत कमजोरी हो और रोगी कठिनाई से बोल सकता हो तो एसिड फस। दुःख या शोक अथवा किसीकी मृत्यु आदिके कारण कई रात तक जरा भी नींद न आये तो सल्फर।

ऋतुस्रावमें गड़बड़ी—शोक, दुःख, चिन्ता या भय आदिके कारण यदि एकायक मासिक स्राव शुरू हो जाय, रुक जाय, बढ़ जाय या कोई नये लक्षण पैदा हो जाये तो प्लेटिनम देनेसे लाभ होता है।

क्रोध जनित रोग ।

(Anger)

क्रोधके कारण भी अनेक बार बेतरह तबियत खराब हो जाती है और इलाज कराने की जरूरत पड़ती है।

चिकित्सा ।

केमोमिला ६ या ३०—बहुत क्रोधी स्वभाव, क्रोधके कारण खींचन, पेट और यकृत की खराबी, चेहरा लाल, घूमने फिरने की इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। बच्चोंको इस दवासे विशेष लाभ होता है।

आर्निका ६ या ३०—क्रोधी स्वभाव, बच्चोंका सदा ठुनकते रहना, रोना, बारंबार खाँसना, बातका उत्तर न देना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—बहुत क्रोध, सभी बातोंमें चिड़-चिड़ाना, शिरमें दर्द, ऐसा मालूम होना मानो शिर फट जायगा, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना, [illegible] रंगका गाँठ गाँठ मल इत्यादि।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—सदा क्रोध और विरक्ति भाव, बोलने या बातका उत्तर देनेकी इच्छा न होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बहुत ही क्रोधी और चिड़चिड़ा स्वभाव, क्रोधके बाद तबियत खराब मालूम होना, एकान्त में रहने की इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—चिड़चिड़ा स्वभाव, सदा खतरे का डर लगा रहना, अस्थिरता, दिनमें निद्रालुता, रात में अनिद्रा, शिरके केश झड़ना, आवाज धीमी हो जाना, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

प्लेटिनम ६ या ३०—क्रोधके कारण मस्तिष्क विकार मृत्युभय, उत्कंठा या हँसना और रोना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—क्रोधके बाद अथवा क्रोधके कारण कभी कभी शिरमें खून चढ़ जाता है। ऐसी अवस्था में कपाल पर ठंढे पानीकी पट्टी चढ़ानी चाहिये और पैर गरम पानीमें सेंकना चाहिये।

विषाद वायु रोग।

(Melan cholia)

शारीरिक और मानसिक विकृति तथा अन्यान्य कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर रोगी सदा दुःखी और खिन्न रहता है, और सभी बातों में उदासीनता दिखाता है। कभी कभी रोगीको आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा होती है। किसी काल्पनिक विषय की चिन्ता करते रहना, बुद्धिकी विकृति, भ्रान्त विश्वास, भय, उद्वेग, रोना, उदास होकर चुपचाप बैठे रहना, अपने शरीर की रक्षा आदिके लिये कोई यत्न न करना, अस्थिरता, अनिद्रा, भूख न लगना, कब्जियत, इत्यादि अनेक लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी इस रोगके साथ यकृत, जरायु, मूत्राशय और डिम्बाशय आदिके उपसर्ग भी मौजूद रहते हैं। नयी बीमारी आसानी से आराम हो जाती है। रोग पुराना हो जाने पर और उसके साथ बेहोशी आदि लक्षण मौजूद रहने पर वह शायदही आराम होता है।

चिकित्सा।

अरम ६, ३० या २००—आत्महत्या करने का प्रबल इच्छा होने पर इसे ही देना चाहिये। यकृत और अण्डकोष में तकलीफ, रातमें रोगका बढ़ना इत्यादि लक्षणों में भी इससे लाभ होता है।

आर्सेनिक ६ या ३०—खुद ही अपने आपको काटना या अपने शरीर पर कोई अत्याचार करना, भूख न लगना, दुर्बलता, उत्कण्ठा, रोगीको ऐसा मालुम होना मानो सभी उसकी निन्दा कर रहे है अथवा उसका रोग आराम न होना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—इस रोगके साथ जरायु या डिम्बाशय के उपसर्ग होने पर इसे देना चाहिये।

इग्नेशिया ६ या ३०—शोक, दुःख और निराशा के कारण यह रोग होना, सदा एकान्त में बैठने और आत्महत्या करने की इच्छा, बहुत सुस्ती, जरामें ही चिढ़ उठना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नेट्रम म्यूर ६ या ३०—नयी बीमारी में इससे भी लाभ होता है।

काडु यस मेरियाना ६—विषाद वायुके साथ यकृत की खराबी होनेसे इसे देना चाहिये

प्लेटिना ६ या ३०—स्त्रियोंको यह रोग होना, आत्म-हत्या करने की इच्छा, कामातुरता, उद्धत स्वभाव, अपने को सब बातोंमें बड़ा मानना इत्यादि।

हेलीबोरस ६ या ३०—विषाद वायुके साथ बेहोशीका लक्षण होनेपर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त लिलियम टिग, आफ्जेलिक एसिड, ओपियम, विरेट्रम और येप्टीशिया आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना-रोगीको अकेले न रहने देना चाहिये और उसका चित्त सदा प्रफुल्लित रखने की चेष्टा करनी चाहिये। नित्य विशुद्ध वायुका सेवन, स्नान और परिमित परिश्रम करना लाभदायक है।

व्याधि-शंका।

[Hypochondriasis]

शरीर में किसी प्रकारका रोग न होने पर भी रोगीका अपने मनमें यह सोचते रहना कि उसे कोई रोग हो गया है या होनेवाला है, व्याधि-शंका रोग कहलाता है। बहुत दिनों



तक किसी कठिन रोगसे पीड़ित रहना, शोक, दुःख, चिन्ता उद्वेग, स्नायविकता, अर्थाभाव, आलस्य में दिन बिताना, सदा रोगके विषय में चिन्ता करते रहना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। पहले पहल रोगी सोचता है कि उसे पाचन क्रियामें गड़बड़ी, कब्जियत, पेट फूलना, भूख न लगना, अनियमित भूख, पेटमें जलन, बुखार इत्यादि रोग हो गये हैं। यह सोचते सोचते उसे वास्तव में शिरदर्द, शिरमें चक्कर, स्नायुशूल, मूर्च्छा, कलेजा धड़कना, दृष्टिहीनता, अनिद्रा, पाकाशय में गोलमाल, इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती हैं और उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। यह रोग उतना सांघातिक नहीं है, लेकिन अच्छी तरह इलाज न करने पर रोग कठिन हो जाता है और पाकाशय में गोलमाल, शोथ तथा रक्त स्राव आदि कठिन उपसर्ग पैदा हो जाते हैं।

चिकित्सा।

अरम ६ या ३०—सदा खिन्न और निराश रहना, सभी कामों में उदासीन भाव, आत्महत्या करने की इच्छा, शिरमें दर्द इत्यादि। उपदंश दोषवाले रोगीको इससे विशेष लाभ होता है।

एनाकार्डियम ६—स्नायविक दुर्बलता और उत्तेजना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ३ या ६—कोई कारण न होने पर भी रोगी अपने मनमें यह सोचा करता हो कि उसे गरमी या कोई दूसरी वीमारी हो गयी है या होने वाली है तो इसे देना चाहिये।

चायना ३०—पाचन क्रिया में गोलमाल, पेट फूलना, शिरमें दर्द, मानसिक कष्ट और हताशभाव, भोजन के बाद आलस्य, बुखार या रसरक्त आदि क्षय होनेके कारण कमजोरी और उस कमजोरी के कारण यह रोग होना।

नक्सवोमिका ३०—कब्जियत, पाकाशय में गोलमाल, जीनेकी इच्छा न होना, कामकाज में मन न लगना, लेटे रहने की इच्छा, शिरमें दर्द और चक्कर, अनिद्रा, शारीरिक कमजोरी इत्यादि।

नेट्रम म्यूर ३०—एकान्त प्रियता, जीवन पर प्रेम न होना, पाकाशय की गड़बड़ी, शिरमें दर्द, भविष्य के विषय में निराशा, मानसिक उपसर्ग इत्यादि।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—सभी बातों में उदासीन भाव, जननेन्द्रियकी कोई वीमारी इत्यादि।

लेकेसिस ३०—काम करने की अनिच्छा, सदा स्वास्थ्य के विषय में चिन्ता करते रहना, उत्कण्ठा, सन्दिग्ध स्वभाव, दुःखित भाव, सोने के बाद सभी रोग लक्षणों का बढ़ना इत्यादि।

स्टेनम ६ या ३०—खिन्न और निराश रहना, पेट खाली मालुम होना, पेट में दर्द, शिर गरम और उसमें दर्द मालूम होना, कब्जियत, घूमने फिरने से आराम मालुम होना, विश्राम के समय रोग का बढ़ जाना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—उद्वेग, अपने स्वास्थ्य और अपनी रक्षा के लिये सदा चिन्ता करते रहना, शिरकी चाँद में जलन, अस्थिरता, कब्जियत, बवासीरकी शिकायत इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ३० या २००—रोगी को ऐसा मालूम होना मानो उसका इन्द्रिय ज्ञान लोप हो गया है, सदा डरते रहना, मानसिक शान्ति की कमी, थकावट मालुम होना, बेहोश कर देने वाला शिर दर्द, खट्टे पानी की के होना, कलेजे में दर्द न होने पर भी रोगी को ऐसा मालूम होना मानो उसके कलेजे में दर्द हो रहा है इत्यादि।

इनके अतिरिक्त नेट्रम फस, ग्रेटयूला, मस्कस, सीपिया, फोस्फरस, प्लाटिना, टेरेन्टयूला, पल्सेटिला, आर्जनाइ और मर्क्युरियस आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—नियमित परिश्रम, नियमित समय में स्नान और भोजन, सदा प्रसन्न रहना इत्यादि लाभदायक है। पुष्टिकर और आसानी से हजम हो ऐसे पदार्थ खाना चाहिये।

बुद्धि वैकल्य।

(Dementia)

शराबखोरी, हस्तमैथुन तथा बुढ़ापा आदि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर बुद्धि का काम कुछ कम हो जाता है या बुद्धि एकदम ही नष्ट हो जाती है। यह रोग छः भागों में विभक्त है, यथा—[१] नया रोग [Acute] मूर्खता, गन्दे रहना, मौन रहना, कुछ का कुछ सुनायी देना, पुतले की तरह चाल ढाल, चेहरा सूजा और उतरा हुआ इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। [२] शराबखोरी जनित रोग [Alcoholic]—स्मरण शक्ति में बेहद कमी, इच्छाशक्ति की कमजोरी, अपने शरीर या वेश-भूषा पर बिलकुल ख़याल न रखना, क्रोधी स्वभाव, पाकाशय का प्रदाह इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। [३] हस्तमैथुन जनित [Masturbatic] बुद्धि वैकल्य। स्मरण शक्ति की कमी, मानसिक दुर्बलता, उदासीनता, एकटक देखते रहना, शिर झुका कर बैठना, हाथ पैर ठण्ढे, चरित्र दोष इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। [४] बुढ़ापा जनित [Senile] बुद्धि वैकल्य। यह रोग

प्राय साठ वर्ष की अवस्था के बाद होता है। लोग इसे सठिया जाना कहते हैं। तुरन्त की घटनाएँ भूल जाना, क्रोधी स्वभाव, बेचैनी, अव्यवस्थित मति, बहुत अधिक आत्म-गरिमा, भ्रान्त विश्वास, अवास्तव मूर्ति या वस्तु की कल्पना या अनुभूति, बेढंगे काम या बातें करना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। [५] यान्त्रिक [Organic] बुद्धि वैकल्य। सन्देही चित्त, स्मरण शक्ति गायब, देखने और सुनने में भ्रम होना, अर्धाङ्ग में अकड़न या लकवा, खींचन इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। [६] गौण [Secondary] बुद्धि वैकल्य। मानसिक कमजोरी, इच्छा और स्मरण शक्ति में गड़बड़ी अथवा मानसिक वृत्तियों का एकदम नाश हो जाना इस रोग के प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा

एसिडफस ३ X या ६—आस पास की चीजों या मनुष्यों के विषय में उदासीनता, स्मरण शक्ति की कमजोरी, क्रन्दन शीलता, बहुत कमजोरी और दुबलापन, अधिक पेशाब होना इत्यादि।

क्रोटेलस ३ या ६—इन्द्रिय ज्ञान और स्मरण शक्ति में कमी, सहन शीलता का अभाव, भागने की इच्छा, बकझक करना, खिन्न रहना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—नियमित परिश्रम, नियमित समय में स्नान और भोजन, सदा प्रसन्न रहना इत्यादि लाभदायक है। पुष्टिकर और आसानी से हजम हो ऐसे पदार्थ खाना चाहिये।

बुद्धि वैकल्य।

(Dementia)

शराबखोरी, हस्तमैथुन तथा बुढ़ापा आदि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर बुद्धि का काम कुछ कम हो जाता है या बुद्धि एकदम ही नष्ट हो जाती है। यह रोग छः भागों में विभक्त है, यथा—[१] नया रोग [Acute] मूर्खता, गन्दे रहना, मौन रहना, कुछ का कुछ सुनायी देना, पुतले की तरह चाल ढाल, चेहरा सूजा और उतरा हुआ इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। [२] शराबखोरी जनित रोग [Alcoholic]—स्मरण शक्ति में बेहद कमी, इच्छाशक्ति की कमजोरी, अपने शरीर या वेश-भूषा पर बिलकुल खयाल न रखना, क्रोधी स्वभाव, पाकाशय का प्रदाह इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। [३] हस्तमैथुन जनित [Masturbatic] बुद्धि वकल्य। स्मरण शक्ति की कमी, मानसिक दुर्बलता, उदासीनता, एकटक देखते रहना, शिर झुका कर बैठना, हाथ पैर ठण्डे, चरित्र दोष इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण है। [४] बुढ़ापा जनित [Senile] बुद्धि वैकल्य। यह रोग

प्राय साठ वर्ष की अवस्था के बाद होता है। लोग इसे सठिया जाना कहते हैं। तुरन्त की घटनाएँ भूल जाना, क्रोधी स्वभाव, बेचैनी, अव्यवस्थित मति, बहुत अधिक आत्म-गरिमा, भ्रान्त विश्वास, अवास्तव मूर्ति या वस्तु की कल्पना या अनुभूति, बेढंगे काम या बातें करना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। [५] यान्त्रिक [Organio] बुद्धि वैकल्य। सन्देही चित्त, स्मरण शक्ति गायब, देखने और सुनने में भ्रम होना, अर्धाङ्ग में अकड़न या लकवा, खोंचन इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। [६] गौण [Scondary] बुद्धि वैकल्य। मानसिक कमजोरी, इच्छा और स्मरण शक्ति में गड़बड़ी अथवा मानसिक बृत्तियों का एकदम नाश हो जाना इस रोग के प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।

एसिडफस३ X या ६—आस पास की चीजों या मनुष्यों के विषय में उदासीनता, स्मरण शक्ति की कमजोरी, क्रन्दन शीलता, बहुत कमजोरी और दुबलापन, अधिक पेशाब होना इत्यादि।

क्रोटेलस ३ या ६—इन्द्रिय ज्ञान और स्मरण शक्ति में कमी, सहन शीलता का अभाव, भागने की इच्छा, बकझक करना, खिन्न रहना इत्यादि।

होमियोपैथिक चिकित्सा

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—किसी भी विषय में धारणा का न जम सकना, सोचने की शक्ति में कमी, जरा में ही रो देना, शिर में चक्कर और भार, गण्डमाला धातु इत्यादि।

एनाकार्डियम ६ या २००—स्मरण शक्ति में कमी, हमेशा कसम खाना, दृढ़ भ्रान्त विश्वास इत्यादि।

कोनायम ६—स्मरण शक्ति की कमी, परिवार या कामकाज के सम्बन्ध में उदासीनता, सोने से शिर चकराना, हस्तमैथुन अथवा वृद्धावस्था के कारण यह रोग होना।

कल्केरिया फस ६ X विचूर्ण—चिड़चिड़ा स्वाव, हाल की बातें भी याद न रहना, आसपास के मनुष्यों को न पहचान सकना, घर में होने पर भी घर जाने को कहना, छोटी उम्र के बच्चों को यह रोग होना इत्यादि।

हेल्लिबोरस ३X—उन्माद या विषाद वायु रोग होने के बाद बुद्धि का बिगड़ जाना।

लिलियमटिग ६—बहुत मानसिक सुस्ती, सदा सोने की इच्छा, शाप देना, मारना, अश्लील बातें सोचना,

उत्साहहीनता, सब कामों में जल्दबाजी, रोगी का यह समझना कि उसे कोई असाध्य रोग हो गया है इत्यादि ।

एगरिकस ६—साधारण या छिपे हुए बुद्धि वैकल्य में इसे देना चाहिये ।

बेराइटा कार्ब ६ या ३०—बुढ़ापे के कारण होने वाले बुद्धि वैकल्य की यह भी एक अच्छी दवा है ।

अन्यान्य मानसिक उपसर्ग ।

अन्यान्य चिकित्सा प्रणालियों में रोगी के मानसिक भावों को विशेष महत्व नहीं दिया जाता, परन्तु होमियोपैथी में इसे बहुत महत्व दिया जाता है । शरीर के साथ मनका बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है । अनेक बार मानसिक लक्षणों को ध्यान में रख कर रोगी को दवा देने से, शरीर में चाहे जो रोग हो, बहुत ही आश्चर्य जनक लाभ होता है । नीचे कुछ मानसिक उपसर्गों की चुनी हुई दवाएँ लिखी जाती हैं —

उदासीन भाव—लिलियमटिग, एसिड फस, सीपिया और कार्बोवेज ।

आत्महत्या करने की इच्छा—अरममेट, अरम म्यूर, आर्जनाइ, कल्केरिया कार्ब, नक्सवोमिका ।

मृत्युभय—एकोनाइट, आर्सेनिक, सिकोली, प्लेटिनम इत्यादि ।

क्लान्ति या अवसाद—एनाकार्डियम, ओपियम, एसिड पिकरिक, कल्केरिया फस ।

कामोन्माद—केन्थरिस, प्लाटिना, हायोसायमस, एसिड पिकरिक, फोस्फरस इत्यादि ।

धर्मोन्माद—हायोसायमस, सल्फर, विरेट्रम, एल्ब, पल्सेटिला, लेकेसिस, आर्सेनिक ।

अव्यवस्थित चित्त—अरमभेट, वेराइटा कार्ब ।

उत्कण्ठा—एकोनाइट, अरम, फोस्फरस, सल्फर ।

ईर्षा—हायोसायमस, लेकेसिस, एपिस ।

उद्धत स्वभाव—प्लाटिना, सल्फर, लाइको पोडियम, विरेट्रम एल्ब ।

मानसिक लक्षण

झगड़ालू स्वभाव—हायोसायमस, सल्फर, नक्सवोमिका, इग्नेशिया।

निराशा—आर्जनाइ, अरम, सोरिनम, रसटक्स, कल्केरिया कार्ब।

मानसिक बेचैनी—एकोनाइट, आर्जनाइ, केमोमिला, कॉफिया, हायोसायमस, सिमिसिफिउगा, इग्नेशिया, फोस्फरस, स्ट्रेमोनियम।

सन्देही स्वभाव—सल्फर, स्ट्रेमोनियम, सिकेली, केनबिस इन्डिका, हायोसायमस, लेकेसिस।

सलज्ज भाव—वेराइटा, इग्नेशिया, स्टेफी साइग्रिया।

स्मरण शक्ति की कमी—एनाकार्डियम, हायोसायमस एसिड फस, इथ्यूजा, वेराइटा फार्ब, हेल्लिबोरस।

अंधेरे में डरना-स्ट्रेमोनियम, विरेट्रम एल्ब।

भीरु स्वभाव—आर्जनाइ, बोरेक्स।

भूत प्रेत विषयक भ्रान्त विश्वास—बेलेडोना, स्ट्रेमोनियम, आर्सेनिक, ओपियम, कार्बोवेज।

जी छटपटाना—एकोनाइट, आर्ज नाइ, मर्क्युरियस, स्टेनम।

मर्माहत होना—एकोनाइट, इग्नेशिया, एसिड फस।

जरामें चौंक उठना—एकोनाइट, बेलेडोना, केमोमिला, बोरेक्स, इग्नेशिया, नक्सवोमिका, स्ट्रेमोनियम, फोस्फरस,।

हतबुद्धि—एनाकार्डियम, केनेबिस इन्डिका, आर्जनाइ, नक्सवोमिका।

अकेलेमें डरना—आर्जनाइ, लाइकोपोडियम, फोस्फरस।

खिन्नता—एकोनाइट, आर्जनाइ, विरेट्रम, रसटक्स, सल्फर, लेकेसिस, लिलियमटिग, लाइकोपोडियम, नेट्रमम्यूर, प्लेटिना, अरम, कल्केरिया।

अपने जीवन को धिक्कारना—अरममेट, एन्टिमक्रूड, चायना, फोस्फरस, थूजा इत्यादि।

प्रलाप—बेलेडोना, (तेज प्रलाप, काटना, थूकना, इत्यादि) हायोसायमस (हलका, अश्लील या बकवाद) लेकेसिस (बड़बड़ाना या बकझक करना) स्ट्रेमोनियम (बहुत तेज या क्रोध पूर्ण प्रलाप) विरेट्रम एल्ब, बेप्टीशिया, जिङ्कम इत्यादि।

मौन प्रियता—एसिडफस, सल्फर, पल्सेटिला, विरेट्रम एल्ब।

ईर्षा—हायोसायमस, लेकेसिस, एपिस।

एकाएक जोर से चिल्ला उठना—एपिस।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक दवाएँ हैं, जो भिन्न भिन्न मानसिक अवस्था या रोगों में लाभ करती हैं। स्थानाभाव से उन सबोंका वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता। किसी भी रोग के लिये कोई भी दवा चुनते समय, उसके शारीरिक भी लक्षणों के साथ साथ मानसिक लक्षणों को भी मिला लेने से वह दवा मानो रामबाण हो जाती है।

११—जायुज रोग।

(Drug-Diseases)

पारा, क्वीनाइन, आर्सेनिक या सखिया, तम्बाकू, शराब आदि तेज दवाएँ अधिक परिमाण में बहुत दिनों तक सेवन करने पर शरीर में तरह तरह के रोग लक्षण प्रकट होते हैं। यह रोग जायुज रोग कहलाते हैं। इनका संक्षिप्त इलाज नीचे लिखा जाता है।

पारा (Mercury)

पारा अनेक प्रकार से अनेक रोगों में बतौर औषधिके व्यवहार किया जाता है। वैद्य, हकीम और डाक्टर लोग इसके मिश्रण से अनेक दवाएँ तैयार करते हैं। इन दवाओं में पारा की मात्रा अधिक होने पर या ऐसी दवाएँ अधिक दिनों तक सेवन करनें पर रातके समय शिरमें दर्द, मुँहके चारों ओर फुन्सियाँ, मसूढ़े में जख्म, मुँहमें बहुत लार, गले और बगल आदिकी गिल्टियोंका फूलना, काँखनेके साथ पतले दस्त, समूचे शरीर में जख्म या प्रदाह, बदन में आसानी से फोड़े होना, आँखें लाल और फूली हुई निगलने में तकलीफ, कभी कभी, खूनी दस्त, गरम, गाढ़ा और गहरे लाल रंगका पेशाव, हाथ, उँगली और टेहुनोंमें बात रोगकी तरह सूजन, हाथ पैरके चमड़ेका फटना, समूचे शरीर में चर्म रोग, जख्मों से जरा में ही खून बहने लगना, घावोंका जल्दी न भरना, बदन में दर्द, बुखार, चिकना और खट्टा पसीना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी बहुत अधिक मात्रामें पारा व्यवहार करने पर तुरन्त विषके से लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

यदि पारे का व्यवहार करने पर जहर के लक्षण प्रकट हो तो रोगी को तुरन्त अण्डे की सफेदी, चीनी का शर्वत और पानी मिला दूध सेवन कराना चाहिये। इससे तुरन्त लाभ

होगा। बाद को लक्षणानुसार दवा चुन कर उसका सेवन कराना चाहिये।

पारे के अपव्यवहार से यदि उपरोक्त लक्षण या शिकायतें प्रकट हों तो सबसे पहले हिपर सल्फर ६ देना चाहिये। छः या आठ दिन तक यह दवा देने के बाद ठहर जाना चाहिये। यदि बहुत मन्द गति से लाभ हो रहा हो तो दो सप्ताह ठहर जाना चाहिये। इसके बाद यदि लाभ होना रुक जाय तो फिर यही दवा देना चाहिये। यदि इससे लाभ तो हो पर वह अधिक समय न ठहरे तब तीन चार बार हिपर देने के बाद बेलेडोना ६ देना चाहिये।

पारेके कारण मुँह और गले में जख्म आदि शिकायतें हों, गिल्टियाँ फूल जायँ या कानों से कम सुनायी दें तो पहले हिपर सल्फर ६, बाद को बेलेडोना ६ देना चाहिये। इससे यदि लाभ न हो तो स्टेफीसेग्रिया ६।

यदि ऋतु या हवा के परिवर्तन से रोगी की तकलीफ बढ़ जाती हो, बहुत दर्द रहता हो, खास कर रात के समय, छूने से दर्द बढ़ता हो, बहुत कमजोरी हो, मुँह में बहुत लार आती हो तो चायना ६ या ३० दीजिये। यदि इससे लाभ न हो और वायु परिवर्तन से तकलीफ बढ़ जाती हो तो कार्बोवेज ६ या ३०।

यदि इन दवाओंके सेवन करने पर भी हड्डियों में दर्द और जोड़ों में सूजन मौजूद रहे तो पहले आर्कमारा ६ और

बाद को एसिड फस ६ या ३० दीजिये। हड्डियों पर गॉठ गॉठ जैसी सूजन हो तो पहले एसिड फस ६ या ३०, बाद को स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०। इन दवाओं के बाद कल्केरिया कार्ब देने से रोग पूर्ण रूप से आराम हो जायगा।

अगर काफी दिनों तक उपरोक्त दवाएँ सेवन करने पर भी रोग पूर्ण रूप से अच्छा न हो तो सल्फर आजमाना चाहिये। सल्फर सेवन के कुछ दिन बाद फिर उपरोक्त दवाओं में से कोई दवा सेवन करनी चाहिये। सल्फर से कुछ लाभ होने पर कल्केरिया भी दिया जा सकता है। कल्केरिया के बाद लेकेसिस और लेकेसिस के बाद लाइको पोडियम से विशेष लाभ होता है। आवश्यकतानुसार कोई दूसरी भी अनुकूल दवा दी जा सकती है।

अगर किसी ने बहुत अधिक मात्रा में पारा और उसके बाद गन्धक का सेवन किया हो तो उसे पहले मर्क्युरियस और बाद को बेलेडोना या पल्सेटिला देना चाहिये।

अगर पारे का अधिक सेवन किया गया हो, लेकिन गन्धक का सेवन न किया गया हो, साथ ही हिपर सल्फर के लक्षण न मिलते हों, तो सल्फर दिया जा सकता है।

रोग कठिन होने पर पहले ही से हिपर, बेलेडोना, चायना एसिड फस, कार्बोवेज, डाल्केमारा, स्टेफीसेग्रिया और लेके-सिस आदि दवाओं में से कोई उपयुक्त दवा चुनी जा सकती है। पारा विष की मात्रा में सेवन करने पर या तुरन्त लाभ

की आवश्यकता होने पर ओपियम, पल्सेटिला, आर्सनिक, फेरम, रसटक्स और साइलीसिया आदि दवाओं में से कोई दवा चुनी जा सकती है।

क्वीनाइन।

(Quinine)

क्वीनाइन वास्तव में पारे से भी भयंकर वस्तु है। अधिक मात्रा में इसका सेवन करने पर बुखार तो अच्छा हो जाता है, परन्तु इसका विष शरीर में तरह तरह के उपसर्ग उत्पन्न कर देता है और उसे शरीर से निकालना बहुत कठिन हो पड़ता है। इसके अपव्यवहार में निम्नलिखित दवाओं से लाभ होता है।

चिकित्सा।

इपीकाक ६ या ३०—क्वीनाइन का बुरा असर दूर करने की यह सर्वप्रधान दवा है। सबसे पहले इसे ही देना चाहिये।

आर्निका ६ या ३०—वात जैसा दर्द, शरीर में भार मालुम होना, समूचे शरीर में सूजन, हड्डियों में दर्द, हिलने डोलने, बात करने या कान में आवाज जाने से दर्द का बढ़ना।

विरेट्रम ६ या ३०—शरीर ठंढा, ठंढा पसीना, कब्जियत या उदरामय इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस ६ या ३०—कमला अथवा यकृत और पिलही की बीमारी में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—मर्क्युरियस के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है। चेहरा गरम, शिर में रक्त सञ्चय, शिर चेहरा और दाँतों में दर्द इत्यादि लक्षणों में भी इसका व्यवहार किया जाता है।

कान में दर्द होने पर पल्सेटिला, पैरों में सूजन होने पर फेरम। हाथ पैर में जख्म, पैरों में सूजन, सूखी खाँसी और श्वास कष्ट होने पर आर्सेनिक। शोथ या शरीर में सूजन होने पर रसटक्स। कान में भों भों आवाज होने पर सिङ्कन। क्वीनाइन से बुखार छूट जाने पर भी शिर, कान, दाँत और शरीर में दर्द होने पर पल्सेटिला। पल्सेटिला से लाभ न होने पर लेकेसिस या कल्केरिया। बुखार दब जाय पर हिचकियाँ आती रहें तो नेट्रम म्यूर।

क्वीनाइन से बुखार आराम हो जाने पर भी अन्यान्य शिकायतें मौजूद रहें तो उन शिकायतों की दवा चुन लेनी चाहिये। सल्फर, कल्केरिया, कार्बोवेज, हिपर, आर्निका, आर्सेनिक, साइना, फेरम, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्युरियस और

पल्सेटिला आदि दवाओं से इस हालत में विशेष लाभ होता है।

कुनीनाइन बहुत अधिक तादाद में सेवन करने पर भी यदि बुखार न छूटे, तो पहले इपीकाक दीजिये। बाद को अगर जरूरत हो तो आर्सेनिक या कार्बोवेज। इनसे लाभ न होने पर लक्षणानुसार विरेट्रम, अर्निका, बेलेडोना, मर्क्युरियस, सल्फर, लेकेसिस, पल्सेटिला, साइना या कल्केरिया का प्रयोग करना चाहिये। यह दवाएँ निम्न या मध्यम क्रम की व्यवहार करनी चाहिये।

कोकेन।

[Cocanism]

दक्षिण आफ्रिका के कोको नामक पेड के पत्तों का क्षार कोकेन कहलाता है। यह उत्तेजक होता है, इसलिये लोग इसका सेवन करते हैं। अधिक दिनों तक इसका सेवन करने पर भूख न लगना, चेहरे का पीला पड जाना, गढ़े में आंख का धस जाना, नींद न आना, स्मरण शक्ति में कमी, नाति हीनता, भ्रान्त या अवास्तव चीजें देखना, बारबार कोकेन खाना और पागलपन इत्यादि लक्षण प्रकट होकर अन्त में मृत्यु तक हो जाती है।

चिकित्सा ।

कोकेन का खाना एकदम छोड़ देना चाहिये । कोकेन छोड़ देने से शरीर में सुस्ती मालूम हो तो कुछ दिनों तक काफी, आल्कोहल आदि चीजों का व्यवहार करना चाहिये । इसके बाद बहुत दिनों तक जेल्सीमियम ३X या ६X का सेवन करना चाहिये । इससे कोकेन का बुरा असर दूर हो जाता है । खींचन होने पर क्लोरोफार्म देना चाहिये । दस्तावर दवाओं के सेवन से भी लाभ होता है।

तम्बाकू ।

(Tobacco)

तम्बाकू कई तरह से व्यवहार की जाती है । कोई बीड़ी, सिगरेट, पाइप, या हुक्के के रूप में इसे पीता है, कोई चूना या पान के साथ खाता है और कोई नास के रूप में सूँघता है । इस तरह चाहे जिस रूप में इसका अपव्यवहार करने पर इससे हानि अवश्य होती है । इसका कुफल दूर करने के लिये निम्नलिखित दवाएँ व्यवहार की जाती हैं ।

चिकित्सा ।

तम्बाकू पीने की आदत न होने के कारण इसके व्यवहार से तबियत खराब हो जाय तो पल्सेटिला । जोरों का शिर दर्द और मिचली होने पर एकोनाइट । सुस्ती, तन्द्रा या

बेहोशी, और के तथा दस्त होने पर केमोमिला। इससे पूरा लाभ न हो और बहुत जाडा लगता हो तो विरेट्रम। इससे भी काफी लाभ न हो तो बारंबार कपूर सुंघाना चाहिये। जोरों की खींचन तथा अन्यान्य शिकायतें दूर करने के लिये फ्युप्रम या कक्युलस देना चाहिये।

जो लोग तम्बाकू पीने या व्यवहार करने के आदी हैं, उनकी तबियत यदि इसके व्यवहार से खराब हो जाय तो कक्युलस या इग्नेशिया देना चाहिये। तम्बाकू के सेवन से दाँत में दर्द पैदा हो जाय तो ब्रायोनियो या चायना। पाकाशयमें खराबी पैदा हो तो इग्नेशिया या पल्सेटिला। अगर बेचैनी और मिचली हो तो स्टेफीसेग्रिया। तम्बाकू खानेके कारण तकलीफ हो जाने पर भी यही दवाएँ देनी चाहिये। नक्सवोमिका, केमोमिला, पल्सेटिला, कक्युलस और फ्युप्रम आदि दवाओंसे इस हालतमें विशेष लाभ होता है।

बहुत अधिक तादाद में तम्बाकू खाने या पीनेवालों की पुरानी बीमारी आसानी से आराम नहीं होती। नक्सवामिका या कक्युलस देनेसे स्नायविकता और पाकाशय की दुर्बलता दूर हो जाती है। सदा कब्जियत बनी रहती हो तो नक्सवोमिका, स्टेफीसेग्रिया, या मर्क्युरियस का सेवन करना चाहिये।

जो लोग तम्बाकू के कारखानों में काम करते हैं, उनका रोग उसी हालत में अच्छा हो सकता है, जब वे यह काम

करना छोड़ दें। ऐसे आदमियो की बीमारी में आर्सेनिक, कोलोसिन्थ और क्युप्रम से विशेष लाभ होता है।

तम्बाकू सेवनके कारण बदहजमी हो तो नक्सवोमिका। गलेकी बीमारी होजाय तो कल्केरिया फस। आँखसे न दिखायी देतो फोस्फरस। कलेजा धड़कने लगे तो स्पाइजिलिया। पल्सेटिला से भी इसका बुरा असर दूर होता है। तम्बाकूका त्याग करना या जहाँ तक हो सके कम व्यवहार करना लाभदायक है।

चाय।

(Tea)

अधिक चाय पीनेसे भी निद्राहीनता, स्नायविकता, शिरमें दर्द और चक्कर, बदहजमी, कलेजे में धड़कन इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती हैं।

चिकित्सा।

थूजा ३० या २००—अधिक चाय के पीने कारण पेटका फूलना, स्नायविक दुर्बलता इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

चायना ३ या ६—बदहजमी पेट में ऐंठन, कुछ भी हजम न होना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

थिया ३X—बहुत दिनों तक चाय पीने के कारण बदहजमी या कलेजे में धडकन आदि लक्षण उपस्थित होने पर इसे व्यवहार करना चाहिये।

कोफिया ६ या ३०—चाय पीने के कारण शरीरमें दर्द पैदा हो जाय तो इसे देना चाहिये। इससे लाभ न होनेपर नक्सवोमिका ३०।

पल्सेटिला ६ या ३०—मिचली, कै और दस्त, पेटमें शूल वेदना या चाय पीनेके कारण मासिक ऋतुस्राव होते समय स्त्रियोंके पेट आदिमें दर्द हो तो इसे देना चाहिये।

इग्नेशिय ६ या ३०—चायके अपव्यवहार के कारण बच्चोंको वेहोशी या खींचन होनेपर इसे देना चाहिये।

एकोनाइट ३ X या ६—चायका अपव्यवहार करने के कारण बदनमें दर्द, बुखार बेचेनी उत्कण्ठा इत्यादि।

हो सके तो चाय पीना एकदम छोड देना चाहिये या इसका व्यवहार बहुत कम करना चाहिये।

करना छोड़ दें। ऐसे आदमियों की बीमारी में आर्सेनिक, कोलोसिन्थ और क्युप्रम से विशेष लाभ होता है।

तम्बाकू सेवनके कारण बदहजमी हो तो नक्सवोमिका। गलेकी बीमारी हो जाय तो कल्केरिया फस। आँखसे न दिखायी देतो फोस्फरस। कलेजा धड़कने लगे तो स्पाइजिलिया। पल्सेटिला से भी इसका बुरा असर दूर होता है। तम्बाकूका त्याग करना या जहाँ तक हो सके कम व्यवहार करना लाभदायक है।

चाय।

(Tea)

अधिक चाय पीनेसे भी निद्राहीनता, स्नायविकता, शिरमें दर्द और चक्कर, बदहजमी, कलेजे में धड़कन इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती हैं।

चिकित्सा।

थूजा ३० या २००—अधिक चाय के पीने कारण पेटका फूलना, स्नायविक दुर्बलता इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

चायना ३ या ६—बदहजमी पेट में ऐंठन, कुछ भ' हजम न होना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

थिया ३X—बहुत दिनों तक चाय पीने के कारण बदहजमी या कलेजे में धड़कन आदि लक्षण उपस्थित होने पर इसे व्यवहार करना चाहिये।

कोफिया ६ या ३०—चाय पीने के कारण शरीरमें दर्द पैदा हो जाय तो इसे देना चाहिये। इससे लाभ न होनेपर नक्सवोमिका ३०।

पल्सेटिला ६ या ३०—मिचली, कै और दस्त, पेटमें शूल वेदना या चाय पीनेके कारण मासिक ऋतुस्राव होते समय स्त्रियोंके पेट आदिमें दर्द हो तो इसे देना चाहिये।

इग्नेशिय ६ या ३०—चायके अपव्यवहार के कारण बच्चोंको वेहोशी या खींचन होनेपर इसे देना चाहिये।

एकोनाइट ३ X या ६—चायका अपव्यवहार करने के कारण बदनमें दर्द, बुखार बेचैनी उत्कंठा इत्यादि।

हो सके तो चाय पीना एकदम छोड़ देना चाहिये या इसका व्यहार बहुत कम करना चाहिये।

वरफ या वरफकी मलाई।

(Ice or Icecream)

अनेक वार वरफ या वरफ की मलाई आदि अधिक तादाद में खाने से पेट फूलना, कै और दस्त आदि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी गरम शरीर में इन चीजों का व्यवहार करने पर चेहरा आदि स्थानों पर तरह तरह के दाने या उद्भेद निकल आते हैं।

चिकित्सा।

कार्वोवेज ३ या ६—वरफ या वरफका पानी व्यवहार करने के कारण पेट की बीमारी हो जाने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—कुलफी मलाई या वरफ की मलाई खानेके कारण कोई शिकायत होनेपर इसे देना चाहिये।

काफी।

(Coffee)

चायकी तरह काफी के अपव्यवहार से भी अनिद्रा, कलेजेमें धड़कन, चिड़चिड़ाहट, पाकाशयमें खराबी, शिरदर्द, दाँत और पेटमें दर्द इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती हैं।

चिकित्सा ।

अनिद्रा, कलेजेमें धड़कन और पाकाशय में गड़बड़ी हो तो नक्सवोमिका। शिरके दर्द में लक्षणानुसार नक्सवोमिका, इग्नेशिया या केमोमिला । दाँतके दर्द में केमोमिला, कोफिया, कक्युलस, बेलेडोना, मर्क्युरियस, कार्बोवेज, पल्सेटिला या रसटक्स। पेट में दर्द होने पर नक्सवोमिका, केमोमिला या कक्युलस, कोलोसिन्थ या बेलेडोना। जाँघों में दर्द और हार्निया जैसे लक्षण दिखायी देने पर नक्सवोमिका। काफी पीना छोड़ देने पर भी उसका बुरा असर मौजूद रहे तो नक्स-वोमिका या केमोमिला और इनसे लाभ न होनेपर कक्युलस या इग्नेशिया।

खट्टी चीजें ।

(Sour Things)

खट्टी चीजोंमें एसिड या तेजाब, खटाई, आँचार, खट्टे फल इत्यादि चीजोंका शुमार किया जाता है। इनके सेवन से भी तरह तरह की शिकायतें पैदा हो जाती है।

चिकित्सा ।

खट्टी चीजे खानेके कारण रातमें दस्त आयें और शिर तथा छाती आदिमें दर्द हो तो नक्सवोमिका । दिनके समय दस्त आयें तो एण्टिम क्रूड। साथ ही आँतों में दर्द हो तो

स्टेफीसेग्रिया या वेलेडोना। यदि जाड़ा भी लगता हो तो विरेट्रम। अगर बुखार आ जाय तो लेकेसिस।

नारंगी या खट्टे फल आदि खानेके कारण लाल लाल दाने निकल आये तो वेलेडोना या रसटक्स। रोग पुराना हो जाने पर लक्षणानुसार कल्केरिया या कस्टिकम।

अन्यान्य लक्षण आर्सेनिक या सल्फर देने से दूर हो सकते हैं। आर्सेनिक उन आदमियों को देना चाहिये जिन्हें बहुत भूख लगती है और जो बहुत अधिक खाते हैं। सल्फर उन्हें देना चाहिये जिन्हें सदा मीठी चीजें खानेकी इच्छा हुआ करती हो। यदि अम्ल चीजें खानेसे सदा रोग लक्षण बढ़ जाते हों तो वेलेडोना या लेकेसिस देना चाहिये।

यदि सदा अम्ल और खट्टी चीजें खाने की इच्छा होती हो तो आर्सेनिक, अर्निका, वेलेडोना, चायना या लेकेसिस देना चाहिये। यदि केवल खट्टी चीजें खानेपीने की इच्छा होती ब्रायोनिया। खट्टी चीजें खानेके कारण छाती में जलन, और कै हो तो फेरम। केवल पानी जैसी कै होने पर फोस्फरस। पाकाशयमें गड़बड़ी पैदा हो जाय तो आर्सेनिक या लेकेसिस। अम्लचीजें और खट्टे फल खानेके कारण दस्त आने लगे तो लेकेसिस। केवल खट्टे फल खानेके कारण दस्त आयें तो चायना। यह सभी दवाएं ६ या ३० क्रमको व्यवहार करनी चाहिये।

मसाले।

(Spices)

सोंठ और मिर्च जैसे गरम मसाले अधिक तादाद में व्यवहार करने के कारण जो शिकायतें पैदा हो जाती हैं, वे नक्सवोमिका देने से दूर हो जाती हैं। अन्यान्य मसालों के अपव्यवहार में लक्षणानुसार इग्नेशिया, कोफिया या ओपियमसे लाभ होता है।

अफीम।

(Opium)

पारा और क्वीनाइन की तरह अफीम भी दवाके रूपमें बहुत व्यवहार की जाती है। विलायतकी बनी हुई अनेक दवाओं में अफीम या लाडेनम अथवा मार्फिया नामक पदार्थ मिले रहते हैं। बहुत लोग नशेके लिये भी इनका सेवन करते हैं। बहुत दिनों तक ऐसी दवाओं का सेवन करने पर इसका बुरा असर दिखायी देता है। अनेक बार जान या अनजान में अधिक अफीम खा जाने से जहर का सा असर होता है और तुरन्त इसका इलाज न करने से कुछ ही घंटों में मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा ।

यदि अधिक मात्रामें अफीम खा जाने के कारण जहर चढ़ने लगे तो स्टमक पम्पसे तुरन्त पेटकी चीज़ वाहर निकाल देनी चाहिये अथवा जिस तरह हो, रोगी को तुरन्त कै करा देनी चाहिये । इसके वाद रोगी को इपीकाक १X जल्दी जल्दी देना चाहिये । इससे लाभ न हो तो नक्सवोमिका, वेलेडोना, मर्क्युरियस या एसेटिक एसिड आजमाना चाहिये । यह दवाएँ निम्नक्रमकी व्यवहार करने से विशेष लाभ होता है । अफीम मिली कोई दवा अधिक समय तक सेवन करने के कारण कोई कुफल दिखायी दे तो म्युरेटिक एसिड देना चाहिये और किसी चतुर चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिये ।

अफीम छोड देना बहुत अच्छा है, पर इसे छोड़ते समय बहुत कष्ट होता है । अफीम छोडते समय और अफीम छोड़ने के कुछ दिन वाद तक एविना सेटाइवा मदर टिञ्चर पॉच बूंदके हिसावसे (जलके साथ) दिन में तीनवार सेवन करने पर कोई कष्ट नहीं होता । अफीम एकदम न छोड़ कर धीरे-धीरे उसकी मात्रा घटाना चाहिये । एविना से तकलीफ दूर न होने पर केमोमिला, कोफिया या केनेविस इन्डिका देना चाहिये ।

संखिया ।

(Arsenic)

संखिया भी बहुत दवाओं में मिलायी जाती है और उनके सेवन से तरह तरह की शिकायतें पैदा होती हैं। इन शिकायतो को दूर करनेके लिये सबसे पहले इपीकाक देना चाहिये। इससे लाभ न होनेपर हिपर सल्फर। इन दवाओं से लाभ न होने पर लक्षणानुसार नक्सवोमिका, विरेट्रम, फेरम या चायना आदि दवाओं में से कोई एक दवा व्यवहार करना चाहिये।

शहद ।

(Honey)

अधिक तादादमें शहद खानेके कारण कोई तकलीफ पैदा हो जाय तो बारंबार कपूर सुंघाना चाहिये। इससे तकलीफ, दूर न हो तो गरम गरम चाय या काली काफी पिलाना चाहिये।

शराब ।

(Alcohol)

शराबखोरी भी एक बहुत ही बुरी बला है। जो लोग इस बलामें फँस जाते है, वे तरह तरहकी व्याधियोंसे पीडित रहते हैं। शराब पीने से साधारणत. जो शिकायतें पैदा होती हैं,

चिकित्सा ।

यदि अधिक मात्रामें अफीम खा जाने के कारण जहर चढ़ने लगे तो स्टमक पम्पसे तुरन्त पेटकी चीज़ बाहर निकाल देनी चाहिये अथवा जिस तरह हो, रोगी को तुरन्त कै करा देनी चाहिये। इसके बाद रोगी को इपीकाक १X जल्दी जल्दी देना चाहिये। इससे लाभ न हो तो नक्सवोमिका, वेलेडोना, मर्क्युरियस या एसेटिक एसिड आजमाना चाहिये। यह दवाएँ निम्नक्रमकी व्यवहार करने से विशेष लाभ होता है। अफीम मिली कोई दवा अधिक समय तक सेवन करने के कारण कोई कुफल दिखायी दे तो म्युरेटिक एसिड देना चाहिये और किसी चतुर चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिये।

अफीम छोड़ देना बहुत अच्छा है, पर इसे छोडते समय बहुत कष्ट होता है। अफीम छोडते समय और अफीम छोड़ने के कुछ दिन बाद तक एविना सेटाइवा मदर टिञ्चर पाँच बूंदके हिसाबसे (जलके साथ) दिन में तीनबार सेवन करने पर कोई कष्ट नहीं होता। अफीम एकदम न छोड़ कर धीरे-धीरे उसकी मात्रा घटाना चाहिये। एविना से तकलीफ दूर न होने पर कैमोमिला, कोफिया या केनेबिस इन्डिका देना चाहिये।



संखिया।

(Arsenic)

संखिया भी बहुत दवाओं में मिलायी जाती है और उनके सेवन से तरह तरह की शिकायतें पैदा होती हैं। इन शिकायतो को दूर करनेके लिये सबसे पहले इपीकाक देना चाहिये। इससे लाभ न होनेपर हिपर सल्फर। इन दवाओं से लाभ न होने पर लक्षणानुसार नक्सवोमिका, विरेट्रम, फेरम या चायना आदि दवाओं में से कोई एक दवा व्यवहार करना चाहिये।

शहद।

(Honey)

अधिक तादादमें शहद खानेके कारण कोई तकलीफ पैदा हो जाय तो वारंबार कपूर सुंघाना चाहिये। इससे तकलीफ, दूर न हो तो गरम गरम चाय या काली काफी पिलाना चाहिये।

शराब।

(Alcohol)

शराबखोरी भी एक बहुत ही बुरी बला है। जो लोग इस बलामें फँस जाते हैं, वे तरह तरहकी व्याधियोंसे पीड़ित रहते हैं। शराब पीने से साधारणत. जो शिकायतें पैदा होती

वे तो होती ही है, पुराने पियक्कडों को पागलपन जैसा एक और रोग भी हो जाता है। इसे मदत्याय रोग या डिलिरियम ट्रिमेन्स (Delirium Tremens or Mania-A-Potu) कहते हैं। नीचे इन दोनोंका इलाज लिखा जाता है।

चिकित्सा।

शामके वक्त थोड़ी या बहुत शराब पीनेके बाद दूसरे दिन सुबह यदि तबियत खराब और भारी मालूम हो तथा चेहरा फीका और फूला हुआ, उजालेमें जानेसे आंखों में दर्द, मुंह रूखा, मिचली, पाकाशय में दर्द, गला भारी, हाथ गरम, शरीर कमजोर, निद्रालुता,ठढ मालुम होना,क्रोध और चिडचिड़ाहट, नाकसे खून गिरना इत्यादि लक्षण प्रकट हो तो नक्सवोमिका या कार्बोवेज देना चाहिये।

शिरमें धमक और आँखोंपर दबाव मालूम होता हो या ताजी और ठढी हवा में आराम मालूम हो तो कार्बोवेज खुली हवामें तकलीफ बढ़ जाती हो तो नक्सवोमिका।

शिरदर्द के समय यदि ऐसा मालूम हो मानो शिरमें कॉटी गड़ी हुई है, दर्द एक ही ओर हो, चलते समय पद पद पर और खुली हवामें, सोचने से और हिलनें डोलने से दर्द बढ़ता हो तो नक्सवोमिका।

अगर केवल जी मिचलाता हो तो कार्बोवेज। यदि कै करने की इच्छा या कै होना हो तो नक्सवोमिका। फीके रंगका पतला मल निकले तो कार्बोवेज, बहुत कॉखने कूँखने और जोर लगाने पर थोडासा दस्त हो तो नक्सवोमिका।

बहुत सुस्ती, आँखें लाल, आँखके कोनों में चीपड, रोशनी भली न मालूम होना, सूखी खाँसी इत्यादि लक्षण हों तो नक्सवोमिका। नक्सवोमिका देनेके बाद दो तीन घंटेमें शिरदर्द दूर न हो तो कोफिया। यदि मिचली, पकाशय में दर्द और जीभपर लेप आदि लक्षण दूर न हों तो एन्टिम क्रूड।

बारबार और बहुत दिनों तक शराब पीने के कारण शिरमें जोरोंका दर्द, शिर भारा और पूर्ण मालूम होना, पाकाशयमें गोलमाल, कब्जियत बवासीर, पीठ में दर्द, समूचे बदन में खुजली इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती हैं। इनके लिये, यदि रोग लक्षण सुबह और खुली हवामें बढ़ जाते हों तो नक्सवोमिका देना चाहिये और यदि सोनेके बाद, खास कर तीसरे पहर और गरम हवा में तकलीफ बढ़ जाती हो तो कार्बोवेज या लेकेसिस देना चाहिये।

यदि शिरका दर्द हिलने डोलने, बोलने चालने और लिखने पढ़ने आदि से बढ़ जाता हो, साथ ही यदि रोगी हट्टा कट्टा और मजबूत हो तो कल्केरिया, नहीं तो साइलीसिया देना चाहिये।

मदत्याय रोग की चिकित्सा।

ओपियम ६ या ३०—तरह तरह के जानवर या विचित्र चेहरे के आदमी दिखायी देना, तरह तरह की आवाजें सुनायी देना, ऐसा मालूम होना मानो कोई उसे बुला रहा है, बेहोशी या खींचन, अधमुँदी आँखें, श्वास प्रश्वास में घड़घड़ाहट, आँख खोलने पर प्रलाप इत्यादि लक्षणों में जल्दी जल्दी इसे देना चाहिये। इन्हीं लक्षणों में आर्सेनिक से भी लाभ हो सकता है। यदि इन दवाओं से लाभ न हो तो सुबह शाम कल्केरिया देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—कुछ कुछ समय के अन्तर से रोगी को आग या आदमी दिखायी देना, इसके कारण रोगी का डरना और भागने की इच्छा करना, शिर गरम, चेहरा फूला हुआ, आँखों में चमक लेकिन रोशनी बरदास्त न होना, गले की नसों का जोरों से फड़कना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—काल्पनिक चीजों को देख कर पकड़ने दौड़ना, बड़बड़ाना, मार पीट या तूफान करना इत्यादि।

स्ट्रेमोनियम ६ या ३०—रोगी के प्रलापमें जब ईश्वर प्रार्थना धर्म चर्चा आदि धार्मिक बातें दिखायी दें तब इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—दोपहर के बाद या सोने के बाद तकलीफ का बढ़ आना, रोगी का बहुत बातचीत करना, एक विषय की बातें करते करते दूसरे विषय की बातें करने लगना, गले के आस पास कोई भी कपड़ा आदि न रख सकना इत्यादि लक्षणों में और उपरोक्त दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

विरेट्रम ६ या ३०—चेहरे पर ठंढा पसीना, भागने के लिये उत्कण्ठा पूर्ण इच्छा, भूत प्रेत दिखायी देना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है, रोगी को सगे सम्बन्धियों की आवाज सुनायी देना, खास कर शिर के ऊपर, कमरे के कोने में अथवा जीने के नीचे या ऊपर, बिछौने पर जीव जन्तु रेंगते दिखायी देना, ऐसा मालुम होना मानो घर में चोर या अजनबी आदमी भरे हुए है, बिछौने से उठ कर भागना, मृत्युभय इत्यादि लक्षणों में, नयी बीमारी में और ओपियम से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।



कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—ओपियम या आर्सेनिक जैसे लक्षणों में इससे भी लाभ होता है, खासकर उन लोगों को जो बहुत स्वेच्छाचारी होते हैं और आजादी के साथ रहते हैं।

आवश्यक सूचना--रोगी को स्थिर और शान्त भाव से रखना चाहिये। किसी तरह उसे उत्तेजित न होने देना चाहिये। शराब, चाय, काफी आदि उत्तेजक पदार्थों का एक दम त्याग करना चाहिये। रोगी को हमेशा ठढा पानी पिलाना चाहिये। खाने के लिये पुष्टिकर और आसानी से हजम होने वाली चीजें देना चाहिये।

२०—आकस्मिक दुर्घटनाएँ।

(Accidents)

कट जाना।

(Euts or Wounds)

चाकू, छुरी, काँच या किसी शस्त्र द्वारा शरीर के कट जाने, खोंचा लगने या काँटी आदि चुभ जाने पर चमड़ा कट कर उस स्थान में जख्म हो ... इसका समय सब से पहले रक्त ... चाहि... दबा कर पकड रखने से ... ठंढे प... या ... से खून ... हो

कोई नस कट गयी हो तो उसे बाँध देने या उस पर टाँके लगाने की जरूरत पड़ती है। जखम पर केलेण्डुला लोशन (केलेण्डुला मदर टिंचर अठगुने पानी में मिलाकर) प्रयोग करने से खून का निकलना बन्द हो जाता है और जख्म में पीब नहीं होता।

खून बन्द हो जानेपर जख्मको अच्छी तरह साफकर पट्टी आदि बाँध देना चाहिये। बाँधनेके पहले अच्छी तरह देखलेना चाहिये कि जखम पर मैल, बाल, काँचके टुकड़े काँटा या और कोई चीज न रह जाय। बाँधने समयजखमके दोनों मुँह मिला देना चाहिये। जखम वाले स्थान को सदा स्थिर रखना चाहिये और उसे नयी चोट से बचाना चाहिये।

जख्म पर केलेण्डुला तेल (१ भाग केलेण्डुला मदर टिंचर और १० भाग आलिव आइल) लगाते रहने से जखम जल्दी सूख जाता है। एक औंस वेसलीन ३०-४० बूँद केलेण्डुला मदर टिंचर और आधा ड्राम बोरिक एसिड—इनका मलहम बना कर लगाने से भी जख्म जल्दी भरता है।

इन बाहरी दवाओं के अलावा लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाएँ खिलाने से भी लाभ होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—जखम के कारण बुखार, भय, उद्वेग, अस्थिरता, प्यास इत्यादि।

बेलेडोना ६—जख्म में बहुत दर्द और सूजन, शिर में दर्द, ज्वरभाव इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२—जख्म में बहुत पीब, बहुत दर्द, चिड़चिडाहट, अस्थिरता, घाव का जल्दी न सूखना इत्यादि।

अर्निका ६ या ३०—जख्म, चोट, जख्म के कारण तकलीफ या तन्नाहट अथवा किसी तरह की भी तकलीफ होने पर इससे लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—जख्म से जरा में ही खून बहने लगना, बहुत रक्तस्राव के कारण कमजोरी, मूर्च्छाभाव, चेहरे का फीका पड़ जाना इत्यादि।

हिपर सल्फर ६ या ३०—जख्म पक जाने के कारण उसमें बहुत पीब हो जाय तो इसे देना चाहिये।

हाइपेरिकम ६ या ३०—सुई, पिन, काँटी या कोई नोकदार चीज घुस जाने पर इससे विशेष लाभ होता है।

जख्म में अधिक पीब होने पर चायना, मर्क्युरियस, हिपर सल्फर और साइलीसिया। जख्म से ज़रा में ही खून निकल पड़ता हो तो एकोनाइट, आर्निका, चायना, फोस्फरस और क्रियोजोट। जख्म सड़ सड़ कर बढ़ता जा रहा हो तो आर्सेनिक, चायना, लेकेसिस, साइलीसिया और कार्बोवेज आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है। जख्म को रोज एकबार नीम के पानी या हाईड्रोजन पेरोक्साइड आदि से अवश्य साफ कर देना चाहिये।

कुचल जाना।

(Bruises)

रेल का दरवाजा बन्द करते समय या किसी भारी चीज को रखते समय अक्सर उंगलियाँ दब जाती हैं। कभी कभी शरीर के किसी स्थान में कोई भारी चीज गिर जाने से भी वह स्थान कुचल जाता है। ऐसे मामलों में ऊपर का चमड़ा तो नहीं फटता, पर भीतर की छोटी छोटी नसें फट जाती हैं। इससे उस स्थान में नीला दाग पड़ जाता है। चोट अधिक लगने से कभी कभी वहाँ पीब भी पैदा हो जाता है।

चिकित्सा।

नीला दाग पड़ने पर—चोट लगते ही आर्निका ३ या ६ का सेवन करना और आर्निका लोशन की पट्टी चढ़ाना बहुत लाभदायक है। इससे प्रायः दाग नहीं पड़ता और दर्द

तथा सूजन कमहो जाती है। यदि इससे लाभ न हो तो हेमामेलिस की जलपट्टी चढ़ानी चाहिये। इन दवाओं के प्रयोग से प्रायः-जख्म में पीव नहीं पडता। आवश्यकतानुसार निम्नलिखित दवाओं का सेवन करना चाहिये।

रूटा ६ या ३०—हड्डी तक चोट का असर पहुँचने पर इसे देना चाहिये।

कोनायम ६ या ३०—स्तन, अण्डकोष या किसी अन्य ग्रन्थिमें चोट लगने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पकने का उपक्रम दिखायी देने या पीव पड़ने पर इसे प्रयोग करना चाहिये।

हाइपेरिकम ६ या ३०—चोट के कारण धनुष्टकार जसे लक्षण उपस्थित होने पर इससे लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६—कहीं जोरों से उँगलियाँ दब जाने या कुचल जाने के कारण बुखार आ जाय तो इसे देना चाहिये

मोच।

(Sprains)

अनेक बार कहीं ऊँची या नीची जगह में पैर पड़ जानेसे पैर आदिमें मोच आ जाती है। इसी तरह भारी चीज उठाने से पीठ और कमरमें भी मोच आजाती है। शिर पर बोझा न रखने से गर्दनमें भी मोच आती है। मोच आने पर उस स्थान में बहुत दर्द होता है। कभी कभी वह स्थान बेतरह फूल जाता है और वहाँ बहुत तकलीफ होता है।

चिकित्सा।

मोचवाले स्थानमें मोच आते ही ठंढे पानीको पट्टी या बरफ का प्रयोग करने से लाभ होता है। इससे लाभ न होने पर आर्निका लोशन की पट्टी चढ़ाना और आर्निका का सेवन करना फायदेमन्द है। रसटक्स का लोशन व्यवहार करने से भी बहुत लाभ होता है। तकलीफ घट जाने पर या जहाँ दवाएँ न मिलें, वहाँ गरम पानी का सेंक देना चाहिये और उस स्थानको गरम पानी में डुबो रखना चाहिये। जब तक तकलीफ एकदम दूर न हो जाय, तब तक आक्रान्त स्थानका हिलाना डोलाना ठीक नहीं। अवस्थानुसार निम्नलिखित दवाओं का सेवन करना चाहिये।

अर्निका ३ या ६—कुचल जाने जैसा अथवा किसी तरह का भी दर्द होने पर सबसे पहले इसे ही देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—मोच आनेकी यह भी एक प्रधान दवा है, खासकर जब भारी वस्तु उठाने की चेष्टा करते समय मोच आ जाय, तब इसे ही प्रयोग करना चाहिये। मोचवाले स्थानमें सूजन, बहुत दर्द, चुप चाप पड़े रहने से दर्दका बढ़ना, हिलने डोलने और शीतलता के प्रयोगसे आराम मालूम होना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—रसटक्स से पूरा लाभ न होने पर अथवा रसटक्स देने के बाद कमर में बहुत दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

सिम्फाइटम ३ या ६—मोच वाले स्थानमें नीलापन अधिक न होकर पीलापन दिखायी दे तब इसे व्यवहार करना चाहिये।

हाइपेरिकम ३ या ६—मोचका असर स्नायु तक होने पर इसे देना चाहिये।

एकोनाइट ३ या ६—मोचके कारण बुखार आ जाने पर इससे लाभ होता है।

कल्केरिया फस ६ या ३०—मोचके साथ सन्धि-स्थानों में कमजोरी मालूम होनेपर इसे देना चाहिये।

आयोडियम ६ या ३०—मोचके कारण सन्धियाँ फूल उठें तो इसे व्यवहार करना चाहिये।

विरेट्रम ६ या ३०—बहुत काँपने, दौड़ने या भागने आदिके कारण पेटमें तथा मोच जैसा तकलीफ होने पर इसे देना चाहिये। बारबार ऐसी ही तकलीफ होने पर सीपिया।

फोस्फरस ३० या ३०—कमजोरी के कारण बार-बार मोच जैसी तकलीफ होती हो तो इसे व्यवहार करना चाहिये।

चोट लगना।

(Hurts)

कहीं गिर जाने या लाठी आदि लगने के कारण चोट आने पर उसका इलाज भी सावधानीके साथ करना चाहिये। अन्य स्थानोंकी अपेक्षा शिरकी चोट अधिक भयंकर होती है, और इसके कारण अनेक बार मृत्यु तक हो जाती है।

चिकित्सा।

शरीर में कही भी चोट लगने पर आर्निका लोशन की पट्टी चढ़ाना बहुत आवश्यक और लाभदायक है। यदि शिरमें चोट हो तो रोगीको स्थिर भावसे खुला रखना चाहिये और उसे किसी तरह की मानसिक चिन्ता न करने देना चाहिये। लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाएँ सेवन की जा सकती है—

आर्निका ३ या ६—चोट लगतेही इसका सेवन आरम्भ कर देनेसे दर्द और तकलीफ बहुत घट जाती है और रोगी शीघ्र आराम हो जाता है।

एकोनाइट ३ या ६—चोट लगने के कारण बुखार आ जाने पर इसे देना चाहिये।



बेलोडोना ६ या ३०—बुखार, शिरमें दर्द, चेहरा और आँखें लाल, मस्तिष्क विकार और प्रलाप इत्यादि लक्षणों में इसके व्यवहार से लाभ होता है।

हायोसायमस ६ या ३०—रोगी बहुत बक झक करता हो तो यह भी दिया जा सकता है।

ओपियम ६ या ३०—चोट के साथ कब्जियत, श्वास-कष्ट, गले में घड़घड़ाहट, आँखें आधी बन्द और आधी खुली इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिये।

हड्डी का उतर जाना।

(Dislocation)

कभी कभी गिर पडने या जोर आजमाई करने के कारण किसी जोड की हड्डी अपने स्थान से हट जाती है। ऐसी अवस्था में हड्डी को उसके स्थान पर बैठा कर लकड़ी से बॉध देना चाहिये। रोगी को बहुत तकलीफ होने पर या मामला समझ में न आने पर किसी योग्य चिकित्सक द्वारा अथवा रोगी को अस्पताल में ले जाकर उसका इलाज कराना चाहिये। शिकायत पैदा होने के समय से लेकर आराम होने

तक आर्निका ६ या ३० का सेवन कराने पर रोगी को, विशेष तकलीफ नहीं होती। हड्डी बैठ जाने पर, उस स्थान को हिलाते डोलाते रहना चाहिये। ऐसा न करने पर जोड़ कड़ा हो जाता है और उसका हिलना बन्द हो जाता है।

हड्डी का टूट जाना।

गिरने या चोट लगने के कारण कभी कभी किसी अंग की हड्डी टूट जाती है। हड्डी टूट जाने पर रोगी उस स्थान को हिला नहीं सकता। हाथ से हड्डी के दोनों सिरे पकड़ कर हिलाने से एक तरह की आवाज सुनायी देती है और आक्रान्त-स्थान में बहुत दर्द होता है।

चिकित्सा।

जहाँ तक हो सके, इसका इलाज भी किसी चतुर चिकित्सक से ही कराना चाहिये, क्योंकि हड्डी का जोड़ ठीक से न बैठने पर वह अंग छोटा या विकृत हो जाता है और फिर वह किसी तरह ठीक नहीं होता। यदि कोई चिकित्सक न मिले तो टूटी हुई हड्डी के दोनों मुँह ठीक से मिला कर, उस स्थान के दोनों ओर दो पतली लकड़ियाँ रख, रूई और बैण्डेज से उसे अच्छी तरह कसकर बाँध देना चाहिये। जब तक हड्डी जुड़ न जाय, तबतक स्थिर भावसे रहना चाहिये।

हड्डी टूटते ही उस स्थान पर लगातार ठण्ढे जल या आर्निका लोशन की पट्टी चढ़ानी चाहिये और रोगी बहुत कमजोर या बेहोश हो जाय तो आरम्भ में एकोनाइट तथा बाद को आर्निका का सेवन कराना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—अगर असह्य वेदना के साथ कभी कभी खोंचन मालुम हो तो इसे देना चाहिये।

सिम्फाइटम ६—हड्डी बैठालने के बाद दिन में दो बार इसका सेवन कराना चाहिये।

कल्केरिया फस ६ या ३०—सिम्फाइटम से लाभ न होने पर अथवा रोगी की उम्र बड़ी होने के कारण हड्डी जब जोड न पकड़े और ढीली ही बनी रहे, तब इसे देना चाहिये।

आग में जल जाना।

(Burns)

आग में जल जाने से अनेक बार मृत्यु तक हो जाती है, इसलिये इसका इलाज सावधानी के साथ कराना चाहिये। साधारण रूप से जलने पर विशेष चिन्ता की बात नहीं होती, परन्तु बहुत जल जाने के कारण जब फफोले पड जाते हैं तब

उन फफोलों से जख्म हो जाने का डर रहता है। कभी कभी यह जख्म सड सड या गल गल कर चारों ओर बढ़ने लगते है। ऐसे जख्म बहुत बुरे होते हैं। कभी कभी हड्डी तक जलने का असर पहुंचता है। बच्चों को जलने के बाद खींचन या धनुष्टङ्कार हो जाता है। इससे उनकी मृत्यु तक हो जाती है। वृद्धो को जलने के बाद कभी कभी विसर्प हो जाता है।

चिकित्सा।

यदि हाथ पर जल जाय, तो जलने के बाद तुरन्त सुसुम पानी में ज़रा सा नमक या सोडा डालकर, उसमें जले हुए अंग को डुबो रखना चाहिये। इससे जलन और तकलीफ कम हो जाती है और फफोले नहीं पडते।

नारियल का तेल और चूने का पानी दोनों समान समान लेकर, उन्हें फेंटना चाहिये। फेना पैदा होने पर उसे रूई पर लगा कर आक्रान्त स्थान में लगाना चाहिये। जब जब रूई गन्दी हो जाय, तब तब नया फाहा चढ़ा देना चाहिये। इससे जख्म जल्दी आराम हो जाता है।

कोई स्थान जल जाने पर, कोई दूसरी दवा न मिले तो तुरन्त उस स्थान में नारियल का तेल डाल कर, ऊपर से खूब मैदा छिडक कर उस स्थान को एकदम ढंक देना चाहिये। इससे बहुत लाभ होता है।

जले हुए स्थानमें फफोला पडने के पहले आल्कोहल का फाहा चढ़ाने से जलन शान्त होती है।

जले हुए स्थान पर साधारण सोडा फैला कर ऊपर से ठंढे पानी की पट्टी चढ़ानी चाहिये और वारवार उस पट्टी को तर रखना चाहिये। जख्म बहुत गहरे न होने पर इससे काफी लाभ होता है।

होमियोपैथिक दवाओं में केन्थरिस जलने की सर्वोत्कृष्ट दवा है। इसका मदर टिंचर १० गुने पानी में मिलाकर उसको पट्टी दिन में कम से कम तीन वार चढ़ाने से चाहे थोडा जला हो या बहुत, आश्चर्य जनक लाभ होता है। आवश्यकता हो तो दर्द बढ़ने पर बीच में भी पट्टी बदली जा सकती है। इसका बाह्य प्रयोग करते समय केन्थरिस ६ या ३० का सेवन करने से दूना लाभ होता है। केन्थरिसके वदले आर्टिका-युरेन्स का लोशन भी व्यवहार किया जा सकता है। यह भी न मिले तो कस्टिकम ३ या ६ का लोशन वना कर उसी की पट्टी चढ़ानी चाहिये। इससे भी दर्द घट जाता है और जख्म जल्दी भर जाता है।

बहुत गरम चीजें खाने से कभी कभी मुँह, गला या पाकाशय जल जाता है। मलद्वार में बहुत गरम पानी की पिचकारी लेने से आँत भी कभी कभी जल जाती है। ऐसे मामलों में ग्लीसरीन और पानी समान भाग में लेकर उससे कुल्ला करना चाहिये। अथवा केन्थरिस लोशन थोडी थोड़ी देर

के वाद एक एक चम्मच लेकर मुँह में थोड़ी थोड़ी देर तक रखना चाहिये। आँत जल जाने पर केन्थरिस लोशन की पिचकारी लेने से भी लाभ होता है। आर्टिका युरेन्स १X दो दो घण्टे के अन्तर से सेवन करना भी बहुत लाभदायक है। लक्षणानुसार आर्सेनिक, कस्टिकम, रसटक्स या कार्बोवेज आदि दवाओं का भी सेवन किया जा सकता है।

सल्फ्यूरिक एसिड या किसी दूसरे एसिड से जल जाने पर चूने का पानी या खड़ी मिट्टी (चाक) पानी में मिलाकर उसकी पट्टी चढ़ानी चाहिये। फोस्फरस से जल जाने पर तिल्ली के तेल की पट्टी चढ़ानी चाहिये।

जलने के वाद अगर जख्म न भरता हो और उसमें से दुर्गन्ध आने लगे तो क्लोराइड आफ लाइम [चूना] और तिल्ली का तेल एक में मिला कर, उसमें फेना पैदा करना चाहिये और उसी को जख्मों पर लगाना चाहिये।

जल जाने के वाद बुखार आदि उपसर्गों के लिये निम्न-लिखित दवाएँ प्रयोग करनी चाहिये।

एकोनाइट ३ या ६—जाडा देकर तेज बुखार आना, भय, अस्थिरता, उद्वेग, प्यास, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—वहुत जल जानेके वाद खींचन या आक्षेप उपस्थित होनेपर इसे देना चाहिये। वहुत

दर्द,दर्दके कारण पागलोंकी तरह घूमना, चिडचिडाहट इत्यादि लक्षणों में भी इससे लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६ या ३०—बहुत पीब निकलने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—जल जानेके बाद पेटमे दर्द और पतले दस्त आयें तो इसे देना चाहिये। इससे लाभ न होने पर सल्फर ३०। दोपहर से आधी रात तक दस्त अधिक आते हों तो कल्केरिया। सुबह और दोपहर के पहले अधिक दस्त आये तो आर्सेनिक।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—जलने के बाद हाथ पैर तथा अन्यान्य अंगों में शोथ दिखायी देने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बुखार, तेज प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, अस्थिरता, उद्वेग, मृत्युभय, कमजोरी, बहुत सुस्त हो जाना इत्यादि।

कस्टीकम ३०—पुराने जख्मोंमें इसे व्यवहार करना चाहिये।

साइलीसिया ६ या ३०—जख्म जल्दी न सूखते हों तब या जख्म जिस समय सूखने लगें उस समय इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—जख्ममें कहीं कहीं मांसका न होना, जख्म के चारों ओर जलन, प्रदाह, खुजली इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—जले हुए जख्मों की तकलीफ दूर करने के लिये आर्निका का प्रयोग करना ठीक नहीं। जले हुए स्थान में हवा न लगने देना चाहिये। हवासे बचानेके लिये दवाके फाहे या पट्टियाँ भी बारबार न बदलना चाहिये और उन्हे बदलते समय जरूरत से ज्यादा समय तक जख्मों का खुला न रखना चाहिये। यदि फफोले पड जायें तो उन्हे सुई से फोड़कर जहातक हो सके उनका चमड़ा निकाल देना चाहिये और तब लोशन आदिका प्रयोग करना चाहिये।

डंक मारना।

(Stingingo)

मधुमक्खी, भौंरा, बर्रे, बिच्छू आदि अनेक कीट पतङ्ग डंक मारते हैं। चिउटे, मकड़े, कान खजूरे आदि काटते हैं।

इनके काटने या डंक मारने पर आक्रान्त स्थानमें लाली,फूलन, जलन, खुजली, पीड़ा आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इनकी चिकित्सा नीचे लिखी जाती है।

चिकित्सा।

यदि किसी कीट पतग ने डक मारा हो तो सुई, चाकू, कैंची या चिमटी आदिके सहारे पहले डंकको निकाल देना चाहिये। इसके बाद उस स्थानमें स्पिरिट कैम्फर, अथवा लहसुन या प्याजका रस या चूने का पानी लगाने पर जलन कम हो जाती है। अर्निका या लिडमके लोशनका वाह्य प्रयोग और एपिस या लिडमके सेवन से भी काफी लाभ होता है।

बिच्छूके डंक पर परमैंग्नेट आफ पोटाश पानीमें मिलाकर रगड़ने से तकलीफ दूर हो जाती है। यदि उँगली आदि में बिच्छूने डंक मारा हो, तो पानीमें परमेग्नेट आफ पोटाश घोलकर उसमें उंगली डुबा रखनी चाहिये।

किसी भी कीट पतग के काटने या डंक मारने पर आँचसे उसे सेकना बहुत लाभदायक है। इसके लिये आक्रान्त स्थानको या तो आँचके पास ले जाना चाहिये या आग में लोहा, ईंट का रोड़ा आदि गरम कर या लाल अंगारेको चिमटेमें दबा कर आक्रान्त स्थानके जितना

नजदीक हो सके ले जाना चाहिये और जब तक दर्द दूर न हो जाय, इसी तरह सेंकना चाहिये। मकड़े, बिच्छु, वर्रे आदि सभी के काटने या डक मारने पर इस तरह सेंकने से बहुत लाभ होता है।

मधुमक्खी के काटने पर कार्वोलिक एसिड३X या ६ सेवन कराना चाहिये। इससे तुरन्त लाभ होता है। एपिस के सेवन से खुजली तथा कमजोरी दूर होती है। एपिसके बाद आर्निका या नेट्रम म्यूर देना चाहिये।

मच्छड़ों के काटने पर चकत्ते आदि पड जायें तो वहाँ लेमनजूस या एमोनिया रगड़ना चाहिये।

कभी कभी किसी फलके अन्दर भौंरे आदि छिपे रहते हैं। इन फलों को दाँत से काटकर खाते समय बच्चों के मुँह, होठ या जीभ पर वे डक मार देते हैं। ऐसी अवस्था में नमक मिले पानी से कुल्ला करना चाहिये और एपिस खाना चाहिये। इससे लाभ न होने पर बेलेडोना या लेकेसिस। जीभके अगले भाग में डंक होने पर बेलेडोना और पिछले भागमें होने पर लेकेसिस से विशेष लाभ होता है।

चूहा काटने पर लेडम ६का सेवन कराना चाहिये। कान खूजूरा काटने या चिपट जाने पर पानी या घी में नमक मिलाकर वहाँ लगाना चाहिये।

कुत्ते आदि का काटना।

(Bites)

अनेक बार पागल कुत्ते, सियाल या लोमड़ी आदि जानवर काट खाते हैं, इससे विष चढ़ता है और जलातङ्क रोग हो जाता है।

ऐसे जानवर के काटने पर तुरन्त उस स्थान को गरम लोहे या कास्टिकसे जला देना चाहिये अथवा मुँहसे चूसकर या सिंगी लगवाकर उसका विष बाहर निकाल देना चाहिये। जख्म चूसनेवालेके मुँह में घाव या छाले आदि न होने चाहिये। बेहतर है कि वह जख्मको चूसते समय अपने मुँहमें नमक या लहसुन रख लिया करे।

इसके बाद कुछ दिनों तक बेलेडोना ६ का सेवन कराने से अनिष्ट होने की सम्भावना नहीं रहती। जलातङ्क के लक्षण प्रकट होने पर उसी रोगकी दवाएँ प्रयोग करनी चाहिये।

साँप का काटना।

(Snake Bites)

विषैला सर्प काटने पर, उसका इलाज बड़ी शीघ्रता के साथ करना चाहिये, वर्ना इसमें प्राणनाश होते देरी नहीं लगती। साँपके काटने पर पहले वह स्थान कुछ फूल उठता

है बादको फूलन गायब हो जाती है। धीरे धीरे जख्म वाला स्थान नीला हो जाता है, वहाँ जलन होती है और वह स्थान सुन्न हो जाता है। धीरे धीरे रोगी बेहोश होने लगता है, उसे बड़ी गरमी मालूम होती है, वह घबड़ाता है, मुँह से फेन और लार निकलती है, कै होती, है पसीना आता है, गलेमे घडघडाहट होती है, शरीरमें जलन होती है तथा इसी तरह के अन्यान्य कष्टकर लक्षण प्रकट होकर अन्त में रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

साँप काटने की कोई भी हुकमी दवा अभी तक मालूम नहीं हो सकी। यदि साँप काटने के बाद तुरन्त इलाज शुरू किया जाता है तो अनेक बार वह कारगर हो जाता है। इसका साधारण इलाज यह है कि साँप काटते ही उसके ऊपर दो तीन जगह सूत्र बन्धन लगा दिये जायें। इसके बाद जख्म को चाकूसे जरा चीरकर उसमें परमैंग्नेट आफ पोटाश भर दिया जाय। इसके बाद रोगीको नमकीन पानी पिलाकर, या, इपीकाक का चूर्ण ३० ग्रेन खिलाकर रोगीको कै करायी जाय। इसके बाद बीच बीचमें रोगीको थोड़ी थोड़ी ब्राण्डी पिलायी जाय या आर्सेनिक ३ का सेवन कराया जाय। इन उपायों से अनेक बार

रोगी के शरीर में विष नहीं फैलने पाता और वह बच जाता है।

साँप काटते ही जख्मको चूस चूसकर उसका विष निकाल देना बहुत अच्छा उपाय है। जख्मके पास गरम लोहा ले जाकर उसको आँचसे सेंकना भी बहुत लाभदायक है। इसके लिये लोहेके कई टुकड़े आगमें डालकर उन्हें तपाना चाहिये और एक के बाद एक, सेंकनेके काममें लाना चाहिये ताकि बीचमें रुकावट न पड़े। विष चूसनेके बाद इस तरहका सेंक बहुत फायदा करता है।

साँप काटने के बाद रोगी को किसी तालाब या नदी के किनारे ले जाकर, उसे इस तरह सुलाना चाहिये, ताकि उसका धड़ पानी में और शिर सूखे स्थान में रहे। इसके बाद शिर पर ठंढे जल की अनवरत धार देना चाहिये। जब तक रोगी पूर्णरूप से होश में न आ जाय, तब तक क्रिया जारी रखनी चाहिये। इससे अनेक बार रोगी के प्राण बच जाते हैं।

वैद्यों के मतानुसार रोगी को इमली अमलतास और नीबू आदि चीजें खिलाने से विषकी मारक-शक्ति कम हो जाती है।

आवश्यक सूचना—सर्प-विष का इलाज करते समय रोगी को सोने न देना चाहिये। सोने से उसकी मृत्यु हो सकती है।

विष खाना ।

(Poisoning)

जान या अनजान में किसी भी तरह पेट में विष पहुँचने पर मृत्यु हो सकती है । हमारे देश में साधारणतः अफीम और संखिया इन्हीं दो विषों का अधिक प्रयोग होता है । लोग आत्महत्या करने के लिये अफीम खाते हैं और दूसरों का प्राण लेने के लिये उन्हें संखिया खिलाते हैं। शहरों के सुशिक्षित युवक आत्महत्या के लिये पसिडों का भी व्यवहार करने लगे हैं । कई विषों का इलाज नीचे लिखा जाता है ।

चिकित्सा ।

अफीम—अफीम के विषका इलाज करते समय चिकित्सकको सबसे अधिक इस बात पर ध्यान रखना चाहिये, कि रोगी सो न जाये । इसके लिये रोगी को पकड़ कर चलाना पड़ता है, उसे बातों में लगाना पड़ता है । और मार मार या काट काट कर जागरित रखना पड़ता है । रोगी सो जाने पर, वह निद्रा ही उसकी महानिद्रा हो जाती है । इस साधारण सूचना पर ध्यान रखते हुए उसका इलाज करना चाहिये । यह मालूम होते ही, कि रोगी ने अफीम खा ली है, उसे नमक मिला गरम पानी या कै कराने वाली किसी अन्य दवा

का सेवन कराकर खून के करानी चाहिये या स्टमक पम्प के सहारे पेट का विष बाहर निकाल देना चाहिये। इस तरह विष निकल जाने पर रोगी को वेलेडोना मदर टिञ्चर एक एक बूँद घण्टे में चार पाँच वार खिलाना चाहिये और रोगी जब तक पूर्ण स्वस्थ न हो जाय तब तक उसे जागरित अवस्था में ही रखना चाहिये। गत परिच्छेद में "अफीम" देखिये।

संखिया—संखिया खाने पर मनुष्य को कै दस्त आदि होने लगते हैं। इसका विष भी स्टमक पम्प या कै कराने वाली दवाएँ खिलाकर पहले पेट से निकाल देना चाहिये। इसके बाद पेरोक्साइड आफ आयरन या लोहे का मोरचा (जंग) शर्बत में मिलाकर पिलाना चाहिये। कच्चा अण्डा, दूध, वार्ली या पानी में आटा घोल कर पिलाने से भी रोगी की तबियत कुछ ठिकाने आ जातीहै। इसके बाद किसी होमियो-पैथिक दवा का प्रयोग करना चाहिये। सबसे पहले इपीकाक। इपीकाक से लाभ न हो, चिड़चिड़ाहट और रात में तकलीफ यह लक्षण मौजूद हों तो चायना। चिकना चिकना पतला दस्त और सुबह के वक्त तकलीफ बढ़ जाने पर नक्सवोमिका। मिचली और कै तथा उसके साथ जाड़ा और जलन मौजूद होने पर विरेट्रम एल्बकी व्यवस्था करनी चाहिये।

स्ट्रिकनाइन—स्ट्रिकनाइन का विष पेट से निकालने के लिये स्टमक पम्प और कै करानेवाली दवाएं व्यवहार

करनी चाहिये। इसके बाद रोगी को अफीम खिला देनी चाहिये या अफीम को पानी में घोल कर मलद्वार से उसकी पिचकारी दे देनी चाहिये। आयोडिन या कपूर आदि के सेवन से भी लाभ होता है।

गैस—टट्टी या पाखाना, कुआँ, मोरी इत्यादि स्थानों में विषैली गैस जमा हो जाती है। यह साँस में जाने पर आदमी तुरन्त बेहोश हो जाता है और अनेक बार मृत्यु भी हो जाती है। क्लोराइड आफ लाइम तथा विनिगर इसकी प्रतिषेधक दवाएं हैं। कोयले की गैस का प्रतिषेधक भी विनिगर ही है।

एसिड—आत्महत्या आदि करने के लिये अनेक बार लोग एसिड भी पी लेते हैं। एसिड पीने पर रोगी के होंठ और मुँह आदि स्थानों में जख्म हो जाते हैं और वहाँ जलन होती है। सल्फ्यूरिक एसिड, म्यूरेटिक एसिड, फोस्फरिक एसिड और एसेटिक एसिड आदि का विष दूर करने के लिये साबुन का फेन और मेग्नेशिया व्यवहार किया जाता है। नाइट्रिक एसिड का विष कार्बोनेट आफ लाइम से दूर होता है।

ऐल्कली या क्षार—पोटाश, सोडा, एमोनिया या नौसादर, धातु या मोती आदि की भस्म इत्यादि का विष दूर करने के लिये विनिगर, नीबू का रस, खटाई, मट्ठा और रेंडी का तेल आदि चीजें व्यवहार की जाती है।

उद्भिज विष—दवा के लिये अनेक प्रकार के उद्भिज या वनस्पति—कणादि औपधिया विविध रूप में व्यवहार की जाती है। यदि इनके व्यवहार से शरीर में कोई विष के लक्षण प्रकट हो तो कपूर का सेवन करना चाहिए है। जिस विषके कारण प्रदाह उत्पन्न होता है या रोगी को कै दस्त आरम्भ होकर हिमाङ्ग और बेहोशी आदि लक्षण प्रकट होते है, उसमे इससे काफी लाभ होता है। जब इसका पता न लगे कि रोगी ने कौन विष खाया है, तब भी कपूर ही देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार के विष है, जिनके खाने पर शरीर में विष क्रिया प्रकट होती है। ऐसे मामलों मे किसी चिकित्सककी सलाह लेनी चाहिये। कॉफी भी विष दूर करने की अच्छी दवा है। विष का नाम आदि न मालूम होने पर गाढी कॉफी कई बार पिलाने से बहुत लाभ होता है और कै होकर विष शरीरसे निकल जाता है।

कुछ प्रतिषेधक दवाएँ—गरम दवाओं के अपव्यवहार में नक्सवोमिका ६ या ३० । लोहे से बनी हुई दवाओं के अपव्यवहार में हिपर सल्फर ६ या पल्सेटिला ६ । नमक के अपव्यवहार में नाइट्रिक स्पिरिट, डालसिस मदर टिंचर या आर्सेनिक ३ । धतूरे के अपव्यवहार में टेबेकम ३ । चीनी के अपव्यवहार में नेट्रम फस ६X विचूर्ण । छोटी उम्रमें बीडी आदि के अपव्यवहार में आर्जनाइ ३, आर्सेनिक ६, विरेट्रम एल्ब ६ । आयोडाइड आफ पोटाश के अपव्यवहार में हिपर सल्फर ६ या २०० । ताँबे या पीतल के बर्तन में भोजन बना कर खाने से विष की क्रिया प्रकट हो तो हिपर सल्फर ३० ।

पानी में डूबना ।

पानी में डूबने पर आदमी के पेट में पानी भर जाता है और वह मृतप्राय हो जाता है । ऐसे रोगी को शिर नीचे और पर ऊपर, इस तरह रखकर पहले उसके पेट का पानी निकाल देना चाहिये । इसके बाद उसके कन्धे के नीचे एक तकिया रख, चित सुलाना चाहिये और रोगी के हाथ तथा केहुनी पकड़ कर एक बार ऊपर ले जाना चाहिये और कुछ सेकण्ड के बाद फिर नीचे लाना चाहिये । इस प्रक्रिया से रोगी साँस लेने लगता है ।

कभी कभी रोगी को गरम पानी के कुण्ड में गले तक डुबो कर चेहरे पर ठण्ढे जल का छींटा देने से उसे होश आ जाता है और वह साँस लेने लगता है। कभी कभी रोगी की जीभ बाहर खींच कर और उसकी नाक बन्द कर १०-१५ बार उसके मुँह में फूँकने से साँस चलने लगती है।

पानी में डूबे हुए रोगी का इलाज करते समय घबड़ाना न चाहिये। अनेक बार ४-५ घण्टे के बाद भी रोगी होश में आता है। बीच बीच में रोगी को ओपियम ३० और इससे लाभ न हो तो लेकेसिस ६ या एन्टिम टार्ट ३० खिलाना चाहिये।

फाँसी लगाना।

बहुत लोग फाँसी लगाकर आत्महत्या करने की चेष्टा करते हैं। यदि ऐसा रोगी बेहोश होकर मृतप्राय हो जाय, तो उसे होश में लाने के लिये भी वही क्रिया करनी पड़ती है। होश में आने पर लक्षणानुसार ओपियम या टार्टर एमिटिक का सेवन कराना चाहिये।

वज्रपात।

(Lightning)

बिजली गिरने के कारण अनेक बार मनुष्य की साँस रुक जाती है और वह मृतवत् हो जाता है। ऐसे रोगी को जमीन

में एक गढ़ा खोद, उसमें ठेस देकर इस तरह बैठाना चाहिये, ताकि उसका मुँह सूर्य की ओर रहे। इसके बाद उसके गले तक का भाग मिट्टी से तोप देना चाहिये। होश आने पर उसे गढ़े से बाहर निकाल लेना चाहिये और उसका बदन गरम कपड़े से ढक देना चाहिये। किसी किसी का कथन है कि रोगी के कपड़े निकाल कर उसके बदन पर ठंढे पानी के छींटे देना चाहिये। इससे वह शीघ्र होश में आ जाता है। यदि रोगी का बदन गरम हो उठे, पर श्वास न चले, तो उसे चलने के लिये उपरोक्त विधि से कृत्रिम श्वास क्रिया करनी चाहिये। रोगी को होश आने पर उसे सबसे पहले नक्सवोमिका ६ या ३० देना चाहिये। इसके बाद फोस्फरस ३० देना चाहिये।

जीवनी शक्ति की अवसन्नता।

(Shock)

एकायक मानसिक उत्तेजना या प्रबल आघात लगने के कारण अनेक बार मनुष्य मृतवत् हो जाता है। हाथ पैर ठंढे हो जाना, शरीर का रंग बदल जाना, चेहरा मुर्दे का सा हो जाना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—स्नायुओं की अस्वाभाविक उत्तेजना के कारण मृतवत् अवस्था होने पर इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ३ या ३०—रोगी का शरीर नीला पड़ जाय तो इसे देना चाहिये।

कैम्फर—शरीर ठंढा हो जाय तो इसे देना चाहिये।

विरेट्रम एल्बम ६ या ३०—कपाल पर ठंढा पसीना, और हृदय की अवसन्नता इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

आँख और कान में कीड़े आदि का घुसना।

आँख मे कोई चीज गिरने पर उसे रगड़ना न चाहिये। आँख खोल कर पानी में डुबा रखने से अनेक बार गिरी हुई चीज निकल आती है। एसिड या कास्टिक आँखमें गिरने पर आँखमें मीठा तेल डालना चाहिये। धातुका चूरा, कोई कड़ी चीज या रंग गिरने पर अण्डेका सफेदीसे लाभ होता है। राख गिनेर पर मक्खन या मट्ठा लाभदायक है। चूना गिरे तो भूलकर भी पानी से न धोना चाहिये। सिरका पानी में मिलाकर उससे आँख धोने पर चूना निकल जाता है और कोई तकलीफ नहीं होती। कोई ऐसी चीज गिर जाय जो आसानी से न निकले तो पपुटे को उलट कर ब्लाटिङ्ग पेपर की सलाई बना कर उसके सहारे उसे निकाल देना चाहिये। कोई तकलीफ हो तो

उसे दूर करने लिये केलेण्डुला लोशन की पट्टी चढ़ानी चाहिये और एकोनाइट का सेवन करना चाहिये। कान में कीड़ा घुस जाने पर गरम तेल डालना चाहिये। कोई चीज, कौड़ी या दाना नाक या कान में घुस जाने पर चिमटी से सावधानी के साथ बाहर निकाल लेना चाहिये।

२१–स्त्री-रोग।

ऋतु या रजस्राव।

(Menstruation)

यौवनावस्था में स्वस्थ स्त्रियों की जननेन्द्रिय से प्रतिमास थोड़ा सा रक्त स्राव होता है। इसी को ऋतु या रजस्राव कहते हैं। स्वाभाविक अवस्था में एक चन्द्रमास या २८ दिन में यह प्रकट होता है। स्वास्थ्य की खराबी या किसी अन्य कारण से इस अवधि में घटा बढ़ी भी हो जाती है। ऋतु के समय जो खून निकलता है,वह देखनेमें खून जैसा होनेपर भी वह प्रकृत खून नहीं रहता, न खून की तरह वह जमता ही है। यह स्राव साधारणतः चार दिन तक जारी रहता है। इतने समय में एक या डेढ़ पाव जितना खून निकलता है।

ऋतुस्राव पहले पहल बालिकाओं को १३-१४ वर्ष की अवस्था में आरम्भ होता है। शहर में रहने वाली और विलास प्रिय बालिकाओं को कुछ जल्दी और ग्रामीण बालिकाओं को कुछ विलम्ब से ऋतुस्राव आरम्भ होता है। गरम देशों की अपेक्षा शीत प्रधान देशों में भी प्रथम रजोदर्शन विलम्ब से आरम्भ होता है। रजोदर्शन आरम्भ होने के समय बालिकाओं में शारीरिक और मानसिक परिवर्तन दिखायी देते हैं और उनके शरीर में यौवन के चिन्ह प्रकट होकर, वे सुश्री दिखायी देने लगती हैं।

इस तरह एक बार ऋतुस्राव आरम्भ होने पर, वह ४०-४५ वर्ष की अवस्था पर्यन्त बराबर जारी रहता है। इसके बाद कुछ खास बातें प्रकट होकर यह बन्द हो जाता। बीच में जब स्त्रियाँ गर्भवती होती हैं, तब ऋतुस्राव बन्द रहता है। प्रसव होने के ६ या ८ महीने बाद और कभी कभी इससे भी अधिक समय के बाद पुन ऋतुस्राव आरम्भ होता है।

ऋतुस्राव स्त्रियों के शरीर की एक स्वाभाविक क्रिया है और यह बिना किसी कष्ट के स्वाभाविक रूप से ही सम्पन्न होनी चाहिये। परन्तु स्वास्थ्य हीनता तथा अन्यान्य अनेक कारणों से इसमें तरह तरह की गड़बड़ी दिखायी देती है। निश्चित समय के पहले या बाद को ऋतुस्राव होना, बहुत तकलीफ के साथ ऋतुस्राव होना, बहुत कम या बहुत अधिक तादाद में खून निकलना, खून का रूप रग ठीक न होना,

ऋतुस्राव बन्द होकर नाक या मुँह से खून निकलना आदि सभी बातें गोलमाल की परिचायक है।

ऋतु विषयक रोगों का इलाज करते समय यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि ऋतु के समय होमियोपैथिक दवा खाना मना है। यदि ऋतु में कोई शिकायत हो तो ऋतु स्राव हो जाने के बाद दवा शुरू करनी चाहिये और जरूरत हो तो दुबारा ऋतुस्राव होने के बाद फिर उसी तरह इलाज करना चाहिये।

इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान मे रखना आवश्यक है कि ऋतु विषयक समस्त रोगों की पल्सेटिला और सीपिया—यह दो प्रधान दवाएँ हैं। पल्सेटिला साँवले या काले रंग की तथा जो औरतें जरा में ही रो देती है, उनके लिये मुफीद है। सीपिया गोरी और सुन्दर औरतों की बीमारी में अधिक लाभदायक है। ऋतु विषयक ही क्यों, बल्कि सभी तरह के स्त्री रोगों में इनसे थोड़ा बहुत लाभ होता है। जब किसी दूसरी दवा के लक्षण स्पष्ट न दिखायी दें, अथवा रोग अच्छी तरह समझ में न आये, तब आरम्भ से ही यह दवाएं आजमानी चाहिये। ऐसा करने पर या तो वह रोग आराम ही हो जाता है या लक्षण स्पष्ट हो जाने के कारण दूसरी दवा चुनने में सहायता मिलती है।

प्रथम रजस्राव में विलम्ब।

(Delayed Menstruation)

शारीरिक अस्वस्थता, डिम्बकोषकी कोई बीमारी, योनि के पर्दे में छेद का न होना, आलसी स्वभाव, किसी तरह का शारीरिक परिश्रम न करना इत्यादि अनेक कारणों से प्रथम रजस्राव में विलम्ब हो सकता है। यदि विलम्ब होने पर भी कोई तकलीफ न हो तो इसका इलाज न करना चाहिये। परन्तु शरीर में यौवन के चिन्ह प्रकट हो जाने पर भी यदि ऋतुस्राव न हो, साथ ही यदि कमर में दर्द और तकलीफ, तबियत अनमनी सी रहना, शिर दर्द, तलपेट भरा हुआ और उसके तनाव इत्यादि रजोदर्शन के लक्षण प्रकट होने पर भी रजोदर्शन न हो और कुछ समय के बाद यह लक्षण भी गायब हो जायें तो इसका इलाज अवश्य करना चाहिये।

चिकित्सा।

पल्सेटिला ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है। पेट और पीठमें दर्द, शिरमें दर्द, अरुचि, हमेशा ठढ मालूम होना, आलस्य, मिचली, छातीका धड़कना, खूनकी कमी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यदि इन लक्षणों के साथ श्वेत प्रदरकी भी शिकायत हो तो सीपिया देना चाहिये।

सल्फर ३०—कमरमें दर्द, शिरमें दर्द या चक्कर, अजीर
बवासीरके साथ कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव या मौन रहन
इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

सिनिसिओ १X पहली वारके ऋतुस्रावमें विलम्ब य
एक दो वार ऋतु होकर उसका वन्द हो जाना, कष्टके साथ
थोड़ा और अनियमित ऋतु।

एकोनाइट ३—एकवार ऋतुस्राव होने के वाद सर्दी य
डरसे ऋतुस्राव का वन्द हो जाना।

वेलेडोना ६ या ३०—शिर में रक्ताधिक्य, शिरमें
चक्कर या दपदपी, शिर गरम, चेहरा लाल, तलपेटमें दर्द,
दर्दका एकायक शुरू होना और एकायक गायब हो जाना,
नाकसे खून डिम्बकोष तन्नाहट
इत्यादि।

आयोनि
खून निकलना
की इच्छा

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु, मोटे और थुलथुले शरीरकी बालिकाओं को यह रोग होना, हमेशा शिर गरम रहना और शिरमें चक्कर आना इत्यादि।

फोस्फरस ३०—यदि दुबली पतली और कमजोर बालिकाओं को यह रोग हो अथवा ऋतुस्राव बन्द होकर नाक, मुंह, पेशाब तथा दस्तके रास्ते से खून निकले तो इसे देना चाहिये।

सिमिसिफिउगा ६—डिम्बकोषके स्नायुओंकी कमजोरी के कारण ऋतुका न होना, शिरमें दर्द, खूनकी कमी, बायें अंग या बायें स्तनमें दर्द इत्यादि।

नेट्रमम्यूर १२X विचूर्ण—पेर ठंढे, कब्जियत, हमेशा जाड़ा लगना, कमज़ोरी और रक्तस्वल्पता इत्यादि लक्षणों में दुबली पतली स्त्रियोंको इसे देना चाहिये।

फेरम ३०—रक्तस्वल्पता, सदा पड़े रहने की इच्छा, शिरमें रक्तसञ्चय और दपदपी, लेटने पर चेहरे का फीका हो जाना और उठ बैठने पर पुन उसका लाल हो उठना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त विरेट्रम एल्व, वेसिलिनम, लाइ
केल्क फस, आयोड, चायना और नक्स आदि दवाओं से
लाभ होता है। ऋतुविषयक अन्यान्य रोगोंकी दवाओं से
दवा चुनी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—सर्दीसे बचना चाहिये। आल
और विलासितासे दूर रहना चाहिये। गरम मसाले
उत्तेजक पदार्थ न खाने चाहिये। गरम पानी में कमर त
तक डुबोकर बैठना, पेटमें गरम कपड़ा या फलानेल बाँ
रखना, नियमित परिश्रम करना इत्यादि लाभदायक है।

स्वल्परज या रजोरोध।

(Amenorrhoea)

साधारणतः गर्भ रहने पर ऋतुस्राव बन्द हो जाता है
इस लिये ऋतुस्राव बन्द होने पर पहले इसका निश्चय क
लेना चाहिये। यदि गर्भ न होने पर भी ऋतुस्राव बन
हो जाय और उसके कारण कष्टकर लक्षण प्रकट हों त
इसका इलाज करना चाहिये।

बहुत ठंढ या सर्दी लगना, पानीमें भीगना, पैर पानी
भिगोये रखना, शोक या दुःख आदि मानसिक आवेग इत्या
कारणों से प्रायः ऋतुस्राव बन्द हो जाता है। अनेक बा

फेफड़ा, यकृत या जरायुकी बीमारी, वात रोग आदि कारणों से भी यह शिकायत पैदा हो जाती है। ऐसी अवस्था में मूल रोगोंका इलाज पहले करना चाहिये।

यह रोग होने पर कभी कभी ऋतुस्राव एकदम बन्द हो जाता है और कभी कभी बहुत थोड़ा ऋतुस्राव होकर वह बन्द हो जाता है। साथही ज्वर भाव, शिरमें दर्द, मिचली या कै, पेटमें दर्द, आक्षेप, प्रलाप, हिस्टिरिया, नाक, फेफड़ा, या पाकाशय से खून निकलना, श्वासकष्ट और कलेजेको धड़कन इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। यदि ऋतुस्राव एकायक बन्द न होकर धीरे धीरे बन्द होता है तो कमजोरी, दुर्बलता, आलस्य, भूख न लगना, उदासीनता, पैरके पंजे में सूजन, कलेजेका धड़कना और श्वासकष्ट इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ x या ६—सरदी या भयके कारण यह रोग होना, छाती या शिरमें रक्तसञ्चय, चेहरा लाल, सुस्ती, मिचली या बेहोशी, शिरमें दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। भयके कारण रजोरोध होने पर सबसे पहले इसे ही देना चाहिये। इससे अस्थायी या थोड़ा लाभ होने पर ओपियम या विरेट्रम देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—यह इस रोगको बढ़िया दवा है। सरदी या ठढ लगने के कारण यह रोग होना, आधे शिरमें दर्द, चेहरा कान और दांतोतक दर्दका बढ़ना, कलेजे में धड़कन, श्वासकष्ट, बदनमें दाह, मिचली या कै, पतले दस्त, तलपेटमें दर्द, शामके वक्त तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

विरेट्रम ६ या ३०—शिरमें स्नायुशूल, हिस्टीरिया जैसे लक्षण, बहुत मिचली और कै, चेहरा फीका, हाथ पैर या नाक ठढी, बहुत कमजोरी, जब तब बेहोश हो जाना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—शिरमें रक्तसञ्चय या दर्द, नाकसे खून बहना, चेहरा लाल इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। एकोनाइटके बाद इसे देनेसे विशेष लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—ऋतुस्रावके बदले नाकसे खून गिरना कपालमें दर्द, कब्जियत, हिलने डोलनेसे दर्दका बढ़ना पेट और कमरमें दर्द इत्यादि लक्षणो में और अविवाहिता स्त्रियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—शिरके पिछले भाग में या आधे शिरमें अथवा आँखके ऊपर दर्द, शिर गरम, शिरमें भार आँख के चारो ओर नीला दाग, पेट में पूर्णता और भार मालूम होना, कब्जियत, श्वासकष्ट, कमजोरी चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—कमजोरी, खिन्नता, वक्षमें दाह, शोथ, ठढ मालूम होना, चेहरा फीका, प्यास, लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, आधी रातके बाद उपसर्गों का बढ़ना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—स्वाभाविक कब्जियत, कभी बदहजमी और कभी पतले दस्त, सुबहके वक्त शिरमें दर्द इत्यादि।

इग्नेशिया ६—मानसिक कष्टके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कोनायम ६ या ३०—ऋतुके समय स्तना में दर्द और तन्नाहट, पेशाब करने में कष्ट, शिरमें चक्कर, कमजोरी इत्यादि।

जेल्सीमियम१X या ३०-जरायुमें भार और बहुत दर्द, ऐसा मालूम होना मानो ऋतुस्राव होगा, शिरमें दर्द, आँखोंके सामने अंधेरा दिखायी देना।

सिमिसिफिउगा ३ या ६-शिरमें दर्द, बायें पार्श्व और बायें स्तनके नीचे दर्द, हिस्टीरिया इत्यादि।

सीपिया ६ या ३०—हिस्टीरिया, स्नायविक शिरदर्द और स्नायविक दुर्बलता, पेट खाली मालूम होना, आसानी से पसीना निकलना, दांतमें दर्द इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२—जननेन्द्रिय पर भार मालूम होना, प्रसव वेदना जैसा दर्द, ऋतुके पहले जंघा और पेटमें दर्द, वर्णहीन पेशाब, चिडचिडा स्वभाव इत्यादि।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—पेटमें शूल जैसा जोरों का दर्द, उसके कारण रोगीका पैर मोड़े रहना, अस्थिरता, शोक या दुःखके कारण ऋतुरोध इत्यादि।

क्रोकस ३ या ६—पेटमें दर्द, जननेन्द्रिय में भार मालूम होना, ऐसा मालूम होना मानो ऋतु होगा, नाकसे काला काला रस्सी जैसा खून निकलना, पेटमें ऐसा मालूम होना मानो कोई चल फिर रहा है इत्यादि।

सेबाडिला ६—ऋतुका आरम्भ होकर एकाएक रुक जाना, फिर कुछ कुछ होना फिर बन्द हो जाना इत्यादि।



एपिस ६ या ३०—शिरमें रक्तसचार, शरीरमें दर्द, आलके पपटे ओर चेहरा फूला हुआ, दाहिने डिम्बकोषमें सुई चुभोने जैसा दर्द ओर जलन।

ककुलस ६—ऋतु के समय ऋतुस्राव न होकर श्वेत प्रदर का स्राव या केवल पेट में दर्द होना, कभी कभी दो एक बूँद काला खून निकलना, ऋतुस्राव के समय दुर्बलता, हिस्टीरिया इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—ढीले या थुलथुले शरीर की युवतियों को यह रोग होना, पानी में काम करने के कारण यह रोग होना, शरीर में शोथ इत्यादि।

इनके अतिरिक्त लाइकोपोडियम, फेरम, सिनिसिओ, कोलिन्सोनिया, फोस्फरस, नेट्रम म्यूर, लेकेसिस, हेमामेलिस ग्रेफाइटिस, डिजिटेलिस, क्युप्रम, चायना, कस्टिकम, कार्बो वेज ओर एपोसाइनम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—सरदी लगने के कारण यह रोग हुआ हो तो पैर गरम पानी में डुबो रखना चाहिये। बहुत दर्द होने पर तलपेट में गरम पानी का सेंक देना चाहिये।

पथ्य पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। हलके और पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये। यदि कमजोरी या रक्त स्वल्पता के कारण यह रोग हुआ हो, तो पुष्टिकर चीजें खानी चाहिये।

ऋतुशूल या बाधक वेदना।

(Dysmenorroea)

ऋतुस्राव के समय बहुत दर्द होने को ऋतुशूल कहते हैं। सरदी लगना, जरायु का प्रदाह, डिम्बकोष की बीमारी, कब्जियत, जरायुग्रीवा के पथ का संकुचित होना, जरायु की नि सारक धमनी में रक्ताधिक्य आदि कई कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर पीठ, कमर, जाँघ, डिम्बकोष और जरायु आदि स्थानों में दर्द और तलपेट में प्रसव वेदना मालूम होती है। यह शिकायतें ऋतुस्राव के पहले या ऋतुस्राव के समय से शुरू होती हैं और दो एक दिन या ऋतुस्राव बन्द होने तक मौजूद रहती हैं। इनके साथ शिर में दर्द, कलेजे में धड़कन, अल्प रक्तस्राव इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। जब तक यह रोग रहता है, तब तक स्त्रियों को प्रायः बच्चे नहीं होते।

चिकित्स।

बेलेडोना ६ या ३०—पीठ में भयंकर दर्द, तलपेट में ऐसा मालूम होना मानो भीतर की सभी चीजें बाहर निकल

पड़ेगी, साथ ही शिर में रक्त सञ्चय, चेहरा लाल, डरावना चीजें दिखायी देना इत्यादि।

केमोमिला १२ या ३०—प्रसव जैसा दर्द, पीठ की ओर से तलपेट और नीचे की ओर दर्द का बढ़ना, शूल, काला काला थक्का जैसा रक्तस्राव।

विरेट्रम ६ या ३०—शिर में स्नायुशूल, पेट में शूल मिचली और कै, हाथ पैर या नाक ठंढी, बहुत कमजोरी, जब तब बेहोश हो जाना और पतले दस्त।

कोफिया ६ या ३०—बहुत स्नायविक उत्तेजना, शूल जैसा दर्द, तलपेट भरा और भारी मालूम होना, आक्षेप, प्रलाप, दाँत किडमिडाना, श्वास कष्ट, गले में घड़घड़ाहट, समूचा शरीर ठंढा, इत्यादि।

ककुलस ६ या ३०—तलपेट में आक्षेप, छाती में तनाव, जी मिचलाना, बेहोशी, शूल जैसा दर्द।

पल्सेटिला ६ या ३०—तलपेट में ऐसा मालूम होन मानो पत्थर रक्खा हुआ है, जाँघों तक खींचन जैसा दर्द, बैठने पर दर्द का बढ़ना, दस्त का वेग होने पर भी दस्त न होना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—तलपेट या कमर और जाँघों में दर्द, मिचली, तलपेट में आक्षेप, वारवार पेशाव करने की इच्छा, कब्जियत, खुलासा दस्त न होना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३ या ६—ऋतु के समय प्रसव वेदना जैसा दर्द, ऋतु के पहले शिर में दर्द, तलपेट और जाँघ में दर्द, पाकस्थली के ऊपर जोरों का दर्द, मैले रंग का थोडा या थक्का थक्का बहुत सा रक्तस्राव होना।

जेल्सीमियम ३Xया३०—रक्तसञ्चय के कारण जरायु में ऐंठन, योनिद्वार और जाँघों मे अकड़न, पेट में दर्द, कमर और पीठ तक दर्द का फैल जाना, दर्द बन्द हो जाने पर तन्द्रा और आलस्य इत्यादि। इसके साथ कोलोफाइलम १X पर्यायक्रम में देने से विशेष लाभ होता है।

जेन्थक साइलम ३X—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। तलपेट से लेकर जाँघों तक तेज दर्द, अधिक रजस्राव और बुखार इत्यादि लक्षणों में तथा अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सरल होमियोपैथिक चिकित्सा

सीपिया ६ या ३०—आँखों के चारों ओर काला दाग, बदन पीला, सुबह रोग का बढ़ना इत्यादि लक्षणों में और पित्त प्रधान प्रकृतिवाली स्त्रियों को इसे देना चाहिये।

केलिन्सोनिया ३ या ६—स्राव के साथ झिल्ली के टुकड़े जैसा पदार्थ निकलना, उसके साथ जोरों का दर्द और कब्जियत।

सिकेली ६—नियमित समय के बहुत पहले मैला, बदबूदार और दाने दाने जैसा स्राव, तलपेट में बहुत दर्द, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, समूचे शरीर में, खास कर हाथ पैर में ठंढा पसीना, मूत्राशय और मलाशय में कतरने जैसा दर्द, कमजोरी इत्यादि।

एपिस ३ या ६—पेट में डंक मारने जैसा दर्द, थोड़ा पेशाब, बहुत दर्द, अस्थिरता, दर्द के कारण रोगी का छटपटाना इत्यादि।

वाइबर्नम १X या ३X—ऋतुस्राव के पहले तलपेट में बहुत दर्द, ऋतु के समय जी मिचलाना, श्वास कष्ट, बहुत ऋतुस्राव इत्यादि।

लिलियम ३ X या ६—तलपेट से लेकर पैर तक दर्द का बढ़ना, खोंचा मारने जैसा दर्द, जरायु में प्रसव वेदना जैसी वेदना, स्तन में दर्द इत्यादि।

बोरेक्स ३ या ६—पेट में वायीं ओर अधिक दर्द, जरायु में आक्षेप और ऋतुशूल के साथ वन्ध्यत्व होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त केक्टस, कोनायम, कल्पीकम, हेलोनिअस, मेग्नेशिया फस, कोलिन्सोनिया, मरकस, प्लेटिना, फ्युभम, हेमामेलिस, नाइट्रिक एसिड, फोस्फरस, फाइटोलेका, सेबाइना, सिनिसिओ, ग्रेफाइटिस और फेरम आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—दर्द के कारण बहुत तकलीफ हो तो गरम पानी या चोकर की पोटली से सेंक करना चाहिये।

अतिरजः।

(Menorrhagia)

ऋतु के समय बहुत खून निकलना, चार दिनों की अपेक्षा अधिक समय तक ऋतुस्राव होते रहना या महीने में दो तीन

सेबाइना ६ या ३०—जल्दी जल्दी और अधिक तादाद में ऋतुस्राव होना, शूल और प्रसव के समय जैसा दर्द, पीछे से लेकर सामने तक दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होने पर उस दवा को बन्द न कर प्रति सप्ताह इसकी एक खुराक देने से विशेष लाभ होता है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—सल्फर की तरह इसे भी बीच बीच में देने से बहुत लाभ होता है।

हाइड्रेस्टिस १x—यह भी इस रोग की बढ़िया दवा है।

बोरेक्स ६—जल्दी जल्दी ऋतु होना, अधिक परिमाण में स्राव, पेट में दर्द और जी मिचलाना।

इरिजिरन ३x—मूत्रनाली और गुह्यद्वार में प्रदाह, रह रह कर अधिक परिमाण में चमकीले लाल रंग का रक्त स्राव, खास कर गर्भ स्राव के बाद, इत्यादि।

मानो पेट से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, कामोन्माद या इन्द्रिय की उत्तेजना इत्यादि।

केमोमिला १२या ३०—काले रंग का गॉठ गॉठ जैसा स्राव, पीठसे लेकर सामने की ओर तलपेट तक दर्द, प्यास, बाहर से ठंढ मालूम होना, प्यास, कभी कभी बेहोश हो जाना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—नियमित समय के पहले ऋतुस्राव होना, बहुत दिनों तक स्राव जारी रहना, अथवा एक बार बन्द होकर फिर स्रावका शुरू होना,नशेखोर स्त्रियों को यह रोग होना इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०—हिस्टीरिया जैसे लक्षणों के साथ कई दिनो तक रक्तस्राव जारी रहे तो इसे देना चाहिये।

चायना ६ या ३०—बहुत दिनों तक बहुत अधिक तादाद में ऋतुस्राव होने के कारण बहुत कमजोरी के लक्षणों में इसे देना चाहिये। अन्यान्य दवाओं से रोग दूर हो जाने पर भी यदि कमजोरी रहे तो उस अवस्था में इसे ही देना चाहिये।

सेपाइना ६ या ३०—जल्दी जल्दी और अधिक तादाद में ऋतुस्राव होना, शूल और प्रसव के समय जैसा दर्द, पीछे से लेकर सामने तक दर्द, हिलने डालने से दर्द का बढ़ना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होने पर उस दवा को बन्द न कर प्रति सप्ताह इसकी एक खुराक देने से विशेष लाभ होता है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—सल्फर की तरह इसे भी बीच बीच में देने से बहुत लाभ होता है।

हाइड्रेस्टिस १X—यह भी इस रोग की बढ़िया दवा है।

बोरेक्स ६—जल्दी जल्दी ऋतु होना, अधिक परिमाण में स्राव, पेट में दर्द और जी मिचलाना।

इरिजिरन ३X—मूत्रनाली और गुह्यद्वार में प्रदाह, रह रह कर अधिक परिमाण में चमकीले लाल रंग का रक्त स्राव, खास कर गर्भ स्राव के बाद, इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—शारीरिक दुर्बलता और गर्भाशयकी खराबी के कारण अधिक समय तक ठहरने वाला अधिक रक्तस्राव।

सिकेली२Xया६X—पतला काले रंगका बदबूदार बिना-दर्दका स्राव, जरायुमें अकड़न जैसा दर्द, काखना, बहुत दिनो तक ठहरने वाला अत्यन्त स्राव इत्यादि।

ट्रिलियम ३ या ६—बहुत रक्तस्राव, कमजोरी, ऋतु बन्द हो जानेके १०—१५ दिन बाद किसी दिन अचानक बहुत सा खून निकल पड़ना, बहुत रक्तस्राव इत्यदि।

आस्टिलेगो ३ या ६—पुरानी बीमारी, जरायुसे रक्त-स्राव, रजस्राव बन्द होनेके समय बहुत और बहुतदिनस्थायी रक्तस्राव, शिरमे भार और चक्कर।

मिलिफोलियम १ या ३—वेगके साथ साफ खून निकलना, कई दिनोतक रक्तस्रावका जारी रहना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त सिमिसिफिउगा, हाइड्रेस्टिनाइन, पल्सा, फेरम, थैस्पी, नाइट्रिक एसिड, एस्त्रा और हेलोनियस आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यकसूचना।—रक्तस्राव बन्द करने के लिये रोग के समय रोगकी तेजीके अनुसार एकसे लेकर तीन चार घण्टेके अन्तरसे दवा देनी चाहिये। रक्तस्राव बन्द हो जाने पर कमजोरी दूर करनेके लिये फेरम, आर्सेनिक, पल्सेटिला या चायनाका सेवन कराना चाहिये। रोगिनीको रोगके समय स्थिरभावसे चित सुलाना चाहिये। अधिक रक्तस्राव होता हो, तो तलपेट पर ठंढे पानीकी पट्टी चढ़ाना चाहिये। हैमामेलिस मदर टिंचर अठगुने पानी में मिलाकर, योनिद्वार में उसकी पिचकारी देनी चाहिये या कपड़ा भिगोकर रखना चाहिये। इससे रक्तस्राव बन्द होता है। शारीरिक या मानसिक परिश्रम न करना चाहिये।

अनियमत ऋतु।

(Irregular Menstruation)

यह पहलेही वतलाया जा चुका है कि स्वाभाविक अवस्था में २८-२८ दिनके अन्तरसे ऋतुस्राव होना चाहिये और प्रत्येक बार पाव भर से लेकर डेढ़ पाव तक खून निकलना चाहिये। *गर्भावस्थाके समय ऋतुस्रावका वन्द रहना भी एक* स्वाभाविक बात है। इन नियमोंके विपरीत कभी कम, कभी अधिक, कभी जल्दी, कभी देरासे, कभी नियमित समयसे कम समय तक तथा कभी अधिक समय तक—इस तरह जब ऋतु स्राव होता है तब वह अनियमित ऋतु कहलाता है।

चिकित्सा ।

कोनायम और सिनिसिओ इस रोग की अच्छी दवाए है। पल्सेटिला और थायना पर्यायक्रममें देनेसे भी ऋतुकी अनियमितता दूर होती है। इनके अतिरिक्त खास खास अनियमितताओंकी दवाएँ नीचे लिखी जाती है।

वहुत अधिक ऋतुस्राव—बेलेडोना कल्केरियाकार्ब, केमेमिला, फेरम, इपीकाक, नक्सवोमिका, प्लेटिनम, सेवाइना, सिकेली, स्ट्रेमोनियम।

वहुदिनस्थायी ऋतुस्राव—एकोनाइट, किनिनम इग्नेशिया, लाइकोपोडियम, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, प्लेटिनम, सिकेली, साइलीसिया और सल्फर।

असमयमें या समय बिताकर ऋतुका होना—एम्ब्रा वेलेडोना, कल्केरिया, कार्वोवेज, केमोमिला, इग्नेशिया, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, फोस्फरस, सेवाइना।

देरीसे ऋतु होना—कस्टिकम, क्युप्रममेट, डाल्केमारा, ग्रेफाइटिस, केला बाइक्रोम, लाइकोपोडियम, मेग्नेशिया कार्व, नेट्रमम्यूर, पल्सेटिला, सीपिया, साइलीसिया, फोस्फरस, लेकेसिस, सल्फर।

बहुत कम परिमाणमें ऋतु होना-एमोनिया, कस्टि-कम, डाल्केमारा, ग्रेफाइटिस, केलीकार्व, लेकेसिस, मेग्नेशिया कार्ब, पल्सेटिला, सल्फर, बेराइटा कार्ब, कक्कुलस, नेट्रम-म्यूर, फोस्फरस इत्यादि।

अधिक-काल-स्थायी-ऋतु-एमोनिया, पल्सेटिला, सल्फर ब्रायोनिया, डाल्केमारा, फोस्फरस इत्यादि।

वारवार ऋतु होना-साइक्लेमेन, नक्सवोमिका, एकोनाइट, कार्वोवेज, फेरम, मेग्नेशिया, नाइट्रिक एसिड, रसटक्स, इपीकाक ब्रायोनिया इत्यादि।

अनियमित समयमें ऋतुस्राव-आयोडियम, नक्सवो-मिका, रूटा, मेग्नेशिया फस, नक्सवोमिका, स्टेफीसेग्रिया, फोस्फरिक एसिड।

रहरहकर ऋतुका बन्द हो जाना-पल्सेटिला, सीपिया, सल्फर, ब्रायोनिया, कोनायम, डाल्केमारा, ग्रेफाइटिस, केली-बाइक्रोम, लाइकोपोडियम, साइलीसिया इत्यादि।

गर्भावस्थामें ऋतु होना—इपीकाक, सिकेली, केमोमिला अर्निका, प्लेटिना, पल्सेटिला, एकोनाइट, हेमामेलिस किनिनम, बेलेडोना, कल्केरिया कार्ब, रसटक्स, नाइट्रिक एसिड, केक्टस।

प्रसव या गर्भस्रावके बाद ऋतु होना—इपीकाक, सिकेली, सेबाइना, प्लेटिना, चायना, फेरम, केमोमिला, हायोसायमस, बेलेडोना, एपोसाइनम, क्रोकस, एसिड नाइट्रिक लाइकोपोडियम इत्यादि।

एक पक्षके अन्तरसे ऋतु—इग्नेशिया, बोविष्टा, प्लेटिना, सिकेली, क्रोकस, ट्रिलियम इत्यादि।

दो, तीन या चार मासके अन्तरसे ऋतु—साइक्लेमेन और जेन्थक्स।

शेष मन्धिकालमें ऋतु होना—पल्सेटिला, बेलेडोना, लेकेसिस, प्लेटिना, सिकेली, सीपिया, लोरोसिस, ट्रिलियम, आस्टिलेगो, ब्रायोनिया, कोनायम, इग्नेशिया और सलफर।

अनुकल्प रजः ।

(Vicarious Menstruation)

स्त्रियोंका मासिक स्राव रुक जाने या बहुत कम परिमाण में होनेके कारण अनेक बार नाक, मुँह या मलद्वार आदिसे रक्त निकलता है । इसीको अनुकल्प ऋतु कहते हैं ।

चिकित्सा ।

हेमामेलिस १X या ३X—नाक, मुँह, मलद्वार या कहीं से भी खूनका निकलना, खून की कै, पेटका टटाना, छातीमें दर्द, खाँसी इत्यादि ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—नाक या मलद्वारसे खून निकलनेकी यह भी एक अच्छी दवा है । इससे लाभ न हो तो फेरम फस ६X ।

इपीकाक ३ या ६—चमकीले लाल रंगका खून निकलने पर या खूनकी कै होनेपर इसे देना चाहिये ।

पल्सेटिला ६ या ३०—नाक, मुँह या आँखसे खून निकलना, स्तन और पेटमें दर्द, कानसे खून निकलना, बदन का गरम मालूम होना इत्यादि ।

सिनिसिओ ३X या ६—खाँसते खाँसते रक्तस्राव, कमजोरी, चेहरेमें खूनकी कमी, साथ ही यक्ष्मा रोगके लक्षण दिखायी देना इत्यादि।

कोलिन्सोनिया ६—केवल मलद्वार से रक्तस्राव होनेपर इससे विशेष लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त, ऋतु विषयक अन्यान्य रोगों की दवाओं मेंसे भी लक्षणानुसार दवा चुनी जा सकती है। ऋतुस्राव के बदले श्वेतप्रदर दिखायी दे तो लक्षणानुसार कल्केरिया-कार्ब, फेरम, चायना, बोरेक्स, मेग्नेशिया सल्फ या फोस्फरस की व्यवस्था करनी चाहिये।

रजस्रावकी निवृत्ति।

(Menopause)

प्रायः ४५ वर्षकी अवस्था में स्त्रियोंका रजस्राव सदाके लिये बन्द हो जाता है। यह परिवर्तन कभी कभी दो चार वर्ष पहले और कभी कभी दो चार वर्ष बाद भी होता है। इस समय रजस्रावमें तरह तरहका गोलमाल दिखायी देता है और रजस्रावमें क्रमशः कमी होकर अन्तमें वह एकदम बन्द हो जाता है।

इस तरह रजस्राव बन्द होनेके समय स्राव कभी बहुत कम होता है और कभी बहुत अधिक। कभी अधिक समय के अन्तर से होता है और कभी कम समय के अन्तरसे। कभी कभी शुरू होने के बाद एकायक रुक जाता है और कुछ दिनों के बाद फिर दिखायी देता है। कभी कभी स्राव में बहुत श्लेष्मा मिला रहता है। इन बातों के अतिरिक्त इस समय शिरमें दर्द, शिरमें चक्कर, शरीर गरम मालूम होना, जननेन्द्रिय में खुजली, और कमजोरी आदि उपसर्ग भी उपस्थित होते हैं। इस समय स्त्रियों का योनिदेश सङ्कुचित हो जाता है, जरायु छोटा हो जाता है और कुछ दुर्बलता आ जाती है।

चिकित्सा।

पल्सेटिला ६ या ३०—आधे शिरमें दर्द, ऊपरको ओर देखने से शिरका चकराना, जरायु और पेटमें दर्द, पानी जैसा पतला और जलन तथा जख्म करने वाला श्वेत प्रदर, जी मिचलाना, मुँहमें बदबू, शामके वक्त उपसर्गों का बढ़ना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—अन्तिम ऋतुरोध की यह भी एक बढ़िया दवा है। जरायु से बारबार रक्तस्राव, जरायु प्रदेश में दबाव बरदाश्त न होना शिरमें भार और जलन, गरमी मालूम होना, सोने के बाद उपसर्गोंका बढ़ना, बायें डिम्बकोष में दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—कष्टदायक और जलन करने वाला श्वेत प्रदर निकलना, योनिद्वारमें जलन और जख्म, पेटमें तनाव, शिरके ऊपरी भाग में बहुत जलन और गरमी मालूम होना, चेहरा और आंखे लाल, बारबार अवसन्नता-मालूम होना इत्यादि।

कक्कुलस ३ या ६—ऋतुके बदले प्रदर स्राव होना, बहुत कमजोरी, शिरमें चक्कर, शरीर में झुनझुनी इत्यादि।

सेङ्गुनेरिया ३ या ६—मानसिक उत्तेजना, शिरके पिछले हिस्से से लेकर सामने की ओर कपाल तक दर्द, चेहरा लाल, आलस्य भाव, चलने फिरने की इच्छा न होना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—ऋतुस्राव बन्द होकर नाकसे खून निकलना, रक्ताधिक्यके कारण शिरमें दर्द, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

एमिल नाइट्रेस ३—रज निवृत्तिके समय गरमी मालूम होना, शिरमें दपदपी और भार इत्यादि लक्षणोंमें और लेकेसिससे लाभ न होनेपर इसे देना चाहिये।

सीपिया ६ या ३०—कमर के पिछले भागमें जलन के साथ दर्द, पीले रंगका पतला प्रदर स्राव, योनिद्वार में खुजली, जरायुका टल जाना, सदा उदास रहना, शिरमें दर्द, बहुत रक्तस्राव।

इग्नेशिया ६ या ३०—थोड़े परिमाणमें काले रंगका बदबूदार रक्तस्राव, शिरमें दर्द, शोक और दुःखके कारण विविध उपसर्गोंका प्रकट होना।

आवश्यक सूचना—ठंढे जलसे नहाना, शारीरिक परिश्रम करना, खुली हवामें घूमना, कठिन शैय्यामें सोना और आसानी से हजम होनेवाली चीजें खाना लाभदायक है। रातमें जागना, सरदी लगना, ऋतुके अनुकूल कपड़े न पहनना और मास मछली आदि खाना मना है।

जरायु प्रदाह।

(Metritis or Inflammation of the Uterus)

यह रोग प्राय बड़ी उम्रकी स्त्रियोंको होता है। सरदी या या चोट लगना, वेगके साथ पुरुष संग करना, मासिक स्राव का बन्द हो जाना, कष्टकर प्रसव, जरायुकी उत्तेजना, कृमि इत्यादि इस रोग के प्रधान कारण है। यह रोग होने पर

जाड़ा लगकर बुखार आना, नाड़ी पूर्ण और तेज, बहुत प्यास मिचली और कै, कभी कभी दस्त, मलत्यागके समय कांखना, जरायुका फूल जाना और उसमें दर्द होना, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना, पड़े रहने से आराम, उठ बैठने से तकलीफ, पेशावका आसानी से न उतरना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। रोग पुराना हो जाने पर योनिके पास जख्म होकर उनसे पीब निकलता है और श्वेत प्रदरका स्राव होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६—तेज बुखार, बहुत अस्थिरता, प्यास, व्याकुलता, मृत्युभय, नींद न आना, पेटमें खोंचा मारने जैसा दर्द, पेटपर हाथ रखनेसे दर्द मालूम होना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—दर्दका एकायक शुरू होना और एकायक गायब हो जाना शिरमें दपदपी, रोगी का बहुत बक-झक करना, चेहरा और आंखें लाल, पेट गरम, स्पर्श बरदाश्त न होना, करवट बदलने से भी दर्दका बढ़ जाना, पेटमें भारके कारण ऐसा मालूम होना, मानो सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, बहुत रजस्राव या रजोरोध इत्यादि।

केमोमिला १२ या ३०—बहुत चिडचिडा और क्रोधी स्वभाव, किसीके साथ भी अच्छा व्यवहार न करना, क्रोधके बाद उपसर्गोंका बढ जाना, प्रसव के बाद यह रोग होना, काले रंगका चमकीला खून निकलना, बहुत पेशाब होना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६या ३०—मोटा और थुलथुला शरीर, शिरमें ठंढा पसोना, हाथ पैर ठढे, पुरानी बीमारी, जल्दी जल्दी अधिक परिमाणमें ऋतुस्राव होना इत्यादि।

केन्थरिस ३ या ६—तलपेटमें दर्द, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वारसे सबकुछ बाहर निकल पडेगा, जरायुग्रीवा का फूल उठना, बारंबार पेशाबका वेग, परन्तु जोर लगाने पर खूनके साथ कई बूँद पेशाब होना, तलपेट में तनाव इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सदा स्थिर रहने की इच्छा, स्थिर रहने से आराम, हिलने डोलने या करवट बदलने से दर्दको बढ़ना, सुई चुभोने जैसा दर्द, मुँह और जीभ सूखी हुई, तेज प्यास, कब्जियत इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—बहुत नींद, नींदमें कभी कभी चिल्ला उठना, बहुत दुखी रहना, डिम्बकोषमें जलन और डंक मारने जैसा दर्द, मुँह सूखा हुआ किन्तु प्यास नदारद इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत भय, अस्थिरता, व्याकुलता और कमजोरी, तेज प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, बदनमें बहुत दाह, फिरभी कपड़ा ओढ़े या पहने रहने की इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

कोलोसिन्थ ३ X या ६—शूल जैसा दर्द, दबाने या सामने की ओर झुक जानेसे आराम मालूम होना।

मर्क्युरियस ६ या ३०—जीभ गीली और मोटी, उस पर दाँतके दाग पड़ना, बहुत प्यास, बहुत पसीना, परन्तु उससे कोई आराम न मालूम होना, रात में रोग लक्षणों का बढ़ना।

पल्सेटिला ६ या ३०—शान्त और दुःखी स्वभाव, दूसरों की बात आसानी से मान लेना, जरामें ही रो देना, पैर भीगने के कारण रजस्रावका बन्द हो जाना, प्रसवके बाद

स्रावका बन्द हो जाना, सदा जाड़ा मालूम होना, प्यासका न होना, स्तनोंका दूध सूख जाना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—जरायुमें बहुत तनाहट, उसके कारण बदनमें कपड़ा न रख सकना, उद्वेग, जरायुका मुख खुला हुआ, पेटमें दर्द, रजः निवृत्तिके समय यह रोग होना।

हायोसायमस ६ या ३०—जरायु प्रदाहके साथ विकार के लक्षण होने पर इसे देना चाहिये। भ्रमपूर्ण बातें बोलना, बेहोशी, बदनके कपड़े फेंक देना, मानसिक उत्तेजना और अवसन्नता इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

नक्सवोमिका ६—जरायुमें जलन और भार मालूम होना, बारबार पेशाब का वेग, मूत्रस्थली और मूत्रनाली में दर्द, जलन, स्वप्न पूर्ण निद्रा, कब्जियत, कमर में दर्द इत्यादि।

रसटक्स ३ या ६—प्रसवके बाद जरायुका प्रदाह, उसके साथ विकार के लक्षण, आधी रातके बाद बुखार, प्रातःकालके समय तकलीफ का बढ़ना, रोगके कारण छट-पटाना इत्यादि।

सेबाइना ३ या ६—बहुत रजस्राव और तलपेटमें दर्द होनेपर इससे लाभ होता है।

सिकेली ६ या ३०—ऋतु या प्रसवके बादका स्राव बन्द हो जानेके कारण यह रोग होना, मैले रंगका बदबूदार स्राव होना, बदबूदार दस्त और कै, जरायुमें भार और जलन।

सीपिया ६ या ३०—जरायुमें छुरी लगने जैसा दर्द, जरायु बहुत कड़ा मालूम होना, स्रावमें सड़न जैसी बदबू, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा इत्यादि।

आवश्यक सूचना—गर्भस्राव या प्रसव के बाद यह रोग होने पर यदि बहुत दर्द और तन्नाहट हो तो सेंक देना चाहिये। सेंकने के बाद वहां सरदी न लगने देना चाहिये। रोगिनी को सदा सुला रखना चाहिये। जननेन्द्रियको नित्य गरम पानी से धोना लाभदायक है। जरायु मुखमें जख्म हो या पीब निकलता हो तो हाइड्रेस्टिस लोशन से धुलाई करनी चाहिये। तेज बुखारके समय साबूदाना और बार्ली आदि चीजें खानेको देना चाहिये। रोग पुराना हो जाने पर दूध रोटी दी जा सकती है। बहुत प्यास होने पर थोड़ा थोड़ा कुसुम पानी पिलाना चाहिये।

जरायु की स्थान-च्युति ।

[Displacement of the Uterus]

इस रोग को नला टलना या नामी हटना भी कहते हैं। अधिक परिश्रम, भारी चीजें उठाना, बहुत देर तक उकडू होकर बैठना, मलत्याग के समय काँखना, प्रसव के बाद शीघ्र ही उठ बैठना या चलना फिरना, कब्जियत, हमेशा जुलाब लेना, अधिक सहवास, बवासीर, कै, बहुत कस कर कपड़े पहनना, उछल कूद करना, चोट लगना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर जरायु अपने स्थान से हट कर इधर उधर झुक जाता है और कभी तलपेट में ही रह जाता है, तो कभी योनिके बाहर निकल पड़ता है। साथ ही ऐसा मालूम होना मानो योनि में कोई चीज उतरी आ रही है, कमर, पीठ और जघाओं में तनाव तथा दर्द, ऐसा मालम होना मानो योनि से कुछ बाहर निकल रहा है, थकावट मालूम होना, मूर्च्छा, प्रदर और ऋतुस्राव, बारंबार पेशाब करने की इच्छा, परन्तु पेशाब का न उतरना, अजीर्ण और कब्जियत इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। जरायु-योनि के बाहर निकल आने पर अधिक कष्ट होता है और चलने फिरने या कोई चीज जोर से उठाने पर रोग लक्षणों का बढना तथा चित्त होकर सोने पर कुछ आराम इत्यादि उपसर्ग प्रकट होते हैं।

सेवाइना ३ या ६—बहुत रजस्राव और तलपेटमें दर्द होनेपर इससे लाभ होता है।

सिकेली ६ या ३०—ऋतु या प्रसवके बादका स्राव बन्द हो जानेके कारण यह रोग होना, मैले रंगका बदबूदार स्राव होना, बदबूदार दस्त और कै, जरायुमें भार और जलन।

सीपिया ६ या ३०—जरायुमें छुरी लगने जैसा दर्द, जरायु बहुत कड़ा मालूम होना, स्रावमें सडन जैसी बदबू ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा इत्यादि।

आवश्यक सूचना—गर्भस्राव या प्रसव के बाद यह रोग होने पर यदि बहुत दर्द और तन्नाहट हो तो सेंक देना चाहिये। सेंकने के बाद वहां सरदी न लगने देना चाहिये। रोगिनी को सदा सुला रखना चाहिये। जननेन्द्रियको नित्य गरम पानी से धोना लाभदायक है। जरायु मुखमें जख्म हो या पीब निकलता हो तो हाइड्रेस्टिस लोशन से धुलाई करनी चाहिये। तेज बुखारके समय सावूदाना और बार्ली आदि चीजें खानेको देना चाहिये। रोग पुराना हो जाने पर दूध रोटी दी जा सकती है। बहुत प्यास होने पर थोड़ा थोड़ा सुसुम पानी पिलाना चाहिये।



जरायु की स्थान-च्युति।

[Displacement of the Uterus]

इस रोग को नल्ला टलना या नाभी हटना भी कहते है। अधिक परिश्रम, भारी चीजें उठाना, बहुत देर तक उकडू होकर बैठना, मलत्याग के समय काँखना, प्रसव के बाद शीघ्र ही उठ बैठना या चलना फिरना, कब्जियत, हमेशा जुलाब लेना, अधिक सहवास, बवासीर, कै, बहुत कस कर कपडे पहनना, उछल कूद करना, चोट लगना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर जरायु अपने स्थान से हट कर इधर उधर झुक जाता है और कभी तलपेट में ही रह जाता है, तो कभी योनिके बाहर निकल पड़ता है। साथ ही ऐसा मालूम होना मानो योनि में कोई चीज उतरी आ रही है, कमर, पीठ और जवाओं में तनाव तथा दर्द, ऐसा मालूम होना मानो योनि से कुछ बाहर निकल रहा है, थकावट मालूम होना, मूर्च्छा, प्रदर और ऋतुस्राव, बारंबार पेशाब करने की इच्छा, परन्तु पेशाब का न उतरना, अजीर्ण और कब्जियत इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। जरायु-योनि के बाहर निकल आने पर अधिक कष्ट होता है और चलने फिरने या कोई चीज जोर से उठाने पर रोग लक्षणों का बढना तथा चित्त होकर सोने पर कुछ आराम इत्यादि उपसर्ग प्रकट होते हैं।

सेबाइना ३ या ६—बहुत रजस्राव और तलपेटमें दर्द होनेपर इससे लाभ होता है।

सिकेली ६ या ३०—ऋतु या प्रसवके बादका स्राव बन्द हो जानेके कारण यह रोग होना, मैले रंगका बदबूदार स्राव होना, बदबूदार दस्त और कै, जरायुमें भार और जलन।

सीपिया ६ या ३०—जरायुमें छुरी लगने जैसा दर्द, जरायु बहुत कड़ा मालूम होना, स्रावमें सड़न जैसी बदबू ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा इत्यादि।

आवश्यक सूचना—गर्भस्राव या प्रसव के बाद यह रोग होने पर यदि बहुत दर्द और तन्नाहट हो तो सेंक देना चाहिये। सेंकने के बाद वहां सरदी न लगने देना चाहिये। रोगिनी को सदा सुला रखना चाहिये। जननेन्द्रियको नित्य गरम पानी से धोना लाभदायक है। जरायु मुखमें जख्म हो या पीब निकलता हो तो हाइड्रेस्टिस लोशन से धुलाई करनी चाहिये। तेज बुखारके समय साबूदाना और बार्ली आदि चीजें खानेको देना चाहिये। रोग पुराना हो जाने पर दूध रोटी दी जा सकती है। बहुत प्यास होने पर थोड़ा थोड़ा कुसुम पानी पिलाना चाहिये।

जरायु की स्थान-च्युति।

[Displacement of the Uterus]

इस रोग को नल्ला टलना या नाभी हटना भी कहते हैं। अधिक परिश्रम, भारी चीजें उठाना, बहुत देर तक उकड होकर बैठना, मलत्याग के समय काँखना, प्रसव के बाद शीघ्र ही उठ बैठना या चलना फिरना, कब्जियत, हमेशा जुलाब लेना, अधिक सहवास, बवासीर, कै, बहुत कस कर कपडे पहनना, उछल कूद करना, चोट लगना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर जरायु अपने स्थान से हट कर इधर उधर झुक जाता है और कभी तलपेट में ही रह जाता है, तो कभी योनिके बाहर निकल पड़ता है। साथ ही ऐसा मालूम होना मानो योनि में कोई चीज उतरी आ रही है, कमर, पीठ और जघाओं में तनाव तथा दर्द, ऐसा मालूम होना मानो योनि से कुछ बाहर निकल रहा है, थकावट मालूम होना, मूर्च्छा, प्रदर और ऋतुस्राव, बारंबार पेशाब करने की इच्छा, परन्तु पेशाब का न उतरना, अजीर्ण और कब्जियत इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। जरायु-योनि के बाहर निकल आने पर अधिक कष्ट होता है और चलने फिरने या कोई चीज जोर से उठाने पर रोग लक्षणों का बढना तथा चित्त होकर सोने पर कुछ आराम इत्यादि उपसर्ग प्रकट होते हैं।

फोनायम ३ या ६—जरायु का टल जाना और उसका मुख कड़ा हो जाना, ऋतुस्राव के पहले स्तन में दर्द और कड़ापन, शिर में चक्कर इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—जरायु में दर्द और सूजन, अन्तिम ऋतुरोध के समय यह रोग होना, पट्ठे मे दर्द और फूलन, सोने के बाद रोग लक्षणों का बढ़ जाना।

सल्फर ३ या ६—योनिद्वार में जलन, उसके कारण छटपटाना, बारम्बार अवलम्बता, चाँद में जलन और गरमी मालुम होना, पैरों में जलन इत्यादि।

लिलियम ६ या ३०—गर्भस्राव या प्रसव के बाद यह रोग होना, प्रसव वेदना जैसी वेदना, स्तनों में दर्द, योनिद्वार को हाथ से दबा रखने पर आराम मालुम होना।

एलेटिस ३ या ६—नसों की कमजोरी के कारण जरायु का टल जाना, जरायु की कमजोरी के कारण वन्ध्यत्व, कमजोरी, कब्जियत और अजीर्णता।

रसटक्स ६ या ३०—अधिक परिश्रम करने या कोई भारी चीज उठाने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सिकेली ६ या ३०—पेशाब के बाद जरायु का नीचे उतरना, दुबली पतली स्त्रियों को यह रोग होना, जरायु में जख्म, बदबूदार स्त्राव, श्वेत प्रदर इत्यादि।

हाइड्रैस्टिस ३ या ६—जरायु-मुख का लटक पड़ना, जरायु-मुख तथा योनिद्वार में जख्म, पीले रंग का चिकना चिकना प्रदरस्त्राव, योनि में खुजली, सहवास की प्रबल इच्छा।

हेलोनियस ३ या ६—जोरों का दर्द, जरायु-मुख का लटक पड़ना, दबाने से दर्द का बढ़ना, योनि के ऊपरी भाग में कनकनी, जख्म करनेवाला बदबूदार प्रदर स्त्राव इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ३ या ६—कमर के पिछले भाग में दर्द, ऐसा मालूम होना मानो जरायु बाहर निकल पड़ेगा, योनि से श्लेष्मा जैसा पदार्थ निकलना, स्तन कड़े और फूले हुए, पारे या गरमी का दोष इत्यादि।

इनके अतिरिक्त कल्केरिया फस, सिमिसिफिउगा, फेरम आयोड, कस्टिकम, स्टेनम, थूजा, म्युरेक्स, जेल्सीमियम,

नेट्रम म्यूर और आस्टिलेगो आदि दवाओं से भी लक्षणानुसा
लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोगिनी को सदा चित खुला रखन
चाहिये। नीचे ऊपर चढ़ना उतरना या चलना फिरना ठी
नहीं। होमियोपैथिक दवाओं के व्यवहार से जरायु अपने आ
ठीक हो जाता है। न हो तो किसी चिकित्सक द्वारा ठीव
कराकर पेसारी व्यवहार करना चाहिये।

जरायु में स्नायु शूल।

(Hysteralgia)

यह रोग होने पर जरायु में दर्द, समूचे शरीर में टपक जैसा दर्द, भूख न लगना, बेचैनी, अनिद्रा, पाकाशय में गोलमाल, हिलने डोलने पर और ऋतुस्राव के समय दर्द का बढ़ना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

आर्निका ६—प्रसव के बाद चलने फिरने या ऋतु के समय अधिक परिश्रम करने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सिमिसिफिउगा ३X या ६—तलपेट में बहुत दर्द, साथ ही अनियमित और स्वल्प ऋतु इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—तलपेट में दर्द, दबाने से दर्द का बढ़ना, हाथ न लगा सकना इत्यादि।

केमोमिला १२ या ३०—प्रसव जैसा दर्द, तलपेट में हाथ न लगा सकना, अस्थिरता इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—आधे कपाल में दर्द, तलपेट में खींचन जैसा दर्द मालूम होना मानो ऋतु होगा, जरायु-ग्रीवा में दर्द, जी मिचलाना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—पाकाशय में गोलमाल, जरायु-मुख का फूल उठना, कमर में दर्द, तलपेट में दाब पड़ना इत्यादि।

जरायु में वायु-सञ्चय ।

(Physometra)

प्रदाह आदि कारणों से जरायु में वायु सञ्चित होता है। इसके कारण जरायु फूल उठता है, फलतः पेट वड़ा मालुम होता है। किसी तरह जरायु पर दवाव पड़ने से यह वायु आवाज के साथ वाहर निकलता है।

चिकित्सा ।

ब्रोमाइन ३ या ६—योनिद्वार से जोर और आवाज के साथ वायु का निकलना, रात और विश्राम के समय रोग का वढ़ना, चलने फिरने से आराम मालुम होना इत्यादि।

वेलेडोना ६ या ३०—प्रसव के वाद रक्तस्राव वन्द हो जाने के कारण या प्रदाह हो जाने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम ३०—योनिद्वार में शुष्कता, योनि से आवाज के साथ वायु का निकलना, संगम के समय तकलीफ इत्यादि।

चिकित्सा।

फ्ल्केरिया कार्ब ६ या ३०—यह इस रोग की एक अच्छी दवा है।

कार्बोवेज ६ या ३०—जरायु में रक्त सञ्चय, साथ ही जननेन्द्रिय का बढ़ जाना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—जरायु में रक्तसञ्चय, ऐसा मालूम होना, मानो जरायु में गरम खून भरा हुआ है इत्यादि।

जरायु में जल-सञ्चय।

(Hydrometra)

जिस कारण से और जिस तरह जरायुमें रक्तसञ्चय होता है, उसी तरह उसमें जल सञ्चय भी होता है। इसमें निम्नलिखित दवाओं से लाभ होता है—

चिकित्सा।

सीपिया ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है। जरायु में जल सञ्चय, रक्त हीनता, दुबलापन इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एपिस ६—जरायु फूला हुआ और उसमे जल सञ्चय, तलपेट में तनाव और दर्द।

लेकेसिस ६ या ३०—जरायु फूला हुआ, स्पर्श बरदाश्त न होना इत्यादि।

जरायु में अर्बुद।

(Uterine Tumour)

यह रोग होने पर जरायु के भीतरी या बाहरी भाग में भिन्न भिन्न आकार की बतौड़ियाँ उत्पन्न होती हैं। इनका आकार उड़द या मटर से लेकर आधमन तक और इनकी संख्या एक से लेकर पचास तक हो सकती है। कभी कभी इनसे पीब या खून निकलता है और कभी कभी नहीं भी निकलता। कभी कभी इस रोग के साथ श्वेत प्रदर मोजूद रहता है। रोग बढ़ने पर रक्त स्वल्पता या बन्ध्यत्व की बीमारी हो जाती है।

चिकित्सा ।

कल्केरिया आयोड ३X विचूर्ण—यह सब तरह के अर्बुद की बढ़िया दवा है। एक एक ग्रेन दिन में चार बार सेवन करना चाहिये।

नाइट्रिक एसिड ६—मसे जैसे अर्बुद, रक्तस्राव, जरायु-ग्रीवा का फूल उठना, पीले रंग का प्रदर स्राव, योनि में जलन और खुजली ।

ग्रेफाइटिस ६—जरायु में कोबी के फूल जैसी आकृति के अर्बुद, जरायु, योनि और पीठ में प्रसव जैसा दर्द।

थूजा ३०—फूल कोबी जैसे अर्बुद, संगम के समय स्पर्श बरदाश्त न [illegible] के समय र[illegible] [illegible]।

क्रेसपी २x—ऋतु के पहले और पीछे काले रंग का बदबूदार बहुत स्राव हो तो इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—योग्य चिकित्सक द्वारा अर्बुद कटवा कर उस स्थान को नाइट्रिक एसिड से जलवा देना चाहिये।

जरायु में कैन्सर।

(Uterine Cancer)

जरायुके दूषित या विषाक्त जख्म को कैन्सर कहते हैं। पुनः पुन प्रसव या गर्भस्राव, बहुत संगम या कृत्रिम मैथुन, ऋतुस्राव में गोलमाल, प्रदर स्राव और गरमी इत्यादि इस रोग के उद्दीपक कारण माने जाते है। यह रोग होने पर बहुत ही बदबूदार पानो जैसा प्रदर स्राव होता है। साथ ही जरायु ग्रीवा में सूजन और कठिनता, हाथ लगाने से दर्द मालूम होना, जलन, बहुत रक्त स्राव, तरह तरह की वेदना, कमर और पट्ठे में अधिक दर्द, जरायु का बढ जाना और उससे खून तथा पीब निकलना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते है। ज्यों ज्यों जख्म बढ़ता जाता है, त्यों त्यों स्राव की बदबू भी बढती जाती है। अन्त में क्षय, शोथ या उदरामय आदि उपसर्ग प्रकट होकर रोगिणी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

आर्सेनिक आयोड ६ या ३०—कैन्सर की प्रथमावस्था में वहुत जलन और कठिनता के लक्षण में इसे देना चाहिये।

थूजा ३०—कैन्सर की द्वितीयावस्था में और आर्सेनिक आयोड से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—कैन्सर में वहुत जलन जोरों का दर्द, अस्थिरता, अवसन्नता, मैले या काले रंग का वदवूदार गाढा या पतला स्राव।

क्रियोजोट ६ या ३०—योनिमें सूजन और जलन, खुजली, छुरी लगने जैसा दर्द, वदवूदार स्राव, रात के समय दर्द का वढ़ना, फूल कोवी की आकृति जैसे कैन्सर।

ग्रेफाइटिस ३०—वतौढ़ी का कैन्सर में परिणत हो जाना, जरायु-ग्रीवा में सूजन और कठिनता, जलन, सुई चुभने जैसा दर्द, वदवूदार स्राव इत्यादि।

कोनायम ६ या ३०—जरायु-ग्रीवा की कठिनता, असह्य ज्वालाकर और सुई चुभोने जैसा दर्द, ऋतु स्राव के समय स्तन का फूल उठना और टटाना, मिचली और कै।

आयोडियम ६—तलपेटमें कतरने जैसा दर्द, जख्म करने वाला प्रदर स्राव, जरायुका फूलना और कठिन हो जाना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—वयोसन्धिकाल मे कैन्सर होने पर इससे लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त कार्बोएनी, कल्केरिया कार्ब, कंडू राङ्गा, अरम, साइलोसिया, सेनाइना, सोपिया, नाइट्रिक एसिड, म्युरेक्स और सल्फर आदि दवाओं मे भो लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—बदबू दूर करनेके लिये गरम पानी या हाइड्रेस्टिस लोशन से धुलाई करनो चाहिये। बहुत रक्त-स्राव हो तो हेमामेलिस मदरटिंचर व्यवहार करना चाहिये। मास मछली और सभी तरह के उत्तेजक पदार्थों का त्याग करना चाहिये।

डिम्बकोष का प्रदाह।

(Ovaritis)

ठढ या सरदी लगना, ऋतुकालमें स्वामी सहवास, पैरके पजोंका पानीमें भीगना, किसी तरहकी चोट लगना, हस्त मैथुन करना इत्यादि कारणों से डिम्बकोष का प्रदाह होता है यह रोग होने पर पट्टे के कुछ ऊपर थोड़ा थोड़ा दर्द, जलन डिम्बकोषका फूल उठना, हिलने डोलने या हाथ लगाने से दर्द मालूम होना, बुखार, मिचली, कै, कभी कभी आक्षेप स्वामी सहवास की इच्छा तथा अन्यान्य स्नायविक लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x या ६–ठढी हवा या सरदी लगने अथवा डर जानेके कारण यह रोग होना, ऋतुके समय सरदी लगने के कारण मासिक स्रावका बन्द हो जाना इत्यादि लक्षणों में और रोगकी प्रथमावस्था में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—अकडन या टनक जैसा दर्द, डिम्बकोषमें जलन, बहुत अस्थिरता जाघतक दर्दका फैल जाना, हिलने डोलने या पेटके बल लेटने पर दर्दका बढ़ना, पतला, फीका और बदबूदार ऋतुस्राव, चेहरा पीला, शरीर दुबला पतला, बहुत प्यास, किन्तु एक साथ अधिक पानी न पीना।

बेलेडोना ६ या ३०—दाहिना अण्डकोष फूला हुआ और कठिन, उसमें दपदपी जैसा दर्द, पेटमें दबाने जैसा दर्द, स्पर्श बरदाश्त न होना, शरीरमें जराभी धक्का लगने से कष्ट मालुम होना इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—दाहिने डिम्बकोष का प्रदाह, जलन के साथ डंक मारने जैसा दर्द, थोड़ा पेशाब, कब्जियत, खासते समय छाती में बायीं और दर्द।

कोनायम ६ या ३०—डिम्बकोष कठिन और फूला हुआ, जो मिचलाना और के, कतरने जैसा दर्द, दोनो स्तन ढीले और सिकुड़े हुए, किसी ओर शिर घुमाते ही चक्कर आ जाना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—लम्बी सॉस लेने या करवट लेकर लेटने से डिम्बकोषमें सुई चुभोने जैसा दर्द, मासिक-स्राव बन्द हो जाने के कारण नाक से रक्तस्राव होना इत्यादि।

केन्थरिस ६ या ३०—डिम्बकोष में बहुत जलन बार-बार पेशाबका वेग होना, परन्तु कष्टके साथ खून मिला बूंद बूंद पेशाब होना, पेशाब में बहुत जलन इत्यादि।

हेमामेलिस ३ या ६—चोट लगनेके कारण डिम्बकोप का प्रदाह, समूचे पेटमें फोड़े जैसा दर्द, शिराओं में अधिक रक्तसञ्चार इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—सरदी लगनेके कारण ऋतुक रुक जाना, बहुत दर्द, दर्दके कारण रोगिणी का छट पटाना, रोना और चिल्लाना, सदा ठंढ लगने की शिकायत करते रहना।

लेकेसिस ६ या ३०—बायें डिम्बकोप में प्रदाह और सूजन, कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द, सोनेके बाद उपसर्गोंका बढ़ना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३X—यह भी एक अच्छी दवा है। डिम्बकोप में बहुत दर्द, दर्द के कारण रोगी का अस्थिर हो पड़ना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

प्लाटिना ६ या ३०—सगमकी प्रबल इच्छा, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से ढेले जैसी कोई चीज बाहर निकल पड़ेगी, ऋतुस्रावका अधिक होना या बन्द हो जाना इत्यादि।

हिपरसल्फर ६ या ३०—दपदपी जैसा दर्द और ठढ लगना, पीव पड जानेके लक्षण इत्यादि।

इनके अतिरिक्त मर्क्युरियस कर, कोलोसिन्थ, फेरम-फस, चायना, एसिड फस, अरममेट, थूजा आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—बहुत दर्द हो तो सेंक करना चाहिये। सरदी से बचना चाहिये। विश्राम और हलका पथ्य लाभदायक है। स्वामी सहवास एकदम मना है।

डिम्बकोषका स्नायुशूल।

(Ovaralgia)

कभी कभी डिम्बकोषमें स्नायविक वेदना आरम्भ होकर चारों ओर फैल जाती है। कै, पेटका फूलना, कलेजे का धडकना, पेशाव कम होना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६—डिम्बकोषका फूल उठना, उसमें जलन और दपदपी, दर्दका एकायक शरू होना और एकायक गायब हो जाना।

एमन म्यूर ३—बायीं ओर मोच जैसा दर्द, पेट फूलना, कब्जियत, स्पर्श बरदाश्त न होना, प्रदर स्राव इत्यादि।

एट्रोपिया ३X—यह एक अच्छी दवा है। रोगके समय इसे, और विश्राम के समय जिङ्कम वेलेरियाना ३X विचूर्ण देने से आश्चर्यजनक लाभ होता है।

स्टेफीसेग्रिया ६—डिम्बाशय प्रदेशमें चिलक जैसा दर्द, दबाव बरदाश्त न होना।

केन्थरिस ६—बायीं ओर दर्द, दर्दके कारण आगेकी ओर झुक जाना इत्यादि।

मेग्नेशिया फस ३X या ६X—गरम पानी के साथ इसे सेवन करने से दर्द शीघ्र घट जाता है।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—वात रोगके साथ यह राग होना, वन्ध्यत्व, जरायु में दर्द इत्यादि।

लिलियम ६ या ३०—डिम्बकोष के दोनों ओर खूब कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द हो तो इसे देना चाहिये।

डिम्बकोषमें शोथ।

(Ovarian Dropsy)

सरदी या ठढ लगना, प्रसव के समय चोट लगना ऋतु-लोप इत्यादि इस रोगके उत्तेजक कारण माने जाते है। यह रोग होने पर एक या दोनों डिम्बकोषों में जल या जलवत् पीव संचित होता है और इसके कारण वे फूलकर बड़े हो जाते है। साथ ही बुखार, पेटमे दर्द और भार मालूम होना, गर्भावस्थाकी तरह पेटका बढ जाना, श्वासकष्ट, कै, स्तनमें दूध भर आना, भूख न लगना, दुबलापन, शरीर के भिन्न भिन्न स्थानोंमें शोथ इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। यह रोग अनेक बार सांघातिक हो पड़ता है।

चिकित्सा।

एपिस ६ या ३०—पीडित स्थान में डंक मारने जैसा दर्द, थोड़ा पेशाव, कब्जियत, प्यासका न होना, चेहरा फीका, आँखके निचले पपटे में शोथ, दाहिने -डिम्बकोषका आक्रान्त होना

केन्थरिस ६ या ३०—डिम्बकोषका शोथ, बारबार पेशाबका वेग मालूम होना, परन्तु खून मिला बूँद बूँद पेशाब होना इत्यादि।

कल्केरिया कार्व ६ या ३०—पेट फूला हुआ और कठिन, जल्दी-जल्दी, बहुत अधिक परिमाणमें बहुदिनस्थायी ऋतुस्राव होना।

लिलियम टिग ६ या ३०—डिम्बकोष की बीमारी के कारण कलेजे में धड़कन, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, बायाँ डिम्बकोष फूला हुआ और उसमें दर्द, पेशाब में तकलीफ इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—जलन, अस्थिरता, व्याकुलता, निस्तेजता, बहुत प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, समूचे शरीरमें शोथ इत्यादि।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—दाहिने, डिम्बकोष में टनक जैसा दर्द, बैठी हुई हालत से खड़े होने पर दर्द का बढ़ना, पेशाबमें बालू जैसी लाल तली जमना, जलोदर, निम्नाङ्ग की नसें फूली हुई इत्यादि।

आयोडियम ३-दाहिने डिम्बाशयमें कॉटी गडने जैसा दर्द, जरायु तक उस दर्दका फल जाना, जख्म करने वाला प्रदर स्राव, ऐसा मालूम होना मानो योनिमार्गसे सबकुछ बाहर निकल पडेगा, स्तनों का सूख जाना इत्यादि ।

केलीब्रोम ६-डिम्बाशयमे शोथके साथ रक्तस्राव, कामातुरता, अस्थिरता, निद्राहीनता, कमजोरी इत्यादि ।

प्लेटिना ३०-पुरानी बीमारी,कष्टरजः, स्पर्श बरदाश्त न होना, तनाहट, अनियमित ऋतु इत्यादि ।

आवश्यक सूचना-स्वामी सहवास और उत्तेजक पदार्थों का सेवन एकदम मना है । हलकी चीजें खानेको देना चाहिये ।

डिम्बाशय में अर्बुद ।

[Ovarian Tumour]

जिस तरह जरायुमें अर्बुद या चतोडी होती है, उसी तरह डिम्बाशय में भी होती है । यह रोग होने पर पेट का

फूल कर बड़ा हो जाना, उसके साथ बुखार, प्रदर स्राव आ डिम्बाशय में अनेक प्रकार के कष्टकर उपसर्ग उपस्थित हो हैं। रोग बढ़ जाने पर रोगिणी कमजोर हो जाती है और अ में उसकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एपिस ३ या ६—दाहिने डिम्बाशय का आक्रान्त होना, फूलन, तन्नाहट, छिल जाने जैसा दर्द, स्पर्श बरदाश्त न होना।

लेकेसिस ३०—बायें डिम्बाशय की बीमारी, स्पर्श बरदाश्त न होना, दर्द, बदबूदार स्राव इत्यादि।

थूजा ३०—फूल कोबी जैसे अर्बुद, गरमी या सूजाक का दोष, सङ्गम के समय दर्द होना इत्यादि।

आयोडियम ६—दोनों डिम्बाशय में अर्बुद, पुरानी बीमारी, ज्वालाकर पीले रङ्ग का प्रदर स्राव इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—रोग ऐसा मालूम होना मानो पेट से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, साथ ही दर्द होना।

इनके अतिरिक्त केलीब्रोम, सिकेली, कोलोसिन्थ, आरम म्यूरनेट इत्यादि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है

डिम्बकोष में कैन्सर होने पर आर्सेनिक, क्रियोजोट या लेकेसिस व्यवहार करना चाहिये। डिम्बकोष की स्थानच्युति में व्युफा और कोनायम से लाभ होता है। दाहिने डिम्बकोष का बीमारी में बेलेडोना, कलकेरिया कार्ब, सीपिया, लाइको और एपिस तथा बायें डिम्बकोष की बीमारी में लेकेसिस, लिलियम टिग, केलीकार्ब तथा स्ट्रेमोनियम से विशेष लाभ होता है।

योनि-प्रदाह।

(Veginitis)

सूजाक का स्राव लगना, प्रसव के समय चोट लगना, अधिक सहम, बलात्कार, ऋतुस्राव के समय ठण्ढ या सरदी लगना बारम्बार प्रसव या गर्भस्राव, सफाई न रखना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर योनिद्वार या योनिदेश में लाली, सूजन, गरमी, दर्द, पीब निकलना, खुजली, पेशाब में तकलीफ इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। रोगाक्रमण के समय जाड़ा लग कर बुखार भी आता है और रोग के अन्त में योनि द्वार से श्लेष्मा और पीब मिला स्राव निकलता है।

फूल कर वडा हो जाना, उसके साथ ५
डिम्वाशय में अनेक प्रकार के कष्टकर
है। रोग वढ़ जाने पर रोगिणी कमजोर हो
में उसकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एपिस ३ या ६—दाहिने डिम्वाशय
हाना, फूलन, तन्नाहट, छिल जाने जैसा दर्द, ८५
न होना।

लेकेसिस ३०—वायें डिम्वाशय की वीमार
वरदाश्त न होना, दर्द, वदवूदार स्राव इत्यादि।

थूजा ३०—फूल कोवी जैसे अर्वुद, गरमी या सू
का दोष, सङ्गम के समय दर्द होना इत्यादि।

आयोडियम ६—दोनों डिम्वाशय में अर्वुद, पुरानी
वीमारी, ज्वालाकर पीले रङ्ग का प्रदर स्राव इत्यादि।

वेलेडोना ६ या ३०—रोग वेसा मालूम होना मानो पेट
से सव कुछ वाहर निकल पडेगा, साथ ही दर्द होना।

इनके अतिरिक्त केलीब्रोम, सिकेली, कोलोसिन्थ, आरम म्यूर नेट इत्यादि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है

डिम्बकोष में कैन्सर होने पर आर्सेनिक, क्रियोजोट या लेकेसिस व्यवहार करना चाहिये। डिम्बकोष की स्थानच्युति में व्युफा और कोनायम से लाभ होता है। दाहिने डिम्बकोष का बीमारी में बेलेडोना, कल्केरिया कार्ब, सीपिया, लाइको और एपिस तथा बायें डिम्बकोष की बीमारी में लेकेसिस, लिलियम टिग, केलीकार्ब तथा स्ट्रेमोनियम से विशेष लाभ होता है।

योनि-प्रदाह।

(Vegmitis)

सूजाक का स्राव लगना, प्रसव के समय चोट लगना, अधिक सङ्गम, बलात्कार, ऋतुस्राव के समय ठण्ढ या सरदी लगना बारम्बार प्रसव या गर्भस्राव, सफाई न रखना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर योनिद्वार या योनिदेश में लाली, सूजन, गरमी, दर्द, पीव निकलना, खुजली, पेशाब में तकलीफ इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। रोगाक्रमण के समय जाडा लग कर बुखार भी आता है और रोग के अन्त में योनि द्वार से श्लेष्मा और पीव मिला स्राव निकलता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६—योनि प्रदाह के साथ ज्वरभाव, अस्थिरता, प्यास, शिर में चक्कर, नींद न आना इत्यादि।

अर्निका ३ या ६—अधिक स्वामी सहवास, या किसी तरह की चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ३ या ६—स्वामी सहवास की प्रबल इच्छा, योनिद्वार सूखा हुआ, पेशाब में तकलीफ इत्यादि।

सीपिया ६ या ३०—योनि द्वार सूखा हुआ और उसमें दर्द, गँदला पेशाब और उसमें लाल तली जमना, सूजाक के दाष से यह रोग होना।

बेलेडोना ३ या ६—योनिप्रदाह, टपक जैसा दर्द, ऐसा मालूम होना मानो भीतर से कुछ बाहर निकल रहा है, अनजान में पेशाब, शिर में दर्द, प्यास इत्यादि।

मर्क्युरियस ३ या ६—नयी या पुरानी दोनों तरह की बीमारी में इससे काफी लाभ होता है।

पल्सेटिला ३ या ६—योनिप्रदाह, साथ ही दूध की मलाई जैसा गाढ़ा श्वेत प्रदर, सरदी लगने के कारण थोड़ा थोड़ा ऋतुस्राव इत्यादि।

बोरेक्स २X विचूर्ण—बहुत अधिक पीव निकलने पर इसे देना चाहिये।

नाइट्रिक एसिड ६—पीव, जलन, जख्म, फुन्सियाँ इत्यादि लक्षणों में और गरमी या पारे का दोष होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त ब्रायोनिया, चायना, क्रियोजोट, कोनायम, आयोडियम, प्लेटिनम, हायोसायमस, सेगाइना, सल्फर, इग्नेशिया और कल्केरिया कार्ब आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोगिनी को सुला रखना चाहिये और बीच बीच में गरम पानी का सेंक देना चाहिये। बुखार होने पर साबूदाना और बार्ली आदि हलकी चीजें खाने को देना चाहिये।

योनि-भ्रंश ।

(Prolapsus Vaginæ)

जरायु का स्थान-च्युति के साथ कभी कभी योनि भी अपने स्थान से विचलित होकर वाहर निकल पडती है। योनि की शिथिलता के कारण भी यह रोग हो सकता है। यह रोग होने पर तलपेट और योनिदेश मे भार मालूम होना, योनि-देश में फूलन, पेशाब करने और चलने में तकलीफ, प्रदरस्राव इत्यादि लक्षण प्रकट होते है।

चिकित्सा ।

स्टेनम६—यह इस रोग की एक अच्छी दवा है। मल-त्याग के समय योनि का वाहर निकल पड़ना, ऋतु के समय योनि में दर्द इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये।

क्रियोजोट ६—स्टेनम से लाभ न होने पर इसे आज-माना चाहिये। योनि के भीतर जलन करनेवाला दर्द, योनि-देश का फूल उठना, वदवूदार स्राव इत्यादि।

आर्निका ३x या ६—चोट लगने, अधिक सहवास करने या वारम्बार प्रसव होने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सीपिया ३०—जलन के साथ कतरने जैसा दर्द, मल-द्वार में भार मालूम होना, ऐसा मालूम होना मानो, पेट की सब चीजें बाहर निकल पडेंगी, इस कारण से पैर को पैर से दबा रखना इत्यादि।

बेलेडोना ६—योनि भ्रंश, लेटने और सीधे होकर बैठने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त मर्क्युरियस, लेकेसिस, सल्फर और एपिस आदि दवाएं भी लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—दस पन्द्रह मिनट तक ठण्डे पानी के टब में बैठने से अनेक बार योनि अपने आप भीतर घुस जाती है। योनि बाहर निकलने पर उसे दबा कर भीतर कर देना चाहिये और ठेस देकर अर्धशायित अवस्था में सोना चाहिये। इससे कुछ दिनों में रोग आराम हो जाता है।

योनि में खुजली।

(Pruritis Vulvæ)

जरायु की कोई बीमारी, गर्भावस्था अथवा योनि में काँटे जैसे केश निकलने के कारण यह रोग होता है। यह रोग होने पर खुजली की तरह छोटे-छोटे दाने निकलते हैं और उनमें बहुत खुजली होती है।

चिकित्सा।

सल्फर ३०—योनिदेश में फुन्सियाँ, उनमें जलन के साथ असह्य खुजली, गरम मालूम होना, बवासीर इत्यादि।

डलिकस ६—रात के समय बेहद खुजली होने पर इसे देना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ६—खुजली के साथ चिलक मारने जैसा दर्द, जाँघ में छोटी छोटी फुन्सियाँ, उनसे चिकना-चिकना रस निकलना।

सीपिया ३०—असह्य खुजली, योनि का भीतरी भाग फूला हुआ इत्यादि।

आर्सेनिक ३०—जलभरी फुन्सियाँ, ज्वालाकर खजली, रात के समय खुजली का बढ़ना, गरमी में आराम मालूम होना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६—खुजलाने से जलन और दर्द, जख्म, हरे रंग का प्रदर स्राव इत्यादि।

इनके अतिरिक्त केलाडियम, नाइट्रिक एसिड, लाइको-पोडियम, कार्बोवेज, नेट्रम म्यूर, नक्सवोमिका और पेट्रोलियम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—मर्क्युरियस कर, हाइड्रेस्टिस या केलेण्डुला का लोशन तैयार कर उससे दिन में दो तीन बार योनिको धोना चाहिये और यही दवाए मीठे तेल या ग्लीसरिन में मिला कर लगाना चाहिये। यदि योनि में काँटे जैसे केश हों, तो उन्हें नष्ट करने के बादही औषधोपचार करना चाहिये।

योनि का आक्षेप।

[Vaginismus]

योनिद्वार का सङ्कोचन, जरायु प्रदाह, योनि प्रदाह, योनिद्वार का बहुत तंग होना, योनि के पर्दे में अनुभव शक्ति की अधिकता इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। इसके

कारण योनिमें किसी चीज का स्पर्श होते ही उसकी पेशियाँ सिकुड जाती है, फलत योनिद्वार बहुत तग हो जाता है और वहाँ बहुत दर्द होने लगता है। इस रोग के कारण सगम के समय पुरुषेन्द्रिय योनिमें प्रवेश नहीं कर सकती अथवा सग के समय स्त्रियो को इतना कष्ट होता है कि वे बेहोश तक हो जाती हैं। इस रोग के कारण स्त्रियाँ पति के पास जाते डरती हैं और अनेक बार उनमें सदा के लिये अनबन हो जाती है।

चिकित्सा।

नक्सवोमिका, बेलेडोना, साइलीसिया और इग्नेशिया इस रोग की प्रधान दवा हैं। प्रसव या संग के समय चोट लगने के कारण यह रोग हो तो आर्निका। आलस्यमय जीवन बिताने के कारण रोग होने पर नक्सवोमिका। बहुत सङ्गमेच्छा होने पर भी स्पर्श बरदाश्त न हो तो प्लेटिनम। योनिमें बहुत उत्तेजना, निरन्तर दर्द और आक्षेप आदि लक्षणों में कौलोफाइलम। भयंकर वेदना और दोनों पैरों में खींचन होने पर सिमिसिफ्यिउगा। गरम पानी के टबमें कमर तक का भाग डुबो रखने या योनिमें गरम पानी की पिचकारी देने से लाभ होता है। रोग जब तक पूर्ण रूप से आराम न हो जाए तब तक स्वामी सहवास बन्द रखना चाहिये।

अवरुद्ध योनि ।

[Imperforate Hymen]

योनिके भीतरी भागमें एक चन्द्राकार पर्दा रहता है। इसे कुमारीहच्छद कहते है। साधारणत पुरुष का संगो पर यह पर्दा फट जाता है परन्तु कभी कभी यह पर्दा बहुत कड़ा होनेके कारण अथवा योनिद्वार भीतरसे अवरुद्ध होनेके कारण पुरुषेन्द्रिय भीतर प्रवेश नहीं कर पाती । इस शिकायत में औषधियों का सेवन कोई लाभ नहीं करता । उँगली या पुरुषेन्द्रिय के प्रवेश से कोई लाभ न हो, तो चिकित्सक द्वारा चिरा लगवा देना चाहिये । यही इसका सर्वोत्तम उपाय है ।

योनिके अन्यान्य रोग।

योनिमें अर्बुद या बतोड़ी होने पर कार्बोएनी, कार्बोवेज, आर्सेनिक और क्रियोजोट। योनिसे वायु निकलने पर ब्रोमियम ।योनिमें सड़न होनेपर आर्सेनिक,बेलेडोना और लेकेसिस। योनी कड़ी होने पर वेलेडोना, कोनायम। संगम के समय बहुत कष्ट होनेपर स्टेफीसाइग्रिया। योनिमें स्पर्शाधिक्य होने पर प्ल्यूमेन।

स्तनमें फोड़ा ।

(Mammary Abscess)

स्तनमें चोट लगने या दूध जम जाने के कारण फोडा हो जाता है। यह बहुत ही कष्टदायक रोग है। अनेक बार यह आसानीसे आराम न होने पर इसीसे नासूर हो जाता है।

चिकित्सा ।

बेलेडोना ३X या६—स्तन कड़े, लाल, फूले और दर्द भरे होने पर या फोडा होनेका लक्षण दिखायी देने पर सर्व-प्रथम इसे ही देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६—स्तनमें बहुत कड़ापन और बहुत दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

फाइटोलेका१X या ३X—यह इस रोगकी एक बढ़िया दवा है। ब्रायोनिया से दो दिन में लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

हिपरसल्फर ६ या २००—इसका निम्नक्रम देनेसे फोडा पककर फूटता है और उच्चक्रम देनेसे बैठने योग्य होता है तो बैठ जाता है।

साइलीसिया ३० या २००—फोड़ा फूट जाने के बाद इसे देनेसे जख्म जल्दी सूख जाता है। नासूर हो जाने पर भी इसे ही देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—फोड़ा पकने लगे तो तीसी की पुल्टिस चढ़ाकर जल्दी पका देना चाहिये। फूट जानेके बाद आलिव आइलमें कैलेण्डुला मदर टिञ्चर मिला कर, जख्मपर लगाने से जख्म जल्दी सूख जाता है। नयी बीमारीमें फाइटोलेका लोशन के बाह्य प्रयोग से भी काफी लाभ होता है।

स्तनों के अन्यान्य रोग।

स्तनमें दर्द—ऋतुके पहले दोनों स्तनों में दर्द होने पर कोनायम। दाहिने स्तन में असह्य दर्द होने पर सेङ्गुइनेरिया। अविवाहिता बालिकाओं के बायें स्तनमें बहुत दर्द होने पर सिमिसिफिउगा। ऋतुके एक सप्ताह पहले स्तनों में दर्द तथा अधिक रज होने पर कल्केरिया कार्ब। दर्द के साथ स्वल्प-रज हो तो पल्सेटिला। दर्दके साथ प्रदर हो तो सियानोथस।

स्तनमें बतौड़ी—फाइटोलेका ३Xका सेवन और फाइटोलेक्का लोशन का वाह्य प्रयोग करने पर इस रोग में बहुत लाभ होता है।

स्तनमें कैन्सर—स्तनमें कैन्सर हो जाने पर हाइड्रेस्टिस १X का सेवन और हाइड्रेस्टिस लोशनका वाह्य प्रयोग करना चाहिये। आर्सेनिक या आर्सेनिक आयोडके सेवन से भी काफी लाभ होता है। दो महीने तक इन दवाओंके सेवन से कोई लाभ न हो तो कोनायम या सोइक्यूटा का सेवन करना चाहिये।

म्रत्पाण्ड या हरित रोग।

(Chlorosis)

रक्तस्राव, हस्तमैथुन, मासिक स्रावमें गोलमाल, नियमित शारीरिक परिश्रम न करना, दुश्चिन्ता इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होनेपर रक्तके लाल कण घट जाते हैं, फलतः रोगिनी का रंग पीला या हलके गन्धकी रंगका हो जाता है। साथ ही नियमित समय पर ऋतुका न होना, शरीरकी गरमी का कम हो जाना, हमेशा जाड़ा लगना, शिरमें दर्द, पपटों में सूजन, आँखों के चारों ओर काले दाग, कलेजेका धड़कना, नाड़ी क्षीण, होंठ फीके, अजीर्ण, कब्जियत चिड़चिड़ा-स्वभाव, अरुचि इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते है।

चिकित्सा।

फेरम रिडक्टम२४विचूर्ण—यह इस रोगकी सर्वप्रधान दवा है। एक एक ग्रेन दिनमें दो बार सेवन करना चाहिये। चमड़ा पीला, अजीर्ण, हमेशा ठंढ लगना ऐसा मालूम होना मानो शरीरसे आगकी लपट निकल रही है, शिरमें दर्द, बहुत रज या रजोरोध इत्यादि इस दवाके प्रधान लक्षण हैं।

चायना ६ या ३०—बहुत रक्तस्राव या कोई कठिन बीमारी के बाद यह रोग होना, अजीर्ण, कमजोरी लाने वाले बिना दर्दके दस्त, पेट फूलना, खट्टी डकार आना, परिश्रम करने की इच्छा न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३०—पाकाशय और यकृत में खराबी, स्वाभाविक कब्जियत, चेहरा और आखों में पीलापन, चिड़-चिड़ा स्वभाव, एकान्तमें रहने की इच्छा, अच्छी तरह नींद न आना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत कमजोरी, चेहरा फीका, आखके पपटे फूले हुए, प्यास, थोड़ा थोड़ा पानी पीना, शरीर का काँपना इत्यादि।

स्तनमें कैन्सर—स्तनमें कैन्सर हो जाने पर हाइड्रेस्टिस १X का सेवन और हाइड्रेस्टिस लोशनका वाह्य प्रयोग करना चाहिये। आर्सेनिक या आर्सेनिक आयोडके सेवन से भी काफी लाभ होता है। दो महीने तक इन दवाओंके सेवन से कोई लाभ न हो तो कोनायम या साइक्यूटा का सेवन करना चाहिये।

मृत्पाण्ड या हरित रोग।

(Chlorosis)

रक्तस्राव, हस्तमैथुन, मासिक स्रावमें गोलमाल, नियमित शारीरिक परिश्रम न करना, दुश्चिन्ता इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होनेपर रक्तके लाल कण घट जाते हैं, फलतः रोगिनी का रंग पीला या हलके गन्धकी रंगका हो जाता है। साथ ही नियमित समय पर ऋतुका न होना, शरीरकी गरमी का कम हो जाना, हमेशा जाड़ा लगना, शिरमें दर्द, पपटों में सूजन, आँखों के चारों ओर काले दाग, कलेजेका धड़कना, नाड़ी क्षीण, होंठ फीके, अजीर्ण, कब्जियत चिड़चिड़ा-स्वभाव, अरुचि इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते है।

चिकित्सा।

फेरम रिडक्टम २X विचूर्ण—यह इस रोगकी सर्वप्रधान दवा है। एक एक ग्रेन दिनमें दो बार सेवन करना चाहिये। चमड़ा पीला, अजीर्ण, हमेशा ठंढ लगना ऐसा मालूम होना मानो शरीरसे आगकी लपट निकल रही है, शिरमें दर्द, बहुत रज या रजोरोध इत्यादि इस दवाके प्रधान लक्षण हैं।

चायना ६ या ३०—बहुत रक्तस्राव या कोई कठिन बीमारी के बाद यह रोग होना, अजीर्ण, कमजोरी लाने वाले बिना दर्दके दस्त, पेट फुलना, खट्टी डकार आना, परिश्रम करने की इच्छा न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३०—पाकाशय और यकृत में खराबी, स्वाभाविक कब्जियत, चेहरा और आंखों में पीलापन, चिड़-चिड़ा स्वभाव, एकान्तमें रहने की इच्छा, अच्छी तरह नींद न आना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत कमजोरी, चेहरा फीका, आंखके पपटे फूले हुए, प्यास, थोड़ा थोड़ा पानी पीना, शरीर का काँपना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ३०—गण्डमाला धातु, सदा उदास रहना, खड़ी मिट्टी या खटाई आदि खानेकी इच्छा, श्वासकष्ट, ऊपर चढने पर शिरमें चक्कर, जरामेंही सरदी लगना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—प्रथम ऋतुमें विलम्ब या ऋतु होकर उसका बन्द हो जाना, तलपेटमें दर्द, हृदयका कॉपना, परिश्रम करने पर श्वासकष्ट, जीभपर सफेद लेप, मुँहमें खराब स्वाद, सदा जाडा सा लगना, हाथ पर ठंडे इत्यादि।

ग्रेफाइटिस ३X—स्वल्प रजः, सूखा या रूखा चमडा कब्जियत, गरम स्राव, शरीरका मोटा हो जाना।

फेरम मेट ६ या ३०—बहुत कमजोरी, चेहरा और होंठ फीके या हरी आभायुक्त, शिरमें चक्कर, कानमें भों भों आवाज, कलेजेका धडकना, श्वासकष्ट, बहुत जाड़ा मालूम होना, रजोरोध।

सीपिया ६ या ३०—ज़ोरोंका शिरदर्द, जरायुप्रदेशमें दर्द, स्वल्प रज या रजोरोध, बहुत दिनोंके बाद ऋतु होना, पीले या हरे रंगका प्रदर, कब्जियत, अधकपारी, बकरीकी लेंडी जैसा दस्त।

नेलेरियाना १X—हिस्टोरियाके साथ हरित रोग होने पर इसे देना चाहिये।

—

सल्फर ३०—चाँद और हाथ पैरके तलवे गरम मालूम होना, कब्जियत, रातमें बेचैनी, प्रदर, पुराना रोग।

नेट्रम म्यूर ३०—पुरानी बीमारी की यह भी एक अच्छी दवा है। तलपेटमें भार, शोथ, कब्जियत, ऋतु बन्द, परन्तु बीच बीचमें कपड़े में दाग लगना, उत्कंठा इत्यादि लक्षणों में इसे व्यवहार करना चाहिये।

एन्टिम क्रूड ६ या ३०—जीभ पर सफेद गाढ़ा लेप, भूख, डकार में खायी हुई चीजों की गन्ध मालूम होना इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ६—कै, पेटमें दर्द, कलेजे का धड़कना, बेहोशी इत्यादि।

आवश्यक सूचना—ठंढे पानी या समुद्र मे नहाना, विशुद्ध वायुका सेवन, दूध पीना, मोटे आँटेकी हाथकी बनी हुई

रोटी खाना, सूर्यकी रोशनी में इधर उधर घूमना, तरकारी, पके और ताजे फल, दही, मठा आदि खाना लाभदायक है। आलसीकी तरह दिन न बिताकर थोड़ा बहुत परिश्रम करना चाहिये।

श्वेत प्रदर।

(Leucorrhoea)

ऋतु का गोलमाल,अधिक स्वामी सहवास,सरदी लगना, गण्डमाला धातु, विलासिता और आलस्य, प्रसव वेदना से पीड़ित होना, आँत में कृमि होना, बारंबार जुलाब लेना,कस-कर कपड़े पहनना, सफाई न रखना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर योनि या जरायु से एक प्रकार का सफेद स्राव निकलता है। यह स्राव कभी सफेद आभायुक्त, कभी पीला, कभी पीली आभायुक्त, कभी पानी जैसा पतला, कभी माड़ जैसा गाढा और कभी गोंद जैसा चिकना होता है। कभी कभी इस स्राव में गन्ध रहती है और कभी कभी स्राव जिस स्थान में लगता है, वहां जख्म हो जाता है। जरायु मुखसे जो स्राव निकलता है वह गाढ़ा और चिकना होता है। जरायु के मुख में जख्म हो जाने पर जो स्राव निकलता है, वह देखने में प्राय: पीव जैसा होता है।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे और थुलथुले शरीर की स्त्रियों को इससे विशेष लाभ होता है। जल्दी जल्दी बहुत सा रजस्राव होना, दूध जैसा प्रदर, पेशाब के साथ प्रदर का निकलना, बोझ उठाने पर या मासिक स्राव के बाद रोग का बढना, साथ ही जलन या खुजली, तलपेट में दर्द, जरायुका विचलित होना, छोटी बालिकाओं को यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—ऋतु स्राव के पहले, ऋतु-स्राव के समय या ऋतुस्राव के बाद रोग का बढना, भयके कारण प्रदर होना, ऋतुस्राव आरम्भ होने क पहले ही बालिकाओं को यह रोग होना, मलाई जेसा गाढा स्राव, शिरमें चक्कर, सदा जाड़ा लगना, अजीर्णता, योनिदेश कुछ फूला हुआ इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नकुलम ६ या ३०—गर्भावस्था में खून मिला प्रदर-स्राव, अथवा माँसके धोवन जैसा स्राघ, शूल जैसा दर्द, मासिक स्राव के पहले और पीछे रोगका बढ़ना।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—सफेद सफेद गाढ़ा और कफ मिला बहुत अधिक स्राव, चेहरा पीला, शिरमे दर्द, पतले दस्त, शूल जैसा दर्द इत्यादि।

सल्फर ३० या ३०—आसानी से आराम न होने वाला प्रदर स्राव, कोई चर्मरोग दब जाने के कारण यह रोग होना, पीली आभायुक्त जलन और जख्म करने वाला स्राव, शूल-वेदना इत्यादि।

एस्कुलस ६ या ३०—श्वेत प्रदर, साथही कमर और पीठ में दर्द, चलने फिरने और सामने की ओर झुकने से दर्द का बढ़ना, गाढ़ा, पीला और जख्म करनेवाला स्राव।

चायना ६ या ३०—बहुत कमजोरी, रजस्राव के बाद ही खून मिला स्राव, काला काला गाठ जैसा या बदबूदार पीब जैसा स्राव।

एलुमिना ३० या २००—साफ पानी जैसा पतला स्राव, स्राव का पैर तक बहना, केवल दिनके समय स्राव होना इत्यादि।

लेकेसिस ३० या २००–बहुत परिमाण में बदबूदार गोंद जैसा स्राव, कपड़े में हरा दाग लगना, कमर में कसकर कपड़ा न पहन सकना, प्रौढावस्था में रजोलोप के समय इस रोग का होना।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—पीब जैसा पीला स्राव, योनिदेश में जलन, खुजली और दर्द, रात में तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

सीपिया ३० या २००—मक्खन जैसा गाढा या बदबूदार पीला स्राव, बहुत थोड़ा रजस्राव, प्रसव जैसा दर्द, बारंबार पेशाब का वेग, योनिमें खुजली, सगमेच्छाका अभाव इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—पहले गाढ़ा, बाद को पानी जैसा पतला या मांस के धोवन जैसा बदबूदार स्राव, पारे या गरमी का दोष होने के कारण यह रोग होना।

आर्सेनिक ६ या ३०—जलन और जख्म करने वाला पीले रंग का गाढ़ा स्राव, उद्वेग, अस्थिरता, कमजोरी,

खड़े होने पर या अधोवायु निकलने के समय स्राव का बूँद टपकना इत्यादि।

बाविस्टा ६—पुरानी बीमारी, अण्डे की सफेदी जैसा स्राव, रोगिनी को अपना शिर बड़ा मालूम होना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—जरायु में दर्द, अनियमित ऋतु, आलसी स्वभाव, उत्तेजक पदार्थ खाने पीने के कारण यह रोग होना।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०—मोटे शरीर की स्त्रियों को यह रोग होना, कमर में दर्द, बहुत सा ज्वालाकरस्राव, चर्मरोग।

क्रियोजोट ६—ऋतु के चार पाँच दिन बाद पीले रंग का स्राव, डंक मारने जैसी जलन, और खुजली, जाँघ में स्राव लगने के कारण जख्म हो जाना, पीठ में दर्द, इत्यादि।

कोनायम ६ या ३०—कष्टकर ऋतु, ऋतुके समय शिरमें चक्कर, सफेद रंग का प्रदर स्राव, किसी स्थान में लगने पर जलन और जख्म।

आयोडियम ६ या ३०–पुरानी बीमारी, ऋतुके समय रोग का बढ़ना, जाँघ में स्राव लगने से जख्म हो जाना, और कपड़े में लगने से कपड़े का जल जाना, गण्डमाला-धातु इत्यादि।

केलीबाइक्रोम ६ या ३०–पीले रंगका गाढ़ा और बहुत चिकना स्राव, स्राव को खींचने से उसका रस्सी की तरह बढ़ना।

हाइड्रेस्टिस ६ या ३०—पीला, गोंद जैसा स्राव खींचने से रस्सी की तरह बढ़ना, इसके लोशन की पिचकारी देने से भी बहुत लाभ होता है।

सफेद या हरे रंग का स्राव होने पर मर्क्युरियस सल, सीपिया, कल्केरिया कार्ब, चायना और नेट्रम म्यूर। पानी जैसे पतले स्राव में सेप्राइना, फेरम और पल्स। तेज और जलन पैदा करने वाले स्राव में एसिड नाइट्रिक, पल्सेटिला, क्रियोजोट और आर्सेनिक। दूध जैसे स्राव में साइलीसिया, कल्केरिया कार्ब, पल्सेटिला, लाइकोपोडियम और फेरम। खून मिले स्राव में क्रियोजोट, लाइकोपोडियम और चायना। स्राव में बदबू होने पर कार्बोवेज, कल्केरिया कार्ब, सीपिया,

पल्सेटिला। गाढ़े स्राव में सीपिया, मेजेरियम, जिङ्कम। केवल दिन में स्राव होने पर एल्युमिना। केवल रात में स्राव होने पर एम्ब्राग्रिसिया या कस्टिकम। सुवह विछौने से उठते ही स्राव होने पर कार्वोवेज।

आवश्यक सूचना—दवा वीच वीच में वन्द रखनी चाहिये, जननेन्द्रिय को हमेशा धोते रहना चाहिये। ववूल की छाल उवाल कर उसी पानी को पिचकारी से जननेन्द्रिय को धोना लाभदायक है। अधिक परिश्रम, स्वामी सहवास, मानसिक उत्तेजना, गरम मसाले या घी तेल मिले अथवा उत्तेजक पदार्थ खाना आदि मना है।

वन्ध्यत्व।

(Sterility)

स्त्रियों को सन्तान न होना वन्ध्यत्व या वाझपन कहलाता है। शारीरिक दुर्वलता, वहुत स्थूलता, शरीर में चरवी का वहुत वढ़ जाना, जरायु में अर्वुद, ऋतुस्राव में गोलमाल, प्रदर स्राव, हद से ज्यादा सगम, योनि की संकीर्णता, प्रजनन, अगों की खरावी इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। अनेक वार पुरुषों के दोष से भी स्त्रियों को वच्चे नहीं होते

और उसका दोष भी स्त्रियों के ही मत्थे मढ़ा जाता है। इस लिये इलाज करने के पहले वन्ध्यत्वके कारण का अच्छी तरह पता लगा लेना चाहिये।

चिकित्सा।

बोरेक्स ६—स्त्रियों को श्वेत प्रदरके साथ वन्ध्यत्व होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस ३०—अधिक रक्त स्राव के कारण वन्ध्यत्व की शिकायत पैदा हुइ हो तो इसे देना चाहिये।

कोनायम ६—ऋतु बन्द होने तथा डिम्बाशयको खराबी के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

प्लेटिनम ६—अधिक संगम के कारण यह रोग होने पर इससे लाभ होता है। फोस्फरस भी इसी लक्षण में व्यवहार किया जाता है।

नेट्रम कार्ब ३०—जरायु का मुख कठिन या विकृत हो जाना, संगम के बाद योनि से बहुत श्लेष्मा-स्राव होना, बदबूदार प्रदर इत्यादि।

आयोडियम ३०—शरीर का दुबला होना, स्तनों का सूख जाना, जरायु ग्रीवा की कठिनता इत्यादि।

सीपिया ३०—संगम के समय दर्द होना, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से पेट की समस्त चीजें बाहर निकल पड़ेंगी इत्यादि।

नेट्रमम्यूर ३०—शीघ्र शीघ्र ऋतु होने के लक्षण में इसे देना चाहिये।

कल्कोरिया कार्ब ३०—साधारण कमजोरी प्रदर स्राव, तथा वन्ध्यत्व।

एलिट्रिस ६—जरायु की कमजोरी के कारण वन्ध्यत्व, साथही प्रदर की शिकायत।

आवश्यक सूचना—यदि पुरुष के दोष से बच्चा न होता हो तो पुरुष को भी अपने रोग का इलाज कराना चाहिये। साधारण अवस्थामें कोनायम या आयोडियमके सेवन से लाभ

होता है। यदि स्त्री के प्रजनन अंगो में कोई खराबी हो, तो पहले उसे ठीक कराना चाहिये। बहुत दिनों तक ब्रह्मचर्य पालन करने के बाद संग करने से अनेक बार गर्भ रह जाता है और किसी भी तरहके औपधोपचार की आवश्यकता नहीं पड़ती।

गर्भावस्था के रोग।



कुछ जानने योग्य बातें।

स्त्री और पुरुप के संयोग का स्वाभाविक परिणाम गर्भ-सञ्चार है। स्त्रियों को जिस दिन ऋतुस्राव आरम्भ होता है, उस दिन से लेकर सोलह दिनका समय ऋतुकाल माना जाता है। पहले चार दिन सहवास करना मना है। पाचवें से लेकर सोलहवें दिन तक, सम रात्रिमें सयोग करने पर पुत्र और विपम रात्रि में सयोग करने पर कन्या का जन्म होता है। शास्त्रकारोंका यह भी कथन है कि पुरुप के वीर्य की अधिकता होने से विपम रात्रि में भी संगम करने पर पुत्र और स्त्री रज की अधिकता होने पर समरात्रिमें सगम करने पर भी कन्या ही उत्पन्न होती है।

यह तो हुई हमारे भारतीय शास्त्रकारों की बात। पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने इस विषय में बहुत कुछ छान बीन की है अनेक ग्रन्थ लिखे हैं, परन्तु उन सबों को देखने के बाद यह कहना पड़ता है, कि गर्भ-सञ्चार किस तरह होता है और गर्भ में कभी कन्या कभी पुत्र कैसे बन जाता है—यह विषय आज भी गाढ़ अन्धकार में छिपा हुआ है। दरअसल, यह ईश्वर की एक रहस्यमय लीला है और ईश्वर ही इसका रहस्य जानता है।

पाश्चात्य वैज्ञानिकों का कथन है कि प्रतिमास ऋतुस्नान के समय स्त्रियों के डिम्बाशय से एक डिम्ब या अण्ड निकल कर डिम्बवहा नाली के द्वारा जरायु में पहुँचता है और वहाँ १६ दिन तक रुका रहता है। इस बीच में पुरुष का संग होने पर पुरुष का वीर्य या शुक्र जरायु में पहुँचता है। पुरुष के वीर्य में एक तरह के लम्बे और पतले कीट रहते हैं, जो शुक्र-कीट कहलाते हैं। किसी सतेज शुक्रकीट का नारी डिम्ब से मिलन होने पर धीरे धीरे उसकी अवस्था बदलने लगती है और वही अन्त में गर्भ या भ्रूण के रूप में परिणत हो जाता है।

गर्भावस्था में पुत्र या कन्या की उत्पत्ति किस प्रकार होती है, इस विषय में बहुत मतभेद है। कई वैज्ञानिकों का कथन है कि स्त्रियों के दाहिने डिम्बाशय के डिम्ब से जब पुरुष के दाहिने अण्डकोष से निकला हुआ वीर्य (शुक्रकीट)

मिलता है तब पुत्र और इससे विपरीत अवस्था में कन्या की उत्पत्ति होती है। कुछ लोगों का कहना है कि स्त्रियों की मानसिक अवस्था ही इसका मूल कारण है। यदि वे चाहती हैं कि पुत्र हो तो उनके मनोबल से पुत्र उत्पन्न होता है और यदि वे चाहती हैं कि कन्या हो तो कन्या ही होती है। कुछ लोग पुष्टिकर और अपुष्टिकर खाद्य को इसका कारण मानते हैं। कुछ लोग शुक्ल पक्ष के सहवास से पुत्र और कृष्ण पक्ष के सहवास से कन्या की उत्पत्ति मानते हैं। इनमें से कौन मत ठीक है, इसका अभी निर्णय नहीं हुआ और शायद हो भी नहीं सकता।

गर्भ सञ्चार होने पर स्त्रियों का मासिक स्राव रुक जाता है, स्तन बढ़ने लगते हैं, भिटनी के चारों ओर काला दाग पड जाता है और धीरे धीरे पेट भी बड़ा होने लगता है। यह सब गर्भ रहने के प्रधान चिन्ह हैं, परन्तु अनेक बार भिन्न भिन्न प्रकार की बीमारियों के कारण भी यह लक्षण प्रकट होते हैं, इसलिये गर्भ का पूर्ण निश्चय उस समय होता है, जब दूसरे से लेकर पाँचवें महीने तक, गर्भ का बालक हिलने डोलने या फड़कने लगता है। यह लक्षण प्रकट होने पर गर्भ के विषय में फिर कोई सन्देह नहीं रह जाता।

गर्भ का स्वाभाविक काल ४० सप्ताह, १० चन्द्रमास या २८० दिन हैं। अधिकांश बच्चों का जन्म २७० से लेकर २८० दिन के बीच में होता है। कभी कभी इसमें कुछ कमी ...

भी हो जाती है। यह समय अन्तिम ऋतुस्राव के दि
गिना जाता है।

गर्भावस्था में स्त्रियों के शिर जैसा गुरुतर भार रह
वैसा और किसी भी समय नहीं रहता। गर्भावस्था के
में स्त्रियाँ जो कुछ सोचती हैं, जो कुछ करती हैं, जो
खाती पीती या देखती हैं—उन सबका प्रभाव गर्भस्थ ब
पर पड़ता है। माता के ही इन दिनों के आचार विचार
देवता या राक्षस बना देते हैं।

इस विषय पर यहाँ कुछ अधिक लिखना अप्रास
होगा। हम संक्षेप में केवल इतना ही बतला देना चाह
कि गर्भावस्था में माता को अपनी जिम्मेदारी का ख्य
रख ऐसा आचरण न करना चाहिये, जिससे गर्भस्थ बा
का अनिष्ट हो। गर्भावस्था में हलकी और पुष्टिकर च
खानी चाहिये। अधिक खाना या उपवास करना हानिका
है। दस्त लानेवाली चीजें खाने से गर्भपात का भय रहता
गर्भावस्था में तरह तरह की चीजें खाने की इच्छा होती है
अनेक स्त्रियाँ मिट्टी और खपड़े आदि खाती है, परन्तु य
ठीक नहीं। ऐसी चीजें सहर्ष खायी जा सकती हैं, जिन
गर्भ का अकल्याण न हो।

गर्भावस्था में कपड़े ढीले ढाले पहनने चाहिये। क
कपड़े पहनने से गर्भ की वृद्धि और रक्त सञ्चालन में बाध

पहुँचती है। खुली हवा में घूमना और थोड़ा परिश्रम करना लाभदायक और आवश्यक है। किसी तरह की सवारी में चढ़ना दौड़ धूप करना, भारी चीजें उठाना, बहुत नीचे ऊपर चढ़ना उतरना, पानी में भागना, सरदी या ओस खाना, अधिक परिश्रम करना तथा स्वामी सहवास करना मना है। इससे गर्भपात होने की सम्भावना रहती है।

गर्भावस्था में तेज बुखार, अतिसार तथा संक्रामक रोगोंका आक्रमण बहुत ही हानिकारक है। गर्भिणी इनसे आक्रान्त होने पर, प्रायः गर्भ गिर जाता है और उसके प्राणों पर आ बनती है। इसलिये, उसे इन रोगों से बचाने की चेष्टा करनी चाहिये और संक्रामक या स्पर्शाक्रमक रोग वाले रोगियों से उसे दूर रखना चाहिये।

गर्भावस्था में स्त्रियों को तरह तरह के रोग या शिकायतें हो जाती हैं। इनमें से अधिकाश शिकायतें कुछ दिनों तक रहने के बाद अपने आप आराम हो जाती हैं। कुछ शिकायतें गर्भावस्था के अन्त तक मोजूद रहती हैं। इन शिकायतों का मूल कारण गर्भावस्था के सिवा और कुछ भी नहीं होता, इसलिये जब तक बहुत तकलीफ न हो, तब तक इनका इलाज न करना चाहिये और विश्वास रखना चाहिये कि यथासमय वे अपने आप दूर हो जायेंगी। यदि बहुत तकलीफ हो तो निम्नलिखित दवाओं का प्रयोग करना चाहिये।

गर्भावस्था में रजस्राव।

(Menstruation)

गर्भ रहते ही मासिक स्राव बन्द हो जाना चाहिये। यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु कभी कभी इसके विपरीत भी देखा जाता है। साधारणतः ऐसा बहुत कम होता है। यदि किसी मामले में ऐसा हो और अधिक स्राव होने के कारण कमजोरी तथा कष्ट अनुभव हो, तो क्रोकस, प्लेटिनम, ककुलस, या फोस्फरस देना चाहिये अथवा ऋतु विषयक रोगों की दवाओं में से कोई उपयुक्त दवा चुन लेनी चाहिये।

शिर में दर्द और चक्कर।

(Headache and Vertigo)

अनेक बार स्त्रियों को गर्भ रहने के तीसरे या चौथे सप्ताह से शिर में दर्द और चक्कर आदि शिकायतें पैदा हो जाती हैं। साथ ही शिर में पूर्णता, तन्द्रालुता, सुस्ती, कभी निद्रालुता कभी अनिद्रा, धुँधला दिखायी देना, आँख के सामने चिनगारियों का उठना, खड़े होने या झुकने पर गिर पड़ने का उपक्रम, शिर और गर्दन के पिछले हिस्से में

भार, कलेजे की धड़कन, कमजोरी इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६—खडे होने पर ऐसा मालूम होना मानो गिर पडेंगे, बेहोशी, सुस्ती, शिर में रक्त सञ्चय, आखें लाल, रोशनी वरदाश्त न होना, आँखों के सामने काले धब्बे दिखायी देना, शिर ऊँचा या नीचा करने पर चक्कर आना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—शिर में रक्त सञ्चय और चक्कर कान में तरह तरह की आवाज सुनायी देना, आवाज वरदाश्त न होना, कपाल या शिरके ऊपरी हिस्से में भार और दवाने जैसा दर्द, ऐसा मालूम होना मानो माथा फट जायगा, गले की नसों का फड़कना, चेहरा और आँखें लाल, आँखों के सामने चिनगारियाँ उड़ना, द्वित्व दृष्टि, सुबह तकलीफ का बढ़ जाना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—जल्दबाज और नशेखोर स्त्रियों को इस दवा से विशेष लाभ होता है। सुबह तकलीफ का बढ़ना, खुली हवा में आराम, सुस्ती, धूम्रदृष्टि, कर्णनाद, शिर में दर्द, कब्जियत इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—बैठने या झुकने पर तन्द्रालुता, बहुत सुस्ती, अच्छी तरह नींद न आना, श्वास कष्ट, शिर में भार, कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द, सदा लेटे रहना।

प्लेटिना ६ या ३०—शिर दर्द का धीरे धीरे बढना, बढ़कर असह्य हो उठना, इसके बाद फिर धीरे धीरे घट जाना, थूकते रहने की इच्छा, मुँह में स्वाद रहित या मीठी लार, स्थिर रहने पर तकलीफका बढ़ना, हिलने डोलने या चलने फिरने पर आराम मालूम होना इत्यादि। स्नायविक प्रकृति और हिस्टीरिया रोग वाली स्त्रियों को इस दवा से विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—समूचे या आधे शिरमें दर्द, एक एक दिनके अन्तर से शिर दुखना, दोपहर या शामके वक्त तकलीफ का बढ़ना, सुबह आराम मालूम होना, नम्र प्रकृति की स्त्रियो को यह रोग होना इत्यादि।

सल्फर ६ या ३०—शिरमें दर्द और रक्तसञ्चय, शिर चकराना, चाँद में गरमी मालूम होना, बैठने पर या भोजनके बाद तकलीफ का बढ़ना, कभी कभी मिचली, बेहोशी, कमजोरी, नाकसे खून बहना, सुबह या शामके वक्त तकलीफ का

बढ़ना, अधकपारी या शिरके ऊपरी भाग में दर्द, आँखों से कम दिखायी देना, हिलने डोलने, चलने फिरने, या खुली हवा में रहने से शिरदर्द का बढ़ना।

कक्कुलस ६ या ३०—लेटने के बाद सीधे होकर बैठने पर शिरका चकराना, भोजनके बाद रोग का बढ़ना।

सीपिया ६ या ३०—शामके वक्त शिर में दपदपी, शिर-दर्द, कब्जियत पेटका खाली मालूम होना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—दर्द के कारण ऐसा मालूम होना मानो माथा फट जायगा, साथ ही बहुत कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

मिचली और कै।

(Morning Sickness)

गर्भावस्थाके पाँचवें या छठें सप्ताह से अधिकांश स्त्रियों को मिचली या कै की शिकायत पैदा होती है। इसके कारण उन्हें

बहुत ही कष्ट होता है। यह शिकायतें प्राय सोलहवें सप्ताह तक मौजूद रहती हैं। इसके बाद यह कम हो जाती है या एकदम ही गायब हो जाती हैं। कभी कभी यह गर्भावस्था के अन्ततक पीछा नहीं छोड़तीं, परन्तु इनका ज़ोर घट जाता है।

यह शिकायतें सुबह बिछौने से उठते ही प्रकट होती हैं और दो तीन घण्टे तक मौजूद रहती हैं। इसके बाद दिन भर कोई तकलीफ नहीं रहती। शामके वक्त प्रायः फिर रोगिनी इनसे पीड़ित होती है।

यह शिकायतें पैदा होने पर खान पानके सम्बन्ध में बहुत सावधान रहना चाहिये। भोजन अधिक समय के अन्तर से और थोड़े थोड़े परिमाण में करना चाहिये। यदि कै का बहुत ज़ोर हो तो केवल पतली ही चीज़ें खानी चाहिये।

चिकित्सा।

इपीकाक ६ या ३०—मिचली और कै, पाकाशय में बहुत तकलीफ, खायी और पी हुई चीजें अजीर्ण अवस्था में ही कै हो जाना, पित्तकी कै इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—मिचली और कै, खासकर सुबह के वक्त खाते समय या खाने पीनेके बाद, जोरोंकी हिचकी, मुँह

में पानी भर आना, पाकाशय में दर्द और भार मालुम होना, कब्जियत, चिडचिडा स्वभाव।

आर्सेनिक ६ या ३०—वहुत अधिक कै, खास कर कुछ खाने या पीनेके वाद, साथ ही वेहोशी या वहुत कम जोरी इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०–भोजन के बाद जी मिचलाना, खाये हुए पदार्थों की कै, खट्टी या कड़वी डकारें, अथवा डकारों में खाई हुई चीजों का स्वाद, खट्टी चीजें खानेकी इच्छा जीभ पर सफेद लेप।

नेट्रमम्यूर ३० या २००–भूखका न होना, किसी चीजका स्वाद न मालूम होना, मुँहमें पानी भर आना, तथा वहुत पानी घूटना, पाकाशय में अम्ल और दर्द इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—आर्सेनिक के जैसे लक्षणों में आर्सेनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बहुत ही कष्ट होता है। यह शिकायतें प्राय सोलहवें सप्ताह तक मौजूद रहती है। इसके बाद यह कम हो जाती है या एकदम ही गायब हो जाती हैं। कभी कभी यह गर्भावस्था के अन्ततक पीछा नहीं छोड़तीं,परन्तु इनका जोर घट जाता है।

यह शिकायतें सुबह बिछौने से उठते ही प्रकट होती हैं और दो तीन घण्टे तक मौजूद रहती हैं। इसके बाद दिन भर कोई तकलीफ नहीं रहती। शामके वक्त प्रायः फिर रोगिनी इनसे पीड़ित होती है।

यह शिकायतें पैदा होने पर खान पानके सम्बन्ध में बहुत सावधान रहना चाहिये। भोजन अधिक समय के अन्तर से और थोड़े थोड़े परिमाण में करना चाहिये। यदि कै का बहुत ज़ोर हो तो केवल पतली ही चीज़ें खानी चाहिये।

चिकित्सा।

इपीकाक ६ या ३०—मिचली और कै, पाकाशय में बहुत तकलीफ, खायी और पी हुई चीजें अजीर्ण अवस्था में ही कै हो जाना, पित्तकी कै इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—मिचली और कै, खासकर सुबह के वक्त खाते समय या खाने पीनेके बाद, ज़ोरोंकी हिचकी, मुँह

में पानी भर आना, पाकाशय में दर्द और भार मालूम होना, कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत अधिक कै, खास कर कुछ खाने या पीनेके बाद, साथ ही बेहोशी या बहुत कम जोरी इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—भोजन के बाद जी मिचलाना, खाये हुए पदार्थों की कै, खट्टी या कड़वी डकारें, अथवा डकारों में खाई हुई चीजों का स्वाद, खट्टी चीजें खानेकी इच्छा जीभ पर सफेद लेप।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—भूखका न होना, किसी चीजका स्वाद न मालूम होना, मुँहमें पानी भर आना, तथा बहुत पानी घूटना, पाकाशय में अम्ल और दर्द इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—आर्सेनिक के जैसे लक्षणों में आर्सेनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एन्टिम क्रूड ६ या ३०—डकार में खायी हुई चीजों की गन्ध, अधिक खाने के बाद कै, जी मिचलाना और शिर चकराना।

सिम्फारि कार्पस ६ या ३०—सदा मिचली और कै, पेटमें गोलमाल, मुँहमें पानी भर आना, भोजन में कभी रुचि कभी अरुचि, मुँहमें तीता स्वाद, कोई भी चीज खाने की इच्छा न होना, कब्जियत इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

क्रियोजोट ३ या ६—अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर अन्त में इसे आजमाना चाहिये।

मुँहमें पानी भरना और।
कलेजे में जलन।

(Water Brash & Heart-Burn)

गर्भावस्था में यह शिकायतें भी आमतौर से दिखायी देती हैं। यह शिकायतें पैदा होने पर पेट और गलेमें जलन, पेटमें गरमी मालूम होना, खट्टी डकार आना, पेटमें दर्द, मुँहमें खट्टा या कड़ुवा पानी भर आना इत्यादि लक्षण प्रकट होते है।

चिकित्सा ।

कार्बोवेज ६ या ३० —पेटमें जलन, खट्टी डकार के साथ मुँहमें पानी भर आना, पेट फूलना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—छाती में जलन, खट्टी डकार आना, मुँहमें कडुवा पानी भर जाना, कब्जियत, हिचकी आना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—खाते समय जी मिचलाना, डकार में खायी हुइ चीजोंकी गन्ध, मुँह में कडुवा पानी भर आना, सुवह मुँहमें कडुवा स्वाद इत्यादि।

सीपिया ३०—तीसरे पहर मुँहमें पानी भर आना, भोजन करने पर आराम मालूम होना, डकार में सड़ी गन्ध, सफेद सफेद कै इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—भोजन के याद मुँहमें पानी भर आना, डकारें आना, खट्टी डकार, जी मिचलाना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६—मुंहमें बहुत लार भर जाती हो तो इसे देना चाहिये।

नाइट्रिक एसिड ६—मर्क्युरियस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—मुंहसे बहुत लार बहना, जी मिचलाना और कै, सुबह के वक्त मुंह मे सडा स्वाद, शिरमे गरमी मालूम होना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ३०—खट्टी डकारें आना, छाती में जलन इत्यादि।

आवश्यक सूचना—उपयुक्त परिश्रम करना चाहिये। आसानी से हजम होनेवाली चीजें खानी चाहिये। किसी तरह की अखाद्य चीजें न खानी चाहिये।

गर्भावस्था में कब्जियत ।

(Constipation during Pregnancy)

गर्भावस्था में, ज्यों ज्यों गर्भ बढ़ता है, त्यों त्यों आँतों पर दबाव पड़ता है, फलत कब्जियत की शिकायत पैदा होती है। जिन स्त्रियों को सदा ही कब्जियत रहती है, उन्हें गर्भावस्था मे यह शिकायत पैदा होने पर विशेष कष्ट होता है। साधारण बीमारी खुली हवा में घूमना या व्यायाम करना, अधिक परिमाण में ठढा पानी पीना, उबाले या पके हुए फल खाना आदि उपायों से दूर हो जाती है। यदि आवश्यकता हो तो निम्नलिखित दवाएँ देनी चाहिये।

चिकित्सा ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—यकृत की खराबी के कारण कब्जियत, गरमीके दिनों में यह रोग होना, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—सदा कब्जियत रहना, बारंबार मलत्याग का वेग, लेकिन साफ दस्त न होना, बदहजमी, पेटका फूलना, बवासीर इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—कब्जियत, बहुत सुस्ती, पड़े रहने की इच्छा, श्वासकष्ट इत्यादि।

लाइकोपोडियम ३०—कब्जियतके साथ पेट का फूलना।

कोलिन्सोनिया ३ या ६—कब्जियत और बवासीर, साथही जरायुकी बीमारी हो तो इसे देना चाहिये।

प्लम्बम ६ या ३०—बहुत तेज कब्जियत, बकरी की लेंडी जैसा मल, पेटमें दर्द इत्यादि।

हाइड्रेस्टिस १X—साधारण कब्जियत में इससे भी लाभ होता है।

अतिसार।

(Diarrhoea)

गर्भावस्थामें कब्जियत की तरह अनेक बार पतले दस्तकी भी शिकायत पैदा होती है। इसमें तकलीफ भले ही

अधिक न हो, पर गर्भिणियों के लिये यह विशेष खतरनाक बीमारी है। पतले दस्तों के कारण शीघ्रही वह कमजोर हो जातीहै और अनेक बार गर्भपात तकहो जाता है। इसलिये दस्त बन्द करने के लिये तुरन्त कोई दवा देनी चाहिये।

चिकित्सा।

एलोज ३०—सुबह दस्त, पेटमें कल कल आवाज, दस्तके साथ वायुका निकलना, जल्दी जल्दी पाखाने दौड़ना।

चायना ६ या ३०—पीले रंगके बिना दर्द के पतले अजीर्ण पदार्थ मिले दस्त, पेटका फूलना, पेटमें दर्द, गरमी के दिनोंमें गरमीके कारण या फलमूल खानेके दस्त, कमजोरी लानेवाला पसीना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—अजीर्ण पदार्थ मिले दस्त, दस्तके कारण बहुत कमजोरी, अस्थिरता, बदनमें दाह, प्यास, थोड़ा थोड़ा पानी पीना, खाने पीनेके बाद कै।

नक्सवोमिका ३०—पेटमें अम्ल, मरोंचने जैसा दर्द, बार-बार दस्त का वेग, लेकिन खुलासा दस्त न होना।

सरल होमियोपैथिक चिकित्सा

पल्सेटिला ६ या ३०—आँव मिले दस्त, हमेशा दस्तों का रंग रूप बदलते रहना, रातमें रोगका बढ़ना, घी तेलकी पकी चीज़ें खानेके कारण दस्त आना।

एन्टिमक्रूड ३ या ३०—पाकाशयमें गड़बड़ी, पानी जैसा बहुत दस्त, पित्त या श्लेष्मा युक्त कड़वी कै, जीभ सफेद, खट्टी चीजें खानेके कारण दस्त आना।

पोडोफिल्लाम ६ या ३०—सुबह या पिछली रातमें पेट गड़गड़ाकर सब्ज़ी बदबूदार पीले रंग के पतले दस्त, बिना दर्द के दस्त इत्यादि।

मर्क्युरियस ६—आँव या मलयुक्त पीले या सफेद दस्त, दस्त के समय और दस्तके पहले काँपना, दिनमें दस्तों की कमी, रात में अधिकता इत्यादि।

एसिडफस ६ या ३०—अजीर्ण और बदबूदार दस्त, पेटका गड़गड़ाना, दस्तों के कारण कमजोरी।

इनके अतिरिक्त नक्समस्केटा, लाइको पोडियम, रिउम, डालके मारा और सल्फर आदि दवाओं से भी लाभ होता है। "अतिसार" देखिये।

योनिद्वार में खुजली।

(Pruritis)

गर्भावस्था में अनेक स्त्रियों के योनिद्वार से एक तरह का सफेद स्राव निकलने या फुन्सी आदि होने के कारण बहुत खुजली होती है और इसके कारण उन्हें बहुत कष्ट होता है।

चिकित्सा।

कार्ब्बोवेज ६ या ३०—योनिके बाहर सफेद दही जैसा पदार्थ जमा होना और उसके कारण खुजली।

मर्क्युरियस ६—योनिके बाहर फफोले जैसी फुन्सियाँ, योनिमें प्रदाह, योनिका फूल उठना और उसके साथ बहुत खुजली होना।

ग्रेफाइटिस ६—योनिद्वार में खुजली और गीलापन, खुजलाने से फूल उठना, शहद जैसा चिकना पदार्थ निकलना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—योनिके अन्दर और बाहर बहुत खुजली, डक मारने जैसी जलन इत्यादि।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—योनिद्वार से सफेद कीचड निकलना और उसके कारण बहुत खुजली तथा जलन होना।

सल्फर ३०—योनिके चारों ओर फुन्सियाँ उनमें जलन तथा खुजली इत्यादि।

बोरेक्स ३ या ६—योनि में खुजली होने की यह भी एक बढ़िया दवा है।

इनके अतिरिक्त एम्ब्राग्रीसिया, सिपिया, ब्रायोनिया, रसटक्स तथा साइलीसिया आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—सुहागे का चूर्ण पानी में मिला कर, उसमें एक कपड़ा भिगोकर, योनि में रखने से लाभ

होता है। योनिद्वार को ठंढे पानी से धोते रहना भी बहुत लाभ दायक है।

गर्भावस्था में मूर्च्छा।

(Fainting during Pregnency)

गर्भावस्था में स्नायविकता और शारीरिक दुर्वलता, कस कर कपड़े पहनना, गरम स्थान में रहना इत्यादि कारणो से मूर्च्छा आ जाती है और हिस्टीरिया रोगके से लक्षण प्रकट होते है। कुछ दिनों के बाद अपने आप यह शिकायत दूर हो जाती है। यदि रोग साधारण हो तो खानपान के विषय में सावधानी रखने से वह आराम हो जाता है। रोग कठिन हो तो उसका इलाज करना चाहिये। मूर्च्छा आने पर रोगिनी को खुली हवामें सुलाने, उसके कपड़े ढीले कर देने और उसके मुँह पर ठंढे पानी के छींटे देने से वह होश में आ जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६—भयके कारण मूर्च्छा आने पर या रोगका पुनराक्रमण रोकने के लिये इसे देना चाहिये।

कोफिया ६—स्नायविक प्रकृति की स्त्रियों को यह रोग होना, बहुत उत्तेजना, तलपेट में खींचन, श्वासकष्ट, ठंढा पसीना इत्यादि।

ग्रेफाइटिस ६—योनिद्वार में खुजली और गीलापन, खुजलाने से फूल उठना, शहद जैसा चिकना पदार्थ निकलना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—योनिके अन्दर और वाहर वहुत खुजली, डक मारने जैसी जलन इत्यादि।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—योनिद्वार से सफेद कीचड निकलना और उसके कारण बहुत खुजली तथा जलन होना।

सल्फर ३०—योनिके चारों ओर फुन्सियाँ उनमें जलन तथा खुजली इत्यादि।

बोरेक्स ३ या ६—योनि में खजली होने की यह भी एक बढ़िया दवा है।

इनके अतिरिक्त एम्बाग्रीसिया, सिपिया, ब्रायोनिया, रसटक्स तथा साइलीसिया आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—सुहागे का चूर्ण पानी में मिला कर,उसमें एक कपड़ा भिगोकर, योनि में रखने से लाभ

होता है। योनिद्वार को ठंढे पानी से धोते रहना भी बहुत लाभ दायक है।

गर्भावस्था में मूर्च्छा।

(Fainting during Pregnency)

गर्भावस्था में स्नायविकता और शारीरिक दुर्बलता, कस कर कपडे पहनना, गरम स्थान में रहना इत्यादि कारणों से मूर्च्छा आ जाती है और हिस्टीरिया रोगके से लक्षण प्रकट होते हैं। कुछ दिनों के बाद अपने आप यह शिकायत दूर हो जाती है। यदि रोग साधारण हो तो खानपान के विषय में सावधानी रखने से वह आराम हो जाता है। रोग कठिन हो तो उसका इलाज करना चाहिये। मूर्च्छा आने पर रोगिनी को खुली हवामें सुलाने, उसके कपडे ढीले कर देने और उसके मुँह पर ठंढे पानी के छींटे देने से वह होश में आ जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३Xया ६–भयके कारण मूर्च्छा आने पर या रोगका पुनराक्रमण रोकने के लिये इसे देना चाहिये।

कोफिया ६–स्नायविक प्रकृति की स्त्रियों को यह रोग होना, बहुत उत्तेजना, तलपेट में खींचन, श्वासकष्ट, ठंढा पसीना इत्यादि।

ग्रेफाइटिस ६—योनिद्वार में खुजली और गीलापन, खुजलाने से फूल उठना, शहद जैसा चिकना पदार्थ निकलना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—योनिके अन्दर और बाहर बहुत खुजली, डंक मारने जैसी जलन इत्यादि।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—योनिद्वार से सफेद कीचड़ निकलना और उसके कारण बहुत खुजली तथा जलन होना।

सल्फर ३०—योनिके चारों ओर फुन्सियाँ उनमें जलन तथा खुजली इत्यादि।

बोरेक्स ३ या ६—योनि में खजली होने की यह भी एक बढ़िया दवा है।

इनके अतिरिक्त एम्ब्राग्रीसिया, सिपिया, ब्रायोनिया, रसटक्स तथा साइलीसिया आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—सुहागे का चूर्ण पानी में मिला कर,उसमें एक कपड़ा भिगोकर, योनि में रखने से लाभ

होता है। योनिद्वार को ठंढे पानी से धोते रहना भी बहुत लाभ दायक है।

गर्भावस्था में मूर्च्छा।

(Fainting during Pregnency)

गर्भावस्था में स्नायविकता और शारीरिक दुर्वलता, कस कर कपड़े पहनना, गरम स्थान में रहना इत्यादि कारणों से मूर्च्छा आ जाती है और हिस्टीरिया रोगके से लक्षण प्रकट होते हैं। कुछ दिनों के बाद अपने आप यह शिकायत दूर हो जाती है। यदि रोग साधारण हो तो खानपान के विषय में सावधानी रखने से वह आराम हो जाता है। रोग कठिन हो तो उसका इलाज करना चाहिये। मूर्च्छा आने पर रोगिनी को खुली हवामें सुलाने, उसके कपड़े ढीले कर देने और उसके मुँह पर ठंढे पानी के छींटे देने से वह होश में आ जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३Xया ६—भयके करण मूर्च्छा आने पर या रोगका पुनराक्रमण रोकने के लिये इसे देना चाहिये।

कोफिया ६—स्नायविक प्रकृति की स्त्रियों को यह रोग होना, वहुत उत्तेजना, तलपेट में खींचन, श्वासकष्ट, ठंढा पसीना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—रक्तस्राव जनित कमजोरी के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—क्रोधके कारण मूर्च्छा आने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—वहुत कब्जियत, पाकाशय में गोलमाल, उत्तेजक पदार्थ खाने पीने के कारण मूर्च्छा आना।

बेलेडोना ६ या ३०—एकोनाइट के बाद, खासकर शिरमें रक्तसञ्चय होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—नम्र प्रकृति की क्रन्दन शील स्त्रियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

इग्नेशिया ६ या ३०—शिरमें जोरों का दर्द, ऐसा मालूम होना, मानो वहाँ काँटी ठोक दी गयी है, विषाद वायु या सदा उदास और दुःखित रहना।

डिजिटेलिस ६—हृदयकी कमजोरी के कारण मूर्च्छा आनेपर इसे देना चाहिये।

एसिड फस ६ या ३०—स्नायविक दुर्बलता के कारण मूर्च्छा आने पर इससे भी काफी लाभ होता है।

गर्भावस्था में दाँत में दर्द।

(Toothache During pregnancy)

गर्भावस्था में किसी भी समय यह शिकायत पैदा हो सकती है। अनेक बार गर्भावस्था के आरम्भ से लेकर अन्त तक यह मौजूद रहती है।

चिकित्सा।

केमोमिला १२ या ३०—असह्य वेदना, किसी खुदे दाँतसे दर्दका शुरू होना और एक ओर के समस्त दाँतों में दर्दका फैल जाना दर्द के कारण चोह या गालका फूल उठना।

कोफिया ३ या ६—बहुत दर्दके कारण अस्थिरता, रह रह कर दर्दका आक्रमण।

पल्सेटिला ६ या ३०—एक ओरकी समूची चौहका आक्रान्त होना, सचरण शील वेदना, शामके समय दर्द का बढ़ना।

बेलेडोना ६ या ३०—प्रदाह और दपदपी होने पर इसे देना चाहिये।

प्लन्टेगो मेजर १X—दाँतक दर्दमें, खासकर क्षय प्राप्त दाँतके दर्द में इससे विशेष लाभ होता है।

नक्सवोमिका ३०—खुहे दाँतके दर्दकी यह भी एक अच्छी दवा है। इससे या केमोमिला से लाभ न होने पर स्टेफीसेग्रिया ६ या ३० देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त एकोनाइट, कल्केरिया कार्ब और पणिल आदि दवाएँ भी आजमायी जा सकती है।

नसोंका फूलना।

(Varicose Veins)

गर्भावस्था में अनेक वार पैर आदि अगोंकी नसें फूल जाती हैं और वहाँ सूजनसी चढ़ आती है। फूली हुई नसें

गॉठ गॉठ जैसी और नीले रगकी हो जाती है। गर्भके कारण रक्त सञ्चालन की क्रियामें बाधा पडने से ही यह रोग होता है। प्रसव के बाद यह अपने आप ही ठीक हो जाती है। रोगके समय ठंढे पानी से खूब नहाने और पट्टी या मोजोंका व्यवहार करने से लाभ होता है।

चिकित्सा।

पल्सेटिला ६ या ३०—नसोंके साथ समूचे अगोंका फूल जाना, आक्रान्त स्थान में दर्द, उस स्थान की नसोंका रंग नीला हो जाना।

अर्निका ६ या ३०—पल्सेटिला जैसे लक्षणों में इससे भी लाभ होता है।

लेकेसिस ६ या ३०—पल्सेटिला से दर्द और सूजन कम हो जाने पर भी यदि नसोंका नीलापन दूर न हो तो इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३०—कब्जियत, बवासीर, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—पल्सेटिला जैसे लक्षण, परन्तु दर्दके साथ बहुत जलन होने पर इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—आर्सेनिक के लक्षण होनेपर भी आर्सेनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—रोग पुराना हो जाने पर तथा अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

गर्भावस्था में पार्श्व वेदना।

(Pain in the Side)

गर्भावस्था में पाँचवें से लेकर आठवें महीने तक स्त्रियों के पार्श्व और कमर के निचले भाग में कष्टदायक वेदना होती है। पहली वार के गर्भ में यह शिकायत विशेष रूपसे मौजूद रहती है। पार्श्व वेदना में पसलियों के नीचे दर्द के साथ भार जैसा मालूम होता है। इससे गर्भिणी स्थिर होकर सो नहीं सकती और उसे वारवार करवट बदलनी पड़ती है।



चिकित्सा।

कमर के दर्द में ब्रायोनिया, रसटक्स, बेलेडोना, पलसेटिला, नक्सवोमिका, कस्टिकम और सलफर तथा पार्श्व वेदना में एकोनाइट, केमोमिला, पल्सेटिला या फोस्फरस से विशेष लाभ होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—एकायक दर्द का शुरू होना और एकायक गायब हो जाना, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना।

अर्निका ३ या ६—मोच आने या छिल जाने जैसा दर्द हो तो इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सुई चुभोने जैसा दर्द, खास कर बायीं ओर, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, स्थिर रहने पर आराम इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—कब्जियत, आलसी की तरह सदा घर में बैठे रहना, चाय काफी आदि उत्तेजक पदार्थों का व्यवहार करना इत्यादि लक्षणवाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—नम्र या क्रन्दनशील प्रकृति की स्त्रियों को यह रोग होना, दर्द के कारण स्थिर होकर बैठ न सकना, आराम के लिये इधर उधर घूमना इत्यादि।

गर्भावस्था में ऐंठन।

(Cramps)

गर्भावस्था के चौथे या पाँचवें महीने में अथवा प्रसव के कुछ दिन पहले शरीर के भिन्न भिन्न अंगोंमें ऐंठन होतीहै और उसके कारण गर्भिणी को कष्ट होता है।

चिकित्सा।

पैरोंकी ऐंठन में—कोलोसिन्थ, हायोसायमस, कल्केरियाकार्ब, केमोमिला, नक्सवोमिका या सल्फर।

तलपेटकी ऐंठन में—नक्सवोमिका, पल्सेटिला, बेलेडोना, हायोसायमस या ककुलस।

पीठकी ऐंठन में—इग्नेशिया, रसटक्स या ओपियम।



केमोमिला ६ या ३०—चिड़चिड़ा स्वभाव, पैरकी घुट्टी में ऐंठन, असह्य वेदना इत्यादि।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—जाँघकी समस्त पेशियाँ और पेटमें ऐंठन जैसा दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ३ या ६—पेटकी पेसियोंमें तथा जाँघके सामने वाले हिस्सेमें ऐंठन होनेपर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—रक्ताधिक्य धातु, रातमें टेहुने मोड़कर सोने पर पैरके पंजे और घुट्टी में ऐंठन।

नक्सवोमिका ३०—पैरोंमें अकड़न, शिरमें दर्द, कब्जियत, बदहजमी और मिचली इत्यादि।

अनजान में पेशाब।

(Incontinence of Urine)

मूत्रयन्त्रों पर गर्भका दबाव पड़ने से स्त्रियों को पेशाब की शिकायत पैदा होती है। कभी कभी उनकी पेशाब रोकने की शक्ति कम हो जाती है, कभी बूँद-बूँद पेशाब होता है और कभी अनजान में पेशाब हो जाता है।

चिकित्सा ।

पल्सेटिला ६ या ३०–वारंवार पेशाव का वेग, घूमने या वैठने पर अनजान में पेशाव, पेटमें तनाइट इत्यादि ।

वेलेडोना ६ या ३०–बहुत कष्टके साथ थोडा पेशाव होना, पतली धारमें पेशाव होना, पेशाव रोकने की शक्ति विलकुल न होना,सदा अनजानमें बूंद-बूंद पेशाव होते रहना।

साइना २००–पेटमें कृमि होनेके कारण यह शिकायत हो तो इसे देना चाहिये ।

सल्फर ३०–दिनमें वारंवार पेशाव करना, रातके समय अनजान में पेशाव ।

कस्टिकम ३ या ६–वारवार पेशाव का वेग, अनजान में थोडा पेशाव, रातके समय अनजान में पेशाव होना ।

इनके अतिरिक्त एकोनाइट, सीपिया, स्ट्रेमोनियम, चायना, साइलीसिया, केन्थरिस, कैम्फर और केनेविस सेट इत्यादि दवाओं से भी लाभ होता है ।

भूत प्रेतका उपद्रव ।

अनेक बार मानसिक अवस्था की खराबीके कारण स्त्रियों को भूत प्रेत दिखायी देते हैं और कभी हँसना, कभी रोना, कभी डरना, कभी उपद्रव करना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। साधारण अवस्था में खान पानमें सावधानी, खुली हवामें घूमना आदि स्वास्थ्य विषयक नियमों का पालन करने से काफी लाभ होताहै। आवश्यकता होतो निम्नलिखित दवाओं का सेवन भी करना चाहिये।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३X या ६—डर जानेके कारण इस तरह की शिकायतें पैदा होजाने पर और मृत्युभय लक्षणकी प्रधानता होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—रातके समय बहुत उपद्रव और अशान्ति भूत प्रेतका भय, भागने और छिपने की इच्छा, अनिच्छा पूर्वक हँसना, गाने या हँसने की इच्छा, भ्रम पूर्ण बातें देखना और कहना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—उदास रहना और रोना, पाकाशयमें गड़बड़ी, अनिद्रा, बात करने की इच्छा न होना, शिरदर्द और कलेजे में जलन।

सल्फर ३०—भूत व्याधि, धार्मिक विषयों में बहुत उत्कण्ठा, अपनी मुक्तिके लिये चिन्तित रहना, बातचीत करते समय खास-खास नाम या शब्द भूल जाना, क्रोधी स्वभाव इत्यादि।

आवश्यक सूचना—इस तरह की शिकायतें पैदा होने पर लोग ओझाओं से झाड फूक करवाते हैं या गण्डा तावीज बनवाते हैं। इन कामों में समय और शक्ति व्यय न कर, तुरन्त किसी चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिये।

गर्भावस्था में अनिद्रा।

(Sleeplessnes during Pregnenrcy)

गर्भमें बच्चे के हिलने डोलने और स्नायविक उत्तेजना के कारण गर्भावस्था में अनेक बार स्त्रियों को यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६—निद्रालुता होने पर भी नींदका न आना, नींद लगते ही चौंक पडना इत्यादि।

कोफिया ६ या ३० —शारीरिक ओर मानसिक उत्तेजना के कारण नींद न आनेपर इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—निद्रालुता, किन्तु नींद न आना, बुरे स्वप्न देखने या खाँसी आनेके कारण सो न सकना।

लाइकोपोडियम ३०—दिनमें निद्रालुता, रातमें अनिद्रा, गर्भस्त बालकके हिलने डोलने के कारण नींद न आना, सुबह थकावट मालूम होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—रात में तीन बजे के करीब नींदका खुल जाना, इसके बाद फिर नींद का न आना।

पल्सेटिका ६ या ३०—रात में अनिद्रा, सुबह देरी से नींदका खुलना।

ओपियम ३०—तन्द्रालुता, नींद आनेपर भयावने सपने देखना।

आवश्यक सूचना—ठढे पानी से हाथ पैर धोकर सोने से लाभ होता है। उत्तेजक पदार्थ खाना पीना मना है।

सल्फर ३०—भूत व्याधि, धार्मिक विषयों में बहुत उत्कण्ठा, अपनी मुक्तिके लिये चिन्तित रहना, वातचीत करते समय खास-खास नाम या शब्द भूल जाना, क्रोधी स्वभाव इत्यादि।

आवश्यक सूचना—इस तरह की शिकायतें पैदा होने पर लोग ओझाओं से झाड़ फूक करवाते हे या गण्डा तावीज बनवाते हैं। इन कामों में समय और शक्ति व्यय न कर, तुरन्त किसी चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिये।

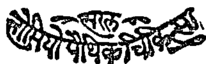
गर्भावस्था में अनिद्रा।

(Sleeplessnes duiing Pregnenrcy)

गर्भमें बच्चे के हिलने डोलने और स्नायविक उत्तेजना के कारण गर्भावस्था में अनेक बार स्त्रियों को यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६—निद्रालुता होने पर भी नींदका न आना, नींद लगते ही चौंक पडना इत्यादि।



कोफिया ६ या ३०—शारीरिक और मानसिक उत्तेजना के कारण नींद न आनेपर इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—निद्रालुता, किन्तु नींद न आना, बुरे स्वप्न देखने या खाँसी आनेके कारण सो न सकना।

लाइकोपोडियम ३०—दिनमें निद्रालुता, रातमें अनिद्रा, गर्भस्त बालकके हिलने डोलने के कारण नींद न आना, सुबह थकावट मालूम होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—रात में तीन बजे के करीब नींदका खुल जाना, इसके बाद फिर नींद का न आना।

पल्सेटिला ६ या ३०—रात में अनिद्रा, सुबह देरी से नींदका खुलना।

ओपियम ३०—तन्द्रालुता, नींद आनेपर भयावने सपने देखना।

आवश्यक सूचना—ठढे पानी से हाथ पैर धोकर सोने से लाभ होता है। उत्तेजक पदार्थ खाना पीना मना है।

सल्फर ३०—भूत व्याधि, धार्मिक विषयों में बहुत उत्कण्ठा, अपनी मुक्तिके लिये चिन्तित रहना, बातचीत करते समय खास-खास नाम या शब्द भूल जाना, क्रोधी स्वभाव इत्यादि।

आवश्यक सूचना—इस तरह की शिकायतें पैदा होने पर लोग ओझाओं से झाड़ फूक करवाते है या गण्डा तावीज बनवाते हैं। इन कामो में समय और शक्ति व्यय न कर, तुरन्त किसी चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिये।

गर्भावस्था में अनिद्रा।

(Sleeplessnes duiing Pregnenrcy)

गर्भमें बच्चे के हिलने डोलने और स्नायविक उत्तेजना के कारण गर्भावस्था में अनेक बार स्त्रियों को यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६—निद्रालुता होने पर भी नींदका न आना, नींद लगते ही चौंक पड़ना इत्यादि।

कोफिया ६ या ३०—शारीरिक और मानसिक उत्तेजना के कारण नींद न आनेपर इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—निद्रालुता, किन्तु नींद न आना, बुरे स्वप्न देखने या खाँसी आनेके कारण सो न सकना।

लाइकोपोडियम ३०—दिनमें निद्रालुता, रातमें अनिद्रा, गर्भस्त बालकके हिलने डोलने के कारण नींद न आना, सुबह थकावट मालूम होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—रात में तीन बजे के करीब नींदका खुल जाना, इसके बाद फिर नींद का न आना।

पल्सेटिला ६ या ३०—रात में अनिद्रा, सुबह देरी से नींदका खुलना।

ओपियम ३०—तन्द्रालुता, नींद आनेपर भयावने सपने देखना।

आवश्यक सूचना—ठंढे पानी से हाथ पैर धोकर सोने से लाभ होता है। उत्तेजक पदार्थ खाना पीना मना है।

गर्भ-संचालन से कष्ट।

गर्भ में बच्चे के हिलने डोलने से गर्भिणी को अनेक बार कष्ट होता है। इस शिकायत को दूर करने के लिये निम्न-लिखित दवाएँ व्यवहार करनी चाहिये।

चिकित्सा।

आर्निका ३ या ६—ऐसा मालूम होना मानो पेटमें बच्चा आड़ा पड़ा हुआ है, पेटका टटाना जी मिचलाना और क होना।

ओपियम ६—बच्चा बड़े वेग से हिलता डोलता हो तो इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम ६या ३०—यह भी एक अच्छीदवा है।

कोनायम ६—भ्रूणके हिलने डोलने से नींद न आती हो तो इसे देना चाहिये।

सोरिनम ६—गर्भ में बच्चे का हिलना डोलना, साथही पेटका फूलना।

सीपिया ६ या ३०—गर्भ मे बच्चे का हिलना डोलना, उसके कारण पेटका टटाना, स्पर्शानुभवता।

थूजा ३०—भ्रूण-सञ्चालन के कारण नींदका न आना, मूत्रस्थली में दर्द, बारबार पेशाब का वेग इत्यादि।

आइरिस ६—इस दवासे भी अनेक बार बहुत लाभ होता है।

गर्भावस्था के अन्यान्य उपसर्ग।

खांसी—गर्भावस्था मे स्त्रियों को अनेक बार प्रबल खासी आती है। इसका इलाज तुरन्त करना चाहिये, क्योंकि अनेक बार इसके कारण गर्भ पात तक हो जाता है। खासीके साथ ज्वर भाव, गलेमें सुड़सुड़ाहट और दर्द होने पर एकोनाइट ६। गलेमे दर्द, शिरमें चक्कर, सूखी और कष्टकर खांसी, शामके समय और रातमे खांसीका बढना-बेलेडोना ६। गला सुड़सुड़ाकर अनवरत खासी आने पर रिउमेक्स ६। सूखी खासी, छातीमें दर्द और भार मालूम होना, थूक जैसा सफेद कफ निकलना फोस्फरस ६। अनवरत सूखी खासी, लेटने

भून कर उसका चूर्ण शहद में मिला कर लगाने से लाभ होता है।

कलेजे में धड़कन—डिजिटेलिस ३ या ६ इस रोग की प्रधान दवा है। लक्षणानुसार नक्सवोमिका, मरक्रस, एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, पल्सेटिला और सल्फर आदि दवाएं भी व्यवहार की जाती है।

श्वास कष्ट—खाँसी, अधिक घूमना, अजीर्ण, स्नायविक दुर्बलता आदि कारणों से गर्भावस्था में श्वास कष्ट होता है। एकोनाइट, आर्सेनिक, इपीकाक, मरक्रस, फोस्फरस, नक्स-वोमिका और ब्रायोनिया आदि दवाओं से इस रोग में लाभ होता है।

बवासीर—गर्भ के कारण अँतड़ियों पर दबाव पड़ने से कब्जियत के साथ साथ अनेक गर्भिणियों को बवासीर की बीमारी हो जाती है। नक्सवोमिका, कोलिन्सोनिया, कार्बो-वेज, पोडोफिलाम, नाइट्रिक एसिड आदि इस रोग की अच्छी दवाएँ हैं। "बवासीर" देखिये।

पेट का बढ़ना और झूल पड़ना—पेट बड़ा हो जाने के कारण चमड़ा चरचराये और स्तन में दर्द हो तो नारियल का तेल लगाना चाहिये। इससे आराम न मालुम होने पर बेले-डोना या नक्सवोमिका का सेवन करना चाहिये। पेट का चमड़ा ढीला होने के कारण यदि पेट झूल पड़े और उसके

कारण कष्ट हो तो उसे ऊपर उठा कर कपड़े से बाँध देना चाहिये। इससे तकलीफ घट जाती है।

स्तनकी शिकायतें—गर्भावस्थामें स्तन और उनकी भिटनी बढ़ती है तथा और भी कई तरह के परिवर्तन होते हैं। स्तनों में दर्द, प्रदाह, जख्म, स्तन बड़े हो जाने के कारण तकलीफ आदि शिकायतें भी पैदा होती हैं। स्तन सख्त, लाल, भारी और दर्द भरे होने पर बेलेडोना ३X। स्तन फूले और भारी हों पर उनमें लाली न हो तो ब्रायोनिया ३। स्तन पर ठंढे पानीकी पट्टी चढ़ाने से भी लाभ होता है। स्तनमें चोट लगने के कारण प्रदाह हो तो आर्निका ३ का सेवन और आर्निका लोशन का वाह्य प्रयोग करना चाहिये, भिटनी या बोंटे में जख्म हो जाने या सड़न पैदा हो जाने पर हाइड्रेस्टिस ३ का सेवन और हाइड्रेस्टिस लोशन का वाह्य प्रयोग करना चाहिये। स्तन बढ़ जानेके कारण शूल जैसा दर्द हो तो कोनायम ३। प्रदाह के का[illegible] होने पर [illegible]डोना ३X या ब्रायोनिया ३।

सूचना—इनके अतिरिक्त गर्भावस्था में बुखार मृगी, सन्यास, कमला या पाण्डु-प्रदर इत्यादि और भी अनेक उपसर्ग प्रकट होते हैं। इनकी दवाएं जहां इन रोगों का वर्णन है, वहाँ देखनी चाहिये। गर्भपात, रक्तस्राव, झूठी प्रसव वेदना आदि कई कठिन उपसर्गों का इलाज आगे लिखा जाता है।

गर्भस्राव या गर्भपात।

(Abortion)

तीन महीने तकका गर्भ गिरना गर्भस्राव और तीन महीने से अधिक समयका गर्भ गिरना, गर्भपात कहलाता है। साधारणत: ऐसी दुर्घटनायें तीसरे महीनेके अन्त और चौथे महीने के आरम्भ में विशेष रूपसे होती हैं। एक बार गर्भपात होनेपर बारबार गर्भपात होनेकी सम्भावना रहती है। बहुधा यह देखा गया है कि एकबार जिस महीने में गर्भपात होता है, गर्भ रहने पर दूसरी बार भी उसी महीनेमें गर्भपात होता है। छः महीने के बाद बच्चे का जन्म होना अकाल प्रसव कहलाता है। सातवें महीनेके बच्चे कभी कभी जी जाते हैं, परन्तु लोगों का कहना है कि आठवें महीने के बच्चे नहीं जीते।

गर्भपात अनेक कारणों से हो सकता है। शारीरिक दुर्बलता, जरायुके साथ गर्भका अच्छी तरह संयोग न होना,

फेरम ६ या ३०—गर्भस्राव के साथ बुखार की शिकायत, प्रसव वेदना जैसा दर्द और रक्तस्राव।

नक्सवोमिका या ब्रायोनिया ६ या ३०—कब्जियत के साथ गर्भस्रावकी शिकायत होनेपर इसे देना चाहिये।

इग्नेशिया ३०—सदा उदास रहना और ठंढी साँसें लेना, शोक और दुःख के कारण गर्भस्राव इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—नम्र प्रकृति की स्त्रियों को यह शिकायत होना, रह रह कर रक्तस्राव और रक्तस्राव के बाद दर्द होना, जाडा मालूम होना, खुली हवा में आराम, प्यास बिल्कुल न होना।

सेबाइना ६ या ३०—तीसरे मास में गर्भस्राव होने की यह बढ़िया दवा है। कनकनी, ऐसा मालूम होना मानो कुछ बाहर निकल रहा है, लाल रंग का थक्का थक्का बहुत सा रक्त स्राव, पीठ से लेकर तल पेट तक दर्द।

क्राइबर्नम ३ या ६—पानी की थैली फटने के पहले मोच जैसा दर्द होने पर इसे देने से जल्दी सफाई हो जाती है।

सिनामन ३ या ६—पैर फिसलने या कमर मुड़क जाने के कारण गर्भस्राव का उपक्रम, नाक खुजलाना, निद्रा हीनता, रातमें अस्थिरता इत्यादि।

केन्थरिस ३ या ६—गर्भस्राव के बाद फूल का न निकलना, बारंबार पेशाब का वेग, मूत्रनाली में जलन।

सीपिया ६ या ३०—गोरे रंग के दुबली पतली स्त्रियों को यह रोग होना, श्वेत प्रदर के साथ योनि में दर्द और खुजली, नियमित समय के पहले ऋतुस्राव, साधारण परिश्रम में ही पसीना आ जाना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे और थुलथुले शरीर की स्त्रियों को यह शिकायत होना, अधिक रक्तस्राव, श्वेत प्रदर, स्तन में दर्द, कमर में दर्द, शिर में चक्कर इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—भारी चीज उठाने के कारण गर्भस्राव होने का भय मालूम हो तो इसे ही देना चाहिये।

पहले महीने के गर्भस्राव में एपिस और वाइवर्नम, दूसरे महीने के गर्भस्राव में एपिस और केलीकार्ब, तीसरे या चौथे

महीने के गर्भस्राव में क्रोकस, सेबाइना, सिकेली और थूजा, तथा पाँचवें से लेकर सातवें मास तक के गर्भपात में सीपिया से विशेष लाभ होता है। लाल रङ्ग के रक्तस्राव में आर्सेनिक तथा इपीकाक और काले रङ्ग के रक्तस्राव में हेमामेलिस, केमोमिला, सिकेली और सेबाइना देने से तुरन्त लाभ होता है।

यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि एक बार गर्भस्राव होने पर, परवर्ती गर्भों में भी गर्भस्राव होने की आशङ्का रहती है। गर्भस्राव की यह आदत छुडाने के लिये गर्भ रहते ही नीचे लिखी हुई दवाओं में से लक्षणानुसार किसी दवा का सेवन आरम्भ कर देना चाहिये और जब तक गर्भस्राव की आशङ्का रहे तब तक बराबर सेवन करते रहना चाहिये।

जिन्हें तीसरे या चौथे मास में गर्भस्राव होने की आदत हो, उन्हें एपिस ३ या ६। गण्डमाला धातुवाली गर्भिणियों को गर्भस्राव की आदत होने पर कल्केरिया कार्ब ६ या ३०। पाँचवें से लेकर सातवें मास तक गर्भस्राव होता हो तो सीपिया ३० या जिङ्कम ३०। सदा गर्भस्राव की आशङ्का और कमर तथा पीठ में दर्द होने पर कोलोफाइलम ३ या ६ साधारण रक्त स्वल्पता के साथ गर्भस्राव की शिकायत होने पर हेलोनियस ६ या ३०। इनके अतिरिक्त सेबाइना, सिकेली, सिमिसिफिउगा और एलेट्रिस और दवाओं से भी लाभ होता है। गर्भ रहने के पहले से लेकर गर्भस्राव के बाद तक फ्लोरा-

इड आफ गोल्ड का सेवन करने से भी भविष्य में गर्भस्राव का होना रुकता है।

आवश्यक सूचना—रक्तस्राव आरम्भ होते ही रोगिनी को चित सुलाकर योनिद्वार और तलपेट पर ठण्ढे पानी की पट्टी या बरफ चढ़ाने से रक्तस्राव और गर्भस्राव होना रुक जाता है। दवाएँ अवस्थानुसार घण्टे में तीन बार देनी चाहिये।

गर्भावस्था में रक्तस्राव।

(Bleeding During Pregnancy)

गर्भावस्था में अनेक बार नाक, फेफड़ा, पाकाशय और जरायु आदि स्थानों से रक्तस्राव होता है। इनमें जरायु से रक्तस्राव होना बहुत ही साघातिक होता है और अनेक बार इसके कारण गर्भस्राव तक हो जाता है। जिन कारणों से गर्भपात होता है, उन्हीं कारणों से जरायु से रक्तस्राव भी होता है। यदि शीघ्र रक्तस्राव न बन्द हो जाय और रक्त का परिमाण तथा दर्द उत्तरोत्तर बढ़ता जाय, तो गर्भस्राव की ही दवाएँ देनी चाहिये। रक्तस्रावमें साधारणतः निम्नलिखित दवाएँ व्यवहार की जाती हैं:—

चिकित्सा ।

अर्निका ६या ३०—गिरने,चोट लगने,भारी चीज उठाने या ऊँचे नीचे पैर पड़ने के कारण रक्तस्राव आरम्भ होने पर इसे देना चाहिये ।

इपीकाक ६ या ३०—नाभी के चारों ओर काटने जैसा दर्द और अनवरत रक्तस्राव, बहुत मिचली, प्रसवकी तरह दवाव, जाड़ा मालूम होना, शरीर ठंढा ऐसा मालूम होना मानो शिर में गरमी चढ़ रही है बहुत कमजोरी, पड़े रहने की इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

कैमोमिला १२ या ३०—इपीकाक से बहुत कम या बिलकुल लाभ न होने पर अथवा प्रसव वेदना जैसी वेदना होने पर इसे देना चाहिये ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—कमर में जोरों का दर्द, साथही गहरे लाल रंगका बहुत सा खून निकलना, शिर में दर्द, ऐसा मालूम होना मानो माथा फट जायगा, कब्जियत, नाक से रक्त स्राव होना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—कमजोरी, शिर भारी, सुस्ती तन्द्रालुता, बेहोशी, चेहरा फीका, हाथ और चेहरे का नीला पड़ जाना, प्रसव वेदना जैसा दर्द, हर बार दर्द के साथ रक्तस्रावका बढना इत्यादि लक्षणों में और रक्तस्राव के बाद की कमजोरी दूर करने के लिये इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—प्रसव वेदना जैसा दर्द, बेचैनी, बेहोशी, आँखोंके सामने अँधेरा प्रलाप इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—खून का रंग न तो गहरा न फीका, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से सब कुछ बाहर निकल पडेगा, कमर में असह्य वेदना, ऐसा मालूम होना मानो कमर टूट जायेगी, फीका या फूला हुआ चेहरा, शिर में गरमी, कलेजे में धड़कन, प्यास इत्यादि।

प्लेटिना ६ या ३०—खूनका रंग गहरा लाल और गाढ़ा होने पर भी उसका गॉठ गॉठ सा न होना, प्रसव वेदना जैसा दर्द इत्यादि। किसी तरहकी मानसिक चिन्ता या परिश्रम के कारण रक्तस्राव होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

फेरम ६ या ३०—खून कभी गाढ़ा और गाँठ गाँठ जैसा और कभी पतला, प्रसव वेदना जैसा दर्द, चेहरा लाल इत्यादि। फेरम के बाद चायना देने से विशेष लाभ होता है।

सेबाइना ६—जरायु से लाल रंगका बहुत रक्त स्राव होना हिलने डोलने से रक्तस्रावका बढ़ना रह रह कर रक्त स्राव होना, गर्भस्रावकी आशंका।

इनके अतिरिक्त क्रोकस, ककुलस, रूटा, नक्समस्केटा तथा गर्भस्रावकी दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोगिनी को पतली और ठंडी चीजें खानेको देना चाहिये। तलपेट और योनिदेशमें जल पट्टी या बरफ चढ़ाने से लाभ होता है। रोगिनी को स्थिर और शान्त भावसे सुला रखना चाहिये। जाँघ और हाथों के ऊपरी भाग से रूमाल से कसकर बाँध देने पर भी लाभ होता है।

झूठी प्रसव-वेदना।

(False Labor Pain)

प्रसव के कुछ दिन पहले स्त्रियों को प्रसव वेदना जैसी झूठी वेदना होतीहै और इसके कारण उन्हें बहुत कष्ट होताहै। यह दर्द वास्तविक प्रसव वेदना की तरह अनवरत बना नहीं

रहता। प्रकृत प्रसव वेदना आरम्भ होने के बाद उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है, झूठी प्रसव वेदना नाभी के नीचे आरम्भ होकर वहीं लोप हो जाती है। प्रकृत प्रसव वेदना की तरह इस वेदना के साथ किसी तरह का स्राव भी मोजूद नहीं रहता।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६ या ३०—एकाएक दर्द का आरम्भ होना और एकाएक गायब हो जाना, आवाज और रोशनी बरदाश्त न होना, पीठ और पेट में दर्द, ऐसा मालूम होना मानो पेट से कुछ बाहर निकल पड़ेगा।

कोलोफाइलम ३ या ६—यह एक बढ़िया दवा है। रोज रात के समय पेट के ऊपरी हिस्से से लेकर हाथ पैर तक दर्द फैल जाने पर इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—पेट में शूल जैसा असह्य दर्द, साथ ही अधिक पेशाब होना, बेचैनी, दर्द के कारण चिल्लाना इत्यादि।

कोफिया ६ या ३०—पेट में असह्य दर्द, दर्द के कारण पागल सा हो जाना और नींद न आना।

पल्सेटिला ६ या ३०—दर्द के कारण अधिक समय तक लेट या बैठ न सकना, चलने फिरने से और खुली हवा में आराम मालूम होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—सदा कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव, हर बार दर्द के साथ मल मूत्र का वेग मालूम होना।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—पेट की पेशियों में रह रह कर दर्द, बायें स्तन में दर्द, मानसिक विकार इत्यादि।

जेल्सीमियम ३०—प्रसव वेदना जैसी वेदना, दर्द का ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर जाना, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता।

सीपिया ६ या ३०—पेट और पीठ में बारबार प्रसव जैसा दर्द, पैरसे पैर को दबा रखने पर आराम मालूम होना, पेट खाली मालूम होना इत्यादि।

प्रसव की तैयारी।

गर्भकाल पूरा होनेपर गर्भिणी को प्रसव कराने की तैयारी करनी चाहिये। तलपेट का भूल पड़ना और पतला हो जाना

बारंबार पेशाब होना, पतले दस्त आना, तलपेट में दर्द,पेशाब के बाद लाली लिये कफ जैसा पदार्थ निकलना इत्यादि प्रसव के पूर्व लक्षण हैं। इन लक्षणों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना ठीक नहीं, बल्कि इन्हें देखते ही सौरी घर आदि का प्रबन्ध करने में लग जाना चाहिये।

सौरी घर के लिये जो कमरा चुना जाय, वह साफ सुथरा, सूखा और उजालेदार होना चाहिये। सौरी घर में सरदी, बदबू और धुआँ रहना बहुत ही बुरा है। ऐसे स्थान बच्चे और प्रसूती के लिये घातक हो पड़ते हैं। सरदी के दिन हों तो कोयला सुलगा कर बिना धूए की आग वहाँ रक्खी जा सकती है। आग में चन्दन और धूप आदि डालते रहना चाहिये ताकि वह स्थान सुगन्धित रहे और वहाँ किसी तरह की बदबू न रहने पाये।

प्रसूती को जब प्रकृत प्रसव वेदना आरम्भ हो, तब उसे सौरी घर में ले जाना चाहिये और चतुर दाई या मिडवाइफ की सहायता से प्रसव कराना चाहिये। पीठ और कमर तथा कभी कभी जाँघ तक दर्द मालूम होना, हर बार नियमित रूप से निश्चित समय के अन्तर पर रह रह कर दर्द का उपस्थित होना और गायब हो जाना, हर बार दर्द के साथ जरायु का मुँह थोड़ा थोड़ा खुलते जाना और उससे पानी निकलने लगना आदि प्रकृत प्रसव वेदना के लक्षण हैं। यह दर्द पहले अधिक समय के अन्तर से होता है, बादको जल्दी जल्दी और

अधिक जोर से होने लगता है। दर्द अगर जल्दी जल्दी होने लगे तो समझना चाहिये, कि प्रसव काल समीप आ गया है।

प्रसव वेदना।

(Labor Pain)

प्रसव वेदना आरम्भ होने के बाद अधिक से अधिक छः घण्टे के अन्दर बच्चे का जन्म हो जाना चाहिये। यही स्वाभाविक नियम है। इसमें प्रसूती को विशेष कष्ट भी न होना चाहिये, परन्तु अनियमित जीवनचर्या, कसकर कपड़े पहनना, आलस्यमय जीवन व्यतीत करना आदि अनेक कारणों से प्रसव के समय स्त्रियों के प्राण पर आ बनती है। ग्रामीण और जंगली जाति की रमणियाँ, जो सभ्यता के दलदल में नहीं फसीं, उन्हें प्रसव के समय शायद ही किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ता है। अस्तु।

प्रसव वेदना आरम्भ होने के बाद यदि बच्चे का जन्म होने मे विलम्ब हो और प्रसूती को कष्ट हो रहा हो, तो निम्नलिखित दवाओं का प्रयोग करना चाहिये।

चिकित्सा।

कोफिया ६—बहुत जोरों का दर्द होना, लेकिन कोई लाभ न होना, जल्दी जल्दी दर्द होना, दर्द के कारण प्रसूती का

रोना चिल्लाना और छटपटाना, मानसिक स्नायविक उत्तेजना हाथ न लगाने देना इत्यादि।

एकोनाइट ३X या ६—उपरोक्त दवा से लाभ न होने पर या प्रसूती को काफी पीने की आदत होने पर इसे देना चाहिये।

कैमोमिला १२ या ३०—एकोनाइट के बाद, अगर जरूरत हो तो इसे देना चाहिये। बहुत मानसिक उत्तेजना, हताश या निरुत्साह हो जाना, दर्द के कारण छटपटाना, जरा जरा सी बात में चिढ़ जाना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—कुछ देर तक जोरका दर्द होनेके बाद उसका धीमा पड जाना या एकदम बन्द हो जाना अथवा बहुत बडी उम्रमें पहले पहल बच्चा होने के कारण जरायु मुखका न खुलना इत्यादि लक्षणों में इससे विशेष लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०—अनियमित और धीमा दर्द, बारंबार मलमूत्र त्यागका वेग मालूम होना, प्रसूतीको पेसा

अधिक जोर से होने लगता है। दर्द अगर जल्दी जल्दी होने लगे तो समझना चाहिये, कि प्रसव काल समीप आ गया है।

प्रसव वेदना।

(Labor Pain)

प्रसव वेदना आरम्भ होने के बाद अधिक से अधिक छः घण्टे के अन्दर बच्चे का जन्म हो जाना चाहिये। यही स्वाभाविक नियम है। इसमें प्रसूती को विशेष कष्ट भी न होना चाहिये, परन्तु अनियमित जीवनचर्या, कसकर कपड़े पहनना, आलस्यमय जीवन व्यतीत करना आदि अनेक कारणों से प्रसव के समय स्त्रियों के प्राण पर आ बनती है। ग्रामीण और जंगली जाति की रमणियाँ, जो सभ्यता के दलदल में नहीं फसीं, उन्हें प्रसव के समय शायद ही किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ता है। अस्तु।

प्रसव वेदना आरम्भ होने के बाद यदि बच्चे का जन्म होने मे विलम्ब हो और प्रसूती को कष्ट हो रहा हो, तो निम्नलिखित दवाओं का प्रयोग करना चाहिये।

चिकित्सा।

कोफिया ६—बहुत जोरों का दर्द होना, लेकिन कोई लाभ न होना, जल्दी जल्दी दर्द होना, दर्द के कारण प्रसूती का

रोना चिल्लाना और छटपटाना, मानसिक स्नायविक उत्तेजना हाथ न लगाने देना इत्यादि।

एकोनाइट ३X या ६—उपरोक्त दवा से लाभ न होने पर या प्रसूती को काफी पीने की आदत होने पर इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—एकोनाइट के बाद, अगर जरूरत हो तो इसे देना चाहिये। बहुत मानसिक उत्तेजना, हताश या निरुत्साह हो जाना, दर्द के कारण छटपटाना, जरा जरा सी बात में चिढ़ जाना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—कुछ देर तक जोरका दर्द होनेके बाद उसका धीमा पड़ जाना या एकदम बन्द हो जाना अथवा बहुत बड़ी उम्रमें पहले पहल बच्चा होने के कारण जरायु मुखका न खुलना इत्यादि लक्षणों में इससे विशेष लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०—अनियमित और धीमा दर्द, बारंबार मलमूत्र त्यागका वेग मालूम होना, प्रसूतीको ऐसा

मालूम होना मानो प्रसव न होगा, पीठ और जाँघों में कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द।

नक्स मस्केटा ६ या ३०—अनियमित, धीमा और अकड़न जैसा दर्द, प्रसूती को सरदी लग जाना, सूखा और ठढा चमड़ा।

ओपियम ६ या ३०—दर्दका एकायक रुक जाना, शिर में रक्त सञ्चय, चेहरा लाल, तन्द्रालुता, इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—बहुत धीमा और बहुत समयका अन्तर देदेकर दर्दका होना, उत्तरोत्तर दर्द के कारण हृदय का काँपना और श्वास रोधका भाव, खुली हवामें जानेकी इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यह शीघ्र प्रसव कराने की अच्छी दवा है। इसकी दो तीन खुराकें देने से प्रसव वेदना का जोर बढकर शीघ्र प्रसव हो जाता है। २०० क्रमकी दवा देनेसे यदि गर्भ में बच्चा टेढा या अस्वाभाविक अवस्था में होता है तो वह सीधा हो जाता है।

सिकेली ६ या ३०—पल्सेटिला जैसे लक्षण, लेकिन पल्सेटिला देने पर काफी लाभ न हो तो इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम २ या ६—जरायुका मुह बहुत कड़ा होने या छाती पीठ और ऊपरकी ओर दर्द फैलने पर से देना चाहिये।

इग्नेशिया ६ या ३०—शोक, दुःख या हिस्टीरिया से पीड़ित प्रसूती को फटकर प्रसव होना, जरायु में दर्द और अकड़न, कतरने जैसा दर्द, पेट खाली मालूम होना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—प्रसव वेदना आरम्भ होने पर पेट पर तेलओर पानी की मालिश करनी चाहिये और प्रसवद्वार तथा उसके आस पासका स्थान नारियल का तेल लगाकर मुलायम कर देना चाहिये। दर्द आरम्भ होनेसे लेकर प्रसवके समय तक प्रसूती को दूध या पानी आदि जो कुछ खाने के दिया जाय, वह गरम होना चाहिये। ठंढी चीजें खाने पीने से प्रसव वेदना बन्द हो जा सकती है।

आक्षेप, अकड़न और मूर्च्छा।

(Spasmodic Pains, Cramps, Covulsions and Fainting)

प्रसवके, समय अनेक बार स्त्रियों को खींचन या अकड़न की शिकायत पैदा होती है, और कभी-कभी उन्हे मूर्च्छा भी आजाती है।

चिकित्सा।

केमोमिला १२ या ३०- कतरने जैसा दर्द और खींचन, एक गाल लाल, चिड़चिड़ा स्वभाव, अस्थिरता और मानसिक उतेजना।

बेलेडोना ६ या ३०—पेटमें दर्द मानों सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, शरीर में खींचन, चेहरा लाल, बहुत पसीना, अर्धअचेतनावस्था, मुँहसे फेन निकालना, अनजान में मलमूत्र त्याग, पासके आदमियों को मारने या काटने दौड़ना।

हौमियोपैथिक-चिकित्सा

हायोसायमस ६ या ३०–बेहोशी के साथ बहुत खींचन, भागने की चेष्टा, श्वासकष्ट, छाती में तकलीफ मालूम होना, विकार लक्षण।

स्ट्रैमोनियम ६ या ३०–हाथ पैरमें खींचन, प्रलाप तोतलाकर बातें कहना, दीर्घ निश्वास, पागलों की तरह हँसना और गाना।

इग्नेशिया ६ या ३०–बहुत उदासी, आक्षेप और अकड़न, ऐसा मालूम होना मानो साँस रुक जायगा इत्यादि।

ककुलस ६ या ३०–अंगों में खींचन या अकड़न, तलपेट में अकड़न, चेहरा लाल और गरम।

ओपियम ६–भयके कारण रोग, समूचे शरीर में आक्षेपिक स्पन्दन, बेहोशी, चेहरा नीला, अधमुँदी आँखें श्वास प्रश्वास में घड़घड़ाहट।

क्युप्रममेट और साइक्यूटा ६–यह दोनों भी इस रोग की अच्छी दवाएँ हैं।

मूर्च्छा या बेहोशी—प्रसूती मूर्च्छित हो जाने पर, लक्षणानुसार एकोनाइट, अर्निका, चायना, आर्सेनिक, कैम्फर, स्ट्रेमोनियम और इग्नेशिया आदि दवाएँ व्यवहार की जाती है। "मूर्च्छा" देखिये।

प्रसव।

(Labor)

भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न प्रकार से प्रसव कराने की प्रथा है। अनेक स्थानों में प्रसूती को उकड़ू बैठाल कर प्रसव कराते हैं। बंगाल में टेहुने और हाथोंके बल उकड़ू बैठाने की प्रथा है। विलायत में बायीं करवट सुलाकर, दोनों पैरों के बीच में तकिया लगा कर प्रसव कराया जाता है। चित लेटा कर प्रसव कराने से प्रसूती को कष्ट नहीं होता, परन्तु प्रसव-कार्य में अधिक समय लग जाता है।

स्वाभाविक प्रसव में बच्चे का शिर पहले निकलता है। यदि हाथ, पैर या चूतड़ आदि पहले निकलते हैं, तो प्रसूती का बड़ा कष्ट होता है और अनेक बार दाई डाक्टरों की सहायता लेने पर भी बच्चे या प्रसूती का प्राण संकट में पड़ जाता है। यदि बच्चे का शिर निकलने पर उसका चेहरा नीला पड़

जाय, तो उसकी बगल में उंगली डालकर जरा बाहर खींच लेना चाहिये, ताकि उसका कन्धा बाहर निकल आये। शिर पकड़ कर भूल में भी न खींचना चाहिये। इससे बच्चे की गर्दन टूट जा सकती है। कन्धे निकल आने पर बच्चे का शेष शरीर अपने आप बाहर निकल आता है।

प्रसव हो जाने पर खून में सने हुए कपड़े आदि बाहर कर देना चाहिये और बच्चे के मुँह में लार या श्लेष्मा आदि भरा हो, तो उँगली डाल कर उसे साफ कर देना चाहिये।

स्वाभाविक प्रसव में प्रसव के बाद करीब आधे घण्टे में फूल अपने आप गिर जाता है। उसे निकालने के लिये खींचा तानी न करनी चाहिये। अगर आधे घण्टेमें फूल न गिर जाय तो पन्द्रह पन्द्रह मिनट के अन्तर से पल्सेटिला ३० या सिकेली ३० का सेवन कराना चाहिये।

प्रसूति-परिचर्या।

(Treatment of the Delivery)

प्रसव के बाद प्रसूती को शान्त भाव से सुला रखना चाहिये और उसे किसी तरह भी उत्तेजित न होने देना

चाहिये। आवाज, तेज रोशनी, जोर से बातचीत करना, गाना बजाना आदि सभी बातो से उसकी मानसिक शान्तिमें बाधा पड सकती है।

यदि प्रसूती को प्रसव के समय बहुत कष्ट हुआ हो और उसके अङ्गो में सूजन तथा दर्द हो तो अर्निका ६ या ३० दिन में तीन बार, तीन चार दिन तक खिला देने से तकलीफ दूर हो जाती है। इस दवा का सेवन करने समय इसी का लोशन (मदर टिञ्चर एक भाग पानी १०) तैयार कर जननेन्द्रिय पर पट्टी चढ़ाने से दर्द और सूजन शीघ्र आराम हो जाती है। यदि प्रसवके समय योनिमुख और उसके आस पासका स्थान फटगया हो,तो अर्निका लोशन के बदले केलेण्डुला लोशन व्यवहार करना चाहिये। इससे जख्म शीघ्र भर जाते है।

प्रसव के बाद प्रसूती को नींद आ जाने से उसको तकलीफ बहुत कुछ घट जाती है। यदि मानसिक उत्तेजना के कारण उसे नींद न आये, तो एक दो बूंद काफिया दे देना चाहिये। यदि इससे भी लाभ न हो एकोनाइट।

प्रसव के दो तीन दिन बाद तक या जब तक स्तन में दूध न हो तब तक उसे केवल दूध या बार्ली, साबूदाना, आरारोट आदि हलकी चीजें खानेको देनी चाहिये। बुखार न हो तो चौथे दिनसे रोटी दी जा सकती है। प्रसूती को अधिक तादाद में घी या मसाले न खिलाना चाहिये। इनसे दस्तकी बीमारी हो सकती है।

प्रसवके वाद कई घन्टे तक चित्त सोना चाहिये ओ पाखाने पेशाव के लिये भी न उठना चाहिये। इसके वा दाहिनी या वायीं करवट लेटा जा सकता है। तीन चार दिनके वाद अर्धशायित अवस्था में वैठा जा सकता है। क्रमसे कम छ दिन सोरी घरमें इसी तरह विताना चाहिये। इसके वाद धीरे धीरे चलने फिरने का अभ्यास डालना चाहिये।

जव तक प्रसूती सोरी घरमें रहे, तव तक उसे खूव साफ रखना चाहिये। गन्दगी से अनेक रोग होने की सम्भावना रहती है।

प्रसव के वाद रक्तस्राव।

(Flooding after Delivery)

जरायुके साथ फूल जुड़ा रहता है, इसलिये फूल गिरने के समय तक वहुत कम रक्तस्राव होताहै या विलकुल ही नहीं होता। फूल गिरते समय थोड़ा वहुत रक्तस्राव होना स्वाभाविक है, परन्तु फूल गिरने के वाद जव तक जरायु का मुख वन्द नहीं हो जाता, तव तक यह रक्तस्राव जारी रहता है। अधिक रक्तस्राव होने पर प्रसूती वहुत कमजोर हो जा सकती है या उसका जीवन सकट में पड़ सकता है, इसलिये इसका इलाज तुरन्त करना चाहिये।

चिकित्सा।

अर्निका ६ या ३०—मूत्राशय पर दबाव, पेशाब का रुक जाना, समूचे शरीर या तलपेट में दर्द इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२—बहुत उत्तेजना, बेचनी, असह्य वेदना, दर्द के कारण छटपटाना और चिल्लाना, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि लक्षणों में और अर्निका से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३०—तलपेट में शूल जैसा दर्द, दर्द के साथ पाखाने का वेग, दर्द के कारण हिलने डोलने में डर मालूम होना इत्यादि। केमोमिला के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

काफिया ६—स्नायविक उत्तेजना, बहुत जोरों का दर्द, अथवा दर्द के बाद खींचन, समूचे शरीर का ठण्डा पड़ जाना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—नम्र प्रकृति की स्त्रियों का रोग, जल्दी जल्दी दर्द न होने पर भी कई दिनों तक दर्द का मौजूद रहना।

बेलेडोना ६ या ३०—एकायक दर्द का शुरू होना और एकायक गायब हो जाना, दर्द के कारण ऐसा मालूम होना मानो पेट से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, शिर पूर्ण मालूम होना, नींद न आना, तलपेट भरा हुआ मालूम होना और टटाना।

सिकेली ६ या ३०—बदन में बहुत दाह, गरमी बरदाश्त न कर सकना, बहुत समय तक दर्द मौजूद रहना, जरायु में प्रबल सकोचन, बदबूदार क्लेद स्राव इत्यादि। बहुत कमजोर और जिन स्त्रियों को बहुत बच्चे हो चुके हों, उन्हें इससे विशेष लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६–हिलने डोलने या जोरसे साँस लेने पर दर्द मालूम होना, मुँह सूखा इत्यादि।

जेल्सीमियम ३ या ६–दीर्घकाल स्थायी वेदना, अस्थिरता, निद्रावस्था में घडघडाना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०–दिनमें दर्दका बन्द रहना, रातके समय दर्द होना, पैरमें अकड़न, करवट बदलते रहने से आराम मालूम होना।

प्रसव के बाद क्लेद स्राव ।

(Lochia Discharge)

फूल गिरने के बाद योनिद्वार से क्लेद या एक तरहका स्राव निकलने लगता है। पहले दिन यह स्राव पानी जैसे पतले खूनके रूपमें निकलता है। इसके बाद दूसरे या तीसरे दिनसे लेकर दसवे दिन तक इसका रूप रग ऋतुस्राव जैसा रहता है। इसके बाद स्रावका रंग लाल न रहकर पीली आभायुक्त, हो जाता है। कुछ दिनों के बाद धीरे धीरे यह सफेद श्लेष्मा जैसा हो जाता है। कुछ दिनों तक इस तरह यह स्राव निकलकर, अन्तमें बन्द हो जाता है। तब किसी को बहुत थोड़े दिन और किसीको अधिक दिनों तक सकता है।

यह स्राव स्वाभाविक रूपमें होता हो,तो औषधोपचा की कोई आवश्यकता नहीं, परन्तु यदि स्राव बहुत दिनों त जारी रहे या बहुत अधिक तादाद में हो या एकायक रु जाय अथवा सर्दी,खानपान के दोष या किसी अन्य कार से उसके निकलने में बाधा पड़जाय तो किसी उपयुक्त औषधि का सेवन करना चाहिये।

चिकित्सा।

क्रोकस ६ या ३०—बहुत अधिक तादाद में बहुत दिनों तक स्रावका जारी रहना, काला काला खून निकलना।

एकोनाइट ३ X या ६—गहरे लाल रङ्गका बहुत रक्तस्राव होने पर इससे भी बहुत लाभ होता है। इसे दो तीन दिन सेवन करनेसे प्राय रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। जरायु में खुजली होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—किसी कारण से स्रावका रुक जाना, साथही शिरदर्द, शिरमें भार और पूर्णता, कमर में दर्द, थोड़ा पेशाब इत्यादि लक्षणों में या जरायु में ज्वालाकर वेदना के साथ गहरे लाल रङ्गका बहुत रक्तस्राव होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—मानसिक अवस्था की खराबी या सरदी लगने या किसी दूसरे कारण से अचानक

रुक जाना, साथही बुखार, प्यासका होना अथवा न होना आधे शिरमें दर्द, पैर ठंढे, पेशाव करने की प्रवल इच्छा, शामके वक्त तकलीफ का बढ़ जाना, सुबह आराम मालूम होना इत्यादि लक्षणों में या बहुत कम स्राव होने पर इससे लाभ होता है।

डाल्केमारा ६—सरदी लगने या पानीमें भीगने के कारण स्राव रुक जाय तो इसे देना चाहिये। पल्सेटिला के बाद इसे देनेसे काफी लाभ होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—बहुत दिनों तक पतला और बदबूदार स्राव होना, स्राव लगने के कारण जख्म हो जाना, इन्हीं लक्षणों में सिकेली भी दिया जाता है।

कोलोफाइलम ६ या ३०—बहुत दिनों तक अनजानमें

ओपियम ६—भयके कारण स्रावका रुक जाना साथही शिरमें रक्तसञ्चार आदि लक्षणों में इससे लाभ होता है। एकोनाइट भी इन लक्षणों में दिया जा सकता है।

आवश्यक सूचना—अधिकांश स्त्रियों का यह स्राव दसवें दिनके आसपास रुक जाता है। इसके बहुत पहले स्राव रुक जाने पर या इसके बहुत दिन बाद तक स्राव जारी रहने पर दवा खानी चाहिये।

दुग्ध-ज्वर।

(Milk Fever)

प्रसव के तीन चार दिन बाद स्तनों में दूध भरता है। इस समय बुखार, स्तन में दर्द, तपाहट, शिर में चक्कर तथा अन्यान्य स्नायविक लक्षण प्रकट हो सकते हैं। कभी कभी प्रसव के बाद बारह घण्टे के अन्दर ही यह लक्षण प्रकट होते हैं और कभी कभी प्रसव के पहले या प्रसव के समय से ही मौजूद रहते हैं। कष्टकर लक्षण होने पर औषधोपचार करना चाहिये।

चिकित्सा।

अर्निका ६ या ३०—स्तनो में कडापन, सूजन और तन्नाहट होने पर इसे देना चाहिये। साथ ही इसका लोशन तैयार कर दिन में दो बार स्तनों पर चढ़ानी चाहिये।

एकोनाइट३Xया६—तेज बुखार, सूखा और गरम चमड़ा, चेहरा लाल, स्तन कड़े और गाँठ भरे, अस्थिरता, उत्कण्ठा और निरुत्साहिता।

ब्रायोनिया ६ या ३०—स्तनों में तन्नाहट, छाती जकड़ी हुई, शिर में जोरो का दर्द, कब्जियत इत्यादि लक्षणों मे और एकोनाइट से पूरा लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—ब्रायोनिया से सब शिकायतें पूर्ण रूप से दूर न होने पर इसे देना चाहिये। स्तन कड़े, लाल और भारी, ज्वर भाव, दपदपी,शिर में दर्द, चेहरा और आँखें लाल, आवाज और रोशनी बरदाश्त न होना इत्यादि लक्षणों में इससे विशेष लाभ होता है।

केमोमिला ६ या १२—बहुत स्नायविक उत्तेजना बेचैनी, स्तनों का टटाना, बोंटे में सूजन, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—तेज बीमारी, स्तनों में बहुत सख्ताहट, सूजन, वात जैसा दर्द, छाती की कन्धे और बगल तक दर्द का बढ़ना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—पल्सेटिला जैसे लक्षण, समूचे बदन में वात जैसा दर्द, स्तनों में सूजन, गरमी और कड़ापन, शिर दर्द, जोडोंका अकड़ जाना, कमजोरी इत्यादि।

कल्केरियाकार्ब ६ या ३० — स्तनमें देरी से दूधका भरना, स्तन भरे हुए मालूम होना, ठढी हवा बरदाश्त न होना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—दर्द होने पर स्त्रियाँ स्तनों को दाबकर उनका दूध निकाल दिया करती हैं, परन्तु इस उपाय से अनेक बार तकलीफ बढ़ जा सकती है।

प्रसव के बाद मूत्र-रोध।

(Retention of urine after Delivery)

कष्टकर प्रसव या प्रसव के समय मूत्राशय आदि में चोट लगने के कारण अनेक बार प्रसूती का पेशाब बन्द हो जाता है या बहुत कष्टके साथ पेशाब होता है।

चिकित्सा ।

आर्निका ३ या ६—प्रसव के बाद मूत्राशय में चोट लगना या कष्ट कर प्रसव के बाद पेशाब का बन्द हो जाना, कमर के पिछले भाग में छिल जाने जैसा दर्द इत्यादि ।

बेलेडोना ३ या ६—बारंबार पेशाब का वेग, थोड़ा पेशाब होना या बिल्कुल ही पेशाब का न होना, मूत्राशय में तन्नाहट, पीठकी ओर दर्द इत्यादि ।

इक्विसेटम १X—बेलेडोना के लक्षण में और उससे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

पल्सेटिला ६ या ३०—पेशाब बन्द, तलपेटमें जलन, टटाना, लाली और गरमी, हिलने डोलने या खाँसने से अनजान में पेशाब इत्यादि ।

केन्थरिस ६ या ३०—बारबार पेशाब का वेग और जलन होने पर इसे देना चाहिये ।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पेशावका वेग, लेकिन जो
लगने पर भी पेशाव का न होना, मूत्राशय में दर्द, कब्जिय
इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—पेशाव और दस्त दोनोका ब
हो जाना,दो मेंसे किसी का भी वेग न होना इत्यादि।

हायोसायमस—मूत्राशय के पक्षाघात या लकवे
कारण पेशाव बन्द हो जाने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—गरम पानीका सेंक दिया जा सकत
है, परन्तु जलन होने पर सेंक देना ठीक नहीं। दवा के
सेवन से लाभ न होने पर किसी चतुर चिकित्सक द्वारा
सलाई डलवाकर पेशाव कराया जा सकता है।

प्रसवके वाद दस्त।

(Diarrhœa after Delivery)

प्रसव के पहले पतले दस्त आनेसे अनेक वार प्रसव के
वाद तक इनकी शिकायत वनी रहती है। कभी कभी प्रसूती
को अधिक घी या मसाले आदि खिलाने से भी उसे दस्त

आने लगते हैं यह रोग बहुत ही बुरा है । इसे जितनी जल्दी हो सके, दूर करने की चेष्टा करनी चाहिये ।

चिकित्सा ।

चायना ३०—बहुत कमजोरी और रसरक्त स्रावके कारण दस्त, मलके साथ अजीर्ण पदार्थ निकलना इत्यादि ।

पल्टेसिला ६ या ३०—बहुत जोर लगाना, मलद्वारका फूल उठना, अथवा मलद्वारमें दर्द और केवल श्लेष्मा निकलना, ठढ मालूम होना, रातके समय या तड़के दस्त होना, घी या घीकी पकी चीजें खाने के कारण अतिसार ।

डालकेमारा ६—पसीना रुक जाने और ठंढ या सरदी लगने के कारण दस्त आना, दोपहर के बाद या रातके समय रोगका बढ़ना, पेटमें दर्द, दस्त हो जाने पर दर्द का बन्द हो जाना इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिये ।

रिउम ६ या ३०—मलमें खट्टी गन्ध, दस्त के बाद भी कॉखना और दर्दका मौजूद रहना, रातके समय कष्टका बढना, बहुत कमजोरी और मृत्युभय इत्य

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—सुवह तड़के या रातके समय अधिक दस्त आना, जीभपर सफेद लेप, पाकाशय का गोलमाल इत्यादि ।

सिकेली ६ या ३०—बदबूदार और बहुत कमजोरी लानेवाले दस्त हों तो इसे देना चाहिये ।

एसिड फस६या३०—तेज बीमारी,पानी जेसे पतले दस्त बिना दर्दके दस्त अथवा अनजान मे दस्त हो जाना इत्यादि ।

अन्यान्य दवाओं के लिये "अतिसार या सग्रहणी" देखिये ।

प्रसव के बाद कब्जियत ।

(Constipation after Delivery)

प्रसव के बाद कई दिनों तक दस्तका न होना स्वाभाविक है । इस अवस्था में कोई दवा देने की जरूरत नहीं । यह एक अच्छा लक्षण है और इससे प्रसूती की ताकत बढ़ती है । जुलाब या दस्तावर दवाएँ तो किसी हालत में भी न देनी चाहिये क्योंकि उनसे लाभके बदले प्राय हानि ही होती है । यदि पॉच छ दिनके बाद प्रसूती पेटमें दर्द या शिर भारी

होनेकी शिकायत करे तो एक दो खुराक ब्रायोनिया देने से प्राय: दस्त हो जाता है और तकलीफ दूर हो जाती है, यदि इससे लाभ न हो तो नक्सवोमिका, सल्फर या कब्जियत की दवाओं में से कोई दवा चुनकर देनी चाहिये। एक या दो दिनमें इससे भी दस्त न आयें, तो मलद्वार में कुसुम पानी की पिचकारी देनी चाहिये। इससे तुरन्त दस्त हो जायगा और रोगिनी को कोई हानि न होगी।

सूतिका ज्वर।

(Puerperal Fever)

यह एक बहुत ही खराब और भयानक बीमारी है। इस का मूल कारण एक तरह का विष या जीवाणु है। परन्तु किसी तरह प्रसूती की जननेन्द्रियका दूषित होना, प्रसव के बाद गन्दा खून या सड़ा हुआ स्राव जरायु और योनिद्वारमें जमा रहना, कष्टकर प्रसव, चीरफाड़की सहायता से प्रसव कराना, मूत्रस्थलीका अच्छी तरह न फैलना, जरायु और योनि में जख्म या प्रदाह, जरायु के अन्दर फूलका टुकड़ा रह जाना और उसका वहाँ सड़ना, प्रसव के बाद खून बन्द करने के लिये लौह संयुक्त दवाएँ या बरफ का प्रयोग करना प्रसव के बाद दस्तावर दवाएँ खाना इत्यादि इसके उत्तेजक कारण माने जाते हैं।

इस ज्वरकी पहचान बहुत सहज है। प्रसव के तीन चार दिन बाद बुखार का होना और दिनोदिन उसका तेज होते जाना इसका प्रधान लक्षण है। बुखार आनेके पहले शरीर और हाथ पैरमें ऐंठन, नाड़ी बहुत तेज, जाड़ा लगकर बुखार आना, बहुत तेज बुखार, प्यास, पेटमें बहुत दर्द और टटाना, समूचे शरीरमें तकलीफ,पेट फूला हुआ,क्षुधाहीनता,मिचली और कै, स्रावका एकायक बन्द हो जाना या बदबूदार स्राव होना, स्तन का दूध सूख जाना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

यह बहुत ही तेज बीमारी है। इसकी वृद्धि इतनी तेजीसे होती है कि अनेक बार कुछ घण्टो में ही रोगिनी का प्राणान्त हो जाता है। ७-८ दिन से अधिक शायद ही कोई रोगिनी जीती है। जरायु से पीब जैसा बदबूदार स्राव निकलना बहुत ही बुरा लक्षण माना जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६–रोगके आरम्भ में बहुत तेज बुखार, जाड़ा, कपकपी, नाड़ी तेज और कठिन, शरीर सूखा पेट फूला और दर्द भरा, बहुत प्यास, जरायु में दर्द, तेज श्वासप्रश्वास, स्तन ढीले, दूधका सूख जाना, स्रावका बन्द हो जाना इत्यादि।

विरेट्रम विरिडि १—यह इस रोगकी एक बढ़िया दवा है। खींचन या आक्षेप के कारण यदि ऐसा मालूम हो कि,रोगिनी का प्राण शीघ्रही निकल जायगा तो इसे पॉच पॉच मिनट के अन्तर से देना चाहिये। खींचन कम हो जाने पर दवा देनेका समय भी बढ़ा देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—डक मारने जैसा दर्द जरायु में प्रसव वेदना जैसी वेदना, प्यासका न होना थोड़ा पेशाव,श्वास कष्ट, नाड़ी तेज और कोमल, शरीर बहुत गरम, हाथ पैर ठंढे, स्रावका वन्द हो जाना और दूध सूख जाना।

आर्निका ३ या ६—कष्टकर प्रसव या अस्त्रक्रिया द्वारा प्रसव कराना, गर्भमें फूलका अटक रहना, बदबूदार स्राव, शरीर और हाथ पैर ठंढे, माथा गरम, बदन में पेंठन, पेटमें दर्द, बहुत थकावट मालूम होना, जी मिचलाना, अरुचि, अनिद्रा, प्यास का न होना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ [illegible] स्तन दूध भरे और फूले हुए [illegible] दर्द [illegible] में [illegible] या स्रा [illegible] जाना [illegible] शिर

]

फट जायगा, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, मिचली, मूर्च्छा, अधिक प्यास, कब्जियत, मल सूखा और कठिन।

कोफिया ६ या ३०—मानसिक उत्तेजना के कारण सूतिकाज्वर, जीभ गीली, प्यासका न होना, प्रलाप, अनिद्रा निराशा, पेटमें दर्द, स्पर्श बरदाश्त न होना।

बेलेडोना ६ या ३०—जाड़ा, ताप और पसीना, पेटमें बहुत दर्द और तन्नाहट, दर्दका एकाएक गायब होना, स्रावका बन्द हो जाना या थोड़ा तादाद में बहुत बदबूदार स्राव होना, प्रलाप, शिरमें दर्द, शिरमे रक्ताधिक्य, चेहरा और आँखें लाल, शोरगुल और रोशनी बरदाश्त न होना, नींदसे चौंक चौंक पड़ना।

रसटक्स ६—जरायु में प्रदाह, निचले अगमें अवसन्न करनेवाला दर्द, बहुत बदबूदार स्राव, टायफाइड बुखार जैसे लक्षण इत्यादि।

मर्क्युरियस कर ६—पेटमें कतरने जैसा दर्द, दर्दके कारण पेटपर हाथ न रखने देना, बहुत अधिक प्यास, खून और आँव मिला दस्त इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—पेटमें जलन और दर्द, अस्थिरता, अनिद्रा मृत्युभय, बड़ी तेजीके साथ कमजोरी का बढ़ना, शरीर बहुत गरम, प्यास, थोड़ा थोड़ा पानी पीना, मिचली और कै, शिरमें दर्द और चक्कर, प्रलाप, नाड़ी क्षुद्र, क्षीण, और सविराम, बदनमें दाह आधीरात के बाद तकलीफ का बढ़ना।

बेप्टीशिया ३ X या ६—सूतिका ज्वर के साथ टायफाइड जैसे लक्षण, बदबूदार स्राव, बहुत कमजोरी, पेशाब में बदबू, कमजोरी लानेवाले बदबूदार दस्त।

कोलोसिन्थ ६—पेटका फूलना, पेटमें शूल जैसा दर्द, ज़ोरसे दबाने या सामने की ओर झुक जाने पर आराम मालूम होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बारबार मलत्याग करनेकी इच्छा, पेशाब का कष्टदायक वेग, बदबूदार क्लेदस्राव, स्रावका बहुत अधिक होना या बन्द हो जाना, मिचली और कै।

ओपियम ६ या ३०–डर जाने के कारण यह रोग होना, वकझक या प्रलाप, चेहरा लाल और भर्राया हुआ, आँखे फूली हुई, वहुत वेहोशी, श्वासमें घड़घड़ाहट इत्यादि।

चायना ६ या ३०–रोगको अन्तिम अवस्था में रोगिनी को वहुत कमजोर हो जाने पर या, वहुत रक्तस्राव होने पर इससे लाभ होता है।

एसिडफस ६ या ३०–सूतिका विकार, अवसन्नता, वहुत परिमाण में पसीना, समस्त विषयों में उदासीनता, शिरमें भार, प्रलाप, हाथ पैर ठण्ढे इत्यादि।

किनिनम आर्स ६ या ३०–वहुत सुस्ती, वेहोशी में वुदवुदाना, मलद्वारमें सदा हाथ लगाना, अनजानमें दस्त हो जाना इत्यादि।

एसिडम्यूर ६ या ३०–सूतिका ज्वर, विकार लक्षण, चायना और किनिनम आर्ससे लाभ न होना इत्यादि।

लेकेसिस ३०–अचेतन्य भाव, वदवूदार स्राव, पेशाव बन्द, पेट फूला हुआ और वेदना युक्त, कमर में कपड़ा न रख

सकना, कब्जियत, नींदके बाद समस्त रोग लक्षणों का बढ़ जाना इत्यादि।

सिकेली ६ या ३०—जरायु में सड़न, बदबूदार स्राव, तेज बुखार और कम्प, पेटमें दर्द, पेशाब बन्द, बदबूदार दस्त, प्रलाप, प्रसव के बाद भी प्रसव जैसा दर्द जारी रहना।

स्ट्रेमोनियम ६ या ३०— मानसिक उत्तेजना, तेज प्रलाप, ऐसा मालूम होना मानो शिर नीचे गिरा पड़ता है, जरायुप्रदाह इत्यादि।

कार्बोवेज ३०—जरायु में सड़न पैदा होने के पूर्व लक्षण बदबूदार स्राव, सूतिका ज्वरकी अन्तिम अवस्था में अवसन्नता।

केलीफस ३Xविचूर्ण—इस दवा से भी अनेक बार बहुत लाभ होता है।

पाइरोजन ६ या ३०—पीब होनेके कारण खून खराब हो जाय तो इसे देना चाहिये।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—सरदी या मानसिक अवस्था के कारण क्लेदस्रावका बन्द हो जाना, साथ ही पेटमें दर्द, शिरमें तेज दर्द, प्रलाप, चेहरा नीला, बहुत कमजोरी, स्तनमें डङ्क मारने जैसा दर्द इत्यादि।

आवश्यक सूचना—रोगिनी का शरीर और वासस्थान खूब साफ रखना चाहिये। जब तक तेज बुखार रहे,तब तक साबूदाना और बार्ली आदि हलकी चीजें खानेकोदेना चाहिये। बुखार घट जाने पर मूँगकी दाल और फुलके आदि दिये जा सकते हैं। मांस मछली खाना मना है।

प्रसूत।

(Pernicios Anœmia)

इस रोगको पुराना सूतिका ज्वर भी कहते हैं, परन्तु वास्तव में यह एक दूसरा ही रोग है। सूतिका ज्वर कभी पुराना होता ही नहीं। उसका रोगी या तो ८-१० दिनमें मर जाता है या इसके बाद अच्छा हो जाता है। इसके विपरीत प्रसूत रोग नयी अवस्था में शायद ही अच्छा होता है। अधिकांश स्थानों में यह पुराना हो जाता है और उस अवस्था में या तो अच्छा हो जाता है या रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

प्रसूत का मूल कारण कोई विष या जीवाणु नहीं है। वास्तवमें यह एक तरहकी तेज रक्तस्वल्पताहै। प्रसवके समय प्रसूती की उचित सेवा सुश्रूषा न होने पर उसका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है और उसे यह रोग हो जाता है। रोगके आरम्भ में अनेक बार सूतिका ज्वर जैसे लक्षण प्रकट होते हैं, परन्तु साधारणतः इसका बुखार बहुत धीमा होता है और रात दिन बना रहता है। कभी कभी दोपहरके बाद कुछ बढ़ जाया करता है, धीरे धीरे रोगिनी कमजोर हो जाती है, उसके शरीर में रक्तस्वल्पता के चिन्ह दिखायी देते हैं और पतले दस्त, शोथ, खाँसी, बेचैनी, शिरके केशोंका झड़ जाना, अरुचि अक्षुधा, शिरमें चक्कर, रतौंधी इत्यादि उपसर्ग प्रकट होकर अन्तमें रोगिनी की मृत्यु हो जाती है। यह रोग बहुत ही मन्दगति से बढ़ता है। कभी रोगिनी चार ही छः महीने में मर जाती है और कभी कभी इससे बरसों तक भुगता करती है।

चिकित्सा।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—खूनकी कमी, शरीर सूखा और पीला, कलेजे का धड़कना, पाकाशय फूला हुआ कब्जियत, सदा उदास या खिन्न रहना।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत तेजी के साथ कमजोरी का बढ़ना, शोथ, जी मिचलाना, खाये हुए पदार्थों की या काले रक्तकी कै होना, बहुत प्यास, लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, हिचकी, पेटमें जलन, आधी रातके समय रोगका बढ़ना, गरम सेंकसे आराम मालूम होना, बहुत अस्थिरता, बदबूदार दस्त इत्यादि।

फेरममेट ३०—बदनमें खूनकी बहुत कमी, ज़रा भी हिलने डोलने से चेहरे का लाल हो जाना, भोजन के कुछ देर बाद कै हो जाना।

एल्यूमिना ६ या ३०—शरीर में खूनकी कमी, थोड़े परिमाण में फीका रजःस्राव, कब्जियत, सोंधी मिट्टी, खड़ी, कोयला आदि चीजें खानेकी इच्छा, बहुत पतला और सफेद रंगका प्रदर, शामको ४ से लेकर ८ बजे तक बुखार आना।

सीपिया ३०—रक्तस्वल्पता, चिड़चिड़ा स्वभाव, परिश्रम करनेकी इच्छा न होना, तलपेटमें खूनका जमा होना, जरायु और योनिद्वार का टल जाना, पीले रक्तका प्रदर, जरायु के बाहरी भागमें सूजन और खुजली, जलन और जख्म, ऋतु

वन्द, तलपेटमें भार, मानो पेटकी सव चीजे योनिद्वार से बाहर निकल पड़ेंगी, मिचली इत्यादि।

पल्टेसिला ३०—रक्तस्वल्पता, सदा जाड़ा सा लगना, परन्तु ठंढी हवामें जानेसे आराम मालूम होना, नम्र और क्रन्दनशील प्रकृति, भूख न लगना, प्यास बिलकुल न होना, लौह संयुक्त दवाएँ या क्वीनाइन खाने का कुफल इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बहुत चिड़चिड़ा स्वभाव, बदहज़मी, अम्ल या पित्तकी कै, शिरमें दर्द, सुबह रोगका बढ़ना, मुँहमें खट्टा स्वाद, कब्जियत, वारवार पाखाने का वेग लेकिन दस्त साफ न होना, सदा जाड़ा मालूम होना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—दस्त, अधिक रज, खून या दूध निकलने के कारण कमजोरी और उस कमजोरी के कारण यह रोग होना, आँखों से कम दिखायी देना, कानमे भों भों आवाज, नींद न आना इत्यादि।

फोस्फरस ३० या २००—प्रसूत के साथ क्षय रोगका कोई दोष मौजूद रहना, खेद, निराशा, रक्तस्राव, पतले दस्त,

रातमें पसीना, आखोंके चारों ओर फूलन ओर श्यामता, सूखी खासी, दुर्बलता, सफेद, पतला ओर चिकना प्रदर, ऋतुके समय प्रदर स्राव इत्यादि ।

इनके अतिरिक्त केलीकार्ब, हाइड्रेस्टिस, ग्रेफाइटिस ओर हेलोनियम आदि दवाओ से भी लाभ होता है। कलके-रियाफस, ३ ओर फेरमआर्स ३० इस रोगकी बढ़िया दवाएं हैं। इनके प्रयोग से अनेक रोगिनियाँ आराम हो चुकी है।

आवश्यकसूचना—हलकी ओर पुष्टिकर चीजें खाना चाहिये। मांस मछली का शोरवा खाने ओर घनेष पची का तेल बदनमें मालिश करने से विशेष लाभ होता है।

सूतिकोन्माद ।

(Puerperal Mania)

यह रोग साघातिक न होने पर भी बहुत ही कष्टदायकहै। गर्भावस्था में या प्रसवके बाद किसी भी समय यह रोग हो सकता है, इसका वास्तविक कारण अभी तक ज्ञात नहीं हो सका। किन्तु कष्टकर प्रसव,अस्त्रोंकी सहायतासे प्रसव कराते समय जननेन्द्रियमें चोट लगना या रक्तस्राव,बहुत बच्चेहोनेके

कारण रक्तस्वल्पता और अवसन्नता, जननेन्द्रियकी उत्तेजना, सूतिकावस्था में आक्षेप और सूतिकाज्वर, वंशगत उन्मादरोग, भय, शोक, दुःख और आनन्द का आवेग इत्यादि इसके उद्दीपक कारण माने जाते हैं।

यह रोग होने पर अनिद्रा, चेहरा, और शिरमें रक्ताधिक्य, शिरमें भार मालूम होना, आँखो से धुंधला दिखायी देना, टकटकी लगा कर देखते रहना, ज्ञान, बुद्धि और स्मरण शक्ति का लोप, स्तन में दूध की कमी या बिल्कुल ही दूध का न होना, कभी क्रुद्ध होकर सबको मारने दौड़ना, कभी उदास रहना, कभी आत्महत्या करने की प्रवृत्ति, पति और बच्चों पर श्रद्धा का न रहना, सदा हल्ला गुल्ला मचाये रहना इत्यादि लक्षण प्रकट होते है।

चिकित्सा।

अरममेट ३ या ६—सदा आत्महत्या करने की इच्छा, अनिद्रा, ज्ञान और बुद्धि का लोप हो जाना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—भागने या छिप रहने की इच्छा, भूत का भय, जब तब क्रोधित हो उठना, रात में नींद न आना, शिर में दर्द, चेहरा और आँखे लाल, इत्यादि।

हायोसायमस ६ या ३०—बहुत क्रोध करना, मनमें दुखी होना, बुद्धि लोप, सगे सम्बन्धियों की पहचान न सकना निर्लज्जता, नंगे हो जाने की इच्छा, सदा मन में यह सोचना कि उसे कोई विष खिला देगा इत्यादि।

—

प्लेटिनम ६ या ३०—जननेन्द्रिय में खुजली, योनि-द्वार से काले रंग का पतला स्राव, सब लोगों पर विरक्ति, अनेक विषयों की चिन्ता करना इत्यादि।

—

पल्सेटिला ६ या ३०—शान्त और नम्र प्रकृति की स्त्रियों को यह रोग होना, निस्तब्ध और विमर्ष भाव, आँखें बन्द करने पर तरह तरह की सुन्दर मूर्तियाँ दिखायी देना, गायन वादन सुनायी देना, रात के आरम्भिक भागमें अनिद्रा।

—

स्ट्रेमोनियम ३ या ६—बहुत पागलपन, क्रोध, काटने दौड़ना, अकेले या चुप रहने की इच्छा न होना, निर्लज्जता, इत्यादि।

—

केनेबिस इन्डिका ६—तेज भावपूर्ण प्रलाप, ऐसी बातें कहना मानो सोच समझ कर या किसी देवता की

कह रहा है, अकेले और अँधेरे में रहने की इच्छा, रह रह कर रोगिनी की शारीरिक और मानसिक क्रिया का निस्तब्ध भाव इत्यादि।

सल्फर ३०—धार्मिक विषयों की बातें सोचना, अपनी मुक्ति के लिये चिन्ता करना, बहुत गरमी मालूम होना, अनिद्रा, पैर ठण्ढे इत्यादि।

विरेट्रम ६ या ३०—प्रत्येक वस्तु, जड और चेतन सभी को आलिङ्गन करने की इच्छा, ठंढा पानी पीने और ठंढी तथा स्निग्ध चीजें खाने की इच्छा।

इनके अतिरिक्त सिमिसिफिउगा, एग्नस केक्टस, पेट्रोलियम, केली कार्ब आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

स्तन में दूध न होना।

(Agalactia)

शारीरिक दुर्बलता या खान पान के दोषसे प्रसव होनेके बाद अनेक स्त्रियोंके स्तनमें दूध या तो होता ही नहीं या बहुत

कम होता है या होकर कुछ दिनोंमें एकाएक सूख जाता है इन शिकायतों में निम्नलिखित दवाएं व्यवहार की जाती हैं।

पल्सेटिला ६ या ३०—अचानक दूधका सूख जाना, या दूध भरनेमें विलम्ब, साथ ही आधे कपालमें दर्द, शिरमें चक्कर शिरमें रक्तसञ्चय इत्यादि लक्षण दिखायी देते ही इसका सेवन कराना चाहिये। इससे रोग बढ़ने नहीं पाता और काफी दूध होने लगता है।

क्लकेरिया कार्ब ६ या ३०—पल्सेटिलासे थोड़ा लाभ हो, और कुछ शिकायतें ज्योंकी त्यों मोजूद हों तो इसे देना चाहिये।

एकोनाइट ३x या ६-बुखार, चमड़ा सूखा और गरम, नाड़ी कठिन और तेज इत्यादि लक्षण होने पर, जब तक यह लक्षण बदल न जायें तब तक इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६—भूख न लगना, मानसिक उद्वेग, दीर्घकाल स्थायी बदबूदार स्राव इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—कब्जियत, भूख न लगना, खाने पर जी मिचलाना, होंठ और मुँह सूखा हुआ इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—स्तन भारी और बड़े हो जाना, शिरमें दर्द, निद्रा न आना, चेहरा और आँखें लाल, शिरमें रक्त संचय इत्यादि।

इनके अतिरिक्त क्रोधके कारण दूध सूख जाने पर कैमोमिला ६ या १२। लाल रंगका पानी जैसा दूध निकले और बच्चा उसे पीते ही कै करदे, तो लेकेसिस ३०। दूषित दूध, बच्चा पीना पसन्द न करे या पीतेही कै करदे तो साइलीसिया ३०। बहुत थोड़ा दूध होना या सर्दी के कारण दूधका सूख जाना इत्यादि लक्षणों में डाल्केमारा ६। रक्तस्रावके कारण सुस्ती, स्तनमें दूध न होनेपर भी उनका चरचराना—सिकेली ६ या ३०। एसिडफस, एसाफिटिडा, आर्सेनिक और सल्फर आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

स्तन में अधिक दूध होना।

(Galactorrhœa)

शारीरिक अस्वस्थता के कारण किसी किसी प्रसूता के स्तनों में अधिक दूध होता है। इसके कारण स्तनों का फूल उठना, उनमें दर्द होना, अपने आप दूध का निकलते रहना,

बहुत दूध निकलने के कारण रोगिनी का कमजोर हो जाना, बदहजमी, शिर में दर्द, शिर में चक्कर इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती हैं।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। प्रायः इसी के व्यवहार से सभी शिकायतें दूर हो जाती हैं।

फोस्फरस ३० या २००—कल्केरिया कार्ब से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—स्तनों में बहुत दूध भरना, दूध के कारण स्तनों का फूल जाना, शरीर में स्थान स्थान में दर्द, चलने फिरने या हिलने डोलनेसे आराम मालूम होना इत्यादि।

नेट्रमसल्फ १२X विचूर्ण—एकाएक स्तनों में बहुत दूध भर आये तो इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—बहुत दूध निकलने के कारण तबियत खराब हो जाना, भूख न लगना, बहुत कमजोरी, रातमें पसीना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—बहुत दूध निकलने या बहुत रक्त-स्राव होने के कारण कमजोरी, कमजोरी के कारण अपनेआप दूध का निकलते रहना।

एकोनाइट ३X या ६—स्तन में अधिक दूध निकलने के साथ बुखार, अस्थिरता और प्यास आदि की शिकायत हो तो इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६या ३०—अधिक दूध भरनेके कारण स्तनों का फूल उठना और उनका टटाना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—पतली चीजों का खाना पीना कम कर देने से थोडा बहुत लाभ होता है।

स्तन की भिटनी में जख्म।

(Sore Nipples)

छोटी उम्र मे बच्चा होने, बच्चे को बारंबार दूध पिलाने या किसी प्रकार का चर्म रोग बैठ जाने के कारण यह रोग होता है और भिटनी में दर्द, तपाहट, जख्म, उससे खून निकलना आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—स्तन की भिटनी में जख्म और दर्द, साधारण जख्म होकर उसमें पीव पड़ना, भिटनी फटी फटीसी दिखायी देना इत्यादि ।

ग्रेफाइटिस ६—भिटनी में जख्म और दर्द, बहुत तन्नाहट और जलन, लाल लाल फुन्सियों का निकलना ।

हिपर सल्फर ६ या ३०—भिटनी में जख्म और तन्नाहट, पीव पड जाना या पीव पड़ने के लक्षण दिखायी देना, जख्म में जलन और कॉटा लगने जैसा दर्द, जख्म से जरा में ही खून निकलना इत्यादि ।

सल्फर ३०—भिटनी में तन्नाहट, जख्म, देखने में फटा फटा, जलन, जरा में ही खून निकलना इत्यादि ।

आवश्यक सूचना—केलेण्डुला या आर्निका लोशन से दिन में तीन चार बार स्तन को धो देने या स्तन पर इनकी पट्टी चढाने से लाभ होता है। पानी में फिटकरी या सुहागा घिस कर भिटनी पर लगाने से भी तकलीफ घट जाती है।

बेलेडोना ३ या ६—स्तन प्रदाह, स्तन का रंग चमकीला लाल, जलन के साथ दर्द, स्तन कड़ा और फूला हुआ, भार मालूम होना इत्यादि लक्षण में इसे देना चाहिये। रोग का आरम्भ होते ही इसे और इसके साथ ब्रायोनिया पर्यायक्रम में देने से रोग आगे नहीं बढ़ने पाता और तकलीफ घट जाती है।

आर्निका ३ या ६—किसी तरह की चोट लगने के कारण यह रोग होना स्तन में बहुत दर्द और तपाहट, किसी हालत में भी आराम न मालूम होना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—स्तन कड़े, फूले और भारी, ज्वर भाव, हिलने डोलने से तकलीफ, स्थिर बैठने से आराम मालूम होना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। रोग के आरम्भ में बेलेडोना के साथ और बुखार होने पर एकोनाइट के साथ इसे पर्यायक्रम में देने से काफी लाभ होता है।

मर्क्युरियस सल ६—यदि सूजन बढ़ती ही जाये और पीव पड़नेका डर मालूम हो तो इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६—मर्क्युरियस देने पर भी यदि पीव पड़ जाय, और टपक जैसा दर्द हो तो इसे देना चाहिये। इससे फटकर पीव निकल जाता है।

स्तन प्रदाह ।

(Mastitis)

स्तन में अधिक दूध सञ्चित होना, सरदी या ठण्ढ लगना, किसी तरह की चोट लगना, स्तन में दूध का जम जाना इत्यादि कारणों से प्रायः प्रसव के दो तीन सप्ताह बाद स्तन प्रदाह होता है। यह रोग होने पर स्तन का फूलना, दर्द, जाड़ा लगना, बुखार, स्तन में तनाहट इत्यादि लक्षण प्रकट होते है और कभी कभी स्तन पक भी जाते हैं।

चिकित्सा ।

फाइटोलेक्का ३X या ६—स्तन प्रदाह की, खास कर स्तन बहुत कड़े होने पर—यह बढ़िया दवा है। इसका सेवन करते समय इसी का लोशन तैयार कर स्तन पर पट्टी चढ़ाने से दूना लाभ होता है।

एकोनाइट ३X या ६—सरदी लगने के कारण यह रोग होने पर या इसके साथ तेज बुखार होने पर इसे देना चाहिये। इसके साथ पर्यायक्रम में ब्रायोनिया देने से विशेष लाभ होता है।

का कठिन हो जाना, उसे झुका न सकना, उस स्थान में उँगली गडाने से वहाँ गढ़ा हो जाना, बहुत दर्द होना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। अनेक बार यह शोथ समूचे बदनमें फैल जाता है। उस हालत में दर्द कम हो जाता है। साधारण अवस्था में एक सप्ताह तक और कभी कभी बहुत दिनों तक रोगिनी इससे पीड़ित रहती है।

चिकित्सा।

पल्सेटिला, हेमामेलिस, एपिस और रसटक्स इसकी प्रधान दवाएँ हैं। लक्षणानुसार एकोनाइट, अर्निका, बेलेडोना, ब्रायोनिया, लेकेसिस, आर्सनिक, कल्केरिया कार्ब, केलीकार्ब, नक्सवोमिका, लाइकोपोडियम और सल्फर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जा सकती हैं।

वस्तिकोटर में फोड़ा।

(*Pelvic Abscess*)

कष्टकर प्रसवके बाद कभी कभी वस्तिकोटर में फोड़ा हो जाता है। यह रोग होने पर कम्पके साथ बुखार, वस्ति प्रदेश में तन्नाहट, सुई चुभोने जैसा दर्द, जलन, पाखाना पेशाब में कष्ट, जननेन्द्रिय प्रदेशका फूल उठना, और वहां पीब पड़ जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

प्रथमावस्था में एकोनाइट या ब्रायोनिया से विशेष लाभ होता है। प्रसवके समय चोट लगने के कारण यह रोग होने पर अर्निका। अचानक रोग का आक्रमण होनेपर कोनायम। रोगकी द्वितीयावस्था में एपिस, बेलेडोना या एन्टिम टार्ट। फोड़ेमें पीव पैदा हो जाने पर हिपर सल्फर ६॥ हिपर सल्फर के बाद बहुत बदबूदार पीव निकलता हो तब साइलीसिया ३०।

कई अन्यान्य उपसर्ग।

स्तन में दर्द—बच्चे के दूध खींचते ही स्तन में दर्द हो तो फेलान्ड्रिनम ३X। स्तन से लेकर कन्धे तक शूल जैसा दर्द होने पर क्रोटन टिग्लियम ३। स्तन खाली मालूम होने और बच्चों को दूध पिलाते समय बहुत तकलीफ होने पर बोरेक्स ६ या ३०।

दूध पिलाने से कमजोरी—अनेक स्त्रियों को बच्चे को दूध पिलाने के कारण बहुत कमजोरी मालूम होतीहै और रात में अच्छी तरह नींद न आना, सुबह तबियत खराब मालूम होना, भूख न लगना बहुत पसीना आना, खांसी आदि लक्षण प्रकट

होते हैं। चायना ६ या ३० इसकी वढ़िया दवा है। एसिड-फस से भी कमजोरी दूर होती है। हरारत मालूम हो तो साबूदाना और वार्ली आदि खाना चाहिये। वच्चे को सारी रात स्तन में लगा कर सुलाना ठीक नहीं। उसे निर्दिष्ट समय के अन्तर से दूध पिलाना चाहिये।

शिर के केश झड़ना—प्रसव के बाद बहुत दिनो तक अनेक स्त्रियों के केश झड़ा करते हैं। सल्फर, लाइकोपोडियम या कल्केरिया कार्ब देने से इस रोग में लाभ होता है।

अपने आप दूध निकलना—अनेक वार स्तन की खराबी या दूध की अधिकता के कारण अपने आप दूध निकला करता है और इससे रोगिनी के कपड़े भीग जाया करते हैं। वोरेक्स 3X, कल्केरिया कार्ब ६, पल्सेटिला ६, रसटक्स ६ या चायना ३ इस रोग में देने से लाभ होता है।

वारबार अस्त्र प्रयोग का कुफल—अनेक स्त्रियोंका प्रसव मार्ग सकीर्ण होने के कारण, उनके पेट में चीरा लगा कर पेट से बच्चा बाहर निकालना पड़ता है। ऐसी घटना कई वार होने पर उनका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। फेरम फस, केली फस या मेग्नेशिया फस (२०० क्रम) वहुत दिनों तक सेवन करने

से स्वास्थ्य की खराबी दूर हो जाती है। दुबारा गर्भ रहने पर प्रसव के तीन चार मास पहले से ही कल्केरिया फ्लोर १२X विचूर्ण बीच बीच में सेवन कराना चाहिये ताकि बिना अस्त्र किया प्रसव हो सके।

२२–बाल-रोग।

जन्म के समय बच्चे का यत्न।

बच्चे का जन्म होते ही, उसे खून खराबी से जरा दूर हटा देना चाहिये, ताकि वह अच्छी तरह साँस ले सके। यदि जन्म के समय बच्चे के गले में नाल के फन्दे पड़े हों, तो उन्हें तुरन्त छुड़ा देना चाहिये, ताकि बच्चे को सास लेने में कोई तकलीफ न हो। बच्चा जब तक स्वय साँस नहीं लेता, तबतक इस नालके मार्ग से ही उसे हवा आदि जीवनोपयोगी उपादान मिलते हैं। नालों के कस या दब जाने पर उसकी गति बन्द हो जा सकता है और इससे बच्चे का जीवन खतरे में पड़ सकता है।

जन्म होने के समय बच्चे के मुँह और नासिका छिद्रों में कफ और लार भरी रहती है। उँगली में एक बारीक कपड़ा लपेट कर उससे तुरन्त इन्हें साफ कर देना चाहिये। इतना

काम हो जाने पर बचा आसानी से साँस लेने लगता है। बच्चे का बड़े जोर से रोना ही उसका साँस लेना है। यदि इसके साथ ही बच्चे के बदन में लाली दिखायी देने लगे, तो समझ लेना चाहिये कि अब उसके लिये खतरे की कोई बात नहीं है।

बच्चे का न रोना।

(Asphyscia)

यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि बच्चे का रोना ही उसका साँस लेना है। जन्म होने पर यदि बच्चा न रोये तो समझना चाहिये कि उसका सांस बन्द है। इस अवस्था में बच्चा मुर्दे की तरह पड़ा रहता है और तुरन्त इलाज न करने पर उसका प्राण निकल जाता है। यदि बच्चेकी ऐसी अवस्था हो तो उसका बदन तुरन्त गरम कपड़े से ढक देना चाहिये और छाती तथा मुँह पर ठण्ढे पानी के छींटे देना चाहिये। यदि इससे भी बच्चे की श्वास क्रिया चालू न हो, तो बच्चे के दोनो नासिका छिद्र बन्द कर उसके मुँह में फूँक मारनी चाहिये। इससे उसके फेफड़े में हवा भर जायगी। फूँक मारने के बाद तुरन्त छाती को कुछ दबा देने से यह हवा बाहर निकल जायगी। कुछ क्षणों के बाद फिर इसी तरह फूँक

से स्वास्थ्य की खराबी दूर हो जाती है। दुबारा गर्भ रहने पर प्रसव के तीन चार मास पहले से ही कल्केरिया फ्लोर १२X विचूर्ण बीच बीच में सेवन कराना चाहिये ताकि बिना अस्त्र किया प्रसव हो सके।

२२-बाल-रोग।

जन्म के समय बच्चे का यत्न।



बच्चे का जन्म होते ही, उसे खून खराबी से जरा दूर हटा देना चाहिये, ताकि वह अच्छी तरह साँस ले सके। यदि जन्म के समय बच्चे के गले में नाल के फन्दे पड़े हों, तो उन्हें तुरन्त छुड़ा देना चाहिये, ताकि बच्चे को सांस लेने में कोई तकलीफ न हो। बच्चा जब तक स्वय साँस नहीं लेता, तबतक इस नालके मार्ग से ही उसे हवा आदि जीवनोपयोगी उपादान मिलते हैं। नालो के कस या दब जाने पर उसकी गति बन्द हो जा सकती है और इससे बच्चे का जीवन खतरे में पड़ सकता है।

जन्म होने के समय बच्चे के मुँह और नासिका छिद्रों में कफ और लार भरी रहती है। उँगली में एक बारीक कपड़ा लपेट कर उससे तुरन्त इन्हें साफ कर देना चाहिये। इतना

काम हो जाने पर बच्चा आसानी से साँस लेने लगता है। बच्चे का बड़े जोर से रोना ही उसका साँस लेना है। यदि इसके साथ ही बच्चे के बदन में लाली दिखायी देने लगे, तो समझ लेना चाहिये कि अब उसके लिये खतरे की कोई बात नहीं है।

बच्चे का न रोना।

(Asphyscia)

यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि बच्चे का रोना ही उसका साँस लेना है। जन्म होने पर यदि बच्चा न रोये तो समझना चाहिये कि उसका सास बन्द है। इस अवस्था में बच्चा मुर्दे को तरह पड़ा रहता है और तुरन्त इलाज न करने पर उसका प्राण निकल जाता है। यदि बच्चेकी ऐसी अवस्था हो तो उसका बदन तुरन्त गरम कपड़े से ढक देना चाहिये और छाती तथा मुँह पर ठण्ढे पानी के छींटे देना चाहिये। यदि इससे भी बच्चे की श्वास क्रिया चालू न हो, तो बच्चे के दोनो नासिका छिद्र बन्द कर उसके मुँह में फूँक मारनी चाहिये। इससे उसके फेफड़े में हवा भर जायगी। फूँक मारने के बाद तुरन्त छाती को कुछ दबा देने से यह हवा बाहर निकल जायगी। कुछ क्षणो के बाद फिर इसी तरह फूँक

मारनी चाहिये। और छाती दबा कर हवा निकाल देनी चाहिये। कई बार यह प्रक्रिया करने पर अनेक बार बच्चा साँस लेने लगता है और उसके हृदय आदि की गति चालू हो जाती है। बच्चे को एक बार गरम पानी में और एक बार ठंढे पानी में—इस तरह कई बार दोनों तरह के पानी में पारी पारी से गले तक डुबोने पर भी वह साँस लेने लगता है। इनके अतिरिक्त और भी कई उपाय हैं जिनकी सहायता से बच्चों की श्वास क्रिया चालू की जा सकती है। खेद है, कि हमारे देश की अज्ञान दाइयों को इनका ज्ञान न होने के कारण बच्चों की एक बहुत बड़ी संख्या इस तरह जन्म लेते ही काल के गाल में समा जाती है। यहाँ पर यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि अनेक बार बच्चे दो दो तीन तीन घण्टे के बाद भी सांस लेते देखे गये हैं, इस लिये इस प्रक्रिया में शीघ्र सफलता न मिले तो घबड़ाना न चाहिये।

नाल काटना।

(Cutting the Umblical Cord)

जब तक बच्चा अच्छी तरह न रोये या अच्छी तरह सांस न लेने लगे, तब तक उसकी नाल न काटनी चाहिये। नाल काटने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि नाभी से चार

अंगुल की दूरी पर तागे या फीते से एक मजबूत बन्धन लगा देना चाहिये। इस बन्धन से एक इञ्च की दूरी पर ऐसा ही एक दूसरा बन्धन लगा देना चाहिये। बाद को इन दोनों बन्धनों के बीच का हिस्सा तेज और साफ कैंची से काटदेना चाहिये। बिना धार के और गन्दे औजार नाल काटने के काम में न लाना चाहिये। इससे नाभी पकने का खतरा रहता है। नाल काटने के बाद जब तक बच्चा नहलाया न जाय, उसका बदन कपड़े से ढँक रखना चाहिये।

बच्चे को नहलाना।

(Washing the Child)

बच्चे की नाल काटने के बाद उसे नहलाने का प्रबन्ध करना चाहिये। बच्चेका जन्म होने पर उसके बदनमें चिकना श्लेष्मा जैसा पदार्थ लगा रहता है। बढ़िया साबुन लगाकर इसे धीरे धीरे परन्तु अच्छी तरह साफ कर देना चाहिये। बच्चे के बदन में नारियल या सरसों का तेल भी नहलाने के पहले लगाया जा सकता है। नहलाने के लिये कुसुम पानी काम में लाना चाहिये। नहलाने के बाद सूखे कपड़े से बच्चे का बदन अच्छी तरह पोछ देना चाहिये और उसे गरम कपड़ा ओढ़ा देना चाहिये। जन्म होने के बाद रोज एकबार बच्चे को नहला देना अच्छा है। आरम्भ में कुछ सप्ताह तक कुसुम



पानी और वादको उसे ठंढा करते करते कई सप्ताह के वाद ठंढा पानी नहलाने के काम में लाना चाहिये। इससे बच्चो का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और उन्हे सरदी या खांसी आसानीसे नहीं होती।

बच्चे की नाल बाँधना।

(Dressing the Navel)

स्नान कराने के वाद बच्चेकी नाभी पर पतले और साफ कपड़े की एक गद्दी रख, नालको उसीके वीचसे निकाल कर, एक फीते से वॉध देना चाहिये और उस फीते को कमर वन्द से यातो वॉध देना चाहिये या जनेऊ की तरह गले में पहना देना चाहिये। इस तरह नाभी जल्दी सूख जाती है। नाभी पर तेलकी पट्टी रखकर भी वॉधने की प्रथा है। इस तरह नाभी पर जो कपड़ा या पट्टी रक्खी जाय, वह जव तक नाभी सूख न जाय, रोज एक दो वार वदल देना चाहिये।

नाभी पकना।

नाल अच्छी तरह न काटने, काटते समय चोट लगने या कुन्द छुरी से नाल काटने पर अनेक वार वच्चों की नाभी पक उठती है और उन्हें बुखार तथा दर्द आदिकी शिकायत पैदा हो जाती है।

चिकित्सा।

नाभी में तनाहट और बुखार हो आने पर एकोनाइट ३ X या अर्निका ३ देना चाहिये। यदि पीब पैदा हो जाय वो साइलीसिया ३० देना चाहिये। अनेक बार आर्सेनिक ३० देने से भी लाभ होता है। यदि पित्ती जैसे लाल चकत्तो के साथ ज्वर हो आये तो बेलेडोना ३० देना चाहिये। गरम पानी से रोज धोना और कैलेण्डुला तेल (१ भाग कैलेण्डुला मदर टिञ्चर ८ भाग आलिव आइल) की पट्टी चढ़ाना भी बहुत लाभदायक है।

बच्चे की ढोढ़ी निकलना।

नाल सूख जाने पर भी कभी कभी बच्चों की नाभी कुछ ऊँची या बाहर निकली बनी रहती है। प्राय: बच्चे के अधिक रोने या अधिक कांखने के कारण ही ऐसा होता है। नाभी पर कपड़े की एक गद्दी या पैड रख कर उसे बांध देने और नक्सवोमिका या कल्केरिया कार्ब का सेवन कराने से यह शिकायत दूर हो जाती है।

बच्चे का प्रथम मलत्याग।

(Meconium)

बच्चे को पहले पहल जो दस्त होता है, वह चिकना औ गहरे हरे या काले रंगका होता है। इसमें पित्त और क मिला रहता है। अधिकांश बच्चों को जन्म होने के कुछ दे बाद अपने आप ही दस्त हो जाया करता है। यदि शीघ्र दस न हो तो बच्चे को माता का दूध पिलाना चाहिये माता का नया दूध सद्य जात बच्चे के लिये जुलाब क काम करता है। यदि यह दूध पिलाने पर भी दस्त न हो और बेचैनी, पेट में दर्द के कारण बच्चे का रोना आदि लक्षण प्रकट हो, तो उसे गरम पानी में दो चार चम्मच चीनी डालकर पिलानी चाहिये। यदि इससे भी लाभ न हो तो एक दो खुराक नक्सवोमिका देना चाहिये। ब्रायोनिया या सल्फर देने से भी काम चल सकता है। यह खयाल रखना चाहिये, कि बच्चों को दस्त कराने के लिये कोई जुलाब या दस्तावर दवा देनी ठीक नहीं। इससे उनके भावी जीवन में संकट आ सकता है।

यदि इसी तरह बच्चे को पेशाब होने में देरी हो तो केन्थरिस या आर्सेनिक की दो एक खुराकें देनी चाहिये।

बच्चे का आहार और निद्रा।

(Diet and Nursing of Children)

माता का दूध ही बच्चे का प्रधान आहार है। यद्यपि पहले ही दिन से माता के स्तन में इतना दूध नहीं होता कि उससे बच्चेका पेट भर सके और अधिकाश स्त्रियों को प्रसवके दोतीन दिन बाद दूध होता है,तथापि बच्चेके मुँहमें पहले ही दिन से स्तन देना अच्छा है। इससे बच्चे को दस्त हो जाता है,बच्चा दूध पीना सीखता है और माता के स्तने में जल्दी दूध भर आता है।

यदि किसी कारण से माता के स्तन में दूध न हो तो बच्चे को बकरी या गाय का दूध दिया जा सकता है। ऐसे प्रसगोंपर जहाँ तक हो सके, बच्चे को एक ही जानवर का दूध देना चाहिये और दूध में पानी मिलाकर उसे काफी पतला कर लेना चाहिये, ताकि बच्चे को आसानी से हजम हो जाय।

बच्चों को चाहे माता का दूध पिलाया जाय, चाहे गाय बकरी का, उन्हे पिलाने में परिमाण और समय—दोनों का ध्यान रखना चाहिये। बारबार दूध पिलाना या पिलाते समय दूध के परिमाण का खयाल न रखना हानिकारक है। अनेक माताएँ, बच्चे के रोते ही, उसे दूध पिलाने लगती है, परन्तु उन्हें यह जानना चाहिये कि बच्चे भूखे होने के अलावा

अन्यान्य कारणों से भी रोते हैं। केवल दूध पिलाना ही सब शिकायतों का इलाज नहीं हो सकता। बल्कि अनेक बार इस तरह दूध पिलाने से बच्चों की पाचन क्रिया में गोलमाल हो जाता है और वे के, दस्त, पेट में दर्द, बुखार आदि बीमारियों से पीड़ित रहने लगते हैं।

आहार की तरह बच्चों को निद्रा पर भी काफी ध्यान रखना चाहिये। छोटे बच्चे जितना अधिक सोते हैं, उतनी ही शीघ्रता से बढ़ते हैं। इसलिये सोते हुए बच्चों को कभी न जगाना चाहिये। नींद से जगा कर उन्हें दूध पिलाना और भी बुरा है। इस तरह जगाने से उन्हें जितनी हानि हो सकती है उतनी हानि दूध न पिलाने से नहीं हो सकती। बच्चे के अभिभावकों, को खासकर बच्चे की माता को इन सूचनाओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

बच्चे का नील रोग।

(Still Born Child–Blue Stage)

श्वासयन्त्र और हृदय की क्रिया अच्छी तरह न होने के कारण बच्चों को यह रोग हो जाता है। यह रोग होने पर बच्चे के होंठ और गला बदरंग हो जाते हैं, समूचा शरीर नीला पड जाता है और शरीर की गरमी का कम हो जाना, मांस पेशियों का अकड़ जाना, नाड़ी स्पन्दन और हृद्स्पन्दन का कम हो जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा ।

डिजिटेलिस ३ या ६—यह इस रोग की सर्वप्रधान दवा है। चेहरा, मुख, होंठ, जीभ, नख और समूचे शरीर का नीला पड जाना, बच्चे को जरा भी हिलाने से उसका बेहोश हो जाना, कलेजे का धड़कना इत्यादि ।

आर्निका ३ या ६—शरीर नीला, साँस बन्द, नाक और मुँह से रक्तस्राव होना इत्यादि ।

आर्सेनिक ६—समूचा शरीर नीला और बरफ की तरह ठढा हो जाने पर इसे देना चाहिये ।

फोस्फरस ६—पैरो का फूल जाना, साथ ही श्वासकष्ट होना इत्यादि ।

एकोनाइट ६—शरीर साधारण गरम, नाड़ी में साधारण स्पन्दन, धीमा श्वास प्रश्वास, शरीर नीला इत्यादि ।

एन्टिम टार्ट ६X—श्वास और नाडी का स्पन्दन बन्द, शरीर का रग फीका हो जाना इत्यादि ।

लेकेसिस ३०—शरीर नीला, सोनेके बाद श्वास प्रश्वास का बन्द हो जाना इत्यादि।

कार्वोभेज ६—शरीर की समस्त नसें नीली हो जानेपर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त रसटक्स, हाइड्रोसियानिक एसिड और सल्फर आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—यह रोग बच्चों को प्राय सौरी घर में ही होता है। इसे भूत व्याधि मानकर झाड़ फूँक के फेर में न पडना चाहिये और चतुर चिकित्सक द्वारा तुरन्त इलाज कराना चाहिये। बच्चे को सरदी से बचाना और दाहिनी करवट सुलाना लाभदायक है। सौरी घर में धुआँ या गन्दगी न होने देना चाहिये।

बच्चे के शिर में बतौड़ी।

(Swelling and Elongation of the Head)

अनेक बार जन्मके समय बच्चा के शिर में कुछ फूलन या बतौडी सी उठी रहती है। कभी कभी यह बतौड़ी इतनी बड़ी होती है कि बच्चे के दो शिर मालूम होते हैं। जन्म के बाद

कुछ दिनों में धीरे धीरे यह बतौड़ी अपने आप सूख जाती है। यदि बहुत दिनों तक न सूखे तो दिन में कई बार ठंढे पानी से या हलके अर्निका लोशन (एकगिलास पानी में ८-१० बूंद मदर टिञ्चर) से धोना चाहिये। इससे भी दो तीन दिन में कोई लाभ न हो तो रसटक्सका सेवन कराना चाहिये।

बच्चे का धनुष्टङ्कार।

(Infantile Tetanus)

गन्दे स्थान में रहना, अनियमित खानपान, नाभी का पकना, दूषित वायुका सासमें जाना इत्यादि कारणों से प्राय. सौरी घर में ही बच्चों को यह रोग होता है। यह एक बहुत हा बुरा और सांघातिक रोग है। लोग इसे यमुआ या एक प्रकार की भूतव्याधि मानते हैं और झाड़ फूँक या गण्डा तावीज के फेर में पड़कर समुचित इलाज नहीं करते, परन्तु यह ठीक नहीं। नाल काटने के दोष से या गन्दगी के कारण नाभी के जख्म से एक तरह का विष बच्चे के शरीर में प्रवेश करने से ही उसे यह रोग होता है। कभी कभी सौरी घर में बहुत धुआँ होने या बच्चे को सरदी लगने के कारण भी यह रोग हो जाता है।

यह रोग होने पर बच्चे के वदन में ऐंठन आरम्भ होकर उसका समूचा शरीर अकड़ कर धनुपकी तरह टेढ़ा हो जाता है, इसीलिये इस रोग का नाम धनुषङ्कार पड़ा है। वच्चे का रोना, दूध न पीना, शरीर का कठिन हो आना, श्वासकष्ट, पाखाना पेशाब वन्द, पसीना आना, नींद न आना, मुंह से एक तरहकी आवाज और फेन निकलना, रह रह कर आक्षेप या खींचन होना आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। चेहरे की मांस पेशियां अकड़कर चौंह वँध जाती है और देखने में ऐसा मालूम होता है, मानो बच्चा हँस रहा है, परन्तु इसी शिकायत के कारण वह दूध नहीं पी सकता और रोग की तेजी के अनुसार दो चार दिन में उसकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६—अधिक ठंढ या सरदी लगने के कारण यह रोग होना, चेहरा लाल या फीका, चेहरे पर ठंढा पसीना आंखों का गढ़े में धस जाना, चौंह का अकड़ -ना इत्यादि।

स्ट्रिकनिया ३०—रहरह कर आक्षेप, श्वासकष्ट हाथपैर का सुन्न हो जाना, मासपेशियों का अकड़जाना पीछे की ओर शरीरका झुक जाना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—यह भी एक अच्छी दवा है। आक्षेप के साथ कब्जियत और स्ट्रिकनिया जैसे लक्षण होने पर इसे देना चाहिये।

साइक्यूटा ६ या ३०—शिर में चोट लगने के कारण यह रोग होना, शरीर का कड़ा हो जाना, आंखों का चढ़ जाना, मुर्दे का सा चेहरा, चौंहका अकड़ जाना, हाथ पैर और शरीर का पीछे की ओर झुक जाना इत्यादि।

हायोसायस ६ या ३०—चेहरा काला, दाती लगजाना, मुँह में फेन, हाथ और पैर में पर्यायक्रम से आक्षेप, गर्दन टेढी, हो जाना, अनजान में मलमूत्र त्याग।

एसिड हाइड्रो ६ या ३०—दाढी का अकड़ जाना, चेहरा और गर्दन फूली हुई और नीली, नाडी अनियमित इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—तेज बुखार, चेहरा और आंखें लाल, माथा गरम इत्यादि।

यह रोग होने पर बच्चे के बदन में ऐंठन आरम्भ होकर उसका समूचा शरीर अकड़ कर धनुपकी तरह टेढ़ा हो जाता है, इसीलिये इस रोग का नाम धनुषष्ङ्कार पड़ा है। बच्चे का रोना, दूध न पीना, शरीर का कठिन हो आना, श्वासकष्ट, पाखाना पेशाब बन्द, पसीना आना, नींद न आना, मुंह से एक तरहकी आवाज और फेन निकलना, रह रह कर आक्षेप या खींचन होना आदि लक्षण भी प्रकट होते है। चेहरे की मांस पेशियां अकड़कर चौंह बँध जाती है और देखने में ऐसा मालुम होता है, मानो बच्चा हँस रहा है, परन्तु इसी शिकायत के कारण वह दूध नहीं पी सकता और रोग की तेजी के अनुसार दो चार दिन में उसकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X या ६—अधिक ठंढ या सरदी लगने के कारण यह रोग होना, चेहरा लाल या फीका, चेहरे पर ठंढा पसीना आंखों का गढ़े में धस जाना, चौंह का अकड ना इत्यादि।

स्ट्रिकनिया ३०—रहरह कर आक्षेप, श्वासकष्ट हाथपैर का सुन्न हो जाना, मांसपेशियों का अकड़ जाना पीछे की ओर शरीरका झुक जाना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—यह भी एक अच्छी दवा है। आक्षेप के साथ कब्जियत और स्ट्रिकनिया जैसे लक्षण होने पर इसे देना चाहिये।

साइक्यूटा ६ या ३०—शिर में चोट लगने के कारण यह रोग होना, शरीर का कड़ा हो जाना, आंखों का चढ़ जाना, मुर्दे का सा चेहरा, चौहका अकड़ जाना, हाथ पैर और शरीर का पीछे की ओर झुक जाना इत्यादि।

हायोसायस ६ या ३०—चेहरा काला, दांती लगजाना, मुँह में फेन, हाथ और पैर में पर्यायक्रम से आक्षेप, गर्दन टेढी, हो जाना, अनजान में मलमूत्र त्याग।

एसिड हाइड्रो ६ या ३०—दाढी का अकड जाना, चेहरा और गर्दन फूली हुई और नीली, नाड़ी अनियमित इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—तेज बुखार, चेहरा और आंखें लाल, माथा गरम इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—भयके कारण आक्षेप, पाखाना पेशाब बन्द, अधमुंदी और चढ़ी हुई आंखे, बेहोशी, चेहरा और आँखे लाल इत्यादि।

आर्निका ६या ३०—माथा गरम और शरीर ठंढा, किसी तरह की चोट लगने के कारण यह रोग होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त एङ्कस्टूरा, कम्फर, इग्नेशिया, रसटक्स और पेसीफ्लोरा आदि दवाओंसे भी लाभ होता है। "धनुष्टङ्कार"देखिये।

बच्चों की आँख उठना

(Opthalmia)

बच्चोकी आँख में धुआं, तेज रोशनी, हवाका झोंका और सरदी आदि लगने के कारण उनकी आंखे उठ आती है अनेक बार पहले उनकी आखों के पदटों में ही प्रदाह पैदा होता है, परन्तु इसके इलाज में विलम्ब करने से रोग समूची आँखों में फल जाता है और बच्चों को इससे बड़ा कष्ट होता है। आंख उठने पर पलकों का जुड़ जाना, आख के भीतर और बाहर लाली, सूजन, आंखसे पीव निकलना, रोशनी बरदाश्त न होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। रोग शीघ्र आराम न होने पर भूख न लगना, सदा रोते रहना, दिनोंदिन रोगियाते जाना, अस्थिरता आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३X या ६—इस रोग में सबसे पहले इसेही देना चाहिये। खासकर, जब अधिक रोशनी लगने के कारण यह रोग हुआ हो, समूची आंख लाल हो गयी हो और आख से काफी स्राव निकलता हो।

बेलेडोना ६ या ३०—एकोनाइट के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है। आखका सफेद भाग बहुत लाल हो जाना, पलकों से खून निकलना, रोशनी बरदाश्त न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केमोमिला ६ या १२—पपटों का सूजना, उनसे खून निकलना, पलकोंका जुड जाना और सुबह उनसे पीला पीला पीब निकलना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—आंख से पीब जैसा बहुत स्राव निकलना, समूची आख और पपटों के भीतरी भाग में बहुत लाली इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ३ या ६—पपटों में बहुत सूजन और आखसे मलाई जसा पीब निकलने की यह बढ़िया दवा है।

ओपियम ६ या ३०—भयके कारण आक्षेप, पाखाना पेशाब बन्द, अधमुँदी ओर चढ़ी हुई आंखे, बेहोशी, चेहरा ओर आँखे लाल इत्यादि।

आर्निका ६या ३०—माथा गरम और शरीर ठंढा, किसी तरह की चोट लगने के कारण यह रोग होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त एङ्गस्टूरा, कम्फर, इग्नेशिया, रसटक्स ओर पेसीफ्लोरा आदि दवाओसे भी लाभ होता है। "धनुष्टङ्कार" देखिये।

बच्चों की आँख उठना

(Opthalmia)

बच्चोंकी आँख में धुआं, तेज रोशनी, हवाका झोंका आर सरदी आदि लगने के कारण उनकी आखे उठ आती है अनेक वार पहले उनकी आखों के पपटों में ही प्रदाह पैदा होता है, परन्तु इसके इलाज में विलम्ब करने से रोग समूची आँखों में फल जाता है और बच्चों को इससे बड़ा कष्ट होता है। आंख उठने पर पलकों का जुड़ जाना, आंख के भीतर और वाहर लाली, सूजन, आंखसे पीब निकलना, रोशनी बरदाश्त न होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। रोग शीघ्र आराम न होने पर भूख न लगना, सदा रोते रहना, दिनोंदिन रोगियाते जाना, अस्थिरता आदि लक्षण भी प्रकट होते है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३X या ६—इस रोग में सबसे पहले इसेही देना चाहिये। खासकर, जब अधिक रोशनी लगने के कारण यह रोग हुआ हो, समूची आंख लाल हो गयी हो और आंख से काफी स्राव निकलता हो।

बेलेडोना ६ या ३०—एकोनाइट के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है। आखका सफेद भाग बहुत लाल हो जाना, पलकों से खून निकलना, रोशनी बरदाश्त न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केमोमिला ६ या १२—पपटों का सूजना, उनसे खून निकलना, पलकोंका जुड जाना और सुबह उनसे पीला पीला पीब निकलना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—आंख से पीब जैसा बहुत स्राव निकलना, समूची आख और पपटों के भीतरी भाग में बहुत लाली इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ३ या ६—पपटां में बहुत सूजन और आंखसे मलाई जसा पीब निकलने की यह बढ़िया दवा है।

युफ्रेशिया ६—आंख मे पीव जमा होना और रोशनी बरदाश्त न होना।

एपिस ६ या ३०—आंख के पपटे और उनके ऊपर सूजन, जलन, जख्म, पीव पड़ना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—आंख के पपटों में सूजन और लाली, रात में पलकों का जुड़ जाना, गण्डमाल धातु, मोटा और थुल थुला शरीर इत्यादि।

सल्फर ३०—चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होने पर बीच बीच में इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—बच्चे की आंखे दिन में तीन चार बार या जब जब उनमें पीव भर जाय धो देना चाहिये। धोने के लिये कुसुम पानी या गाय का कच्चा दूध और पानी एक में मिला कर काम में लाना चाहिये। किसी प्रकार लेशन व्यवहार करना ठीक नहीं।

बच्चेकी नाकका बन्द होना

(Obstruction of the Nose)

जन्म होने के बाद बच्चों को अक्सर एक तरह की सर्दी हो जाती है और उसके कारण उनकी नाक बन्द हो जाती है।

इससे सांस लेने में तकलीफ, सां सां आवाज, दूध न पी सकना, नींद न आना और कभी कभी नाक से बहुत श्लेष्मा निकलना या बुखार आना आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

चिकित्सा

नक्सवोमिका ६ या ३०–रात में इसकी एक खुराक देने से प्राय. यह शिकायत दूर हो जाती है। यदि इसे देने पर भी सुबह तकलीफ दिखायी दे तो सेम्बुकस ६ देना चाहिये।

केमोमिला ६ या १२–यदि नाक बन्द होने के साथ साथ नाक से बहुत पानी भी निकलता हो, तो इसे देना चाहिये।

कार्बोनेज ६–रोज शाम के वक्त तकलीफ बढ़ जाती हो तो इसे देना चाहिये।

डाल्केमारा ६–खुली हवा में तकलीफ बढ़ जाने पर इससे लाभ होता है।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—इससे भी अनेक बार बहुत लाभ होता है।

मक्युरियस ६—नाकसे गाढ़ा गाढ़ा बहुत श्लेष्मा निकलता हो तो इसे देना चाहिये।

एण्टिमटार्ट ६—छाती में कफ घड़घड़ना, रात में तकलीफ का बढ़ जाना, कभी नाक से कफ निकलना, कभी बन्द रहना।

बच्चे के मुँह में जख्म

(Sore Mouth)

खान पान के दोष, पाकाशय की गड़बड़ी या मुँह क अच्छी तरह साफ न रखने के कारण, जन्म होने के दो तीन सप्ताह बाद और कभी कभी बच्चे कुछ बड़े होने पर उन्हें यह रोग हो जाता है। इसे मुँह का फलना भी कहते हैं। यह रोग होने पर मुँह के अन्दर होंठ, मसूढ़े और गालों में लाल लाल दाने निकलते हैं। इन दानों पर सफेद लेप चढ़ा रहता है। देखने में ऐसा मालूम होता है, मानो दूध जम गया है। इस लेपको साफ करने पर इसके नीचे लाल लाल जख्म दिखायी देते हैं। रोग बढ़ने पर गला और पाकाशय तक यह जख्म बढ़ जाते हैं। इसके कारण बच्चा दूध नहीं पी सकता और मुँहसे अनवरत लार टपका करती है।

चिकित्सा ।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—यह इस रोगकी बढ़िया दवा है। रोग दिखायी देते ही या मुंहसे बहुत लार निकलने और मुहमें जख्म हो जानेपर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०–मर्क्युरियस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०–तेज बीमारी में उपरोक्त दोनों दवाओं से लाभ न होने पर या मुंहमें प्रदाह, प्रदाहित स्थानमें नीला पन, मुहमें बदबू, बदबूदार पतले दस्त, अस्थिरता बहुत कमजोरी और प्यास आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बोरेक्स ६ या ३०–मुंहमें जख्म, दूध पीनेके समय बच्चेका रोना, दर्दके कारण बारंबार स्तन को छोड़ देना इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६–समूचे मुहमें बदबूदार जख्म, मुंहसे बदबू निकलना, मसूढ़ों से खून निकलना, मुहसे हमेशा जख्म करनेवाली लार बहते रहना इत्यादि। मातापिताके गरमी का दोष होनेके कारण बच्चोंको यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

मर्क्युरियस ६—नाकसे गाढ़ा गाढ़ा बहुत श्लेष्मा निकलता हो तो इसे देना चाहिये।

एण्टिमटार्ट ६—छाती में कफ घड़घड़ना, रात में तकलीफ का बढ़ जाना, कभी नाक से कफ निकलना, कभी बन्द रहना।

बच्चे के मुँह में जख्म

(Sore Mouth)

खान पान के दोष, पाकाशय की गड़बड़ी या मुँह क अच्छी तरह साफ न रखने के कारण, जन्म होने के दो तीन सप्ताह बाद और कभी कभी बच्चे कुछ बड़े होने पर उन्हें यह रोग हो जाता है। इसे मुँह का फलना भी कहते हैं। यह रोग होने पर मुँह के अन्दर होंठ, मसूढ़े और गालों में लाल लाल दाने निकलते हैं। इन दानों पर सफेद लेप चढ़ा रहता है। देखने में ऐसा मालुम होता है, मानो दूध जम गया है। इस लेपको साफ करने पर इसके नीचे लाल लाल जख्म दिखायी देते हैं। रोग बढ़ने पर गला और पाकाशय तक यह जख्म बढ़ जाते हैं। इसके कारण बच्चा दुध नहीं पी सकता और मुँहसे अनवरत लार टपका करती है।

चिकित्सा ।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—यह इस रोगकी बढ़िया दवा है। रोग दिखायी देते ही या मुंहसे बहुत लार निकलने और मुंहमें जख्म हो जानेपर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—मर्क्युरियस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—तेज बीमारी में उपरोक्त दोनों दवाओं से लाभ न होने पर या मुंहमें प्रदाह, प्रदाहित स्थानमें नीला पन, मुंहमें बदबू, बदबूदार पतले दस्त, अस्थिरता बहुत कमजोरी और प्यास आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बोरेक्स ६ या ३०—मुंहमें जख्म, दूध पीनेके समय बच्चेका रोना, दर्दके कारण बारंबार स्तन को छोड देना इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६—समूचे मुंहमें बदबूदार जख्म, मुंहसे बदबू निकलना, मसूढ़ों से खून निकलना, मुंहसे हमेशा जख्म करनेवाली लार बहते रहना इत्यादि। मातापिताके गरमी का दोष होनेके कारण बच्चोंको यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—बच्चोंको दांत निकलने के समय मुंहमें जख्म, साथही सफेद सफेद अजीर्ण दस्त, चेहरे पर पसीना, पैर भीगे और ठढे, गण्डमाला धातु इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—मुंहमें सड़न, मुंह सूखा और गरम, बदबूदार लार, कभी कभी उसके साथ खून निकलना इत्यादि।

केमोमिला ६ या ३०—चिड़चिड़े स्वभाव वाले बच्चों को दांत निकलने के समय यह रोग होने पर इसे देना चाहिये

बेप्टीशिया १X या ३X—मुँहसे बहुत लार निकलना गिल्टियों का प्रदाहित हो उठना, मुंहमें बदबू, पतली चीजोंके अलावा और कुछ भी निगल न सकना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—सुहागा भूनकर उसका चूर्ण शहद में मिला कर, बच्चेके मुंहमें लगा देनेसे लाभ होता है।

गलेमें जख्म।

(Throat)

साथ माताका स्तन पीने लगते हैं, परन्तु ज्यों ही दूधको गले के नीचे उतारने की चेष्टा करते हैं, त्यों ही दूध गलेमें गलगलाने लगता है या मुंहके बाहर निकल पडता है। प्रायः इसे रोगके साथ बच्चोंका गला भारी हो जाता है।

चिकित्सा

बहुत बेचैनी, निगलने के समय रोना, दोनों गाल लाल हों तो एकोनाइट 3X या ६। अगर समूचा चेहरा लाल हो तो बेलेडोना ६या रसटक्स ६। रसटक्स का खास लक्षण यह है कि गलेका रंग गहरा लाल हो और बच्चेको पसीना न आता हो। रातके समय बदन गरम और सूखा मालूम होता हो। रसटक्स से काफी लाभ न होतो ब्रायोनिया देना चाहिये। बेलेडोना का खास लक्षण यह है कि बच्चेको बहुत पसीना आता हो, गलेका रंग चमकीला लाल हो और आंखोंमें भी लाली हो। बेलेडोना से काफी लाभ न होने पर मर्क्युरियस देना चाहिये।

कमला या पाराडु।

(Jaundice)

जन्म होनेके तीन चार दिन बाद ही कभी कभी बच्चोंको यह रोग हो जाता है। रोग आरम्भ होने पर बच्चोंको पीले रंगका पेशाब होता है और आंखका सफेद हिस्सा पीला पड़ जाता है। इसके बाद समूचे शरीरका चमड़ा पीला पड जाता

है। साथ ही कभी कब्जियत, कभी पतले दस्त,हलके या मट मैले रंगका मल, पेटका बढ़ जाना, बच्चेका सदा रोते रहना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। सौरी घरमें सरदी लगने या बच्चों को दस्त लानेवाली दवाएं खिलाने के कारण प्रायः यह रोग होता है। साधारण रोग बिना इलाज के ही कुछ दिनों में आराम हो जाता है। तेज बीमारी में इलाज करने की ज़रूरत पड़ती है।

चिकित्सा।

केमोमिला ६ या १२–सबसे पहले यही दवा देनी चाहिये प्राय इसीसे सब शिकायतें दूर हो जाती है।

मर्क्युरियस ६–केमोमिला से कुछ लक्षण दूर हो जायें और कुछ दूर न हों तब या उससे बिल्कुल ही लाभ न होने में इससे देना चाहिये।

...यना ६ या ३०—उपरोक्त दोनों दवाओं के सेवन भी ... शिकायत ... तो इसे देना

कोलिन्सोनिया ६ या ३०—समूचा शरीर पीला, कब्जियत, फटा फटा दस्त।

सियोनेन्थस ६ या ३०—पीला पेशाब, समूचे शरीरका रंग उज्ज्वल पीला इत्यादि।

बच्चेका शरीर फटना।

(Excoriations)

जन्म होनेके बाद मोटे और थुलथुले शरीर के बच्चोंका बदन फटकर कभी कभी उनके शरीर में जख्म हो जाते हैं। चमड़े की खराबी या सफाई न रखने के कारण यह रोग होता है। यह रोग होने पर पीठ, बगल, पट्टे आदि स्थानोंमें पानी जैसा लगकर वहां जख्म हो जाते हैं।

चिकित्सा।

केमोमिला ६ या १२—रोगके आरम्भ में इसे देनेसे काफी लाभ होता है।

है। ही

मर्क्युरियस ६—चमड़ेमें पीलापन दिखायी दे और केमो मिलासे लाभ न हो तो इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे और थुलथुले शरीर-वाले बच्चोंको इससे विशेष लाभ होता है।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—जख्ममें बदबू उससे जरा में ही खून निकलना, मल कठिन और कष्टके साथ निकलना, बारंबार रोगका आक्रमण इत्यादि।

कार्बो वेज ६ या ३०—गरमी के दिनोंमें बदन फटने की यह बढ़िया दवा है।

ग्रेफाइटिस ६—कानके पीछे जख्म और उससे चिप-चिपा रस निकलना।

सीपिया ६ या ३०—किसी स्थानमें कुछ लगते ही वहां जख्म हो जाय तो इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—शरीर में पीब भरी फुन्सियां और ज़ख्मों में खुजली होने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—बच्चेका बदन हमेशा साफ रखना चाहिये। कैलेण्डुला लोशन या सुसुम पानीसे बिना रगड़े बदन धो देना और धोनेके बाद अच्छी तरह पोछ देना लाभदायक है।

बच्चेका मूत्र रोध।

(Retention of Urine)

बच्चोंको अनेक बार इस रोगके कारण पेशाब नहीं होता, परन्तु वे कुछ बतला नहीं सकते, इसलिये रोगका कारण जानना बहुत कठिन हो पड़ता है। इस रोगके साथ बुखार, अस्थिरता, क्रन्दन और अनिद्रा आदि लक्षण भी प्रकट हो सकते हैं। इस रोगमें लक्षणानुसार नक्सवोमिका, पल्सेटिला, एकोनाइट, कैन्थरिस, टेरीबिन्थीना आदि दवाएँ व्यवहार करनी चाहिये। मूत्ररोधकी दवाओं से भी दवा चुनी जा सकतीहै। गरम पानीका सेंक देनेसे अनेक बार लाभ होताहै।

बच्चेको कब्जियत।

(Constipation of Infants)

माता पिताको हमेशा कब्जियत रहने से उनके बचोंको भी यह रोग हो जाया करता है। इसके अतिरिक्त माताका या बच्चेका अनियमित और अयोग्य खानपान, गायका दूध पीना, यकृत की खराबी इत्यादि कारणों से भी यह रोग होता है। यदि माताके दोषसे बच्चेको यह शिकायत हो तो माताका ही इलाज करना चाहिये।

मिले दस्त आते हैं और कमजोरी, रक्त, हीनता, गला पतला पेट और माथा बड़ा, हाथ पैर में सूजन इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। रोग आराम न होने पर कठिन उपसर्ग उपस्थित होकर अन्त में रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

नयी बीमारी मे—एकोनाइट, एलोज, ब्रायोनिया, एन्टिम क्रूड, केमोमिला, क्रोटन, चायना, कल्केरिया कार्ब, डाल्केमारा, इपीकाक, मर्क्युरियस, मेग्नेशिया कार्ब, कोलोसिन्थ, नक्सवोमिका, पोडोफिलाम, आयरिस, रिउम, पल्सेटिला और सल्फर आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है।

पुरानी बीमारी मे—आर्सेनिक, चायना, सिना, कार्बोवेज, कल्केरिया कार्ब, नेट्रम सल्फ, फोस्फरस, नक्सवोमिका, सोरिनम, आयोडियम और सल्फर आदि दवाओं का विशेष प्रयोग किया जाता है।

नीचे कुछ चुना हुई दवाओं के लक्षण अंकित किये जाते हैं:—

इपीकाक ६ या ३०—अधिक खाने पीने के कारण यह रोग होना, साथ ही कै या मिचली, चेहरा फीका, बहुत रोना,

पित्त मिले या हरे पीले दस्त, या मल में खून की रेखा और सड़ी बदबू इत्यादि।

रिडम ३ या ६—अम्ल के कारण यह रोग होना, तलपेट में तकलीफ, शूल वेदना, दस्त के पहले और पीछे रोना और कॉखना, पानी जैसे फटे फटे दस्त, मल में और बच्चे के बदन में खट्टी गन्ध इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२—पित्त मिले पानी जैसे फटे फटे सफेद, हरे या पीले दस्त, दस्त में बदबू, शूल जैसा दर्द, बहुत रोना, बेचैनी, तलपेट की ओर पैर ले जाना, समूचे चेहरे या एक गाल में लाली, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

चायना ६ या ३०—बिना दर्द के पानी जैसे पतले दस्त, पेट में बहुत वायु, मल में अनपचे दूध की मिलावट।

बेलेडोना ६ या ३०—रोग की प्रथमावस्था, बच्चे को अच्छी तरह नींद न आना, बेचैनी, जरा जरा नींद से उठ बैठना, हरा हरा बहुत सा मल।

एकोनाइट ३X या ६—भय के कारण यह रोग होने पर या इस रोग के साथ बुखार होने पर इसे देना चाहिये। भय के कारण यह रोग होने पर ओपियम भी दिया जाता है।

एलोज ३X या ३०—बहुत तड़के दस्त होना, पेट में गड़गड़ाहट, वेग मालूम होते ही दस्त हो जाना, अधोवायु के साथ मल का निकल पड़ना।

एन्टिम क्रूड ६ या ३०—दूपित आहार के कारण यह रोग होना, जीभ पर सफेद लेप, मिचली और कै, पतले दस्त के साथ गॉठ गॉठ मल।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु वाले बच्चो को पतले और सफेद-सफेद दस्त होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

मर्क्युरियस ६ या ३०—गहरे हरे रंग के ऑव मिले या या फेना फेना जैसे खून मिले दस्त, मल त्याग के समय और मल त्याग के बाद कॉखना, मुँह में जख्म, जीभ पर सफेद लेप, रात के समय और गरमी के दिनो में रोग का बढ़ना।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—पेट में बहुत दर्द, पेट दबाने से आराम मालूम होना, बारम्बार छिबड़ा-छिबड़ा फेना, फेना पीले रंग का, थोड़ा दस्त, दूध पीते ही दस्त होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—पेट में दर्द के साथ दस्त, हमेशा दस्त का रंग रूप बदलते रहना, दो बार का दस्त भी एक समान न होना, रात में दस्तों का बढ़ना, खुली हवा में आराम मालूम होना।

सल्फर ३०-बहुत तड़के हरे या पीले रंग के दस्त, परिवर्तन शील मल, मलद्वार का चमड़ा गल जाना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—पेट में दर्द, पेट का फूलना, पानी जैसे दस्त, प्यास, बारम्बार थोड़ा थोड़ा पानी पीना, कै, अस्थिरता, बहुत कमजोरी, रक्तहीनता, हाथ पैर का फूल जाना और ठण्ढे बने रहना, आधी रात के बाद और खाने के बाद रोग का बढ़ना।

साइना ६ या २००—पेट में कृमि होने के कारण यह रोग होना, नाक खुजलाना, सोते में दाँत किटमिटाना और चौंकना।

फोस्फरस ६ या ३०—अनजान में दस्त, कभी कभी बहुत जोर से बहुत अधिक दस्त होना, सफेद और हरे रंग के पानी जैसे दस्त, दूध पीने के बाद के इत्यादि।

नेट्रम सल्फ ६ या ३०—दस्त के समय वायु का निकलना, पीले रंग का पतला दस्त, दस्त के समय पट पट आवाज, चारों ओर मल के छींटे उड़ना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बच्चे के पेट में शूल।

(Colic of Infant)

सरदी लगना, दूषित दूध पीना, अधिक दूध पीना या किसी तरह की दुष्पाच्य चीजें खाना आदि कारणों से बच्चों को यह रोग होता है। अनेक बार माता के खान पान के दोष से भी बच्चे को यह रोग हो जाता है। यह रोग होने पर बहुत रोना, छटपटाना, रोते रोते चेहरे का लाल हो जाना, अस्थिरता, शरीर का कॉपना, पेट का फूलना, पेट में गड़गड़ाहट इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी इस रोग के साथ दस्त भी आने लगते है।

चिकित्सा ।

केमोमिला ६ या १२—तलपेट का फूलना, दर्द के कारण रोना चिल्लाना, पैर मोड कर पेट पर रखना, पैर ठण्ढे हो जाना इत्यादि ।

केलेथिन्स ३X या ६—केमोमिला से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

इपीकाक ६ या ३०—दर्द के कारण रोना, मिचली या कै, हरे रंग के फेना जैसे बदबूदार दस्त ।

चायना ६ या ३०—तलपेट फूला और कडा, प्राय शाम के समय यह रोग होना, बच्चे का कभी हँसना और कभी रोना इत्यादि ।

नक्सवोमिका ३०—कब्जियत के साथ पेट में शूल हो तो इसे देना चाहिये ।

पल्सेटिला ६ या ३०—पेट में वायु सञ्चय, पेट का टटाना, शाम के समय दर्द का बढ़ना, जाड़ा मालूम होना, चेहरा फीका इत्यादि।

इनके अतिरिक्त एकोनाइट, बेलेडोना, मेग्नेशिया फस, ओपियम, साइना और स्टेनम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

बच्चे का स्तन प्रदाह।

(Swelling of the Breasts)

अनेक बार बच्चों के स्तन फूल कर कड़े हो जाते हैं और कभी-कभी उनमें पीव भी पड़ जाता है।

चिकित्सा।

स्तनों में सूजन और कड़ापन दिखायी देते ही उन पर मीठे तेल की पट्टी चढ़ा देने से अनेक बार कोई दवा देने की जरूरत नहीं पड़ती और वे इसी से आराम हो जाते हैं। यदि सूजन बढ़ जाय और लाली, तपाहट आदि प्रदाह के लक्षण दिखायी दें तो पहले केमोमिला और केमोमिला के बाद बेले-डोना देना चाहिये [illegible] हो तो [illegible]

पका देना चाहिये। यदि पीब पैदा हो जाय तो दो तीन दिन हिपर सल्फर ६ और उसके बाद साइलीसिया ३० देना चाहिये। यदि स्तन दबाने या उनमें किसी तरह की चोट लगने के कारण यह रोग हो तो आर्निका ६ या ३० देना चाहिये।

बच्चे का बहुत रोना।

(;Crying of Infants)

रोना छोटे बच्चों की भाषा है। वे अपनी सभी आवश्यकताएँ रोकर ही प्रकट करते है। भूख लगने पर दूध पीने के लिये, एक ही करवट बहुत देर तक लेटने पर करवट बदलने के लिये या ऐसी ही कोई भी शिकायत होने पर वे रोया करते है, इसलिये जब वे रोयें, पहले उनकी साधारण आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिये। यदि वे बहुत रोयें और कोई कारण स्पष्ट न दिखायी दे तो समझना चाहिये कि उनके शरीर में कहीं दर्द आदि हो रहा है। अनेक बार चिउँटी आदि काटने पर भी बच्चे रो उठते है, इसलिये उनका कपड़ा निकाल कर इसकी भी जाँच कर लेनी चाहिये।

बच्चों को चुप रखने के लिये अनेक माताएँ या दाइयाँ उन्हें अफीम खिलाकर सुला देती है। यह बहुत ही बुरा है। इससे उनका स्वास्थ्य सदा के लिये नष्ट हो जाता है।

यदि बच्चे बिना किसी कारण के बहुत समय तक रोते रहें तो निम्नलिखित दवाएँ व्यवहार करनी चाहिये।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६—इस दवा से अनेक बार बहुत लाभ होता है। यदि बच्चे चौंक कर नींद से उठ बैठें और जोर से रोने लगें तो उस अवस्था में भी यही दवा देनी चाहिये।

एकोनाइट या कोफिया ६—बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। खासकर जब रोने के साथ बेचैनी और बुखार भी मौजूद हो।

केमोमिला ६ या १२—यदि कान में या शिर में दर्द होने के कारण बच्चा रोता हुआ मालूम हो तो इसे देना चाहिये।

एन्टिम क्रूड ६ [illegible] हाथ लगाने या [illegible]ने से बच्चे का रोना, चिढ़[illegible] [illegible]।

साइना ३० या २००—पेट में कृमि दोष, हाथ लगाने से डर कर सोना अस्थिरता, सबको मारने दौड़ना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—अनेक बार बच्चों को नहला देने से उनका रोना बन्द हो जाता है।

बच्चेकी अनिद्रा और अस्थिरता।

(Sleeplessness & Restlessness)

अधिक या हानिकर पदार्थ खाने पीने के कारण अक्सर बच्चोंको यह रोग होता है। अनेक बार माताके खानपान के दोष से या बच्चेका शिर बहुत ऊँचे पर होने से भी उसे इस तरह की शिकायत पैदा होती है।

चिकित्सा।

कोफिया ६—बेचैनी, अनिद्रा, बदन का गरम होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ओपियम ६ या ३०—बेचैनी, अनिद्रा और चेहरे का लाल होना इत्यादि। कोफिया से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

केमोमिला ६—चिड़चिड़ा स्वभाव, सदा गोदी में चढ़ कर घूमने की इच्छा, बुखारकी तरह बदन गरम, एक गाल लाल और दूसरा फीका इत्यादि।

बेलेडोना ६—आँखों में नींद भरी होने पर भी बच्चे का न सोना, अथवा नींद लगते ही चौंक पड़ना और सोने लगना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—बहुत अधिक खाने पीने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

इपीकाक ६ या ३०—पल्सेटिला जैसे लक्षण साथ ही क या मिचली होनेपर इससे विशेष लाभ होता है।

नक्सवोमिका ३०—माता या बच्चा शराब पीता हो या कोई उत्तेजक पदार्थ खाता पीता हो और उसके कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

स्ट्रैमोनिया ६ या ३०—अँधेरे में बच्चे को नींद न आना उजाले में तुरन्त सो जाना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—बच्चे को रोज़ एक बार नहला देना चाहिये और उसके खानपान पर बहुत ध्यान रखना चाहिये।

बच्चेकी हिचकियाँ ।

(Hiccough)

अधिक आहार, दुष्पाच्य चीजें खाना, उत्तेजक पदार्थ खाना आदि कारणो से और कभी कभी दूसरे रोग के साथ यह शिकायत पैदा होती है । अनेक बार बच्चो को इससे बहुत तकलीफ होती है ।

चिकित्सा ।

नक्सवोमिका ६ या ३०—अधिक आहार या घी और मसाला की चीजें खाने के कारण हिचकी, कब्जियत, वारवार पेटमें दर्द, खायी हुई चीजों की कै हो जाना इत्यादि ।

बेलेडोना ६ या ३०—चेहरा और आँखें लाल, हिचकी के समय रोना, बहुत कॉखना इत्यादि ।

साइक्यूटा ६—जोरो की आवाज के साथ हिचकी आने की यह बढ़िया दवा है ।

हायोसायमस ६ या ३०—वारंवार हिचकी, पेटमें गड़-गड़ाहट, अंग प्रत्यग का फड़कना इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०—भय, शोक, दु ख, आनन्द आदि मानसिक आवेगो के कारण हिचकी, खाने पीने के बाद हिचकी, वारंवार लम्वी साँस लेना।

पल्सेटिला ६ या ३०—शाम को या रात के समय हिचकी का वढना।

आवश्यक सूचना—रोग आराम न होने तक घण्टे में २-३ वार दवा देनी चाहिये। हिचकी शुरू होने पर वच्चे को दूध पिलाने से अनेक वार हिचकी वन्द हो जाती है।

बच्चे के शिर में रूसी।

(Scurf on the Head)

शिर साफ न रखने या शिर को सदा गरम कपड़े से ढक रखने के कारण वच्चों को यह रोग होता है। पारा या कोई दूसरा धातुगत रोग होने से भी वच्चेको यह बीमारी

हो सकता है। शिर पर पीली फुन्सियाँ निकलना उनपर मोटी पपड़ी जमना, खुजलाने पर पपड़ी का निकल जाना और उसके नीचे लाल लाल जख्म सा दिखायी देना इस रोग के प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।

सल्फर ३०—यह इस रोगकी बढिया दवा है। फुन्सियों पर सूखी पपड़ियाँ, दर्द, खुजली, उसमें ही खून निकल पड़ना इत्यादि लक्षणोंमें सुबह शाम कई दिन खिलाने से प्रायः रोग आराम हो जाता है।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०—पर्वदार फुन्सियाँ और उनसे चिकना रस निकलना।

कल्केरिया कार्ब ३०—गण्डमाला धातु, फुन्सियां पर सूखी और मोटी पपड़ी पड़ना, बहुत खुजली इत्यादि।

हिपर सल्फर ३०—पारेका दोष, रसभरी फुन्सियाँ और उनमें दर्द, जख्मों में पीब पड़ना इत्यादि।

बच्चे के कान में एकजिमा।

(Eczema of Ears)

अनेक बार बच्चो के कान के पीछे जख्म सा हो जाता है इसमें बहुत खुजली होती है और चिकना चिकना रस निकलता है। मोटे बच्चों को यह रोग विशेष रूप से होता है।

चिकित्सा।

सल्फर ३०—कान के पीछे और शिरमें बदबूदार जख्म जख्म में बहुत खुजली, जरा में ही खून निकला इत्यादि।

ग्रेफाइटस ३०—बदबूदार जख्म और उससे चिकना चिकना रस निकलना।

कल्केरिया कार्ब ३०—जख्म पर सूखी और मोटी पपड़ी जमना, बहुत खुजली, मोटे और थुलथुले बच्चो को यह रोग होना।

रसटक्स ६ या ३०—बहुत खुजली, खुजलाने के बाद जलन, जख्म से रस निकलना, और उसपर मोटी पपड़ी पड़ना।

आवश्यक सूचना—इन जख्मों पर अधिक पानी न लगने देना चाहिये। सफाई के लिये बीच बीच में गरम पानी से धोकर, सूखे कपड़े से अच्छी तरह पोछ देना चाहिये।

बच्चेको आक्षेप या खींचन

(Infantile Convulsions)

दाँत निकलना, किसी चर्म रोग का बैठ जाना, दूषित न पान आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। नींद से क पड़ना, अस्थिरता, क्रन्दन, नीचे की चोहका काँपना दि पूर्व लक्षणों के बाद और अनेक बार बिना इन लक्षणा रोग आरम्भ होता है और एकायक बेहोश हो जाना, गर्दन और हाथ पैर की पेशिया में खींचन, एकदृष्टि से , मुँहसे फेन निकलना, दाँती लग जाना, गों गों और आवाज, हाथका मूठियाँ बँध जाना, अनजान में

पाखाना पेशाव हो जाना, इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। मूर्छा दो तीन मिनट तक ठहरती है। आक्षेप कभी जल्दी जल्दी और कभी अधिक समय के अन्तर से उपस्थित होता है। यह रोग बहुत ही बुरा है। किसी तेज बीमारी के साथ यह होने पर बच्चे की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

केमोमिला ६ या १२–समस्त अंगों की पेशियों में खींचन, चेहरे की पेशियों और पलकों का अकड़ जाना, इधर उधर शिर घुमाना, निद्रालुता, आँखें अधमुंदी, बेहोशी, एक गाल लाल और दूसरा फीका, दाँत निकलने के समय यह रोग होना, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०–नींद से एकायक चौंक पड़ना और आँखें फाड़ फाड़ कर इधर उधर ताकना, शरीर के दो एक या सब अंगोका अकड़ जाना, कपाल और तलहत्थी बहुत गरम और सूखी, होश आने पर अनजान में पेशाव, कभी कभी बच्चे को छूनेसे ही आक्षेप का शुरू हो जाना, आंखकी पुतली फैली हुई इत्यादि।

इग्नेशिया ३ या ६—हलकी नींद से एकायक चौंक पड़ना, और जोरसे चिल्लाना, शरीर में, कभी इधर कभी उधर, किसी एक अंग की एक ही मास पेशी में खींचन, रोज या तीसरे दिन ठीक-बंधे समय में खींचनका शुरू होना, साथ ही बुखार और पसीना इत्यादि लक्षणों में और जब रोग का कोई कारण समझ में न आये तब इसे ही देना चाहिये।

ईपीकाक ६ या ३०—आक्षेप के साथ कै या मिचली, अजीर्णता, हरे रङ्ग के पतले दस्त इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

साइना ३० या २००—कृमि दोषके कारण यह रोग होना, खींचनके साथ नाक और मलद्वार में खुजली इत्यादि।

मक्युरियस ६—कृमि के कारण खींचन, तलपेट फूला और कठिन, अंगों का अकड़ जाना, बुखार, पसीना, बहुत कमजोरी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। सायना के पहले या पीछे इसे देने से विशेष लाभ होता है।

ओपियम ६ या ३०—भय के कारण यह रोग होना, समूचे शरीर में आक्षेप या खींचन, खींचन के समय बहुत चिल्लाना, श्वास प्रश्वासमें घड़घड़ाहट, बेहोशी, अधमुंदी आँखें, कब्जियत इत्यादि।

हायोसायमस ६ या ३०—एकायक डर जाने के कारण यह रोग होना, खींचन, समूचे शरीर की पेशियोंका फड़कना, मुँह से फेन निकलना, खाँसी, लेटने पर रोग का बढ़ना, उठ बैठने पर आराम मालूम होना।

स्ट्रेमोनियम ६ या ३०—डर जानेके कारण यह रोग होना, बुखार के साथ यह रोग होना, अनजान में पाखाना पेशाब हो जाना, चर्म रोग दब जानेके बाद रोगका आक्रमण।

सल्फर ३०—कोई पुराना चर्म रोग दब जानेके बाद यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

एकोनाइट ३X या ६—तेज बुखारके साथ खींचन, सर्दी लगने, डर जाने या दाँत निकलने के कारण यह रोग होना, अस्थिरता, अनिद्रा, हिचकी, कृमिदोष इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—माताके आहार दोषसे बच्चे को बदहज़मी और उसके कारण आक्षेप, बच्चे के बदनमें हाथ लगातेही आक्षेप, आक्षेप के बाद निद्रा इत्यादि।

आर्निका ३ या ६—किसी प्रकार की चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

साइक्यूटा ६ या ३०—कृमि के कारण यह रोग होने पर और साइना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

क्युप्रम मेट ६ या ३०—आक्षेप के समय और आक्षेप के बाद जोर से चिल्लाना, आक्षेप बन्द हो जाने पर बहुत कमजोरी, और अवसन्नता, हाथ पैर पटकना, श्लेष्मा जैसे पदार्थ की कै इत्यादि।

इनके अतिरिक्त जिङ्कम, सिकेलो, इथूजा, ब्रायोनिया और जेलसीमियम आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

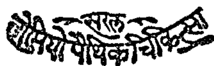
आवश्यक सूचना—साधारण रोग में आँख और चेहरे पर ठंढे पानी का छींटा देने से या अर्क कपूर सुंघाने से लाभ होता है तेज बीमारी में आक्षेप के समय बच्चे को टेहुने तक गरम पानी के टब में खड़ा करना चाहिए और उसी समय उसके शिर पर बरफ की थैली या ठंढे पानी की पट्टी चढ़ानी चाहिये। इस तरह १०—१५ मिनट तक टब में रखने के बाद या बच्चा होश में आते ही उसे बाहर निकाल लेना चाहिये और उसका बदन सूखे कपड़े से अच्छी तरह पोछ देना चाहिये। कब्जियत हो तो गरम पानी या ग्लीसरीन की पिचकारी देकर दस्त करा देना चाहिये।

बच्चे के दाँत निकलना ।

(Dentition)

दाँत निकलने के समय बच्चों को अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं और उनके कारण उन्हें न केवल तकलीफ ही होती है, बल्कि कभी कभी उनके प्राणों पर भी आ बनती है। पहले पहल नीचे के मसूढ़े में सामने के दो दाँत निकलते है। इसके बाद दो वर्ष के अन्दर प्रायः समस्त दाँत निकल आते हैं। बच्चों के यह दाँत दूधके दाँत कहलाते हैं और इनकी संख्या २० की होती है। कभी कभी दाँत निकलने के समय में कमी बेशी भी दिखायी देती है। किसी के वर्ष पूरा हो जाने पर भी पहले दो दाँत नहीं निकलते और किसी के जन्म होने के दो ही तीन सप्ताह बाद निकल आते हैं। किसी किसी बच्चे के जन्म होने पर पहले ही से दो दाँत मौजूद रहते है परन्तु ऐसे उदाहरण बहुत कम देखे जाते हैं।

दाँत निकलने के समय बच्चे माता का स्तन काटते हैं, जोर से दबा रखते हैं और फिर छोड़ देते है। जो कुछ पाते हैं, से ही काटने लगते हैं। इसके अतिरिक्त कमजोरी, बुखार, खाँसी, पत लेदस्त के अस्थिरता, अनिद्रा, मसूढ़े में उत्तेजना, मसूढ़ों में लाली फूलन और दर्द, कभी कभी आक्षेप इत्यादि उपसर्ग उपस्थित होते हैं।



चिकित्सा।

दाँत निकलने में देरी होने पर—कल्केरिया कार्ब, साइलीसिया, सल्फर।

दाँत निकलने के समय कब्जियत—ब्रायोनिया, नक्स वोमिका और ओपियम।

दाँत निकलने के समय बुखार—एकोनाइट, वेलेडोना, केमोमिला, ब्रयोनिया और जेल्सीमियम।

दाँत निकलने के समय पतले दस्त—केमोमिला, इपीकाक, मर्क्युरियस सल, पल्सेटिला, पोडोफिलम, सल्फर इत्यादि।

दाँत निकलने के समय अस्थिरता और अनिद्रा—एकोनाइट, वेलेडोना, केमोमिला, कॉफिया, इत्यादि।

नीचे चुनी हुई दवाओंके लक्षण लिखे जाते हैं:-

एकोनाइट ३ या ६—बच्चे का रोना चिल्लाना, बुखार बहुत बेचैनी और अनिद्रा दर्द इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—दाँत निकलने के कारण आक्षेप, आक्षेप के बाद गहरी नींद, नींद से चौंक पड़ना, चारों ओर इस तरह देखना मानों दहशत खा गया है, आँख का तारा विस्तृत, स्थिर दृष्टि, समूचा शरीर अकड़ा हुआ, तलहत्थी और कनपटी गरम इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे और थुलथुले शरीर वाले बच्चों को दाँत निकलने में देरी होने पर इसे देना चाहिये।

इपीकाक ६ या ३०—मिचली और कै, साथही पतले दस्त भिन्न भिन्न रंगका मिला हुआ मल।

केमोमिला ६ या १२—यह दाँत निकलने के समय की समस्त बीमारीयों में काम देता है। रात के समय बहुत बेचैनी, चिड़चिड़ाना, गोदी में चढ़कर घूमनेकी इच्छा, बारंबार, पानी पीना, आक्षेप या खींचन, खासकर नींद के समय, जरा भी आवाज होतेही जाग पड़ना, बदन में साधारण गरमी आँखो में लाली, एक गाल लाल और दूसरा फीका, श्वासकष्ट, छाती जकड़ी हुई, खाँसी, मुँह सूखा हुआ और गरम, हरे पीले पानी जैसे दर्द दस्तों दस्त में बदबू इत्यादि।

साइना ३० या २००—रात के समय विछौने में पेशाव कर देना, सोते में दाँत किटकिटाना, तलपेट फूला और कड़ा, नाक खुजलाना, सूखी खाँसी इत्यादि कृमि जैसे लक्षणों में इसे देना चाहिये।

कोफिया ६ या ३०—बहुत उत्तेजना, नींद बिलकुल न आना, कभी, भयभीत और कभी प्रसन्न मालूम होना, थोड़ा बुखार इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०किसी एक अंग में आक्षेप, बदन में दाह, कभी कभी पसीना, हलकी नींद और उससे चौंक कर रोना चिल्लाना।

मर्क्युरियस मल ६—मसूढ़े लाल, हरे दस्त, बहुत काँखना, आँव और खून मिले दस्त, पेट फूला और कड़ा, बहुत लार निकलना, रात में तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

सल्फर ३०—सफेद सफेद या खट्टी गन्ध युक्त गरम दस्त, मलद्वार में जख्म हो जाना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—कब्जियत, खाँसी, कुछ खाने पर तुरन्त कै हो जाना, बच्चे का चुपचाप पड़े रहना, प्यास इत्यादि।

हायोसायमस ६ या ३०—मुँह में उगली डालकर काटना और अनजान में पीले रंग के दस्त।

नक्सवोमिका ६ या ३०—कब्जियत, भूख न लगना, रोना, बारबार आँव मिला दस्त, रात में रोगका बढना।

पोडोफिलम ६ या ३०—सुबह दस्त, बदबूदार और सफेद दस्त, मिचली, नींद में दाँत किडमिडाना, अस्थिरता, काँखना इत्यादि।

साइलीसिया ३०—कब्जियत, थोडा सा दस्त होकर उसका फिर भीतर चला जाना पेट सख्त, फूला और गरम।

मेग्नेशिया कार्ब ६ या ३०—बारंबार खट्टी कै, मलमें खट्टी गन्ध इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—नींद से चौंक पडना थोडा पेशाब, पीले रंग के पतले दस्त इत्यादि।

जेल्सीमियम ३ या ६—अनिद्रा, अस्थिरता, करवट बदलते रहना, चिल्लाकर रोना इत्यादि।



एन्मेटिला ६ या ३०—आँव मिला दस्त, शाम के समय दस्तोका बढ़ना, भूख न लगना, बदहजमी इत्यादि ।

आवश्यक सूचना—मसूढ़े फूले हुए हो, दाँत झलक रहे हों, लेकिन फिर भी बाहर न निकलते हों, तो तेज चाकू से मसूढ़े को जरा चीर देना चाहिये । इससे दाँत आसानी से बाहर निकल आता है । बुखार आने पर बार्ली और पतले दस्त आने पर बार्ली या पानी मिला दूध देना चाहिये ।

बच्चे का कालेरा ।

(Cholera Infantum)

बच्चे या माता का खान पान ठीक न होना, दूषित वायु का सेवन, खराब पानी पीना, एकायक ऋतुका बदलना, दाँत निकलने के समय उत्तेजना इत्यादि कारणों से छोटी उम्रके बच्चों को, और खासकर गरमी के ही दिनों में यह रोग होता है । यह रोग होने पर पहले दस्त, फिर खाये हुए पदार्थों की कै, फिर श्लेष्मा और अन्त में मिचली आदि लक्षण प्रकट होते हैं । दस्त कभी पीले, कभी हरे, कभी पतले कभी चिकने, और कभी खून मिले होते है। मल में अजीर्ण पदार्थ मिले रहते है । साथ ही बुखार, प्यास, पानी पीने पर कै, भूख न लगना, आँख और चेहरे का बैठ जाना, कमजोरी और श्वासकष्ट आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं ।

चिकित्सा ।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—जीभ पर सफेद या पीला लेप मुँह सूखना, प्यास, मिचली या प्यास, खाँसी, तलपेट फूला हुआ बदबूदार दस्त इत्यादि ।

आर्सेनिक ६ या ३० बहुत कमजोरी चेहरा फीका, तलपेट फूला हुआ, हाथ पैर ठंढे, भूख न लगना मिचली और कै, तेज प्यास, बदबूदार हरे, पीले, सफेद या भूरे रंग के पतले दस्त, आधीरात के बाद सुबह के समय या खाने पीने के बाद दस्तों का बढ़ना ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—गरमी के दिन में यह रोग होना, पतले दस्त, बहुत प्यास, खाये हुए पदार्थों की कै, मिचली, खाने के बाद कै, शूल जैसा दर्द, सफेद या भूरे रंग के दस्त ।

कार्बोवेज ६ या ३०—ब्रायोनिया से स्थायी लाभ न होनेपर बदबूदार थोडा दस्त, साथही जलन और दर्द इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये ।

डाल्केमारा ६—गरम शरीरमें ठंढा पानी पीने के कारण या तर हवा लगने के कारण यह रोग होना, ठंढा पानी पीने की प्रबल इच्छा, श्लेष्मा मिले हरे हरे दस्त, रात में रोग का बढ़ना ।

इपीकाक ६ या ३०—यह इस रोगकी एक बढिया दवा है। रोगके आरम्भ में ही इसे देने से रोग तुरन्त रुक जाता हे। मिचली और कै, कै में खाये पिये पदार्थ, या कफ और पित्त का निकलना, पतले या खून की रेखा युक्त दस्त, जीभ पर लेप, कोई भी चीज खाने की इच्छा न होना, तेज प्यास इत्यादि लक्षणों में इसका प्रयोग होता है।

मर्क्युरियस ६—आधी रात के पहले दस्तों का बढना, साथ ही पेट में सूल, दस्त के समय कॉखना, बहुत पसीना, हरे रङ्गके खट्टी गन्धयुक्त, दस्त, मिचली और डकार इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०-बारीक और हलके रङ्गका मल, मल में सडे अण्डे की सी बदबू, मिचली, शिर पर बहुत पसीना, पेट का बढ़ना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—हरबार खाने के बाद दस्त, मलमें अजीर्ण पदार्थ दिखायी देना, पेट में वायु सञ्चय इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—रोग के आरम्भ मे इपीकाक देने से रोग न रुके तो इसे देना चाहिये।

विरेट्रम ६ या ३०—मिचली और कै के कारण इतनी कमजोरी कि बेहोश हो जाना, कै, पतले दस्त, जराभी पानी

या कोई पतली चीज गलेसे नीचे उतरते ही कै हो जाना, जरा भी हिलने डोलने से कै ठढा पानी पीने की प्रबल इच्छा, शूल तलपेट में जलन और कतरने जैसा दर्द, काले काले पतले दस्त, अनजान में थोड़ा पतला दस्त निकल पड़ना इत्यादि।

सल्फर ३०—तेज बीमारी, बहुत दस्त, हरे सफेद या पानी जैसे दस्त इत्यादि।

एकोनाइट ३या ६-रोग के आरम्भ में हरे रङ्गके पतले या श्लेष्मा जैसे सफेद दस्त,दस्त के पहले और दस्तके समय पेट में दर्द, कॉखना, मिचली, खाये हुये पदार्थों की कै, अस्थिरता, अनिद्रा इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२–दाँत निकलने के समय यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

क्रोटन ६ या ३०–हरे या पीले रङ्गके दस्त, पिचकारी की तरह बेगके साथ मलका निकलना, मिचली, पानी श्लेष्मा और पित्त आदि की कै, दस्त के बाद कमजोरी इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०–दस्तके पहले कल कल आवाज़ दस्त के समय जाडा लगना, जीभ पर लेप, रातमें रोग बढ़ना, प्यास का न होना, घी की पकी चीजें खाने के कारण यह रोग होना।

सिकेली ६ या ३०—अनजान में पानी जैसे चिकने दस्त, दस्त के समय और दस्त के बाद निस्तेज हो जाना, शरीर पर कपडा न रखना, जरा में ही कै, आँखों का बैठ जाना इत्यादि।

फोसफरस ६ या ३०—आँखों का बैठ जाना, आँखों के किनारे श्यामता, ठण्ढा पानी पीने की इच्छा, पानी पीने के बाद कै, अजीर्ण पदार्थ मिले पतले दस्त, बायी करवट लेटने पर और सुबह रोग का बढना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त लोरोसिरेसस, साइना, इथूजा, पोडोफिलम, मेग्नेशिया कार्ब, एण्टिम टार्ट, एपिस, अर्जेण्टम, नाइट्रस, आर्निका, आर्स आयोड, बेन्जोयिक एसिड, कल्केरिया फस, कैम्फर, कल्चीकम, क्युप्रम, फेरम फस, आयरिस, केलीब्रोमेटम, कियोजोट, नेट्रमफस, नेट्रम सल्फ, और जिङ्कम आदि दवाओं से लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—बच्चा बहुत छोटा हो तो माता का दूध या पानी मिला गाय बकरी का दूध देना चाहिये। यदि डेढ़ वर्ष से अधिक अवस्था हो, तो साबूदाना और बार्ली आदि चीजें दी जा सकती हैं।

बच्चे की शीर्णता या सुखरडी

(Marasmus)

गण्डमाला दोष, दॉत निकलना, अयोग्य आहार, गन्दे और तङ्ग स्थानो में रहना, दूषित वायु का सेवन, सफाईका अभाव इत्यादि कारणों से बच्चो को यह रोग होता है। यह रोग होने पर मॉस पेशियो का सूख जाना, भूख न लगना, हाथ पैर लकड़ी जैसे पतले, पेट बहुत बड़ा और कड़ा, बदबूदार पतले दस्त, कभी कब्जियत, कभो अतिसार, रात में थोड़ा थोड़ा बुखार, वेचैनी, और अनिद्रा आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा

एब्रोटेनम ३०—पैर बहुत सूखे हुए, राक्षसी भूख, पेट फूला हुआ, कभो कब्जियत, कभी दस्त, नाक से खून गिरना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ३०—गण्डमाला धातु, पैरके पजे ठण्ढे और गीले, गले में कफ घड़घडाना, कीचड जैसा मल इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—यकृत फूला और कठिन, कभी कब्जियत, कभी पतले दस्त, बहुत भूख लगना, आलस्य, खाये हुइ पदार्थों की कै इत्यादि।

आर्सेनिक ३०—ज्वर भाव, प्यास, अस्थिरता,बदबूदार, दस्त, बहुत कमजोरी, और अवसन्नता, चेहरा मलीन, और फूला हुआ, हाथ पैर ठण्ढे इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—अधिक उम्र के बच्चों को यह रोग होना, अजीर्णता, मल का रङ्ग हमेशा बदलते रहना, कमजोरी, चरबी या घीके पदार्थ हजम न होना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—अधिक खून निकलनेके कारण यह रोग होना, रातमें अधिक दस्त, दस्तमें अजीर्ण पदार्थ दिखायी देना, अधिक परिमाण में बिना दर्द के दस्त, बहुत भूख, लीवर या तिल्ली का बढ़ना।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—शाम के बाद यह रोग होना, पेट का फूलना, खासकर शाम के वक्त, चय, डकार आना, भूख लगना लेकिन अधिक न खा सकना इत्यादि।

नेट्रम म्यूर ३० या २००—बहुत तेजीके साथ बदन का सूखते जाना, गर्दन का सूखना, गर्दन और जांघ के चमड़े में झुर्रियां पड़ जाना इत्यादि ।

फोस्फरस ३० या २००—लम्बे और दुबले पतले शरीर वाले बच्चों को यह रोग होना, चेहरा मलीन, आंख धसी हुई, आँख के चारों ओर काला दाग, अजीर्ण पदार्थ मिले पतले दस्त, कमजोरी इत्यादि ।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—चेहरा पीला या फीका, आँव मिले दस्त, गिल्टियोंका फूलना और उनमें पीव पड़ना, रातमें बहुत पसीना, गरमीके दिनों में तकलीफका बढ़ना इत्यादि ।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—आँखोंका बैठ जाना, बहुत अवसन्नता, चर्मरोग, बहुत भूख इत्यादि ।

सल्फर ३० या २०[illegible] नींद [illegible]
सामने जो कुछ दिखायी दे[illegible] हर्म[illegible]
दस्त, मलद्वार में जख्म, इ[illegible]

सोराइनम ३० या २००—सल्फर या चुनी हुई दव
से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आयोडियम ६ या ३०—राक्षसी भूख, हमेशा खाते
रहना, बहुत खाना, फिरभी बदनका सूखते जाना, शरीरकी
गिल्टयोंका बढ़ना, यकृत बड़ा और कड़ा इत्यादि।

इनके अतिरिक्त स्टेनम, बेराइटा कार्ब, ग्रेफाइटिस,
एन्टिम, क्रूड, क्रियाजोट, एसिड फस और कार्बोवेज आदि
दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—यह रोग बहुत धीरे धीरे आराम
होता है, इसलिये सप्ताह में दो तीन खुराक़ दवा देकर, एक
सप्ताह दवा बन्द रखनी चाहिये। इससे लाभ न हो तो दूसरी
दवा चुननी चाहिये।

बच्चेकी अस्थि-कोमलता।

(Rickets)

अयोग्य आहार, स्तनके दूधका दूषित होना, हड्डी में
केल्सियम नामक धातुकी कमी, आदि कारणों से यह रोग
होता है। यह रोग होने पर शरीर की हड्डियाँ अच्छी तरह

पुष्ट नहीं होतो। रोग बहुत धीरे धीरे प्रकट होता है। पेटमें गोलमाल, राक्षसी भूख, ज्वरभाव, अस्थिरता, रोते रहना, शिरमें बहुत पसोना, दीर्घास्थियों का अगला भाग फूल उठना और हड्डियों का टेढ़ा हो जाना, शिरकी हड्डीका बढ़ जाना, रीढ़ टेढ़ी हो जानेके कारण कूबड़े की तरह पीठका झुकजाना हाथपैर आदिकी गाँठों का फूल उठना, हड्डियोका विकृत दिखायी देना, दांत निकलने और चलने में विलम्ब होना, बुद्धिकी जड़ता या अकाल परिपक्वता इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।

कल्केरिया फस ३० या २००—यह इस रोगकी सर्व प्रधान दवा है। हड्डी और शरीरकी अपरिपुष्टता, देरीसे दाँत निकलना, देरीसे चलना सीखना, हरे रंगके पतले दस्त, कमजोरी इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ३० या २००—सदा सरदी और खासी की शिकायत, रक्त हीनता, दुर्बलता, शोर्णता, गण्ड-माला धातु इत्यादि लक्षणों में और कल्केरिया फससे लाभ न होनेपर इसे देना चाहिये।



एसिडफस ६ या ३०—मलीन और रोगी बच्चे, बहुत कमजोरी, चलने की चेष्टा करते ही गिर पड़ना इत्यादि।

साइलीसिया ३० या २००—यह भी इस रोगकी एक बढ़िया दवा है। शिरमें बहुत पसीना हड्डियोंका फूलना, अनेक स्थानमें पीब का पड़ जाना रक्त हीनता स्पर्शद्वेष इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—तेज बीमारी, रोगका बहुत बढ़ जाना दाँत काले हो जाना और उनका टूट जाना इत्यादि।

बेराइटाकार्ब ६ या ३०—नाटे कदके दुबले पतले बच्चों को इस दवासे विशेष लाभ होता है।

रूटा ६ या ३०—पैरोंकी कमजोरी के कारण चलने का चेष्टा करते समय गिर पड़ना, पैरों में दर्द इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—चाँदमें गरमी, आँख पर फाड़ा, थोड़ी नींद इत्यादि लक्षणों में और अन्यान्य दवाओ से पूरा लाभ न होनेपर वाच बीचमें इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—खानेके बादही कै, समूचे शरीर में दर्द, हमेशा चुप-रहने की इच्छा, कब्जियत, मल सूखा, कड़ा और काला, होठ सूखे और फटे फटे इत्यादि।

आवश्यक सूचना—सप्ताह में एक दो खुराक से अधिक दवा न देनी चाहिये। खुली हवामें घूमना व्यायाम करना, कुछ देर धूपमें रहना, हलके और पुष्टिकर पदार्थ खाना इत्यादि इस रोगमें लाभदायक है।

ब्रह्मतालु का न भरना।

(Open Fontanelles of Children)

जन्मके समय बच्चोंकी खोपड़ी या चाँदका कुछ भाग जो ब्रह्मतालु कहलाता है, अपरिपुष्ट या पिल पिला होता है। साधारणतः छः महीने में यह भर जाता है और खोपड़ी के अन्यान्य अस्थानोंकी तरह वहाँका स्थान भी कड़ा हो जाता है। यदि इतने समयमें ब्रह्मतालु परिपुष्ट न हो, तो उसका इलाज करना चाहिये।



चिकित्सा ।

सल्फर ३० या २००—यह इस रोगकी बढ़िया दवा है। छः महीने में ब्रह्मतालु परिपुष्ट न होने पर बीच बीचमें इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ३० या २००—सल्फर से लाभ न होनेपर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—ब्रह्मतालुको हमेशा सरसों के तेलसे तर रखने पर वह शीघ्र परिपुष्ट हो जाता है। इसमें कोई असुविधा हो तो उतने स्थानमें सरसों के तेलकी पट्टी चढ़ा रखनी चाहिये।

बालिकाओंका प्रदर।

(Leucorrhoea of Little Girls)

कृमिकी उत्तेजना, शारीरिक अस्वस्थता आदि कारणों से कभी कभी बहुत छोटी बालिकाओं के योनिद्वार से पीव

या श्लेष्मा जैसा श्वेत प्रदर निकला करता है। अनेक बार सफाई न रखने के कारण भी यह रोग होता है।

चिकित्सा।

गण्डमाला धातुवाली मोटे और थुल थुले शरीर की बालिकाओं को यह रोग होनेपर कल्केरिया कार्ब ३०। कपड़े में पीले दाग लगना, बदबूदार स्राव और कब्जियत हो तो नक्सवोमिका३०। योनिद्वार फूला हुआ और दूध जैसा सफेद प्रदर स्राव होने पर पल्सेटिला ६ या ३०। अस्वस्थ चमड़ा, बहुत स्राव इत्यादि लक्षणों में ग्रोफाइटिस ३०। कृमि दोष होनेपर साइना ३० या २००। जख्म करनेवाला स्राव,साथ ही चर्मरोगोकी अधिकता हो तो सल्फर ३०। मर्क्युरियस सल ६ या ३० भी इस रोगकी एक बढ़िया दवा है। जननेन्द्रियको गरम पानी से धोकर साफ रखना चाहिये।

टीका।

(Vaccination)

रख लिया जाता है। यह टीका कानून जायज है और सरकारी कर्मचारियों द्वारा लगाया जाता है । टीका न लगवाना एक अपराध है और इसके लिये समुचित दण्ड देने का भी विधान है।

परन्तु गोवीजके इस टीकाकी उपयोगिता में अब सन्देह किया जाने लगा है। होमियोपैथीके आचार्य इसे हानिकर मानते हैं और इसके स्थानमें वेकसीनिनम ६ X विचूर्ण एक खुराक या वेरियोलिनम ३०, सप्ताह में दोबार सेवन करने की सलाह देते हैं। उनका कथन है कि इन दवाओं के सेवन से भी वही काम होता है जो गोवीज का टीका देने से होता है। अमेरिकाने यह सिद्धान्त मान लिया है और वहाँ अब दोनों तरह के टीके कानूनन जायज माने जाते हैं, परन्तु इङ्गलैंण्ड में अभी होमियोपैथिक टीका जायज नहीं माना जाता। यही अवस्था भारतकी भी है और इसीलिये प्रत्येक बालक को टीका लगवाने के लिये उसके मातापिता अभिभावक कानूनन बाध्य हैं।

टीका लगवानेका सबसे अच्छा समय शीतकाल है। कानून के अनुसार एक वर्ष के अन्दर बच्चे को टीका लग जाना चाहिये। बच्चा यदि स्वस्थ हो तो दाँत निकलने के पहले टीका लगवाना अच्छा है। यदि स्वस्थ न हो तो बाद को भी लगवाया जा सकता है।

टीका लगाने पर पहले दो दिन तक कोई लक्षण दिखायी नहीं देता। तीसरे दिन वह स्थान लाल हो उठता है। पाचवे

या छठे दिन उस स्थान में फफोला पड़ जाता है और उसके आसपास का स्थान लाल दिखायी देता है। इस समय या इसके पहले बुखार आ सकता है। आठवें या नवें दिन फफोले मे पीब पैदा होता है और बगल की गिल्टियाँ फूल उठती है। इस समय फफोला मोती जैसा दिखायी देता है। बुखार प्राय पांचवें दिन से लेकर ग्यारहवे दिन तक रहता है। इसके बाद बुखारभी उतर जाताहै और जख्मभी धीरे धीरे सूख जाता है।

टीका लगवानेके बाद उसपर जलपट्टी बॉध रखना अच्छा है। मांस मछली न खाना चाहिये और सफाई के साथ रहना चाहिये। टीका लगवाने के बाद कोई दवा देना ठीक नहीं। हां, यदि बहुत कष्ट हो और कठिन उपसर्ग दिखायी दे, तो उसका इलाज किया जा सकता है। सातवें आठवें दिन सल्फर ३० की एक खुराक दे देनेसे बढ़ी हुई तकलीफ दूर हो जा सकती है। इसके ४–५ दिन बाद मर्क्युरियस सल ३० देने से प्राय कोई बुरा फल नहीं उत्पन्न होता है। टीका का जख्म बहुत बड़ा और कष्टदायक हो तो थूजा ६ या ३० की कई खुराकें देने से लाभ होता है। टीका लगवाने के बाद पतले दस्त आने पर भी थूजा ३० ही देना चाहिये। खॉसी आने पर पल्सेटिला ३० या थूजा ३० और कभी कभी साइलीसिया ३०। गोबीजका टीका देने के बाद कोई भी कठिन बीमारी होने पर थूजा देने से काफी लाभ होता है।

दूध छुड़ाना।

बच्चो को माता का दूध बहुत अधिक समय तक कभी
पिलाना चाहिये। दूध छुड़ाने का बढिया समय बच्चे का
होने के बाद दसवें से लेकर पन्द्रहवें महीने तकका है।
अवस्था में बच्चे के कुछ दांत निकल आते हैं
वह कड़ी चीजें तथा अन्न खाने का अभ्यस्त हो
ा है।

यदि माताका स्वास्थ्य खराब होता है तो इसके पहले
दूधका परिमाण घट जाता है और उसका गुण
नष्ट हो जाता है। मासिक स्राव आरम्भ हो
पर भी दूध का गुण नष्ट हो जाता है। इसलिये,
अवस्थाओं में और भी पहले दूध छुड़ा देना चाहिये।

अनेक स्त्रियां प्रसव के बाद कुछही दिनों में पुन गर्भ-
हो जाती हैं। कभा कभी तो रजस्राव आरम्भ होने के
ले ही वे गर्भवती हो जाती है और स्वयं उन्हें भी अपने
का पता नहीं रहता। गर्भ रह जाने पर भी माता का दूध
ाव हो जाता है, इसलिये गर्भ का पता लगते ही दूध
ा देना चाहिये।

दूध छुड़ाने के बाद बच्चे को दूध रोटी जैसा सादा और
ष्टकर भोजन देना चाहिये। अधिक मिठाई, खटाई, मिर्च,
ाले घी तेल के पक्वान्न आदि देने से शीघ्रही उनका
ास्थ्य नष्ट हो जाता है।

बच्चों के अन्यान्य रोग।

ऊपर जिन रोगो का वर्णन किया गया है, वे बच्चों के प्रधान रोग हैं। इन रोगों के अतिरिक्त और भी ऐसे अनेक रोग है, जिनसे समय समय पर बच्चे पीड़ित होते है, जैसे कि बुखार, खाँसी, ब्रोकाइटिस, न्युमोनिया, फोड़ा, फुन्सी इत्यादि। यह सब रोग साधारण है। बच्चो की ही तरह सयाने आदमियो को भी होते है। इन रोगों की जो दवाएं सयाने आदमियो को दी जाती हैं, वही बच्चों को भी दी जाती है। इन सब रोगो का इलाज विस्तार पूर्वक पहले लिखा जा चुका है, इसलिये उसे यहाँ दोहराना, पिष्टपेषण करना है। जिस रोग को दवा खोजनी हो, पाठको को वहाँ से खोज लेनी चाहिये। कुछ चुने हुए रोगों का संक्षिप्त इलाज नीचे दिया जाता है है:-

कान में दर्द—छोटे बच्चों को यह बीमारी अक्सर होती है। नींद से चौंक पडना, शिर पर हाथ रखकर या कान नोचते हुये रोना चिल्लाना, थोड़ा बहुत बुखार आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। कान में केवल दर्द हो तो बेलेडोना, मर्क्युरियस,कैमोमिला या पल्सेटिला देने चाहिये। यदि कान बहता हो तो लक्षणानुसार मर्क्युरियस, पल्सेटिला,कल्केरिया कार्ब, रसटक्स या सल्फर देना चाहिये। यह इस रोग की

ढिया दवाएं हैं। कान को गुनगुने पानी से पिचकारी द्वारा रोज धो देना आवश्यक और लाभदायक है।

बिछौने में पेशाब—बहुत लोग समझते हैं कि बच्चे बुरी आदत के कारण बिछौने में पेशाब कर दिया करते हैं परन्तु वास्तव में यह एक रोग है और कई कारणों से यह उत्पन्न होता है। पल्सेटिला, फेरम सल्फर, कल्केरिया कार्ब, बेलेडोना, मर्क्युरियस, साइलीसिया, साइना, कस्टीक्म, आर्सेनिक, हिपर, कार्बोवेज और कोलोसिन्थ आदि इस रोग की प्रधान दवाएँ हैं। जो बच्चे चित सोते हैं, उन्हें पल्सेटिला, रसटक्स, फेरम, सल्फर, कल्केरिया, ब्रायोनिया, चायना, नक्सवोमिका, और इग्नेशिया से विशेष लाभ होता है। जो बच्चे करवट के बल सोते हैं, उनकी बीमारी में बेलेडोना, मर्क्युरियस, साइलीसिया, साइना या कस्टीकम से अधिक लाभ होता है। शाम के समय पतली या पेशाब को बढ़ाने वाली चीजें खाने को देना चाहिये। खाने के बाद तुरन्त न सोना चाहिये और सोने के पहले पेशाब कर देना चाहिये "अनजान में पेशाब" देखिये।

शिरमें दाद—यह एक बुरा रोग है और आसानी से आराम होना नहीं चाहता। कभी कभी तो बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक इसकी शिकायत बनी रहती है। रोग

बढने पर शिरके केश नष्टहो जाते हैं। अनेक बार चेहरा,गर्दन तथा शरीर के अन्यान्य भागों में भी यह रोग प्रकट होता है। रसटक्स इसकी बढिया दवा है। रसटक्स के वाद सल्फर या स्टेफीसेग्रिया देना चाहिये। इनसे न लाभ होने पर आर्सेनिक लक्षणानुसार हिपरसल्फर, व्रायोनिया मर्क्सूड,कल्केरिया कार्व, लाइकोपोडियम और डाल्केमारा आदि दवाए भी व्यवहार की जाती है।

दाँतमें कीड़े लगना–पेट में अम्ल, मुँह में अन्न के कण रह जाना आदि कारणों से बच्चों के दाँत क्षय हो जाते है और काले पड जाते हैं इसी को कीडा लगना कहते हैं। परन्तु वास्तव में कीड़ा नहीं होना। क्रियोजोट ६ या ३० इसकी बढ़िया दवा है। मसूढ़े से खून गिरता होतो मर्क्युरियस देना चाहिये। दाँत आसानी से टूट जाते हों या कृमि दोष हो तो साइलीसिया। मसूढ़े में दर्द, दांतों का हिलना और काले हो जाना इत्यादि लक्षणों में स्टेफीसेग्रिया। मिठाई खाना बुरा है। मुँह साफ रखना चाहिये और मुँह वन्द करके सोना चाहिये।

पेट में कृमि–पेटमें कृमि होने पर बच्चे नाक खुजलाया करते हैं। नींद से चौंक पडते हैं। सोते में दांत किड़मिडाते

है। मलद्वार में खुजली होती है और भूख, पाखाना, पेशाब, पाचन क्रिया आदि में गड़बड़ी पैदा हो जाती है। साइना ३० या २०० इस रोग की प्रधान दवा है। सेण्टोनाइन से भी काफी लाभ होता है। छोटे सूत जैसे कृमि की प्रधान दवा ट्युक्रियम है। इनके अतिरिक्त सल्फर, एण्टिम क्रूड, आर्टिका युरेन्स, मर्क्युरियस सल आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

जन्मगत उपदंश—माता पिता को उपदंश या गरमी की बीमारी होने से बच्चों को जन्म होने के कुछ दिन बाद जखम, फुन्सिया, सरदी, और वात आदि लक्षण प्रकट होते हैं। शरीर में तरह तरह के जख्म, कान और गला आदि की गिल्टियों में प्रदाह आदि होनेपर नाइट्रिक एसिड ६ या ३०। सड़नवाले काले जख्म, जलन, जख्मों से जरा में ही खून निकलना इत्यादि लक्षणोंमें आर्सेनिक ६ या ३०। गले और जननेन्द्रिय में जखम, वात, शरीर के जोड़ फूले और लाल, दर्द इत्यादि लक्षणोंमें फाइटोलेक्का ६ या ३०।

बच्चों को बुखार—बड़ी उम्र के आदमियों की तरह बच्चों को भी अनेक कारणों से बुखार आता है। बुखार का कारण

जानकर इलाज करने से वे आसानी से आराम हो जाते हैं। एकोनाइट, बेलेडोना और ब्रायोनिया आदि दवाओं से बच्चे आराम हो जाते हैं। दाँत निकलनेके समय केमोमिला व्यवहार करने से बुखार के साथ साथ अन्यान्य शिकायतें भी दूर हो जाती हैं। इनके अतिरिक्त कोफिया, जेल्सीमियम, इग्नेशिया, नक्सवोमिका, पोडोफिलम और साइना आदि दवाओंसे बच्चों के बुखार में विशेष लाभ होता है। अन्यान्य दवाओं के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के बुखार और उनका इलाज देखिये।

एकज़िमा—सोरा धातु वाले बच्चों को यह रोग विशेष रूप से होता है। इसकी फुन्सियां अलग अलग न होकर, अनेक फुन्सियां एकही स्थान पर प्रकट होती हैं। कभी कभी यह फुन्सियां सूखी रहती हैं और कभी कभी इनसे चिकना रस निकलता है। जलपूर्ण फुन्सियों में मर्क्युरियस ६ और सूखी फुन्सियों में लाइकोपोडियम १२ से विशेष लाभ होता है। रस टॉक्स ३ भी इसकी एक बढ़िया दवा है। इसे देनेसे रोग बढ़ जाय, तो दो तीन दिन दवा बन्द रखनी चाहिये। पुरानी बीमारी और फुन्सियों से चिकना रस निकलने पर ग्रेफाइटिस ३० देना चाहिये। इनके अतिरिक्त एल्यूमिना, ओलियेण्डर, क्रोटन, एण्टिमक्रूड, पेट्रोलियम, मर्क्युरियस कर, हिपर सल्फर और आर्सेनिक आदि दवाएं भी लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

जुकाम—सरदी लगने के कारण बच्चों को अक्सर जुकाम हो जाता है और इसके साथ बुखार तथा खांसी आदि की शिकायत भी पैदा हो जाती है। अनेकबार नाक बन्द हो जाने के कारण वे हांफने लगते हैं और दूध नहीं खींच सकते। सरदी लगने के कारण जुकाम, खासी और बुखार होने पर एकोनाइट 3X दिन में तीन चार बार देना चाहिये। सूखी खांसी, छाती में दर्द, पीला कफ इत्यादि लक्षणों में ब्रायोनिया 3। बहुत कमजोरी, कै, छाती में कफ का घड़घड़ाना लेकिन उसका बाहर न निकलना इत्यादि में एन्टिमटार्ट 6, नाक बन्द हो जाने के कारण दूध न खींच सकने पर नक्सवोमिका 6, इससे लाभ न होने पर सेम्बुकस 1X या 3X। आक्षेपयुक्त खांसी, बहुत कफ निकलना, मिचली या कै, श्वासकष्ट इत्यादि में इपाकाक 6। गाढ़ा गाढ़ा पका हुआ कफ निकलता हो तो पलसेटिला 6। कफ खींचने से रस्सी की तरह लम्बा होता हो तो केलीबाइक्रोम 6। जुकाम के बाद की खांसी किसी तरह अच्छी न होती हो तो मर्क्युरियस 6। नाक का स्राव जिस स्थान में लगे उस स्थान में जख्म हो जाये तो आर्सेनिक 6। अन्यान्य दवाओं के लिये जुकाम और खांसी आदि रोगों का इलाज देखिये।

यकृत या लीवर—अधिक मिठाई, घीकी पकी चीजें अपाच्य पदार्थ आदि खाने, बहुत दूध पीने और किसी तरह

का परिश्रम आदि न करने के कारण बच्चों का यकृत बड़ा हो जाता है और उसकी क्रिया में गोलमाल होने लगता है। यह बहुत ही बुरा रोग है और शीघ्र आराम न होने पर अनेक प्रकार के उपसर्ग उपस्थित होकर इसके कारण बच्चे की मृत्यु हो जाती है। सूखी खांसी, कब्जियत, मल कठिन और सूखा, जीभ सफेद, प्यास, चेहरा पीला इत्यादि लक्षण में आयोनिया ६ या ३०। गण्डमाला धातु, हाथ पैर ठंढे रहनेपर कल्केरिया कार्ब ६ या ३०। कब्जियत या पतले दस्त, यकृत में दर्द, खाने बाद आराम, जी मिचलाना इत्यादि लक्षणो में चेलीडोनियम ६ या ३०। यकृत बड़ा और कड़ा, बदन पीला, पेट फूलना, यकृतमें दर्द इत्यादि में चायना ६ या ३०। यकृत बड़ा और कड़ा, हाथ लगाने से दर्द, जीभ पीली, बहुत पसीना रातमें अस्थिरता इत्यादि लक्षणों में मर्क्युरियस सल ६ या ३०। सूजन या शोथ होनेपर आर्सेनिक ६ या एपिस ३। पतले दस्त आने पर पोडोफिलम ६। बदन बहुत दुबला हो जानेपर आर्ज नाइ ३ या ६। कल्केरिया आर्स भी इस रोग का एक बढिया दवा है। लक्षणानुसार जेल्सीमियम, केली कार्ब, लेकेसिस, नक्सवोमिका, आयोडियम, कैमोमिला, सीपिया, नाइट्रिक एसिड और सलफर आदि दवाएं भी व्यवहार की जाती है। दो वर्षसे कम उम्र के बच्चोंको यह रोग होने पर बड़ी सावधानी और तत्परता से इलाज करना चाहिये। बच्चेको या बच्चेको दूध पिलाने वालीको चूने के पानी या चूनेका व्यवहार न करना चाहिये।

काँच निकलना—खूनी आँवके साथ बच्चे की काँच निकले तो एलोज $1\mathrm{X}$ या $3\mathrm{X}$। दस्तके समय या दस्तके बाद काँच निकलनेपर पोडोफिलम ६ या ३०। कृमिकी उत्तेजना, कब्जियत या काँखनेके कारण काँच निकलने पर इग्नेशिया ६ या ३०। पेशाव करते समय काँच निकलनेपर एसिड म्यूर ६ या ३०। मल त्यागके समय काचका निकलना, जलन, खुजली, दर्द इत्यादि लक्षणों में सल्फर ३०। पतले दस्तों के साथ यह रोग होने पर गेम्बोजियम ३ या ६। फोस्फरस ६ भी एक अच्छी दवा है।

आँत उतरना—वड़ी उम्रके आदमियोंको तरह छोटी उम्रके बच्चोंको भी हर्निया या आंत उतरने की बीमारी होती है। कल्केरिया कार्ब ३० इस रोगकी बढ़िया दवा है। बहुत खासने, काखने, रोने या पेट दुखने के कारण यह रोग होने पर अर्निका ३ या ६। दाहिनी ओर के रोग में लाइको पोडियम १२ या ३० और बायीं ओर के रोग में नक्सवोमिका ६ या ३० देना चाहिये। नक्सवोमिका से लाभ न होने पर कक्कुलस ६ या ३०। अण्डकोषके हर्नियामें मेग्नेशिया ६ या ३०। हर्निया में सड़न पैदा हो जाय तो लेकेसिस ६ या ३०। बेलेडोना, अरम, प्लम्बम, एसिड फस, और साइलीसिया आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

परिश्रम आदि न करने के कारण बच्चों का यकृत बड़ा हो
ता है और उसकी क्रिया में गोलमाल होने लगता है। यह
त ही बुरा रोग है और शीघ्र आराम न होने पर अनेक
ार के उपसर्ग उपस्थित होकर इसके कारण बच्चे की
यु हो जाती है। सूखी खांसी, कब्जियत, मल कठिन और
ला, जीभ सफेद, प्यास, चेहरा पीला इत्यादि लक्षण में
गोनिया ६ या ३०। गण्डमाला धातु, हाथ पैर ठंडे रहनेपर
केरिया कार्ब ६ या ३०। कब्जियत या पतले दस्त, यकृत
र्द, खाने बाद आराम, जी मिचलाना इत्यादि लक्षणों में
ीडोनियम ६ या ३०। यकृत बड़ा और कड़ा, बदन पीला,
फूलना, यकृतमें दर्द इत्यादि में चायना ६ या ३०। यकृत
ा और कड़ा, हाथ लगाने से दर्द, जीभ पीली, बहुत
ीना रातमें अस्थिरता इत्यादि लक्षणों में मर्क्यु रियस सल
या ३०। सूजन या शोथ होनेपर आर्सेनिक ६ या एपिस
। पतले दस्त आने पर पोडोफिलम ६। बदन बहुत दुबला
जानेपर आर्ज नाइ ३ या ६। कल्केरिया आर्स भी इस रोग
एक बढ़िया दवा है। लक्षणानुसार जेल्सीमियम, केली
र्व, लेकेसिस, नक्सवोमिका, आयोडियम, केमोमिला,
पिया, नाइट्रिक एसिड और सल्फर आदि दवाएं भी
वहार की जाती हैं। दो वर्षसे कम उम्र के बच्चोंको यह
ग होने पर बड़ी सावधानी और तत्परता से इलाज करना
ाहिये। बच्चेको या बच्चेको दूध पिलाने वालीको चूने के
नी या चूनेका व्यवहार न करना चाहिये।

काँच निकलना—खूनी आँवके साथ बच्चे की काँच निकले तो एलोज १X या ३X। दस्तके समय या दस्तके बाद काँच निकलनेपर पोडोफिलम ६ या ३०। कृमिकी उत्तेजना, कब्जियत या काँखनेके कारण काँच निकलने पर इग्नेशिया ६ या ३०। पेशाब करते समय काँच निकलनेपर एसिड म्यूर ६ या ३०। मल त्यागके समय काँचका निकलना, जलन, खुजली, दर्द इत्यादि लक्षणों में सल्फर ३०। पतले दस्तों के साथ यह रोग होने पर गेम्बोजियम ३ या ६। फोस्फरस ६ भी एक अच्छी दवा है।

आँत उतरना—बड़ी उम्रके आदमियोंको तरह छोटी उम्रके बच्चोंको भी हर्निया या आंत उतरने की बीमारी होती है। कल्केरिया कार्ब ३० इस रोगकी बढ़िया दवा है। बहुत खांसने, कांखने, रोने या पेट दुखने के कारण यह रोग होने पर आर्निका ३ या ६। दाहिनी ओर के रोग में लाइको पोडियम १२ या ३० और बायीं ओर के रोग में नक्सवोमिका ६ या ३० देना चाहिये। नक्सवोमिका से लाभ न होने पर ककुलस ६ या ३०। अण्डकोषके हर्नियामें मेग्नेशिया ६ या ३०। हर्निया में सडन पैदा हो जाय तो लेकेसिस ६ या ३०। बेलेडोना, आरम, प्लम्बम, एसिड फस, और साइलीसिया आदि दवाओंसे भी लक्षणानसार लाभ होता है।

अण्डकोष प्रदाह—सरदी या प्रसवके समय चोट लगने
ारण बच्चोंको यह रोग होता है। कभी कभी जन्मसे ही
इसकी शिकायत रहती है। यह रोग होने पर एक ओर
ोलीमें प्रदाह, लाली और सूजन आदि लक्षण प्रकट होते
हभी कभी इसके साथ बुखार और कै आदि उपसर्ग भी
ह रहते हैं। चोट लगनेके कारण यह रोग होनेपर आर्निका
६। इस रोगके साथ बुखार होने पर एकोनाइट ६।
ते यह रोग होनेपर ब्रायोनिया ३ या ६। सूजन और
ा आदि लक्षणोंमें स्पञ्जिया तथा रोडोडेन्ड्रन से भी बहुत
होता है। बहुत दर्द और पाकाशय तक दर्दका फैल
इत्यादि लक्षणोंमें हेमामेलिस १X या ३ देना चाहिये।
त दोष दूर करनेके लिये कल्केरिया कार्ब ६ या ३० का
ा करना चाहिये।

अमौरी—बच्चोको हमेशा कपड़े पहना रखनेसे गरमीके
में प्राय उनके बदन में अमौरी हो जाती है और इनके
ा उन्हें बहुत तकलीफ होती है। इस रोगमें गण्डमाला
वाले बच्चोंको ... कार्ब ३०। कैमोमिला

खुजली—अनेक बार बच्चेके बदनमें छोटी छोटी फुन्सियाँ या दाने निकलकर उसे सूखी खुजली हो जाती है। समूचे बदनमें खुजली, बदन खोलनेपर खुजलीका बढ़ना इत्यादि लक्षणोंमें कार्बोवेज ३०। बदन खोलते ही अनवरत खुजली होनेकी आर्सेनिक ६ या ३० भी अच्छी दवा है। बिछौने पर लेटते ही खुजली बढ़े तो इग्नेशिया ६ या ३०। कुछ देर लेटनेके बाद बिछौना गरम होनेपर खुजली बढ़े तो मर्क्युरियस सल ६ या ३०। इन दवाओंसे लाभ न होनेपर सल्फर ३० या २००। मर्क्युरियस और सल्फर पर्यायक्रममें देनेसे अनेक बार दूसरी दवा देनेकी जरूरत नहीं पड़ती।

विसर्प—यह रोग होनेपर पहले बदनका चमड़ा लाल हो जाता है। फिर बुखार और प्रदाह आदि लक्षण उपस्थित होते हैं। आक्रान्त स्थानमें बड़े बड़े फफोले पड़ जाते हैं। कभी कभी यह फफोले इकट्ठे हो जाते हैं और वहाँ जख्म हो जाता है। जख्म सूखनेपर उसमें पपड़ी पड़ जाती है। बेलेडोना और रसटक्स इस रोगकी प्रधान दवाएं हैं। साधारणत उन्हींके प्रयोगसे रोग आराम हो जाता है। वंशगत उपदंश-दोष होनेपर मर्क्युरियसकर ३ या ६ देना चाहिये। नीली आभायुक्त फफोले और सांघातिक रोग होनेपर लेकेसिस ६ या ३०। बहुत जलन या पुरानी बीमारीमें आर्सेनिक ६ या ३०।

फोड़ा फुन्सी—शरीरके भिन्न भिन्न स्थानोंमें छोटी छोटी फुन्सियाँ होने पर आर्निका ६ या ३० देना चाहिये। गरमीके दिनोंमें फोड़े होकर जख्म हो जायें तो कार्बोवेज ६ या ३०। मोटे और थुलथुले शरीरके बच्चोंको यह रोग होनेपर कल्केरिया कार्ब ३० या २००। बड़े फोड़ेके आस पास छोटी छोटी फुन्सियाँ होनेपर कैमोमिला ६ या १२। फोड़ेसे बदबूदार रस और रक्त निकलनेपर लाइकोपोडियम १२ या ३०। कानके पीछे या शिरमें फोडा, जख्मसे चिकना चिकना रस निकलना इत्यादि लक्षणोंमें ग्रेफाइटिस ६ या ३०। शिर या अन्यान्य स्थानमें बारंबार फोडा होने पर या चुनी हुई दवासे पूरा लाभ न होने पर सल्फर ३० या २०० देना चाहिये।

दुबलापन—अच्छी तरह खाने पीने और शरीर में कोई रोग न होने पर भी अनेक बार बच्चे दिनों दिन सूखते जाते हैं। इस अवस्था में स्वास्थ्य के नियमों का पालन कराना चाहिये और एक साथ अधिक खाने को न देकर थोड़ी और हलकी चीजें खाने को देना चाहिये। इस व्यवस्था के साथ साथ लक्षणानुसार सल्फर, कैल्क फस, एसिड फस, एब्रोटेनम और साइलीसिया आदि दवाओं में से किसी एक दवा का सेवन कराने से रोग शीघ्र आराम हो जाता है।

बदहजमी—बच्चों को यह रोग होने पर हिचकी पेट में पेठन, गड़गड़ाहट, कोई भी चीज हजम न होना, दस्त कभी पतला, कभी कड़ा, भूख में कमी या ज्यादती, कमजोरी और उदासी आदि लक्षण प्रकट होते हैं। आर्सेनिक ६ या चायना ६ इस रोग की प्रधान दवाएं हैं। नक्सवोमिका ३०, सल्फर ३० और ओलियेन्डर ३ आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

अंजनी—आंखपर अंजनी होने से बच्चों को बहुत तकलीफ होती है। यदि इस रोग के आरम्भ में इस के साथ बुखार भी हो तो एकोनाइट ३X या ६ देना चाहिये। ऊपर वाले पपटे में अंजनी होने पर पल्सेटिला ६ या ३०। रोग के आरम्भ में ही इसे देने से रोग बढ़ने नहीं पाता। स्टेफीसेग्रिया ६ या ३० भी इस रोग की एक बढ़िया दवा है। इसे देने से बारबार अंजनी का होना रुकता है। अंजनी में पीब पड़ जाने पर हिपर सल्फर ६। चुनी हुई दवासे लाभ न होने पर सल्फर ३०।

पिलही—बहुत दिनों तक मैलेरिया बुखार आने के कारण बच्चों की पिलही बढ़ जाती है। इसके साथ समय समय पर और लक्षण भी प्रकट होते हैं। सियोनोथस १ X या ३ X इस

रोग की बढ़िया दवा है। पतले दस्तों की शिकायत होने पर इससे विशेष लाभ होता है। अधिक क्वीनाइन खाने के कारण पिलहीका बढना, बहुत कमजोरी, कै, खूनी दस्त या खूनी, इत्यादि लक्षणों में आर्सेनिक ३० । पिलही के स्थानमें सुई चुभोने जैसा दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, कब्जियत इत्यादि में ब्रायोनिया ३० । मर्क्युरियस विन आयोड ३X या ६ X विचूर्ण भी एक अच्छी दवा है। लक्षणानुसार नक्सवोमिका, चायना फेरम, कल्केरिया, लाईकोपोडियम लेकेसिस, नेट्रमम्यूर और सल्फर आदि दवाएं भी व्यवहार की जाती है।

नाकसे खून गिरना—अनेक बार बच्चों की नाकसे खून गिरता है। मिलिफोलियम मदर टिञ्चर इस रोग की बढ़िया दवा है। नाक पर घूसा या किसी तरह की चोट लगनेके कारण यह रोग हो तो आर्निका ३ या ६ देना चाहिये। बहुत कमजोरी के कारण नाक से खून निकलता हो तो चायना ६ । सुबह के वक्त खून निकलने पर ब्रायोनिया ३ । रात के समय खून निकलने पर मर्क्युरियस वाइवस ६X विचूर्ण। यदि टायफाइड

भूख न लगना—बच्चे या प्रसूता के आहार दोष या पेट में कृमि होने के कारण अनेक बार बच्चों को अच्छी तरह भूख नहीं लगती। घी तेल की पकी चीजें खाने के कारण यह रोग होने पर पल्सेटिला ६ या ३०। कब्जियत के साथ यह रोग होने पर नक्सवोमिका ३०। जीभ पर सफेद लेप, पेट में गोलमाल, भूख का न लगना इत्यादि लक्षणों में एन्टिम क्रूड ६ या १२। यकृत की खराबी के कारण भूख न लगने पर सल्फर ३०।

राक्षसी भूख—पाकाशय के गोलमाल या कृमि दोष के कारण बच्चों को कभी कभी बहुत अधिक भूख लगती है। स्टेफीसेग्रिया ६ या ३० इस रोग की बढ़िया दवा है। कृमि दोष के कारण राक्षसी भूख लगने पर साइना ३० या २०० देना चाहिये। इनके अतिरिक्त चायना, साइक्यूटा और लाइकोपोडियम आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है।

श्वासकष्ट—सर्दी लगने के कारण छाती में कफ जम जाने पर बच्चों को श्वासकष्ट या दमा की शिकायत पैदा हो जाती है। खाँ— गले में साय साय आवाज, श्वासकष्ट, पैसा

मालूम होना मानो गले में कफ रुका हुआ है, किन्तु उसका बाहर न निकलना, खाँसी के साथ कै, इत्यादि लक्षणों में इपीकाक ६ या ३० देना चाहिये बहुत श्वासकष्ट, हिलने डोलने से आराम मालूम होना इत्यादि लक्षणों में लोबेलिया १ X। आधी रात के बाद श्वासकष्ट का बढ़ना, बहुत श्वासकष्ट और अस्थिरता इत्यादि लक्षणों में आर्सेनिक ३०। आधी रात के समय रोग का आक्रमण, अस्थिरता, श्वासरोधक खांसो, इत्यादि लक्षणों में सेम्बुकस ३ या ६। स्वरभग, सांय सांय आवाज के साथ खासी, श्वासकष्ट इत्यादि लक्षणों में स्पजिया ३०। "दमा" देखिये।

जाड़े में बदन फटना—कभी कभी जाडे में बच्चे का शरीर, हाथ पैर, गाल और होंठ आदि फटते हैं और अनेक वार उनसे खून निकलता है। फटे हुए स्थान में ग्लोसरीन, वेसलीन, घी, मक्खन या मलाई लगाने से बहुत लाभ होता है। लक्षणानुसार सल्फर ३०, आर्सेनिक ३०, नेट्रम म्यूर ३०, क्रेलीकार्ब ३० आदि दवाओं का सेवन भी कराया जा सकता है।

नाक में जख्म—सरदी, गण्डमाला धातु या वंशागत उपदंश के कारण बच्चों की नाक में जख्म हो जाता है और उससे बदबूदार स्राव निकलता है। पारे या उपदंश के दोष से जख्म, नाक का क्षय होना, बदबूदार स्राव इत्यादि लक्षणों में श्ररममेट ३०। गण्डमाला धातु, दिन में स्राव, रात में नाक का सूख जाना इत्यादि में कल्केरिया कार्ब ३०। नाक से बदबू का निकलना, जख्म से पतला स्राव निकलना या लसदार पीब जमा होना, उसको निकालने में कष्ट इत्यादि लक्षणों में केली बाइक्रोम ६ या ३०। पारे का दोष, जख्म से खून निकलना, नाक में जख्म हो जाना इत्यादि लक्षणों में नाइट्रिक एसिड ६ या ३०।

केश झड़ना—केश झड़ते झड़ते अनेक बार बच्चों की चांद गञ्जी हो जाती है। निरामिष भोजियों को और बड़ी उम्र के आदमियों को यह रोग बहुत कम होता है। एसिड फ्लोर इस रोग की बढ़िया दवा है। उपदंश धातुवाले लोगों को इससे विशेष लाभ होता है। इस रोग के साथ यदि शिरमें बहुत खुजली भी हो तो विङ्का माइनर देना चाहिये। केश सूखे और रुखड़े हों तो केली कार्ब ६॥ किसी कड़ी बीमारी के बाद शारीरिक कमजोरी या दिमागी सुस्ती के कारण यह रोग होने पर एसिड फस २ X-३। सल्फर ३० फल्केरिया फार्ब ३०

केन्थरिस ३ या ६ और सीपिया ३० आदि दवाओं के सेवनसे भी अनेकवार काफी लाभ होता है। सुबह गंजी जगह में टिंचर आयोडिन लगाना और शामको घी डालना लाभदायक है। जब तक काफी लाभ न हो तब तक यह प्रक्रिया करनी चाहिये।

तोतलाना—यदि बच्चे बोलते समय तोतलाते हो तो उन्हें कुछ दिनों तक स्ट्रेमोनियम ३ या हायोसायमस ३ का सेवन कराना चाहिये। बोलते समय जीभ पर मार्बल गोली या पत्थर का एक टुकड़ा रख लेना चाहिये। गुड़ या मिठाई खाना, क्रोध करना और हड़बड़ा कर बोलना मना है।

धातुगत रोग—क्षय, गण्डमाला, और गरमी–यह तीन रोग मातापिता को होने से बच्चों को भी वीरासत में मिलते हैं फोस्फरस ६ क्षय (गुटिका) दोष की प्रधान दवा है। लक्षणानुसार कल्केरिया फस, फेरमफस, आर्सेनिक, साइलीसिया, सल्फर, लाइकोपोडियम और आयोडियम आदि दवाओं से भी लाभ होता है। गण्डमाला धातुकी प्रधान दवाएं कल्केरिया कार्ब, आयोडियम और नेट्रम सल्फ है। उपदंश धातु की सर्वप्रधान दवा मर्क्युरियस सल है। सोरा घातु

में सल्फर और प्रमेह धातु में थूजा प्रधान रूप से व्यवहार किया जाता है। पारेका अपव्यवहार करने के कारण स्वास्थ्य नष्ट हो गया हो तो केली आयोड या अरम देना चाहिये। पुरानी बीमारी के बाद बारबार सरदी या पतले दस्त की शिकायत पैदा हो जाती हो तो एसिड नाइ। सूखे और दुबले पतले बालकों को एल्यूमिना। सूखी और दुबली पतली बालिकाओं को सिकेली। बहुत दिनों तक बीमार रहने के कारण जीवनी शक्ति कम हो जाने पर कार्बोवेज। कुबड़े हो कर बैठने या झुक कर चलने पर सल्फर। किसी बीमारी के कारण शरीर एकदम सूख जाने पर आर्ज नाइ। नाक कान या शरीर के किसी भी छेद से जरा में ही खून निकल पड़ता हो तो क्रोटेलस। तूफान के पहले रोग बढ़ने पर रोडोडेन्ड्रन। तर हवा में रोग बढने पर रसटक्स। बरसात में रोग बढ़ने पर डाल्केमारा। अन्धड़ तूफान के दिनों में रोग बढता हो तो जेलसीमियम।



आवश्यक सूचना—मस्तिक झिल्ली प्रदाह, ब्रोंकाइटिस न्युमोनिया, मस्तिष्कमें जलसचय, प्लुरिसी, डिफ्थीरिया, चेचक, तरह तरह के बुखार और चर्मरोग इत्यादि का इलाज सी पुस्तक में अन्यत्र देखिये।



परिशिष्ट

चुनी हुई दवाओं की

संक्षिप्त मेटीरिया मेडिका।



नीचे होमियोपैथी की प्रधान और चुनी हुई दवाओं की मेटीरिया मेडिका दी जाती है। इससे पाठकोंको चुनाव करने में सहायता मिल सकती है। इसमें दवाओं के प्रधान लक्षण, दवाओं के प्रधान क्रम, जो साधारणतः व्यवहार में लाये जाते हैं और प्रतिकारक दवाओं का उल्लेख है। किसी दवा को अधिक मात्रा में सेवन करने या अच्छी तरह चुनाव न होने के कारण यदि रोगी के शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है या उसकी विपक्रिया प्रकट होती है, तो प्रतिकारक दवा का सेवन करने से वह नष्ट हो जाती है।



एकोनाइट—इसकी प्रधान क्रिया पीठ, मस्तिष्क और स्नायु मण्डल पर प्रकट होती है। मृत्यु भय, अस्थिरता, उत्कण्ठा, रक्ताधिक्य, प्यास, जाड़ा और कम्प के साथ रोग का आरम्भ, आदि इसके निर्देशक लक्षण हैं। सूखी ठण्ढी हवा

लगने,पसीना रुकजाने,डरजाने,या प्रदाहके कारण कोई भी रोग होने पर उसकी यह प्रधान दवा मानी जाती है। सर्दी, खाँसी, हाम, आमाशय, हैजे की प्रथमावस्था और शेषावस्था, हृदय की दुर्बलता, न्युमोनिया, वात ज्वर, बच्चोंका ज्वर आदि सब तरह के नये रोगों में या रोग की प्रथमावस्था में इसे व्यवहार करना चाहिये। क्रम १X से ३० तक। प्रतिकारक दवाएँ—एसेटिक एसिड, सल्फर, केमोमिला, कोफिया, नक्सवोमिका।

इस्क्यूलस हिप—ववासीर, स्त्री रोग, और फेरिजाइटिस, आदि रोगों में यह दवा व्यवहार की जाती है। कमर और पिक चञ्चु प्रदेश में असह्य वेदना, जरा जरा में क्रोधित हो उठना, मलद्वार में शुष्कता और गरमी मालूम होना, ऐसा मालूम होना मानो मलद्वार में काष्ठ के छोटे-छोटे टुकड़े भरे हुए हैं, ववासीर के मसों का रंग बैगनी होना, उनमें बहुत जलन और दर्द; रक्तस्राव या रक्तस्राव हीनता। क्रम २X-६ X। प्रतिकारक दवा-नक्सवोमिका।

इथ्यूजा—दूध हजम न होना, बच्चों को दूध की कै होना और बच्चों के हैजा रोग में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ३X—१२। प्रतिकारक-उद्भिज अम्ल।

एलियम सिपा—यह प्याज का अर्क है । आँख और नाक से पानी जैसा स्राव, अनवरत छींकें आना, शिरमें सरदी, और दर्द, खाँसी, खाँसते समय ऐसा मालूम होना, मानो गला फट जायगा, उसके कारण गले को जोर से पकड लेना, कच्चे फल खाने के कारण पेट में दर्द इत्यादि । क्रम ३X—६ । प्रतिकारक-आर्निका, केमोमिला, कोफिया, नक्सवोमिका, थूजा, विरेट्रम ।

एम्ब्रा ग्रिसिया—स्नायविकता इसका प्रधान लक्षण है । बुढ़ापे के कारण कमजोरी, स्त्री रोग, मासपेशियों का काँपना, सभी बातें भूल जाना, स्नायविक खाँसी इत्यादि । क्रम ६–३० । प्रतिकारक-केम्फर, कोफिया, पल्स, नक्स ।

एलोज—इसका हिन्दी नाम मुसब्बर है । अतिसार, आमाशय, रक्तामाशय, ववासीर, यकृत में रक्तसञ्चय होने के कारण दर्द, सुबह पतले दस्त, तड़के बिछोने से उठते ही झट पट पाखाने की ओर दौड़ना, पेट में गडगडाहट, वायु के साथ मल का निकलना, अगूर के झुमकों की तरह ववासीर के मसे, दस्त के पहले और दस्त के समय पेट में दर्द, मलद्वार में जलन, तपाहट, खुजली और स्पर्श द्वेष । क्रम १X–२०० । प्रतिकारक—सल्फर, कैम्फर, लाइको, नक्स ।

एल्युमिना—खाँसी, कब्जियत, रक्तस्राव और स्त्री रोग आदि में इसका व्यवहार होता है। बहुत काँखने पर भी पतले मल तक का बाहर न निकलना, बहुत अधिक परिमाण में जख्म करनेवाला स्राव, दुबले पतले, क्षीण और वृद्ध मनुष्यों की बीमारी, अमावस्या और पूर्णिमा को रोग का बढ़ना। क्रम ६--२००। प्रतिकारक—ब्रायोनिया, कैमोमिला, इपीकाक, पल्सेटिला।

एनाकार्डियम—स्मरण शक्ति की कमजोरी, भीड़भाड़ वाले स्थान में जाते भय मालुम होना, चिन्ताशक्ति का लोप, उदास रहना, गालियाँ देने और कसमें खाने की प्रबल इच्छा, मस्तिष्क की अवसन्नता, शिरदर्द, मानसिक परिश्रम से उसका बढ़ना, आहार से घटना, किन्तु थोड़े ही समय में फिर ज्यों का त्यों हो जाना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। अजीर्ण, कब्जियत, अम्लशूल और कुष्ट व्याधि आदि में यह व्यवहार होता है। क्रम ६X--३०। प्रतिकारक—कोफिया, कैम्फर, क्लिमेटिस, क्रोटन, रसटक्स।

एन्टीमोनियम क्रूडम—बाल रोग में यह विशेष रूप से व्यवहार होता है। जीभ पर सफेद लेप इसका प्रधान लक्षण है। पाकाशय में अनेक प्रकार का गोलमाल, पारी पारी से

पतले दस्त और कब्जियत, नथुने और मुख के कोने में जख्म, चिड़चिड़ा स्वभाव आदि लक्षणोंमें यह विशेष उपयोगी है। ज्वर, अतिसार, खाँसी, चर्मरोग, मन्दाग्नि, वमन आदि रोगों में यह व्यवहार होता है। क्रम ६X—३० । प्रतिकारक—हिपर सल्फर, मर्क्युरियस सल, पल्सेटिला।

एन्टीमोनियम टार्ट—इसकी क्रिया फेफड़ा, पाकाशय और यकृत की श्लैष्मिक झिल्ली पर विशेष रूप से प्रकट होती है। चेहरे पर ठण्ढा पसीना, छाती में कफ घड़घड़ाना, लेकिन बाहर जरा भी न निकलना, कै के बाद बहुत सुस्ती और निद्रालुता, सभी रोगों में बहुत निद्रालुता आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। यह सरदी, खाँसी, न्युमोनिया, ब्रोंकाइटिस, दमा, श्वास कष्ट, वमन, दाम, चेचक, ज्वर, हैजा इत्यादि रोगों में व्यवहार होता है। बच्चे और वृद्धों को छाती में कफ जम जाने के कारण घड़घड़ाहट के साथ खाँसी आती हो, किन्तु कफ न निकलता हो, तो इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ३X—२०० । प्रतिकारक—सिंकोना, कफ्युलस, इपीकाक, ओपियम, पल्सेटिला, सीपिया।

एपिस मेलीफिका—इसकी क्रिया शरीर के कोषमय विधान पर प्रकट होती है। जलन, डंक मारने जैसा दर्द,

प्यास का न होना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। आँख के नीचे सूजन, अत्यन्त स्पर्श द्वेष, शरीर का चमड़ा मोम के समान, तन्द्रालुता, गरमी सहन न होना, खुली हवा और ठण्ढे जल से आराम मालूम होना, आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। आमवात, शोथ, मूत्रकृच्छ्रता, मूत्राशय के रोग, विकार ज्वर और जरायु के रोगों में यह व्यवहार होता है। क्रम ६—२००। प्रतिकारक—केन्थरिस, इपीकाक, लेकेसिस, नेट्रम म्यूर, आलिव आइल, प्याज इत्यादि।

आर्जेन्ट्रम नाइट्रिकम–इसकी क्रिया रक्त पर प्रकट होती है। मीठी चीजें, खासकर चीनी खाने की प्रबल इच्छा, सदा व्यस्त दिखायी देना, बहुत स्नायविकता, मानसिक परिश्रम के कारण रोग, शरीर पर कपड़ा रखने से श्वासरोध मालूम होना और कपड़ा उतारने से जाड़ा लगना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। आँखका उठना, उससे बहुत पीव निकलना, शिरदर्द, गायकोंका स्वरनाली प्रदाह, और पाकाशय अन्त्र, मूत्रयन्त्र तथा जननेन्द्रिय के रोगों में यह विशेष रूप से व्यवहार होता है। क्रम ६—३०। प्रतिकारक—आर्सेनिक मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, नाइट्रिक एसिड इत्यादि।

आर्निका मोन्टेना–गिरने या चोट लगने के कारण कोई

गिरने के कारण दर्द, प्रसव के बाद का दर्द, मैलेरिया बुखार, मुँह में बदबू, विकार, पक्षाघात, बेहोशी, सभी विषयों में उदासीनता, शैय्याक्षत, शैय्या कठिन मालूम होना, बायें अंग में रोग का आक्रमण आदि इसके प्रधान लक्षण है। इसका १०—१५ बूँद मदरटिञ्चर एक छटाक पानी में मिलाने से लोशन तैयार होता है, जो चोट लगना, गिर जाना, छिल जाना, चोट के कारण नीले दाग पड़ जाना आदि में बाहर से प्रयोग किया जाता है। क्रम १X—२०० । प्रतिकारक—कैम्फर इपीकाक, सिंकोना, इग्नेशिया, साइक्युटा, फेरम और सेनेगा।

आर्सेनिक एल्बम—इसका हिन्दी नाम संखिया है। शरीर के प्राय समस्त अंशो पर इसकी क्रिया प्रकट होती है। बहुत सुस्ती, बहुत बेचैनी, सदा करवट बदलते रहना, तेजी के साथ शक्ति का क्षय, तेज प्यास, बारबार थोड़ा थोडा पानी पीना, शरीरमें बहुत जलन, ज्वालाकर वेदना, जल जाने जैसी जलन, आधी रात के बाद रोग का बढ़ना, गरमी से रोग लक्षणो का घटना और सरदी से बढ़ना, सभी तरह के स्रावों में बदबू, रोगों का पारी पारी से उपस्थित होना आदि इसके प्रयोग लक्षण हैं। विषम ज्वर, पारी का बुखार, क्वीनाइन के कारण रुका हुआ ज्वर, धीमा बुखार, पुराना बुखार, हैजा, अतिसार, रक्तामाशय, शोथ, मूत्ररोग, चर्मरोग, दमा, सरदी, रक्तहीनता, शरीर को क्षय करने वाला पुराना रोग आदि में इसका व्यवहार होता है। क्रम ३X—१००० । प्रतिकारक—

कैम्फर—कार्बोवेज, सिंकोना, फेरम, हिपर सल्फर, आयोडियम, इपीकाक, लेकेसिस, नक्सवोमिका और विरेट्रम एलब इत्यादि।

अरम मेटालिकम—सदा खिन्न रहना, आत्महत्या करने की इच्छा, जीवन भारस्वरूप मालूम होना, जरायु और अण्डकोष की बीमारी, गरमी या पारे के सेवन का कुफल या उसके कारण कोई रोग होना, अस्थि या उपास्थि में प्रदाह और जख्म, खास कर नाक की हड्डी में जख्म इत्यादि रोगों में यह व्यवहार होता है। क्रम ३X—२०० । प्रतिकारक—वेलेडोना, कैम्फर, सिंकोना, कोफिया, क्युप्रम, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, स्पाइजिलिया।

वेप्टीशिया—पूर्ण उदासीनता, प्रश्नका उत्तर देते देते तन्द्रालुता, मलमूत्र आदि सभी तरह के स्रावों में बदबू, समूचे शरीर में जोरों का दर्द, केवल पतले पदार्थ निगल सकना, इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। टायफाइड ज्वरकी यह सर्व प्रधान दवा है, विकार ज्वर में दस्त शुरू होते ही इसे देना चाहिये। क्रम १X–३०।

बेरइटाकार्ब—मूर्ख, बुद्धिहान, बड़े पेटवाले, जिन्हें जरा-में ही सरदी लग जाती हो तथा शीघ्रता पूर्वक न बढ़ने वाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है। तथा

बगल की गांठों का बढ़ना, गण्डमाला, वृद्धों की बीमारियाँ आदि में यह व्यवहार होता है। शरीरका बायाँ भाग आक्रान्त होना भी इसका एक प्रधान लक्षण है। क्रम ६-३० प्रतिकारक-एन्टिमठार्ट, बेलेडोना, कैम्फर डालकेमारा।

बेलेडोना-मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय, चेहरा और आँखें लाल, शिरमें दपदपी, दर्द, रोग या दर्दका एकायक शुरू होना और एकायक गायब हो जाना, प्रलाप, स्पर्शद्वेष इत्यादि इसके प्रयोग लक्षण हैं। प्रदाह के कारण रोग, प्रलाप, बच्चेका आक्षेप या खींचन, गलेमें दर्द, सरदी, खाँसी, ज्वर मस्तिष्क विकार के साथ टायफाइड ज्वर, दन्तशूल, शिरमें दर्द, फोड़ा चक्षुप्रदाह आदि रोगोंमें यह व्यवहार होता है। प्रदाह जनित रोगों की यह एक बढ़िया दवा है। एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे व्यवहार करना चाहिये। क्रम २X—१०००। प्रतिकारक-कैम्फर, कोफिया, हिपर सल्फर हायोसायमस, ओपियम, पल्सेटिला इत्यादि।

बार्बेरिस वल्गेरिस-यकृत और मूत्रग्रन्थिपर इसकी क्रिया विशेष रूपसे प्रकट होती है। कमर में दर्द, गठिया वात, मूत्रग्रन्थि प्रदाह, पथरी, पित्तजनित उदरामय, भगन्दर आदि रोगों में इसका व्यवहार होता है। क्रम १X-३०। प्रतिकारक-कैम्फर।

कैम्फर—कार्बोवेज, सिंकोना, फेरम, हिपर सल्फर, आयोडियम, इपीकाक, लेकेसिस, नक्सवोमिका और विरेट्रम एल्ब इत्यादि।

अरम मेटालिकम—सदा खिन्न रहना, आत्महत्या करने की इच्छा, जीवन भारस्वरूप मालुम होना, जरायु और अण्डकोष की बीमारी, गरमी या पारे के सेवन का कुफल या उसके कारण कोई रोग होना, अस्थि या उपास्थि में प्रदाह और जख्म, खास कर नाक की हड्डी में जख्म इत्यादि रोगों में यह व्यवहार होता है। क्रम ३X—२०० । प्रतिकारक—बेलेडोना, कैम्फर, सिंकोना, कोफिया, क्युप्रम, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, स्पाइजिलिया।

बेप्टीशिया—पूर्ण उदासीनता, प्रश्नका उत्तर देते देते तन्द्रालुता, मलमूत्र आदि सभी तरह के स्रावों में बदबू, समूचे शरीर में जोरो का दर्द, केवल पतले पदार्थ निगल सकना, इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। टायफाइड ज्वरकी यह सर्व प्रधान दवा है, विकार ज्वर में दस्त शुरू होते ही इसे देना चाहिये। क्रम १X—३०।

वेरइटाकार्ब—मूर्ख, बुद्धिहान, बड़े पेटवाले, जिन्हें जरा-में ही सरदी लग जाती हो तथा शीघ्रता पूर्वक न बढ़ने वाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है। टानसिल तथा

को गाँठों का बढना, गण्डमाला, वृद्धों की बीमारियाँ में यह व्यवहार होता है। शरीरका बायाँ भाग आक्रान्त भी इसका एक प्रधान लक्षण है। क्रम ६-३० प्रति-क-पन्टिमटार्ट, बेलेडोना, कैम्फर डाल्केमारा।

बेलेडोना—मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय, चेहरा और आँखें, शिरमें दपदपी, दर्द, रोग या दर्दका एकायक शुरू होना एकायक गायब हो जाना, प्रलाप, स्पर्शद्वेष इत्यादि प्रयोग लक्षण है। प्रदाह के कारण रोग, प्रलाप, बच्चेका प या खींचन, गलेमें दर्द, सरदी, खाँसी, ज्वर मस्तिष्क र के साथ टायफाइड ज्वर, दन्तशूल, शिरमें दर्द, फोड़ा प्रदाह आदि रोगोंमें यह व्यवहार होता है। प्रदाह जनित की यह एक बढिया दवा है। एकोनाइट से लाभ न पर इसे व्यवहार करना चाहिये। क्रम २X—१०००। कारक-कैम्फर, कोफिया, हिपर सल्फर हायोसायमस, पियम, पल्सेटिला इत्यादि।

बार्बेरिस वल्गेरिस—यकृत और मूत्रग्रन्थिपर इसकी या विशेष रूपसे प्रकट होती है। कमर में दर्द, गठिया , मूत्रग्रन्थि प्रदाह, पथरी, पित्तजनित उदरामय, भगन्दर दि रोगों में इसका व्यवहार होता है। क्रम १X-३०। प्रति-रक-कैम्फर।

बोरेक्स—इसे हिन्दीमें सोहागा कहते हैं। ऊपरसे नीचे की ओर उतरनेमें भय मालूम होना और अत्यन्त स्नायविकता आदि इसके प्रधान लक्षण है। मुखमें जख्म, अतिसार, श्वेत प्रदर, और वन्ध्यत्व आदि रोगो में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम १X-३०।

ब्रायोनिया—फेफड़ा, फेफड़े को ढकनेवाली झिल्ली, यकृत और मस्तिष्क आदि पर इसकी क्रिया प्रकट होती है। सुई चुभोने या कतरने जैसा दर्द, हिलने डोलने से रोग लक्षणों का बढ़ना तेज प्यास, एक साथही बहुत सा पानी पीना, क्रोधी और चिड़चिड़ा स्वभाव, शिरमें फट जाने जैसा दर्द आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। न्युमोनिया, प्लुरिसी, ब्रोंकाइटिस, सरदी, खाँसी, स्वल्पविराम ज्वर, सान्निपातिक ज्वर, पित्त-ज्वर, वात, वातज्वर, सूतिका ज्वर, बहुत तेज कब्जियत, यकृतकी बीमारी आदि रोगों में यह व्यवहार होता है। क्रम ६-२००। प्रतिकारक-एकोनाइट, कैम्फर, केमोमिला, क्लिमेटिस, कोफिया, इग्नेशिया, म्युरेटिक एसिड, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रसटक्स इत्यादि।

केक्टस—हृदुपिण्ड पर इसकी क्रिया विशेष रूपसे प्रकट होती है। हृदय में मानों लोहेकी कोई चीज रक्खी हुई है, कलेजे की धड़कन, स्थिर रहने में रोगी को आराम मालूम

होना, गला, छाती, मलाशय और योनिद्वार आदि स्थानों का सिकुड जाना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। क्रम ६–३० ।

कल्केरिया कार्ब—मोटा और थुलथुला शरीर, बच्चों के ब्रह्मतालुका जल्दी न भरना, सोते समय शिरमें पसीना, पैरके तलवे ठढे, जरामें ही सरदी लगना, गण्डमाला धातु इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। गण्डमाला, गुटिका, अस्थि-अपक्वता आदि शरीरकी गठन विकृति, बच्चों को देरी से दॉत निकलना, नियमित समय पर चलना न सीखना, पुराना अतिसार, गण्डमाला के कारण तरह तरह की बीमारियॉ इत्यादि में इसका व्यवहार होता है। क्रम ६—२००। प्रति-कारक—कैम्फर, नाइट्रिक एसिड, नक्सवोमिका, सल्फर इत्यादि।

कल्केरिया फोस—इसका दूसरा नाम फोस्फेट आफ लाइम हैं। सभी तरहके अस्थिरोग, टूटी हुई हड्डोका देर तक न जुडना, बच्चोंको दॉत निकलने के समय तरह-तरह के रोग होना, बच्चो की शीर्णता, सब तरह के शरीर को क्षय करने वाले रोग, हर बार ऋतु बदलने के समय वात वेदना

का बढ़ना, अतिसार, बच्चोंका हैजा इत्यादि रोगों में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ३X–२०० ।

कैम्फर—हिन्दीमें इसे कपूर कहते हैं। कालेरा की यह बढ़िया दवा है। रोगकी प्रथमावस्था में कै होने के पहले पन्द्रह पन्द्रह या बीस बीस मिनट के अन्तर से चीनी के साथ पाँचसे लेकर दस बूँद तक देने से लाभ होता है। मूर्च्छा या हिस्टीरिया में इसे सूंघने से बेहोशी दूर होती है। प्रतिकारक—ओपियम ।

केनेबिस सेटाइवा—इसे हिन्दी में भग कहते हैं। सूजाक की प्रथमावस्था में गाढ़ा गाढ़ा बहुतसा स्राव निकलना और पेशाब करते समय तथा पेशाब करने के बाद मूत्रनली में जलन होनेकी यह बहुत बढ़िया दवा है। मूत्रयन्त्रकी बीमारी, दमा, हृद्पिण्डके रोग इत्यादि में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम १X–३०। प्रतिकारक—कैम्फर।

केन्थरिस —मूत्रयन्त्र और चमड़े पर इसकी क्रिया विशेष रूपसे प्रकट होती है। मूत्रयन्त्रके लक्षणों की प्रधानता देखते ही इसे व्यवहार करना चाहिये। अनवरत पेशाब करनेकी इच्छा, साथ ही मूत्र कृच्छ्रता, जोरोसे काँखना, खूनी पेशाब, पेशाबका बन्द हो जाना, पेशाब करते समय जलन इत्यादि इसके प्रधान

चाण है। हैजामें पेशाव वन्द हो जाने पर इससे विशेष लाभ होता है। जले हुए स्थान पर इसका वाह्य प्रयोग किया जाता है। क्रम ६–३० प्रतिकारक–एकोनाइट, कैम्फर, पल्सेटिला।

कैप्सीकम—यह लाल मिर्चसे तैयार होता है। अजीर्ण रोग, रक्तामाशय, प्रमेह, ज्वर, कर्णरोग, गलेके रोग, दमा, चर्मरोग इत्यादिमें यह व्यवहार होता है। अतिसार और रक्तामाशय में दस्त के समय और दस्तके बाद मलद्वार में जलन तथा तन्नाहट, मूत्र नलीमें जलन, वारंवार पेशाव करने की इच्छा इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। क्रम ६X–३०। प्रतिकारक–केलेडियम, कैम्फर, साइना, चाइना।

कार्बोनिज—परिपाक यन्त्रपर इसकी क्रिया विशेष रूप से प्रकट होती है। वदबूदार स्राव, सुस्ती, साँस ठंढी, पेटमें वायुका एकत्र होना और वदबूदार वायु निकलना, हवा खाने की प्रवल इच्छा इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। हिमाङ्गावस्था खास कर हैजेके समय, रक्तस्राव, स्वरभंग दमा, सविराम और सान्निपातिक ज्वर, जखम और कैन्सर, डिप्थीरिया, मन्दाग्नि, कब्जियत, फोड़ा आदि रोगों में इसका व्यवहार होता है। हैजाकी अन्तिम अवस्था में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ६–२००। प्रतिकारक–आर्सेनिक, कैम्फर, कोफिया, लेकेसिस।

कोलोफाइलम—स्त्रियोंको इस दवासे विशेष लाभ होता है। हाथ पैरके सन्धिस्थानोंमें वात वेदना, दर्दका एक स्थान से दूसरे स्थानको बदलते रहना, बाधक वेदना, सुस्ती लानेवाला और जलन पैदा करनेवाला स्राव, जरायु की कमजोरीके कारण गर्भस्राव, आक्षेपिक या प्रसव वेदना आदि रोगोंमें इसका व्यवहार होता है। क्रम १X—३X। प्रतिकारक कोफिया।

कस्टीकम—साधारणात चमड़े पर और गलेमें इसकी क्रिया प्रकट होती है। स्वरभग युक्त या आक्षेपिक खाँसी, खाँसते या छींकते समय अनजान में पेशाबका निकल पड़ना, पुराना वात, दाहिने अगका लकवा, बच्चोंका देरी से चल सकना, चलते समय गिर गिर पड़ना इत्यादि लक्षणों में यह दवा व्यवहार की जाती है। क्रम ६—२००। प्रतिकारक-एसाफिटीडा, कोलोसिन्थ, कोफिया, नक्सवोमिका।

कैमोमिला—जो लोग जरा में ही उत्तेजित हो उठते हैं, या जरा सी पीड़ा होने पर पागल हो जाते हैं, उनके लिये यह दवा उपयोगी है। बच्चे और स्त्रियों को इससे विशेष लाभ होता है। बच्चोंको दाँत निकलने के समय किसी प्रकारका भी रोग होना, सरदी लगना, स्त्रियोंका ऋतुशूल या बाधक,

प्रसव वेदना, गर्भावस्थाकी बीमारियाँ, दाँतमें दर्द इत्यादि रोगों में यह उपकारी है। केमोमिलाका दर्द असह्य होता है और रातमें बढ़ता है। क्रम ६-३० । प्रतिकारक-एकोनाइट, एल्युमिना, बोरेक्स, कैम्फर, कक्युलस, कोफिया, कोलोसिन्थ, इग्नेशिया, नक्सवोमिका, पलसेटिला।

सिड्रन—चाहे जो रोग हो, किन्तु रोज एकही समय में मानो घड़ी देखकर रोग का आरम्भ होना उसका प्रधान प्रयोग लक्षण है। सविराम ज्वरमें यह अधिक व्यवहार किया जाता है। स्नायुशूल, स्त्री-रोग, कर्णनाद, और गर्भस्राव आदि में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ६X-३०। प्रतिकारक-लेकेसिस, बेलेडोना।

चेलिडोनियम-इसकी क्रिया प्रधानत यकृत के ऊपर प्रकट होती है। यकृतका बढ जाना, यकृतकी खराबी के कारण रोग होना, शरीर पीला और कुञ्चित, जीभ पीली, पाण्डु या कमला रोग, मुँहका स्वाद खराब, दाहिने कन्धेकी त्रिकोणास्थि के निचले कोने में दर्द आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। क्रम ६X—३० । प्रतिकारक—एकोनाइट, केमोमिला, कोफिया, कैम्फर।

चायना—इसका दूसरा नाम सिकोना या क्वीनाइन है। समय बाँध कर, सविराम या पारी से बुखार आना, हर तीसरे दिन एकही समय रोग का बढ़ना, रात में पसीना आना, कमजोरी आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। रस और रक्त-क्षय होने के कारण कमज़ोरी या जीवनी-शक्ति का ह्रास, ज्वर, विषम ज्वर, अतिसार, अजीर्णता, पेट का फूलना, रक्तस्राव, यकृत और प्लीहा का बढ़ना, स्नायुशूल आदि रोगों में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम १X—२००। प्रतिकारक—आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, कल्केरिया कार्ब, कार्बोवेज, फेरम, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सीपिया और सल्फर।

सिमिसिफिउगा—इसे एक्टिया रेसिमोसा भी कहते हैं। स्नायुशूल, अक्षिगोलक का स्नायुशूल, ऋतुशूल या बाधक वेदना, कमर में दर्द या सायटिका, प्रसव वेदना, जरायु प्रदाह और सूतिकोन्माद आदि रोगों में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम १X—३०। प्रतिकारक एकोनाइट, बेप्टीशिया, कोलोफाइलम, जेलसीमियम, पल्सेटिला।

सिना या साइना—कृमि रोग की यह बढ़िया दवा है। दाँत किड़मिड़ाना, नाक में खुजली, आँख के चारों ओर नीलापन, राक्षसी भूख, मलद्वार में सुडसुडाहट, पेशाब में सफेद तली जमना आदि इसके प्रधान लक्षण है। बुखार, खींचन और खाँसी आदि में भी इससे लाभ होता है। क्रम ३०—२०० । प्रतिकारक—कैम्फर, केप्सीकम, चायना, इपीकाक।

कक्युलस—बच्चोंको तथा जिन स्त्रियोंको ऋतु या गर्भ-धारण के समय अनेक प्रकार के रोग होते हैं, उन्हें इससे विशेष लाभ होता है। जी मिचलाना, शिरमें चक्कर, गाडी, पालकी या नावकी सवारी के कारण कै होना, बाधक वेदना आदि में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ६—३० । प्रतिकारक—कैम्फर, कैमोमिला, क्युप्रम, इग्नेशिया, नक्सवोमिका।

कोफिया—असह्य वेदना, दर्द के स्थान में स्पर्श बरदाश्त न होना, बहुत उत्तेजना आदि इसके प्रधान लक्षण है। अनिद्रा, किसी विषयकी चिन्ता के कारण नींद न आना अम्ल शूल, असह्य प्रसववेदना, शिरदर्द, स्नायुशूल आदि में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ६-३०। प्रति-कारक—एकोनाइट, कैमोमिला, इग्नेशिया, नक्सवोमिका, पल्सेटिला।

क्रोटेलस—रक्तस्राव होना, रक्त विषाक्त होने के कारण सब प्रकार को सांघातिक और दुर्बल बनाने वाली बीमारियाँ सड़नवाले जख्म, खराब घाव, विसर्प, गलित क्षत, सान्निपातिक ज्वर, समूचे शरीर में पीब उत्पन्न होना इत्यादि। क्रम ६—३०० । प्रतिकारक—लेकेसिस, कैम्फर, कोफिया ओपियम।

क्रोटन टिग—अतिसार, पीले रंग का पानी जैसा बहुत सा मल पिचकारी की तरह वेग से निकलना इसका प्रधान लक्षण है। पेट में दर्द, बच्चों का हैजा, स्तन-रोग और चर्म रोग में इसका व्यवहार होता है। क्रम ६-३० । प्रतिकारक-एनाकार्डियम, एन्टिमटार्ट, क्लिमेटिस, रसटक्स, रेनन-क्युलस।

कोनायम—ग्लैन्ड या ग्रन्थियों का बढ़ जाना तेज दर्द, कामेच्छाको रोकने का कुफल, नपुंसकता, शिर में चक्कर, खाँसी, लकवा, श्वेत प्रदर, और पाकाशय के कन्सर में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम, ६-३० प्रतिकारक-काफिया, नाइट्रिक एसिड।

क्युप्रम मेटालिकम—स्नायविक, पाकाशयिक, और आन्त्रिक रोगों में इसका व्यवहार होता है। खींचन और

कल्चीकम—खाद्य पदार्थों की या उनके रन्धन की गन्ध से जी मिचलाने लगना और उससे रोग का बढ़ना इस दवा का प्रधान लक्षण है। वात रोग की यह एक बढ़िया दवा है। सन्धिवात, आमवात, हैजा, आमाशयज के, हृद रोग आदि में इसका व्यवहार होता है। क्रम ३-३०। प्रतिकारक-बेलेडोना, कैम्फर, कक्युलस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला।

कोलिन्सोनिया-जोरोंकी कब्जियत के साथ बवासीर या शूल वेदना में इससे विशेष लाभ होता है। खूनी बवासीर, हृद रोग के कारण शोथ, योनिद्वार में खुजली आदि में इसे देना चाहिये। क्रम ३X-२००। प्रतिकारक-नक्सवोमिका।

कोलोसिन्थ—स्नायुशूल इसका प्रधान लक्षण है। स्नायविक कारणों से पेट में दर्द पैरमें गृध्रसी या झुन झुन वात, शूल वेदना, पेट में दर्द होनेके कारण रोगी का सामने की ओर झुक जाना या पेट के बल जमीन पर लेट रहना, पेट दबाने से आराम मालुम होना, रक्तामाशय, अतिसार, मूत्र पथरी और शूल आदि में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ३-३०। प्रतिकारक-कैम्फर, कस्टिकम, केमोमिला, कोफिया, स्टेफीसेग्रिया।

अकड़न, हाथ पैर की उंगलियों से खींचन का शुरू होना, श्वास रोध करने वाली आक्षेपिक खाँसी और सभी तरह के आक्षेपों में इससे लाभ होता है। हैजे के आक्षेप में यह अधिक फायदा करता है। क्रम ६–३०। प्रतिकारक–अरम, बेलेडोना, कैम्फर, चायना, कक्युलस, डाल्कैमारा, हिपर सल्फर, इपीकाक, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका।

डायस्कोरिया–उदर शूल और पित्तशूल की यह बढ़िया दवा है। दर्द का अचानक शुरू होना और अचानक गायब हो जाना, उसके साथ ही दस्त, अतिसार, स्वप्नदोष, और शुक्रमेह आदि में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ३–३०।

ड्रोसेरा–हुपिङ्ग खाँसी के साथ श्वास रुकजाने का भाव, आक्षेपिक खाँसी के साथ कै, गला सुड़सुड़ा कर खाँसी आना, गले में साँय साँय होना इत्यादि। किसी किसी का कथन है कि यक्ष्मा रोग की खाँसी में इसके १X क्रम या मदर टिञ्चर से विशेष लाभ होता है। ३X–३०। प्रतिकारक–कम्फर।

डिजिटेलिस–हृदय की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। नाड़ी की गति क्षीण, धार और सविराम, कलेजे में धड़कन, शोथ, श्वासकष्ट, हृदपिण्ड में सुई चुभोने जैसा

दर्द इत्यादि। क्रम ३-३०। प्रतिकारक—कैम्फर नक्सवो मिका, ओपियम।

डाल्केमारा—पानी में भीगने, गीले स्थान में रहने या अन्य किसी प्रकार से ठंढ लगने के कारण सर्दी अतिसार, ज्वर और वात आदिक रोगों में इससे विशेष लाभ होता है क्रम ३-३०। प्रतिकारक—कैम्फर, क्युप्रम, इपीकाक मर्क्युरियस।

युपेटोरियम पर्फ—समूचे शरीर में अकड़ जाने या टूट जाने जैसा दर्द, हड्डियों में दर्द, पित्तकी कै आदि इसके प्रधान लक्षण है। साविराम और स्वल्पविराम ज्वर, इन्फ्लुएंजा आदि में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम १X-३।

युफ्रेशिया-आँख और नाक से प्रचुर जलस्राव, आँख से अनवरत जल गिरना, सुबह आँखों का जुड़ जाना इत्यादि। आँख की बीमारी और सर्दी खाँसीमें इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ३X—३०। प्रतिकारक-कैम्फर, पल्सेटिला।

फेरम मेटालिकम—इसका दूसरा नाम लोहा है। रक्त हीनता, शोथ की तरह फूलना, चेहरे में पीलापन, बहुत दुर्बलता इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। रक्त हीनता, मृतपाण्डु, शोथ, अतिसार, पुराना ज्वर, यक्ष्मा, रक्तस्राव, उदर शूल, स्नायु-शूल, वात और ऋतु सम्बन्धी रोगों में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ६–३० । प्रतिकारक–आर्सेनिक, चायना, हिपर, इपीकाक, पल्सेटिला, विरेट्रम, पल्व ।

फेरम फस—शरीर की रक्त सञ्चालन क्रिया पर इसकी क्रिया प्रकट होती है। यह एकोनाइट और जेल्सीमियम के सम्मिलित लक्षणों में व्यवहार किया जाता है। सब तरह के प्रादाहिक रोग और ज्वर, न्युमोनिया, अतिसार, आमाशय इत्यादि में इससे लाभ होता है। क्रम ३X–३० ।

जेल्सीमियम—समस्त स्नायु मण्डलों पर इसकी क्रिया प्रकट होती है। स्नायविक उत्तेजना शील और गुल्म वायु ग्रस्त रोगियों के लिये यह विशेष उपयोगी है। थकावट या सुस्ती मालूम होना इसका विशेष लक्षण है। सभी तरह के

ग्लोनइन–धूप या लू लगने के कारण कोई रोग होना, सरदी गरमी, शिर में दर्द, सूर्य के चढ़ाव उतार के साथ रोग का बढ़ना, घटना, रजोरोध, स्नायु शूल, शिर में रक्त सञ्चय, मृगी रोग इत्यादि में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ६–३० प्रतिकारक–एकोनाइट, कैम्फर, कोफिया नक्सवोमिका।

ग्रेफाइटिस–गोरवर्ण, स्थूल शरीर, थुलथुलामॉस, कब्जियत, मल कठिन, अनेक प्रकार के चर्म रोग और उनसे चिकना चिकना रस निकलना, विलम्ब से स्वल्प ऋतु होना, पानी जैसा जलन पैदा करनेवाला प्रदर स्राव, डिम्बकोष की कठिनता, जरा में ही ठंढ लग जाना, जाड़ा लगते रहना, सदा दुखित और उदास रहना, सर्वाङ्गिक दुर्बलता, भगन्दर इत्यादि। क्रम ६X–३०। प्रतिकारक–एकोनाइट, आर्सेनिक, नक्सवोमिका।

हेमामेलिस–नाक, फेफड़ा, आँत, जरायु और मूत्राशय आदि शरीर के किसी भी स्थान की शिराओं से गहरा लाल या काली आभा लिये रक्तस्राव होता हो तो इससे विशेष लाभ होता है। बवासीर, अण्डकोष में प्रदाह शिराओं का फूल उठना आदि में भी इससे विशेष लाभ होता है। क्रम १X–३X। प्रतिकारक–पल्सेटिला।

हिपर सल्फर—गण्डमाला दोष, ग्रन्थियों का बढ़ जाना, साधारण चोट लगने से भी पीव का पड़ जाना, पारे का दोष, साधारण हवा भी बरदाश्त न होनेके कारण खुले बदन न रह सकना, शरीर का कोई अंश खुला रहने पर खाँसी, जख्मों का अधिकता, फोड़े, कुकुर खाँसी, स्वरभंग युक्त खाँसी गले में घात, चर्मरोग इत्यादि में इससे लाभ होता है इसका निम्न क्रम देने से पीव उत्पन्न होता है और उच्च क्रम देने से पीव का पड़ना रुकता है। क्रम ३X–२००। प्रतिकारक—बेलेडोना, केमोमिला, साइलीसिया।

हेल्लिबोरस—गण्डमाला ग्रस्त दुर्बल बच्चों को दाँत निकलने के समय मस्तिष्क लक्षण में इससे विशेष लाभ होता है। बेहोशी में पड़े रहना, शामको चारसे लेकर रातके आठ बजे तक रोग लक्षणों का बढ़ना, कुछ चिबाने की तरह मुख चलाते रहना, मस्तिष्क मे जल सञ्चय, बीच बीच में चिल्ला उठना, तकिये पर इधर उधर माथा घुमाते रहना, प्यास, आग्रह के साथ पानी पीना, आँख के तारे का बढ़ जाना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। क्रम ६–३०। प्रतिकारक-कैम्फर, चायना।

हायोसायमस—रक्त प्रधान धातु, क्रोधी, उत्तेजन, शील या परिवर्तन शील स्वभाव, स्नायविक, प्रदाह शून्य मस्तिष्क

विकार, लज्जा हीनता, नंगे हो जाने की इच्छा, बेहोशी, आँख से लेकर पैर तक की पेशियों का काँपना, अत्यन्त प्रलाप, बुदबुदाना, सूखी खाँसी, रात के समय और सोने पर रोग लक्षणों का बढ़ना, उठ बैठने पर आराम मालूम होना, हाँफना आक्षेप, बिछौने के कपड़े नोचना इत्यादि लक्षणों में इसे व्यवहार करना चाहिये। क्रम ६–२००। प्रतिकारक–एसिडफसेटिक बेलेडोना, चायना, स्ट्रैमोनिया।

हाइड्रेस्टिस–इसकी क्रिया श्लैष्मिक झिल्ली पर प्रकट होती है नाक, गला, पाकाशय, जरायु या मूत्र नाली की श्लैष्मिक झिल्ली से गाढ़ा गोंद जैसा पीले रङ्ग का बहुत सा श्लेष्मा के समान स्राव होने पर इससे विशेष लाभ होता है। पारा या उपदंश के कारण गलक्षत, कैन्सर, अजीर्णता, कोष्ठ बद्धता, श्वेत प्रदर आदि में भी इसका व्यवहार होता है। क्रम १X–३०। प्रतिकारक–सल्फर।

हाइपेरिकम–चोट लगने या हाथ पैर के तलवे में लोहे की काँटि आदि लगने के कारण धनुष्टङ्कार, खींचन या मूर्छा होने पर तथा चोट लगने के कारण अन्यान्य रोग होने पर इससे लाभ होता है। क्रम १X–३०। प्रतिकारक–आर्सेनिक, कैमोमिला, सल्फर।

हाइड्रोसियानिक एसिड–कठिन या सांघातिक रोग के अन्त में बहुत मोह, दीर्घ और चबेना चिवाने जैसा श्वास प्रश्वास, मल मूत्र का बन्द हो जाना, समूचा शरीर बरफ की तरह ठंढा, मुर्दे की तरह पड़े रहना आदि इसके प्रधान लक्षण है। हैजा, धनुष्टङ्कार, हृद रोग और खींचन आदि रोगों में यह दिया जाता है। क्रम ३–३०।

इग्नेशिया—इसकी क्रिया मस्तिष्क और स्नायुमण्डल पर प्रकट होती है। सन्देही स्वभाव, जरामें ही उत्तेजित हो उठना, वार वार दीर्घ निश्वास इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। शोक और दुख जनित रोग, बच्चों को हिस्टीरिया, ज्वर खींचन और प्लेग आदिक रोगों में यह व्यवहार होता है। क्रम ६–२००। प्रतिकारक–आर्निका कैम्फर, केमोमिला कक्युलस, कॉफिया, नक्सवोमिका, पल्सेटिला।

आयोडिन–गण्डमाला दोष और वृद्धो की बीमारी, शीर्णता अत्यन्त दुर्वलता, रोगी का बहुत खाना, किन्तु शरीर में न लगना, जरायु से रक्तस्राव, स्तनों का शुष्कता और शीर्णता, जरायु का कन्सर, कुकुर खॉसी, न्युमोनिया, क्षय, अतिसार, गलगण्ड, उपदंश और हृद्‌रोग में यह व्यवहार किया

जाता है क्रम ६-२०० । प्रतिकारक-आर्सेनिक, बेलेडोना, कैम्फर, चायना, कोफिया, हिपर, फोस्फरस और सल्फर ।

इपीकाक-इसकी क्रिया श्वास और परिपाक यन्त्र पर प्रकट होती है हमेशा जी मिचलाते रहना, कै हो जाने पर भी मिचली का बन्द न होना, शरीर के किसी भी द्वार से लाल लाल खून निकलना, पेट में मोच जैसा दर्द, ऐसा मालूम होना मानो पेट फूल पड़ा है, हरे रंग के खून और फेन मिले दस्त श्वास प्रश्वास के समय गले में सॉय सॉय होना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। खाँसी, दमा,कै,मिचली, अतिसार,आमाशय, रक्तस्राव, रक्तकास, विषमज्वर, क्वीनाइन से रुका हुआ बुखार इत्यादि रोगों में इससे लाभ होता है। क्रम ३-२००। प्रतिकारक--आर्निका,आर्सेनिक, चायना, नक्सवोमिका, टेबेकम ।

आइरिस वर्सिकलर-मुँहसे लार बहना, छातीमें जलन, खट्टी कै, मुँहसे लेकर मलद्वार तक जलन, पानी जैसा मल निकलना, साथ ही पेट में गड़गड़ाहट इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। अतिसार, हैजा, आधे शिरमें दर्द, बच्चोंका हैजा और चर्मरोग इत्यादि में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ३-३० । प्रतिकारक-नक्सवोमिका ।

केली बाइक्रोम–इसकी क्रिया श्लैष्मिक झिल्ली और चमड़े पर प्रकट होती है। पुरानी खाँसी, गोंद जैसा कफ, खींचने से रस्सीकी तरह उसका बढ़ना, आसानी से कफ न निकलना, स्वरभंग, नाककी बीमारी गरमी के कारण चक्षुरोग, पुराना अजीर्ण, छाती में जलन, डकार, दमा इत्यादि रोगों में इससे लाभ होता है। क्रम ६X–२००। प्रतिकारक आर्सेनिक लेकेसिस, पल्सेटिला।

केली कार्ब —थुल थुला शरीर दूसरे का स्पर्श बरदाश्त न होना, जाड़ा बरदाश्त न होना ऋतु परिवर्तन के समय तबियत अच्छी न रहना, सुई चुभोने जैसा दर्द, दाहिने फेफड़े के नीचे सुई चुभोने जैसा दर्द, स्थिर रहने या दबाकर लेटने पर दर्दका बढ़ना, आँखकी ऊपरी पलक में सूजन, श्वासनाली का जख्म, पेट फूलना, कुछ खाते ही पेट में वायु एकत्र होना, सविराम ज्वर इत्यादि में इससे लाभ होता है। क्रम ६–२००। प्रतिकारक-कैम्फर, कोफिया।

क्रियोजोटम–इसकी क्रिया श्लैष्मिक झिल्ली पर प्रकट होती है। दाँतों का क्षय, दाँतोंके मूलमें नीलापन, दातों से रक्त स्राव, दाँतों में जख्म और जलन वाला दर्द, साधारण, जख्म से बहुतसा रक्तस्राव, गैंग्रीन, कैन्सर, सड़ी बदबूवाला

स्राव, जीवनीशक्तिका ह्रास, रोगी देखने में बूढ़ेके समान मालूम होना, बहुत जल्दी बढ़ने वाली शीर्णता, प्रदर स्राव इत्यादि में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ३X—२००। प्रतिकारक—नक्सवोमिका।

लेकेसिस—बायीं ओरसे रोगका आरम्भ होना और दाहिनी ओरको उसका बढ़ना, कपड़े तक का स्पर्श असह्य मालुम होना, निद्राके बाद समस्त रोग लक्षणों का बढ़ना, वाचालता, पतली चीजें निगलने में भी कष्ट मालुम होना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। वयोसन्धिके समय ऋतुलोप के कारण स्त्रियोंको अनेक प्रकारके रोग होना, विकार ज्वर, प्लेग, डिम्बाशय और जरायुके रोग, कालेरा की चरमावस्था, डिप्थीरिया और चर्मरोग आदि में यह व्यवहार होता है। क्रम ६—२००। प्रतिकारक—आर्सेनिक, बेलेडोना, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, एसिड फस।

लिडम—वात रोगी और शराबियोंकी बीमारी में इससे अधिक लाभ होता है। निचले अंगमें वात का शुरू होना और उपले अंगमें फैलना, चोटके कारण नीले दाग पड़ना, आम-वात और असह्य खुजली काटी या पिन आदि लगने के कारण

तकलीफ इत्यादि में इसका व्यवहार होता है। क्रम ६-३० प्रतिकारक-कैम्फर, रसटक्स।

लोबेलिया-दमा, खाँसी अजीर्णता, श्वास यन्त्र की बीमारियाँ, साधारण ठंढ लगने या परिश्रम करने पर श्वास कष्ट इत्यादि लक्षणों में यह दवा दी जाती है। क्रम १X—६। प्रतिकारक-इपीकाक।

लिलियम टिग-इसका क्रिया जरायु, डिम्बाशय, और हृद्पिण्डपर प्रकट होती है। इसके मानसिक लक्षण पल्सेटिलाके समान किन्तु व्यस्तता-भाव अधिक होता है, जरायु की स्थानच्युति, हिस्टीरिया, प्रदरस्राव, ऋतुसम्बन्धी रोग, डिम्बाशयकी बीमारियाँ आदि में इससे लाभ होता है। क्रम ३X-३०। प्रतिकारक-हेलोनियस, नक्सवोमिका।

लाइकोपोडियम-इससे सोरा विष नष्ट होता है। इसकी क्रिया यकृत और परिपाक यन्त्र पर प्रकट होती है। बच्चे और बुड्ढों की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। शाम को चार बजे से लेकर आठ बजे तक रोग का बढ़ना, पेशाब में लाल तली जमना, पेटका फूलना, साधारण आहार से भी पेट भरा हुआ मालूम होना, नासारन्ध्रो से पंखे की सी आवाज इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। अजीर्ण, पेटका

फूलना, मुँह में पानी भर आना, ववासीर, कब्जियत, अम्ल-रोग, यकृत की बीमारी, रतौंधी, वायुसंचय के कारण या अम्ल के कारण पेटका फूलना इत्यादि रोगों में इसका व्यवहार होता है। क्रम ६-२०० । प्रतिकारक-एकोनाइट, कैम्फर, केमोमिला, पल्सेटिला।

मेग्नेशिया कार्ब-सर्वाङ्ग में अम्ल गन्ध, खासकर बच्चों के अग में होने पर इससे विशेष लाभ होता है। अति-सार, अम्ल गन्ध युक्त हरे रग के फेन मिले दस्त, जरायुके रोग, क्षय, आमवात, स्नायविक दुर्बलता, आँख में फूली या माड़ा आदि रोगों में इसका व्यवहार होता है। क्रम ६—२०० । प्रतिकारक—केमोमिला, पल्सेटिला मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, रिडम।

मेग्नेशिया फस-दर्द के लिये यह एक बढिया दवा है। दर्द का शीघ्र स्थान परिवर्त्तन और अकड़ने जैसा दर्द, इसका प्रधान लक्षण है। कभी २ गरम पानीके साथ इसे खाने पर विशेष लाभ होता है। क्रम २x-३० । प्रतिकारक-बेलेडोना, जेलसीमियम, लेकेसिस।

मेडोरिनम—यह दवा प्रमेह विषसे तैयार की जाती है। पुराना प्रमेह और उसके कारण वाल रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ३०-२००।

मक्युरियस कर—हिन्दी में इसे रस कपूर कहते हैं। पुरुषो के लिये यह विशेष उपयोगी है। दस्त के समय अनवरत कॉखना और जोर लगाना, दस्त हो जाने पर भी उसका बन्द न होना, मूत्रद्वार में वेग इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। खूनी ऑवकी यह बढ़िया दवा है। अधिक खून गिरने पर इसे देना चाहिये। गरमी की बीमारियॉ, जख्म, पीव निकलना, गरमी के कारण ऑखों का आना इत्यादि में इसका व्यवहार होता है। क्रम ३-३०। प्रतिकारक-हिपर सल्फर, नाइट्रिक-एसिड, साइलीसिया, लोबेलिया।

मर्क्युरियस सल या वाइवस—इसकी क्रिया ग्रन्थियों पर, खासकर लालास्रावी ग्रन्थि, नासिका ग्रन्थि और यकृत पर विशेष रूप से प्रकट होती है। नया प्रदाह होने पर यह पीव नहीं उत्पन्न होने देता। रात्रि में और गरमी से रोग लक्षणों का बढना इसका विशेष लक्षण है। उपदंश या गरमी, ग्रन्थियों में सूजन, गले में जख्म, मुॅह में जख्म, मुॅह से लार बहना, दात में दर्द, दॉत की जड़ों में सूजन और पीब पड़ना

आँख आना, कान पकना, पाण्डुरोग, यकृत की बीमारी सफेद आँव या खूनी आँव, प्रमेह, बाघी इत्यादि रोगों में यह व्यवहार किया जाता है। साधारण आँव या पेचिश और गरमी रोग की यह बढ़िया दवा है। गरमी में निम्नक्रमका चूर्ण और अन्यान्य रोगों में ६-३० क्रम व्यवहार करना चाहिये। प्रतिकारक—एसाफिटीडा, अरम, बेलेडोना, कार्बोवेज, चायना, हिपर सल्फर, आयोडियम, लाइकोपोडियम, मेजेरियम, नाइट्रिक एसिड, स्टेफीसेग्रिया, सल्फर।

मेजेरियम—दीर्घास्थिमें दर्द, चर्म रोग, दँत शूल, स्नायुशूल, अस्थि विषयक रोग और ज्वर आदि में इसका व्यवहार होता है। क्रम १X—६X। प्रतिकारक—एसेटिक एसिड, ब्रायोनिया, कैम्फर, नक्सवोमिका, मर्क्युरियस, रसटक्स।

मिल्लि फोलियम—रक्तस्राव की यह एक बढ़िया दवा है शरीर के किसी भी स्थान से उज्वल लाल रंगका खून निकलने पर इससे विशेष लाभ होता है क्रम १X-६X।

मस्कस—हिन्दी में इसे कस्तूरी कहते है। मूर्च्छा, शिर चक्कर, कलेजे में धड़कन, हिस्टीरिया, आदि रोगों के साथ ट में वायु का एकत्र होना, पेटका फूलना और कम्पन आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये। क्रम ३X-३०। प्रतिकारक—कैम्फर, कोफिया।

नेजा या कोब्रा—यह दवा काले सर्प के विष से तैयार होती है। इसका प्रयोग अन्तिम अवस्था में किया जाता है। हृद्पिण्ड की बीमारी, हैजे में हिमाङ्ग अवस्था, प्लेग और डिपथीरिया आदि रोगों में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ६-२००। प्रतिकारक-टेबेकम।

नेट्रम आर्स—मैलेरिया बुखार, प्लीहा का बढ़ना, डिपथीरिया में बैंगनी रंग की सूजन और श्वासयन्त्र के रोगों में इसका व्यवहार होता है। क्रम ६-२००।

नेट्रमम्युर—यह दवा साधारण नमक से बनती है। होठों में मोती जैसे बुखार के छाले, शीर्णता, विरक्ति, क्रोधी स्वभाव, रोना और उदास रहना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। सविराम या मैलेरिया ज्वर, पुराना या क्वीनाइन से रुका

हुआ ज्वर, शिर में दर्द, कब्जियत, रक्त हीनता, स्त्री रोग, हृद्पिण्ड की बीमारी और चम रोग आदि में इससे विशेष लाभ होता है। क्रम ६–२०० । प्रतिकारक–पपिस आर्सेनिक, कैम्फर, फॉसफरस ।

नेट्रम फस—अम्ल रोग की यह एक अच्छी दवा है खट्टी डकारें, खट्टी कै, मुँह में खट्टा स्वाद, खट्टी गन्धवाले दस्त,आहार के बाद पेट में दर्द, मुँह में पानी भरना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। क्रम ६X—३० । प्रतिकारक—पपिस, सीपिया ।

नेट्रम सल्फ—गीले स्थान में रहने के कारण कोई रोग होना पित्त जनित सब प्रकार की बिमारियाँ, प्रमेह, खाँसी, ज्वर, प्रात कालान पतलेदस्त इत्यादि मे यह व्यवहार होता है। क्रम ६X–२०० ।

नाइट्रिकएसिड—गरमी और पारे के कारण रोग, गण्ड-माला,जख्म, मुँहमें क्षत, काँटी या खोंचा लगने जैसा दर्द,श्वेत-प्रदर, सान्निपातिक ज्वर, यकृत की बीमारी और अस्थि रोग आदि में इससे लाभ होता है। क्रम ६–२०० । प्रतिकारक—कैम्फर, हिपर सल्फर, मर्क्युरियस, मेजेरियम, सल्फर ।

नक्स मस्केटा—हिन्दी में इसे जायफल कहते हैं। स्नायविक तथा हिस्टीरिया ग्रस्त बच्चे तथा स्त्रियोंको इससे विशेष लाभ होता है। तन्द्रालुता, हृद्‌पिण्ड की अवसन्नता, परिवर्तन शील स्वभाव, भोजन के बाद पेट फूलना, मुँह सूखा, लेकिन प्यास न होना। हिस्टीरिया, स्त्री रोग, पेट में दर्द, शिर में दर्द, दन्त शूल आदि लक्षणों और रोगों में इसे व्यवहार करना चाहिये। क्रम ६—३०। प्रतिकारक—केम्फर, जेल्सीमियम, नक्सवोमिका।

नक्सवोमिका—इसे हिन्दी में कुचला कहते है। इसमें स्ट्रिकनिया नामक विष रहता है। होमियोपैथी की यह एक प्रधान दवा है। सदा कब्जियत रहना, कोपन स्वभाव, शराबियोंके रोग, सुबह रोग लक्षणो का बढ़ना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। कब्जियत के साथ अजीर्ण रोग, अम्लरोग, छाती में जलन, शूल वेदना, वारंवार दस्तका वेग मालूम होना किन्तु दस्तका साफ न होना, मादक पदार्थों के सेवन के कारण रोग होना, सूखी खाँसी, सरदी, यकृतकी बीमारी, विषम ज्वर, गाड़ी, जहाज, नौका इत्यादि में सफर करने के कारण शिरमें चक्कर और कै होना, ववासीर, शिरमें दर्द, अधिक परिश्रम अधिक अध्ययन, रात्रि जागरण आदि कारणों से तबियतका खराब होना इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये। क्रम ६-

२०० । प्रतिकारक-एकोनाइट, कैम्फर केमोमिला, कोफिया कष्प्युलस, इग्नेशिया, पल्सेटिला ।

ओपियम-इसे हिन्दी में अफीम कहते हैं। तन्द्रालुता, अधमुँदी आँखें, बेहोशी, आवाजके साथ श्वास प्रश्वास,काला, बदबूदार और गॉठ गॉठ जैसा कड़ा मल, मलमूत्र रुक जाने के कारण पेटका फूलना आदि इसके प्रधान लक्षण है। भयजनित रोग—अन्त्रशूल, आक्षेप, कब्जियत और हैजा आदि रोगो में यह व्यवहार होता है। कालेरा में मलमूत्र बन्द होकर पेट फूलजाय तो इसे ही देना चाहिये। क्रम ६-३०। प्रतिकारक-बेलेडोना, कोफिया, कानायम, कैम्फर, इपीकाक, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, प्लम्बम।

फोस्फरस-मस्तिष्क, फेफड़ा, हृद्‌पिण्ड, यकृत, मूत्रग्रन्थि, स्नायु और अस्थि आदि पर इसकी क्रिया विशेष रूपसे प्रकट होती है। दीर्घकार्य, गौरवर्ण, रक्त प्रधान और तीक्ष्ण बुद्धि वाले युवकों की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। न्युमोनिया, खाँसी, क्षयकास में कफ के साथ खून निकलना, सफेद रंग का थक्का थक्का मल, अधिक इन्द्रिय सेवा के कारण कमज़ोरी, नपुंसकता, मस्तिष्क की दुर्बलता और स्नायविक दुर्बलता, आँख में फूली या माड़ा, हृद्‌रोग, अस्थिरोग और यकृत

नक्स मस्केटा—हिन्दी में इसे जायफल कहते हैं। स्नायविक तथा हिस्टीरिया ग्रस्त बच्चे तथा स्त्रियोंको इससे विशेष लाभ होता है। तन्द्रालुता, हृद्पिण्ड की अवसन्नता, परिवर्तन शील स्वभाव, भोजन के बाद पेट फूलना, मुँह सूखा, लेकिन प्यास न होना। हिस्टीरिया, स्त्री रोग, पेट में दर्द, शिर में दर्द, दन्त शूल आदि लक्षणो और रोगों में इसे व्यवहार करना चाहिये। क्रम ६—३०। प्रतिकारक—कैम्फर, जेल्सीमियम, नक्सवोमिका।

नक्सवोमिका—इसे हिन्दी में कुचला कहते हैं। इसमें स्ट्रिकनिया नामक विष रहता है। होमियोपैथी की यह एक प्रधान दवा है। सदा कब्जियत रहना, कोपन स्वभाव, शराबियोंके रोग, सुबह रोग लक्षणों का बढ़ना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। कब्जियत के साथ अजीर्ण रोग, अम्लरोग, छाती में जलन, शूल वेदना, वारंवार दस्तका वेग मालूम होना किन्तु दस्तका साफ न होना, मादक पदार्थों के सेवन के कारण रोग होना, सूखी खाँसी, सरदी, यकृतकी बीमारी, विषम ज्वर, गाड़ी, जहाज, नौका इत्यादि में सफर करने के कारण शिरमें चक्कर और कै होना, ववासीर, शिरमें दर्द, अधिक परिश्रम अधिक अध्ययन, रात्रि जागरण आदि कारणों से तबियतका खराब होना इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये। क्रम ६-

२००। प्रतिकारक-एकोनाइट, कैम्फर केमोमिला, कोफिया, कफ्युलस, इग्नेशिया, पल्सेटिला।

ओपियम-इसे हिन्दी में अफीम कहते हैं। तन्द्रालुता, अधमुंदी ऑखें, बेहोशी, आवाजके साथ श्वास प्रश्वास,काला, बदबूदार और गॉठ गॉठ जैसा कडा मल, मलमूत्र रुक जाने के कारण पेटका फूलना आदि इसके प्रधान लक्षण है। भयजनित रोग—अन्त्रशूल, आक्षेप, कब्जियत और हैजा आदि रोगों में यह व्यवहार होता है। कालेरा में मलमूत्र वन्द होकर पेट फूलजाय तो इसे ही देना चाहिये। क्रम ६-३०। प्रतिकारक-बेलेडोना, कोफिया, कानायम, कैम्फर, इपीकाक, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, प्लम्बम।

फोस्फरस-मस्तिष्क, फेफडा, हृद्पिण्ड,यकृत,मूत्रग्रन्थि, स्नायु और अस्थि आदि पर इसकी क्रिया विशेष रूपसे प्रकट होती है। दीर्घकार्य, गौरवर्ण, रक्त प्रधान और तीक्ष्ण बुद्धि वाले युवकों की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। न्युमोनिया, खॉसी, क्षयकास में कफ के साथ खून निकलना, सफेद रंग का थक्का थक्का मल, अधिक इन्द्रिय सेवा के कारण कमजोरी, नपुसकता, मस्तिष्क की दुर्बलता और स्नायविक दुर्बलता, ऑख में फूली या माडा, हृद्रोग, स्त्रीरोग और यकृत

किया जाता है। प्रसव के समय प्रसव वेदना मन्द होने पर इसके सेवन से वेदना बढती है और शीघ्र ही बच्चे का जन्म हो जाता है। प्रसव के बाद दर्द, स्तन में दूध न होना आदि में भी इससे लाभ होता है। स्त्री-जननेन्द्रिय की बीमारियों में यह विशेष लाभदायक है। क्रम ६—२००। प्रतिकारक-कोफिया, केमोमिला, इग्नेशिया, नक्सवोमिका।

रिउम—बच्चो को खट्टी गन्ध वाले दस्त आना, समूचे शरीर में खट्टी गन्ध आदि में इससे लाभ होता है। क्रम ६-३०। प्रतिकारक—केमोमिला, कैम्फर, कोलोसिन्थ, नक्सवोमिका, पल्सेटिला।

रसटक्स—मॉसपेशी, चर्म, श्लैष्मिक झिल्ली और स्नायु-मण्डल पर इसकी क्रिया प्रकट होती है। आमवातिक धातु-वाले लोगों को इससे विशेष लाभ होता है। विश्राम करने पर रोग लक्षणों का बढ़ना और हिलने डोलने पर आराम मालूम होना इसका विशेष लक्षण है। सरदी लगने, पानी में भागने या गीले स्थान में रहने के कारण कोई रोग होना, मोच या चोट लगने के कारण रोग होना, वात रोग आतिसारिक विकार ज्वर, फफोले वाले चर्म रोग आदि में इसका

होता है। चोट, मोच और वात रोग में इसका वाह्य प्रयोग भी होता है। क्रम ६—२००। प्रतिकारक—वेलेडोना, ब्रायोनिया, कैम्फर, कोफिया, क्रोटनटिग, सल्फर।

रोडोडेन्ड्रन—वात रोग, शरीर के भिन्न भिन्न भागों में फाड़ने जैसा दर्द, तूफान के पहले या गीली हवा में अथवा आराम के समय रोग का बढ़ना, दाहिने अण्डकोष का फूल उठना और उसमें जोरों का दर्द, छूने से दर्द मालुम होना इत्यादि लक्षण और रोगों में इससे लाभ होता है। क्रम ६—३०। प्रतिकारक—ब्रायोनिया, कैम्फर, क्लिमेटिस, रसटक्स।

रिउमेक्स—गला सुड़सुड़ा कर अनवरत खाँसी आने की यह बढ़िया दवा है। चर्म रोग, खुजली, चोट, दमा, पार्श्व वेदना, और अतिसार आदि में भी इसका व्यवहार होता है। क्रम ६—३०। प्रतिकारक—वेलेडोना, कैम्फर, कोनायम, हायोसायमस, लेकेसिस, फोस्फरस।

सेवाइना—स्त्री जननेन्द्रिय खासकर जरायु और डिम्बाशय पर इसकी क्रिया प्रकट होती है। अनेक प्रकार के पुराने स्त्रीरोग, सन्धिवात के कारण दर्द, तीसरे मास में गर्भस्राव की आशङ्का, जरा में हा रक्तस्राव होने लगना आदि लक्षणों

किया जाता है। प्रसव के समय प्रसव वेदना मन्द होने पर इसके सेवन से वेदना बढती है और शीघ्र ही बच्चे का जन्म हो जाता है। प्रसव के बाद दर्द, स्तन में दूध न होना आदि में भी इससे लाभ होता है। स्त्री-जननेन्द्रिय की बीमारियों में यह विशेष लाभदायक है। क्रम ६—२००। प्रतिकारक-कोफिया, केमोमिला, इग्नेशिया, नक्सवोमिका।

रिउम—बच्चों को खट्टी गन्ध वाले दस्त आना, समूचे शरीर में खट्टी गन्ध आदि में इससे लाभ होता है। क्रम ६-३०। प्रतिकारक—केमोमिला, कैम्फर, कोलोसिन्थ, नक्सवोमिका, पल्सेटिला।

रसटक्स—मॉसपेशी, चर्म, श्लैष्मिक झिल्ली और स्नायु-मण्डल पर इसकी क्रिया प्रकट होती है। आमवातिक धातु-वाले लोगों को इससे विशेष लाभ होता है। विश्राम करने पर रोग लक्षणों का बढ़ना और हिलने डोलने पर आराम मालूम होना इसका विशेष लक्षण है। सरदी लगने, पानी में भीगने या गीले स्थान में रहने के कारण कोई रोग होना, मोच या चोट लगने के कारण रोग होना, वात रोग आतिसारिक विकार ज्वर, फफोले वाले चर्म रोग आदि में इसका व्यवहार

में इससे विशेष लाभ होता है। गर्भस्राव, बहुत अधिक परिमाणमें रजस्राव, श्वेत प्रदर, जरायु प्रदाह, वात, प्रसवान्तिक रक्तस्राव इत्यादि में इसका व्यवहार होता है। क्रम ३X–२००। कैम्फर, पल्सेटिला।

सेङ्गुइनेरिया—निर्दिष्ट समय पर कैके साथ शिर दर्द का आरम्भ होना, सुबह आरम्भ होकर दिन में उसका बढ़ना, बाद को धीरे धीरे घटना, सरदी, खाँसी, आमवातिक वेदना, कर्णरोग और चर्मरोग इत्यादि में यह व्यवहार किया जाता है। शरीर में दाहिनी ओर रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है। क्रम १X–३०।

सिकेली—दुबली पतली और स्नायविक प्रकृति की स्त्रियों को इससे विशेष लाभ होता है। शरीर बहुत ठण्ढा फिर भी बदन पर कपड़ा न रख सकना, अकड़न, हाथ पैर की उँगलियों का बाहर की ओर झुक जाना, सभी द्वारों से पतला, काला और पानी जैसा बहुत सा रक्तस्राव होना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। यह अनेक प्रकार के जरायु रोगो में व्यवहार किया जाता है। गर्भस्राव की आशङ्का, जरायु से रक्तस्राव, धीमी प्रसव वेदना, दीर्घकालस्थायी ऋतुस्राव, कालेरा में अकड़न इत्यादि में भी यह लाभदायक है। क्रम ६–२००। प्रतिकारक—कैम्फर, ओपियम।

सीपिया—यह अनेक प्रकार के स्त्रीरोगों की बढ़िया दवा है। पेट में दर्द, रोगिनी को ऐसा मालूम होना मानो योनि-द्वार से पेट की सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, इसके कारण घुटने से घुटने को दबाकर बैठना, श्वेत प्रदर, जरायु प्रदाह, जरायु की स्थान भ्रष्टता, गर्भस्राव, योनिदेश के चर्मरोग, पुराना सूजाक आदि में इससे काफी लाभ होता है। क्रम ३X–२००। प्रतिकारक–एकोनाइट, एन्टिम क्रूड, एन्टिमटार्ट।

साइलीसिया—गण्डमाला धातु, यान्त्रिक परिपोषण क्रिया का अभाव और शारीरिक तथा मानसिक अत्यन्त अनुभवाधिक्य वाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है। पीव उत्पन्न करना और बढ़े हुए पीव को निकालना इसका प्रधान लक्षण है। नासूर, उँगली पकना, जख्म, अस्थि की अपक्वता, देर से चलना सीखना, गण्डमाला, आँख में जख्म इत्यादि में इससे विशेष लाभ होता है। अमावास्या और पूर्णिमा को रोग का बढ़ना इसका एक खास लक्षण है। नासूर में इससे बहुत फायदा होता है। जख्म में बहुत पीव होने पर इसे देने से पीव निकल जाता है और जख्म जल्दी सूख जाता है। क्रम ३०—२००। प्रतिकारक—कैम्फर, हिपर-सल्फर, फ्लोरिक एसिड।

में इससे विशेष लाभ होता है। गर्भस्राव, बहुत अधिक परिमाणमें रजस्राव, श्वेत प्रदर, जरायु प्रदाह, वात, प्रसवान्तिक रक्तस्राव इत्यादि में इसका व्यवहार होता है। क्रम 3X–२००। कैम्फर, पल्सेटिला।

सेङ्गुइनेरिया–निर्दिष्ट समय पर कैके साथ शिर दर्द का आरम्भ होना, सुबह आरम्भ होकर दिन में उसका बढ़ना, बाद को धीरे धीरे घटना, सरदी, खाँसी, आमवातिक वेदना, कर्णरोग और चर्मरोग इत्यादि में यह व्यवहार किया जाता है। शरीर में दाहिनी ओर रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है। क्रम १X–३०।

सिकेली–दुबली पतली और स्नायविक प्रकृति की स्त्रियों को इससे विशेष लाभ होता है। शरीर बहुत ठण्ढा फिर भी बदन पर कपड़ा न रख सकना, अकड़न, हाथ पैर की उँगलियों का बाहर की ओर झुक जाना, सभी द्वारों से पतला, काला और पानी जैसा बहुत सा रक्तस्राव होना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। यह अनेक प्रकार के जरायु रोगों में व्यवहार किया जाता है। गर्भस्राव की आशङ्का, जरायु से रक्तस्राव, धीमी प्रसव वेदना, दीर्घकालस्थायी ऋतुस्राव, कालेरा में अकड़न इत्यादि में भी यह लाभदायक है। क्रम ६–२००। प्रतिकारक—कैम्फर, ओपियम।

सरल सीपियो पैथिक चीकित्सा

सीपिया—यह अनेक प्रकार के स्त्रीरोगों की बढ़ि
दवा है। पेट में दर्द, रोगिनी को ऐसा मालूम होना मानो योनि
द्वार से पेट की सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, इसके कार
घुटने से घुटने को दबाकर बैठना, श्वेत प्रदर, जरायु प्रदा
जरायु की स्थान भ्रष्टता, गर्भस्राव, योनिदेश के चर्मरो
पुराना सूजाक आदि में इससे काफी लाभ होता है। क्र
३X–२००। प्रतिकारक–एकोनाइट, एन्टिम क्रूड, एन्टिमटार

साइलीसिया—गण्डमाला धातु, यान्त्रिक परिपोष
क्रिया का अभाव और शारीरिक तथा मानसिक अत्य
अनुभवाधिक्य वाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है
पीव उत्पन्न करना और बढ़े हुए पीव को निकालना इसक
प्रधान लक्षण है। नासूर, उँगली पकना, जख्म, अस्थि क
अपक्वता, देर से चलना सीखना, गण्डमाला, आँख में जख
इत्यादि में इससे विशेष लाभ होता है। अमावास्या औ
पूर्णिमा को रोग का बढना इसका एक खास लक्षण है
नासूर में इससे बहुत फायदा होता है। जख्म में बहुत पी
होने पर इसे देने से पीव निकल जाता है और जख्म जल
सूख जाता है। क्रम ३०—२००। प्रतिकारक—केम्फर, हिपर
सल्फर, फ्लोरिक एसिड।

रोग होना, कब्जियत, ववासीर, सुबह पतले दस्त, वात रोग, क्षय और अनेक प्रकार के क्षय रोगों में यह व्यवहार किया जाता है। पुराने रोगकी चिकित्सा आरम्भ करने के पहले और चुनी हुई दवासे काफी लाभ न होने पर अथवा रोग आराम होते समय इसकी दो एक खुराकें देनेसे अच्छा काम होता है। चर्मरोग की यह बढ़िया दवा है । क्रम ६–२०० । प्रतिकारक–एकोनाइट, कैम्फर, केमोमिला, चायना, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, रसटक्स, सिपिया ।

सिम्फाइटम—चोटके कारण हड्डी टूटजाने परया टूटी हुई हड्डीके जुड़नेमें विलम्ब होने पर इसका बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकारका प्रयोग किया जाता है । क्रम १X–२० ।

सिफिलिनम—यह दवा उपदंशके विषसे तैयार होती है । गरमी और उसके कारण अन्यान्य रोगों का होना, हड्डी के जख्म, चक्षु प्रदाह, प्रदरस्राव, शिरमें दर्द आदि रोगो में यह उपयोगी है । क्रम ३०–२००० । प्रतिकारक–नक्सवोमिका ।

टेबेकम–इसे हिन्दी-में तम्बाकू कहते हैं सदा जी मिचलाना, कैके साथ ठंढा पसीना, हैजेमें पेशाब बन्द हो जाने के कारण मूत्र विकार, हृदपिण्डकी बीमारी अतिसार, मूत्रग्रन्थि

शूल आदि में यह उपयोगी है। क्रम ३X–२००। प्रतिकारक–इग्नेशिया इपीकाक लाइको, फोस्फरस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सीपिया, विरेट्रम, कैम्फर, कोफिया, जेल्सीमियम इत्यादि।

टेरिबिन्थीना–इसकी क्रिया मूत्र यन्त्र पर प्रकटहोती है। मूत्रयन्त्रके अनेक रोगों में इससे विशेषलाभ होता है। मूत्र कृच्छ्रता, पेशाबका बन्द हो जाना, पेटका फूल जाना, जलोदर कृमि, विकारज्वर, रक्तस्राव या खूनी पेशाब आदि में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ३X—३०। प्रतिकारक–फोस्फरस।

थूजा—यह सोरा दोषघ्न औषधि है। चर्म, श्लैष्मिक झिल्ली, जननेन्द्रिय, मूत्रयन्त्र, योनि और लसिका ग्रन्थि आदि पर इसकी क्रिया प्रकट होती है। सूजाक, सभी तरह के मस्से, छिपे हुए सूजाक विषके कारण तरह तरह के रोग होना, टीका लगाने का कुफल, कैन्सर, बवासीर तथा स्त्री जननेन्द्रियकी अनेक बीमारियों में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ३०–२००। प्रतिकारक–कैम्फर, मर्क्युरियस पल्सेटिला सल्फर।

विरेट्रम एल्बम–हैजा रोगकी यह एक प्रधान दवा है। बहुत दस्त और कै, पेटमें दर्द, ठंढा पसीना, खासकर कपाल

में, प्यास, ऐंठन इत्यादि लक्षणों में इससे विशेष लाभ होता है। हृद्पिण्ड की दुर्बलता श्वासनाली और फुस फुस प्रदाह बहुव्यापक ज्वर तथा नाना प्रकारके स्त्री रोगो में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ६-३० । प्रतिकारक-एकोनाइट, कैम्फर, चायना, कोफिया ।

विरेट्रम विरिडि-यह दवा हृदय को सुस्त बना देती है, इसलिये इसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिये। ज्वर में अत्यन्त गात्रोत्ताप, शिरमें दर्द, तेज नाड़ी, वमनेच्छा, बच्चों का स्वल्प विरामज्वर, हाम, सूतिकाक्षेप, सूतिका ज्वर और न्युमोनिया आदि रोगोंमें यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ३X-६ । प्रतिकारक-बहुत गरम काफी ।

जिङ्कम-इसकी क्रिया स्नायुमण्डल पर प्रकट होती है। नीदमें डरजाने के कारण जाग पड़ना, शिर इधर उधर घुमाते रहना अनवरत शरीर हिलाना, मीठी चिजें खाने से रोगका बढ़ना, इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। स्नायविक दुर्बलता, मेनिञ्जाइटिस, उन्माद, हिस्टीरिया, ज्वर, पक्षाघात, बच्चोंका हैजा, खाँसी इत्यादि अनेक रोगों में यह व्यवहार किया जाता है। क्रम ३०-२०० प्रतिकारक-कैम्फर, हिपर सल्फर इग्नेशिया ।

❀ समाप्ति ❀

बाबू कैलासनाथ भार्गव द्वारा-भार्गव भूषण प्रेस, बनारस सिटीमें मुद्रित ।